THE NEW TESTAMENT,
IN HINDI.

ALLAHABAD:
REPRINTED AT THE MISSION PRESS FROM THE BAPTIST MISSION PRESS EDITION
(WITH ALTERATIONS) FOR THE NORTH INDIA BIBLE SOCIETY.
1879.
<table>
<thead>
<tr>
<th>नाम</th>
<th>पत्र</th>
<th>प्रति</th>
<th>प्रति का संख्या</th>
<th>पृष्ठ</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>माती रचित सुश्रुषा</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>२८</td>
<td>१</td>
</tr>
<tr>
<td>माके रचित सुश्रुषा</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>१५</td>
<td>८८</td>
</tr>
<tr>
<td>सूक रचित सुश्रुषा</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>२४</td>
<td>१६०</td>
</tr>
<tr>
<td>बेघान रचित सुश्रुषा</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>२२</td>
<td>२८४</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रेमसेरुकी क्रियाश्रोका कृतांक</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>२८</td>
<td>४४४</td>
</tr>
<tr>
<td>रेखियोंका पाठ प्रेतिको पत्र</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>१६</td>
<td>४५०</td>
</tr>
<tr>
<td>कविनिष्ठको पाठ प्रेतिको प्रदश्य</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>१५</td>
<td>४६२</td>
</tr>
<tr>
<td>गद्यको पाठ प्रेतिको पत्र</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>६</td>
<td>४६१</td>
</tr>
<tr>
<td>बािरको पाठ प्रेतिको पत्र</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>४</td>
<td>५००</td>
</tr>
<tr>
<td>कल्पको पाठ प्रेतिको पत्र</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>५</td>
<td>६०२</td>
</tr>
<tr>
<td>बिक्रियाको पाठ प्रेतिको प्रदश्य</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>१</td>
<td>६१०</td>
</tr>
<tr>
<td>बिक्रियाको पाठ प्रेतिको प्रदश</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>३</td>
<td>६१४</td>
</tr>
<tr>
<td>बिस्मिल्लहि मुबारकातु</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>१</td>
<td>७००</td>
</tr>
<tr>
<td>बेगान प्रेतिको प्रदश्य</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>५</td>
<td>७१४</td>
</tr>
<tr>
<td>बेगान प्रेतिको प्रदश</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>१</td>
<td>७२८</td>
</tr>
<tr>
<td>बेगान प्रेतिको सीखी पत्र</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>१</td>
<td>७७८</td>
</tr>
<tr>
<td>बिषयको पत्र</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>१</td>
<td>८३०</td>
</tr>
<tr>
<td>बोइनका प्रकाशित बांध्य</td>
<td>…</td>
<td>…</td>
<td>२२</td>
<td>६३५</td>
</tr>
</tbody>
</table>
मती रचित सुसमाचार।

1 पहिला पंखः।

1 यीशु स्रीरूपी बंगावलि। १५ दशकः सन्तान कथा।

2 इब्राहीमको सन्तान दाजः को सन्तान यीशु स्रीरूपी
3 बंगावलि। इब्राहीमको पुत्र इसहाक इसहाकको पुत्र
4 याकूब याकूबको पुत्र यिहूदा झौर उसको भाई हुए।
5 तामरसे यिहूदाके पुत्र इरस झौर जेरहुए पुरस्का
6 पुत्र हिस्रोन हिस्रोनका पुत्र झराम। झरामको पुत्र
7 झमीनादब झमीनादबको पुत्र झहम्नान नहीं मानका
8 पुत्र सलमान। राजपते सलमानका पुत्र बेशस्त हुस्ना
9 जलिसे बेशस्तका पुत्र झोवेद हुस्ना झोवेदका पुत्र झिरी।
10 यिश्रीका पुत्र झादक राजा जारियाहको जियावसे झादक
11 राजका पुत्र सुलेमान हुस्ना। सुलेमानका पुत्र रिहबु-झाम रिहबुझामका पुत्र झवियाह झवियाहका पुत्र
12 झास। झेसाका पुत्र यिहाशफ़ाट यिहाशफ़ाटका पुत्र
13 यिहारम यिहारमका सन्तान झज्जियाह। झज्जियाहका
14 पुत्र झेअभ्वेद झेअभ्वेदका पुत्र झास्स झास्सका पुत्र झिज-
15 झियाह। झिजियाहका पुत्र मनस्ती मनस्तीका पुत्र
16 झौमान झौमानका पुत्र येशियाह। बाबुल नगरको
17 झासको समयमें येशियाहको सन्तान यमिनियाह झौर
18 उसको भाई हुए। बाबुलको झानको पीछे यमिनियाहका
19 पुत्र झलातियाल झलातियालका पुत्र झिजबाबुल। झिज-
बाबुलका पुछ खबीहोट खबीहोटका पुछ इलियाकीम इलियाकीमका पुछ खसार। खसारका पुछ सादोक १४ सादोकका पुछ खाखीम खाखीमका पुछ इलिहूद। इलिहूदका पुछ इलियाजर इलियाजरका पुछ मतान १५ मतानका पुछ याकूत। याकूतका पुछ यूसफ जी मरियम १६ का स्वामी या जिससे यीशु जी ख्रिस्ती कहावता है उत्पन्न हुआ। सो सब पीड़ियाँ इब्राहीमसे दाज़दलों चैदह १७ पीढ़ी शैर दाजदले बाबुलको जानेलों चैदह पीढ़ी शैर बाबुलको जानेके समयसे द्रीपुलिंगय चैदह पीढ़ी थीं।

यीशु ख्रिस्तीका जन्म इस रीतिसे हुआ। उसकी माता १८ मरियमकी यूसफसे मंगनी हुई थी पर उनके एक्ट्रे होनेके पहिले वह देख पड़ी कि पवित्र शात्मासे गर्भवती है। तब उसके स्वामी यूसफने जो धर्मी मनुष्य था १८ शैर उसपर प्रगाढ़के कलंक लगाने नहीं चाहता था उसे चुपकेके त्यागनेकी इच्छा किये। जब वह इन २० बातेंकी चिन्ता करता था वही परमेश्वरके एक दूतने स्वरूपमें उसे दर्शन दे कहा है दाजदले सन्तान यूसफ तू अपनी स्त्री मरियमकी अपने यहाँ लानेसे मत दर क्योंकि उसका तो गर्भ रहा है तो पवित्र शात्मासे है। वह पुछ जनेगी शैर तू उसका नाम यीशु रखना २१ क्योंकि वह अपने लेगेवाले उनके पापेंसे बचावेगा। यह सब इसलिये हुआ कि जो बचन परमेश्वरते २२ भविष्यमुद्दातके द्वारास कहा था सो पूरा होवे। तो देखी २३ कुंवारी गर्भवती होगी शैर पुछ जनेगी शैर वे उसका नाम इम्मानूयल रखेंगे जिसका अर्थ यह है ईश्वर।
28 हमारे संग। तब उसके नींदने उठके जैसा परमेश्वर के दूत उसे यांजो दिई थी। जैसा किया श्रीर जयसी श्वसीका जयसी यहाँ लाया। परन्तु जबले यह जयसी पहिली बुठ न जनी तबले उसकी न जाना श्रीर उसने उसका नाम यीशु रखा।

2 दूसरा पहेल।

1 ज्योतिषियाँका यीशुका लेखना। 14 युसफका यीशु श्रीर महिमका मिसारमं आना। 15 हेरोदका बैलतहमके बालकंको घाट कराना। 16 युसफका परिकायां यथार्थ मिसारे सेटा श्रीर नावतमं बनाना।

1 हेरोद राजाके दिनांमे जब यीहूदीया देशके बैलतहम नगरमे यीशुका जन्म हुआ तब देखा पूर्वसे कितने 2 ज्योतिषी यीहूदीलोगने बताये। श्रीर बैले यीहूदी- यांका राजा जिसका जन्म हुआ है कहां है के अंकि हमने पूर्वसे उसका तारा देखा है श्रीर उसको प्रयास 3 करने बताये हैं। यह सुनके हेरोद राजा श्रीर उसके 4 साथ सारे यीहूदीलोगके निवासी घबरा गये। श्रीर उसने लोगके सब प्रयास याजको श्रीर सध्यायकंको 5 एकटे कर उनसे पूछा कहां कहां जन्मेगा। उनको उससे कहां यीहूदीयाँके बैलतहम नगरमे के अंकि भविष्यद्वद्धके है द्वारा यूं लिखा गया है। कि हे यीहूदा देशके बैलतहम 7 तू किसी रोटीसे यीहूदीकी राजधानीयमं सबसे छोटी नहीं है के अंकि तुमने एक साधपति निलंगा जो 8 मेरे इसकं लेगका चरवाहा होगा। तब हेरोदके ज्योतिषियाँके चुपके बुलाके उन्हे यहां पूछा किता राखा 9 विकस समय दिखाई दिया। श्रीर उसने यह कहके उन्हे
बैठलहम भेजा कि जाके उस बालकके विषयमें यहसे बुझी सौँी जब उसे पावे तब मुक्ति सदेश देशिया कि मैं भी जाके उसकी प्रशाम कहूं। वे राजाके सुनके चले वे गये सौँी देखा जो तारा उन्होंने भूलमें देखा था तब उनके आगे आगे चला यहाँतों कि जहां बालक या उस स्थानके उपर पहुँचके ठहर गया। वे उस तारेको देखके उत्तम जाननित हुए। सौँी घरमें पहुँचके उन्होंने बालकको उसकी माता मरियमके संग देखा सौँी दूलहत वर उसे प्रशाम किया सौँी अपनी सम्पति खालकी उसको ताना सौँी लेबान सौँी गण्ड्यके भेंट चढाई। सौँी स्वप्नमें इंशरसे यह आजा पाके कि उन्हें हरेदादके पास मत फिर जाके वे दूसरे मार्गसे अपने देशको चले गये।

उनके जानके झिड़ी देखा परमेश्वरको एक दूरने १३ स्वप्नमें यूसफको दर्शन दे कहा उठ बालक सौँी उसकी माताको लेकि मिसर देशको भाग जा सौँी जबानें में तुभ्य से झुं तबलों वहीं रह कीयोंकि हरेदाद नाश करनेके जिल्ये बालकको दूल्लेगा। वह उठ रातहीके बालक सौँी १४ उसकी माताको लेकि मिसरको चला गया। सौँी १५ हरेदादके मरनेको वहीं रहा कि जो वचन परमेश्वरने भविष्यद्वात्तके द्वारसे कहा था कि मैंने अपने पुजीको मिसरमें बुलाया से। पूरा होये।

जब हरेदादने देखा कि म्योनीसियोंने मुखसे ठुक्रा किया १६ है तब छैति छोड़ित हुआ सौँी लेबानको भेंतके जिस समयको उसने ज्ञातिकीयंसे यहसे पूछा था उस समयके
अनुसार बैतलहममें शीरा उसकी सारी सिवानिंदरके सब बालकोंके जो दो बरसकी शीरा दी बरससे छोटे थे
17 मरवा डाला। तब जी बचन यिरामियाह भविष्यद्वात्ताने
18 कहा था सो पूरा हुआ। कि रामा नगरमें एक शब्द अथवा हाफ़ाकार शीरा रोना शीरा बड़ा विलाप सुना
गया राहिल अपने बालकोंके लिये रोती थी शीरा शान्त होने न चाहती थी क्योंकि वे नहीं हैं।
19 हरदके मरने थे पीछे देखा परमेश्वरके एक दूतने
20 मिसरमें युसफकी स्वर्गमें दर्शन दे कहा। उठ बालकी शीरा उसकी माताको लेकिस्सायेल देखको जा क्योंकि
श्री लोग बालकका प्रामाण्य लेने चाहती थे सा मर गये हैं।
21 तब वह उठ बालक शीरा उसकी माताको लेकिस्सायेल
22 देशमें जाय। परन्तु जब उसने सुना कि अबलियाच अपने पिता हरदके स्थानमें विहृदियाका राजा हुआ है
कि तब बहं जाने दरा शीरा स्वर्गमें देखवरसे आज़ा
23 पाकी गालीलकी सिवानिंदरके गया। शीरा नासरत नाम एक नगरमें आके बास अया कि जी बचन भविष्यद्वात्ताने
कहा गया था कि वह नासरी कहावेगा सो पूरा होि थी।

3 तीसरा पाठ।
1 येष्न बयतिस्वमा बेनेनारक नूताना। 2 उसका उपदेश शीरा भविष्यद्वाता।
13 योशुका बयतिस्वमा लेना।
1 उन दिनावं येष्न बयतिस्वमा बेनेनारक शाके
2 विहृदियाके जंगलमें उपदेश करने लगा। शीरा कहने
लगा कि पशुचाहतका वरो क्योंकि स्वर्गका राज्य निकट
3 जाया है। यह वही है जिसके विषयमें यिशैयाह
श्रावणद्वारा कहा किसीका शब्द हुआ जैं जंगलमें पुकारता है कि परमेश्वरका पत्थर बनाएगा उसके राजार्ग्री सूची करे। इस गीतका नवं जंगलके रोमका या श्रावर उसकी कार्यन चमड़ा का पटका बंधा या श्राव उसका बरोज रितिरिया श्राव बन मधु या। तब यिहु-शालीमबले श्राव सारे यिहुदियाके श्राव यदैन नदीके ासपास सारे देशके रहनेहारे उस पास निकलने आये। श्राव अपने अपने पापांका मानके येरूरमें ऋतुसे बपतिसमा लिया।

जब उसके बहुतेरे फरीशिया श्राव शूक्लियांका उसमे बपतिसमा लेने का भारी देखा तब उनसे कहा है सांपांके बंध किसने तुम्हें आनेवाले श्राहमे भागने का बिताया है। प्रफुल्लामवी योग्य फल लाशी। श्राव अपने अपने मनमें यह चिन्ता मत करे कि हमारा पिता इब्राहीम है कांश्ये में तुमसे कहता हूं कि इश्वर इन पत्थरोंसे इब्राहीमके लिए स्तनान उत्पन्न कर सकता है। श्राव इबाय कुलहाड़ी पेड़की जडपर १० लगी है इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है तो जाता तीसरा श्राव आगमे हाला जाता है। में तो तुम्हें प्रफुल्लामवे लिये जलसे बपतिसमा देता ११ हूं परमु जो मेरे पेड़ चाहा है सो मुखसे अधिक शक्तिमान है। में उसकी जूतिया उठाने के योग्य नहीं वह तुम्हें पवित्र आतमसे श्राव आगमे बपतिसमा देगा। उसका सुप्त उसके हाथमें है श्राव वह अपना १२ सारा खलिहान गुढ़ करेगा श्राव अपने गहूंका खात्में
एकटा करेगा परन्तु भूमिकों उस झागसे जा नहीं बुझती है जलावेगा।

13 तब यीशु योहानसे बप्तिसमा लेनेको उस पास गालिलीसे यद्यनेंको तीरपर आया। परन्तु योहान यह कहा कि उसले जगा कि मुफ्त झापके हाथसे बप्तिसमा लेना अवश्य है अब तो झाप मेरे पास आते हैं।

14 यीशु उसका उत्तर दिया कि तब ऐसा होने दे की अंगिके ईश्वर उसके सब धर्मको पूरा कराना हमें बाहर है।

15 तब उसने होने दिया। यीशु बप्तिसमा लेके तुरन्त जाने ऊपर आया अब खेबा उसके लिये स्वागे खुल गया अब उसने ईश्वरके झापको कपोतकी नाई।

16 उतरते अब अपने ऊपर आते देखा। अब खेबा यह झाप झाप झाप हुई कि वह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे में झाप प्रस्तुत है।

4 चैत्या पढ़े।

1 यीशुकी परिषद्। 12 वस्त्र कि जनाके जनाके सब झापके बुझाना। 23 बहुत रोम्योको बंगा कराना।

1 तब झाप से यीशुकी जंगलसे ले गया कि चैतन्ये।

2 उसकी परिषद् लिखा जाता। यह चालिस दिन के अब

3 चालिस रात उपवास करके पिछी भूखा हुआ। तब परिषद् करते हारे हमें उस पास झाप कहा जैसे तसे ईश्वरको पुत्र है तसे कहे कि वे तपस्या रोटियां बन जाने।

4 उसने उत्तर दिया कि लिखा है मनुष्य केवल रोटियों नहीं परन्तु हर एक वाक्य जैसे ईश्वरके मुखसे निकलती है जीएगा। तब चैतन्ये उसका प्रियतम रागमये ले
जाके मंदिरके कलशपर खड़ा किया । छायर उससे कहा जो तू इंशवरका पुजाहै तो छपनेकी नीचे गिरा क्यांकि लिखा है कि वह तेरे विश्वासमें अपने दूसराके भाण्या देगा छायर तेरे तुमके हाथों हाथ उठा लेने नहीं कि तेरे पारमः पत्तरपर चार लेगे। यीशु उससे कहा फिर भी लिखा है कि तू परमेश्वर अपने इंशवरकी परीक्षा मत कर । फिर श्रीतान्ने उससे एक साति ऊंचे पर्वर्तपर ले जाके उसका जगतके सब राज्य छायर उनका विभव दिखाये । छायर उससे कहा जो तू दंडवत कर मुझे प्रशासन करे ता भी यह सब तुम्हे देंजगा । तब यीशु उससे कहा है श्रीताना दूर हो क्यांकि लिखा है कि तू परमेश्वर अपने इंशवरकी प्रशासन कर छायर केवल उसीकी सेवा कर। तब श्रीतान्ने उसको छोड़ा । छायर देखा स्वगे दूसराके जा उसकी सेवा किये।

जब यीशु ने सुना कि यहाँ बन्दीगृहमें झाला गया । तब गालिेकी चला गया । छायर नासरत नगरकी छायर उसके कफारनामक नगरमें जो समुद्रकी तीरपर जिबुलूयू छायर नगालीकी बंडिकों बंजारों सिवानां में है श्रीके बास किया । कि जो बचन विश्वासहौ भविष्यद्वंतात जहा गया था तो पूरा हो जाये । कि जिबुलूनका देश छायर छायर नगालीका देश समुद्रकी छायर यदैके उस पार जन-देशियोंका गालिेल । जो लोग जनधकारमें बैठे थे उनके देश छायर बायामें बैठे थे उनपर ज्योति उदय हुईं।

उस समयसे यीशु उपदेश करने छायर यह कहने लगा
क्षिप्रचाताप करी, क्योंकि स्वर्गका राज्य निकट ज्ञापन है। यीशुने गालिले के समुद्रधी तीरपर फिरते हुए दूर भाइयोंका हथियार शिमानको जा पिता कहावता है। श्री उसके भाई श्रीन्द्रको समुद्रधी जाल दालते देखा।

क्योंकि वे महबुबे थे। उसने उसके कहा मेरे पीछे।

श्रीर मैं तुमको मनुष्योंको महबुबे बनावंगा। वे तुरन्त जालोंको बड़ों से उसके पीछे हो लिये। वहाँसे श्रीर बड़ों उसने श्री दूर भाइयोंको हथियार जबदेखि पुत्र याकूब श्री उसके भाई याहन्दको सपने पिता जबदेखि संग नावपर सपने जाल सुधारते देखा। श्री उन्हें बुलाया। श्रीर वे तुरन्त नावको श्रीर सपने पिताको बड़ों उसके पीछे हो लिये।

तब यीशु सारे गालिले देशमें उनकी समाजोंमें उपदेश करता हुआ। श्रीर राज्यका सुसमाचार प्रचार करता हुआ। श्री लगेरीमें वर एक राग श्रीर हर एक व्याधिको चंगा करता हुआ। फिरा किया। उसकी कोटी सब सुरिया देशमें भी पैल गई। श्रीर लगेरी सब रागियोंको जा नाना प्रकाशरहों रागों। श्रीर पीड़ितों दुःखी थे। श्रीर भूतगतियों श्रीर फिरी। श्रीर भटकियोंको उस पास लाये। श्रीर उसने उन्हें चंगा किया। श्रीर गालिले श्रीर दिखापल। श्रीर यीहूदीको श्रीर यीहूदीको श्रीर यदुके उस पासे बड़ी बड़ी भीड़ उसके पीछे हो लिये।
पांचवां पढ़ें।

1 परमेष्टपर यीशुके ध्वजस्तर कार्य। 2 धन्य कौन मे रघुनाट्य किरिया। 3 लेखा को विशेष दृष्टिसे विशेष स्त्रीलोक का ज्ञान। 4 यीशुके प्रताप गौरोला कार्य। 5 ज्ञान कर्मसङ्ग्रह किरिया। 6 लहराण कर्मसङ्ग्रह किरिया। 7 यानीका त्यागकार किरिया। 8 शोध कर्मसङ्ग्रह किरिया।

यीशु भीड़ देखके परमेष्टपर चढ़ गया जीर जव 1 वह बैठा तब उसके शिष्य उस पास जाये। जीर वह 2 अपना सुंग खोलके उन्हें उपदेश देने लगा।

धन्य वे जो मनमें दीन हिंस को भाव करते हैं कोनकौं वे दुःस्थ लोग देखने हैं। धन्य वे जो शिक्षक करते हैं कोनकौं वे स्वरूप पार्वती। धन्य वे जो नम हैं कोनकौं वे पृथ्वीके अधिकारी हैं। धन्य वे जो धर्मके भूखे जीर नाम हैं।

धन्य वे जो तुम लिखे से रखे जाये। धन्य वे जो तुम दयावत हैं। कोनकौं वे उनपर दया किंदू जाये। धन्य वे जो जीर जलके मन शुद्ध हैं कोनकौं वे इत्यके देरी।

धन्य वे जो धर्मके कारण सतारे जाते हैं कोनकौं वे स्वरूपका राज्य उनकी है। धन्य वे जो मनमें दीन हैं तुम नाम हैं कोनकौं वे तुम रघुनाट्य की जाये।

धन्य तुम हो जब मनुष्य मेरे लिये 11 तुम्हारी निद्रा करें जीर तुम्हें सतारा जीर भूठ बैलते हुए तुम्हारे बिन्दु सब प्रकारकी बुरी बात कहे।

ज्ञानदृढ़ जीर ज्ञानदृढ़ रूपक की तुम स्वरूपमें बहुत फल पार्वती। उनके उन भविष्यक्षणके जी तुम से भाग से भाग से रीतिसे सताया।

तुम पृथ्वीके लोक हो परन्तु यदि लोकका स्वाद 12 बिगड़ जाय ता वह किसी लेखा किया जायगा। वह
तबसे किसी कामका नहीं केवल बाहर दूसरे जाने बार 

14 मनुष्यांके पावैंसे रैंटे जानेके योग्य है। तुम जगतके 

प्रकाश हो। जो नगर वहाँपर बसा है सो क्षणही 

नहीं सबकी। शैर लोग दीपको बारके बत्तनके नीचे 

नहीं परलू दीवारपर सबते हैं शैर वह समेंकी जो 

15 घर्में हैं ज्याति देता है। वैसीही तुम्हारा प्रकाश 

मनुष्यांको शाके चमके इसलिये कि वे तुम्हारे भले कामों 

को देखके तुम्हारे स्वर्गवासी पिताका गुणानुवाद करें। 

16 मत समझौं कि में व्यवस्था कहता भविष्यवादकी 

का पुस्तक लॉप करनेको छाया हूं मैं लॉप करनेको 

17 नहीं परलू पूरा करनेको छाया हूं। क्योंकि मैं तुमसे 

सच कहता हूं कि जबलों खाकाश शैर पृथिबी देन 

यालू तबलों व्यवस्था एक मारा छाया एक बिंदु 

18 बिना पूरा हुए नहीं रहेगा। इसलिये जो ओहरेइ इन 

ज्याति छोटी खाकाशोंमें एककी लॉप करे शैर लोगों 

की वैसीही सिखावे वह स्वर्गकी राज्यमें सबसे छोटा 

कहालेगा परलू जो ओहरेइ उन्हें पालन करे शैर सिखावे 

20 वह स्वर्गकी राज्यमें बड़ा कहालेगा। मैं तुमसे कहता 

हूं यदि तुम्हारा धर्म स्वर्गयापकों शैर फरीद्वाख्यांकी 

धर्ममें अधिक न होचे ता तुम स्वर्गकी राज्यमें प्रवेश 

करने न पाएंगे। 

21 तुमने सुना है कि शाके लोगोंसे कहा गया था 

कि नरहिंसा मत कर शैर जो ओहरेइ नरहिंसा करे से 

22 बिचार स्वानें दंडके योग्य होगा। परलू मैं तुमसे 

कहता हूं कि जो ओहरेइ अपने भाईसे खाकाश छोटा करे
सा बिचार स्थानम संदक याग्य होगा शीर जा कोई अपने माई से कहे वे तुम्हें सा न्यायपकी समार्थी संदक याग्य होगा शीर जा कोई कहे वे ते मूर्ख सा नरकसी अग्नि संदक याग्य होगा। सा यदि तू अपना नाम चढ़ावा बेदीपर लावे शीर वहां स्मरण करे वे तेरे माई मनम मन तेरी शीर बुझ है ता अपना चढ़ावा वहां बेदीक सामी छोड़के चला जा। पहले अपने संद कर तब शाके अपना चढ़ावा चढ़ा। जबला तू अपने मुट्टी से संग मार्गम है उससे बग संद मिलाप कर एसा न है। वे मुट्टी तुफ़ो न्यायकी से शीर न्यायी तुफ़ी ब्यादके से शीर तू बन्दीगृहमें हाला जाय। मैं तुफ़से सच कहता हूं कि जबला तू नई ब्राह्मणों भर न देवे तबले वहांं ब्रह्मण छूटने न पायेगा।

तुमने सुना है वे शाके लागोंसे कहा गया था वे तेरे परस्तीमन मत कर। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि तेरे कोई किसी स्थिमपर कुछ छाई दूरपूर करे वह अपने मनमें उससे द्वारविचार कर चुका है। वे तेरी दरही 25 शास्त्र सुख तुफ़ी ठाकर खिलावे ता उसे निकालके फेंक दे क्योंकि तेरे लिये भला है कि तेरे अंगोंमें एक अंग नाश होवे शीर तेरा सकल शरीर नरकसे न हाला जाय। शीर जा तेरा दरही हाय तुफ़ी ठाकर खिलावे। 30 ता उसे बारके फेंक दे क्योंकि तेरे लिये भला है कि तेरे अंगोंमें एक अंग नाश होवे शीर तेरा सकल शरीर नरकसे न हाला जाय।

यह भी बता गया कि जा कोई अपनी स्त्रीका 21
त्यागे से उसको त्यागपत्र देवे। परन्तु मैं तुमसे बहुत हूं कि जो कोई व्यभिचारको छाड़ शीर्ष किसी हेतुवे अपनी स्त्रीको त्यागे से उससे व्यभिचार कर-बाता है शीर्ष जो कोई उस त्यागी हुई से बिवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है।

फिर तुम्हारे सुना है कि श्रागको लोगोंसि हाओ गया तथा कि फूटी व्यभिचारा मत खा परन्तु परमेश्वरके लिये अपनी व्यभिचारा श्रीलोंके पूरी कर। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि व्यभिचारा मत खाते न स्वेच्छेके कायांकि वह इंस्वरका सिंहमान है। न धरतीको कायांकि वह उसकी चरणोंकी पीढ़ी है न यिक्षुलीमको कायांकि वह अहा राजाका नगर है। अपने सिरको भी व्यभिचार मत खा कायांकि तु एक बालको उजला अवध बाला नहीं कर सकता है। परन्तु तुम्हारी बातचीत हा हां नहीं नहीं है। जो कुछ इनसे भाधित है तो उस दुःखूसे होता है।

तुम्हारे सुना है कि कहा गया तथा कि श्राखके बदले श्राख शीर्ष दांतके बदले दांत। पर मैं तुमसे कहता हूं बुरेका सामा मत करा परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गालपर चपेड़ा मारे उसकी शीर्ष दूसरा भी फेर दे।

जो तुम्पर नालिश करके तेरा घंटा लेने चाहिए उसको दाहर भी लेने दे। जो कोई तुम्ख़ा धार काष्ठ बेगारी ले साय उसको संग काष्ठ भर चला जा। जो तुमके मांगे उसका दे शीर्ष जो तुमसे चुना लेने चाहे उससे सुभ मत भीड़।
तुमने सुना है कि कहा गया था कि अपने पहाड़ीसों का प्यार कर ग्शीर अपने बारीसे बैर कर। परन्तु तुम किया कहता हूँ कि अपने बैरिये का प्यार करो। जो तुम्हें साम देव उनकी आशीर्दी देशा जो तुमसे बैर करेंगे उनसे भलाई करो ग्शीर जो तुम्हारा अपमान करें ग्शीर तुम्हें सताओं उनके लिये प्राणना करो। जिसे तुम अपने स्वर्गवासी पिताके सत्तान हासा कीया कि वह बुरे श्री भले लोगों पर अपना सूर्य उदय करता है ग्शीर प्रह्मणों ग्शीर अनुम्मेत्यंगर बच बरसाता है। जो तुम उनसे प्रेम लाई करो जो तुमसे प्रेम करते हैं तो क्या फल पासीये? क्या कर उगाहनेहरे भी ऐसा नहीं करते हैं। ग्शीर 80 जो तुम केवल अपने भाइयों को नमस्कार करो तो ग्शीर बड़ा काम करते हो। क्या कर उगाहनेहरे भी ऐसा नहीं करते हैं। सा जैसा तुम्हारा स्वर्गवासी पितासिद्ध है तैयार तुम भी सिद्ध हासा।

१ स्वर्ग कर्मके विषम द्वरुषुका उपचार। २ दान करनेकी विधि। ३ ग्राम्या करनेकी विधि। ४ घर बननेका उपचार। ५ उपवास ग्राम्या करनेकी विधि। ६ ग्राम्या करने में लगानेका विन्द्र।

सचित रहें कि तुम मनुष्यीयों के दिखानेके लिये उनके १ ज्ञागे अपने ग्राम्यी कार्यमें न करो नहीं तो अपने स्वर्गवासी पितासे कुछ फल न पासीये।

इसलिये जब तू दान करे तब ज्ञागे ज्ञागे तुम्हे २ मत बजवा जैसा कपरी लोग सभाके घरों ग्शीर मारीमाते करते हैं कि मनुष्य उनकी बड़ाई करें। में तुमसे सच
5 कहता हूं  वे घराना फल पा चुके हैं। परन्तु जब तू दान करे तब तेरा दाना हाय जै रुझान करे सा तेरा।

6 बायां हाय न जाने। कि तेरा दान गुपरमें है। है। शुरू तेरा पिता जै गुपरमें देखता है। झाप्पी हुई तुम्हें प्रगर्गमें फल टेगा।

7 जब तू प्रार्थना करे तब कपत्रियोंकी समान मत है। क्रियांकि मनुष्योंका दिखानेके लिये सभाके घरोंमें शीर बड़ोंको ही वोलांमें बढ़े हैं कि प्रार्थना करना उनको प्रिय लगता है। मैं तुमसे सच कहता हूं  वे घराना फल पा चुके हैं। परन्तु जब तू प्रार्थना करे तब घरानी कीठरी में जा शीर द्वार मूर्दकी माता पितासे जै गुपरमें है प्रार्थना कर। शीर तेरा पिता जै गुपरमें देखता है। तुम्हें प्रगर्गमें फल टेगा। प्रार्थना करनेमें टैपूजकोंकी नाई है। बहुत बारसे मत बोला करे क्रियांकि वे समकाले हैं कि हमारे बहुत बोलनेसे हमारी सुनी जायगी।

8 सी तुम उनको समान मत है। क्रियांकि हमारे मांगने के पहिले हमारा पिता जानता है। तुम्हें क्या क्या झाब्स्क्रे है। तुम इस रीतिसे प्रार्थना करे। है। हमारे स्वर्गवासी पिता तेरा नाम पवित्र जिया जाय।

9 तेरा राज्य झावे तेरी दुखा जैसे स्वर्गमें बैसे। पृथिवी।

10 पर यूरी हाय। हमारी दिनभरकी रोटी झाव हमें दे।

11 शीर जैसे हम घराने भूरियेंकी छामा करते हैं। तैसे।

12 हमारे भूरियेंकी छामा कर। शीर हमें परीक्षामें मत। दाल परन्तु दुख्से बचा। क्रियांकि राज्य शीर पराम शीर महिमा सदा तेरे हे। झामीन]।
जा तुम मनुष्योंके अपराध छामा करो तै। तुम्हारा १४ स्वर्गीय पिता तुम्हें भी छामा करेगा। घरन्तू जा तुम १५ मनुष्योंके अपराध छामा न करोते तै तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध छामा न करेगा।

जब तुम उपवास करो तब अपराधोंके समान उदास १६ रूप मत हो। क्योंकि वे अपने सुंह मलीन करते हैं कि मनुष्योंका उपवासी दिखाई देंवे। में तुमसे सच कहता हूं वे छामा फल पा चुके हैं। घरन्तू जब तू १७ उपवास करो तब अपने सिरपर तेल मल श्रीर छामा सुंह घो। कि तू मनुष्योंका नहीं घरन्तू अपने पिताका १८ जी गुप्तम है उपवासी दिखाई देवे श्रीर तेरा पिता जी गुप्तम देखता है तुम्हें प्रगटन फल देगा।

अपने लिये पृथ्वीपर धनका संचय मत करो जहां १९ कीड़ा श्रीर काई बिगाड़ते हैं श्रीर जहां चार संघ देते श्रीर चुराते हैं। घरन्तू अपने लिये स्वर्गमें धनका २० संचय करो जहां न कीड़ा न काई बिगाड़ता है श्रीर जहां चार न संघ देते न चुराते हैं। क्योंकि जहां तुम्हारा २१ धन है तहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा। शरीरका २२ दौँपक शांख है इसलिये यदि तेरी शांख निरूपस तो तेरा सकल शरीर उजियाला होगा। घरन्तू यदि २३ तेरी शांख बुरी है तो तेरा सकल शरीर उजियाला होगा। जो ज्ञाति तुम्हें है सो यदि संधकार है तो वह संधकार कीसा बढ़ा है। काई मनुष्य दू स्वामियोंकी २४ तेज सह नहीं कर सकता है क्योंकि वह ये जस्ते बैर करेगा श्रीर दूसरेको यहार करेगा छामा एकते लगा रहेगा।
श्रीर दूसरे को तुच्छ चालेगा। तुम ईश्वर श्रीर धन दोनों—
को सेवा नहीं कर सकते हैं। इसलिए मैं तुमसे कहता हूं अपने प्राणके लिये चिंता मत करो कि हम क्या
खायेंगे श्रीर क्या पीयेंगे श्रीर न आपने शरीरके लिये
कि क्या पाहिरेंगे। क्या भोजनसे प्राण श्रीर बस्तते
क्या शरीर बढ़ा नहीं है। आकाशके पंखियोंका देखो। वे
न बोते हैं न लगते हैं न खत्तौमे बटारते हैं तभी
तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनका पालता है। क्या तुम
उसे बड़े नहीं हो। तुमसे ही मनुष्य चिंता करनेसे
आपनी आयुकी दौड़को एक हाथ भी बढ़ा सकता है।
श्रीर तुम बस्तके लिये किया चिंता करते है। खेतके
सौसन फूलोंका देख लो वे कैसे बढ़ते हैं। वे न परिश्रम
करते हैं न काटते हैं। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि
सुलेमान भी आपने सारे विभवमें उनके एकके तुल्य
बिभाषित न था। यदि ईश्वर खेतकी घासकी जो आज
है श्रीर कल चूहों भींकी जायगी ऐसी विभूषित
करता है तो है चूह विश्वासिया क्या वह बहुत
अभिकार करके तुम्हें नहीं पाहिरा बिगा। से तुम यह
चिंता मत करो कि हम क्या खायेंगे चायवा क्या
पीयेंगे चायवा क्या पाहिरेंगे। देवपूजक लेग इस सब
बस्तुकोंका खेज करते हैं श्रीर तुम्हारा स्वर्गीय पिता
जानता है कि तुम्हें इस सब बस्तुकोंका प्रयोजन है।
पहिले ईश्वरके राज्य श्रीर उसके धम्रका खेज करो।
तब यह सब बस्तु भी तुम्हें दिख जायेगी। से कलके
लिये चिंता मत करो क्यांकि कल आपनी बस्तुबैंकी
लिये तारीही चिन्ता करेगा। हर एक दिनके लिये
यसी दिनका दुःख बहुत है।

१ सातवां पंद्रह।

१ विकर्ता डोर लगानेका निखेड़। १२ प्रारम्भा करनेका दुर्गेश। १३ सौतेला फाटकरे
पैठनेका उपदेश। १५ पुढे उपदेशकोंका निखेड़। १७ इंद्रदेव राष्ट्रीयं पाणि
करको राजाप्रसन्नता। २२ अग्नि ने चालनेका वृद्धान्त। २५ अद्वैतप्रकारे
उपदेशकी वस्माध्यः।

दुसरोंका विचार मत करो कि तुम्हारा विचार न 
किया जाय। क्योंकि जिस विचारसे तुम विचार करते
हा उससे तुम्हारा विचार किया जायगा श्रीर जिस
नापसे तुम नापते हा उससे तुम्हारे लिये नापा जाय-
गा। जा तिनका तेरें भाईके नेचमें है उसे तू किया
देखता है श्रीर तेरें है नेचमेंका लट्ठा तुके नहीं सूक्ष्टा।
शयना तु जपने भाईसे क्वांकर कहेगा राहिये मैं तरे
नेचसे यह तिनका निकालू श्रीर देख तेरें है नेचमें
लट्ठा है। हे कपड़े पहिले जपने नेचसे लट्ठा निकाल
दे तब तू जपने भाईके नेचसे तिनका निकालनेको
अच्छी रीतिसे देखेगा। पविष्ट बसल कुतसंका मत देशा
श्रीर जपने मातियंका सूक्षरंको जागे मत खंडों ऐसा
न है कि वे उन्हें जपने पांवांसे रांदे श्रीर फिरके
तुमको फाड़ हालें।

मांगो ते तुम्हें दिया जायगा ढ़ूढ़ो ते तुम पाश्रोगे
शरखराणें ते तुम्हारे लिये खोला जायगा। क्योंकि
जो काई मांगता है उसे मिलता हे श्रीर जा ढूढ़ता है
सा पाता है श्रीर जा खरखराता है उसके लिये खोला
जायगा। तुमसे श्रीन मनुष्य है कि यदि उसका पुच्छ
10 उससे रोटी मांगे ता उसको पत्थर देगा। बीए जा
11 वह मजबूत मांगे ता क्या वह उसको सांप देगा। तो
यदि तुम बुरे होके अपने लड़कोंको अच्छे दान देने
जानते हो ता कितना अधिक करके तुम्हारा स्वर्गीय सी
पिता उन्हें का उससे मांगते हैं उतम बस्तु देगा।
12 जै कुछ तूम चाहते हो कि मनुष्य तूमसे करैं तुम
भी उनसे वैसाही करा किंतु क्यों यही व्यवस्था बीए
भविष्यद्वारकाके पुस्तकका सार है।
13 सकेत फारकसे व्रेश करा किंतु चौड़ा है वह
फारक बीए चाहकर है वह मांग जाविनाशक पहुंचा-
14 ता है बीए बहुत है जो उससे पैठते हैं। वह फारक
बीसा सकेत बीए वह मांग बीसा सकर है जा जीवन
का पहुँचाता है बीए ढेरे हैं जो उसे पाते हैं।
15 कूटे भविष्यद्वारकाके चौकस रहा जो भेड़ोंके भेषमे
तुम्हारे पास झार हैं परन्तु अन्तरमे लुटेक हुँकार हैं।
16 तूम उनके फलांसे उन्हें पहचानोगे। क्या मनुष्य कां-
टोंके पेड़से दाख अध्याय उंटकटारिसे गूँकर टाकते हैं।
17 इसी रीति से हर एक चच्चा पेड़ चच्चा फल फलता
18 है बीए निकाम्मा पेड़ बुरा फल फलता है। चच्चा पेड़
बुरा फल नहीं फल सकता है बीए न निकाम्मा पेड़
19 चच्चा फल फल सकता है। जा जो पेड़ चच्चा फल
नहीं फलता है सो कारा जाता बीए जागर आला
20 जाता है। सो तूम उनके फलांसे उन्हें पहचानोगे।
21 हर एक जी मुखते ह श्रम ह हे श्रम कहता है स्वर्गीय
राज्यमें प्रवेश नहीं करेगा परन्तु वही जी मेरे स्वर्गीय-
सी पिताकी इश्चापर चलता है। उस दिनमें बहुतई 22 भुमक्से कहीं है प्रभु है प्रभु क्या हमने शापके नामसे भविष्यद्वाका नहीं कहा श्रीर शापके नामसे भूमि नहीं निकाले श्रीर सापके नामसे बहुत आश्रम्य काम्रे नहीं किये। तब में उनसे खेलके कहूंगा मैने तुमको 23 कभी नहीं जाना है कुकम्मे करनेहारी मुक्कसे दूर हायो।

इसलिये जो कौई मेरी यह बातें सुनके उन्हें पालन 24 करे में उसकी उपमा एक बुद्धिमान मनुष्यसे देंजंगा जिसने अपना घर पत्थरपर बनाया। श्रीर में हरसा 25 श्री बाढ़ जाई श्री जांधी चली श्रीर उस घरपर लगी पर वह नहीं गिरा क्योंकि उसकी नीव पत्थरपर हाली गई थी। परन्तु जो कौई मेरी यह बातें सुनके उन्हें 25 पालन न करे उसकी उपमा एक निर्भुद्धि मनुष्यसे दिंदई जायगी जिसने अपना घर वालपर बनाया। श्रीर में हरसा श्री बाढ़ जाई श्री जांधी चली श्रीर 27 उस घरपर लगी श्रीर वह गिरा श्रीर उसका बड़ा पतन हुआ।

जब यीशु यह बातें कह चुका तब लेग उसके उप- 28 देशसे सांभित हुए। क्योंकि उसने आयापकेरी रोति- 29 से नहीं परन्तु कुलिकाली रोतिसे उन्हें उपदेश दिया।

8 आठवां पंजी

1 योयुका एक कोटाको घंगा करना। 2 एक शतपतिको दानको घंगा करना।
14 पिताकी बायको घंगा करना। 16 बहुत रोगियोंको घंगा करना। 18 विधाय
के विशेषम योयुका क्षया। 21 वहा बाणौको घंगा। 25 दो सुनुष्यसमॅँे
स्वस विकालना।
1. जब यीशु उस प्रवेश से उतरा तब बड़ी भीड़ उसके
2. पहिले हो लिए। शीर देखा एक बाढ़ीने जा उसकी
3. प्रशांत कर कहा है प्रभु जो ज्ञाप चाहें तो मुफ़्त शुद्ध
4. कर सकते हैं। यीशुने हाथ बढ़ा उसे कूले कहा मैं ता
5. चाहता हूँ शुद्ध हो जा। शीर उसका मीठ तुरन्त शुद्ध
6. हो गया। तब यीशुने उससे कहा देख किसी से मत कह
7. परन्तु जा अगले ताई याजकका दिखा शीर जो चढ़ावा
8. मूसाने उहराया उसे लोगोंपर साखी हानिका लिये
9. बढ़ा।

5. जब यीशुने कफनाहुममें प्रवेश किया तब एक
6. शतपतिने उस पास जा उससे बिन्ती लिए। कि है
7. प्रभु मेरा सेवक घरमें छोड़ रोगसे शति पोड़ित पड़ा
8. है। यीशुने उससे कहा मैं शाखे उसे चंगा कहलगा।
9. शतपतिने उतरा दिया कि है प्रभु मैं इस शेष नहीं
10. कि ज्ञाप मेरे घरमें शाखे पर वचन माच भी कहिये
11. तो मेरा सेवक चंगा हो जायगा। कोंकि मैं पराधीन
12. मनुष्य हूँ शीर गौड़ा मेरे बजर्न हैं शीर मैं एकबी
13. कहता हूँ जा ता वह जाता है शीर दूसरे का जा ता
14. वह जाता है शीर अगले दासका यह कर ता वह
15. करता है। यह सुनके यीशुने अच्छा किया शीर जो
16. लोग उसके पीछे से जाते थे उसके कहा मैं तुमसे सच
17. कहता हूँ कि मैं इसायेली लोगों मे भी ऐसा बहा
18. बिचवास नहीं पाया है। शीर मैं तुमसे कहता हूँ कि
19. बहुतेरे लोग पूर्ण शीर परिचयमें जाके इब्राहीम शीर
20. इसहाव शीर याकूबके साथ स्वर्गी राज्यमें वैटिंग। परन्तु
राज्यके सन्तान बाहरके धर्मकार्में हाले जायिंगे जहां रोना श्री दांत पीसना होगा। तब यीशुने शतपतिति १३ कहा जायि जैसा तूने विश्वास किया है वैसाही तुम्हे हांवे श्रीर उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया।

यीशुने पितरके घरमें जाके उसकी सासके पड़ी १४ हुई श्रीर जवरसे पीड़ित देखा। उसने उसका हाय खूँखा १५ श्रीर ज्वरने उसकी छोटा श्रीर वह उठके उनकी सेवा करने लगे।

सांकके लोग बहुतसे मूतयस्तोंको उस पास लांये १६ श्रीर उसने बचनहस्ति मूति निकाला श्रीर तब रोगी- श्रेणीको चंगा किया। कि जैं बचन पिशियांह भाविष्यव्याख्या से १७ कहा गया था कि उसने हमारी तुर्खताश्रेणीयों को पहर किया श्रीर रोगीका उठा लिया सा पूरा होि।

यीशुने ज्ञपने झासपास बड़ी भीड़ देखके उस पार १८ जानकी झाम् किया। श्रीर एक अध्यापकने ज्ञा उससे १९ कहा है गुरु जहां जहां शाप जायि तहां में झापके बीड़ी चलूना। यीशुने उससे कहा लोमड़ियोंको मंदिरे श्रीर २० झाकाशके पंडितोंका बसेरे हैं। परन्तु मनुष्यको पुनर्रका सिर रखनेका स्थान नहीं है। उसके शिक्षामें दूसरने २१ उससे कहा है प्रभु मुझे पहिले जाके झपने पिताको गाड़िया दीजिये। यीशुने उससे कहा तू मेरे पीढ़ी हो ले २२ श्रीर मृतकोंका झपने मृतकोंका गाड़ियां दे।

जब वह नावपर चढ़ा तब उसके शिष्य उसके २३ पीछे हो लिये। श्रीर देखे समुद्रमें ऐसे बड़े हिलकरे २४ उठे किन्तु नाव लहरेंसे ढंग जाती थी परन्तु वह सोता
एक था। तब उसके शिष्योंने उस पास जा कर उसे जगहों
हट कहा है। प्रथम हमें जाए ते हम नष्ट होते हैं। उसने
उनसे कहा है अज्ञ किसी किया आदी ही। तब
उसने उठके बयार शायर समुद्र का हांता शायर बड़ा
नीचा हो गया। शायर वे लोग जबन्धा करके बताने
यह जैसा मनुष्य है कि बयार शायर समुद्र भी उसकी
शायझा मानते हैं।
जब यीशु उस पार गिरिजाशियोंके देशमें पहुंचा तब
दो मृत्युस्त मनुष्य कवरस्थानमें निकलते हुए उससे
वी मिले जिस गहलों अति प्रचंड थे कि उस मागने
बाई नहीं जा सकता था। शायर देखा उन्होंने चिन्ताके
बाहर है यीशु इश्वरवर जुग वायको हमसे वहा वायम।
क्या वाय और समये वाय वे हमें पीड़ा देनेको यहां वाये
हैं। बहुतसे सूपरांका एक मुंड उनसे कुछ दूर चरता
था। तो भूताणे उससे बिन्ती कर कहा जिस वाय हमें
निकलते हैं तो सूपरांको मुंडोंमें पीठने दीजिये। उसने
उनसे कहा जासौ शायर वे निकलके सूपरांको मुंडोंमें
पैठे शायर देखा सूपरांका सारा मुंड दड़ाईपरसे समुद्रमें
दूर गया शायर पानीमें हूब मरा। वहां चरवाहे भागे
शायर नगरमें जाके सब बताएं शायर मृत्युस्तांकी कथा
भी सुनाई। शायर देखा सारे नगरके लोग यीशुसे
मंत करनेको निकले शायर उस्को देखके बिन्ती बिन्ती
कि हमारे सिवानांसे निकल जाइये।


1 यीशु का एक योगी को खंडा करना चाहिए वह का पाप ज्ञात करना। 2 मसीह का खुलासा नहीं है वह वैदिक को चंदा में भेद न करना। 3 उपेक्षा करना बोधर नहीं होना। 4 एक कन्याका भिक्षु तो है एक स्त्री लोग खंडा करना। 5 दो बर्धिस्के नेत्र खोलना। 6 तद्युगस्त द्रोहुका चंदा करना। 7 वो ब्रह्मांड के भोजुकी देवा।

यीशु नावपर चढ़के उस पार जाके अपने नगरमें 8 पहुँचा।

देखिए लोग एक झट्ठूँगी का खाटपर पड़े हुए उस पास 9 लाये शिशु के यीशु उन्हें बिश्वास देखके उस झट्ठूँगीसे कहा है बुद्ध ढाक्का कर तेरे पाप ज्ञात किये गये है। तब देखिए वो ज्ञात अध्यापकोंने अपने 10 अपने मनमें कहा यह तो इश्वरकी निन्दा करता है। यीशु उनके मनकी बातें जानकी कहा तुम लोग 11 अपने अपने मनमें कों बुरी चिन्ता करते है। कैन 12 वात सहज है यह कहना कि तेरे पाप ज्ञात किये गये है। अभ्यर्थु यह कहना कि उठ श्रीर चल। परन्तु 13 जिसौं तुम जानो कि मनुष्यके पुनर्वोपर पाप ज्ञात करनेका अधिकार है। (तब उसने उस झट्ठूंगीसे कहा) उठ अपनी खाम उठाके अपने घरकी जा। वह उठके अपने घरकी चला गया। लोगों की यह 14 देखके जरूरत किया श्रीर इश्वरकी स्वति किने जिसने मनुष्योंका ऐता अधिकार दिया।

वहांसे आगे बढ़के यीशु एक मनुष्यके कर 15 उगाहनेके स्थानमें बैठे देखा जिसका नाम मसीह था। श्रीर उससे कहा मेरे पीछे था। तब वह उठके उसके पीछे हो लिया। जब यीशु घरमें भेजनपर बैठा 16
तब देखा बहुत कर उगाहनेहारी छैआर पांपी लेग सा।

११ उसके छैआर उसके शिष्येंके संग बैठ गये। यह देखबि
फरीशियांने उसके शिष्येंसे कहा तुम्हारा गुरु कर
उगाहनेहारीं छैआर धारणेकी संग कीं खाता है।

१२ यीशुने यह सुनके उनसे कहा निरोगियांको बैठसका।

१३ प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियांको। तुम जाके इसका
काग देखा कि में त्याकी चाहता हूं। बालिकाको
नहीं। किंतु मे में घर्मियांकी नहीं परन्तु रोगियांको
पहचातापके लिये बुलाने चाहा हूं।

१४ तब यीशुके शिष्येंने उस पास आ कहा हम
ले रण छैआर फरीशी लेग बैंक बार बार उपवास करते

१५ है परन्तु आपकी शिष्य उपवास नहीं करते। यीशुने
उनसे कहा 'बुलाओ तूकहा सब्बारे अंदर रहे तबतां
कहा बे शेअर कर सकते हैं। परन्तु वे दिन रायेने
जिनसे तूकहा उनसे आलाग किया जायगा तब वे उप-
।

१६ वास करते। केवल मनुष्य छैआर कपड़ा कुकड़ा पुराने
बस्तमें नहीं लगाता है किंतु वह कुकड़ा बस्तसे कुक
छैआर का फाड़ लेता है। छैआर उसका फटा बड़ा जाता

१७ है। छैआर ले रण दाख रस पुराने कुपियांमें नहीं
भरते नहीं तो कुपिय फट जाते हैं। छैआर दाख रस वह
जाता है। छैआर कुपिय नघू हीते हैं। परन्तु नया दाख
रस नये कुपियांमें भरते हैं। छैआर दाखाकी रक्षा हीती

१८ यीशु उनसे यह बातें कहताही या कि देखा एक
काग शरीक छैआर उसका प्रशांत बार कहा मेरी बेटी
श्रामी मरं गई परन्तु श्राय श्राढ़ श्रापना हाथ उसपर राखिये ता वह जीविये। तब यीशु उनके श्रापने शिष्यों १५ समेत उसके पीछे हो लिया।

श्रार देखि एक स्त्री ने जिसका बारह वरससे लोहू २० बहता था पीछे से श्रार उसके बस्तके खानचलकी छूआ।
क्योंकि उसने श्रापने मनमें कहा यदि मैं केवल उसके २१ बस्तका भूखें ता चंगी हो जांगी। यीशुने पीछे २२ फिरके उसे देखके कहा है पुचि ढाणस कर तेरे विश्वसने तुम्हे चंगा किया है। सा वह स्त्री उसी बढ़ीसे चंगी हुई।

यीशुने उस श्राध्युच्चिे घरपर पहुंचके बजानयंकिये २३ श्रार बहुत लगाःको धूम मचाति देखि। श्रार उनसे २४ कहा अलग जाओ कहा मरी नहीं परं सेति है।
श्रार वे उसका उपहास करने लगे। परन्तु जब लोग २५ बाहर किये गये तब उसने भीतर जा कन्याका हाथ पकड़ा श्रार वह उठी। यह कोई तुस सारे देखमें पैल २६ गई।

जब यीशु बहासे श्रागे बढ़ा तब दा चंगे पुकारति २० श्रार यह कहते हुए उसके पीछे हो लिये कि हे दाजुदकी सत्तां हमपर दया कोजीये। जब वह घरमें पहुंचा २८ तब वे चंगे उस पास श्राये श्रार यीशुने उनसे कहा श्रागा तुम विश्वस करते हो किं में यह काम कर सकता हूं। वे उससे बोले हां प्रभु। तब उसने उनकी २५ श्रांके मूर्ते कहा तुमहारे विश्वसने समान तुमको है। इसपर उनको श्रांके खुल गई से श्रार यीशुने ३०
३१ वह चितासे कहा देखा बोल इसका न जाने। तैमी उन्होंने बाहर जाकर उस सारे देशमें उसकी कौटी फैलाई।

३२ जब वे बाहर जाते थे देखा लोग एक भूतयस्ते।

३३ गूंगा मनुष्यके यीशु पास लाये। जब भूत निकाला गया तब गूंगा बोलने लगा श्रीर लोगांने अचंभा कर कहा।

३४ इसाईतमें ऐसा कभी न देखा गया। परन्तु फरी- शियांने कहा वह भूतांचे प्रधानकी सहायतासे भूतांसाठी निकालता है।

३५ तब यीशु सब नगरीं श्रीर गांवांमध्ये उनकी समाधिसमें उपदेश करता हुसा श्रीर राज्यका सुसमाचार प्रचार करता हुसा श्रीर लोगांने हर एक राग श्रीर हर एक झी व्याधिका चंगा करता हुसा फिरा किया। जब उसने बहुत बोल लोगांके देखा तब उसकी उनपर द्या बाई कोंकी वे विन रखवालेरी में नाई व्याधिल श्रीर झूठ बिन्ती निग्रहित किये हुए थे। तब उसने झापने शियांसे कहा कारणी बहुत है परन्तु बानि होइ येहं। इसलिवे बालानेके स्वामीसे बिन्ती करें कि वह झापनी करतीमध्ये बानिहारंशिखा भेजे।

३८ दसवां घंटे।

१ यीशुका दाराच मौटिसीं ठड़रके भेजना। १६ उन्हें खाने वालोंके विवरणी विताना श्रीर विकार।

१ यीशुने झापने बारह शियांसे झापने पास बुलावें। यहें भूतांपर अधिकार दिया कि उन्हें निकालां श्रीर हर एक राग श्रीर हर एक व्याधिका चंगा करां।
बारह प्रेतिदेवी नाम ये हैं पशुला श्रीमान जी पिता २ कहावता है श्रीर उसका भाई चान्द्रिय . जबदीका पुष्प याकूब श्रीर उसका भाई योहान . फिलिप श्रीर वर्षजनमई . ३ शामा श्रीर मती कर उगाहनेहारा . जलफैंका पुष्प याकूब श्रीर लिखौंगे जो गुढ़े कहावता है . श्रीमान श्यामानी श्रीर यिहूदा इस्लामीयाती जिसने उसे पकड़-बाया । इन खाद्यों को योगुने यह खाना डेके भेजा कि चन्द्रदेवियांकी श्रीर मत जाओ श्रीर श्रीमिरानियांकी किसी नगरमें मत पैठा । परन्तु इसाखली ६ बहानेकी खाई हुईं भेढ़कं पास जाओ । श्रीर जाते ७ हुए प्रचार कर कहा कि स्वर्गका राज्य निकार जाया है । रागियांकी बंगा करो जीर्णदेवियांकी शुद्ध करो मृतकंकी जिलाकी भूतांकी निरक्षा । तुमने संततित पाया है संततित देश । अपने दुरुककी न सोना न ८ रुपा न ताम्बा रखो । मागे के लिये न फूली न दो १० खंगे न जूते न माटी लेखे बोलकं बनहार अपने भ्रानके योग्य है । जिस किसी नगर यथावत गांवमें ११ तुम प्रवेश करो बूढ़े उसमें कीन योग्य है श्रीर जबलों बहां न निकलों तबलों उसके यहां रहे । घरमें १२ प्रवेश करते हुए उसका आशीस देश । जो वह घर १३ योग्य होय ता तुमहारा कल्याण उसपर पुलुंच परन्तु जो वह योग्य न होय ता तुमहारा कल्याण तुमहारे पास फिर खावे । श्रीर जा कई तुम्हें यहान न करे १४ श्रीर तुमहारी बातें न सुने उसके घरसे अपना उस नगरसे निकलते हुए अपने पांवांकी धूल फाड़ हाले ।
15 में तुमसे सच कहता हूँ कि बिचारके दिनमें उस नगर-को दशासे सदाम चौर श्रमराके देशकी दशा सहने गेहुँ होगी।

16 देखा में तुम्हें भेंडांके समान हुड़ारंकी बीचमें मैता हूँ तो सांपेंकी नाईं बुढ़मान चौर कपोतांकी नाईं।

10 सूझी हाशिया। परन्तु मनुष्योंसे चौकस रहा कौंके वे तुम्हें पंचायतमें संपेंगे चौर अपनी सभाशीमें तुम्हें

15 बाँटेंगे मारंगे। तुम मेरे लिये अध्यायों चौर राजाजैंको शान उनपर चौर अन्यदेशियाँएन्यार साक्षी होनेके लिये

14 पहुंचाये जाशिये। परन्तु जब वे तुम्हें संपें तब किस रीतिसे अथवा का कहांगे इसकी चिन्ता मत करो कौंके जी कुछ तुम्हें कहना होगा सा उसी घड़ी

20 तुम्हें दिया जायगा। बालनेहारे ता तुम नहीं हा परन्तु

21 तुम्हारी पिताका ज्ञात्मा तुम्हें बोलता है। भाड़ भाड़को

19 चौर पिता अपकी बध किये जानेका संपेंगे चौर लड़की

22 भातर पिताके बिस्तूर उठकी उन्हें गात करवायेंगे। मेरे

24 नामके कारण सब लोग तुमसे बैर करेंगे पर जी अन्तलों

23 स्पिर रहे सोई चार पावेगा। जब वे तुम्हें एक नगरमें

25 सतावं तब दूसरमें भाग जाये। मैं तुमसे सत्य कहता

21 तुम इसाईलोके सब नगरमें नहीं फिर चुड़ाघे कि

26 उतनेमें मनुष्यका पुत्र शाबेगा। शिष्य गुरुसे बड़ा नहीं

33 है चौर न दास अपने स्वामीतै। यही बहुत है कि

31 शिष्य अपने गुरुके तुल्य चौर दास अपने स्वामीके तुल्य

32 हाय। जी उन्हें घरके स्वामीका नाम बालजिबूल

33 राखा है ता वे खितना अधिक करके उससे परवालेंका
बैसा नाम रहिंगे। तो तुम उनसे मत दरा कौंकि कुछ शंक्य छिपा नहीं है जो प्रगर न किया जायगा श्रीर न कुछ गुप्त है जो जाना न जायगा। जो में तुमसे श्रधियारिम वह कहता हूँ उसे विजयालेसे कहा श्रीर जो तुम कानेमे सुनते है उसे काटिनपरसे प्रचार करा। उनसे मत दरा जो शरीरको मार हालतें हैं पर जात्माको मार हालने नहीं सकते हैं परन्तू उससे दरा जो जात्मा श्रीर शरीर देनिएको ठरके में नाश कर सकता है। क्या एक पैसेमे दो गौरिया नहीं बिकतीं तो भी तुम्हारे पिता बिना उनमेंसे एक भी भूमिपर नहीं गिरेंगी। तुम्हारे शिरके बाल भी सब गिल एह हैं। इसलिये मत दरा। तुम बहुत गौरियााको शाधिक मालको है। जो केवल मनुष्योंको शान मुक्ति मान लेगा उसमें भी अपने स्वंगोजासी पिताको शान मान लेंगा। परन्तु जो केवल मनुष्योंको शान मुक्ति मुक्ते उसमें भी अपने स्वंगोजासी पिताको शान मुक्ता है। मत समके कि में पृथिवीपर मिलाप करवानेको शाया हूँ में मिलाप करवानेको नहीं परन्तु बहु चलवानेको शाया हूँ। में मनुष्योंको उसके पिताको श्रीर बैरीको उसकी मांसे श्रीर पताक्को उसकी सासी शल करने शाया हूँ। मनुष्योंको घरहींको लेग उसकी बैरी होंगे। जो माता शाया पिताको मुक्ते शाधिक प्रेम करता है तो मेरे योग्य नहीं श्रीर जो पृथ शाया पुष्ये को मुक्ते शाधिक प्रेम करता है सा मेरे योग्य नहीं। श्रीर जो ऊपना क्रूष लेकि मेरे पिछे नहीं शाया है तो आ
मेरे योग्य नहीं। जा अपना प्राण पावे तो उसे ब्रह्मेंगा श्रीर जा मेरे लिये अपना प्राण ब्रह्मेंगा सा
उसे पावें। जा तुम्हें यह इक जरा है सो मुम्मी यह इक जरा है सो मेरे
भेजनेहारिये यह इक जरा है। जा भविष्यवाक्यकं
नामसे भविष्यवाक्यकं यहां करे सो भविष्यवाक्यकं
फल पावे श्रीर जा धर्मीकं नामसे धर्मीकं यहां
करे सो धर्मीकं फल पावे। ज्यो ब्रह्में देवी रामैंसे
एकी शिष्यके नामसे केवल एक कटारा ठंडा पानी
पिलावे में तुमसे सच कहता हूं वह विश्र रीतिते अपना
फल नै ब्रह्मेंगा।

११ एयारहवां पब्जे।

१ योगुका बहसके चिंताकं चतुर देवा। २ योगुके वियमं उपकी शाकी। ३१३
उस समस्ये लेगींगी झपम। २० करूँ एक नगरौंके शिविरपबर उलहम।
२४ योगुका चापने विताका धन्य वासन। २५ ठुँठोँ लोगींके नेवता करन।

१ जब यीसू अपने बारह शिष्योंका तामा दे चुका
तब उनके नगरौंमें शिष्या श्रीर उपदेश करनेको वहांसे
चला।

२ योहनने बनदीगृहमें खोशुके काय्यांका समाचार
सुनके अपने शिष्योंसे दि जानंको उससे यह कहनेका
भेजा। कि जो चानेवाला था सो क्या जापही हैं
३ चारवा हम टूरिकी बार बाहें। यीसूके उनहें उत्तर
दिया कि जो कुछ तुम सुनते श्रीर देखते हो सी। जाबे
५ योहनने कहा। कि भंडे देखते हैं श्रीर लंगडे चलते
हैं काटी दुषु किये जाते हैं श्रीर बाहरे सुनते हैं मुत्तः
जिलाने जाते हैं चार कोंगलोंको सुसमाचार सुनाया जाता है । चार जो काई मेरे विषयमें टोकर न खावे इ सा पन्थ है ।

जब वे चले जाते थे तब योगु गोहनके विषयमें ०
लोगोंसे कहने लगा तुम जंगलमें क्या टेरनेके निकलो
क्या पवनसे हिलते हुए नरकरके । फिर तुम क्या ८
टेरनेके निकलो क्या सूर्यम वस्त्र पहले हुए मनुष्यको ।
टेरा जा सूर्यम वस्त्र पहलते हैं सा राजाओंके बरोंमें
हैं । फिर तुम क्या टेरनेके निकलो क्या भविष्यवृत्ता-
भाषा १० । हां से तुमसे कहता हूँ एक मनुष्यको जो
भविष्यवृत्तासे भी आधिक है । क्योंकि यह बही है
जिसके विषयमें लिखा है कि टेरख में अपने टूकनो
तरे शागे मेला हूँ जो तरे शागे तेरा पन्थ बनावेगा ।
मे तुमसे तब कहता हूँ कि जो स्टिगासे जुम्मी हैं ११
एनमें गोहन वपत्स्मा टेरनेहारंसे बड़ा काई प्रगत नहीं
हुआ है परन्तु जो स्वर्गके राज्यमें भावत बीता है सा
उससे बड़ा हैं । गोहन वपत्स्मा टेरनेहारंसे दिनेसे १२
उल्लां स्वर्गके राज्यके लिये वारियाई जिंदे जाती है चार
वारियार लग उसे ले लेते हैं । क्योंकि गोहनलां १३
सारे भविष्यवृक्षसे चार व्यवस्थाने भविष्यवृक्षी
कही । चार जो तुम इस बातको यहण करौगे तो १४
जाना कि एलियाह जो शानेवाला था सा यही है ।
जिसका सुननेके कान हां सा सुने । १५
में इस समयके लोगोंकी उपमा किससे टेरखा १६
मे बालकोंके समान हैंजो बाजारोंमे बैठके अपने सुगियों-
17 तब उन प्रकार शरणास्थिित नहीं होती क्योंकि उसने देखा कि उन्होंने वह नहीं होता।
18 बन जाता है, जो तपस्या विद्यमान तपस्या। वह उन्हें बताता है, क्योंकि वह नहीं होता।
19 यह उस प्रकार करता है, जो तपस्या विद्यमान है। वह उन्हें बताता है, क्योंकि वह नहीं होता।
20 तब उन प्रकार शरणास्थिित नहीं होती क्योंकि उसने देखा कि उन्होंने वह नहीं होता।
21 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
22 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
23 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
24 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
25 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
26 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
27 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
28 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
29 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
30 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
31 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
32 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
33 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
34 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
35 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
36 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
37 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
38 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
39 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
40 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
41 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
42 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
43 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
44 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
45 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
46 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
47 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
48 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
49 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
50 तपस्या नहीं होता। हाय तू चौराणी। हाय तू भैतिक।
तूर्णितमे यही होत जा गा। मेरे पिताने मुझे सब २६ कुछ सांपा है और पुत्रकों कौटै। नहीं जानता है केवल पिता और पिताको काँटे नहीं जानता है केवल पुत्र शार जिसपर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे।

हे सब लोगो। की धारणा करते शार लोगों के देव हो २८ श्रेय पता लाया था मुझे किताब देनें। मेरा जूस हो २७ अपने कुल हेला शार मुझे सीधा क्योंकि मेरा नया मनम दीन हू। शार कुम अपने मनम विनाश पाथर में कुलिरक मेरा शुभ सहज शार मेरा शीघ्र हलका है ।

२६ वारहां पुर्ण।

१। गोरखा विषयक विवशा विषयम निर्मित करता। १८ कहकी नया सारा भोजप्रदायका पुरा ठहरा। २२ श्रेयविषय श्रेयताका संदर्भ। २३ मनक स्वामायका वन्धाल ॥ तद् श्रीमान्यविश्वास विशेषत: ॥ १० कहकी धरी वर्ष। १२ गौरवके मुखवाता धरन।

उस समय मे यीशु विशालके दिन खेती में होके गया। शार उसके श्रिक्षे मूखी हो। बालों तोड़ने शार खाने लगे। फरीशियों यह वेशके उस्ते कह देखिये जा काम विनाशके मनम निर्माण करता दिनमें। उसने उनके कहा क्या तुमने नहीं घड़ा है जि दूर्जुदने। जब वह शार उसके संगी लोग मूखी हुए तब क्ष्या किया। उसके कीचांकर ईश्वरकर घरमें जाके भरकी ॥ ७ रात्रियाँ साधः जिन्हे खाना है। उसको न उसके संगीयों को पेरन्तु श्रेयलं यातकोंन दृष्टिक था। शारया क्या तुमने २६ विश्वस्यामे नहीं पढ़ा है कि मन्दिरमें यात्रा लग विनाशके दिनमें विशालवारकी विधिवता राष्ट्र करती हैं शार निर्देश है। परन्तु मे तुमसे कहता हूं कि यहाँ दृष्य
८ एक है जो मन्दिरसे भी बड़ा है। जी तुम इसका करें जानिए कि में दयाली चाहता हूँ, किन्तु नहीं कि तुम निर्दिश्यका देशी न दहराते। मनुष्यका पुचक है शामवारका भी प्रभु है।

९ बहांसे जाके वह उसकी सभाके परमें जाएगा।

१० शैव देखा एक मनुष्य या जिसका हाथ सूख गया या शैव उसके उसके देखा मजाके लिये उससे पूछा कहा कि मनुष्यके दिनोंमें चंगा करना विचित है। उससे उससे वहां तुम्हें से कैसा मनुष्य होगा कि उसका एक-में है शैव जो वह विषाणके दिन गाड़ी मे गिरे तो उसे पकड़कर निकालेगा। फिर मनुष्य भेड़से, कितना बड़ा है। इसी- लिये विषाणके दिनोंमें भलाई करना विचित है। तब उससे उस मनुष्यसे वहां जो आया हाथ बड़ा। उसके उसकी बड़ाया। शैव वह फिर दूसरे हाथकी नाई भला चंगा हो गया।

१२ तब फरोशियांके बाहर जाके श्रीशुकि बिस्तु जापरं।

१३ विषाण भिया इसलिये कि उसे नाश करें। यह जानके श्रीशु बहांसे चला गया शैव बड़ी भीड़ उसके पीछे है।

१४ लिये शैव उसके उसके सभाका चंगा किया। शैव उन्हें तूह साजा दिया कि सुकी प्रगत मत करो। कि जो बचन विशेषह भविष्यद्वारसे वहा गया या सो पूरा होके:

१५ कि देखा मेरा तेषात जिसे भंगे चुना है। शैव मेरा ब्रह्म जिसके मेरा मन जाति प्रविष्ट है। में उत्तरा भावमा उम्मीद रख्या शैव वह जन्म-देशियांसे सत्य ब्रह्म बताओगा।

१६ वह न फहराड़ेगा न धूम समाहिता न सड़कांमें ब्रह्म उत्कर्ष
वह जबलों सत्य ज्ञानान्तरण प्रवक्ता न करे 20 तर्कों। तुझे हुए नरककों न तेहला िसार कुंभा दोनों-हारी जलसीखी न बुकावेगा। िसार सवयं दशी लोग उसको 21 नामपर श्राषा राखेगि।

ि तेव िसार एक भूमयस्त अंधे िसार गुंगे मनुष्यको उस 22 बासे साधिये िसार उसने ती चंगा किया बहालिया कि वह िसार। िसार गुंगा या देखने िसार बलने लगा। इस- 23 फर सब िसार विस्मत हकीके बाले यह खा राजस्तका समतान है। परलु फरीकोणे यह सुनकी कहा यह ता 24 बालाजिबुल नाम भूतांको प्रथानको सहायता बिना भूतांको नहीं निकालता है। योणुने उनकी मनकी बार्ने जानकी 25 चमकि कहा जिस जिस राज्यमें फूट पड़ी है वह राज्य प्रभू नाता है िसार कहीं नगर अच्छा घराना जिसमें फूट पड़ी है नहीं ठहरेगा। िसार यदि िजातन िजातनकी रई निकालता है ता उसमें फूट पड़ी है फिर उसका राज्य कींकर ठहरेगा। िसार जो में बालाजिबुलकी सहाय- 26 नसी भूतांका निकालता हूं ता तुम्हारी संतान निकालते हैं। इसलिये वे तुम्हारी न्याय करेंगर हेंगी। परलु जो में देशवरके आत्माको सहा- 27 यसकी भूतांका निकालता हूं ता मस्तनदेह देशवरका राज्य तुम्हारे पास पहुंच चुका है। यदि वलवन्तको 28 भीरे पहले न बांधे ता कींकर उस वलवन्तको घरें। तेजके उसकी सामग्री लूट सके। परलु उस बांधकी उसकी घरकी लूटेगा। जा मेरे संग नहीं हैं सो मेरे बिस्तु है 30 िसार जो मेरे संग नहीं बठोता सा बिपराता है। इस- 31
लिये भी तुमसे कहता हूँ कि सब प्रकार का पाय चिर निंदा मनुष्योंके लिये दुष्क दिया जायगा परन्तु दुष्क भावे भात्माकी निंदा मनुष्योंके लिये नहीं दुष्क दिया जायगी।

जो कोई मनुष्यके पुत्रकी विवाहमें वात कहे वह उसके लिये दुष्क दिया जायगी परन्तु जो कोई पवित्र भावे भात्माकी विवाहमें कुछ कहे वह उसके लिये न इस लागिरण न वर्लोकमें दुष्क दिया जायगा।

यदि पेड़की सच्चा कहे तो उसकी फलकी भी सच्चा बहे। सच्चा पेड़की लिकम्म। कहे ते उसकी फलकी भी लिकम्म कहे। क्योंकि फलकी पेड़ पहचान जाता है।

है साव्यांके वंश तुम बुरे होके सच्चा वातं क्योंकि कहे हो निकाल- 

ता है चिर बुरा मनुष्य बुरे भंडारसे बुरे वातं निकालता 

ता है। में तुमसे कहता हूँ कि मनुष्य जो चिर अतिथि वातं 

कहे बिचारके दिनसे दर एक वातमा लेखा देंगे। क्योंकि 

तुष्टमी बालिंसे निर्देश सच्चा सपनी वातिंसे दाषी 

वहराया जायगा।

इसपर कितने अध्यापकों चिर फरीदियांने कहा है 

हूँ बुरे हो मनुष्ये एक चिरहे देखते चाहते हैं। उसने उनके 

उत्तर दिया कि इस समके दुष्क चिर व्यभिचारी लीला 

विकल दुर्घटने हैं परन्तु चिरहे दिन उनके नहीं दिया 

जायगा बृहत युगस भविष्यवादका चिन्ह। जिस रीतिसे 

युगस दिन दिन चिर तीन रात महलोंके पीटरम या उसी 

रीतिसे चिरके चिर हो तीन दिन दिन चिर तीन रात मृपिकीमे
भीतर रहेगा। निन्दित लांग विचारके दिनमें इस ४९
समयके झुग्गियों संग खड़े हो उन्हे दोषी ठहरावेगे किंतु
इसीने यूनसका उपदेश सुनके पश्चाताप किया श्यार
देखा यहां एक है जो यूनससे भी बड़ा है। दिनसे की ४२
राष्ट्रीय विचारके दिनमें इस समयके लांगों संग उठके
उन्हे दोषी ठहरावेगे किंतु वह सुलेमानका झान
सुननेको पृथिवीके अन्तते श्यार देखा यहां एक है
जो सुलेमानसे भी बड़ा है।

जब अशुद्ध भूत मनुष्यके निकल जाता है तब सूचे ४३
खानानें विभाग बुझ्ना फिरता पर नहीं पाता है। तब ४४
वह कहता है कि मैं अपने घरमें जहांते निकला फिर
जांजगा श्यार आजे उसे मूना कहा बुझा बुझाया सुधारा पाता
है। तब वह जाके अपने अधिक दुष्ट सात श्यार भूतां ४५
के अपने संग ले जाता है श्यार बे भीतर पैठके वहां
बास करते हैं श्यार उस मनुष्यकी पिछली दशा पहिले से
बुरी होती है। इससमयके दुष्ट लांगों की व्याहः एली होगी।

यीशु लांगिये पाते पाते या किया देखा उसकी माता ४७
श्यार उसके माई बाहर खड़े हुए उससे बोलने चाहते
थे। तब किसीं उससे कहा देखिये झापकी माता श्यार ४८
झापकी माई बाहर खड़े हुए झापसे बोलने चाहते हैं।
उससे कहनेहरिके उत्तर दिया विने री माता कीन है ४८
श्यार मेरे माई कीन हैं। श्यार अपने शिशुभांडी श्यार ४८
झापना हाप बढ़की उससे कहा देखा मेरी माता श्यार मेरे
भाई। किंतू जा श्यार मेरे स्वरूपके मित्रके इच्छापर ५०
झापी बहरी मेरा माई श्यार बहिन श्यार माता है।
उस दिन योगी घरसे-निवासके समुद्रको तीरपर नै चैतक
२. बैठ दिसी बही भीड उस पास एकटी हुई कि वह नाके तः बले देखको बैठा बैर सब लेर तीरपर खड़े रहे। तब उसने उनसे दुम्भतामायें बहुतसी बातें कहीं कि डेक्के एके योगी की बीज बोलनेका निकला। बोलेंगे फिरते योगी बाही भीड़ बैर गिरे बैर पेंकि याहे भाले दबे चुक लिया।
३. योगी पत्थरली भूमिपर गिरे जहां उनका बहुत मिठी जो मिली बैर बहुत मिठी न मिलनें वे बेग उगे। परन्तु सूर्य उदाय होनेपर वे फुलस गये बैर जड़ न पवहनें
४. सूख गये। फिरते कार्टेंके बीचमें गिरे बैर करेंगे
५. बदले उनका दबा हाला। परन्तु फिरते खड़ी भूमिपर गिरे बैर फल फले कैरैं से। गूसरे गाइं साथ गूसे कैरैं
६. तीस गूसे। जिसकी तुननें कान हां सा बुने।
७. तब फिरते उस पास स्मरण उसके कहा जाय उनसे
८. दुम्भतामायें कों बालते हैं। उसने उनका उत्तर दिया कि तमिका श्वेतगे राज्यके भेद जाननेका सम्पत्ति दिया गया
९. परन्तु उनका नहीं दिया गया है। क्योंकि जो बैर रखता है उसका बैर दिया जाय। बैर उसका बहुत होगा परन्तु बैर कैरैं नहीं। रखता है उससे जो कैरैं कैरैं पास है तो भी ले लिया जाय। इसकारण नई
उनसे दूषणात्में बोलता हूँ, क्योंकि वे देखते हुए नहीं
देखते हैं चौर सुनते हुए नहीं सुनते चौर न बूझते हैं।
चौर विषयाहि यह भविष्यादारी उनसे पूरी होती है ।
क्योंकि इन लोगों का भविष्यादारी उनसे पूरी होती है ।
क्योंकि इन लोगों का भविष्यादारी उनसे पूरी होती है ।
क्योंकि इन लोगों का भविष्यादारी उनसे पूरी होती है ।
क्योंकि इन लोगों का भविष्यादारी उनसे पूरी होती है ।
क्योंकि इन लोगों का भविष्यादारी उनसे पूरी होती है ।
होता है। परंतु जिसमें बीज बच्ची भूमिपर बोया गया सो वही है जो बचन सुनके बुकता है शायर वह तो फल देता है शायर बाई सो गुजे कौई साठ गुजे कौई लेस गुजे फलता है।

उसने उन्हें दूसरा दृष्टान्त दिया कि स्वर्गीय राज्य के उपमा एक मनुष्यसे दिखा जाती है जिसने अपने सेतमें बच्चा बीज बोया। परन्तु जब लोग साथे थे तब उसका बैरी आकें गेहूं बीचमं जंगली बीज बंधे चला गया।

जब अंकुर निकले शायर बालें लगीं तब जंगली दाने भी दिखाई दिये। इसपर गृहस्वामी दासानंदे शा उससे कहा है स्वामी क्या ज्ञानने अपने खेतमें बच्चा बीज न बोया।

फिर जंगली दाने उससे कहांसे बाये। उसने उससे कहा किसी बैरीने यह किया है। दासानंदे उससे कहा ज्ञानकी इंतजा होय तो हम जाने उसका बटार लेंगे।

उसने कहा सो नहीं न हों कि जंगली दाने बटारनेमें उनके संग गेहूं भी उद्धार लेंदे। कारनिकां टानीं श्री शायर कारनिकिं समयमें में कारनिकीसे बहंगा पाहिले जंगली दाने बटारके जलानिके लिये उनके गेहूं बांधा परन्तु गेहूं के में खतमें एकटा करी।

उसने उन्हें एक शायर दृष्टान्त दिया कि स्वर्गीय राज्य राईकेएक दानकी नाई है जिसकी खिसी खमानिलेके अपने ही सेतमें बोया। वह तो सब बीजांसे घटा है परन्तु जब बउ जाता तब साथ पाते बड़ा होता है शायर ऐसा पेड़ हो जाता है कि साकाशके पंढी सारे उसकी दालियोंपर हे चारे खाते हैं। उसने एक शायर दृष्टान्त उन्हें कहा कि
स्वर्गका राज्य बमीरका नाई है जिसका किसी स्तोने लेने तीन पसरी छारीमें छिपा रखा यहांलां जि सब बमीर हो गया।

यह सब बातें योगुने दूषान्तोंमें लोगोंसे कहीं श्रीर ३४ निसा दूषान्तसे उनका कुछ न कहा। कि जै बचन श्रीर प्रविष्ठ्युतकासे कहा गया था कि में दूषान्तोंमें अपना मुख खालूंगा जो बातें जगतकी उत्तरालिते गुप रहीं उन्हें वर्णन काहङ्गा तो यूरा होवे।

तब योगु लोगोंका बिदा कर घरमें आया श्रीर उसके ३५ भिखोंने उस पास चा कहा खेतकी जंगली दानरकी दूषान्त्या स्थाय हम समझाईँ। उसने उनका उत्तर दिया कि ३६ श्रीर शोषा बोज बोता है सो मनुष्यका पुष है। खेत तो ३८ संसार है शोषा बोज राज्यके सन्तान हैं श्रीर जंगली बीज दूषके सन्तान हैं। जिस बैरीने उनका बेया सो ३५ जीता है ३८ बाट्नी जगतका अन्त है श्रीर कार्तेहारी सर्वगृहूं हैं। सो ३० बैरी जंगली दाने बटारी जाते श्रीर भागसे जलाये जाते हैं। वैसही इस जगतके अन्तमें होगा। मनुष्यका पुष अपने ३२ दूषके भैजेगा श्रीर वे उसके राज्यमें सब ठाकरके बार्श्चोंका श्रीर कुमारमे करनेहारिकी बटार लेंगे। श्रीर ३२ छन्हें भागके कुंडके दालेंगे जहा रेणा श्रीर दांत पोसना होगा। तब धम्मी लेंग अपने पिताके राज्यमें सूर्यको ३३ नाई चमकींगे। जिसको सुननेको ब्यान हुं को सुने।

फिर स्वर्गका राज्य बेटमें छिपाये हुए धनके समान ४४ है जिसे किसी मनुष्यने पाके गुप रखा श्रीर वह उसके वाणीका कारण जाके अपना सब बुझ बेचके उस खेत-
88 बो माल लेता है। फिर स्वर्गीय राज्य एक योगार्थियों
88 समान है जो जाने भोगियोंका दूरःिक्ता या। उसने जब
एक बड़े मालबा में सो पाया तब जाने अपना सब
बुध बेचको उसे माल लिया।
80 फिर स्वर्गीय राज्य महाजालकी समान है जो समुद्रवे
हाला गया. श्रीर हर प्रकाशकी महालियोंका घर लिया।
88 जब वह भर गया तब ले गया उसको तीरण बीच नामे
श्रीर बैठको राज्य राज्यीको पार्श्वात बीचका श्रीर निं-
88 कमी निकामकीका पंक दिया। जगतको वातातम वैसाही
होगा. स्वर्गदूत राज्ये दुःखा पार्श्वकी बीचमसे बलके
80 बर्तमे, श्रीर उन्हें अगाखे बुरमदे हालेगे जहाँ रोना श्रीर
दांत पीसता होगा।
51 यीशुसे उनसे कहा क्या तुमने यह सब बातें समझीं?
52 ते उससे बोले हाँ प्रभु। उसने उनसे कहा इससमिये हर
एक श्रीराजका जिसके स्वर्गीय राज्यकी शिक्षा पाई है
गूहखो समान है जो अपने भंडारसे नई श्रीर पुरानी
बस्तु निजीकरण है।
53 जब यीशु से सब दृष्टान्त कहे चुका तब वहाँसे बला
58 गया। श्रीर उसने अपने देशमा आ उनकी सभाकी
घरम उन्हें ऐसा उपदेश दिया कि वे सफायी हो
बोले इससके यह ज्ञान श्रीर ये शाश्वतमय कस्मे कहांसे
58 हुए। यह क्या बढ़िया पुढ़ नहीं है। क्या उसकी
आताका नाम मारियम श्रीर उसके भाईयोंका नाम
याकूब श्रीर याशी श्रीर शिमान श्रीर ग्रहेटा नहीं है।
58 श्रीर क्या उसकी सब बाहिर उमरी यहाँ नहीं है। फिर
इसको यह सब कहाँसे हुआ । सो उन्होंने उसके विषय- भव में ठाकर खाई परन्तु यिश्वुने उनसे कहा भविष्यद्वृक्ता ज्ञाना देख चौर अपना घर छाड़कर चौर कहीं निरादर नहीं होता है । चौर उसने वहां उनके ज्ञानवाले भी चौरम बहुत ज्ञानचर्या कर्म नहीं किये ।

६८ चौदहवां पाठ ।

१ येह द्वारिका वेनेहारकी मुत्यु । १५ यथुत्तु बहुत रोगियोंको चंसा करना ।
१५ वां पाठ वहां मनुष्योंका घोंघे भेचने पर गुरु करना । २२ वां पाठ पूरा । ३४ वां पाठ रोगियोंको चंसा करना ।

उस समयमें चैत्यकें राजा हेरोदने यिशुकी कीर्ति । १ कुनी । चौर अपने सेवकोंसे कहा वह तो गोविन चपतिस- 

मा देनेहारा है वह मृतकोंमें से जो अटा है इसलिये 

छापथ्र्यां कामें उससे प्रगट होते हैं । कींकिं हेरोदने 

अपने भाई विलियरको स्त्री हेरोदियाकी कार्य येहनीको 

पकड़कर उसे बांध था चौर बन्दीगृहमें हाला था । कींकिं 

माहनीने उससे कहा था कि इस स्त्रीको रखना तुम्हें 

चंचल नहीं है । चौर वह उसे मार हालने चाहता 

था या लोगांसे दरा कींकिं वे उसे भविष्यद्वृक्ता जानते 

थे । परन्तु हेरोदके जन्म दिनकी सभामें हेरोदियाकी 

पुत्रियोंने सभामें नाच कर हेरोदिया प्रसन्न किया । इसलिये 

उससे किरिया खाकी श्रंगीकार किया कि जो कुछ तू मांगे 

में तुम्हें देंजंगा । वह अपनी माताको उसकाउ हुई बीली 

जोहन चपतिसमा देनेहारका सिर यहां भालमें सुमि 

दीजिये । तब राजा उदास हुआ परन्तु उसकिरियाके चौर 

अपने संग बैठनेहारिके बारेमें उसने देनीकी झाझा किये ।
10 शीर उसने भेजकर बन्दीगृह में योहनका सिर करवाया।
11 शीर उसका सिर घालकर कन्याका पहुंचा दिया गया।
12 शीर वह उसका अपनी मांके पास ले गई। तब उसके शिष्योंने शाक उसकी लेखकी उठाके गाड़ा शीर शाके यीशुसे इसका समाचार कहा।
13 जब यीशुने यह सुना तब नावपर चढ़के। वहाँसे बिसी जंगली स्थान पर बांतमें गया। शीर लेग यह।
14 सुनके नगरानिसे पैदल उसके पीछे हे। लिये। यीशुने निकलके बहुत लोगोंका देखा शीर उनपर दया कर उनके रागियोंका चंगा किया।
15 जब सांस हुई तब उसके शिष्योंने उस पास शा कहा। यह ता जंगली स्थान है। शीर बेला शब्द बोत गई है। लोगों का बिटाको जिज्ञासा की वैवस्तियों में जाके अपने लिये मीजन।
16 माल्ल लेव। यीशुने उनसे कहा उन्हें जानका प्रयोजन।
17 नहीं तुम उनहें खानेका देखा। उन्हें उससे कहा यहाँ।
18 हमारे पास केवल पांच राटी शीर दू। मछली है। उसने।
19 कहा उनको यहाँ मेरे पास लाए। तब उसने लोगोंका पासपर बैठनेकी शाखा दिईं। शीर उन पांच रातियों शीर दू। मछलियों ले शव्गोंकी शीर देखके धम्मबाद किया। शीर रातियों तोड़के शिष्योंका दिईं। शीर शिष्योंने।
20 लोगोंका दिईं। त्या सब खाके नृप हुए। शीर जो ठुकड़े। चच रहे। उन्हें उनकी बारह टाकरी भरी उठाई।
21 जिन्हें खाया लेने स्तियों शीर बालकों। छाड़ पांच सहस्र पुष्पोंके सतरकल थे।
22 तब यीशुने तुरन्त अपने शिष्योंका दूड़ शाखा दिईं कि
जबलों में लोगों का बिदा कह्र तुम नावपर चढ़के मेरे
खागे उस पार जाओ। वह लोगों का बिदा कह प्रार्थना २३
करनेको एकात्मम प्रबंधपर चढ़ गया थी जैसे सान्वैकी वहां
हुआ था। उस समय नाव चढ़के बीच लहराई गई। रातके बाहेर
पहिरको यीशु समुद्रपर चलते हुए उनके पास गया। शिखर २४
लोग उसको समुद्रपर चलते देखके घबरा गये थी जैसे बाले
यह प्रेत है। जैसे दरके मारे चिल्लाये। यीशु तुरन्त उनके
बात करने लगा थी जैसे कहा दादा बांधो में हूं हरी मत।
तब पितारने उसका उत्तर दिया कि हे प्रभु यदि भांपर हैं
तो मुझे भपने पास जलपर जानेको भाला दीखिये।
इसने कहा था। तब पितार नावपरसे उत्तरके यीशु पास २६
जानेको जलपर चलने लगा। परन्तु बयारकी प्रचंड ३०
देखके वह हर गया थी जैसे जब दूबने लगा तब चिल्लाके
बाला हे प्रभु मुझे बचाइये। यीशुने तुरन्त हाथ बढ़ाके ३१
इसको थांभ लिया थी जैसे उसके बाहा हे बज्जपविकासी
कीं सन्देह किया। जब वे नावपर चढ़े तब बयार चढ़ी
गई। इसके जो लोग नावपर थे सा जैसे यीशुकी ३३
प्रचंड करके बाले दीघ समुद्र जाप देखके पुक्त हैं।
वे पार उत्तरके गिनिसेर देखमे पहुंचे। जैसे वहांके ३४
लोगने यीशुकी बिन्हके ज्ञासपासके सारे देखमे बाला
भेजा थी जैसे जब रागियांकी उस पास लाये। जैसे उससे इंसे
विन्ती किए कि वे बाले उसके बस्त्रके आंचलके छूईं
जितने भूली सब चंगे किये गये।
11 पन्द्रहवां पढ़ें।

tab यिक्षलीलीकेितने सध्यापकांः श्रीर फरोशियों- 2 ने यीशु पास जा कहा। शापपंक्ति शिष्यालोग कों प्राचीनोंके व्यवहार लंघन करते हैं क्योंकि जब वे रोयी खाते तब 3 शापने हाथ नहीं धाटे हैं। उसने उनको उतर दिया कि तुम भी किंग शापने व्यवहारांके कारण इंद्रवरकी आशा- 4 का लंघन करते हैं। क्योंकि इंद्रवरने आशा किये कि शापने माता पिताका आदर कर श्रीर जो कहाँ माता 5 शापवा पिताकी निदार करें सो मार डाला जाय। परन्तु तुम कहते हो यदि कहाँ शापने माता शापवा पितासे कहें कि जो कुछ तुमकी मुखसे लाभ होता सो संकल्प किया गया है तो उसकी शापनी माता शापवा शापने पिताका 6 आदर करनेका श्रीर कुछ प्रयोजन नहीं। सो तुमने शापने 7 व्यवहारांके कारण इंद्रवरकी आशा किये उठा दिया है। है कपारियो विश्वायाने तुमहारे विखयमे यह भविष्यांकी 8 शाक्ती बहुत। कि ये लोक शापने मुंहसे मेरे निकट जाते हैं 9 श्रीर होंठि से मेरे आदर करते हैं परन्तु उनका मन मुखसे 10 दूर रहता है। पर वे वृथा मेरी उपासना करते हैं क्योंकि 11 मनुष्यांकी आशा कियों की धर्मांपदेश उहाः सिखाते हैं। 12 श्रीर उसने लोगांके शापने पास बुलाको उनसे कहा 13 शापके बुकी। जो मुंहमे समाता है सो मनुष्याको शाप- 14 विच नहीं करता है परन्तु जो मुंहसे निकलता है साइ 15 मनुष्याको शापविच करता है। तब उसके शिष्याने श्री
उससे कहा क्या शाप जानते हैं किफारीशियांने यह बचन मुनबे ठोकर बाईं। उसने उत्तर दिया किहर एक गाछ जी १३ मेरे स्वर्गीय पिताने नहीं लगाया है उबाड़ जायगा।
उनकी रहने दी। वे धंधोंके धंधे झगुवे हैं, शबर झंडा यदि १४ धंधोंकी मारी बताये तो देखने गहरे मंगे गिर पड़े। तब १५ पिताने उसकी उत्तर दिया कि इस दुःखान्तबा धर्म हमें समकालाई। योग्यता कहा तुम भी क्या जवबों निरुपत्र हो। १६ क्या तुम जवबों नहीं बुकते हो कि जी कुछ सुहास समाता १७ से पैरदर्श माना है शबर संधासमं पंजा जाता है। परन्तु १८ जी कुछ सुहावे निकलता है सो मनसे बाहर जाता है शबर वही मनुष्यको अपविच करता है। कींकी मनसे नाना १९ भांतिकी कुचिन्ता नराहिंसा परसत्र्यगान व्याविचार शबर भूटी साखी शबर देशबरकी निन्दा निकलती हैं। ये ही हैं २० जी मनुष्यको अपविच करती हैं परन्तु बिन घाये हायंसे भेजन करना मनुष्यको अपविच नहीं करता है।
योग्यता वहांसे निकलके सीर शबर सीट्राने सिवानों में २१ गया। शबर देखा उन सिवानोंसे एक कलावों स्थवीने २२ निकलकर पुकारके उससे कहा है प्रभु दाऄटके सन्तान मुक्त दया कीजिये मरी बेटी भूलते भूलती पीड़ित है। परन्तु उसने उसकी कुछ उत्तर न दिया शबर उसकी २३ शिप्यांने श्रा उससे बिनती कर कहा इसकी बिता कीजिये। कींकी वह हमारे वीने वीने पुकारती है। उसने उत्तर २४ दिया कि इसके घरानेकी खेड़े हुईं मेंडांकी खेड़ में जिसके पास नहीं भेजा गया हूँ। तब स्थवीने श्रा उसकी २५ प्रकाश कर कहा है प्रभु मेरा उपकार कीजिये। उसने २६
उत्तर दिया कि लडकोंकी राटी लेके कुत्तोंकी खाने 20 पेंकना खाचा नहीं है। स्तनीने कहा सच है प्रभु तैरी खुदे जा चूरचार उनके स्वामियोंकी मेजसे गिरते हैं सो 28 बात हैं। तब यीशुने उसकी उत्तर दिया कि है नारी तेरा विस्वास बढ़ा है जैसा तू चाहती है वैसही तुम्हे हो। चैर उसकी बेटी उसी पढ़ीसे चंगी हुई।

24 यीशु बहांसे जाके गालीलकी समुद्रकी निकट झाया 30 चैर पल्लेतपर चड़के वहां बैठा। चैर बड़ी बड़ी मिठड़ शपने संग लंड़ां भर्गों गुंगा तुड़ां। चैर बहुतसे चैरी-को लेके यीशु पास आई चैर उन्हें उसकी चरणोंपर 31 दाला चैर उसने उन्हें चंगा किया। यहांलें न कि जब लगानें देखा कि गुंगा बलते हैं तुड़े चंगे बलते हैं लंड़े चलते हैं चैर अंधे देखते हैं। तब चचंभा करके इसायेलकी इंवॉरकी स्तुति किई।

32 तब यीशुने शपने शिष्यांकी शपने पास बुलाके कहा मूके इन लोगोंपर दया झाती है क्योंकि वे तीन दिनसे मरे संग रहे हैं चैर उनके पास कुछ खानेकी नहीं हैं चैर में उनकी भोजन बिना बिदा करने नहीं 33 चाहता हूं न है। कि मार्गों में उनका बल घट जाय। उस-के शिष्यांने उससे कहा हमें इस जंगलमें कहांसे इतनी 34 राती मिलेगी कि हम इतनी बड़ी मिठड़ीका तृप्त करें। यीशु-ने उनसे कहा तुम्हारे पास कितनी रातियां हैं। उन्हांने 35 कहा सात चैर बड़ीसी झटी मड़ियां। तब उसने 36 लोगोंकी मृत्युपर बैठनेकी आज्ञा दिई। चैर उसने उन सात रातियांकी। चैर मड़ियांकी लेके धन्य
मानके ठोड़ा शीर खपने शिष्योंको दिया शीर शिष्यों-ने लोगांको दिया। सा सब खाके तुप्र हुए शीर जो ३० टुकड़े बच रहे उन्होंने उनके सात टाकरे भरे उठाये। जिन्हाँने खाया सा सिंथाय शीर बानकोंको धोड़ चार झार सहस्र पुरुष थे। तब यिशु लोगांको बिदा कर नावपर ३८ चढ़के मगदला नगरके सिवानासें खाया।

सालहयां पढ़े।

१ यीशुका भिन्न संगतेहरेंको अंडतना। २ खपने शिष्योंको फरीदितको मिलाने विवरण भितमा। ३ यीशुका विवरण लोगांको शीर शिष्योंका विवार शीर विधा पिरका प्रभ देना। २१ खपनी मूर्खनका भिविस्मुदा कहना शीर विधा पिरका अंडतना। २४ विधा हकेकी विधि।

तब फरीदितको शीर धरुकियोंनेशियु पास श उसकी परिस्थता करनेको उससे चाहा कि हमें भाकाशका एक धन्य दिखाई पिरहे। उसने उनको उत्तर दिया साम्को तुम कहते हो कि अर्थ होगा कि उनका भाकाश नहीं है शीर भारीको कहते हो कि राज राधी भावी विभिन्न भाकाश लाल धूमला है। हे कपड़ियो तुम भाकाशका धूप बूढ़ काण तुम समयके धन्य नहीं बूढ़ सकते हो। इस तम्मके दुपा शीर भाविचारी लोग धन्य हूंदते हैं परन्तु कोई धन्य उनको नहीं दिया जायगा क्विजु दुनास भाविस्मुदा का धन्य। तब वह उन्हें बोड़के चला गया।

उसके शिष्य लोग उस प्रति पहुँचके रोटी लेना भूल गये। शीर यीशुके उनसे कहा विहा फरीदितको शीर सदृशियोंके सम्बोधने केहको रहे। वे आपसमा विचार करने लगे यह इसलिये है कि हमने रोटी न लिये। यह जानके
योशुने उनसे कहा है श्रापिक्षावस्थिया तुम रोटे न
8 लेनके कारण किंगा आपसमें विचार करते हो। क्या तुम
c्वलकं नहीं बृद्धत हो? श्रार उन पांच सहस्रकं पांच रोटे
नहीं स्मरण करते हो? श्रार कितनी रोकियां तुमने
90 उठाईं। श्रार न उन चार सहस्रकं सतर रोटे श्रार कितने
91 टूकरे तुमने उठाईं। तुम कलं नहीं बृद्धत हो क्या मेंने
तुमकं फरीतिया श्रार सतूरकं कं श्मीरसे चैकस रहे।
92 नक्षा.जि कहा सा रोटकं विश्वमें नहीं कह। तब
उनांकं बुम्मा क्या उसकी रोटकं श्मीरसे नहीं परन्तु फरी-
तिया श्रार सतूरकं कं शिष्यासे चैकस रहनेकं कह।
93 योशुने श्रेयारिया फिलिपीकं सिवानों में चाले अपने
शिष्यांते पूर्वा कि लाग का कहते हैं में मनुष्यकं पुष
94 क्रान हूं। उनांकं कहा कितने ता आपकं येन
वपतितमा देनेहारा कहते हैं कितने एलियाह कहते हैं
श्रार कितने विरामियाह अथवा भविष्यटुका श्रामटिसे एक
95 कहते हैं। उसके उनसे कह। तुम का कहते हैं। में क्रान
96 हूं। शिमान खिरतने उत्तर दिया कि चाप जीवित ईश्वरकं
97 पुष खीरू। योशुने उसकं उत्तर दिया कि है यनसकं
पुष शिमान तो घन्य है किंकं मानं श्रार लोहुंकं नहीं
परन्तु में स्वगेवासी पिताने यह बात तुभयं प्रगत
98 किँई। श्रार में भी तुभसे कहता हूं कि तु द्वार है श्रार
में इसी पत्तरकं अपनी मंडली बनाऊंगा श्रार परलोककं
99 फाटक उसपर प्रबल न हंगें। में तुम्हें स्वगं राज्यकं
कंबिया देंजंगा श्रार जा कुछ तू पृथिवीपर बांधिया सा
स्वगं यंधा हुसा हंगा श्रार जा कुछ तू पृथिवीपर
बोलेगा सै। स्वगीमें खुला हुआ होगा। तब उसने 20 अपने शिष्योंको चिताया कि किसीसे मत कहा कि में यीशु जो हूं तो खोज न हूं।

उस समय यीशु अपने शिष्योंको बताने लगा कि 21 मुक्त ज्ञान है कि यह जिसलोगों में जाऊं शीरा प्राचीनों शीरा प्रधान याजकों शीरा श्रावधारकों से बहुत दुख उठाने शीरा मार डाला जाऊं शीरा में दिन जी उठों। तब 22 पितर उसे लेकर उसको डांटके कहने लगा कि है प्रभु श्राप्पर दया रहे यह तो श्रायको कभी न होगा। उसने 23 मुस्त फेरके पितरसे कहा है शैतान मेरे सामने सूर है। तू मेरे लिये ठाकर है क्योंकि तुम्हें दींगवरको बातको नहीं परन्तु मनुष्योंकी बाताँका साच रहता है।

तब यीशु ने अपने शिष्योंसे कहा यही कोई मेरे पीछे 24 शाने चाहे ता अपनी दिखाकी मारी शीरा अपना क्रूल उठाके मेरे पीछे जावे। क्योंकि जो कोई अपना प्राण 25 बचाने चाहे साह। उसे खालिगा परन्तु जा कोई मेरे लिये अपना प्राण बावे सा उसे पाबुगा। यदि मनुष्य सारी 26 जगतकी प्राण करे शीरा अपना प्राण गंवावे ते। उसकी क्या लाभ होगा। अथवा मनुष्य अपने प्राणकी सत्ती क्या देगा। मनुष्यका पुच्छ अपने उत्तरके संग 27 अपने पिताके ऐश्वर्यमें खालिगा शीरा तब वह हर एक मनुष्यको उसके कायमे अनुसार फल देगा। मैं 28 नूमसे तो कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उनमे से कोई कोई हैं कि जबलां मनुष्यके पुच्छको उसके राजनेसै न. देख तबलां मृत्युका स्वाद न. चिक्खे गए।
17 सचहिन्दा पढ़े।

1 यीशुका जिन्योके ब्राह्मणो लीलावती दिखाई देना। 10 रामलालके धार्मिका प्रार्थ उन्होंने खताना। 14 उन्होंने भूतगाता लड़के अंगा करता और बिख्यातके गुरुभा बपत्र करता। 22 बापोंनी यीशुका भविष्यवादिया कहना। 24 मिलिया कर देनेके लिये बाप्तिस्म कर्म करता।

5 धर दिनके दिने यीशु पितार शीर याकूब शीर उसके भाई योहननके लेकै उन्हें किसी जिंदें परंतुपर उनके लगा। 2 जी गया। शीर उनके बाप उसका पूर्व बदल गया शीर उसका नूतन तहत तुल्य चमका शीर उसका बल्थ ज्योति 3 की नाई उजला हुआ। शीर देखा मूसा शीर एलियाह

8 उसके संग बात करते हुए उनके दिशारें दिये। इसपर पितारने यीशुसे कहा है प्रभु हमारा यहां रहना अच्छा है। यदि आपकी इच्छा होय तो हम तीन हेरे यहां वनावें एक आपके लिये एक मुसाके लिये शीर एक 5 एलियाहके लिये। वह बालानाथी था कि देखा एक ज्योतिमय उद्घाटन उन्हें ब्राह्मण ब्राह्मण उस मेघसे यह शन्दु हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे में भार 6 प्रसन्न हूं उसके सुना। शिष्य ले यह सुनके जैसे

6 मुन्ह गिरे शीर निपट हर गये। यीशुने उन पास आके

8 उन्हें चुके कहा उठे हरे मत। तब उनके अपनी

2 आके उठाके यीशुका देखके शीर जिसीकी न देखा। जब वे उस पर्यंत उतरते थे तब यीशुने उनका झाड़ा दिए कि जबलों मनुष्यका पुत्र मृतकांमें नहीं जी उठें तबलों इस दशेनका समाचार होता हो। यीशुने

10 शीर उसके शिष्योंने उससे यीशु फिर उध्यापक लोग

11 किया कहते हैं कि एलियाहके पहले धान्या होगा। यीशुने
उनकी उत्तर दिया कि सच है एलियाह पहिले जाके सब कुछ सुधारेगा। परमेव में तुमसे कहता हूँ कि एलियाह यह चुका है शीर उन्होंने उसका नहीं चीना परन्तु उससे जा कुछ चाहा सा किया। इस रूपसे मनुष्यका पुज भी उनसे दुःख पावेगा। तब शिविरों बुज्दा कि वह 19 याहून बपतिसमा देनेहरीके विषयमें हमसे कहता है।

जब वे लोगोंके निकट पहुँचे तब किसी मनुष्यने यीशु 14 पास चा घुटने रेखके उससे कहा। हे प्रभु मेरे पुजापर 15 दया कोझिये वह मिर्गिके रोगसे सति पोहित है कि बारबार शाकम्बरे शीर बारबार पानीमें गिर पड़ता है। शीर में उसका चाहके शिविरों पास लाया परन्तु 16 वे उसे चंगा नहीं कर सके। यीशुने उत्तर दिया कि 17 है अविवर्ती शीर हटीले लोग में कबलों तुम्हारे संग रहूँगा शीर कबलों तुम्हारी सहूँगा। उसका यहाँ मेरे पास लाए। तब यीशुने भूतका डांटा शीर वह 18 उसमें निकला शीर लड़का उसी घड़िसे चंगा हुआ। तब शिविरों निरालिमें यीशु पास चा कहा हम उस 18 भूतका कीं नहीं निकाल सके। यीशुने उनसे कहा 20 तुम्हारी अविवर्तीके कारण कींकि में तुमसे सत्य कहता हूँ। यदि तुमकी राईके एक दानिके तुल्य बिवर्त भाव है। ते। तुम इस यहाँसे जै। कहे कि यहाँसे वहां चला जा वह जायगा शीर कोई काम तुमसे असाध्य नहीं होगा। तैभी जो इस प्रकारके हेंती प्राप्तन। शीर उप- 21 वास बिना शीर किती उपायसे निकाले नहीं जातें हैं।

जब वे गालीलमें फिरते थे तब यीशुने उनसे कहा 22
२५ मनुष्य का पुत्र मनुष्योंके हाथमें पकड़वाया जायगा। वे उसकी मार डालेंगे श्रीर वह तीसरे दिन जी उठेगा। इसपर वे बहुत उदास हुए।

२६ जब वेकफैन हमसे पहुँचे तब मन्दिरका कर लेनेहरे पिताके पास श्रीके बेले का तुम्हारा गुरु मन्दिरका कर नहीं देता है। उसने कहा हां देता है। जब पितार घरमें आया तब यीशुने उसकी बालकें पहिले उससे कहा है शिशुमान तू का समक्षता है। पृथ्वीके राजा लोग कर अथवा ग्रिराज किनसे लेते हैं। अपने सन्तान-नींद नासे अथवा परायंसे। पितरने उससे कहा परायंसे।

२७ यीशुने उससे कहा तब तो सन्तान बचे हुए हैं। तैबी जिससे हम उसका ठोकर न खिलायें इसलिये तू समुद्रके तीरपर जाके बंसी डाल श्रीर जा मछली पहिले निकले उसके ले। तू उसका मुंह बालनेंसे एक सप्तैया पाविगा उसको लेके मेरे श्रीर अपने लिये उन्हें दे।

२८ झटारहवां पालने।

१ गय देवनेका उपवेश। २ ठाकर खालिका निवेद। ३१ श्रीर हुई भेड़ का हटायत।

१५ देवों महरसे श्रीके बप्पा चाहिये ब्रह्मा ब्रह्मण श्रीर मंडलीका बाधिकार।

२१ द्राम कन्हेका उपवेश श्रीर निर्भूष डालका हटायत।

१ उसी पहली शिशुने यीशु पास जा कहा स्वर्गके राज्यमें।

२ बड़ा कौन है। यीशुने एक बालको सपने पास बुलाके।

३ उनके बीचमें बड़ा लिया। श्रीर कहा मैं तुम्ह सच कहता हूं। जिसे तुम मन न फिरावे श्रीर बालकोंके समान न हो जावे। ते। स्वर्गके राज्यमें प्रवेश करने न आशीर्वाद।

४ जो कोई अपनेको इस बालकके समान दीन करे साइ।
स्वर्गके राज्यमें बहा है। श्रीर जो कोई नेरे नामसे एक ऐसे बालककी यहण करे वह मुक्ति यहण करता है। परन्तु जो कोई इन बीरांमिने जो मुक्तपर विश्वास करते हैं एकक ठाकर भिलावे उसके लिये मला होता कि चन्द्रका पार उसके गलेमें लरकाया जाता श्रीर वह समुद्रके गहरावमें हुबाया जाता।

ठाकररांके कारण हाय संसार । ठाकरें अवचय १० लगेंगी परन्तु हाय वह मनुष्य जिसके द्वारसे ठाकर लगती है। जो तेरा हाय अध्यवा तेरा पांव तुफ़ी ठाकर भिलावे ता उसे कारको फंक दे । लंगड़ा अध्यवा ठुंडा होके जीवनमें प्रवेश करना तेरे लिये इससे मला है कि दो हाय अध्यवा दो पांव रहते हुए तू जननत झागमें हाला जाय। श्रीर जो तेरी झांख तुफ़ी ठाकर १२ भिलावे ता उसे निकालके फंक दे । काना होके जीवनमें प्रवेश करना तेरे लिये इससे मला है कि दो झांखं रहते हुए तू नरककी झागमें हाला जाय। देखा कि तुम इन बीरांमिने एकक। तुच्छ न जानो १० कोंकं इन तुमसे कहता हूँ कि स्वर्गमें उनके दूत मेरे स्वर्गबासी पिताका मुख नित्य देखते हैं।

मनुष्यका युग खरे हुएका बचानी जाया है । ११ तुम क्या समक्ष है। जो किसी मनुष्यकी सै भेड़ होवें १२ श्रीर उनसे एक भरक जाय ता क्या वह निम्नानवे को पहाड़ियों पर ढाकेसे उस भरकी हुईका नहीं जाके दूःखता है। श्रीर में तुमसे सत्य कहता हूँ यदि ऐसा हो कि वह १३ उसके पावे ता। जा निम्नानवे नहीं भरक गईं थैं उससे।
14 ज्ञाधिक वह उस भेड़के लिये शान्ति करता है। ऐसाही
तुम्हारे स्वर्गवासी पिताको इच्छा नहीं है कि इन
हीरोम्में एक भी नाश हो।

15 यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो जाबे उसके
संग एकांतमें उसकी समझ है। जै वह तेरी सुने तो
16 तूने अपने भाईका पाया है। परन्तु जै वह न सुने तो
एक अथवा दें। जनको अपने संग ले जा कि दू अथवा
17 तीन सालियोंके मुंहसे हर एक बात तहराई जाय। जै
वह उनको न माने तो मंडलीसे कह दें। परन्तु जै वह
मंडलीकी भी न माने तो। तेरे लेबे देवपूजक चैर बहर
18 उगाहनेहारासा हो। मैं तुमसे सच कहता हूं जै बुढ़ा
तुम पृथिवीपर बांधाएंगे से। स्वर्गमें बंधा हुआ होगा चैर
जै बुढ़ा तुम पृथिवीपर खोलांगे ते स्वर्गमें खुला हुआ।
19 हो। फिर मैं तुमसे कहता हूं यदि पृथिवीपर तुमसे
दा मनुष्य जै कुढ़ मांगें उस बातकी विषयमें एक मन
हो। तो। जै उनके लिये मेरे स्वर्गवासी पिताकी चैरसे
20 हो जायगी। क्याकी जहां दा अथवा तीन मेरे नामपर
एकटु हों। तहां मैं उनके व्रीचमें हूं।

21 तब पितरने उस पास जाका कहा ह। प्रभु मेरा भाई कै
ि बेर मेरा अपराध करे चैर मैं उसकी शुरुआ बतू। जा
22 सात बेरलां। यहुने उससे कहा मैं तुमसे नहीं कहता
23 हूं कि सात बेरलां। परन्तु सत्तर गुणी सात बेरलां। इसी
लिये स्वर्गके राज्यकी उपमा एक राजसी दिइ जाती है।
24 जिसने अपने दासिंसे लेखा लेने चाहा। जब वह लेखा
लेने जगा तब एक जन जो दस सहस तड़ि पारता था।
उसके पास पहुँचाया गया। जब कि भर देने का उस पास २५ कुछ न था उसके स्वामीने घासा किसे कि वह शैर उसकी स्ती शैर लड़के बाले शैर जो कुछ उसका था सब बेचा जाय शैर वह जूस भर दिया जाय। इसपर इस चस दासने दंडवत कर उसे प्रशासन किया शैर कहा है प्रभु मेरे विषय में धीरज धारिये में शापको सब भर देंजंगा। तब उस दासके स्वामीने दया कर उसे छोड़ दिया २० शैर उसका जूस ज्ञान किया। परंतु उसी दासने २५ बाहर निकलके अपने संगी दासामेंसे एकको पाया। जो उसको एक सैं तूकी दारता था शैर उसका पकड़के उसका गला दाबकी कहा जो कुछ तू दारता है मुँह के है। इसपर उसके संगी दासने उसके पांचो पड़के उससे बिन्ती २५ भर कहा मेरे विषय में धीरज धारिये में शापको सब भर देंजंगा। उसने न माना परंतु जाने उसे बन्दी गृह ३० में हाला कि जबलों जूसको भर न देखे तबलों वहीं रहे। उसके संगी दास लेगा जो हृदय था सैं देखके ३१ बहुत उदास हुए शैर जाके सब कुछ जो हृदय था शापने स्वामीने बताया। तब उस दासके स्वामीने ३२ उसको शापने पास बुलाके उससे कहा है दुष्ट दास तुम्हे जो मुक्तसे बिन्ती किंदै तो मैंने तुम्हे वह सब जूस ज्ञान किया। सा जैसा मैंने तुकपर दया किंदै वैसा क्या तुम्हे ३३ भी शापने संगी दासपर दया करना उचित न था। शैर ३४ उसके स्वामीने क्रोध कर उसे दंडकारकोंके हाथ सांप दिया कि जबलों वह उसका सब जूस भर न देखे तबलों चनके हाथमें रहे। यूंही यदि तुमसंसे हर एक अपने ३५
झपने मनसे झपने भाईंके झपराप झमा न करे तो। मेरा स्वगीतासी पिता भी तुमसे बैसा झरेगा।

१५ उनीसवां पंजी

१ पवित्रका यागमुक्ता निवेद। २ यहीज्य बाल्यका कालोंका सांवीकरण से नाम। ३ एक धनाठान 
बड़नसे उसकी बातचीत। ४ धनी लेगोंका ऋषाका वर्णन। ५ घरपोखरी
कली प्रार्थना।

१ जब यीशु यह बातं कह चूँका तब गालीजसे जाके 
२ यद्यपि उस पार यिहूदियोंके सिवानांमें आया। शैर 
बड़ी बढ़ी भीढ़ उसके पौधे हो लिजैं। शैर उसने उन्हें 
३ बहां कंगा किया। तब फरोशियोंने उस पास जा उसकी 
परीक्षा करनेको। उससे कहा कसी कारणसे झपनी 
४ स्तीका त्यागना मनुष्यका उचित है। उसने उनकी उत्सर 
दिया का तुमसे नहीं पड़ा है कि सङ्गनाहरने आरंभसे 
५ नर शैर नारी करनेमनुष्यकी उत्पद किया। शैर 
कहा इस इतुसे मनुष्य झपने माता पिताका बोझः 
उसनी स्तीके मिला रहेगा। शैर वे दोनों एक तन होंगे। 
६ उसे यह आगे दे। नहीं पर एक तन है। इसलिये जो कुछ ईश्वरका 
७ रने जोड़ा है। उसके मनुष्य झलक न करे। उसने उससे 
कहा फिर मूसाने की त्यागपत्र दे। शैर स्तीका त्याग- 
८ नेकी आज़ा दियौ। उसने उससे कहा मूसाने तुमसे 
करतारकी कारण तुमका झपनी झपनी। 
९ त्यागने दिया फरलकु आरंभसे ऐसा नहीं था। शैर में 
तुमसे कहता हूँ कि जो कई व्यभिचारके बोझः शैर 
कसी हेतुसे झपनी स्तीका त्यागके दूसरीतिबिवाह करे 
सो परस्तिगमन करता है शैर जा। उस त्यागी हुई।
बिवाह करे तो परस्त्रीगमन करता है। उसके शिष्यों के २० उससे कहा यदि पुरुषों स्त्रियों संग इस प्रकार का सम्बन्ध है तो बिवाह करना श्रद्धा नहीं है। उसने उनसे कहा ११ सब लोग यह बचन यह गया नहीं कर सकते हैं केवल वे जिनको दिया गया है। क्योंकि कोई कोई नमुंदक हैं जो १२ माताके गम्भी ऐसी ही जब श्रीर कोई कोई नमुंदक हैं जो मनुष्यांसे नमुंदक किये गये हैं श्रीर कोई कोई नमुंदक हैं जिन्होंने स्वर्गीय राज्यके लिये अपनें नमुंदक किये हैं। जो इसकी यह गर सब रहे सा यहण करे।

तब लोग कितने बालकों की येशु पास लाये कि वह १३ उनपर हाथ रखके प्रार्थना करे तर्क शिष्यों के उन्हें हांसा। येशुने कहा बालकों मेरे पास जाने दो श्रीर १४ छन्हें मत बर्जी क्योंकि स्वर्गीय राज्य ऐसा है। श्रीर १५ बह उनपर हाथ रखके वहांसे चला गया।

श्रीर देखा एक मनुष्यने उस पास आ उससे कहा है १६ उत्तम गुह जननत जीवन पानें में कीनता उत्तम काम कहता। उसने उससे कहा तू मुझे उत्तम कों कहता है। १७ कोई उत्तम नहीं है केवल एक अधीन इंग्रजवर। याद ज्ञा तू जीवनमें प्रवेश किया चाहता है तो जाना श्रीकों पालन कर। उसने उससे कहा कीन कीन जाना। येशुने १८ कहा यह कि नरहिंसा मत कर परस्त्रीगमन मत कर श्रीरी मत कर मूर्ति साधन मत दे। अपने माता पिताका १८ शादर कर श्रीर अपने पड़ासीको अपने समान प्रेम कर। उस जवानिने उससे कहा इन सभीका मैंने अपने २० लड़ाकपनसे पालन किया है मुझे बच का घरी है।
21 योशुने उससे कहा जो तू सिद्द हुआ चाहता है तो जा 
अपनी सम्पत्ति बिचके बंगालीका दे श्रीर तू स्वगें धन 
22 पावेगा श्रीर ज्ञा मेरे पीछे हो ले। वह जवान यह बात 
सुनके उदास चला गया क्योंकि उसका बहुत धन था।
23 तब योशुने अपने शिष्यांसे कहा मैं तुमसे सच कहता 
कि धनवानका स्वगें राज्यें प्रवेश करना कठिन 
24 होगा। फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ कि देशवर्की राज्यें 
धनवानके प्रवेश करनेसे ऊंटका सूईके नाकेमंसे जाना 
25 सहज है। यह सुनके उसके शिष्यांने निपट अचंभित 
26 हो कहा तब तो किसका चाहा है सकता है। योशुने 
उनके दृष्टि कर उनसे कहा मनुष्यांसे यह अन्तराना है 
परन्तु देशवर्के सब कुछ हो सकता है।
27 तब पिताने उसका उत्तर दिया कि टॉकिये हम लोग 
सब कुछ छोड़के आपके पीछे हो लिये हैं सो हमें का 
28 मिलेगा। योशुने उनसे कहा मैं तुमसे सच कहता हूँ 
कि नई घरिमें जब मनुष्यका पुत्र अपने ऐशवाल्के 
सिंहसनांपर बैठेगा तब तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये 
हो बारह सिंहसनांपर बैठके इस्रायलके बारहकुलोंका 
29 न्याय करोगे। श्रीर जिस किसीने मेरे नामके लिये घरों 
वा भाइयों वा बहिनों वा पिता वा माता वा स्त्री वा 
जिदों वा भूमिका त्यागा हैं सा सी गुरु पावेगा श्रीर 
30 श्रान्त जीवनका ऋधकारी होगा। परन्तु बहुतेरे 
जो जगले हैं पिछले हांगे श्रीर जो पिछले हैं जगले 
हांगे।
स्वागताका राज्य किसी गृहस्थके समान है जो भरकी निकला कि अपने दाखकी बारीमें बनहारांकी लगावे। शीर उसने बनहारांकी साथ दिनभरकी एक एक सूकी मजूरी ठहराकी उन्हें अपने दाखकी बारीमें भेजा। जब पहार एक दिन चढ़ा तब उसने बाहर जाने शीरांकी चाकमें बेकार खड़े देखा। शीर उससे कहा तुम भी दाखकी बारीमें जाओ। शीर जो कुछ उचित होय में तुम्हें देंजागा। सा वे भी गये। फिर उसने दूसरों शीर तोसरे यहरकी निकट बाहर जाके वैसाही किया। बड़ी एक दिन रहते उसने बाहर जाके शीरांकी बेकार खड़े पाया। शीर उससे कहा तुम भी दाखकी बारीमें जाओ। शीर जो कुछ उचित होय सा पासोगे। जब सांभ हुई तब दाखकी बारीके स्वामीने अपने भंडारिसे कहा बनहारांकी बुलाके पिच्चलांसे शारंभ कर चगलां-तक उन्हें मजूरी दे। सा जो लोग बड़ी एक दिन रहते कामपर शीर थे उन्हें नै शीर एक एक सूकी पाइ। तब अगले शीर समका कि हम तिधि पांच्य परलु चगलां-भी एक एक सूकी पाइ। इसकी लेके वे उस गृह- स्पर कुड़कुड़ांके बाले। इन पिच्चलांने एकही बड़ी काम किया। शीर जापने उनका हमारे तुल्य किया है जिन्हें-
93 ने दिनभरका भार श्रीर घाम सहा। उसने उनके से एकका उत्तर दिया कि हे मिच मैं तुमके कुछ जानी करता हूं। क्या तूने मुफ्से एक सूजी लेनको?
94 न ठहराया। अपना ले श्रीर चला जा। मेरी इच्छा है कि हिजना तुमके उतना इस पिलेलो भी दें।
95 क्या सुन्दर उद्धत नहीं कि अपने घनसे जा चाहूं सा कहूं। क्या तू मेरे भले होने की कारण बुरी ट्रिप के?
96 देखता है। इस रूपसे जो पिलेले हैं तो अगले हांगे श्रीर जो अगले हैं। सा पिलेले हांगे क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं। परन्तु चुने हुए शेडेड हैं।
97 योशुने विखरशलीमको जाते हुए मार्गमे बाहर हिशिन्याँ-
98 श्रीर एकांतमे ले जाके उनसे कह। देखा हम विखरशलीमको जाते हैं श्रीर मनुष्यका पुरा प्रधान याजकों श्रीर अध्यापकोंहाँ हाथ पकड़वाया जायगा श्रीर वे उसकी.
99 विश्वको संघ्य ठहरावेंगे। श्रीर उसकी जन्तुदीनोंको हाथ सांपिन्ग कि वे उससे ठठा करें श्रीर कोई मारें श्रीर क्रृष्णपर घात करें। परन्तु वह तीसरे दिन जी उठेगा।
20 तब जबटोके पुरोंको मानाने अपने पुरोंके संग योशु 21 पास का प्रशाम कर उससे कुछ मांगा। उसने उससे कहा तू क्या चाहती है। वह उससे बोली अाप यह कहिये कि अपने राज्यमें मेरे इन दो पुरोंमें एक
22 अपनी देहिनी श्रीर श्रीर दूसरा बाई श्रीर बैठे। योशुने उत्तर दिया तुम नहीं बुफते कि क्या मांगते हो। जिस
क्रोटियसे में पीनेपर हूं क्या हूं तुम उससे पी सकते हो श्रीर जो वयलिसरमा में लेता हूं क्या हूं तुम उससे पी सकते हो।
उन्होंने उससे बहा हम सकते हैं। उसने उससे कहा तुम २३ मेरे कपड़ेसे ता पीटोंगे शीरा जो वयस्किसमा में लेता हूं उसे लेकर परलॉ जिन्हें मेरे पितासे तैयार किया गया है उन्ने छोड़ शीरा सवार जिसकी अपनी दहिनी शीरा अपनी बाईं शीरा बैठने देना मेरा अधिकार नहीं है।

यह सुनके दसां शिव उन दोनोंभाईं योगियां रिसिकायें। २४ योहुने उनकी अपने पास बुलाके कहा तुम जानते हैं कि २५ अन्य देशियोंके अभयार्य लाग उन्हांपर प्रभुता करते हैं शीरा जो बड़े हैं तो उन्हांपर अधिकार रखते हैं। परलॉ तुम्हारें २६ ऐसा नहीं होगा पर जो काई तुम्हारे में बाहा हुआ। चाहे सिं तुम्हारा सेवक होवे। शीरा जो काई तुम्हारे में प्रधान हुआ २७ चाहे सिं तुम्हारा दास होवे। इसी रीति मनुष्यका पुष्च २८ सेवा करवानेकी नहीं परलॉ सेवा करनेकी शीरा बहुतोंके बद्दलकी दाममें अपना प्रायः देनेकी आया है।

जब वे यिरहैं नगरसे निकलते थे तब बहुत २९ लाग योहुने पीछे हो लिये। शीरा देखा दा अंधे जो ३० मार्गकी शीरा बैठे थे यह सुनके कि यिरहै जाता है पुकारके बाले है प्रभु दाजटकी सत्तान हमपर द्या कोजिये। लागाने उन्हें दांता कि वे चुप रहें परलॉ उन्हांने अधिक ३१ पुकारा है प्रभु दाजटकी सत्तान हमपर द्या कोजिये। तब योहुं ढबा रहा शीरा उनका बुलाके कहा तुम ३२ क्या चाहते हैं कि मैं तुम्हारे लिये कभी। उन्हांने उससे ३३ कहा है प्रभु हमारी आंखें खुल जायें। योहुने द्या ३४ कर उनकी आंखें खुले शीरा वे तुरंत आंखिंसे देखने लगे शीरा उसके पीछे हो लिये।
21 इकाईसवां पावे।

1 धीरज विष्णुलोकम बाना। 12 धीरजस्थान का मन्दिर से निकलाना और भाष्यान्वय न करने का कार्य। 13 गुलाल वसुलोकम बाना वैसा और विष्णुलोक का धर्म करना। 14 प्रथम यात्रीकमा निर्देश करना। 15 ऐसा पुराणका दृष्टान्त। 16 यह अगुलाल वसुलोक।

1 जब वे यम्बोलीमके निकट चार जैतुन प्रवेशकर समीप बैठते गांव पास पहुँचे तब यीशु दाची शिष्योंको।

2 यह कहने मेजा कि जै गांव तुम्हारे सम्बन्ध है उसमें जाओ चौरक तुम तुरंत एक गद्दी बंधी हुई चौर उसके साथ बद्दोंको पाठ गेड़े खालके मेरे पास लाओ। जै तुमसे कहें कुछ कहे तो कहा कि प्रभु का इनका प्रयोजन है तब वह तुरंत उनके मेजे। यह सब इसलिये हुआ विष्णु का बचन भविष्यद्वाता कहा गया या सा पूरा हो विष्णुकी युक्ति कहा देख तेरा राजा नस्ल चौर गद्दीपर हां। लाटू के बद्दोंपर बैठा हुआ तेरे पास आता है। तो शिष्योंने जाके जैसा यीशु उन्हें खाला।

3 दिन बैठा किया। चौर वे उस गद्दीको चौर बद्दोंको लाये चौर उपर अपने कपड़े रखके यीशु उनपर 8 बैठाया। चौर बहुते लोगोंने अपने अपने कपड़े मार्गमें बिखाये चौर चौरी वृक्षात्र दृष्टिपत्र हालियां काटके मार्गमें बिखाये कहें। चौर जो लाग बहुत पीछे चलते थे उन्हें उपकारको कहा दाजुदको सत्तामनी जय। पच्च वह जै परमेश्वरके नामसे। आता है। सबसे उंच स्थानमें जयते। है।

40 जब उसने यम्बोलीममें प्रवेश किया तब सारे नगरके

41 निवासी घबराके बाले यह चौर है। लोगोंने कहा यह गालिकाके नाशरत नगरका भविष्यद्वाता यीशु है।
यीशुने ईश्वरके मंदिरमें जाके जो लाग मंदिरमें १२ बेचते श्राई मेल लेते थे उन समेंको निकाल दिया श्राई सरोगोंके पीढ़ाङ्को श्राई कपोतिंको बेचनेहारेरंगी चैकियांको उलट दिया । श्राई उनसे कहा लिखा है कि मेरा १३ घर ग्राफेलिका घर कहाँवेगा । परलू तुमने उसे डाकूङ्को खो बनाया है । तब जन्ने श्राई लंगड़े उस पास १४ मंदिरमें आये श्राई उसने उन्हें चंगा किया । जब प्रधान १५ याजकों श्राई अध्यापकोंकी इन बातमयी काममंकों को उसने किये श्राई लड़ाङ्को जो मंदिरमें दाजङ्को सन्तान- की जय पुकारते थे देखियां तब उनने रिसियांके उससे कहा क्या तू सुनता कि ये क्या कहते हैं । यीशुने उनसे १६ कहा हाँ । क्या तुमने कभी यह वचन नहीं पढ़ा कि बालकों श्राई दृष्ट रोही लड़ाङ्को मुहम्मद तुम्हे सूचित करवाई है । तब वह उनहें बाइड़े नगरके बाहर १७ बिधियांको गया श्राई वहां रिकाः ।

भीरकी जब वह नगरके फिर जाता था तब उसको १८ मूङ्क लगी । श्राई मार्गमें एक गुलरका वृक्ष देखके बह १८ उस पास आया परलू उसमें श्राई कुछ न पाया बेचल पते श्राई उसको कहा तुमसे फिर कभी फल न लगे ।

इसपर गुलरका वृक्ष तुरंत सूख गया । यह देखके श्राई- २० बिधियांसे अच्छे कर कहा गुलरका वृक्ष क्या ही शीघ्र सूख गया । यीशुने उनको उतर दिया कि मैं तुमसे तच कहता २१ हूँ जो तुम बिश्वास करो श्राई संदेह न रखो तो जो इस गुलरके वृक्षसे किया गया है बेचल इतना न करोगे परलू यदि इस पहाड़े कहाँ कि उठ समुद्रमें गिर पह तो
२२ बैसाही होगा। श्रीर जो छुड तुम विश्वास बारे प्राचना
में मांगे से लाकरोगा।
२३ जब वह मंदिरमें गया श्रीर उपदेश करता था तब
लोगोंके प्रवाह याजकों श्रीर प्राचीनोंने उस पास जा
कहा तुम्ही ये काम करनेका बैसा वाधिकर है श्रीर यह
२४ वाधिकर कितने हुक्को दिया। यीशुनें उनको उत्तर दिया
किमें मे तुमसे एक बात पूछूँगा जी तुम मुखे उसका उत्तर
देखा। तो मे मे तुम्हें बताऊँगा कि मुफ्ते ये काम करनेका
२५ बैसा वाधिकर है। यीशुना पपितिसमा देना बहारे
हुआ स्वरूपी जनवा मनुष्योंको श्रीरसे। तब वे आपसमें
विचार करने लगे फिक्ता। हम कहें स्वरूपी श्रीरसे तो वह
हमसेहु फिर तुमने उसका विश्वास किं नहीं किया।
२६ श्रीर जो हम कहें मनुष्योंको श्रीरसे ता हमें लोगोंका इर
२७ है क्योंकि सब लाग यीशुनको भविष्यद्वाका जानते हैं। तो
उन्होंने यीशुको उत्तर दिया कि हम नहीं जानते। तब
उसने उनसे कहा तो मे मे हम नहीं बताता हूँ
कि मुफ्ते ये काम करनेका बैसा वाधिकर है।
२८ तुम कहा समझते हो। किसी मनुष्यको दो पुछ थे श्रीर
उसने पहिले पास जा कहा है पुछ जा जे मेरी दाखबी
२९ बारोमें जाकर काम कर। उसने उत्तर दिया मे जानंगा
३० परंतु पीछे पछताके गया। फिर उसने दूसरे पास जा-
के बैसाही बहा। उसने उत्तर दिया है प्रभु मे जाता आईं
३१ परंतु गया नहीं। इन दोनोंमें निस्तने पिताकी इख्छा
पूरी बिभी। वे उससे बाले पहिलेने। यीशुके उनसे बहा मे
तुमसे सच कहता हूँ। किव्हर उगाहलहरे श्रीर बेहया तुम-
से ज्ञाने ईश्वरके राम्यमें प्रवेश करते हैं। किंतु गोस्वामी ने वह ्
धम्मके मार्गि तुम्हारे पास भाया श्रीर तुम उसका
विश्वास न किया परन्तु श्रीर उगाहनेहारों श्रीर बेद्यागे-
झूंने उसका विश्वास किया श्रीर तुम लग यह देखके
घीसे भी नहीं प्रबतते कि उसका विश्वास करते।

एक श्रीर दृश्यान्त सुनो।एक ग्रहस्य पा जिसने दाखको इन
बारी लगाई श्रीर उसका चहुं श्रीर बेड़ दिया श्रीर
वसमें रसका कुंड खोदा श्रीर गढ़ बनाया श्रीर मालिये-
यांको उसका ठीका दे परदेशको चला गया। जब इने
फलका समय निकट भाया तब उसने झपने दासिंको
उसका फल लेनेको मालियेर्यांको पास भेजा। परन्तु इने
मालियेर्यांको उसकी दासिंको लेके एकका मारा दूसरको
भात दिया। श्रीर तीसरेको पत्त्रवाह किया। फिर इने
उसने पहले दासिंको अधिक दूसरे दासिंको भेजा श्रीर
उन्होंने उनसे भी वैसा ही किया। सबके पीछे सच्छे यह इन
श्रीर झपने पुनरी गये उनके पास भेजा कि वे मेरे पुनर्रोक
आदर करें। इन्का। परन्तु मालियेर्यांको उसके पुनर्रोक देखके इन
श्रीर दासिंको कहा यहं तो अधिकारी है भाया हम उसे मार
हाले श्रीर उसका अधिकार ले लें। श्रीर उन्होंने उसे इनके
दासिंको बारीसे बाहर निकालके मारा डाला। इसी-
जब दासिंको बारीको स्वामी भाये तब उन
मालियेर्यांको कहा करेंगा। उन्होंने उससे कहा वह उन
लेंगांको बुरी रोतिसे नाश करेंगा श्रीर दासिंको बारीका
ठीका दूसरे मालियेर्यांको देगा। फलेंको उनके समयमें
इसे दिया करेंगे। योगसे उनसे कहा कहा तुमने कभी ४२
प्रमोदपुस्तकम् यह बचन नहीं पड़ा कि जिस पत्यरक्षा धावर्योंने निकम्मा जाना वही कानेका दिसा हुई है। यह परमेश्वरका काल्याण है श्रीर हमारी दृष्टिमें सुदृढ़ है।

83 इसलिये में तुससे कहता हूँ किड़ीश्वरका राज्य तुससे ले लिया जायगां श्रीर श्रीर लेगांका दिया जायगा जो उसके फल दिया करेंगे। जो इस पत्यरक्षा गिरिका से चूर ही। जायगां श्रीर जिस किसीपर वह गिरेगा उसके पोस्तडाले-

85 गा। प्रधान याज्ञवल्क्यों श्रीर फरीदियांने उसके दृष्टान्तोंका सुनके जाना कि वह हमारी विश्वमें बोलता है। श्रीर उन्होंने उसे पकड़ते चाहा परन्तु लेगांसे दे क्योंकि वे उसके भविष्यद्वारा जानते थे।

22 बाइसवां पाशे।

1 विवाहके बेवका दु:ग्रान्त। 15 योगका खर देनेके विवाहमें फरीदियांका निकस्तर करता। 22 श्री उच्चरके विवाहमें सुर्विकांका निकस्तर करता। 83 श्रीर खर विवाहमें द्वारमें खावालाका उत्तर देना। 81 अपनी पद्धतीमें विवाहके निकस्तर करता।

2 इसपर यीशुने फिर उनसे दृष्टान्तोंमें कहा। स्वर्गीया राज्यको उपमा एक राजसे दिघे जाती है जो अपने

3 पुचका विवाह करता था। श्रीर उसने अपने दासांका मेजा कि नेवतहारियांका विवाहके मोजमें बुलावी परन्तु

4 उन्होंने जाने न चाहा। फिर उसने दूसरे दासांका यह बाहके मेजा कि नेवतहारियांसे कहा देखा मैंने अपना मोज तैयार किया है। श्रीर मेरे बैल श्रीर मोर पुल मारे गये हं। श्रीर सब कुछ तैयार है विवाहके मोजमें बाजारा।

5 परन्तु नेवतहारियांसे इसका कुछ सेवन किया पर कोई अपने खेतका श्रीर कोई अपने व्यापारका चले गये।
छायांने उसके दासोंका पकड़के दुर्दशा बारें मार हाला। इस ग्रहणात राजाने श्रीर किया श्रीर जपन सेना भेजके वन हत्यारोंका नाश किया श्रीर उनके नगरका पूर्व दिया। तब उसने जपने दासोंसे कहा बिवाहका मार तो तैयार है परन्तु नवतहरी योग्य नहीं ठहरे। इस-जिने चौऱाहोंमें जाके जितने लग तुम्हें मिलें सभींका विवाहका मारमें बुलाई। सो उन दासोंने मारामें जाके १०० क्या बुरे क्या मले जितने उन्हें मिले सभींका एकटो किया श्रीर बिवाहका स्थान जेवनहरियोंसे भार गया। जब १६१ राजा जेवनहरियोंको देखनेका भोतर भाया तब उसने वहां एक मनुष्यको देखा जो विवाहीय बस्त नहीं पाहिने हुए था। उसने उससे कहा है जिन तु १२ यहां विना विवाहीय बस्त पाहिने क्योंकर भोतर भाया। वह निर्दयु हुआ। तब राजाने तेवकोंसे कहा १३ इसके बाय पांच बांधा श्रीर उसको ले जाके बाहरके बंधकारमें हाल देखो जहां राजा श्रीर दांत पोसना होगा। क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं परन्तु चुने हुए १८ बाढ़े हैं।

तब फरीश्चित्योंने जाके भायसमें बिवाह किया इस-१५ लिये कि योग्या बातमें फंसाये। तो उन्हें अपने १६३ शाखियोंको हेरो दियोंके संग उस पास यह कहनेको भेजा किसी हुई देखा हानी हैं कि भाय तत्त्व हैं श्रीर इश्वर-क्षा मारूं सत्यतासे बताते हैं श्रीर किसीका खरका नहीं रखते हैं क्योंकि भाय मनुष्यका मुंह देखके बात नहीं करते हैं। तो हमसे कहिये भाय क्या समक्ष हैं। १६
२८ कैसरकीं कर देना उचित है ज्ञानवा नहीं। योगुने उनकी
दुष्टुता जानकी कहा है कपरियों मेरी परीक्षा कीं करते
२९ है। करका मुदा सुक्की दिखाई तद वे उस पास
२० एक सूकी लाये। उसने उनसे कहा यह मूडी सूरा
२१ जाप क्रिसकी है। वे उससे बाले कैसरकीं। तब उसने
उनसे कहा ता जो कैसरकी है तो कैसरकी देशा सूरा
२२ जा इंशवरकी है सो इंशवरकी देशा। यह सुनके वे
श्रद्धिकए हुए सूरा उसकी बाड़को चले गये।
२३ उसी दिन सटूकी लाग जो कहते हैं कि मृत्तकोंका जी
उठना नहीं होगा उस पास ज्ञाने सूरा उससे पूछा।
२४ क्यों है गुह मूसाने कहा यदि कौई मनुष्य निस्कासन मर
जाय ता उसका भाई उसकी स्तीसे विवाह करे ज्ञान
२५ ज्ञाने भाईके लिये बंण भाड़ा करे। सो हमारे यहां सात
भाई चे। पालिके भाईने विवाह किया ज्ञान निस्कासन
जानने अपनी स्तीको ज्ञाने भाईके लिये बड़ा।
२६ उसके ज्ञाने तीसरे भाईने भी सातवः भाईतथा वैसाही
विया। सबके पीछे स्ती भी मर गई। सो मृत्तकोंके जी
उठनेर वह इन सातांसे क्रिसकी स्ती होगी किया।
२७ सबके उससे विवाह किया। योगुने उनकी उत्तर दिया
कि तुम धर्मस्कृतज्ञ ज्ञाने इंशवरकी शक्ति न बुझके भूलने
३० पड़े है। किया कि मृत्तकोंके जी उठनेर वे न विवाह
करते न विवाहदिये जाते हैं पर नाट्यस्वर्गें इंशवरके दूरीति
३१ समान है। मृत्तकोंके जी उठनेर विशयसं सहा सुमने यह
३२ बचन जो इंशवरने तुमसे कहा नहीं पढ़ा है। कि मैं
इिवाहिमका इंशवर ज्ञाने इसहासको इंशवर ज्ञाने याकूब-
का इंद्रवर हूँ। इंद्रवर मृत्युकंणा नहीं परन्तु जीवतोंका इंद्रवर है। यह सुनकर ले असके उपदेशसे सच्चिमित 33 हुए।

जब फरीशियांने सुना कि यीशुने सटूकियांको निख- 38 तर किया तब ते पकटे हुए। श्रीर उनमसे एकने जो 39 व्यवस्थापक था उसकी परीक्षा करनेका उसके पूछा है 38 गुरू व्यवस्थामें बड़ी आज्ञा ओन है। यीशुने उसके कहा तू 39 परमेश्वर धने इंद्रवरको धने सारे मनसे श्रीर धने सारे प्राप्तसे श्रीर धने सारी बुझिसे प्रेम कर। यही 39 प्रहिली श्री बड़ी आज्ञा है। श्रीर दूसरी उसके समान 36 है अर्थात तू धने पड़ासीको धने समान प्रेम कर। इन्द्रा आज्ञा ओसे सारी व्यवस्था श्री भविष्यवट्टाकोंका 40 पुस्तक सम्बन्ध रखते हैं।

फरीशियांके एकठू होते हुए यीशुने उनसे पूछा। 41 छोपुके विषयमें तुम क्या समझते हो। वह जिसका पुल 42 हैं। वे उससे बोले दाजुरुका। उसने उससे कहा तो दाजुरु 43 भोंकर शान्त्माकी धिश्यासे उसका प्रभु कहता है। कि 44 परमेश्वरने मेरे प्रभुसे कहा जबलों में तेरे शिष्यांको तेरे चर्चरोंकी पीड़ि न बनाए जबलों तू मेरी दहिनी श्रीर बैठ। यदि दाजुरु उसे प्रभु कहता है ते वह उसका 45 पुल भोंकर है। इसलिए उत्तरमें कोई उससे एक वात 46 नहीं बोल सका श्रीर उस दिनसे विसोंकी फिर उससे कुछ प्रसन्नका साहस न हुआ।
यह तेही सबां कपने।

1 बध्यापकोंकी गिंती और वेलवालके विषयमें योग्यता उपेक्षा। 13 उसका सच्चापकें और फरीशें अनावरत वेंने। 14 विषयमन्दके नाथ बलकी भविष्यावधी।

1 तब भीघ लोगोंसे प्रेम अपने शिल्पसंसे कहा।
2 सच्चापक प्रेम फरीशिके लग मलबे धारानपर बैठे हैं।
3 इसलिये जा वाह वे तुम्हें मानसीया कहें तो मात्र प्रेम प्राप्त करे। परन्तु उनको शक्तिकी घनुसार मत करे।
4 किंकिते वे कहते हैं प्रेम करते नहीं। वे मात्र बोधे वांछते हैं जिनका उठाना कठिन है प्रेम वहें मनुष्योंकी बांधकर घर देते हैं परन्तु उन्हें अपनी उंगलीसे भी सर-भाल नहीं चाहते हैं। वे मनुष्योंकी दिखाने को लिये अपने इ सब जम्मे करते हैं। वे अपने गर्बोंका शान्त करते हैं। जीवनारोंमें उन्हें शान और सभाके परोंमें उन्हें शासन प्रेम बाँधरोंमें नम-स्कार प्रेम मनुष्योंसे गुंज गुरु कहलाना उनकी प्रिय
5 लगते हैं। परन्तु तुम गुरु मत कहलाजो किंकिते तुम्हारा।
6 एक गुरु है अर्थात स्थूल प्रेम तुम सब माई है। प्रेम पृथियापर विकारीको अपना पिता मत कहो किंकिते।
7 तुम्हारा एक पिता है अर्थात वही जो स्वर्गमें हैं। प्रेम गुरु भी मत कहलाजो किंकिते तुम्हारा एक गुरु है अर्थात स्थूल।
8 जो तुम्हारमें बांछ हो सा तुम्हारा सेवक होगा।
9 जो बड़ी अपनेका ऊंचा करे सा तो चाने बिखा जायगा प्रेम जो कोई अपनेका नीचा करे सा ऊंचा बिखा जायगा।
10 हय तुम कपरी अध्यापकों प्रेम फरीशियों तुम मनुष्योंपर स्वर्गका रामका द्वार मूनते है। न बापही।
उसमें प्रवेश करते है। चीर नामध्वजक्रमेहारिकों के प्रवेश करने देते है। हाय दुम कपड़ी सबापको। चीर फरी- 14 बिच्याँ। दुम निध्वजानंद करा जाते है। चीर बहानामें जिन्हें बाहर छोररों भ्रमण करते है। इसलिए दुम क्षिप्रक 0 
बुद्धिमानो। यद्यतुम कपड़ी सबापको। चीर फरीशिव 15 
तुम एक बहानामें संतोषकारिको। सावधान तृण चीर बेदीर न्याय हो। चीर ज्ञान बह भले मस्तमे उल्लास है। तब उसमें चर्चण अपनी तूमना सावधान बोधण बनाते है। हाय भई 
दुम अनन्य अवश्य हो। हाय बहुत ह। यदि बाहर मन्दिरका 
किरिया बायं ती कुछ नहीं है परतु यदि कई मन्दिर- 
के सानकी किरिया बाय ता चुजी हो है। हे मूकी चीर 17 
शब्दा। कीन बड़ा है वह सोना खपत वह मन्दिर जो 
सानकी प्रविष्ट करता है। फिर कहते हो यदि कोई वर्ष 
बेदीकी किरिया बायं ता कुछ नहीं है परतु जो चढ़ावा 
बेदीपर है यदि कोई उसकी किरिया बाय ता चुड़ी 
है। हे मूकी चीर। अनन्य कीन बड़ा है वह चढ़ावा 18 
लक्षणा वह बेदी जो चढ़ावीको प्रविष्ट करती है। इसकिए 
जा बेदीकी किरिया खाता है सा उसकी किरिया चीर 
जू कुछ उसपर है उसकी भी किरिया खाता है। चीर 20 
जा मन्दिरकी किरिया खाता है सा उसकी किरिया चीर 
जू उसमें बाह्य करता है उसकी भी किरिया खाता है। चीर 
जा स्नेतकी किरिया खाता है। इंद्रके सिंहासन- 22 
की किरिया चीर जा उसपर बैठा है उसकी भी किरिया 
खाता है। हाय दुम कपड़ी सबापको। चीर फरीशिव 23 
तुम ग्रामी। चीर चाको जेरीका द्वारां टूटा देते है।
परन्तु तुमवे ब्रजस्वामि-मारी सोतींची अभेदतम्याथून शीर द्या शीर बिश्रासको बोड टिया है। इन्हे कराना शीर नव न चोडावा उचित या। हे जाने प्रसुरके ज्ञो मंडळाचा।

28 झार झार । शीर छंदो, निमित्त नेह । हय तुम कपटी अध्यापका शीर फरोशिया, तुम झूल फैरे हुई कबरेंचे समाज हा। श्री वाहसे सुदर दिखाई देती है परंतु मीतर मुक्तकांबी हर्षके से शीर सुप्रभाव-अभी मलिनतस्वे भरत है। इसी रोशनी सुगी भी बाहरती मनुजोबाबा सप्तमी दिवारे देत हो। परम्तु मीतर कपट शीर।

29 अध्यापके भरत हो। हय तुम कपटी अध्यापके, किंवा फरोशिया तुम भविष्यद्वारकांबी कबरे वनाते हो। शीर

30 धार्मिकांबी कबरे संघारते हो। शीर कहते हो वाहु हम अपने पितरंजी दिनामे होते ता भविष्यद्वारकांबी लंघू।

31 बहानेमें उनके संगी न होते। इसीसे तुम अपनेपर सादो देत हो वितुम माहिष्यद्वारकांबी, पहाटकांबी सकतान हो। सी तुस अपने पितरंजी, नुका, बहरा। हे सध्य अन्वे सार्वं भाषे तुम शरणाबि दंडबो वेधं बेवी । 

32 इसलिमे देखा ते तुमाहरे पास माहिष्यद्वारकांबी किंवा बुद्धमानां शीर अध्यापकांबी भंडात हू जोर। तुमें उनके मिळे वितरणां हारी दालाने शीर श्रृणुर चढायो हो शीर फिरतोपाय आपाती ब्रह्मचारिंनी, खोडे, मालगो वीरंगन.
त्रिगल सतरथियां। कि धार्मिक आर्यवर्थी लोहू लेके नगर उसर निर्माणके पुल जिलारियाहके लोहू तुलने मन्दिर श्रीर बैठी युंगः मार खाला जितने प्रार्थना लेह हृदय युगपिदो प्रह्य घाया जाता है तब तुमस्य पर हूँ। तुमस्य कह रघु भाबा हूँ यह सब बातें इसी समय में लोगों यहाँ हैं। विश्वासिय। विश्वासिय श्री महाराज़ा- इस चानको मार हाजार है श्रीर जो त onPause ना जे गये हैं उन्हें पत्थरवाह करती है जैसे सुनी घटने बीड़को बंधनों नीचे एक एक करती है वैसी मैं सी बीतां ते वर साल बांटका एक एक करनें इसका बिड़ता पर सुना हु तुमने न चाहा।

देखा तुम्हारा पर तुम्हारी लिये उजाड़ छोड़ा जाता है। इस बांटको मैं सबसे बहुत हूँ जबलसू तुम न कहाएँ धन्य इस बहु जो परमेश्वर के नाम से श्रायत है तबलें तुम सुके जबसे फिर न देखाई।

28 चावीणिवां पवन।

1 मन्दिरसे मार बैठको महाविभाव श्री। 2 यह समक्ष किन्तु। 3 गिम्योकार चढ़ा त्राया। 15 पत्रहुँ लेगा बाधा कह पार्वती। 13 भूत दुखारो ढाल। बंधन। 25 खुदा हुसेन ब्रह्मा बहान। 22 अवरोह कृपाहीं दुष्ट भ्रान्तं। 36 बलप्रवर्तक चभ बनासकी चमका। 32 केशर रक्षक उपेक्षा श्री दार्शनका, दूर्गाना।

जब यीशु मन्दिर से निकलके जाता था तब उसके श्रीका ले उसके मन्दिरको चलना दिखाईं। उस पार्श्व श्राय। यीशु उनसे कहा कहा तुम यह सब नहीं देखते। हैं। मैं सबसे तर कहता हूँ यहां पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ा जाया जा धरणा न जाया जा।

जब जैसे तृतीय पर्व बेटा था। तब श्रीमन्ने निराले में उस पास आ। कहा हमासे काहई यहूँ-कब होगा। ओ।
8 यकुने उनकी उत्तर दिया वैकल्पिक राहु कि कोई तुम्हें मुझे भर गाय। कोई भी बहुत सोच रहे कि क्या आप बाहर न रहो।
9 दो बार बहुत जरूर भर गाय। तुम दोबारा कॉलर लड़ाई करें। चीर का लड़ाई करें। चीर नहीं होगा।
10 यह सब दु:खिया ज्ञात होगा।
11 तब बहुत बढ़ातये। आप नामकरण कर दिये। वे बहुत ठहर जाते।
12 नये नामकरण कर। इसे नामकरण कर।
13 कहा जांच की संख्या रहे सोईं चाका प्राङ्गिया। चीर राज- वक्ता। यह सुविधा चाहे। नवीन वाली। जागरण।
14 सा जब तुम उस जालनेहारी विनिमय कसुरी मिस-
15 की बात दानिगेन महिष्यतुषको कहीं गई प्राचीन सवारीं
16 खड़े होते देखा (जो पहले सा बुलौ)। तब जीवन निहितया में
17 उन्होंने सा पहले हार भरे। कॉलर है। सा बापन घर-
18 रेंगे कुछ होनेको न उतरे। चीर बी बेसमें है। सा बापन घर-
19 कुछ नहीं बोली। व्यापार उन्हें हाय। हाय हाय।
20 चतुर्वृत्त चीर दूध पिलाने वालीयाँ। परन्तु प्राथमिक स्तर
क्योंकि उस समय ऐसा महा होता होगा जैसा सहजः जगतः कथितः २५ । आरंभांकं आचारं न हुक्ता कैर अर्थे जगतः न होगा । जो बै २५ । दिन । दिन जगते न जाते तैं कैराइ प्राप्तः न बजाता परस्पर ।

तब यदि कैराइ तुमसे कहे देखि सीमा प्राप्त हैं कारका २४ वहाँ है तौ प्रतीति मत कराँ । क्योंकि सूटा । सीमा कैराइ २५ । सूरे । भविष्यद्वाता प्रगटे हैं को ।

उसकी ज्ञात तुमसे कहे देखि जंगलमें हैं तौ नाहर २५ ।

वहाँ सीमा आचारा देखि बाहर रहे तथा प्रतीति मत करे । क्योंकि तैं बिज्ञें पूर्वां लिखातीं कैराइ २५ । प्रहतियोगें बमभकति हैं तौ प्रतीति मत करे ।

उसकी ज्ञात तुमसे पीछे भी हरें हैं । उसकी ज्ञात तुमसे पीछे भी हरें हैं । क्योंकि तैं बिज्ञें पूर्वां लिखातीं कैराइ २५ । प्रहतियोगें बमभकति हैं तौ प्रतीति मत करे ।

उसकी ज्ञात तुमसे पीछे भी हरें हैं । उसकी ज्ञात तुमसे पीछे भी हरें हैं । क्योंकि तैं बिज्ञें पूर्वां लिखातीं कैराइ २५ । प्रहतियोगें बमभकति हैं तौ प्रतीति मत करे ।
५५ । नूरपासेके ब्रह्मसेनके बृक्ष्यसेनानी सीबीमा कब उसकी हाती लेंमला है। खाली छोरे पस्त, सिन्हासन छाड़ते सब चुटकी दिखाने दिखाने लिखी है। इस के फिन्ने जग ५८ सुसम: उन-से बालार्का दिखे तब अंधे बिखर दिखाब लिखा है।

५९ इसका हाथ दुर्गम है। में सम्पत रंगे आहुत हैं। वह वर्षातं माता-पूजा, न हो आचारित, तुरालें इस बातम्यों

५५ बांगाओं नहीं फ़िलूं रहे हैं। आकाश छैर, कृपिकी तब

५६ प्रायेंगे बरन्तु भरें। बाते कभी न रहनेंगी।

५७ इस दिन छोर उस पहाड़े के विस्मय में न बाई मनुष्य

५८ बानाता है। न स्वर्गों के दूत परन्तु केवल भिना पिता। जैसे

५९ तूहाये हुए, वैसा ही मनुष्यके पृथक बानाना मे ५८ होगा। जैसे जलग्रामके धारके दिनलें लेग जिस

६१ दिनलें नूह जहाँजपर न चढ वही दिनलें बाते छे

६२ प्रीति विवाह करते, छोर विवाह देते थे। छोर जबलों छेत न हुकू मैसाही मनुष्यके पृथक बानाना भी होगा।

६३ तब दो जन बेतमें होंगे एक लिया जायगा छोर दूसरा

६४ बांडा जायगा। दो स्वायं पक्ती रहेंगी एक

६५ लिये जायगी छोर दूसरी बांडा जायगी।

६६ इसलिये जागते रहे। क्योंकि तुम नहिं जानते है।

६७ तुम्हारा प्रसु किस पढ़ी बाबूगा। पर यही जानते है।

६८ कि यदि परसंस्कृत जानता छोर किस पहरमें बाबूगा

६८ तो वह जागता रहता छोर अपने पहले संध पड़ने न

६८ देता। इसलिये तुम भी तैयार रहे। क्योंकि जिस पढ़ीका अनुमान तुम नहीं करते है। उसी पढ़ी मनुष्यका पृथ

नूरपासेके ब्रह्मसेनके बृक्ष्यसेनानी सीबीमा कब उसकी हाती लेंमला है। खाली छोरे पस्त, सिन्हासन छाड़ते सब चुटकी लेंमला है। इस के फिन्ने जग ५८ सुसम: उन-से बालार्का दिखे तब अंधे बिखर दिखाब लिखा है। इस के फिन्ने जग ५८ सुसम: उन-से बालार्का दिखे तब अंधे बिखर दिखाब लिखा है। इस के फिन्ने ।

५९ इसका हाथ दुर्गम है। में सम्पत रंगे आहुत हैं। वह वर्षातं माता-पूजा, न हो आचारित, तुरालें इस बातम्यों बांगाओं नहीं फ़िलूं रहे हैं। आकाश छैर, कृपिकी तब ५६ प्रायेंगे बरन्तु भरें। बाते कभी न रहनेंगी। इस दिन छोर उस पहाड़े के विस्मय में न बाई मनुष्य ।

५८ बानाता है। न स्वर्गों के दूत परन्तु केवल भिना पिता। जैसे तूहाये हुए, वैसा ही मनुष्यके पृथक बानाना मे ५८ होगा। जैसे जलग्रामके धारके दिनलें लेग जिस दिनलें नूह जहाँजपर न चढ वही दिनलें बाते ।

६२ प्रीति विवाह करते, छोर विवाह देते थे। छोर जबलों छेत न हुकू मैसाही मनुष्यके पृथक बानाना भी होगा।

६३ तब दो जन बेतमें होंगे एक लिया जायगा छोर दूसरा।

६४ बांडा जायगा। दो स्वायं पक्ती रहेंगी एक लिये जायगी छोर दूसरी बांडा जायगी।

६६ इसलिये जागते रहे। क्योंकि तुम नहीं जानते है।

६७ तुम्हारा प्रसु किस पढ़ी बाबूगा। पर यही जानते है। कि यदि परसंस्कृत जानता छोर किस पहरमें बाबूगा तो वह जागता रहता छोर अपने पहले संध पड़ने न देता। इसलिये तुम भी तैयार रहे। क्योंकि जिस पढ़ीका अनुमान तुम नहीं करते है। उसी पढ़ी मनुष्यका पृथ
क्षणिका। यह विकासशील चौर कुंवारियाँ दास कैसा है ४८ जिसे उसके स्वामियों रहने-पारिवारिक पर प्रशासन किया कि किसी समय में उन्हें भोजन दें । इस दास्तान जहाँ स्वामी शान्ति ऐसा करते थे। मैं तुमसे सत्य सर्व स्वाभाविक दूं वह सत्य रहने सव सम्पूर्ण प्रसाद करेगा। विषय में जैसा वह तुष्टी दास रहने मनमें हाथ रोहर स्वामी ४८ खाली स्वामी करता है । चौर शाने संगी दासांकिंग ४८ मारने चौर मारवाले मायोंकि संग खाने-पीने लगे । तै ५० जिस दिन यह बाट बंधुता न रहे चौर जिस बदहका जहाँ आतुर न करे उसीमें उस दास्तान स्वामी चारा- गाना । चौर उसको बड़ी-ताड़ना देके कपिलेंद्रांके संग उसका ५१ प्राय श्रृंग जहां रोना चौर दासत प्रेमा होगा।

२५ प्रचुरसम्बन्ध पौधे।

१ वह बुधवारियों का शोभान ४८ गोदों का शोभान ४८ मायाके दिनका शर्म।

तब स्वर्गीय राजकीय उपमा दस कुंवारियोंसे दिए आयों जो अपनी मशालें लेकर दूल्हे मिलनेखन लिख- करीं । उनके पाँच सूबुति है चौर पाँच निर्बुति थीं । जो निर्बुति यह उन्होंने अपनी मशालों जो अपने संग तेल न लिया । परन्तु सूबुतियोंने अपनी मशालों संग अपने माँचों में तेल लिया । दूल्हे विलया करते वे सब संघों चौर से गई । आधी रात्रिको धूम मचिया कि देखे दूल्हा यह है उसके मिलनेखन निकले । तब वे सब कुंवारियों उठते अपनी मशालें सजाते लगे । चौर निर्बुति- बंदुह दूल्होंसे कहा जाने तेलमें कुछ हमें दीजिये क्योंकि हमारी मशालें कुही जाती हैं । परन्तु सूबुतियोंने
उत्तर दिया क्या जाने हमारे शीर तुम्हारे लिये बस न होय सा घरका है कि तुम वेंचरहारेंकि पास जाओ
10 क्या निये में माल लेखा । ज्यों वे में माल लेनेके जाती थी त्येंही दूल्हा शा पहुँचा शीर जा तैयार थीं सा उसके संग विवाहके घरमें गई शीर द्वार मूल्या गया ।
11 पूछे दूसरी कुंवरियां भी जाने बाली हे प्रभु हे प्रभु
12 हमारे निये बालिये । उसने उत्तर दिया कि मैं तुमसे
13 रच कहता हूं में तुमका नहीं जानता हूं । इसलिये जाने रहे । क्या तुम न वह दिन न घड़ी जानते ही जिसमें मनुष्यका पुष्प जानेगा ।
14 क्या वह एक मनुष्यका समान है जिसने परदेशको जाते हुए अपनेही दासांका बुलाके उनके अपना घन
15 संपा । उसने एकके पांच ताड़े दूसरेके दो तीसरेका एक हर एकको उसके सामयके अनुसार दिया शीर
16 तुरंत परदेशका चला । तब जिसने पांच ताड़े पाये उसने जाके उनसे बोधार कर पांच ताड़े शीर कमाये ।
17 इसी रीतिसे जिसने दो पाये उसने भी दो ताड़े शीर
18 कमाये । परन्तु जिसने एक ताड़ा पाया उसने जाके मिटी-
19 से सौदके काने स्वामीके हैवाई दिया रखे । बहुत दिनांकी पीछे उन दासांका स्वामी श्राया शीर उनसे लेखा लेने
20 लगा । तब जिसने पांच ताड़े पाये वे उसने पांच ताड़े शीर जाके कहा है प्रभु शापने मुफ्ते पांच ताड़े संये
21 देखिये मैंने उनसे पांच ताड़े शीर कमाये हैं । उसके द्वार तू शोधिये विश्वासयोग्य हुआ में तू मे बहुतपर 11
प्रधान कहता है। अपने प्रभुको शान्तिमें प्रवेश शर। जिसने 22
किन्तु दो ताड़े पाये थे उसने भी बाकी कहा है प्रभु ज्ञापने मुझे
दो ताड़े सांपे देखिये मैंने उसने दी ताड़े शीर ब्रम्मारहे हैं।
उसके स्वामीमे उससे बाहर धन के उत्तम शीर विद्वास- 23
धार्मिक दास तू तू घोड़े में विद्वासयोग्य हुआ मैं तुम्हें बहुतपर
प्रधान कहता है। अपने प्रभुको शान्तिमें प्रवेश कर। तब 24
जिसने एक ताड़ा पाया था उसने राक्षसे कहा है प्रभु मैं
ज्ञापित जानता था कि ज्ञाप कठिन मनुष्य हैं जहां
ज्ञापने नहीं बोया बहां लवते हैं शीर जहां ज्ञापने नहीं
छोटा बहांसे एकटा करते हैं। समान हरा शीर जाकी ज्ञाप- 25
धार्मिक दास निम्न में विद्याया। देखिये ज्ञापना ले लहिये।
उसके स्वामीमे वसे उत्तर दिया कि है दुई शीर शालसी 26
दास तू ज्ञाता था कि जहां मैंने नहीं बोया बहां लवता
हूं शीर जहां मैंने नहीं छोटा बहांसे एकटा करता हूं। तब 27
तुम्हे उचित था कि मेरे स्पौष्ट यात्री महावीरने कृपा संपता
तब मैं ज्ञापक ज्ञापना धन ब्राह्म समेत पाता। इसलिये 28
बह ताड़ा उससे लेकी शीर जिस पास दस ताड़े हैं उसे
देखिये। कौंक्ष्य जो रहता है उसकी शीर दिया 29
जायगा। शीर उसकी बहुत होगा भरनु जो नहीं
रखता है उससे जो कुछ उस पास है सो भी ले लिया
जायगा। शीर उस निकम्मे दासको बाहरके अन्धबारमे 30
हाल देश मजहां राना शीर दाँत पीना होगा।
जब मनुष्यका पुष्प अपने एन्थर्बर्गको सहित ज्ञापित ज्ञापित शीर 31
सब पवित्र दूत उसकी साथ तब वह अपने एन्थर्बर्गको
सिंहासनपर बैठेगा। शीर सब देशकी लोग उसके ब्राह्म 32
एकदा वीरे जायेंगे चौरै सैना गड़रिया मेंहांका बच्चरियाँ-
से बालक करता है तैसा वह उन्हें एक तूड़ते भरकर
33 करेगा। चौर वह मेहांका चपनी दाहिनी चौर चौर
34 बच्चरियांका बाईं चौर खड़ा करेगा। तब राजा उनसे
जो उसकी दाहिनी चौर हैं बहेगा हे मेरे पिताको धन्य
लेगी बाबा जो राज्य बंगतकी उत्पतिसे तुम्हारे लिये
35 तैयार किया गया है उसके अधिकारी हाथी। कौंति में
भूषा था चौर तुमने मुक्त सप्तको दिया में प्यासा था
चौर तुमने मुक्त पिलाया में परदेशी था चौर तुम मुक्ते
36 अपने घरमें लाये। में लंगा था चौर तुमने मुक्त पहिराया
में रोगी था चौर तुमने मेरी सुंह लियें में बन्दीगृहमें
37 था चौर तुम मेरे पास आये। तब घरमी लौंग उसकी
उत्तर ठंगे कि हे प्रभु हमने कव जापको भूषा देखा
38 चौर खिलाया अचवा प्यासा चौर पिलाया। हमने
बबत जापको परदेशी देखा चौर अपने घरमें लाये।
39 अचवा नंगा चौर पहिराया। चौर हमने कव जापको
रोगी अचवा बन्दीगृहमें देखा चौर जापको पास गयें।
40 तब राजा उन्हें उत्तर ठंगे में तुमसे सब कहता हूँ बिं
तुमने मेरे इन जाति चौरे भाइयेरंगे एकते जाइं भर
41 जिया की मुक्तसे किया। तब वह उनसे जो बाईं चौर हैं
कहेगा हे सापित लोंगे मेरे पास से उस ब्रह्मान्त जागरमें
जाभो जो जैटमार चौर उसके ठंगको लिये तैयार कियें गईं
42 हैँ। कौंति में भूषा था चौर तुमने मुक्त सप्तको नहीं
43 दिया में प्यासा था चौर तुमने मुक्त हैं पिलाया। में
परदेशी था चौर तुम मुक्ते अपने घरमें नहीं लायें में
नंगा था शीर तुमने मुक्त नहीं पहिराया मैं रागी शीर वन्दोगुह्मं या शीर तुमने मेरी सुध न लिये। तब वे 84 भी नट कर देंगे जिसे प्रभु हमने कब झापका भूका वा व्यासा वा परदेशी वा नंगा वा रागी वा बन्दोगुह्मं देखा शीर झापके सेवा न किये। तब वह उनों 85 नट देगा में तुमसे सच बाहता हूं कि तुमने इन श्रात झारों मंसे एकसे जाईं भर नहीं किया सा मुक्ते नहीं किया। सा ई लोग अनन्त दंडमं परन्तु धम्मं 86 लोग अनन्त जीवनमें जा रहने।

25 छविससवां पवें।

१ पीघुका वध करते का पर्वमां। ५ एक स्तोंका चक्रों निर्धार सुगन्ध सत्त ठलना। १४ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। १५ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। १६ उनको पीघुका विवाहश्रमाह भरना। १७ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। १८ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। १९ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। २० पीघुका विवाहश्रमाह भरना। २१ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। २२ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। २३ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। २४ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। २५ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। २६ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। २७ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। २८ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। २९ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ३० पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ३१ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ३२ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ३३ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ३४ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ३५ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ३६ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ३७ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ३८ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ३९ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ४० पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ४१ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ४२ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ४३ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ४४ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ४५ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ४६ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ४७ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ४८ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ४९ पीघुका विवाहश्रमाह भरना। ५० पीघुका विवाहश्रमाह भरना।

जब योगु यह सब बारे कह चुका तब छयनें शित्यासि 1 कहा। तुम जानते हो कि दो दिनके पीछे निस्तार पवें होगा शीर मनुष्यका पुष्च ऋषबर चढ़ाये जानकी पकड़वाया जायगा। तब लोगियूके प्रधान याजक शीर 2 ऋषयापक शीर प्राचीन लोग किया नाम महायाजक- ले घरं में एके हुए। शीर झापसे मिला किया बिं 3 योगुका छलसे पकड़के मार बाले। परन्तु उन्होंने कहा 4 पवें में नहीं हो है कि लोगियूं हुललू होई।

जब योगु धायणियांमें शिमोन कांडकी घरं में था। 5
7 तब एक झूठी उंजली पत्थरके पाचमें बहुत मौंन।
8 सुगन्ध तेल लेकी उस पास शायर जब वह भोजनपर
9 बैठा था तब उसके तिरपर दाला। यह देखके उसके
10 शिप्पा रिसियाबी बाली यह छय कीं हुआ। क्योंकि यह
11 सुगन्ध तेल बहुत दाममें बिक सकता शायर कंगालींको
12 दिया जा सकता। येरुने यह जनके उनसे कहा कीं
13 स्त्रीको दुःख देने है। उसने शाय पाम सुधासे बिखा यह है।
14 इराग लेग तुम्हारे संग सदा रहते हैं परन्तु मैं तुम्हारे
15 संग सदा नहीं रहेगा। उसने मेरे देहपर यह सुगन्ध तेल
16 जो दाला है सा मेरे गाड़े जानको लिये किया है। मैं
17 तुमसे सत्य कहता हूँ सारे जगतमें जहां कहीं यह
18 मुसमाचार सुनाया जाय तहाँ यह भी जा इसने किया
19 है। उसके समरसे लिये कहा जायगा।
20 तब बारह शिप्यांमें गिहुदा इस्कारियाती नाम एक
21 शिप्य प्रधान याजकोंके पास गया। शायर कहा जो मैं
22 येरुकी शाप लगाकी हाय पकड़वातं ता शाप लोग
23 मुफ्त को देगे। उन्हाँने उसको तीस रूपें देनेको
24 ठहराया। सा वह उसी समयसे उसको पकड़वानेको
25 मासर दुर्दंड दिया।
26 अस्सीरी रेट्री गल्लँके पहले दिन शिप्य लोग
27 येरु पास भा उससे बाले शाप कहां चाहते हैं वि
28 हम। शापको लिये निपटार पम्बेका भोजन खानेकी
29 तैयारी करें। उसने कहा नगरमें तिमुक मनुष्यको पास
30 आके उससे कहा गुरु कहता है कि मेरा समय निकट हैsv
31 मैं शपने शिप्योंके सम तेरे यहां निपटार पम्बेका भोजन
कहांगा। सा शिष्यांने बैसा यीसुने उन्हें खाक्क दिच्या वैसा १५ लिया शीर निस्तार पन्नेका भोजन बनाया।

सांकाक्का यीसु बारह शिष्यांके संग भोजनपर बैठा। २० जब वे खाते घे तब उसने कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि २१ तुमसे एवं मुम्मी पकड़वायता। इसपर वे बहुत उदास २२ हुए शीर हर एक उससे बहने लगा है प्रभु वह क्या मैं २३ हूं। उसने उत्तर दिया कि जो मेरे संग थालमें हाय २३ डालता है साई मुम्मी पकड़वायता। मनुष्यका पुच जैसा २४ उसके विषयमें लिखा है वैसाही जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य जिससे मनुष्यका पुच पकड़वाया जाता है। जो उस मनुष्यका जन्म न होता तो। उसके लिये भला होता।

तब उसके पकड़वानेहारे यिहूदाने उत्तर दिया कि है गुर २५ वह क्या मैं हूं। यीसु उससे बोला तू ता वह चुका।

जब वे खाते घे तब यीसुने रोटी लेके धन्यबाद दिया २६ शीर उसने तोड़के शिष्यांके दिया शीर कहा लेको खाओ यह मेरा देख है। शीर उसने बोटीरा लेके धन्य माना २७ शीर उनके देख कहा तुम सब इससे पीको। कीण्डा २८ यह मेरा लदू स्थाय नये नियमका लदू है जो बहुतेंकर लिये पापसो। चाकें किमित वह या जाता है।

मैं तुमसे कहता हूं कि जिस दिनलों मैं तुम्हारी संग २९ छपने पिताके राज्यमें उसे नया न पोजे उस दिनलों मैं अबसे यह दाख रस कभी न पीजंगा। शीर वे ३० भजन गाके जैतून पन्नेतपर गये।

तब यीसुने उनसे कहा तुम सब इसी रात मेरे विषय- ३१ में ठाकर खाओ कीण्डा लिखा है कि मैं गड़रिंभि।
मारुंगा श्रीरं मुंडकी मेंः तितर बितर हैं जार्यगीं।

३२ परतु में राने जो उत्तेत्को पीछे तुम्हारे ज्ञाने गाणीलको।

३३ जार्यगा। पितरने उसको हँसा दिया यदि सब ज्ञापके विश्वमें ठाकर खार्व तैभी में कभी ठाकर न खार्यगा।

३४ योगने दससे कहा में तुके सत्य बखटा हूं कि इसी रात मुर्गःके बालनसे ज्ञाने तू तीन बार मुख्ते मुखरेगा।

३५ पितरने उससे कहा जो ज्ञापके संग मुख मरना हो तैभी में ज्ञापने कभी न मुखर्यंगा। सब शिवोंने भी बैसाही कहा।

३६ तब योगने शिवोंके संग गेतिशिमनी नाम स्वानमें ज्ञाने उनसे कहा जबल्लों में वहां जाके प्रार्थना कहनं तब-ले तुम यहां बैता। श्रीर वह पितरके श्रीर जबदीके दोनों पुषिको प्रणेण संग ले गया श्रीर ज्ञान करने श्रीर।

३७ बहुत उदास होने लगा। तब उसने उनसे कहा मेरा मन यहां लों ज्ञान उदास है कि मैं मरनेपर हूं। तुम यहां तब उदास होने लगा। तब उसने उनसे कहा मेरा मन यहां लों ज्ञान उदास है कि मैं मरनेपर हूं। तुम यहां तब उदास होने लगा। तब उसने उनसे कहा मेरे संग जागते रहो। श्रीर योगां ज्ञाने बढ़के वह सुंहके बल गिरा श्रीर प्रार्थना बिडें कि है मेरे पिता जे हो सकि ता यह कटारा मेरे पाससे रल जाय तैभी जैसा में चाहता हूं बैसा न हाय पर जैसा तू चाहता है।

३८ तब उसने शिवोंके पास श्रीर पाससे रहो उन्हें सोते पाया श्रीर पितरसे कहा से तुम मेरे संग एक घड़ी नहीं जाग सबे। जागते रहो। श्रीर प्रार्थना करो। कि तुम परीक्षामें न पड़े। मन तो ठीकरू है। परन्तु शरीर पुर्वेल है। फिर उसने दूसरी बेर जाके प्रार्थना किंदै कि है मेरे पिता जे चिना पीसे यह कटारा मेरे पाससे नहीं रल सकता।
है ता तेरी इच्छा पूरी है। तब उसने बाबा उन्हें फिर से पाया। किव्वा उनकी बाबा सी नीटे श्रद्धा की। तब उसने फिर जाके तीसरी बार वही बात 88 कहके प्रार्थना किई। तब उसने अपने चिन्ताओं पास 88 बाबा उनके कहा सा कुम रहते झोर विचार करते है। देखिए वही झा पहुंची है झोर मनुष्यका पूर्व बाबा इस झा हाथमें पकड़वाया जाता है। उठा चले देखिए 88 बाबा मुक्त पकड़वाया है सा निकट झोरा है।

वह बोलता है ता कि देखिए यिहुदा जी बारह शिविया०- 87 में एक झा पहुंचा झोर लोगोंके प्रधान याजकों झोर झा ने बहुत लोग झुड़ु झोर लागिया० लिये हुए उसके संग। यिशुके पकड़वाने हारिने उनके यह 88 पता दिया था कि जिसकी में चूम वही है उसकी पकड़। झोर वह तुष्ट यिशु पास झा के बोला है गुरु प्रकाश 88 झोर उसकी चूमा। यिशुने उससे कहा है मित्र तू लिये 5० लिये झाया है। तब उन्होंने झाके यिशुपर हाथ हालको उसे पकड़ा। इसपर देखिए यिशुके संगितमें एकने हाथ 5२ बढ़ाके झपना झुड़ु झींचके महायाजकों दासकी मारा झोर उसका कान उड़ा दिया। तब यिशुने उससे कहा 5२ झपना झुड़ु फिर काटों में रख किव्वा जा लोग झुड़ु झींचके हैं सा सब झुड़ु से नाश लिये जाइंगे। काय तू 5२ समक्ष है किसमें झया झपने बिंदी नहीं कर सकता हूं झोर वह मेरे पास स्वर्गीयतांत्की बारह सेना- झींचके जाधिक पहुंचा न देगा। परन्तु तब धम्मेपुस्तक में 5४ जा लिखा है ता ऐसा होना चाहिय है सा कींतर पूरा
हाय। उसी घड़ी योशुने लोगांसे कहा का तुम सुखें पकड़नें। जैसे दाकूपर थड़ू चैर लाटिया लेके निकले ही। मैं मंदिर पर उपदेश करता हुआ प्रतिभातिजन तुम्हारे संग बैठता था चैर तुमने सुखे नहीं पकड़ा। परन्तु यह सब इसलिये हुआ कि भविष्यद्वाता आंके पुस्तबको बातें पूरी होतीं। तब सब शिख्य उसे खोखले भागे।

जिनहां योशु सुक्रा बैठी थी। उसकी क्रियापत्रा महायाजकके पास की गयी जहां संघापक चैर प्राचीन लोग एकदूर हुए। पितर दूर दूर उसके पीछे महायाजकके अंगनेल्ला चला गया चैर भेंतर जाने इसका अन्त देख। नेका प्यारे के संग बैठा। प्रधान याजकके चैर प्राचीनानं चैर चार्टेयाँकी सारी समाने योशु घात करवाने के जिये उसपर भूरी सास्त्री हुंदी परलू न पाई। बहुतें फूटे सास्त्री तो चार्टे तो भी उन्हांने नहीं पाई। चार्टें दक्ष फूटे सास्त्री चार्टे बाले इसने कहा कि में इंश्वरका मंदिर दक सकता चैर उसे तीन दिनमे फिर बना सकता हूं। तब महायाजकने बढ़ा है। योशुसे कहा क्या तू कुछ उतर नहीं देता है। ये लोग तौरे बिखुट क्या सास्त्री देते हैं। परन्तु योशु चुप रहा इसपर महायाजकने उससे कहा में तुम्हें जीवि इंश्वरकी किया देता हूं। हमें कह तू इंश्वरका पुक्ष खोश है कि नहीं। योशु उससे बला तू तो कह चुका चैर में यह भी तुम्हांसे कहता हूं कि इसके पीछे तुम मनुष्यके पुक्षका सावजकी-मानकी दहिनी चैर बैठे सूर चाकाशके मेंमों जाते। देखिए। तब महायाजकने जपने वस्त्र फाड़के कहा यह।
ईश्वरकी निष्ठा कर चुका है सब हमें साक्षियोंका श्रीर बन भवन प्रयोजन , देखो तुम्हें जब भी उसके मुखसे ईश्वरकी निष्ठा सुनी है। तुम क्या विचार करते है। उन्होंने इसे स्तर दिया वह बड़ी योग्य है। तब उन्होंने उसके सुंह- 63 पर घूमक श्रीर वसे पूरे मारे। श्रीरींने चटपटे मारकी कहा 64 है श्रीयुत हमसे मानवियुक्ती बाल किसने तुम्हे मारा।

पितार बाहर कंगमें बेटा था श्रीर एक दासी उस देश पास जाके बाली तू भी यीशु गालियोंकी संग था। उसने 65 सब्बे सामने मुखरे कहा में नहीं जानता तू क्या कहते है। जब वह बाहर हेवले में गया तब दूर र मरी 66 दासीने उसे देखके जा लोग वहां थे उनसे कहा यह भी यीशु नासरीके साथ था। उसने विचार खाके फिर 67 मुखरा कि में उस मनुष्यका नहीं जानता हूँ। चारी 68 बैर पीछे जा लोग वहां खड़े थे उन्होंने पितारके पास साथ उससे कहा तू भी सचमुच उनमें एक है क्योंकि तेरी बाली भी तुम्हे प्रगत करते हैं। तब वह धिक्कार देने 69 श्रीर विचार खाने लगा कि में उस मनुष्यका नहीं जानता हूँ। श्रीर तुरन्त मुर्गे बोला। तब पितारने यीशुका 70 चन्द जिसने उससे कहा या कि मुर्गे बालने मारे तू तीन बार मुक्ति मुक्तरेगा समर्पण किया श्रीर बाहर निकलके बिलकू बिलकू रोया।

20 सताइसवां पढ़ें।

1 यीशुका पिलातको वाघ सौं प्राणा। 3 विदवाका दुर्गनाको भर देना श्रीर बालको कालो देना। 11 पिलातका यीशुका विचार करना श्रीर नामको बच्चा करना। 24 कालका यीशुका निराश उठराना। 25 यीशुका धातुकोंका वाघ सौं प्राणा श्रीर बेर बीमारी लशित ढाना। 33 कालका वाघ पढ़ा प्राणा।
1 जब मेरा हुआ तब लोगाँको सब प्रधान याजकों
वैर प्राचीनाँने धापालो ही लोको बिष्टू बिचार किया
2 कि उसे घात करवावैं। श्रीर उन्होंने उसे वांछा। श्रीर
ले जाके पन्त्थय पिलात्स चम्पछों नंप दिया।
3 जब उसकी पकड़वाने यहूदी देखा कि वह टूंडवा
भोग उत्तरगया गया तब वह पत्थरना उन तीस रुपयेरीयां
8 प्रधान याजकों श्रीर प्राचीनांके पास फेर लाया, जोर
कहा में निर्दीशि लोहो पकड़वाने रेप तिया है। चैताले
5 हमें को तूहँ जाना। तब वह उन रुपयेरी मन्दिरमें
6 फिक्की चला गया। श्रीर जाके अपनीको फांसी दिया। प्रधान
याजकों रुपयेरी लेके कहा इन्हें मन्दिर के भंडारमें दाजाना
9 उचित नहीं है वे क्योंकि यह लेगू हूँका दाम है। से उन्होंने
धापाले बिचार कर उन रुपयेरी पर रजिस्ट्रेशण गानेरे
8 लिये कुम्हारको खेत मैल लिया। इससे कह बैतां आज-
5 तक लेगू हूँका खेत कहावता है। तब जो वचन गिरिमियाहु
भविष्यतात्स पर कहा गया था तो फुरा हुआ कि उन्होंने वे
10 तीस रुपये हां इसले पर सन्तानिंसे उस मुलाव्य हुएका
9 दाम जिसे उन्होंने मुजाया लेकिया। श्रीर बैतां पर भिक्ष्ववरे
रुपको शाखा दिया तत्से मुहूँ कुम्हारको खेत के दाम में दिया।
11 यीशू समझाके चारे घड़ा हुआ। श्रीर समझुने उससे
पूछा क्या तू यिहूदीयांका राजा है?। यीशूने उससे कहा,
12 आपही तो कहते हैं। जब प्रधान याजक श्रीर प्राचीन
लेगे उसपर दृष्ट लगाते थे तब उसने कुछ उत्तर नहीं
दिया। तब पिलातने उससे कहा क्या तू नहीं सुनता कि १३ ये लेग तेरे बिस्तू कितनी सादी देते हैं। परन्तु उसने १४ एक बात भी उसकी उत्तर न दिया यहांतों कि अध्यक्षने बहुत अचम्मा किया। उस प्रयोग में अध्यक्षनी यह रीति १५ थी कि एक बन्धुबीका जिसे लेग चाहते थे उन्होंने लिये ब्राह्मण देता था। उस समयें उन्होंना एक प्रसिद्ध बन्धु था १६ था जिसका नाम बर्जन्या था। सा जब ते एकदृष्टि हुए तब १० पिलातने उससे कहा तुम किसकी चाहते हा कि में तुम्हारे लिये ब्राह्मण दें। बर्जा ने अध्यक्षनी चाहता है। किंतु वह जानता था कि उन्होंने १८ वस्त्र का घासे पकड़ लिया था। जब वह विचार सान- १८ पर बैठा था तब उसकी स्त्रिया उसे कहला भेजा कि आप ध्यान ध्यान मनुष्य से कुछ काम न रखिये किंतु में ब्रज ध्यान ध्यान में उसकी कारण बहुत दुख पाया है। प्रधान याजकों २० ब्रज प्राचीनाने लेगना समझवाया कि वे बर्जन्या का मांग लेवें ब्रज निशुनी नाश करवावें। अध्यक्षने उनकी उत्तर २२ दिया कि इतने होने में तुम किसकी चाहते हा कि में तुम्हारे लिये ब्राह्मण दें। वे बोले बर्जन्या। पिलातने २२ वस्त्र देते हा। में योशुका जा ब्राह्मण कहा वता है क्या बस। उसकी उनसे ब्राह्मण वह कृष्ण पर चढ़ाया जाय। अध्यक्षने २३ कहा किया उसने कौनसी बुराई किया है। बलतु उसने अध्यक्ष बुजारे कहा वह कृष्ण पर चढ़ाया जाय।

जब पिलातने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता पर ब्रज २४ भी हुसूद होता है तब उसने जल लेके लेगनों समझने ब्राह्मण कहा में इस ध्यान ध्यान मनुष्य के लेजे हूं।
तुम्हारी जानकारी सब लोगों ने उत्तर दिया कि उसका लिख हम पाए है। सारा हसोसर शीर्ष हमारी सिनानीयंगर होते।

tab तब उसने बारह्माको उन्होंने लिये बाहर दिया शीर्ष यीको बाड़ मारको क्राशपर चढ़ाये जानको सिंप दिया।

tab तब ज्ञानवस्थको गार्दाश्चनी यीको ज्ञानवस्थवन्म से लाखे

tab सारे पलटन उस पास एकटो किये। शीर्ष उन्होंने उसका

बस्त उतारके उसे लाल बागा पाहिराया। शीर्ष कारिंग्रा
का मुकुट गूणको उसकी सिरपर रखा शीर्ष उसको दहनी
हायमें नरकर दिया शीर्ष उसके बागे धुनने टकके यह
कहके उससे ठंडा किया कि हे यिहूदियाँको राजा प्रशान।

शीर्ष उन्होंने उसपर घुका शीर्ष उस नरकतको ले उसके

सिरपर मारा। जब वे उससे ठंडा कर चुके तब उससे वह
बागा उतारके शीर्ष उसका बस्त उसका पाहिराको उसे

क्राशपर चढ़ानको ले गये। बाहर आते हुए उन्होंने

शिमेन नाम कुरीती देशके एत मनुष्यको पाया शीर्ष
उसे बेगार पकड़ा कि उसका क्राश ले चले।

जब वे एक स्थानपर जो गलागचा अर्धत्व खाप्डीका

स्थान कहावता है पहुँचे। तब उन्होंने लिये दिये
मिलाके उसे पोनको दिया परन्तु उसने चीखके पोने न

चाहा। तब उन्होंने उसकी क्राशपर चढ़ाये शीर्ष चिरियां

डालके उसकी बस्त बांट लिये कि जो बचन मिलखुल्लाने
कहा था से पूरा होते कि उन्होंने मेरे कापड़े अपसमें

बांट लिये शीर्ष मेरे बस्तपर चिरियां डाली। तब उन्होंने

वहां बैठके उसका पहरा दिया। शीर्ष उन्होंने उसका

दीघचप उसके सिरसे ऊपर लगाया कि यह यिहूदियाँका
राजा यीशु है। तब दो दाकू एक दहीनी शीर शीर यह दोसरा बार शीर उसके संग भूखियों पर चढ़ाये गये। 

जै लोग उपरसे भावे जाते थे उन्होंने अपने सिर 36 हिलाकर शीर यह कहके उसकी निन्दा किये। कि है 80 मन्दिर बनाने हार्दिक शीर तीन दिन में बनाए हारे अपने को बचा। जै तू ईश्वर का पुत्र है तो ईश्वर सेवक हा। इसी 87 रीति से प्रभाव याजकों भी भक्तापीका शीर प्राचीनाको संग झटका कर कहा। उन्हें श्रीराको बचाया अपने को बचा 87 नहीं सकता है। जै वह इस्लामिया रा जा है तो ईश्वर से अब उतर शामि शीर हम उसका व्यवहार करिंग। वह 87 ईश्वर पर भरोसा रखता है। यदि ईश्वर उसे चाहता है तो उसका अब बचाये क्यांकि उसने कहा में ईश्वर का पुत्र हूं। जै दाकू उसके संग भूखियों पर चढ़ाये गये उन्होंने 88 भी इसी रीति से उसकी निन्दा किये।

दो पहले तीसरे पहले सारे देश में संघर्ष का है 89 गया। तीसरे पहले निकट यीशु ने बड़ै शब्द से पुकारके 88 बढ़ा एली एली लामा शब्दकनी अर्थ है मेरे ईश्वर है मेरे ईश्वर दोनों की मुफ्त त्याग है। जै लोग वहाँ 87 बड़े थे उनमें एक्सिंक्ट नहीं यह सुनके कहा वह ईश्वर है। उनमें एक तूर्त दाइके इस्पत्त लेके 88 सिरकाम भिंगाया शीर नल पर रबको उसे पीनेको दिया। श्रीराको कहा रहना है हम देखे कि ईश्वर उसे 88 बचानेका आता है कि नहीं।

तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से पुकारके प्राण त्यागा। 89 शीर देखा मन्दिर का परदा जुपसे नीचे लगे फटके दोभाग 90
५२ है गया शीर घरती टूली शीर पब्देंत तड़क गये। शीर बरे खुली शीर साये हुए पवित्र लागांकी बहुत लायं।
५३ उठी। शीर यीशुके जी उठनेके पीछे वे कबरोंमे निक-लके पवित्र नगरम गये शीर बहुतेरांकी दिखाई दिये।
५४ तब शतपाति शीर वे लेग जो उसके साथ यीशुका पहरा ददे वे मुईदा शीर जो कुछ हुआ था तो देखके निपट हर गये शीर बोले सचमुच यह इश्वरका पुत्र था।
५५ वहां बहुतसी स्त्रियां जो यीशुकी सेवा करती हुईं गालीकी उसके पीछे बाई थीं दूसरे देखती रहीं।
५६ उन्होंने मारियम मगदलीनी शीर याकूबकी शीर योशिकी माता मारियम शीर जबर्दकिम पुत्रांकी माता थी।
५७ जब साँख हुईं तब यूसफ नाम आरिमेयिया नगरका एक धनवान मनुष्य जो शाप भी यीशुका शिष्य था।
५८ यीशु। उसने पिलातके पास जाने यीशुकी लेख मांगी।
५९ तब पिलातने शाझा कहै जिंदी कि लेख दिये जाय।
६० यूसफ लेखका ले उसे उतली चट्टरम लेपटा।
६१ शीर उसे झपनी नई कबरमें रखा जो उसने पत्थरमें खुदवाई थी शीर कबरके द्वारपर बड़ा पत्थर लुढ़काई।
६२ चला गया। शीर मारियम मगदलीनी शीर दूसरी मारियम वहां कबरके सामने बैठी थी।
६३ तेशारोंके दिनके पीछे प्रधान याजक शीर फरीशी लग श्राहके दिन पिलातके पास एकटे हुए। शीर बोले हे प्रभु हमें चेत हैं कि उस मरमानीहरूने झपने।
६४ जीतेजी कहा कि तीन दिनके पीछे में जी उदूगा। सा शाझा कहिये कि तीसरे दिनलिंग कबरकी रखवाली
किनेज जाय न हा कि उसके शिष्य रातको झाके उसे चुरा ले जायें शैर लोगों से कहें कि वह मृतकोंको जी उठा है. तबपिछले मूल पहलीसे बुरी होगी. पिलातने ध्वनि वनसे कहाँ तुम्हारे पास पहुंच हैं जाशैर ज्ञाने जानतेमह रखवाली करें. सो उन्होंने जाये पत्थरपर खाय देके धी पहुंच बैठायें कबरको रखवाली किये.

88 अठाईसवा पावन ।

1 शिष्योंको दूसरे सिया शैर उठाने वालों को समा चार हुताना. 6 योगका उत्तरी दक्षिण देना. 11 पध्यालाको पहल्यांको पीढी बुद्धि बुलाया. 15 योगका समारह शिष्योंको प्रेम कराना.

बिस्मानवारे पीछे अठाईसवे पहले दिन पह फटते महाराज मगदलीनी शैर दूसरी महाराज महाराज कबरको देखने बैठी. शैर देखा बड़ा मूर्धीकाल हुआ कि परमेश्वर- का एक दूत स्वर्गीय उत्तरा शैर झाके कबरको दृष्टिकोण पत्थर लुढ़कायें उसपर बैठा. उसका रूप बिजलीसा शैर उसका बस्त पलको नाइ उजला था. उसके हरके मारे पहुंच कांप गये शैर मृतकोंके समान हुए. दूसरे स्तिरोंके उत्तर दिया कि तुम गो मत दरो में जानता हूं कि तुम योगका जी क्रृष्णपर घात किया गया हूं दूरढ़ती है. वह यहां नहीं है जैसे उसने कहा वैसे जी उठा है. शैर यह स्थान देखा जहां प्रभु पड़ा था. शैर शीघ्र झाके उसके शिष्योंसे कहा कि वह मृतकोंके जी उठा हैं शैर देखा वह तुम्हारे झागे गाजीलको जाता है वहां उसे देखाये. देखा में तुमसे कहा है. वे शीघ्र निकलके भय शैर बड़े आनन्दसे उसके शिष्योंको सन्देश देनेको कबरसे दौड़ी.
बम वे उसके शिष्यों के साथ देरकर जाती थी। देखा यीशु उनसे वाहिला श्रीर कहा कल्याण हो श्रीर उन्हें निकट श्रा उसके पांव पकड़के उसका प्रशास्त 
किया। तब यीशु उनसे कहा मत हरी। जाके मेरे भाइयोंसे कह दो कि वे गालोलकर जावें श्रीर वहां 
वे मुक्ति मिलेंगे।

चतुः प्रियता जाती थी। त्यंही देखा पहलएँम्से कोई 
कोई नगरमें भाग क्री श्रीर सब कुछ जो हुआ था प्राध्यन 
याजकोंसे कह दिया। तब उन्हें ने प्राचीनिक्से संग एकटूं 
हो आपसमे विचार कर योहुँसा को बहुत स्पष्टे देखे।
कहा। तुम यह कहे कि रातका जब हम सावे वे तब 
उसके शिष्य भाई वरी चुरा ले गये। जो यह वात अध्य- 
त्त्व स्वनामे वायि ता हम उसके समस्याके तुमको चला 
लेंगे। तो उन्हें स्पष्टे लेके जैसे सिखाये गये वे वैसाही 
किया श्रीर यह वात उपदेशों री भाज़ों चलित है।
एम्यारी शिष्य गालोलकर उस प्रभुतपर गये जो 
यीशु उनका बताया था। श्रीर उन्हें उसे देखके 
उसका प्रशास्त किया पर किंतकों सद्दें हुआ।
यीशु उन पास जा उनसे कहा स्वगमे श्रीर पृथिवीपर 
समस्त अधिकार सुधको दिया गया है। इसलिये तुम 
जाके सब देशके लेरगोंके शिष्य करो श्रीर उन्हें पिता 
जी पुत्र जी पवित्र श्रीमत्माको नामसे वपत्तिसमा देशी।
श्रीर उन्हें सब बातें जी मैंने तुम्हें स्कारा किये है पालन 
करनेके सिखाये श्रीर देखा में जगतें कात्तलों सब 
दिन तुम्हारे संग हूं। ज्ञामीन॥
मार्क रचित सृजामाचारः

१ पहिला पढ़ेः

१ यहां बपतिस्मा देनेहारेरेका वृतात चौर मसिधानका। ५ योगुका बपतिस्मा लेना। १२ उच्ची रोशी। १४ उच्चा उपदेश करता चौर कार्य एक गिम्बोंका खोजाना। २१ एक मूलास्त मनुष्यका दंडा करता। २५ गिम्बोंका गावी चेंगा करता। ३२ वाजस्त रेगियंका चंगा करता। ३५ नगर नगर दंडा उपदेश करता। ४० एक बोढ़ीका चंगा करता।

ईश्वरके पुष्य योगुके सृजामाचारके सारंभ।

१ जैसे भविष्यद्वाटाच्योंचे पुस्तकमे लिखा है कि देश भैं अपने दूतां तंदा भागे मेजता हूँ जो तंदा भागे तंदा प्रनत्य बनावेगा। किंसीका शब्द हुँन तो जंगलमे पुकारता है कि परमेश्वरका प्रनत्य बनावेता उसके राजमारे दिखे करो। यहां जंगलाचे बपतिस्मा दिया चौर पापमोचनके लिये प्रतिचाचाच्योंस बपतिस्मात उपदेश किया। चौर सारे यिथुदया देखेच्या चौर विधुशालीम नगरके रहनेहारे उस पास निकाल ब्राह्ये चौर समेंने अपने अपने पापे जो यद्दन नदीमे उसमें बपतिस्मा लिया। यहां जंगलके रामका वस्त्र चौर अपनी कार्यमे चमडे का पुत्रा पहिनता या चौर रिडियं चौर बन मधु खाया करता या। उसने प्रचार कर कहा मेरे पीछे वह झाटा है जो मुक्तसे स्वाधिक उक्तिमान है में उसके जुरांका बन्ध मुक्तके खोलनेके योग्य नहीं हूँ। मैंने तुम्हें जलवे बपतिस्मा दिया है परन्तु वह तुम्हें पवित्र उत्साहसे बपतिस्मा देगा।
8 उन दिनों में यीशुने गालिल देशके नासरत नगरसे
90 जाके योहानसे यद्दनमें वपतिसमा लिया। श्रीर तृतन
जलसे ऊपर जाते हुए उसने स्वरंगको खुले श्रीर ज्ञात्मा-
91 श्रीर जयोतकी नाई अपने ऊपर उतरते देखा। श्रीर
यह ज्ञाकाशभागी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है जिससे
मे ज्ञति प्रसन्न हूँ।
92 तब ज्ञात्मा तृतन उसकी जंगलमें ले गया।
93 वहाँ जंगलमें चालीस दिन श्रीतानसे उसकी परीक्षा
किये गई श्रीर वह वन प्रजसूकी अंग या श्रीर स्वरंग
टूटताने उसकी सेवा किये।
94 योहानसे बन्दूकवर्धन में हाले जानकी पीछे यीशुने गालिल
95 में जाके इेशवरके राज्यका सुसमाचार प्रचार किया। श्रीर
कहा समय पुरा हुआ है श्रीर इेशवरका राज्य निकट
ज्ञाया है पश्चात्ताप करे श्रीर सुसमाचारपर विश्वास
96 करो। गालिलके समुद्रके तीरपर फिरते हुए उसने
शिमानको श्रीर उसकी भाई श्रृंदराकी समुद्रमें जाल
97 हाले देखा क्योंकि वे मचूवे थे। यीशुने उनसे कहा मेरे
98 पीछे श्रागो में तमकी मनुष्योंके मचूवे बनातांगा। वे
99 तृतन जाने जाल छोड़के उसकी पीछे हो लिये। वहाँसे
श्रागा श्रागे बड़के उसने जबदीके पुच याकूब श्रीर उसके
भाई योहानको देखा कि वे नायपर जानेको सुभारते थे।
100 उसने तृतन उन्हें बुलाया श्रीर वे अपने पिताजबदीको
मजूरियांके संग नायपर छोड़के उसके पीछे हो लिये।
101 वे कफनाहुम नगरमें स्त्रागे श्रीर यीशुने तृतन
102 भिषमके दिन सभाके घरमें जाके उपदेश किया। लोग
उसके उपदेश से बचावित हुए क्योंकि उसने अध्यापकों-की रीतिसे नहीं परलू अधिकारी की रीतिसे उन्हें उप-देश दिया। उनकी सभाके घरमें एक मनुष्य था जिसे २३ धार्मिक भूत लगा था। उसने चिलुआ के कहा है योशु २४ मासी रहने दीजिये झापको हमसे कहा जाम। कहा झाप हमने नाश करने झापे हैं। में झापको जानता हूं झाप कीन हैं इंद्रबरका पवित्र जन। योशुने उसकी २५ हांटके कहा खुप रह जैर उसमें निकल झा। तब २६ धार्मिक भूत उस मनुष्यको मरोगड़के जैर बड़े शब्दसे चिलुआ के उसमें निकल झाया। इसपर सब लोग ऐसे २७ बचावित हुए कि झापसमें बिचार करके बेली यह क्या है। यह कीनसा नया उपदेश है कि वह अधिकारी की रीतिले धार्मिक भूतांकों भी झापा देता है जैर वे उसकी झापा मानते हैं। सो उसकी कीनिं तुरन्त गालीके २८ झापपासके सारे देशमें फैल गई।

सभाके घरमें निकलके वे तुरन्त याकूब जैर यहांने २५ संग जिम्मान जैर जन्नवर्खके घरमें झाये। जैर जिम्मानकी ३० सास ज्यसे पीड़ित पड़ी थी जैर उन्होंने तुरन्त उसके विषयमें उससे कहा। तब उसने उस पास झा उसका ३१ हाय पकड़के उसे उठाया जैर ज्यसे तुरन्त उसका झोड़ा जैर वह उसकी सेवा करने लगी।

सांकलके जब सूर्य हुबा तब लोग सब रोगियोंके ३२ जैर भूतयस्तांको उस पास लाये। सारे नगरके लोग ३३ भी द्वारपर यकृत हुए। जैर उसने बहुतांको जी नाना ३४ प्रकारके रोगोंसे दुःखी थे चंगा किया जैर बहुत भूतांको
निकाला परन्तु भूतांकी बोलने न दिया कीयांक वे उसे जानते थे।

३५ भोरको कुछ रात रहते वह उसकी निकाला शीर जंगली
ढई स्थानम मनाको वहाँ प्राप्तना किये । तब शिमला शीर
३३ शीर उसको संग यी सा उसको पीछे हो लिये । शीर उसे
३८ पाली उससे बोले सब लग श्रायको ढूंढते हैं । उससे
उनका कहा श्रायक हम श्रायकसके नगरोंमें जाय कि
भैं वहाँ भी उपदेश कहुं कीयांक में इसीलिये बाहर
श्राय आ गौं । ती उसके सारे गालीलमें उनकी सभाजोंमें
उपदेश किया शीर भूतांकी निकाला ।

४० एक केटारी उस पास जा उससे विन्ती कीय शीर
उसको श्राय घुरने देतको उससे कहा जो श्राय चाहें
४१ तो मुफ्त शुद्ध कर सकते हैं । यीरको दया आई शीर
उसने हाथ बढ़ा उसे श्रापको उससे कहा भैं ता चाह्ता
४२ हूं शुद्ध हो जा । उसके कहनेपर उसका केटा तुरन्त
४३ जाता रहा शीर वह शुद्ध हुस्का । तब उसने उसे चिताके
४८ तुरन्त बिदा किया । शीर उससे कहा देख किसीसे
कुछ मत कह परन्तु जा अपनें ता याजकको दिखा
शीर अपने शुद्ध होनेको विषयमें जो कुछ मूसाने ठहराया
४५ उसे लेगांपर साँखी होनेको लिये बढ़ा । परन्तु वह
बाहर जाके इस वातको बहुत सुनने शीर प्रचार
करने लग यहांतों कि यीर फिर प्रगट होके नगरमें
नाहिं जा सका परन्तु बाहर जंगली स्थानोंमें रहा
शीर लेग चढ़ुं शीरसे उस पास श्राये ।
दूसरा पढ़े।

1 योजका एक पार्वतीगीतको वंधा कराना और उसका पाप चमा कराना। 13 लेखो बनेत्त राजस्थान कुलाना और प्राणियोंको बंद से मारनाका। 18 बदवास्त करनेका व्यूरा बसता। 25 विश्वासवादके वियतमे निर्भय कराना।

कई एक दिनके पीछे योगुने फिर कफाला हुमरमे प्रेमविया कौर तुर्का गया कि वह घरमे है। तुर्का इतने बहुत लोग एकदूर हुए कि वे न घरमे न द्वारके भागमे समा सकी कौर उसने उन्हें बचन सुनाया। कौर लोग एक भट्टालगीबी चार मनुष्योंसे उठायामें उस पास ले जाये। परन्तु जब वे भीड़के कारण उसके निकट पहुँच न सके तब जहाँ वह या वहां उन्होंने छह उठायामे कौर कुछ काटके उस कारणका जिसपर भट्टालगी पड़ा उसे काटका दिया। योगुने उन्होंना के विश्वास देखके उस भट्टालगीसे कहा है पुज तेरे पाप धमा किये गये हैं। कौर निकाल धार्मिकपक वहां बैठे ये कौर अपने अपने मनमे विचार करते थे। कि यह मनुष्य कोई यह रितिते ईश्वर-की निन्दा करता है। ईश्वरका छोड़ कौन पाणियोंको धमा कर सकता है। योगुने तुर्का अपने आत्मासे जाना कि वे अपने अपने मनमे ऐसा विचार करते हैं कौर उनसे कहा तुम लोग अपने अपने मनमे यह विचार की निति करते है। कौन बात सहज है भट्टालगीसे यह कहना कि तेरे पाप धमा किये गये हैं ध्यया यह कहना कि उत्त अपनी भार उठाके चल। परन्तु जिसे तुम 10 जाना कि मनुष्यके पृथिवीपर पाप धमा करनेका धमा करता है। (उसने उस भट्टालगीसे कहा) मैं तुमसे 11
१२ कहता हूँ उठ झपनी खाट उठाके झपने परके जा। वह तुरन्त उठके खाट उठाके सभी हो साचे चला गया। यहाँ फिर श्रीर प्रियवर्का स्थित करके बैठे हमने ऐसा कभी नहीं देखा।

१३ यीशु फिर बाहर समुद्रके तोरपर गया। श्रीर सब लेग उस पास ब्याये श्रीर उनसे उन्हें उपदेश दिया।

१४ जाते हुए। उसने जलफड़िके पुत्र लेखिका कर उगाह- नेके स्थानमें बैठे देखा श्रीर उससे कहा मेरे पीछे जा।

१५ तब वह उठके उसके पीछे हो खिया। जब यीशु उसके घरमें भोजनपर बैठा तब भूत कर उगाहनेहरारे श्रीर पापी लेग उसके श्रीर उसके शिष्यांके संग बैठ गये क्योंकि भूत के श्रीर वे उसके पीछे हो लिये।

१६ शाखापंके श्रीर फरीशियांने उसके श्रीर उगाहनेहरारे श्रीर पापियांके संग खाते देखके उसके शिष्यांसे कहा यह क्या है कि वह कर उगाहनेहरारे श्रीर पापियांके।

१७ संग खाता श्रीर पीता है। यीशुने यह सुनके उनसे कहा निरोगियांका वैद्यका प्रयोजन नहीं हैं परन्तु रोगियांका। में धम्मियांका नहीं परन्तु पापियांका प्रश्चालपे लिये बुलाने ज्ञाया हूँ।

१८ योहनके श्रीर फरीशियांके शिष्य उपवास करते थे। श्रीर उन्हें जा उससे कहा योहनके श्रीर फरीशियां- के शिष्य कीं उपवास करते हैं परन्तु श्रापके शिष्य उप- वास नहीं करते। यीशुने उनसे कहा जब दूरहा सखालों के संग है तब क्या वे उपवास कर सकते हैं। जबलों दूरहा उनके संग रहे तबलों वे उपवास नहीं कर सकते हैं।
परन्तु उन दिन ज्ञांचे जिनमध्ये टूक्हा उनसे भलज किया २० जायगा तब वे उन दिनांमध्ये उपवास करते। कोई मनुष्य २१ कोरे कपडेका टुकड़ा पुराने वस्त्रमध्ये नहीं राखता है नहीं तो वह नया टुकड़ा पुराने कपडेके कुछ कीर भी फाड़ लेता है कीर उसका फटा बढ़ जाता है। कीर २२ कोई मनुष्य नया दाख रस पुराने कुम्भिमल नहीं भरता है नहीं तो नया दाख रस कुम्भिमला फाड़ता है। कीर दाख रस बढ़ जाता है। कीर कुम्भेन नष्ट होते हैं परन्तु नया दाख रस नये कुम्भिमल भरा चाहिये।

विषाखके दिन यौय हैं बेटांमध्ये हाके जाता था कीर २३ उसके शिख़्र जाते हुए बाँसे तोड़ने लगे। तब फरीशियों २४ उससे कहा। देखिये विषाखके दिनांमध्ये जो काम उचित नहीं है सा ये लोग किंग करते हैं। उससे उसके कह २५ का तुमने कभी नहीं पढ़ा कि जब दाकुदका प्रयोजन था कीर वह कीर उसके संगी लोग भूई हुए तब उसने का किया। उसने कीवार ज्ञातियार महाय- २६ जबके समयमध्ये ईश्वरके घरमध्ये जाके भेरकी रोटियां खायें जिन्हें खाया कीर किसीकी नहीं केवल याजकेंद्रीय बचत है कीर जभने संगियोंका भी दिये। कीर उसने २७ उससे कहा विषाख्यावार मनुष्यके लिये हुस्सा पर मनुष्य विषाख्यावारके लिये नहीं। इसलिये मनुष्यका पुच्छ २८ विषाख्यावारका भी प्रभु है।

३ तीसरा पद्म।

१ योगका विषाख्यावारके विषमने निर्यात करता। २ बदलत रेमियांको बंगाला खाता।
३ वारह प्रेमियांत्या ठाणेरा। २० लालांकन बघावाका कङ्गङङ। २१ योगके
कुरुक्का बङ्गला।
1. यीशु फिर सभी घर में गया और वहां एक मनुष्य था जिसका हाथ सूख गया था। और लग उसपर देख लगानेके लिये उसे ताकते थे कि वह बियाहमने दिनमें इसकी चंगा करेगा कि नहीं। उसने सूखे हाथवाले मनुष्यसे कहा बीचमें खड़ा हो। तब उसने उन्होंसे कहा कि बियाहमने दिनमें भला करना भयवा बुरा करना प्रायको बचाना भयवा घात करना उचित है। परन्तु वे चुप रहे। और उसने उनके मनको कठोरतासे उदास हो उन्होंपर जोधसे चारें और तूफिछ किए। और उस मनुष्यसे कहा ज्ञापना हाथ बढ़ा। उसने उसको बढ़ाया और उसका हाथ फिर दूसरेके नाई भला चंगा हो गया।

6. तब फरीशियाने बाहर जाके तुरन्त हंगामियोंके साथ यीशुके बिस्त्र कामसे विचार किया इसलिये कि उसे नाश करें। यीशु ज्ञापने शिष्योंके साथ समुद्रके निकट गया और गालील और यिशुदिया और यिशुश्लीम और इदमसे उस पारसे बड़ी भीड़ उसके पीछे हो जिन्हें शिर और सीदानके झासपासके लगाने भी जब सुना वह जैसे बड़े काम करता है तब उसमेंकी एक बड़ी भीड़ उस पास आई। उसने ज्ञापने शिष्योंसे कहा भीड़के कारण एक नाव में रहे लगे रहे न हो कि वे मुंह दबावें। क्योंकि उसने बहुतींको चंगा किया यहाँ-लें कि जिन्हें रोगी मे उसे बुझनेका उसपर गिरे पड़ते थे।

9. युधिष्ठिर मूतिये भी जब उसे देखा तब उसकी ठंडवत किये।

12. और पुकारको बाले झाप इंश्वरके पुत्र हैं।
उसने उनकी बहुत दुःख चाहा दिये कि सुभे प्रगट मत करे ।

फिर उसने परबेटपर चुके जिन्हें चाहा उन्हें सपने १५ पास बुलाया श्रीराय वे उस पास गये । तब उसने बारह १४ जनाँकी ठहराया कि वे उसके संग रहे । श्रीराय वि वह १५ उन्हें उपदेश करनेको श्रीराय रोगाँका चंगा करने श्रीराय भुतालका निकालनेका खातिकर रहनेका भेजे । चर्चात १६ श्रीमतीका जिसका नाम उसने गिरत रखा । श्रीराय जब- १७ दीनी पुष्य याकृत श्रीराय याकृत्र भाई योहनका जिनका नाम उसने बनेगास खातिकर गजनकी पुष्य रखा । श्रीराय १८ ज्ञानदय श्रीराय फिलिप श्रीराय बर्चलमदे श्रीराय मती श्रीराय चोमेका श्रीराय ज्लफाइकी पुष्य याकृत्र श्रीराय घुट्टेकी श्रीराय श्रीमती कानानीका । श्रीराय यिहुदा इस्कारियातीका १५ जिसने उसे पकड़वाया । श्रीराय वे घरमें आये।

तब बहुत लोग फिर एकदू हुए यहांलिंग कि वे रॉटी २० खाने भी न सके । श्रीराय उसके कुरुम्ब यह सुनकर उसे २१ पकड़नेका निकल भाये क्वांकि उन्होंने कहा उसका चित्र ठिकाने नहीं है । तब अध्यापक लोग जो यिहूदालिम मि २२ भाये थे बोले कि उसे बालाजिबूल लगा है श्रीराय कि वह भुतालकी प्रधानकी सहायतासे भुतालका निकालता है । उस- २३ ने उन्हें अपने पास बुलाकि दूरप्रान्तीमें उनसे कहा श्रीनान 
क्वांकर श्रीनानका निकाल सकता है । यदि किसी राज्य- २४ में फूट पड़ी होय तो वह राज्य नहीं ठहर सकता है। श्रीराय यदि किसी घराने में फूट पड़ी होय तो वह घराना २५ नहीं ठहर सकता है । श्रीराय यदि श्रीनान अपने विरामधम श्री
उठके झगड़ा बिलग हुआ है ता वह नहीं ठहर सकता
20 है पर उसका शत्त होता है। यदि बलवन्तको माई
पहिले न बाँधे ता उस बलवन्तको घरमें पैठके उसकी
सामयी लूट नहीं सकता है। परन्तु उसे बांधके उसके
28 परको लूटेगा। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि मनुष्योंके
संतानोंके सब पाप शीर शब निन्दा जिससे वे निन्दा
24 करें दुःसमा किंदे जायगी। परन्तु जो माई पवित्र भात्मा
निन्दा करे सो कभी नहीं दुःसमा किया जायगा पर भान्त
30 दुःखके योग्य है। वे जो बाले कि उसे भापा भूत लगा
है इसीलिये योग्य उह बात कही।
31 से उसके माई शीर उसकी माता ज्याबे शीर बाहर
32 खड़ी हो उसकी बुजवा भेजा। बहुत लगे उसके आस-
36 पास बैठे थे शीर उन्हें उससे कहा देखिये ज्याबे
38 माता शीर ज्याबे भाई बाहर ज्याबे दूरले हैं। उसने
उनको उतर दिया कि मेरी माता भाजवा मेरे माई
38 बाल हैं। शीर जो लगे उसके आसपास बैठे थे उनपर
38 चारों शीर दूरले कर उसने कहा देखी मेरी माता
38 शीर मेरे भाई। क्योंकि जो माई इंप्टरकी इच्छापर
घले वही मेरा भाई शीर मेरी बाहम शीर माता है।

8 चौथा पत्र।

1 बीज बोमबाइकेक दुःखानः। 10 दुःखानों वर्षें वर्देस बलन्दका कारणः। 13 बोमबाइयाको
दुःखानका बार्यः। 21 धर्मयुक्तका दुःखान शीर बलन्दक युग्मका वर्देसः। 28 बीज
धर्मयुक्तका दुःखानः। 38 रामके दानका दुःखानः। 38 योग्यका शीर शीर दुःखान
कहणा। 38 धर्मयुक्तका ब्रा०मवा।

1 यीशु फिर समुद्रके तीरपर उपदेश करते लगा शीर
िसी बड़ी भीड़ उस पास एकटी हुई कि वह नावपर
चढ़की समुद्रपर बैठा शीर जब लोग समुद्रकी निकट भूमि-पर रहे। तब उसने उन्हें दृष्टान्तों में बहुतसी बातें सिखाईं। शीर अपने उपदेश में उनसे कहा। सुना टैक्सा एक बाल-हारा बीज बेलिका निकाला। बीज बेलिमें कुछ मागेकी शीर गिरा शीर चाकाशके पंखियोंने खाकी उसे चुग लिया। कुछ पत्तरीली भूमिपर गिरा जहां उसकी बहुत मिट्टी न मिली शीर बहुत मिट्टी न मिलने से वह बेग उगा। परन्तु सूर्य उदय होते ही वह मूलस गया शीर जड़ न पकड़ने से मृत्यु गया। कुछ कांटीकी बीचमें गिरा शीर कांटीने बढ़के उसको दबा डाला शीर उसने फल न दिया। परन्तु कुछ झच्ची भूमिपर गिरा शीर फल दिया जो उत्पाद होके बढ़ता गया शीर कांटी तीस गुणे कांटी साठ गुणे कांटी सो गुणे फल फलाया। शीर उसने उनसे कहा जिसकी सुननेके कान हां सो सुने।

जब वह एकान्तमें था तब जो लोग उसके समीप थे उन्होंने बारह शिशुकी साथ इस दृष्टान्तका शरीर उससे पूछा। उसने उनसे कहा तुमकी इंद्रवरेजके राज्यका भूद जाननेका शाखाकार दिया गया है परन्तु जो बाहर हैं उसहां सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं। इसलिये कि वे देखते हुए देखे शीर उन्हें न सूफ़ी शीर सुनते हुए सुने शीर न बूफ़ ऐसा न हो कि वे कभी फिर जारे शीर उनके पाप ल्या फिर जारे।

फिर उसने उनसे कहा का तुम यह दृष्टान्त नहीं समक्षत हो ता सब दृष्टान्त कींकर समक्षत। बालहारा वह है जो बचनकी बोलता है। मागेकी शीरकी जहां
बचन बेयार जाता है वे हैं कि जब वे सुनते हैं तब शैतान तुरन्त आके जो बचन उनकी मनमे बेयार गया १६ था उसे बीन लेता है। वैसी ही जिनमें बीज पत्थरसौजा भूमिपर बेयार जाता है सो वे हैं कि जब बचन सुनते हैं तब तुरन्त ज्ञानन्दसे उसकी यहाँ करते हैं। परलुट उनमें जड़ न बंधनसे वे बूढ़ी बीर ठहरते हैं तब बचनके कारण भूल भजन उपद्रव होनेपर तुरन्त ठाकर खाते हैं। जिनमें बीज कारिंके बीचमें बेयार जाता है सो वे हैं जो बचन सुनते हैं। पर इस संसारकी चिंता श्रीर धनकी माया श्रीर श्रीर वस्तुश्रींके लोभ उनमें समाज बचनकी दबाते हैं श्रीर वह निष्काल होता है।

पर जिनमें बीज चब़री भूमिपर बेयार गया सो वे हैं जो बचन सुनकी यहाँ करते हैं श्रीर फल फलते हैं बाईं तीस गुरु बाईं साठ गुरु बाईं सो गुरु।

श्रीर उसने उसके कहा का दीपकी लाते हैं कि बत्तके नौरी क्रजव मारके नौरी रखा जाय। क्या इस-लिये नहीं कि दीर्घतर पर कहा जाय। कुछ गुप नहीं है जो प्रगट न किया जायगा श्रीर न कुछ छिपा था परलुट इसलिये कि प्रसिद्ध हो जावे। यदि किसीकी सुननेके कान हीं ता सुने। फिर उसने उसके कहा सचेत रहा तुम का सुनते हो। जिस नाम्ने तुम नापते हो उसीसे तुम्हारे लिये नापा जायगा श्रीर तुमकी जे सुनते हो।

श्रीर दिया जायगा। क्योंकि जो बाईं रखता है उसकी श्रीर दिया जायगा परलुट जे नहीं। रखता है उससे जो कुछ उसकी पास है सो भी ले लिया जायगा।
फिर उसने कहा ईश्वरका राज्य ऐसा है जैसा कि दूर मनुष्य भूमिमें बीज बाया । श्रीर रात दिन सेवा श्रीर नूठे श्रीर वह बीज जवाम श्रीर बढ़े पर किस रीतिसे वह नहीं जानता है । क्योंकि पृथिवी इस्पति इस फल फलती है पहले संस्कृत तब बाल तब बालमें पक्का दाना । परन्तु जब दाना पक चुका है तब वह तुरन्त इस हसुर्या लगाता है क्योंकि कटनी जा पहुँची है ।

फिर उसने कहा हम ईश्वरके राज्यकी उपर ऐसे किससे दे श्रीर किस दूषितसे उसे बर्जन करें । वह दूर राइकी एक दानकी नाई है कि जब भूमिमें बोया जाता तब भूमिमेंकी सब बीजते श्रीरा है । परन्तु जब बोया जाता तब बढ़ता श्रीर तब साग पाते बढ़ा हो जाता है श्रीर उसकी ऐसी बड़ी हालियां निकलती हैं कि भाकाशकी पंढी उसकी छायामें बसेरा कर सकते हैं ।

ऐसे ऐसे बहुत दूषितसे यीशूने ले गंगीको जैसा वे ऐसा सुन सकते थे जैसा बचन सुनाया । परन्तु बिना श्रीर दूषितसे उसने उनकी कुछ न कहा श्रीर एकांतमें उसने श्रीर अपने शिष्योंकी सब वातांका सर्थ बताया ।

उसी दिन सांख्यकी उसने उनसे कहा कि ज्ञानो इस हम उस पार चले । सा उनकी ले गंगीको बिदा कर रहे उसे नावपर जैसा वा जैसा चढ़ा लिया श्रीर तिनी श्रीर नाव में भी उसकी संग थीं । श्रीर बड़ी चांदी नूठी श्रीर लहरें नावपर ऐसी लगीं कि वह चाह भर जाने लगी । परन्तु यीशू नावकी पिढ़ली श्रीर तकिया दिये हुए सेता था श्रीर उन्होंने उसे जगाके उससे कहा है
गुरु का शायको से च नहीं कि हम नष्ट होते हैं। तब उसने उठके बयारको डांटा श्रीर समुद्रसे कहा चुप रह श्रीर थम जा श्रीर बयार थम गई श्रीर बड़ा नीचा हो गया। श्रीर उसने उससे कहा तुम कों ऐसे डरते हो।

तुम्हें विश्वास कों नहीं है। परन्तु वे बहुत ही हर गये श्रीर शापसें बोले यह कौन है कि बयार श्रीर समुद्र भी उसकी आँखा मानते हैं।

पांचवां पार्व

1. बोधज्ञा एक मनुष्यलीला बहुत मूल्याको निकासना। 21 रक कन्याको खिलाना श्रीर एक स्त्रीको चंगा करना।

वे समुद्रके उस पार गरेलियोंको देशमें पहुंचे। जब यीशु नावपरसे उतरा तब एक मनुष्य जिसे अशुद्ध भूत लगा था। कबरस्थानमें तुरंत उससे झा मिला। उस मनुष्यका बासा कबरस्थानमें था श्रीर कोई उसे जंगीरोंसे भी बांध नहीं सकता था। क्योंकि वह बहुत बार बेडियों श्रीर जंगीरोंसे बांधा गया था। श्रीर उसने जंगीरों तोड़ डालीं श्रीर बेडियों तुकड़े तुकड़े किड़ श्रीर कोई उसे बस्तियें नहीं।

कर सकता था। वह सदा रात दिन पहाड़ों श्रीर कबर रहता था। श्रीर चिल्लाता श्रीर शापको पत्थरों से कारता था। वह यीशुकी तूरसे देखकी तोड़ा श्रीर उसको प्रबाहम किया। श्रीर बड़े शब्दसे चिल्लाको कहा है यीशु सम्बंधित ईंधनकरे पुच्छ शायकी मुक्तसे का अम। श्री शायकी ईंधनकरे बिरिया देता हूं जैसे मुक्त पीड़ा न दी-जिये। क्योंकि यीशुने उससे कहा है अशुद्ध भूत इस मनुष्यसंग निकल चा। श्रीर उसने उससे पूहा तेरा नाम
क्या है। उसने उत्तर दिया कि मेरा नाम सेना है क्योंकि हम बहुत हैं। श्रीर उसने यीशु से बहुत बिन्ती किया कि हमें 10 इस दैश्वसे बाहर न भेजिये। वहां पहुँचकर निकट सूचना- 11 रंगा बड़ा मुंह चरता था। तो सब भूतांने उससे बिन्ती 12 कर कहा हमें सूचनारों में भेजिये कि हम उनमें पैठ। यीशुने 13 तुरंत उन्हें जाने दिया श्रीर अशुद्ध मूढ़ निकलके सूचना- रंगा पैठ श्रीर मुंह जो दो सहस्रको नारकल थे कड़ियाँपरसे समुद्रमें दौड़ गये श्रीर समुद्रमें हुब मरे। पर सूचनारों 14 चरवाहे भागे श्रीर नगरमें श्रीर गांवोंमें इसका समाचार कहा श्रीर लोग बाहर निकले कि देखो क्या हुआ है। श्रीर यीशु पास आके वे उस भूतात्मका जिसे भूतांकी 15 सेना लगी थी बैठे श्रीर बस्त पहिने श्रीर सुबुढ़ देखके हर गये। जिन लोगोंने देखा था उन्होंने उनसे कह दिया 16 कि भूतात्म मनुष्यको श्रीर सूचनारोंके विषयमें बैसा हुआ था। तब वे यीशुसे बिन्ती करने लगे कि हमारे 17 सिवानेंसे निकल जायें। जब वह नावपर चढ़ा तब 18 जो मनुष्य आबों भूतात्म का उसने उससे बिन्ती किया कि में आपकी संग रहू। पर यीशुने उसे नहीं रहने 19 दिया परन्तु उससे कहा अपने पर्यायको अपने कुरूम्बके पास जाकी उन्होंने कह दि कि अपने पर्रीवाली तुफान देखा करके तेरे लिये कैसे वड़े काम किये हैं। वह जाके 20 दिकाँपली दैश्वमें प्रचार करने लगा कि यीशुने उसके लिये कैसे वड़े काम किये थे श्रीर सभीने अच्छा किया।

जब यीशु नावपर फिर पार उतरा तब बहुत लोग 21 उस पास एकदा हुए श्रीर वह समुद्रके तीरपर था। श्रीर 22
देखि सभाके ज्ञानांमितेस यादर नाम एक ज्ञानां 23 ज्ञाना शैर उसे डेखिे उसके पांचियं पढ़ा और शैर उससे बहुत बिन्ती कर कहा मेरी बेटी मराठी है ज्ञाना शैर उसपर हाय रखिये कि वह चंगी हो जाय तो 24 वह जीयगी। तब यीशु उसके संग गया शैर बड़ी भीड़ उसके पीछे हो लिए शैर उसे दबाती थी। 25 शैर एक स्त्री जिसे बारह वर्ष से लौह बहनिका रोग 26 था, जो बहुत वेदनासे बड़ा दुःख पाने सब धन उठा चुकी थी शैर कुछ लाभ नहीं पाया परन्तु अधिक 27 रोग हुई। तिसने यीशुका चाचा सुनके उस भीड़में 28 लिए से शैर उसके बस्तिको बूढ़ा। कियांकि उसने कहा यदि में बेवल उसके बस्तिको बूढ़ों तो चंगी हो जायंगी। 29 शैर उसके लौहका सता तरलत सूख गया शैर उसने 30 ज्ञाने देखके जान लिया कि मैं उस रोगसे चंगी हुईं हूं। 30 यीशुने तरलत ज्ञाने में जाना कि भूमि में शक्ति निकाली है शैर भीड़में पीछे फिरके कहा जिसने मेरे बस्तिका 31 बूढ़ा। उसके जिसने उससे कहा ज्ञान देखते हैं कि भीड़ ज्ञानको दबा रही है शैर ज्ञान कहते हैं जिसने 32 मुखी बूढ़ा। तब जिसने वह काम किया या उसे देखने- 33 भी यीशुने चाचा शैर दुःख दिये। तब वह स्त्री जो उस- पर हुआ था वह जानकी दरती शैर कांपती हुईं शायें शैर उसे दुःखवत कर उससे सच सच सब कुछ कह दिया। 34 उसने उससे कहा है पृथ्वी तेरी विश्वासने तुफां चंगा किया है कुशलसे जा शैर ज्ञाने रोगसे चंगी रह। 35 वह बोलताही था कि ले गयने सभाके ज्ञानांको घरसे
चा कहा चापकी बेटी मर गई है चा गुरुका चीर टूँब कींग देते हैं । जी बचन कहा जाता या उसकी सुनके ईद रीशुने तुरस्त सभाके अध्यक्षसे कहा मत हर केवल विद्वास कर । चीर उसने पितार चीर याकूब चीर याकूबको ३० भाई याहनको छोड़ चीर किसीका अपने संग जाने नहीं दिया । सभाके अध्यक्षके घरपर पहुंचके उसने धुम धाम ३८ अर्थात लगाकी बहुत राते चीर चिल्लाते देखा । उसने ३५ भीतर जाके उनसे कहा कोई धूम मचाते चीर राते हो । कन्या मरी नहीं पर जाती है । वे उसका उपहास करने ७० लगे परत्तू उसने समेंका बाहर किया चीर कन्याके माता पिताको चीर अपने संगिनीका लेके जहां कन्या पड़ी थी वहां पैठा । चीर उसने कन्याका धाह पकड़के ४१ उससे कहा तालिवा कूमी अर्थात है कन्यामै तुकसेरकहा हूँ उठ । चीर कन्या तुरन्त उठी चीर फरने लगी कीणके ४२ वह बारह बरसकी थी । चीर वे अत्यन्त विस्मित हुए । पर उसने उनको दूढ़ भाषा दिये कि यह बात कोई न ४३ जाने चीर कहा कि कन्याको कुछ खानेको दिया जाय ।

८ छठवां पार्बे ।

१ यीशुका भापने देशको लोगोंमा चर्चमान देना । २ बारह प्रेमितोंको भेजना । १४ योगका विघटितमा देशमारेरी मृत्यु । ३० यीशुका प्रेमितोंका समाचार सुनना चीर लोगोंका चर्चवाहन देना । ४५ पाँच सदिय समुद्रशीतको चेहरे सौजन्यके तुमको भेजना । ५५ समुद्रपर खेलना । ५५ निमित्तका रेतिगायको चेहरा करना ।

यीशु वहांसे जाके दुलटिरेखमें आया चीर उसके रचितय १
उसकी पीछे है निये । विवाहके दिन वह सभाके घरमे २
उपदेश करने लगा चीर बहुत लेग सुनके अचम्भित होा
बाले इसको यह बार्ते कहांसे हुई है शीर यह हानासा ज्ञान है जो उसको दिया गया है कि ऐसे शायरपर्व कम्मे 6 भी उसको हारुने से खिये जायें भेर। यह क्या बदले नहीं हैं मारियमका मुत शीर याकूब शीर येशु शीर शिशुदा शीर शिमानका भाइ शीर का उसकी बाहने यहां हमारे पास नहीं हैं। तो उन्हारे उसके विषय्म ठाकर 8 खाई। यिशु के उनसे कहा भविष्यद्वारा अपना देश शीर अपने कुरुमध्य शीर अपना घर छोड़ें शीर कहीं निरादर 5 नहीं होता है। शीर वह वहां कोई असरमय कम्मे नहीं कर सका केवल साधा रोगियांपर हाथ रखके उन्हें 6 चंगा किया। शीर उसने उनके आविष्कारिक संकेतों 6 क्या शीर चढ़ा शीरके गांवांमें उपदेश करता फिरा।

7 शीर वह बाल शिशुदा क्षण उसके पास बुलाके उन्हें दो दो करके भेजने लगा शीर उनको श्रद्धु भूतांपर 8 आधिकार दिया। शीर उसने उन्हें आशा दी कि मार्मके लिये लारी छोड़े शीर कुछ मत लेता न फीलो 6 न रोटी न पटके में पैसे। परन्तु जूते पहिना शीर दो 9 अंगे मत पहिनें। शीर उसने उनसे कहा जहां कहाँ 10 तुम किसी घरमें प्रवेश करो जबलां वहाँसे न निकलो।

11 तबले उसी घरमें रहो। जो कोई तुम्हें यहां न करें शीर तुम्हारी न सुनें वहांसे निकलते हुए उनपर साधी होने के लिये अपने पांविने नीचे की पूल मझा डाला। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि विचारकों दिनमें उस नगरको दशासे सदैव अथवा अमराको दशा सहनेमोग्य हैंगी। 12 तो उन्हारे निकलके पश्चाताप करनेका उपदेश किया।
श्रीर बहुतेरे भूतांको निकाला श्रीर बहुत रागियोंपर १५ तेल मलके उन्हें चंगा किया।
हराद राजाने येरुकी कोति सुनि कोंटिक उसका १६ नाम प्रसिद्ध हुस्ना श्रीर उसने कहा यहां वपतिसमा देनेराहरा मूतकोमसे जी उठा है इसलिये आशचर्य करमि उससे प्रगट होते हैं। श्रीराने कहा यह एलियाह है १७ श्रीराने कहा भविष्यवात है अयवा भविष्यवातकावृत्तांसे एकके समान है। परन्तु हरादनेवुनके कहा जिस यहां- १८ का भैंसे सिर कटवाया तोई है वह मूतकोमसे जी उठा है। कोंटिक हरादने जाप अपने भाई फिलिपकी स्तनी हरादि- १९ याके कारण जिससे उसने बिवाह किया था लोगांका भेजको यहानको पकड़ा था श्रीर उसे बन्दीगृहमें बांधा था। कोंटिक यहानने हरादसे कहा था कि अपने माईकी २० स्तनीका रखना तुमको उचित नहीं है। हराद्या भी २१ उससे बैर रखती थी श्रीर उसे मारे दालने चाहती थी पर नहीं सकती थी। कोंटिक हराद यहानका धर्मा २२ श्रीर पवित्र पुरूष जानके उससे डरता था श्रीर उसकी रक्षा करता था श्रीर उसकी सुनके बहुत बातांपर चलता था श्रीर प्रसन्नतामे उसकी सुनता था। परन्तु जब २३ ज्ञातानीका दिन हुस्ना कि हरादने अपने जन्म दिनमें अपने प्राप्तिकों श्रीर सहस्रपतिकों श्रीर गालीलकी बडे लोगांके लिये बियारी बनाई। श्रीर जब हराद्या श्रीर २४ पुष्पने भीतर जा नाच कर हरादने श्रीर उसके संग बैठनेहरानको प्रसन्न किया तब राजाने कन्यासे कहा जा कुछ तेरी इच्छा हौँ से मुफति मांग श्रीर मैं तुमसे
23 देजुंगा। श्रीर उसने उससे किरिया खाँदे कि मेरे बापे
24 राज्यलों जा कुछ तू मुकसे मांगे मैं तुम्हें देजुंगा। उसने
बाहर जा ज्यापनी मातासे बहा मैं क्या मांगूंगी। वह
25 बोली योहण बपतिसमा देनेहारिका सिर। उसने तुरल
उतावलीसे राजा के पास भीतर श्रा किन्तु बार कहा
में चाहती हूँ कि श्राप योहण बपतिसमा देनेहारिका
कई सिर धालमें जब मुक्ते दीजिये। तब राजा श्रापि
उदास हुक्का परन्तु उस किरियाबे श्रीर ज्यापने संग
20 बैठनेहारिके कारण उसे रालने नहीं चाहा। श्रीर
राजाने तुरल पहुँचका मेजकर योहणका सिर लाने-
28 की श्रापि खिड़। उसने जाके बन्दौगृहमें उसका सिर
काटा श्रीर उसका सिर धालमें लाके कन्याका दिया
24 श्रीर कन्याने उसे ज्यापनी मांका दिया। उसके शिष्य
यह सुनके ज्याये श्रीर उसकी लोकका उठाके कवरमें
रखा।
30 प्रेरिताने यीशु पास एकटे हे उससे सब कुछ कह दिया
उन्होंने क्या क्या क्या खिया श्रीर क्या क्या सिखाया था।
31 उसने उससे कहा तुम ज्याप एकान्तमें किसी जंगली
स्थानमें ज्याके योहण बिस्माम करे। क्यांकि बहुत लोग
श्राते जाते थे श्रीर उहर्दे खानेका भी ज्याप न मिला।
32 श्रा वे नावपर चढ़के जंगली स्थानमें एकान्तमें गये।
33 श्रीर लोगाने उनका जाते देखा श्रीर बहुतताने उसे
चीन्हा श्रीर पेदल सब नगरौंमें उघर दैड़ी श्रीर उनके
34 ज्याप बढ़के उस पास एकटे हुए। यीशुने निकलके
बड़ी भीड़का देखा श्रीर उसका उत्तर पदा ज्याप खिया क्यांकि
बे विन रखवालकी भेड़ांकी नाई बे श्रार वह उन्हें बहुतसा उपदेश देने लगा।

जब सबर हो गई तब उसके शिष्योंने उस पास खा घुस कहा यह ता झंगली ध्यान है श्रार सबर हुई है। लोगों— इसी का बिदा कीजिये की बे चारा राहे गांवों राहे बस्तियां में जाके और लिये राटी मेल लेवं कीजिके उनके पास कुछ खानेका नहीं है। उसने उनकी उठर दिया कि तुम उन्हें खानेका देशा। उन्हाँने उससे कहा क्या हम जाके दो सा सुकियांकी राटी मेल लेवं राहे उन्हें खानेका देवं। उसने उससे कहा तुझाँरे पास बितली ढौ रातियां हैं जाके देखा। उन्हाँने बँकके कहा पांच राहे दो मबली। तब उसने तब लोगांकी हरी घासपर ढौ पांति पांति बैठानेकी शाखा उन्हें दिया। बे सा सा ढौ राहे पचास पचास करके पांति पांति बैठ गये। राहे ४१ उसने उन पांच रातियां राहे दो मबलियांकी ले स्वागकी राहे देखकी धन्यवाद जिया राहे रातियां ताड़के और लोगांकी शिष्यांकी दिये कि लोगांने खाने रखें राहे उन दो मबलियांकी भी सभीं में बांट दिया। सा सब खाके ४२ तुम हुए। श्रार उन्हाँने रातियांकी तुकड़ांकी राहे मब- ४३ लियांकी चारह टोकरी भरी उठाई। जिल्हांने राटी ४४ खाई सा पांच सहस्र पुरुषोंकी लटकल थे।

तब मीशुने तृढ़त स्वपने शिष्यांकी तृढ़ शाखा दिये ४५ कि जबलों में लोगांकी बिदा कह कतुम तम नावपर चढ़ीमेरे खाने उस पार बैतसीदा नगरकी जाता। वह उन्हें बिदा ४५ कर प्रार्थना करनेको प्रबंधित गया। सांख्यों नाव समु- ४६
8 दृशि बीचम के श्रीर यीशु भूमिपर चलकेला था। श्रीर उसने शिखनेंसे शिखरमें ब्याकुळ देखा क्योंकि बयार उनके सम्मुखकी थी श्रीर रात्री केणी पहरके निकट वह समुद्रपर चलते हुए उनके पास आया श्रीर उनके 84 पाससे होके निकला चाहता था। पर उन्हाँने उसे समुद्रपर चलते देखके समका किए न्याय है श्रीर चिल्लाये 80 क्योंकि वे सब उसे देखके घबरा गये। वह तुरन्त उनसे बात करने लगा श्रीर उनसे कहा डाल्ड़ बांधा में हुं 81 हरे मत। तब वह उन पास नावपर चढ़ा श्रीर बयार धम गई श्रीर वे शपने शपने मनमें अत्यन्त विस्मित 82 श्रीर अच्छादित हुए। क्योंकि उन्हांका मन कठोर था इसलिये उन रात्रियोंकी आश्चर्यमें करमें उन्हें झांसन हुआ।

83 वे पार उतरके गिनेसरत देशमें पहुंचे श्रीर लगान 84 किया। जब वे नावपरसे उतरे तब लोगने तुरन्त 85 यीशुकी चीन्हा। श्रीर राजस्वपासके सारे देशमें टाइड़के जहां सुना कि वह बहां है तहां रागियोंको खाटीपर 86 ले जाने लगे। श्रीर जहां जहां उनसे अस्तित्व अथवा नगरां अथवा गांवोंमें प्रवेश किया तहां उन्हांने रागियों-को बाजारोंमें रखके उससे बिन्ती खिड़किए विच उसके वस्त्रके झांचलको भी जूरें श्रीर जितनेंने उसकूलसा सब चंगे हुया।
तब फरीदशी लग श्रायर कितने अध्यापक जो यिह-शलीमसे भाये थे यिशु पास एकटू हुए। उन्होंने उसके कितने शिष्योंकी अधुदा अर्थात बिन धाये हार्षिंसे रोटी खाते देखके टाप दिया। क्योंकि फरीदशी श्रायर सब यिहुदी लग प्राचीनोंके व्यवहार घाराए कर जबलों यहसे हाथ न धाये तबलों नहीं खाते हैं। श्रायर बाजारसे भाये जबलों स्नान न करे तबलों नहीं खाते हैं श्रायर बहुत श्रायर बरते हैं जो उन्होंने माननेकी यहस जिई हैं जैसे करोरों श्रायर बरतनें श्रायर थालियों श्रायर खाटिंसे घाटा।

सा उन फरीदियां श्रायर अध्यापकोंने उससे पूछा कि श्रापके शिष्य लग किंग प्राचीनों के व्यवहारोंपर नहीं चलते परन्तु बिन धाये हार्षिंसे रोटी खाते हैं। उसने उनको उत्तर दिया कि यिशैयांने तुम कपरीयोंके विषयमे भविष्यद्वारी छाड़ी कही जैसा लिखा है कि ये लग होंसे मेरा श्रादर करते हैं परन्तु उनका मन समहसे हूर रहता है। पर ये वृथा मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्योंकी श्राजाजींको धम्मापडेश ठहरके सिखाते हैं। क्योंकि तुम ईश्वरको ज्ञानों को छोड़के मनुष्यों के व्यवहार घाराए करते हा जैसे बरतनें श्रायर करोरोंको घाटा। श्रायर ऐसे ऐसे बहुत श्रायर काम भी करते हा। श्रायर उसने उससे कहा तुम आपने व्यवहार पालन करनेको ईश्वरको ज्ञाना मली रोतिसे राल देते हा। क्योंकि मसाने कहा आपनी माता श्रायर आपने पिता का श्रादर कर श्रायर जो कोई माता अश्वाय पिताको निन्दा करे सो मार डाला जाय। परन्तु तुम कहते हा यदि ।
मनुष्य छापने माताका श्रयवा पितासे बहे कि जे कुछ तुम्के मुक्तसे जाम होता सा कुवान क्षतिपूर्त संकल्प किया गया है ता वस। शैर तुम उसकी उसकी माता श्रयवा उसके पितासे लिये शैर कुछ छरने नहीं देते हैं। सो तुम छापने व्यवहाररूपे जिन्हें तुमने ठहराया है इंस्वरके वचनका उठा देते हो शैर ऐसे ऐसे बहुत खाम करते हो।

शैर उसने सब लोगांके छापने पास बुलाके उनसे कहा तुम सब मरी सुना शैर बुकरा। मनुष्यके बाहरसे जै उसके समावे ऐसा कुछ नहीं है जो उसका श्रयवा छर सकता है परन्तु जा कुछ उसके निकलता है। लौटे किसीके सुनने के बाण हैं। ते सुनने। जब वह लोगांके पाससे परमें छाया तब उसके गोम्यांने ऐसे दृश्यान्तके विपरयमे उससे पूछा। उसने उनसे कहा तुम भी क्या ऐसे निर्देश नहीं हो। क्या तुम नहीं बूकते हो कि जा कुछ बाहरसे मनुष्यमे समाता है ता उसका श्रयवा नहीं छर सकता है। क्योंकि वह उसके मनमे नहीं परन्तु पेटमे समाता है शैर संदासमे गिरता है जिससे सब मोक्षन शुद्ध होता है। फिर उसने कहा जा मनुष्यमें निकलता है लौटे मनुष्यका श्रयवा छर करता है। क्योंकि भीतरसे मनुष्यांके मनसे नाना भांतिकी बुरी चिनता, परस्कृतमें व्यभिचार नरहिंसा। शैर लौभ है शैर दुष्टता शैर झल लुम्पन कुटुंब इंस्वरकी निन्दा छर, श्रयवा छर अन्तर निकलती हैं। यह सब बुरी
वात भीतर से निकालती हैं श्रीर मनुष्यको अपविष्ट करती हैं।

यीशु बहांसे उठके सारे श्रीर सीदानके सिवानांमें २८
गया श्रीर किसी घरमें प्रवेश करके चाहा कि बोध न जाने परन्तु वह छिप न सका। क्योंकि सुरोजीनीकिया २५
देशको एक यूनानीय मत माननेवाली स्ती जिसकी
बेटीको चश्मादु भूत लगा या उसका चाँच सुनके खाई
श्रीर उसके पांचों पड़ी। श्रीर उससे बिन्ती फिरे कि सब
उम्मा मेरी बेटीसे भूत निकालिये। यीशुने उससे कहा २०
लड़कीको पहले तृप होने दे क्योंकि लड़कीको रोशी
लेके खुदांके झगा पैका झाँझा नहीं है। स्तीने उसका २५
उतर दिया कि सच है प्रभुतभी कुटिमेजकी नीचे बालकों-
के चौरचार खाते हैं। उसने उससे कहा इस वातके २५
कारख चली जा भूत तेरी बेटीसे निकल गया है। तो ३०
उसने बोधने घर जाके भूतको निकले हुए श्रीर झपनी
बेटीको खातपर लेती हुई पाई।

फिर वह सारे श्रीर सीदानके सिवानांसे निकलके ३१
दिकापलिने सिवानांके बीचमें हाके गानोलके समुद्रके
निकट झाया। श्रीर लोगने एक बाहरे तोतले मनुष्यको ३२
उस पास लाके उससे बिन्ती किये कि उप इसपर हाय
रहिये। उसने उसकी भीड़में एकान्त ले जाके झपनी ३३
चंगलियां उसके कानोंमें हाली श्रीर घूकके उसकी
जीभ बूढ़ी। श्रीर स्वर्गिकी श्रीर देखके लंबी सांस भरके ३४
उससे कहा इम्फाताह अव्यात खुल जा। श्रीर तुरन्त ३५
उसके कान खुल गये श्रीर उसकी जीबका बंधन भी
ईस्खल गया शैर बह शुद्ध रीतिव बोलने लगा । तब यीशुने उन्हें चिताया कि किसी भी मत कहा परन्तु जितना उसने उन्हें चिताया उतना उन्हींने बहुत ख़ाफिक प्रचार किया । शैर वे खयाल भरबंधित हो बोले उसने सब कुछ अच्छा किया है वह बहिरोंको सुनने शैर गुणियोंको बालनको शरीत देता है ।

8 शान्तवां पढ़िे ।

1 यीशुका चार सवस मनुष्योंको पृथ्वी भोजनसे सुप्रस्ताना। 10 विश्व संगमनेशारोंको दांतना । 14 अपने विश्वोंको फरारियोंकी शिखायले विषयमें चितात । 32 रक्षा भगवर्थको लेख जोश्वाला। 27 यीशुके विषयमें लेखियोंका शैर विषयोंका विचार। 31 वस्तुद्वारमें अपनी मृत्युका भविष्यद्वारा कहना शैर पिताके दांतना । 34 विश्व भनिको विज्ञान ।

2 उन दिनमें जब बड़ी भीड़ हुई शैर उनको पास कुछ खानेको नहीं था तब यीशुने अपने शिष्योंको डाए। यीशुने उनके पास बुलाके उनसे कहा । मुक्ते इन लोगोंपर दया राती है किंतु वे तीन दिनमें मेरे संग रहें हैं तो उनके पास कुछ खानेको नहीं है। जो में उन्हें भोजन बिना अपने घर जानेको बिदा कहता तो मार्गमें उनका बल घर जायगा किंतु उन्हें केवल शैर दूसरे से भागे हैं। उसके शिष्योंने उसका उत्तर दिया कि यहां संगमर्म में कहां है। इन लोगोंके रेडिसे तृप्त कर सके। उसने उनसे पूछा, तुम्हारा पास कितनी रोटियां हैं? उन्होंने कहा सत्य। तब उसने लोगोंको भूमिपर बैठनेकी राज्य दिये शैर उन सात रोटियोंका लेके प्रथ्य मानके ताडा शैर बताने शिष्योंका दिया कि उनके समाग परवें शैर शिष्योंने लोगोंके
शागे रखा। उनके पास थारीसी छोटी मदबख़्यां भी थीं शाह उसने धन्यबाद कर उन्हें भी लेगी तो रखनेकी ज्ञाता किसे। सो वे खाके तौम हुए शाह जो तौबे वच रहे उन्हें उनके सात रोकर उठाये। जिन्होंने खाया से चार सहस पुश्येंके अरकाल थे शाह उसने उनको बिदा किया।

तब वह तौम न्यापने शिव्योंके संग नावपर चढ़के दलमनूथा नगरों सिवानें जाया। शाह फरोशी लोग निकल शाये शाह उससे बिवाद करने लगे शाह उसकी परीक्षा करनेकी उससे ज्ञाताशका एक चिन्ह मांगा। उसने अपने ज्ञातामें हाय मारके कहा इस समयके लोग कीं चिन्ह ढूँढते हैं, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि इस समयके लोगों कोई चिन्ह नहीं दिया जाया। शाह वह उन्हें छाड़के नावपर फिर चढ़के उस पार चला गया।

शिव्य लोग राटी लेना भूल गये शाह नावपर उनके साथ एक राटीसे अधिक न थी। शाह उसने उन्हें चिताया कि देखो फरोशीयोंके खोरसे शाह हरीदों खोरसे चाकस रहा। वे जापसमें विचार करने लगे यह इसलियाँ हैं कि हमारे पास राटी नहीं है। यह जानके यीशुने उनसे कहा तुम्हारे पास राटी न होनेके कारण तुम क्या जापसमें विचार करते है। क्या तुम अबलों नहीं बुद्धते शाह नहीं समझते है। क्या तुम्हारा मन अबलों कठर है। आखिं रहते हुए तुम नहीं 15 देखते है। शाह कान रहते हुए क्या नहीं सुनते है।
१५ शीरा क्या स्मरण नहीं करते हैं। जब मैंने पांच सहस्रे लिये पांच रात्रि तैयारियों तब तुमने तुकड़े-तुकड़े कितनी रात्रियां भरीं उठाईं। उन्होंने उससे कहा चारह।
२० शीरा जब चार सहस्रे लिये सात रात्रि तब तुमने तुकड़े-तुकड़े कितने रात्रि भरे उठाई। वे बोले सात।
२१ उसने उससे कहा तुम क्यों नहीं समझते हैं।
२२ तब वह बैठते-दौड़ते जाया शीरा लौगोंने एक जलबा की।
२३ उस पास ला उससे बिन्ती किंद्रे कि उसकी फूंक। वह उस जलबा हाथ पड़े उसे नगरे बाहर है गया। शीरा उसकी लेशियाँ खूबको उसपर हाथ रखके उससे पुढ़ा क्या तू कुछ देखता है। उसने नेत्र उठाके कहा:
२४ मैं वृक्षोंको नाइ मनुष्योंको फिरते देखता हूं। तब उसने फिर उसकी लेशियाँ हाथ रखके उससे नेत्र उठाके शीरा वह चंगा हो गया। शीरा सभी को फरसकाईं देखने शई लगा। शीरा उसने उस्के यह कहकर घर भेजा कि नगरस्थ मत जा शीरा नगरमें किसीसे मत कह।
२५ यीशु शीरा उसके शिष्य शीरा मार्गियोंके गांवों-में निकल गये। शीरा मार्गियों उसने भापे शिष्योंसे पूछा।
२६ वह लगा क्या कहते हैं में शीरा हूं। उन्होंने उतर दिया कि वे शापको योहन बप्तिस्मा देशहारा कहते हैं। परन्तु उन्होंने अलियाह कहते हैं। शीरा कितने भविष्युत्रांकोंसे एक कहते हैं। उसने उसकी कहा तुम क्या कहते है। में कीमत हूं। पिताने उसको उत्तर दिया कि शाप शीघ्र हैं। तब उसने उल्लेख श्राद्ध दिने वे मेरे विषयमें किसीसे मत कहा।
शीर्ष वह उन्हें बताने लगा कि मनुष्यको पुष्कर ३१ भवय है कि बहुत दुःख उठाने शीर भावी शीर प्रवाहण याजकों शीर श्रध्यापकोंसे तुच्च निया जाय शीर भाव धाका जाय शीर तीन दिनकी पीढ़ी सी उठे। उसने यह बात खोलके कही शीर पिता उत्ते लेकि ३२ उसकी हांटने लगा। उसने मुंह फेंके शीर अपने ३३ शिशुकेर पूणे वार्के पितरकी हांटा कि है तैते मेरे सामने तू तू हो क्या छो तुम्हें ईश्वरकी बातांका नहीं परन्तु मनुष्यकी बातांका साथ रहता है।

उसने अपने शिशुकेर संग लगाओ कि अपने पास ३८ बुलाके उनसे कहा जो काई मेरे पीढ़ी बनाने चाहिए सो अपनी छुट्टी मारी शीर अपना कूड़ उठाके मेरे पीढ़ी बनावे। क्योंकि जो काई अपना प्राप्त बचाने चाहिए ३५ सा उसे खोलेगा परन्तु जो काई मेरे शीर सुभाषिके लिये अपना प्राप्त खोलेगे सा उसे बचावेगा। यदि मनुष्य इस सारी जगतकी प्राप्त करे शीर अपना प्राप्त गंवावे तो उसकी का लाभ होगा। अथवा मनुष्य अपने प्राप्तकी ३० सन्ती का देगा। जो काई इस समयमुखी अभिमानी शीर ३० पायी लगाओ बीचम मुझसे शीर मेरी बातांके लाजबी मनुष्यका पुष्च भी जब वह पवित्र दूसरी भाग अपने पिताके ईश्वर्यमें अच्छे तब उससे लाजावेगा।

६ नवां पद्ध के वेशके राजकी द्वारकी मध्यभागाती १ रसोगे द्वारकी शायरी तेजस्वी विकारें देना । ११ महाकाव्य द्वारकी द्वारकी कृपा छापते दर्शाना। १५ एक महाकाव्य लघुकी बचाना। ३० अपने मुखुकी मध्यभागाती कहना। ३३ नेपाल हिमाली विजय करना। ३८ दुर्गेश्वर ज्ञानुकी ज्ञाने शीरे क्षीर दास्ता विज्ञानी निकेतन।
1. यीशुने उनसे कहा मैंं तुमसे सच कहता हूँ कि जो यहाँ बढ़े हैं उनमें से कोई बाई हैं कि जबलों ईश्वरका राज्य पराक्रमसे भाया हुआ न देखे तबलों मृत्युका स्वाद न चीखेंगे।

2. धन दिनके पीछे यीशु पितर श्रीर याकूब श्रीर योहानका लेकि उन्हें किसी जंचे पब्देतपर फकान्तमें ले गया श्रीर उनके खागी उसका रूप बदल गया। श्रीर उसका बस्त चमकाने लगा श्रीर पालीके नाईं खाति उडळा हुआ जैसा कोई घोंघी घरतीपर उजला नहीं।

3. कर सकता है। श्रीर मुसाके संग एलियाह उनको दिखाई दिया श्रीर है यीशुके संग बात करते थे।

4. इसपर पितरने यीशुसे कहा हं गुरु हमारा यहां रहना अच्छा है। हम तीन देवे बनावें एक लाखके लिये एक मुसाके जिने श्रीर एक एलियाहके लिये। वह नहीं आनता था कि क्या कहे कोंकि वे बहुत डरते थे।

5. तब एक मेघने उन्हें छा लिया श्रीर उस मेघने यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुज था है उसकी सुनी।

6. श्रीर उन्हें झाँचानक चारीं श्रीर दूरिपुर कर यीशुके।

7. बादके अपने संग श्रीर किसीको न देखा। जब वे उस पब्देतपर उतरते थे तब उसने उनका जाना दिया कि जबलों मनुष्यका पुज मृत्युकंमें सही जी उठे।

8. तबलों जो तुमने देखा हैं सो किसीसे मत बहो। उन्हें यह बात झाँचनेहीं रखके लाखके लाखसमें बिचार किया कि मृत्युकंमें जी उठनेका अर्थ क्या है।

9. श्रीर उन्हें उससे पूँछा घयायपक लेग कों बहते
है कि अलियाहको पहिले ज्ञाना होगा। उसने उनका १२ उत्तर दिया कि सच है अलियाह पहिले ज्ञाने सब कुछ सुधारेगा। शीर नुसह के पुष्करी विषयसे कथारक लिखा है कि वह बहुत दुःख उठावेगा शीर तुच्छ किया जायगा। परन्तु मे तुमसे कहता हूं कि अलियाह भी ज्ञा १३ चुका है शीर जैसा उसके विषयसे लिखा है तैसा उन्होंने उससे जो कुछ चाहा सा किया है।

उसने शिखरों के पास का बहुत लोगोंका उनकी चारों १४ शीर शीर शाहपकोंका उनसे विबाद करते हुए देखा। सब लोग उसे देखतेही विस्मित हुए शीर उसकी शीर १५ दौड़के उसे प्रशासन किया। उसने शाहपकोंसे पृथ्वि तम १६ इनसे छिस बातका विबाद करते हो। भोजेसे एकने १७ उत्तर दिया कि है गुह में अपने पुष्करी जिसे गूंगा भूत लगा है शाहपके पास लाया हूं। भूत उसे जहां पकड़ता १८ है तहां परकात है शीर वह मुंहसे फेन बहाता शीर अपने दांत दीसता है शीर सूख जाता है शीर में ने शाहपके शिखरोंसे कहा कि उसे निकालें परन्तू वे नहीं सके। योगुणों उत्तर दिया कि है अबिश्वसी लोगों में कबलों ९५ समझार संग रहूंगा शीर कबलों समझार सहूंगा। उसको मेरे पास लाया। वे उसकी उस पास लाये शीर जब २० उसने उसे देखा तब भूतने तुरक उसकी मरियडा शीर बह भूमिपर गिरा शीर मुंहसे फेन बहाते हुए लोटने लगा। योगुणों उसके पितासे पृथ्वि यह उसकी कितने २१ दिनाँके हुआ। उसने कहा बालकपनसे। ूतने उसे २२ साह करनेवार बारबार शाहमें शीर पानीमें भी गिराया।
है परन्तु जो श्राप कुछ कर सबै तो हमपर दया करके मार उपकार को जिज्ञास। यीशुने उससे कहा जो तू विश्वास कर सबै तो विश्वास करनेहारीं लिखे सब कुछ हो सकता है। तब लोकको पिताने तुरल युक्तको रा राहे कहा है प्रभु में विश्वास करता हूं मेरे श्रापवासका उपकार को जिज्ञास। जब यीशुने देखा कि बहुत लोग एकत्र दैवि छाते हैं तब उसने अशुद्ध भूतका टांगके उससे कहा है गुंगे बाहरे भूत में तुरे अश्लिया देता हूं कि उसमें निकल श्राप श्रार उसमें फिर कभी मत पैदा। तब भूत चिपकले श्रार लोकको बहुत मरोड़के निकल श्राया श्रार लोक मृतको समान हो। गया यहांतूं कि बहुताने कहा वाह तिर मर २७ गया है। परन्तु यीशुने उसका हाथ पकड़के उसे उठाया २८ श्रार वाह खड़ा हुआ। जब यीशु घरमें श्राया तब उसके शिष्यांने निरालमें उससे पूंजा हम उस भूतको २५ केंद्र नहीं निकाल सके। उसने उससे कहा कि जय इस प्रकारके हैं सो प्राप्य श्रार उपवास बिना श्रार किसी उपायसे निकाले नहीं जा सकते हैं।

३० वे वहांतूं निकालके गालोलमें हैकी गये श्रार वाह ३१ नहीं चाहता था कि कोई जाने। क्योंकि उसने अपने शिष्यांको उपदेश दे उससे कहा मनुष्यका पुत्र मनुष्यके हाथमें पकड़बाया जायगा श्रार वे उसका मार हालने ३२ श्रार वाह मरके तीसरे दिन जी उठेगा। परन्तु उन्हें यह बात नहीं समभी श्रार उससे पूछते हैं।

17
वह कफनिहमें झाया शैर घरमें पहुँचके शिशुंसे 33 प्रकार मार्गमें तुम लापरसे किस बातका विचार करते थे। वे चुप रहे किंसे मार्गमें उन्हें नाम से लापरसे 34 इसीका विचार किया था कि हममें बढ़ा बीमार है।
तब उसने बेठके बारह शिशुंको बुलाके उनसे कहा इस यदि कोई प्रधान हुए चाहे ता सभी वे बीरा शैर सभींंका सेवक होगा। शैर उसने एक बालकको लेके इंद्र उनके बीचमें खड़ा किया शैर उसे गोटामें ले उनसे कहा। जो कोई मेरे नामसे ऐसे बालकांमें एकको इस यहण करे वह मुक्त यहण करता है शैर जो कोई मुक्त यहण करे वह मुक्त नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारेको यहण करता है।
तब योहनने उसको उत्तर दिया कि हे गुरु हमने इस किसी मनुष्यको जो हमारे पीछे नहीं जाता है शैरके नामसे भूतांको निकालते देखा शैर हमने उसे बर्जा किंसे वह हमारे पीछे नहीं जाता है। यीषुने कहा इस उसको मत बर्जा किंसे कोई नहीं है जो मेरे नामसे आश्रमय कर्म संकेत शैर शीघ्र मेरी निद्रा कर सकेगा। जो हमारे बिंतु नहीं है तो हमारी शैर 40 है। जो कोई मेरे नामसे एक कटोरा पानी तुमको 41 इसलिये पिलावे कि खीरूलों हो मैं तुमसे सच कहता हूँ वह किसी रीतिसे अपना फल न ढोंगा। परन्तु 42 जो कोई उन छोटांमें जो मुक्तपर विचारात नहीं एकको ठोकर खिलावे उसके लिये भला होता कि चक्कीका पार उसके गलेमें बांधा जाता शैर वह
विषय वहांसे उठके यद्यपि उस परसे देखकर यिहूदिया-
के सिवानेंमें ज्ञाया श्रीर बहुत लोग फिर उस पास एकबुझ ज्ञाये श्रीर उसने ज्ञापनी रीतिपर उन्हें को फिर उपदेश दिया। तब फरीफियाने उस पास श्रा उसकी परिद्वार करनेको उससे पूछा क्या ज्ञापनी स्त्रीको त्यागना मनुष्यको उचित है कि नहीं। उसने उनको उत्तर दिया कि मुझाने तुमको क्या ज्ञाया दिदै। उन्हाले कहा मसानेते त्यागपत्र लिखने श्रीर स्त्रीको त्यागने दिया। यीषुने उन्हें उत्तर दिया कि तुमहारे मनकी कठोरताका कारण उसने यह ज्ञाया तुमको लिख दिदै। परन्तु घरघिङ्के शारण्यसे इंश्वरने नर श्रीर नारी करके मनुष्यको उत्पत्ति किया। इस हेतुसे मनुष्य ज्ञापने माता पिताको छाड़के ज्ञापनी स्त्रीसे मिला रहेगा श्रीर वे दोनों एक तन होगें। सो वे ज्ञाये दो नहीं पर एक तन हें। इसी-लिये जो कुछ इंश्वरने बारा है उसको मनुष्य ज्ञान न करे। घरले उसकी शिष्याने फिर इस बातको विश्वसने उससे पूछा। उसने उससे कहा जो कोई ज्ञापनी स्त्रीको त्यागको दृश्यसे बिवाह दिरी सो उसको बिनूट परस्तीग-मन करता है। श्रीर यदि स्त्री ज्ञापने स्वामीको त्यागको दृश्यसे बिवाह दिरी तो वह व्यभिचार करती है।

तब लोग कितने बालकोंको जीषु पास लाये कि वह १३ उन्हें छूटे। परन्तु शिष्याने लास्टीरिङ्को भांडू। यीषुने १४ यह देखके अपास्न हो उसनें कहा बालकोंको मेरे पास जाने दै। श्रीर उन्हें मत बर्त्ता क्याके इंश्वरका राज्य ऐसानका है। सो तुमसे सच कहता हूं कि जो १५ कोई इंश्वरकी राज्यको बालकको नाई यहण न करे।
19 वह उससे व्रत बनना न पाएगा। तब उसने उन्हें गोदीमे बचकर उनके हाथ रखके उन्हें जलाशय दिया।

20 जब वह मार्गमें जाता था तब एक मनुष्य उसकी दौड़ देखकर उसके आगे घुटने टेककर उससे पूछा है उत्तम गुरु अनन्त जीनका धिकारी होनेका भूमिका में क्या कहते?

21 यीशुने उससे कहा तू सुमद उतम किए कहतहाँ। कारी उतम नहीं है केवल एक अश्रू इश्वर। तु आज्ञाओंका जानता है कि परस्तोगमन मत कर नरहिसा मत कर चारी मत कर कृपी सावधानी मत दे उगाई मत कर ज्ञाने

22 माता पिताका आदर कर। उसने उसकी उत्तर दिया कि है गुरु इन समस्मों में अपने लड़कपनसे पालन किया है। यीशुने उसपर दूषित कर उसे यार किया चारी उससे कहा तू समे एक बातको घरी है। जा जो कुछ तरा है तो खुदके कांगलांको दे चारी तू स्वभावमें धन पाएगा?

23 चारी ज्ञान उठाको मेरे पीछे हो ले। वह इस बातसे अपपस्त्र हो चदास चला गया क्योकि उसका बहुत धन था।

24 यीशुने चारां चारी दूषित कर ज्ञाने शिष्यांसि कहा धनवानांको इश्वरके राज्यमें प्रवेश करना कैसा काठिन होगा। शिष्य लोग उसकी बातसे अचानक हुए नरन्तु यीशुने फिर उनका उत्तर दिया कि हे बालको जो धनपर भरोसा रखते हैं उन्होंना इश्वरके राज्यमें प्रवेश करना कैसा काठिन है। इश्वरके राज्यमें धनवानके प्रवेश करनेसे उसका सुविदा नाकेम्सि जाना सहज है। वे बातपन्त अचानक हो ज्ञान समे बाले तब तो जिसका
चाष हो सकता है। यीशुने उनपर दूषित कर कहा २७ मनुष्योंसे यह बनावना है परन्तु इंश्वरसे नहीं क्याकि इंश्वरसे सब कुछ हो सकता है।

पिता उससे कहाने लगा कि दोस्तिये हम लोग सब कुछ २८ छाड़कर शापकी पीड़ित हो लिये हैं। यीशुने उत्तर दिया २८ में तुमसे सच कहता हूं कि जिसने मेरे शीर सुसमाचार- ने लिये जग वा माड़ियाँ वा बहिनों वा पिता वा माता वा स्त्री वा लड़कों वा भूमिका त्यागा हो। ऐसा कोई ३० नहीं है जो भ्रष्ट इस समय में उपदृढ़ सहित सी गुलाबी घरों शीर भाड़ियाँ शीर बहिनों शीर माताओं शीर लड़कों शीर भूमिका शीर परिवार में भ्रष्ट जीवन न पायेगा। परन्तु बहुतेरे जो शाप ले हैं पिछले होंगे ३१ शीर जो पिछले हैं शाप ले होंगे।

वे यिहूदीवानना जाते हुए मार्गिते वे शीर यीशु ३२ उनकी आगे आगे चलता वा शीर वे समंभित हुए शीर उसके पीढ़िये चलते हुए हरते वे शीर वह फिर नाराय शिविरको लेके जा कुछ उसपर होन्हार ता ता उनसे कहाने लगा। कि देखो हम यिहूदीवानना जाते हैं शीर इस मनुष्यका पुच प्रभाव याजकों शीर प्रधामीकों हाथ पकड़वाया जायगा शीर वे उसकी बधके याग्य ठहराके अन्यदेशियों ने हाथ सांपड़े। शीर वे उससे ठुसा करने इस शीर कोड़े मार्गी शीर उसपर घूमके शीर उसे घात करने शीर वह तीसरे दिन जी उठेगा।

तब जबदीके पुच याकूब शीर योहनने यीशु पास भा ३१ कहा है गुफ हम बहार हैं कि जो कुछ हम मांगे से।
यह सुनके दसैं शिष्य याकूब शीर योहान्पर रिसि-
याने लगे। यीशुने उनको श्रापने पास बुलाके उनसे
कहा तुम जानते हो। कि जो अन्यदेशियंके अध्यक्ष
समके जाते सो उन्हांपर प्रभुता करते हैं शीर उनमेंके
बड़े लोग उन्हांपर आधिकार रखते हैं। परन्तु तुम्हारे
छोटा नहीं होगा पर जो कोई तुम्हारे बड़ा हुश्चा चाहे
सिता तुम्हारा सेवक होगा। शीर जो कोई तुम्हारा प्रधान
हुश्चा चाहे सो सभेंका दास होगा। कोईंकि मनुष्यका
पुछ भी सेवा करवानेकी नहीं परन्तु सेवा करनेकी शीर
भुलाते सो उदारके दाममें श्रापने प्राय देनेकी श्राय हैं।
अथि वे यिरहॊ नगरमे श्राये शीर जब वह शीर उसके
शिष्य शीर बहुत लोग यिरहॊसे निकालते चे तब तीमई-
का पुत्र बर्तीमई एक अंधा मनुष्य मार्गकी श्रीर बैठा भीख मांगता था। वह यह सुनको यीशु नासरी है। 
पुकारने श्रीर कहने लगा कि हे दाजदकी सन्तान यीशु सुम्भपर दया कीजिये। बहुत लोगने उसे दांटा कि वह 
चुप रहे परन्तु उसने बहुत आभक पुकारा है दाजदकी 
सन्तान सुम्भपर दया कीजिये। तब यीशु खड़ा रहा श्रीर 
उसे बुलाने को कहा श्रीर लोगने उस अंधको बुलाके 
उससे कहा दादस कर उठ वह तुम्मे बुलाता है। वह 
अपना कपड़ा पेंकके उठा श्रीर यीशु पास क्या। इस- 
पर यीशुने उससे कहा तू क्या चाहता है कि मैं तेरे 
लिये कहू। अंधा उससे बोला है गुरू मैं अपनी दृष्टि 
पाउं। यीशुने उससे कहा चला जा तेरे विश्वासने 
तुम्मे चंगा किया है। श्रीर वह तुरँत देखने लगा श्रीर 
मार्गने यीशुने पीछे रहा लिया।

11 एम्यारहवां पढ़ने।

1 यीशुका विष्णुसमस्म झान। 11 गूढरके वृष्णका धार्म देना। 11 चापारम्भिको 
सांदर्शके निकालना। 20 बिश्वासके गृहका बधान श्रीर क्षमा करनेका करवेय।
27 यीशुका प्रभाव गोलणको निर्धार करना।

जब ने ध्वजार्धकी निकार रज्जा जैतून पढ़तबी 1 
समीप बैठत्वी श्रीर बैठनिया गांवें पास पहुंचे तब 
उसने अपने गिय्सोंमें से दीक्षा यह कहके भेजा। कि जो 
गांव तुमहारे सम्भु है उसमें जांके श्रीर उसमें प्रवेश 
करतेही तुम एक गांव के बीजको जिसपर कभी कोई मनुष्य 
नहीं चढ़ा बंधे हुए पाओगे उसे खालके लाओ। जो तुम- 
से कहाँ कहे तुम यह कों न करते हे तो कहाँ कि प्रभुक्री
इसका प्रयोगन है तब वह उसे तुरन्त यहां भेजेगा।

4. उन्हें जाने उस बच्चे को दूर बाटों की सिरिपर द्वारके पास बाहर बटे हुए पाया श्रीर उसका भालने लगे। तब जी लग जांहां खड़े थे उनमें से कितने उनसे कहा तुम क्षा खाते है कि बच्चे को भालते है। उन्हें जैसा यीशुने ज्ञाना बिन्दू जैसा उनसे कहता तब उन्हें उन्हें जाने दिया। श्रार उन्हें बच्चे को यीशु पास लाकर उसपर अपने शप्दें हाले श्रार वह उसपर बैठा। श्रार बहुत लगोगां अपने अपने अपने शप्दे मार्गमें बिखाये श्रार शारेनपे।

5. वृद्धों से हालियां कारे मार्गमें बिखाई। श्रार जी लग ज्ञाने पीछे चलते थे उन्हें अपने फुकारे कहा जय जय धन्य।

90. वह जो परमेश्वरके नामसे जाता है। धन्य हमारी पिता दाऊदका राज्य जो परमेश्वरके नामसे जाता है। सबसे

11. जंचे स्थानमें जयजयकार होवे। यीशुने यिच्छलीमें जहा मन्दिरमें प्रवेश लिया श्रार जब उसने चारे अथ श्रार सब बस्तुश्रीमें दृष्टि बिखे श्रार संध्याकाल जहा चुका तब वह बारह शिशुओं के संग बैठनियाँको निकल गया।

12. दूसरे दिन जब वे बैठनियाँसे निकलते थे तब उसके।

13. भूख लगी। श्रार वह पते कांगे हुए एक गूलरका वृक्ष दूरसे देखके ज्ञाना कि क्या जाने उसमें कुछ पाए परन्तु उस पास श्रारे श्रारे कुछ न पाया केवल पते। गूलरके।

14. प्रश्नका समय नहीं था। इसपर यीशुने उस वृक्षका कहा की तीन मनुष्य फिर कभी तभूसे फल न खाये। श्रार उसके शिशुओं यह बात सुनी।

15. वे यिच्छलीमें जाये श्रार यीशु मन्दिरमें जाके बै
लग मंदिरों बेचते श्री मोहन लेते थे उन्हें निकालने कला श्रीर सरैफाणी पीड़िती को श्रीर कपोलिको बेचनेहार- रांगी चौकियांको उलट दिया । श्रीर किसीको मंदिरके १७ बीससे काई पाच ले जाने न दिया । श्रीर उसने उपदेश १६ कर उनसे कहा क्या नहीं लिखा है कि मेरा धर सब देशको ले गेंकों लिये प्रारंभनका घर कहावेगा । परन्तु तुमने उसे दाक्ष्योंका खेल बनाया है । यह सुनके १८ खबरापकों श्रीर प्रधान याकोने खोज किया कि उसे बिसूं रीतिसे नाश करे क्यांकि वे उससे दरते थे इसलिए वे सब लग उसके उपदेशके छायांमित होते थे । जब १५ सांवध हुईं तब वह नगरसे बाहर निकला ।

भारको जब वे उपरसे जाते थे तब उन्हें वह २० गूज्वका वृक्ष झड़ते सूखा हुआ देखा । पितारने समरक २१ कर यीशुसे कहा है गुरु देखिये यह गूज्वका वृक्ष जिसे खापने स्नान दिया सूखा गया है । यीशुके उनका उत्तर २२ दिया कि देशबरपर विश्वास रखे । क्यांकि वे तुमसे २३ सच कहता हूं जो खोई इस पहाड़िसे कहे कि उठ समुद्रसे गिर पड़ श्रीर जहाँ मनमें सन्देह न रखे परन्तु विश्वास बने कि जो में कहता हूँ तो है जायगा उसमें किये जो कुछ वह कहेगा सो है जायगा । इसलिए तुमसे २४ कहता हूं जो कुछ तुम प्रारंभना करके मांगा विश्वास बने कि हम पार्बेंगे तो तुम्हें मिलेगा । श्रीर जब तुम २७ प्रारंभना बनानेको बढ़ि हो तब यदि तुम्हारे मनमें किसीको श्रीर कुछ हो तो छामा करो इसलिए कि तुम्हारा स्वर्गवासी पिता भी तुम्हारे सपराध छामा करे । परन्तु कई
जै तुम यमा न करी। ता तुम्हारा स्वर्गवासी पिता भी तुम्हारी शपराध यमा न करेगा।

20 वे फिर यिशु लिस्लीम में आये शैव जब यीशु मन्दिर में फिरता था तब प्रधान याजक शैव अध्यापक शैव प्राप-25 चीन लोग उस पास आये। शैव उससे बाले तुम्ही ये काम करनेका कौसा आधिकार है शैव ये काम करनेको किसने
26 तुम्ही का यह आधिकार दिया। यीशुने उनकी उत्तर दिया कि मैं भी तुमसे एक बात पूछूंगा। तुम मुफ्त से उत्तर देखो तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि मुफ्त ये काम करनेका कौसा 30 आधिकार है। योहानका बपतिस्मा देना का स्वर्गकी 31 तथ्य तुम्हारे शैवों को शैव से हुछा मुफ्त से उत्तर देखो। तब वे शापसे विचार करने लगे कि जो हम कहें स्वर्गकी शैवों को वह कहेंगा फिर तुमने उसका विश्वास करें नहीं दिया। परन्तु जो हम कहें मनुष्यों को शैव तो उन्हें लोगों हर लगा कि वह सब लोग योहानका
34 जानते थे कि निश्चय वह भविष्यद्वारका था। तो उन्होंने यीशु उत्तर दिया कि हम नहीं जानते। यीशुने उन्हें उत्तर दिया तो मैं भी तुम्ही नहीं बताता हूं कि मुफ्त ये काम करनेका कौसा आधिकार है।

32 बारहवां पाख्यान।

1 दुल्हन मातिरिया दुल्हन। 13 यीशु ये कर देनेकी विवाहम मरोंगीयोंको विषय भराना । 18 बो देनेकी विवाहम युद्धको विषय भराना । 35 फिर आवाजको विवाहम भाष्यकस्ता वाला सत्ता देना । 34 जानकी पद्मीकी विवाहम भाष्यकस्ता निष्ठार कराना। एक भाष्यकस्ता वालको प्रसाद।

1 यीशु दुल्हनोंकी वनसे कहें लगा कि किसी मनुष्यों
दाखको बारी लगाई शीर चहुँ शीर बेड़दिया शीर रस-का बुंद शादा शीर गढ़ बनाया शीर मालियोंका उसका ठीका में परदेशको चला गया। समयमें उसने मालियोंको पास एक दासको भेजा कि मालियोंसे दाखको बारीका कुछ फल ले। परन्तु उन्हाँने उसे लेके मारा शीर बूढ़े हाथ फर दिया। फिर उसने दूसरे दासको उनके पास भेजा शीर उन्हाँने उसे पत्थरबाह कर उसका फिर फ्रोडा शीर उसे ष्पमान करके फिर दिया। फिर उसने दूसरे देखा शीर उन्हाँने उसे मार डाला शीर बहुत श्रीरेंसे उन्हाँने वैसाही किया कितने-को मारा शीर कितने-को प्राप्त किया। फिर उसका एकही पुनः घो उसका प्रिय था। सों बल्कि पौछे उसने यह कहके उसे भी उनके पास भेजा कि वे मेरे पुजाका श्रद्धा करें। परन्तु उन मालियोंने श्रापसमें कहा यह तो श्राधिकारी हैं। श्राश्री हम उसे मार डालें तब श्राधिकार हमारा होगा। श्रीर उन्हाँने उसे लेके मार डाला श्रीर दाखको बारीको बाहर फैंक दिया। इसलिये दाखको बारीका स्वामी क्या करेगा। वह श्राके उन मालियोंका नात्भ करेगा श्रीर दाखको बारी दूसरे देखा हाथ देगा। क्या तुमने 90 धर्मेमंडलका यह बचन नहीं पढ़ा है कि जिस पत्थरको यवहयोंदिन निकमा जाना वही श्रानीका सिरा हुआ है। यह श्रामगुरका कार्य हैं श्रीर हमारी दूसरी में श्रद्धा 91 है। तब उन्हाँने उसे पकड़ने चाहा कवांसे जानते थे 92 कि उसने हमारे बिस्तू यह दूसरी में कहा परन्तु वे कोई-कोई देरे श्रीर उसे छोड़के चले गये।
13 तब उन्होंने उसे बात में फंसानेके कई एक फरीदियां।
14 थार हैरादियांके उस पास भेजा। वे थार उससे बोले थे गुरु हम जानते हैं कि थार सत्य हैं थार किसीका बात नहीं रखते हैं किंबाक थार मनुष्यांका मुंह देखके बात नहीं करते हैं परन्तु ईश्वरका मारी सल्यासे बताते हैं। क्या कैसरका बार देना उचित है थारवा नहीं।
15 हम देवे थारवा न देवे। उसने उनका कपर जानकी उनसे कहा मेरी परीक्षा किया करते है। एक सूकी मेरे पास नाचौं कि मैं देशूं। वे काये थार उसने उनसे कहा यह मारी थार बाप किसकी है। वे उससे बोले कैसरकी। यहांने उनके उत्तर दिया कि यह थार कैसर-का है सो कैसरका बार था थार जो ईश्वरका है सो ईश्वरका देख। तब वे उससे सार्वभूत हुए।
16 सुदूर की लोग भी जी बताते हैं कि मृतकोंका जी उठना नहीं हुआ उस पास थार थार उसके पूर्वा। कि है गुरु मूसाने हमारे लिये लिखा कि यदि किसीका भाई मर जाय थार स्त्रीका थड़े थार उसके संतान न हों तो उसका भाई उसकी स्त्रीसे विवाह करे थार अपने भाईवे लिये बंध खड़ा करे। सो सात भाई थे। पाहिला भाई 21 विवाह कर निःसंतान मर गया। तब दूसरे भाईवे उस स्त्रीसे विवाह किया थार मर गया थार उसकी भी संतान न हुआ। थार चैतही तीसरे भी। साताँने उससे विवाह किया पर किसीका संतान न हुआ। 23 सबकी पीछे स्त्री भी मर गई। सो मृतकोंकी जी उठनेपर जब वे सब उठेंगे तब वह उनमेंसे किसकी स्त्री होगी।
क्यांकि सातांने उससे विवाह किया। यीशुने उनको २४ उत्तर दिया क्या तुम इसी कारण भूलमें न पड़े हो कि धर्मपूर्वक श्रीर ईश्वरकी शक्ति नहीं बुझते हो। क्यांकि २४ जब वे मृतकांमध्ये जो उठे तब न विवाह करते न विवाह दिये जाते हैं परन्तु स्वर्गमें दूसरांके समान हैं। मृतकांके नहों जो उठानेकी विषयमें क्या तुमने मुसाइरे पुस्तकमें कहा की कथामें नहीं पढ़ा है कि ईश्वरने उससे कहा में इमार-हीमका ईश्वर श्रीर इसहायकका ईश्वर श्रीर याकूबका ईश्वर हूं। ईश्वर मृतकांका नहीं परन्तु जीवतांका २५ ईश्वर हैं सो तुम बड़ी भूलमें पड़े हो।

शाखापकांमध्ये एकने श्रीर उन्हें विवाद करते सुना २६ श्रीर यह जानकी कि यीशुने उन्हें बड़ी रीतिमें उत्तर दिया उससे पूर्व सबसे बड़ी भावा नील है। यीशुने २६ उसे उत्तर दिया सब छात्राओंमें यहीं बड़ी है कि हे इसायल सुनो परमेश्वर हमारा ईश्वर यहीं परमेश्वर है। श्रीर तू परमेश्वर जनों ईश्वरको जनों सारी मनसे ३० श्रीर जनों सारे प्राप्त श्रीर जनों सारी बुझीते श्रीर जनों सारी शक्ति प्रेम कर यहीं सबसे बड़ी भावा है। श्रीर दूसरी उसकी समान है सो यह है कि तू जनों ३१ पहाड़ीसीका जनों समान प्रेम कर। इनसे श्रीर कोई भावा बड़ी नहीं। उस शाखापकांने उससे कहा अच्छा इस ३२ हे गुरु जनों सत्य कहा है कि एकही ईश्वर है श्रीर उसे बोझ कोई दूसरा नहीं है। श्रीर उसकी सारे मनसे ३३ श्रीर जनों बुझीते श्रीर सारे प्राप्त श्रीर सारी शक्ति प्रेम करना श्रीर पहाड़ीसीका जनों समान प्रेम करना
38 सारे हामींसँग श्रीर बलिदानांसे अधिक है। जब यीशुने देखा कि उसने बुढ़से उतर दिया था तब उससे कहा तु देशवर्के राजसे दूर नहीं है। श्रीर किसीको फिर उससे कुछ पूछनेका साहस न हुआ।
39 इसपर यीशुने मन्त्रिमें उपदेश करते हुए कहा शाद्यापक लोग कींकर कहते हैं कि खोदू दाजुदका झूँ पुच है। दाजुद आपही पवित्र चात्माकी शिष्यासे बोला कि परमेश्वरने मेरे प्रभुसे कहा जबलों में तैल श्रुश्नांको तीन चरणांकी पीठी न बनाजं तबलों तू 30 मेरी दृष्टी की धरा बैठ। दाजुद तो आपही उसे प्रभु कहता है फिर वह उसका पुच कहते है। भींदके शाधिक लोग प्रस्नात्से उसकी सुनते थे।
40 उसने अपने उपदेशमें उसके कहा शाद्यापकाइंसे चाँ- 41 कस रहा जो लंबे बस्त पहिने हुए फिरने चाहते हैं। श्रीर बाजारोंमें नमस्कार श्रीर सभाके घरोंमें ऊंचे श्रसन 40 श्रीर जेवनारोंमें ऊंचे स्थान भी चाहते हैं। वे विधवा- श्रींको घर खा जाते हैं। श्रीर बहानाके लिये बड़ी बेरलों ग्राजिना करते हैं। वे शाधिक टूड पावले।
41 यीशु श्रंगारके सामृह बैठके देखता था कि लोग कीं- खर श्रंगारमें राकड़ी हालते हैं। श्रीर बहुत धनवानांने 42 बहुत कुछ दाला। श्रीर एक कंगाल वधवाने श्राके दो 43 बद्दाम श्रात आपसी हाला। तब उसने अपने श्रींको अपने पास बुलामे उससे कहा में तुमसे सच कहता हूं कि जिनहीं श्रंगारमें हाला है उन समृंगसे 44 इस कंगाल वधवाने शाधिक दाला है। कींक दींगसे
अपनी बढ़तीमंत्र कुछ कुछ हाला है परन्तु इससे अपनी घटतीमंत्र जो कुछ उसका था अर्पण अपनी सारी भीविका हाली है।

१३ तेरहवां पंबे।

२ मांदनरके मां डोलेकी भिवन्द्राजी। ३ हम समयके विन्या। ५ विश्वनाथ दयाल देवग। १४ विक्रमदेव बड़ा कुछ परमेश। २१ ज्योति बोधु प्रमोद शेषें। २८ समुद्रके पुत्रके आसनका बर्षन। ३८ गूरहके बुधका दृष्टान्त। ५२ श्यामसुंदर सुंदरका दर्शन और ताजोंका दृष्टान्त।

जब यीशु मांदरमंसे निकलता था तब उसके श्यामें-

मंसे एकने उसने कहा है गुरु देखिए कैसे पत्थर श्यार

है। यीशुने उसे उत्तर दिया का तू यह बड़ी बड़ी रचना देखता है। पत्थरपर पत्थर भी न

बड़ा जयागा जी गिराया न जाय।

जब वह जैतून पर्व्यंतपर मांदरके सासे बैठा था तब

पितार श्यार याकूब श्यार यहाँ श्यार अन्दिरयने

निरालेमें उससे पुछा। विंह हमें सबके यह कब होगा

श्यार यह सब बाते जिस समयमें पूरी होंगी उस समयका

क्या चिह्न होगा। यीशु उन्हें उत्तर दे कहने लगा

शीघ्रकस रहा कि कोई मुझे न भरमावे। कौंक बहुत

लोग मेरे नामसे जाके कहने में वही ही हूँ श्यार बहुतका

भरमावैंग। बज हम लड़ाइयां श्यार लड़ाइयोंकी चवी

मना तब मत भवराशी कौंक इनका होना अवश्य

परन्तु अंत उस समयमें नहीं होगा। कौंक के भौं श्यार

के श्यार राज्य राज्यके बिस्तु उठने श्यार अनेक

स्थानांके भुईडेल होंगे श्यार श्यारका श्यार हुआ होंगे।

यह तो दुःखोंका ज्ञारभ होगा।
8 तुम धपने विख्यामें चैकस रहे क्यांकि लग तुम्हें पंचायतामें सांपेंगे चैकर तुम सभाकीमें मारे जाशाने चैकर मेरे लिये अध्यक्षां चैकर राजाकी खाँगे उनपर
90 सादी होनेके लिये खड़े किये जाशाने। परन्तु अवसर है कि पहले सुसमाचार सव देशों लोगों में सुनाया
91 जाय। जब वे तुम्हें ले जाके सांप दें तब क्या कहने इसकी चिन्ता जातेसे मत करे। चैकर न साध करे परन्तु जा कुछ तुम्हें उसी पंड़ित दिया जाय साईं कहे क्यांकि तुम नहीं परन्तु प्रविच जाता बोलनेहारा है।
92 भाई भाईका चैकर पिता पुर्शका बड़े किये जानेको सांपेंगे चैकर लड़के माता पिताके बिखु उठके उन्हें धाक
93 करवावेंगे। चैकर मेरे नामके कारण सब लोग तुमसे चैकर करें ज्ञातों स्थिर रहे साईं बात पावेगा。
94 जब तुम उस उजालहारी धनित बसतो जिसकी बात दानियों भविष्यवाचन कही जहां उचित नहीं तहां खड़े होते देखा (जो पदे सा भूमि) तब जो यिहूदियामें हैं
95 सो पहाड़ीवर भरे। जो कूटियर हों सो न घरमें उतरे।
96 चैकर न धपनेहार घरसे उसकी कुछ लेनेको उसमें पैठे। चैकर जा।
97 खेतमें हो सो धपना बस्त लेनेको बीड़े न फीठे। उन दिनोंमें हाय हाय ग्रम्वियां चैकर तूढ़ पिलालेंवालियां
98 परन्तु प्रार्थना करे कि तुमको जाड़ीमें भागना न होगे।
99 क्यांकि उन दिनोंमें ऐसा होगां जैसा उस सम्मान सांपेंगे चैकर इंग्ने मजी अबतक न हुज्जा चैकर कभी
10 न होगा। यदि परमेश्वर उन दिनों न पराता तो धाई प्रायों न बचका परन्तु उन चुने हुए लोगों दाख
जिनकी उसने चुना है उसने उन दिनोंकी घटाया है।
पत्र, कह तुमसे कहे देखा खूबू यहां है रचया 21 देखा वहां है ता प्रतिति मत करो। क्योंकि खूबू खूबू 22 चार भूमि भविष्यावली प्रगट होके चित्त चार अदुर काम दिखाएगा इसलिये कि जो हो सके तो चुने हुए लेगांकी भी भरमारे। पर तुम चारकस रहा देखा मैंने 23 ज्ञानसे तुम्हें सब बातें कह दिए हैं।
उन दिनोंमें उस खूबे पीछे सुर्य झंडियारा हो जा- 24 यगा चार चांद बजान हसिन हो देगा। झाकाशे की तारे 25 गिर गईं नीचे झाक झाकाशें की सेना हिरा जायगी। तब 26 लोग मनुष्यकी पुष्करो बड़े पराक्रम चार एश्वर्यसे मेंघं-पर जाते देखँगे। चार तब वह देखने दूसरीं भेजेगा 27 चार पृथिवीकी इस सिवानिसे झाकाशे उस सिवानिसक चढ़े दिखाते अपने चुने हुए लेगांकी एकटे करेगा।
गुलरे के वृत्त में शृंगार सीखा। जब उसकी हाली 28 क्रमल हो जाती चार पतने निकल जाते तब तुम जानते हो कि धूपकाला निकट है। इस रीतिसे जब 29 तुम यह बातें होते देखा तब जाना कि वह निकट है नां द्वारपर है। में तुमसे सब कहता हूँ कि जबलों 30 यह सब बातें पूरी न हो जायं तबलों इस समयकी लेगर नहीं जाते रहेंगे। झाकाश चार पृथिवी रल 31 जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न रलेंगी।
उस दिन चार उस घड़ीके विषय में न कोई मनुष्य 32 जानता है न स्वंग्रामसी दूर गया चार न पुछ परन्तु जेवल पिता। देखा जाते रहा चार प्रारंभ हरो। क्योंकि तुम इस
इस नहीं जानते हो वह समय कब होगा। वह ऐसा है जैसे परदेश जानेवाले एक मनुष्यने अपना घर छोड़ा शाह अपने दासों को अधिकार शाह दर एको उसका काम दिया शाह द्वारपालों जागते रहनेकी आज्ञा दियां।

इसलिये जागते रहा कींकि तुम नहीं जानते हो घरका स्वामिक कब आवेगा सांख्यों अर्थवा आधी रात्री अर्थवा सुगन्ध बोलनेक समयमें अर्थवा भी रात्री।

ईसे ऐसा न हो कि वह अर्थांचल जाके तुम्हें सत्ता पाबे।

शाह जा में तुमसे कहता हूं सो समझ सकता हूं जागते रहा।

18 चादहवां पर्व।

9 भीमकुश ब्रह्म करनेल परमाणु। 3 रक्षाका दस्यके विरपर सुगन्ध तेल ढालना।
10 विजयाकुल विवेकाधिकार करना। 12 श्रीमये किन्नर पक्षाणे भयभौत बनाना। 17 दसने संग योग्यका भेंटन करना श्रीर विषयके विशेषम् भवनभूत हुआ जाना। 22 पूजा श्रीमये का विषय। 24 पितारकां योगयुक्त चुनक योगी की भवनभूत हुआ। 25 बारोमें योगका छठा श्रीक। 44 वस्त्र पकड़ा जाना।

88 योगी महाशापप्रकाश शाह। 88 योगी चुनक योगी की भवनभूत हुआ।

9 निस्तार पर्व शरार अर्थमीरी रामका पर्व दो दिनके पीछे हानेवाला या शाह प्रधान याजक शाह अर्थापको लोग खौज करते थे कि योगी कींकर दस्यके पकड़के 2 मार ढालें। परन्तु उनहोंने कहा पर्वमें नहीं न हो कि लोगिका हुसूल होवे।

3 जब वह वैधनियामें श्रीमये कोहरीकी घरमें था शाह भोजनपर बैठा तब एक स्त्री उजलिए पत्थरके पाचने जटा-मांसोंका बहुमूल्य सुगन्ध तेल लेके बाई शाह पाँच
ताहोले उसकी सिरपर दाना। कई बार चपने मनमें उसकी रिसियालियाँ थे जो बोले सुगन्ध तेलका यह छय की छुजा। कीविकल कहें तीन सौ सूक्ष्मकन्ता अधिक दामांत्र े बिनक सकाता श्याल कंगालेला दिया जा सकता। श्याल बें उस स्तीपर बुड़बुड़ाये। योशुनें कहा उसकी रहने दी। उसको दुःख देते हो। उसके आच्छादन काम मुक्ती, कहिया है। कंगाल लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं। श्याल तुम जब चाहो, तब उसे भलाई कर सकते हो। परन्तु उस पर तुम्मारे संग सदा नहीं रहूगा। जो कुछ वह कर सकीता कहिया है। उसके भरे गद्दे जानको लिये लागेसे भरे देहर तुलका तेल लगाया है। में तुमसे सत्य े कहता हूँ सारे जगतमें जहां कहीं यह सुसमाचर सुनाया जाय तहां यह भी जो इसकी कहिया है उसको स्मरणके लिये कहा जायगा।

तब यहूदी इस्कारियोती जो बारह शिष्योंमें एक था े प्रधान याजकों को पास गया। इसलिये कि योशुने उनको हाथ पकड़वाय। वे यह सुनके आलिफ्ट हुए। श्याल उसके हूँपैले देनको प्रतिष्ठा किए। श्याल वह खोज करने लगा कि उसे कींकर अवसर पाने पकड़वाय।

राखमींरी रारीके पत्तेको पहले दिन जिसमें वे निस्तार पत्तेको मेला मारते थे योशुने शिष्य लोग उससे बोली श्याप कहां चाहते हैं कि हम जाके तैयार करें। कि श्याप निस्तार पत्तेको रोज नजाबर खायें। उसने खपने शिष्यों- में देखा यह कहके मेरा कि नगरमें जाको श्याल एक मनुष्य जलका घड़ा उठाया हुए तुम्हें मिलेगा। उसकी पीछे
24 हाँ लेखा। जिस घरम हाँ पैठे उस घरके स्वामींसे कहा गुरु कहता है कि पाहुन्शाला कहां है जिसमें मैं झपने
25 शिष्यांके संग निस्तार पब्बका भोजन खाऊं। वह तुम्हें एक सजी हुई छाया तैयार किवे हुई बड़ी उपरिज्ञी कोटरी
26 दिखावेगा वहा हुमारे लिये तैयार करो। तब उसके शिष्य लोग चले छाया नगरमें जाके जैसा उसने उन्हें कहा तैसा बाया छाया निस्तार पब्बका भोजन बनाया।
27 सांसका यीशु बारह शिष्यांके संग खाया। जब वे भोजनपर बैठके खाती थे तब यीशुने कहा में तुमसे सच कहता हूँ कि तुममें एक जो मेरे संग खाता है मुक्ते
28 पकड़वायगा। इसपर वे उदास होके छाया एक एक करके उसते कहते बाया वह कहा में हूँ छाया दूसरने कहा कहा कहा
29 में हूँ। उसने उनके उत्तर दिया कि बारहेंमें एक जो मेरे संग घाल में हाय हालता है साई है। मनुष्यका पुढ़ जैसा उसके विषयमें लिखा है वैसाही जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य जिसके मनुष्यका पुढ़ पकड़-बाया जाता है। जो उस मनुष्यका जन्म न होता तो उसके लिये भला होता।
30 जब वे खाते थे तब यीशुने रोटी लेके पन्यबाद किया छाया उसे तार्कि उनका दिया छाया कहा लेखा।
31 यह मेरा देख है। छाया उसने कटारा ले मन्य मानके उन्हें दिया छाया सभी उनसे पिया। छाया उसने उनसे कहा यह मेरा लोहू भाषात नये लियका। लौहू है जो
32 भुतांकी लिये बाया जाता है। में तुमसे सच कहता हूँ कि जिस दिनलों में इंशवरके राज्यमें उसे नया न पोईं
उस दिनों में दाखरस फिर कभी न पीज़ागा। झौर जैसे भजन गाकर जैसून पब्बैंतपर गये।

तब यीशु उससे कहा तुम सब इसी रात मेरे विपक- २६ यमें ठाकर खायेंगे क्योंकि लिखा है कि में गड़रियेरा माख्कर झौर में तितर बिंतर हो जानेंगी। परन्तु में २६ खायें जी उठनेके पीछे तुम्हारे भागे गालीलके जायेंगा। पितामह उससे कहा यदि सब ठाकर खायें तैभी में २६ नहीं ठाकर खायेंगा। यीशु उससे कहा मैं पुरे सतय ३० कहता हूं कि झौज इसी रात मुरुंमिके दा बार बोलनेसे झौले तू तीन बार मुक्तसे मुक्तिके। उसने झौर भी ३१ दुष्करिते कहा जो झौलके संग मुक्त हो तैभी में झौले भामी न मुक्तिकर। सभी में भी वैसाही कहा।

वे नेताग्रहणी नाम स्थानमें झौले झौर यीशु उस्ने अपने इस शिक्षंसे कहा जबलों में प्रार्थना करती तबलों में तुम यहाँ बैठा। झौर वह पितार झौर याकूब झौर योहनके अपने ३३ संग ले गया झौर अकुल झौर बहुत उदास होने कागा। झौर उसने उससे कहा मेरा मन यहां में जान हो तब जान हो ३४ है कि में मरानपर हूं। तुम यहाँ ठहरो झौर जागते रहा। झौर याकूब झौले वह भूमिक्षर गिरा झौर इस प्रार्थना किंवद जो हो सके ता वह घरी उससे राल जाय। उसने कहा है झूबा है पितार तुमसे सब कुछ हो इसी सकरता है यह कटरार मेरे पाससे राल दे तैभी जो में बाहर हूं सो न हैय पर जो तू चाहता है। तब उसने ३५ झू क्ला कहै सोति पाया झौर पितार रहे कहा है शिक्षान सो तू सोता है क्षया तू एक घड़ी नहीं जाग सका। जागते रहा ३६
छाया प्रार्थना करो कि तुम परीश्रामें न पड़ो । मन तो तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है । उसने फिर जाकर वही
बात कहके प्रार्थना किया । तब उसने लौटकर उन्हें फिर सेती पाया क्योंकि उनकी आँखें नींदसे भरी थीं । छाया
वे नहीं जानते थे कि उसका का उत्तर देने । छाया उसने
तीसरी बैर श्रा उनसे कहा सा तुम सेती रहते छाया
बिन्दुमाण करते हो । बहुत है घड़ी श्रा झड़ी है देखिए
मनुष्यका पुरा पापियोंकी हायमें पकड़वाया जाता है ।
जठा चलन देखा जो मुखे पकड़वाता है सो निकट श्रा जाया है।
बह बोलताही था कि पिछूदा जो बारह शिपोंंसे टक्कर था तुरट श्रा पहुंचा छाया प्रधान याजकों छाया
शधायकों छाया प्राचीनकी छाया से बहुत लोग खड़े छाया
लाठियां लिये हुए उसकी संग । यीशुके पकड़वानिहरीने
उन्हें यह पता दिया था कि जिसको में चौंक वही है उस-
श्रा पकड़के यहसे लेजाकी । छाया वह ज्याया छाया तुरट
यीशु पास जाके कहा है गुरू है गुरू श्रा उसकी चूमा ।
तब उन्हें उसपर उपस्थ थाय हाथ डालके उसे पकड़ा ।
जो लोग निकट खड़े थे उनमें एकने खड़े बींचके महा-
याजकों दासको मारा छाया उसका कान उड़ा दिया ।
इसपर यीशुने लौटाके कहा क्या तुम मुखे पकड़के जैसे
डाकूपर खड़े छाया लाठियां लेके निकले हो । में मन्दिर-
में उपदेश करता हुया प्रतिदिन तुम्हारी संग था छाया
तुमने मुखे नहीं पकड़ा । परन्तु यह इसलिये हैं कि
धम्मपुस्तककी बातें पूरी होतीं हैं । तब सब शिष्य उसे
ब्राह्मण भागे ।
श्रीर एक जबान जा देहपर छोड़े हुए था और उसका पीछे ही लिया श्रीर प्यारे उसे पकड़ा। वह फले छोड़े उनसे नंगा भागा।

वे योशुको महायाजकको पास ले गये श्रीर सब प्रधान ५४ महायाजक श्रीर प्राचीन श्रीर अध्यापक लगात उस पास एकद हुए। पिता टूटा टूटा उसके पीछे महायाजकके संगनेके भीतरलीं चला गया श्रीर प्यारे संग बैठके काम तापने लगा। प्रधान महायाजकों ने श्रीर न्यायप्रणी सारी समाने योशुको घात करवाने की लिये उसपर साध्री दूंढ़ी परन्तु न पाई। क्योंकि बहुताने उसपर फूटी साध्री दी थी परन्तु ५५ उनकी साध्री एकसमान न थी। तब उन्होंने खड़े हो ५७ उसपर यह फूटी साध्री दी थी। कि हमें इसकी कहते ५८ सुना कि मैं यह हायका बनाया हुआ मन्दिर गिराए गया। श्रीर तीन दिन में दूसरा बिन हायका बनाया हुआ मन्दिर उठाए गया। पर मुं मैं उनकी साध्री एकसमान न थी। तब महायाजकने बीच में खड़ा हो योशुके पूर्णा क्या ई० त कुछ उत्तर नहीं देता है। वे लाग तेरे बिस्तर क्या शामिल है। परन्तु वह चुप रहा श्रीर कुछ उत्तर न दिया। ६१ महायाजकने उससे फिर पूर्णा श्रीर उससे कहा क्या त उस प्रमाणन्तर क्या पूर्णा क्षीर है। योशुके कहा मैं हूं श्रीर ई२ तुम मनुष्यके पुत्रके सर्वप्रथम मनुष्यके दहिनी श्रीर बैठे श्रीर आकाशके मंदिर पर उत्तर देखांगे। तब महायाजकने ई३ श्रीर जनने वस्त्र फाड़के क्षीर हमें साध्रीयाने श्रीर क्या प्रोक्ति है। इश्वरके यह निद्रा तुमने सुनी है तुम्हे क्या ६४ समय पड़ता है। वे उसके बधके योग्य ठहराया।
ई० तब कौई कौई उसपर शूकने लगे और उसका मुंह दांतक उसे घूसे मारके उससे कहने लगे कि भविष्यद्वायी बोल. यादोने भी उसे थप्पड़ मारे।
ई१ जब पितार नौचे अंगके में था तब महायाजकी
ई२ दासीयें सेवा कराई. पितार का आग तापते देखके
ई३ उसपर टूटी करके बोली तू भी यीशु नासरीके संग था।
ई४ उसने मुकरके कहा में नहीं जानता पितार नहीं बुकता तू क्या कहती है। तब वह बाहर ढेवरोहें गया।
ई५ पितार मुरंगे बोला। दस्सी उसे फिर देखके जा लोग
ई६ निकट खड़े थे उससे कहने लगी कि यह उनमें से एक
ई७ है। वह फिर मुकर गया। फिर यादी बीर पीछे जा लोग
ई८ निकट खड़े थे उन्होंने पितारसे कहा तू सचमुच उनमें से
ई९ एक था क्योंकि तू गाली भी है पितार तैरी बोली।
ई॰ सैंही है। तब वह बिभिन्न देने पितार किरिया खाने लगा
ईॱ कि उस मनुष्यका जिसके विपत्तें बालते हो नहीं।
ईॲ जानता है। तब मुरंगे तूसरी बार बोला पितार जी बात
ईॳ यीशुने उससे कही थी कि मुरंगे दो बार बलनेसे आगे
ई४ तू तीन बार मुकसे मुकरेंगा उस बातके पितारने समरपण
किया पितार साफ करते हुए रोने लगा।

१५ पन्द्रहवाँ पख्व।

१ योगुका बिकालके भाषा बोपा बाना और बिकालका दबै बिवार करना और
ई४ बियदने की चख करना। १५ योगुका घाटोंके भाषा बोपा बाना और
ई५ बियदने के सिद्ध करना। २२ उसका क्रमगर चढ़वाया बाना। २५ उसपर
ई६ लगोंका हमना। ३० उसका पुकारना और निष्पक्ष थीना। ३५ उसका प्राचे
ई७ भाग्य और भूमि तियांका प्रागत हेरना। ४० तियांका क्रृष्णके भरपूर
ई८ रहना। ४२ दूरपत्यका योगुका जबरम रखना।
भारत का प्रधान याजकों ने प्राचीन शैर सहयोगी के संग बरन व्यायाम व सारी सभाने तुरल्ल राजसमें विचार कर यीशु के बांधा शैर उसे ले जाके पिलातों कर दिया। पिलातने उससे पूछा क्या तू यिहूदियों का राजा हैं। उसने उसका उत्तर दिया कि शापही तो कहते हैं। शैर प्रधान याजकों ने उसपर बहुतसे दाग लगायी। तब पिलातने उससे फिर पूछा क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता। देख वे तैयार खट्टा कितनी साझी देते हैं। परन्तु यीशुने शैर कुछ उत्तर नहीं दिया यहां से पिलातने शाकंभा किया। उन पल्ले में वह एक बनघेरे जिसे लोग मांगते थे उन्होंने लिये बड़ा देता था। बरबर नाम एक मनुष्य ज्याने संगी राजा के हिंसक साथ जिनहीं-ले बलबंदें नरहिंसा किये थे बंधा हुआ था। शैर लोग पुकार के पिलातने मांगने लगे किया जैसा उन्होंने लिये सदा करता था तैसा करे। पिलातने उनका उत्तर दिया क्या तुम चाहते हो कि में तुम्हारे लिये यिहूदियों के राजकी बड़ा दें। क्योंकि वह जानता था कि प्रधान याजकों ने उसकी हास्य पकड़ दिया। परन्तु प्रधान याजकों ने लेगा उसका इसलिये वह बरबराही के उनके लिये बड़ा दें। पिलातने उत्तर देबे। उनसे फिर कहा तुम क्या चाहते हो जिसे तुम यिहूदियों का राजा कहते है। उससे में क्या कहा। उन्होंने फिर पुकार यह उसे क्रूशपर चढ़ाई। पिलातने उससे कहा क्रूशपर चढ़ाई।
11 तब पिलातने लैगको सन्तुष्ट करनेको इच्छा कर नरवाको उन्हें लिये छोड़ दिया शीर यीशुका बोड़े।
11 मारके क्रूशपर चढ़ाय जानेको सौंप दिया। तब थेटाङ्गो- ने उसे घर के अधिकार को भीतर ने जाले।
10 सारी पहाड़नका एकत्र बुलाया। शीर उन्हें उसे बैजनी बस्त पहिराया। शीर कार्टाङ्का भूक गूत्थके उसके सिर- 
18 पर रखा। शीर उसे नमस्कार करने लगे कि हे विद्व-
15 दियोंके राजा प्रशान्त। शीर उन्हें नरकपसे उसके 
सिरपर मारा शीर उसपर बूका शीर पृथिवी रेकटे 
20 उसको प्रशान्त किया। जब वे उससे ठुका कर चुके तब 
उससे वह बैजनी बस्त उतारके शीर उसका निज 
बस्त उसको पहिराके उसे क्रूशपर चढ़ानेको बाहर ले 
27 गये। शीर उन्हें कुर्दनी देशके एक मनुष्यको अधिकार 
सिकन्दर शीर हफ्ते पिता शिमीनको जो गांवसे जहे 
हुए उपरसे जाते था बेरार पकड़ा कि उसका क्रूश जी 
चले।
28 तब वे उसे गलगाथा स्थानपर लाये जिसका अधि यह 
23 ई शीरडोका स्थान। शीर उन्हें दाख रसमें मुर मि- 
28 जाने उसे पीनेको दिया परन्तु उसने न लिया। तब 
उन्हें उसको क्रूशपर चढ़ाया शीर उसके कपड़ोंपर 
चितरियां दालके निकाल निकसको लेगा उन्हें बांट लिया।
25 एक पहर दिन चढ़ा या कि उन्हें उसको क्रूशपर चढ़ा- 
ही या। शीर उसका यह दोषपच ऊपर लिखा गया कि विध-
20 दियोंका राजा। उन्हें ने उसके संग दो डाकेशेके एकका 
उसकी दहिनी शीर शीर दूसरेका बाईं शीर क्रूशपर
चढ़ाया। तब धर्मपुस्तकका यह बचन पूरा हुआ कि २८ वह कुक्कमिंमियांके संग गिना गया।

जा लोग उपरसे जाते जाते ये उन्होंने अपने सिर २८ हिलाके श्रीर यह कहके उसकी निन्दा किये। कि हा ३० मंदिरके दानेहारे श्रीरतीन दिनमें बनानेहारे अपनेको बचा श्रीर क्रूशपरसे उतर खा। इती रोंगिसे प्रधान ३१ बाज़ीकोन्हे भी द्यायाकोंके संग ज्ञापसमें टूटा कर कहा उसने श्रीरिन्द्रा बचाया अपनेको बचा नहीं सकता है। इस्मायलका राजा खूशी क्रूशपरसे श्रव उतर जाये कि हम ३२ देखके बिखास करे। जा उसके संग क्रूशिंगर चढ़ाये गये उन्होंने भी उसकी निन्दा किये।

जब दो पहर हृदा तब सारे देशमें तीसरे पहरलों ३३ अन्धकार हो गया। तीसरे पहर यीशुने बड़े बड़े शब्दसे पुकार- ३४ के कहा एली एली लामा शब्दकारी अर्थात है मेरे ईश्वर है मेरे ईश्वर तूने कों मुखी त्यागा है। जा ३५ लोग निकट खड़े ये उनसे के जितनाने यह सुनके कहा देखा यह ईलियाहकी बुलाता है। श्रीर एकने दैद्धके इस्मायलकी तिरके मिंगाया श्रीर नलपर रखके उने पीनेको दिया श्रीर कहा रहने दा हम देखे कि ईलियाह उसे उतारनेकी ज्ञाता है कि नहीं।

तब यीशुने बड़े शब्दसे पुकारके प्राण त्यागा। ३७ श्रीर मंदिरका परदा उपरसे नीचेलों फरके दा भाग ३८ हो गया। जा शतपति उसके संस्मृक खड़ा या उसने ३९ जब उसे यू पुकारके प्राण त्यागते देखा तब कहा सचमुच यह मनुष्य ईश्वरका पुत्र था।
80 कितनी स्त्रियाँ भी दूसरे देखती रहीं जिन्होंने मारियम मगदलीनी जीएर छोटे याकूबकी जीएर यासीकी की माता मारियम जीएर झालेमाई थीं। जब यीशु गाजील- में था तब वे उसके पीछे हो लेती थीं जीएर उसकी सेवा करती थीं। बहुत सी जीएर स्त्रियाँ भी जा उसके संग यिशु शालीमार में आईं वहाँ थीं।

81 यह दिन तैयारीका दिन था जो विश्वासवारके एक दिन जागे है। इसलिये जब सांपक हुई तब झाँखिया नगरका यूसफ एक आदरवन्त मन्दी जो झाप भी इश्वरके राज्यकी बार जाहता था झाया जीएर साहससे पिलातने पास जाके यीशुकी लेख मांगी। पिलातने अचान्हा किया कि वह क्या मर गया है जीएर झाप जाँचके अपने पास बुलाके उससे पूछा क्या उसका मरे कुछ बेर हुईं। झाप जानके उसने यूसफकी लेखदीए।

82 यूसफने एक चट्टर मील लेके यीशुकी उतारके उस चट्टरमें लपेटा जीएर उसे एक कबरमें जा पत्थरमें खाटी हुई। यह ताल करने हुई। झाया जीएर कबरके दुरापर पत्थर लुढ़का।

83 दिया। मारियम मगदलीनी जीएर यासीकी माता मारियमने वह स्थान देखा जहाँ वह रखा गया।

84 सालहवां पावँ।

1 स्त्रियोंका दूसरे यीशुकी जी हठनेका समाचार सुनना। 2 यीशुका मारियम मगदलीनांका दर्शन देना। 12 वा जिप्रियोंका दर्शन देना। 14 समारोह शिखने- का दर्शन देना और उन्हें प्रेम देना। 15 स्थानमें आना।

1 जब विश्वासवार बोल गया तब मारियम मगदलीनी जीएर याकूबकी माता मारियम जीएर झालेमार में सुगमथ
मैंल लिया कि शायर यीणका मल्ल। शैव झतारिके 2 पहले दिन बड़ी भार सूर्ये उदय होते हुए वे कबरपर जाईं। शैव वे भाषसमे बाली कीन हमारे लिये कबरके द्वारपरसे पत्थर लुढ़कावेगा। परन्तु उन्होंने दृष्टि कर देखा कि पत्थर लुढ़काया गया है। शैव वह बहुत बढ़ा था। कबरके भीतर जावे उन्होंने उज्जले लंबे बस्त पहिने हुए एक ज्यानका दहिनी शैव बैठे देखा शैव चक्रित हुई। उसने उनसे कहा चक्रित मत ही हो तुम यीणु 3 नासरीको जी कृष्णपर घात क्रिया गया हुदृंढती हो। वह जी उठा है वह यहां नहीं है। देखा यही स्थान है जहां उन्होंने उसे रखा। परन्तु जावे उसके गिर्षणें से शैव पितासे कहा कि वह तुम्हारे भागे गाजीलको जाता है। जैसे उसने तुमस्ते कहा वैसे तुम उस वहां देखाओ। वें 4 शीघ्र निकलके कबरसे भाग गई शैव काम्यात शैव विस्मित हुई। शैव किसीसे कुछ न बालीं किंगीके विद्वंदवाठी थी।

यीणु ने झतारिके पहले दिन भारको जी उठके 5 पहिले महिम मगदलीनीको जिसमें उसने सात भूत निकले थे दर्शन दिया। उसने जाके उसके संगियों- 6 को जा शोक करते शैव राते थे कह दिया। उन्होंने 7 जब सुना कि वह जीता है शैव महिमसे देखा गया है तब प्रतीति न किये।

इसकी पीछे उसने उनसे देखा जी मार्गमें चलते 8 शैव किसी गाँवको जाते थे दूसरे हपरमें दर्शन दिया। उन्होंने भी जाके शैवरांसे कह दिया परन्तु उन्होंने 9 उनको भी प्रतीति न किये।
94 पीछे उसने एमारां शिवाकी जब वे मोजनपर बैठे थे दर्शन दिया झीर उनके सबविष्व्वास झीर मनक्री बठ्ठारतापर उल्लमना दिया इसलिए कि जिन्होंने उसे जी उठे हुए देखा था उन लेगांकी उन्होंने प्रतीति 95 न सिद्ध है। झीर उसने उससे कहा तुम सारे जगति में 96 जाओ हर एक मनुष्यकी सुमारचार सुनाओ। जो विष्व्वास करे झीर बपतिमा लेवे से चाश पावेगा परन्तु जो विष्व्वास न करे से दंडके योग्य ठहराया 97 जायगा। झीर ये चिन्ह विष्व्वास करनेहार्रचों संग प्रगट होगे। वे मेरे नामसे भूतकी निकालेंगे वे नहीं 98 नई भाषा बालेंगे। वे सांपरेका उठा लेंगे झीर जो वे कुछ विष पीवें ता उससे उनकी कुछ हाल न होगी। वे रागियांपर हाथ रबिंग झीर वे चंगे हो जायंगे। 99 सा प्रभु उन्हांसे बालनेके पीछे स्वरगपर उठा लिया 20 गया झीर ईश्वरची दुहिनी झीर बैठा। झीर उन्हांसे निकालके सबवंश उपदेश किया झीर प्रभुने उनकी संग खाय्ये किया झीर जो चिन्ह साथमें प्रगट होते थे उनहांसे बचनको टूटः किया। घामीन।
दूक रचित सुसमाचार ।

१ पहिला पलबे ।

१ मुसमाचार लिखनेका प्रयोग । २ इलिशिबाको गर्म रहनेका बर्बर । ३२ मार्गस श्रीर चलाइशीककर भरू । ३३ मार्गसको गौती । ४७ योगमको जनसका बर्बर । ५७ बिखिरियाहंको अच्छियताही ।

५ बोजनका बंगलमें रहना ।

हे महामहिमन थियाफिल जा बार्तें हम लोगेमें १ श्रीत प्रभार है उन बार्तेंका बुझाने जिस रीतिः उन्हेंहोने जा जारंभसे साथी श्रीर बचनेके सेवक थे हम लोगेमें सांप । उसी रीतिः लिखनेका बहुताने हाय लगाया २ हे । इसलिये मुखे भी जिसने सब बार्तेंका चारंसे ठीक करके जाँच जा है अच्छा लगा कि एक श्रारसे झापके पास लिख ३ इसलिये कि जिन बार्तेंका उपदेश झापका दिया गया हे झाप उन बार्तेंको टूटाता जानें ।

यिहूदिया देशके हरूद राजाके दिनामें झवियायको ५ पारीमें जिखारिया है नम एक याजक था श्रीर उसको स्नी जिसका नम इलिशिबा था हारान्द को बनकी थी । वे दोनों इंग्लारके सन्मुख धम्मरे थे श्रीर परमेश्वरके ६ समस्त श्राजाको श्रीर बिखियोंपर निर्दाह चलते थे । उनको काई लड़का नथाकियां इलिशिबा बांध थी श्रीर ७ वे दोनों बूढे थे । जब जिखारिया अपनी पारीको रीति-पर इंग्लारके जगी याजकका काम करता था । तब चित्रित ८ यां दालनसे उसकी याजको व्यवहारके छनुसार परमे-
२० शवरके मन्दिरमें जाके धूप जलाना पड़ा। धूप जलानेके समय लोगोंकी सारी मंडली बाहर प्राचंडना करती थी।
२१ तब परमेश्वरका एक दूत धूपकी बेदीकी दहिनी शाहरे।
२२ खड़ा हुआ उसकी दिखाई दिया। जिखरियाह उसे देखके
२३ घनरा गया शाहर उसे हर जगा। दूतने उससे कहा है
जिखरियाह मत हर किंकि तेरी प्रारंभना सुनी गई है
शाहर तेरी स्त्री इलाहिबाद पुच जनेगी शाहर तू उसका नाम
२४ गोहन रखना। तुम्हें आनन्द शाहर आहार होगा शाहर
२५ बहुत लेग उसके जन्मने स्त्रीगत होगे। किंकि वह
परमेश्वरके सन्मुख बड़ा होगा शाहर न दाख रस न मद
पीयेगा शाहर शाहर ऋणी अपनी माताके गर्भहीन पवित्र शाहमासि
२६ पारिपूर्ण होगा। शाहर वह इसायलेके सन्तानें मंडिरे बुढ़ते-
२७ शाहर परमेश्वर उनके ईश्वरकी शाहर फिरावेगा। वह उस-
के आगे ईश्वरीयाहके शाहमासि शाहर सामर्थ्यसे जायगा इस-
लिये कि पतरेंका तन लड़कोंकी शाहर फेर दे शाहर
आहार लंघन करनेहारेंकी धर्मनीतियें मतपर लावे शाहर
२८ प्रभुके लिये एक सजे हुए लेगको तैयार करे। तब
जिखरियाहने दूतसे कहा। यह में किस रौजसे जानू किंकि-
२९ कि में बुढ़ा हूं शाहर मेरी स्त्री भी बुढ़ही है। दूतने उसका
उत्तर दिया कि में जब्रायेल हूं जो ईश्वरके साम्रे खड़ा
रहता हूं शाहर में तुमसे बात करने शाहर तुके यह सु-
२० समाचार सुननेका भेजा गया हूं। शाहर देख जिस दिनलों
यह सब पूरा न हो जाय उस दिनलों तू गुंगा हो रहेगा
शाहर बेल न सकेगा किंकि तूने मेरी बातंपर जो ऋणे
२१ समयमें पूरी किंदे जायेगीं विश्रवास नहीं किया। लेग
जिखरियाहकी बात देखते थे शीर शुचिभा करते थे कि उसने मंदिरमें बिलबंब किया। जब वह बाहर आया २५ तब उसने सो बोल न सका शीर उसने जाना कि उसने मंदिरमें कोई दर्शन पाया था शीर अब उसने सैन करने लगा शीर गूंगा रह गया। जब उसकी सेवाके २३ दिन पूरे हुए तब वह अपने घर गया। इन दिनोंके २४ दिन भी उसकी स्थी इलाजिशिया गर्भवती हुई शीर अपनेके पांच मास यह कहके चिह्नाया। कि मनुष्योंमें मेरा २५ घरमान रियाजिको परमेश्वरने इन दिनोंमें कृपादृष्टि कर सुखसे ऐसा व्यवहार किया है।

छोटवें मासमें इंश्वरने जश्वाल हूतकी गाजीला देशके २६ एक नगरमें जो नासरत खाटाव है किसी कुंवारीके पास भेजा। जिसकी मंगनी युसफ नाम दाजुदके घरा- २७ नेकी एक पुरुषसे हुई थी। उस कुंवारीका नाम मरियम था। दूतने घरमें प्रवेश कर उससे कहा है अनुसर्थित २८ कल्याण परमेश्वर तेरे संग है स्त्रियोंमें तू धन्य है। मरियम २८ यम उसे देखके उसके बचनसे घबरा गई शीर सोचने लगी कि यह तैवा नमस्कार है। तब दूतने उससे कहा ३० है मरियम मत हर कोण इंश्वरका अनुयह तुम्हें पर हुआ है। देखते ही गर्भवती होगी शीर पुच जनेगी शीर ३१ उसका नाम तू यीशु रखना। वह महान होगा शीर ३२ सबमें धार्मिक पुच कहावेगा शीर परमेश्वर इंश्वर उसके पिता दाजुदका सिंहासन उसको देगा। शीर वह या- ३३ युवके घरानेर सदा राज्य करेगा शीर उसके राज्यका त्रान्त न होगा। तब मरियमने दूतसे कहा यह किस ३४
रीतिसे होगा क्योंकि मैं पुरुषको नहीं जानती हूँ। दूसरे उसके उत्तर दिया कि पवित्र आत्मा तुम्हारे बाहेंगा। श्रीर सब्जेप्रधानकी शक्ति तुम्हारे बाह्य करेगी। इसलिये वह पवित्र बालक ईश्वरका पुत्र कहाँ बिखरा। श्रीर देख तेरी कुर्बिनी इलाशिवाको भी बुड़पेंमुजकल गम्भीर रहा है। श्रीर जा बांध कहाँ वती ये उसका यह ढङड वां मास है।

क्योंकि भाई वात ईश्वरसे ससाध्य नहीं है। मरियमने कहा देखिये में परमेश्वरकी दासी मुझे आपके चचनवे ज्ञानार होय। तब दूत उसके पाससे चला गया।

उन दिनामें मारियम उठके शीघ्रसे पन्नैतीय देखमें यिहूदीके एक नगरको गई। श्रीर जिकरियाहके गरमे प्रवेश कर इलाशिवाको नमस्कार किया। ज्योंही इलाशिवाने मारियमका नमस्कार सुना त्योंही बालक उसके गरमे उदखला। श्रीर इलाशिवा पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हुई। श्रीर उसने बड़े शब्दसे बोलते हुए कहा तू स्पौने गरमे प्रभुकी माता मेरे पास चाहबे।

देख ज्योंही तेरे नमस्कारका शब्द मेरे कानोंमें पड़ा त्योंही बालक मेरे गरमे ज्ञानसे उदखला। श्रीर धन्य बिवश्रास करनेहरी कि परमेश्वरकी श्रीरसे जा वाते तुमसे कही गई हैं सो पूरी किए जायेंगी।

तब मारियमने कहा मेरा प्राण परमेश्वरकी महिमा कारता है। श्रीर मेरा आत्मा मेरे चाचकता ईश्वरसे ज्ञानन्दित हुआ है। क्योंकि उसने झपनी दासको दीनताईंपर दूषित किए हैं देखी। शब्द सब समयके लोग
मुझे प्यार बहुत है। क्योंकि सबबारकर्मने मेरे लिये ४५ महाकाव्यांकों किया है श्रीर उसका नाम पवित्र है। 
उसकी द्याना उन्हांनं जो उससे हरते हैं पीढ़ियां पीढ़िलियां ५० नित्य रहती है। उसने अपनी भुजाका बल दिखाया ५१ है उसने अभिमानियांको उनके मनके परामर्शमें बिन्दु 
भिन्न किया है। उसने दलवानियांको सिंहासिनियांसे उतारा ५२ 
श्रीर दोनियांको ऊंचा किया है। उसने भुजाका उत्तम ५३ 
बस्तुबन्दियांसे तृप्त किया श्रीर धनवानियांको खूब हाथ पूरे 
दिया है। उसने अजै हमारे पितायोंसे कहा। तैसे सबबको ५४ 
इब्राहीम श्रीर उसके बंधपर अपनी दया स्मरण करके 
करणा अपने सेवक इसायेतका उपकार किया है। मारु- ५५ 
यह यम तीन मासके लघुकल इलीसिवाले संग रही तब 
अपने घरके लौटी।

तब इलीसिवाले जनकने कसय पुरा हुआ श्रीर वह ५६ 
पुल जाने। उसके पड़ासियां श्रीर कुरुंबाने सुना कि ५७ 
परमेश्वर उसपर बड़ी दया किया है श्रीर उन्हांने उसकी 
संग ज्ञानन्द किया। चाउंछ दिन वे बालकका खतना ५८ 
करनेको अगे नहीं। उसके पितायों नामपर उसका नाम 
जिखरियावह रखने लगे। इसपर उसकी माताने कहा सो ६० 
नहीं परन्तु उसका नाम योहान रखा जायगा। उन्हांने ६१ 
उससे कहा अपने कुरुंबामित्र के नहीं है जो इस 
नामसे कहावता है। तब उन्हांने उसके पितायों सैन ६२ 
किया कि ज्ञाप क्या चाहते हैं कि इसका नाम रखा 
जाय। उसने परिया मंगाके यह लिखा कि उसका नाम ६३ 
योहान है। इससे वे सब अच्छभित हुए। तब उसका ६४
मुंह खार उसकी जीभ तुरन्त खुल गये खार वह दशे बालने खार ईश्वरका धन्यबाद करने लगा। खार उन्हें खासपासके सब रहनेहारिंको भय हुआ खार इन सब बातांको चबू यहूदियांके सारे पश्चिमी देशोंमें होने लगी। खार सब सुननेहारिंको अपने अपने मनमें सोच कर कहा यह कैसा बालजा होगा। खार परमेश्वरका हाय उसकी संग था।

60 तब उसका पिता जिखरियांह पवित्र अत्मासे 68 परिपूर्ण हुआ खार यह भविष्यद्वीपी बोला। कि परमेश्वर इसायेलका ईश्वर धन्य होते कि उसने अपने लोगोंपर 65 दूषित कर उन्हें का उद्घाट किया है। खार जैसे उसने अपने पवित्र भविष्यद्वीपांको मुख्से जा आदिसे होते आये।

60 हैं कहा। तैसे हमारे लिये अपने सेवक दाजुदके घरानेमें 61 एक भाषके सींगकी। अर्थात हमारे शनुज़ांके खार हमारे सब बैरिगंजे हारसे एक बचनेहारिंको प्रभाव किया है।

62 इसलिये कि वह हमारे पितारेंको संग दयाका व्यवहार 63 करे खार अपना पवित्र नियम स्मरण करे। अर्थात वह 64 किरिया जो उसने हमारे पिता इब्राहीमसे पाई। कि 65 हमें यह देवे कि हम अपने शतुज़ांके हारसे बचके। निमित्त जीवन भर प्रतिदिन उसके समस्त पवित्रकालयं खार धरमसे 66 उसकी सेवा करें। खार तू है बालज सब्ज़प्रभातमका भविष्यद्वीपा कहावेगा कोंसकि तु परमेश्वरके भारी जाय- 66 गा कि उसके पयंथ बनावे। अर्थात हमारे ईश्वरको महा कहासे उसके लोगोंका उन्हेंके पापमेचनके द्वारसे 68 निस्तारका झाँस देंवे। उसी कहासे सूर्यका उदय
उपरसे हमांपर प्रकाशित हुआ है कि संधकारमें ६५ श्रीर मुन्युकी ब्यायमें बेठनेहराण्को ज्ञाति देवी श्रीर हमारे पांच कुशलके मांगपर सदी संधि चलावे।

श्रीर वह बालक बढ़ा श्रीर शादमामें बलवनत ८० होता गया श्रीर इस्रायेली लौटापर प्रगट हानेके दिनलीं जंगली स्थानान्में रहा।

२ दूसरा पद्भे।

१ युवाका बैतलहममें बाना श्रीर युवका जनम। २ स्वर्ग-दूसरीया गड़रियान्खा युवका जनमका चंदन देना। २३ युवका खत्ता करना श्रीर संघारके बारे धरना। २५ ग्रामिण श्रीर बड़ा घर से बीनदना श्रीर चलका नागरको दौड़ा। ४१ वारं बराबर के बायके उपवेशके संग चसकी बालबीत।

उन दिनमें अगस्त श्रीर महाराजाकी श्रीरति श्रीरा हुई कि उसके राज्यके सब लोगोंके नाम लिखि जावें। कुरीनिके सुरिया देखके बाध्य हानेके गहलिये यह नाम लिखाई हुई। श्रीर सब लोग नाम लिखानेको अपने अपने नगरको गये। युसफ भी इसलिये कि वह दाजुदके घराने श्रीर बंशका था मारियम स्तीके संग जिससे उसकी मंगनी हुई थी नाम लिखानेको गाली देखके नासरत नगरसे दिहूदियामें बैतलहम नाम दाजुदके नगरको गया। उस समय मारियम गर्भवती थी। उनके वहां रहते उसके जननेके दिन पूरे हुए। श्रीर वह अपना पहलीदा पुत्र जनी श्रीर उसका कपड़में लपेटके चरनीमें रखा की अंक उनके लिये सरायमें जगह न थी।

उस देखमें कितने गड़रियें थे जो श्रीरमें रहते थे श्रीर ५
रातको योग्यतम मूल्य कार्य संबंधित थे। यहाँ देखिए परमेश्वर का एक दृष्टि उनके पास आ खड़ा हुआ। यह तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा तेरह दिनों द्वारा

10 दर गये। दूरते उनसे कहा मत हो। क्योंकि देखिए मैं
tुम्हें बड़े आनन्दका सुसमाचार सुनाता हूं जिससे सब
लोगोंको आनन्द होगा, कि चाहे दाजबके नगरमें
tुम्हारे लिये एक चाकूतरा अधिकृत स्नेह प्रभु जन्मा है।
12 यह तुम्हारे लिये यह पता होगा कि तुम एक बालक-
की कपड़े में लपेटे हुए यह चाहे चरनीमें पड़े हुए पासियोंगे।
13 तब चाचांचक स्वर्गीय सेजामें सबूतरे उस दूरते संग
14 प्रगट हुए यह चाहे ईश्वरकी स्तुति करते हुए बोले। सबसे
जंचे स्थानमें ईश्वरका गुजाननुबाद यह चाहे पूजनवीरपर
15 शांति होय। मनुष्योंका प्रसन्नता है। ज्योंही दूरतखा
उन्होंके पाससे स्वर्गोंके गये त्योंही गड़रियोंने आयसमें
कहा आँखा हम बैतलहमलों जाके यह बात जो हुई
16 है जिसे परमेश्वरने हमेंंकों बताया है देखे। चाहे
उन्होंने शीघ्र जाके मारियम यह युसफकी। चाहे बालक-
17 की चरनीमें पड़े हुए पाया। इसे देखके उन्होंने वह
बात जो दिस बालकके विषयमें उन्होंके कहीं गईं थी
18 प्रचार किए। चाहे जब सुननेहरि उन बातोंसे जो
19 गड़रियोंने उनसे कहीं स्थानभित हुए। परन्तु मारियमने
इन सब बातोंका अपने मनमें रखा चाहे उन्हें सोच-
20 ती रही। तब गड़रिये जैसा उन्होंंसे कहा गया था
तैसाही सब बातं सुनके चाहे देखके उन बातोंके लिये
ईश्वरका गुजाननुबाद चाहे स्तुति करते हुए लौट गये।
जब छात्र दिन पूरी होत्या बालकका खटना कर- २१
ना हुस्ता तब उसका नाम योगु रखा गया कि वही
नाम उसके गर्में छात्रों ने इसे दूसरे रखा गया था।
छात्र जब भाषाकी व्यवस्थाको अनुसार उनको यहाँ आये- २२
के दिन पूरे हुए तब वे बालकको यिहुश्शलीमीमें ले
गये। किजैसा परमेश्वरकी व्यवस्थामें लिखा है कि २३
हर एक पहली तत्त्व परमेश्वरके लिए पवित्र कहा-
बेगा तैसा उसे परमेश्वरको भागे धरे। छात्र परमें- २४
श्रवरकी व्यवस्थाकी बातको अनुसार पुंडुकोंकी जाड़ी
स्थवरा कपेतके दो बड़ी बलिदान करें।

तब देखा यिहुश्शलीममें शिमियान नाम एक मनुष्य २५
था। वह मनुष्य प्रथमी छात्र भक्त था। छात्र इस्खायलकी
शांतिको बार जोहता था। छात्र पवित्र आत्मा उसपर
था। पवित्र आत्मासे उसको प्रतिज्ञा दिए गई थी कि २६
जबलों तू परमेश्वरके अभिषिक्त जनका न देखे तबलों
मृत्युका न देखेगा। छात्र वह आत्माकी शिमियासे समन्दर- २७
में भाया छात्र जब उस बालक श्रेष्ठ योशुसे माता
पिता। उसको विषयमें व्यवस्थाकी व्यवहारको अनुसार
करनेको। उसे भीतर लाये। तब शिमियान्ने उसको २८
अपनी गदामिमें ले देशकर धन्यवाद कर कहा। है २८
प्रभु श्रम तू अपने बचनको अनुसार अपने दासको
कुशलसे बिदा करता है। कियोंकि मेरी जाँतकों तेरे ३०
लोकार्को देखा है। जिसे तूने सब देखके लोगोंके ३१
सन्नुइ तैयार किया है। कि वह अन्यदेवीलको व्रकाश ३२
करनेको ज्यादा। छात्र तेरे इस्खायली लोगका तेज होने।
यूसफ श्रीर यीशुकी माता इन बातेंसे ज्ञा उसकी विशयमें
कहीं गईं सचभा करते थे। तब शिमियान्ने उनकी
झाशैस देकर उसकी माता मरियमसे कहा देख यह तो
इसायलमें बहुतांके गिरने श्रीर फिर उठनेका कारण
होगा श्रीर एकचिंचने जिसकं बिखुमें बाते किंई जार्यगीं।
हां तेरा लिंग प्राण भी बहुसे वारपार छिदेगा। इससे
बहुत झुठयांके बिचार प्रगट किये जार्यगी।
श्रीर हिा नाम एक महिवदुकी थी जिा आशेरके
कुलके पन्न्यती वुधी थी। वह बहुत बुढी थी श्रीर अपने
कुंवारपनसे सात बरस स्वामिओं संग रही थी। श्रीर
वह बरस चैरासी एककी विधवाथी जिा मंदिरसे बाहर
न जाती थी परन्तु उपवास श्रीर प्रार्थनासे रात दिन तेवा
करती थी। उसने भी उसी घडी निकट ज्ञाेके परमेश्वर-
का धन्य माना श्रीर यीशुलीमें जिा लोग उत्तारकी
बाट देखते थे उन सभूंति यीशुकी विशयमें बात किंई।
जब वे परमेश्वरकी व्यवस्थाके अनुसार सब कूद कर
चुके तब गाजीलका अपने नगर नासर्तकी लैदो। श्रीर
बालक बड़ा श्रीर आत्माओं बलवान श्रीर बुढीसे परिए-
पूण्य होता गया श्रीर इंधनरका अनुग्रह उसपर था।
उसकी माता पिता बरस बरस निस्टार पब्झमें यिख-
शालीमको जाते थे। जब वह बारह बरसका हुआ तब
वे पब्झकी रीतिपर यिखशलीमको गये। श्रीर जब वे
पब्झकी दिनेकी पूरा करके लैदों लगे तब वह लड़का
यीशु यिखशलीमें रह गया परन्तु यूसफ श्रीर उसकी
माता नहीं जानते थे। वे यह सबकों कि वह संग-
वाले परिक्रमांक बीचमें है एक दिनकी बार गये शीर्ष अपने कुटुंबेंग शीर्ष चिन्हारिकों बीचमें उसका दूर्दृष्टि लगे। परन्तु जब उन्होंने उसका न पाया तब उसे दूर्दृष्टि 45 हुए गिरावटकी फिर गये। तीन दिनकी पीछे उन्होंने 46 उसे मंदिरमें पाया कि उपदेशकों बीचमें बैठा हुआ उनकी सुनता शीर्ष उनसे प्रभाव करता था। शीर्ष जो 47 लोग उसकी सुनते थे सो तब उसकी बुद्धि शीर्ष उसके उसरोंसे बिस्मित हुए। शीर्ष वे उसे देखके अचानक 48 हुए शीर्ष उसकी माताने उससे कहा है पुनः हमसे की ऐसा किया। देखते तरा पिता शीर्ष में बुद्धि हुए तुम्हे दूर्दृष्टि थे। उससे उससे कहा तुम कीं मुफ्त हुईं दूर्दृष्टि थे। क्या 49 नहीं जानते थे कि मुफ्त अपने पिताकी विश्वासमें लगा रहना अवश्य है। परन्तु उन्होंने यह बात जो उससे 50 चुनते कही न समकर। तब वह उनके संग चला शीर्ष 51 नासरमें शया शीर्ष उनके बशर्में रहा शीर्ष उसकी माताओं इन सब वातेंको अपने मनमें रखा। शीर्ष 52 यीशुकी बुद्धि शीर्ष डॉल शीर्ष उसपर इंतजरका शीर्ष मनुष्योंका अनुग्रह बढ़ता गया।

3 तीसरा पत्र:
1 बैंका भविष्यवाणी देनेकरका बृजान्त। 2 उनका उपदेश शीर्ष भविष्यवाणी।
35 उनका बैंका गीतमें दाना जाना। 36 यीशुकी भविष्यवाणी लेना। 37 उनकी\nभविष्यवाणी?

तिबरीय कैसरके राज्यके पन्द्रहवेंवर्समें जब पश्चिम 51 पिलात यीहूदियाका रुढ़ियाका रुढ़ियाका रुढ़िया शीर्ष हरेंद एक चैंसे-नाई सर्पक गालोलका राजा शीर्ष उसका भाई।
फिलिप एक चैथाई अग्रेत इतूरिया श्रीर चाबानीतिया
देशांका राजा श्रीर लुसानिय एक चैथाई अग्रेत झाँकी-
लैनी देशांका राजा था . श्रीर जब हुसस श्रीर कियाफा
महाया जब तब इश्वरका बचन जंगलमें जिथरियाहीके
पुक योगह पास खाया . श्रीर वह यदैन नदीके श्रास
पासके सारी देशमें श्राके पापमेचनके लिये पश्चातापके
बपतिसमाका उपदेश करने लगा । जैसे विज्ञायाह मवन
व्यटुकार्के कहे हुए पुस्तकमें लिखा है कि किसीका शब्द
हुआ जो जंगलमें पुकारता है कि परमेश्वरका पन्थ
बनाते उससे राजमागे सिधे करी । हर एक नाला भरा
जायगा श्रीर हर एक पब्लेंत श्रीर टीला नीचा किया
जायगा श्रीर टेड़े पन्थ सिधे श्रीर उंचनीच मागे चैरस
बन जायेंगे। श्रीर सब प्रायी इश्वरके चारका देखेंगे।

tab bhūta loga jñ ussāte bapātismā leneke niikal

धाये उन्हांसे योगहने कहा है सांपेंके बंध किसने तुम्हें

धानेवाले श्राके भागनेका चिताया है । पश्चातापके

योग्य फल लाशा श्रीर अपने अपने मनमें मत कहने

लगे कि हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि मैं तुमसे

कहता हूं कि इश्वर इन पत्थरान्से इब्राहीमके लिये सन्तान

उतमकार सकता है । श्रीर जब भी कुलहाड़ी पेड़की

उड़पर लगी है इसलिये जो जो पेड़ श्रां फल नहीं

फलता है सो कारा जाता श्रीर भागमें डाला जाता

है । तब लेगोंने उससे पूछा तो हम का करैं । उसने

उन्हें उत्तर दिया कि जिस पास दो संगे हों सो जिस पास

न है उसके साथ बांट लेवे श्रीर जिस पास मेजन है याय
सा भी वैसाही करे। कर उगाहनेहारे भी वपतिसमा १२ लेनेकी सागर उससे बाले हे गुह हमका करे। उसने १३ उससे कहा जो तुम्हें ठहराया गया है उससे अधिक मत ले ले। योगासोंने भी उससे पूछा हम क्या करें। उसने १४ उससे कहा विसीयर उपद्रव मत करो शीर न भूले दीया लागेश्रीर अपने वेतनसे सतंबुर रहा।

जब लोग उससे देखते थे शीर सब अपने अपने १५ मनमें योगासोंने विषय में चिंतायों करते थे कि होय न होय यही बीसू है। तब योगासों ने सभी उतार दिया कि मैं १६ ता। तुम्हें जलने वपतिसमा देता हूं परन्तु वह चाहता है जो मुख्ते अधिक शक्तिमान है। मैं उसके जूतेंका बाँध खोलनेके लागू नहीं हूं वह तुम्हें पवित्र छातरसे शीर जागरसे वपतिसमा देगा। उसका सूप उसके हाथमें है १७ शीर वह अपना सारा खलीहान झूठ करेगा शीर गेंदूका अपने खतंबरत्में एकटा करेगा परन्तु भूसीका उस ज्ञातके जो नहीं बुझती है जलाकेग। उसने बहुत शीर वातंका १८ भी उपदेश करके लोगासों की सुसमाचार सुनाया।

पर उसने चौथाईसे राजा हरदप्तको उसकी भाई १६ चलिकी स्वी हरदप्तान्तर से विषयसे शीर सब कुकर्मांके विषयमें जा। उसने किये थे जलना दिया। इसलिये २० हरदप्ताने उन सभीके उपरांत यह कुकर्मांके भी किया कि योगासों बदरीमूल मंद रखा।

सब लोगाके वपतिसमा लेनेके पीछे जब योड़ने भी २१ वपतिसमा लिया था शीर प्रार्थना करता था तब स्वरूप झूल गया। शीर पवित्र छातर दूसरी रूपमें कपोतके २२
नाई उसपर उतरा श्रीर यह श्रीपारम्बांश कि तू मेरा प्रिय युग है मैं तुकसे मुझि प्रसन्न हूं।

२३ श्रीर येशु श्राप तीस वरसको शर्कल हैने लगा
२४ श्रीर लोगेकी समझने युसफका पुन था। युसफ
एजिका पुन ता वह मतातका पुन वह लेवीका वह
२५ मलिकका वह यात्राका यह युसफका। वह मतातियाहिका
वह आमेसका वह नहुमका वह इसलिका वह लगईँ-
२६ ता। वह मात्रका वह मतातियाहिका वह शिमिथिका
२७ वह युसफका वह यिहूदाका। वह योहानाका वह री-
साका वह जिज्बावुलका वह शलतियेका वह नेरिका।
२८ वह मलिकका वह अटीका वह बौसमका वह इलमोदद-
२९ ता वह एरका। वह योशिका वह इलियेजरका वह
३० योरिमका वह मतातका वह लेवीका। वह शिमि-
येनका वह यिहूदाका वह युसफका वह योहाननका वह
३१ इलियाकोमका। वह मिलियाका वह बैननका वह
३२ मतातका वह नातनका वह दाजेका। वह यिशीका
वह श्रीबेडका वह बौसमका वह सलमेकका वह नह-
३३ येनका। वह आमिनाटबका वह ऋरामका वह शिमिन-
३४ का वह पेरसका वह यिहूदाका। वह याजकबका वह
इसहाकका वह इबाहीमका वह तेराहका वह नाहीरका।
३५ वह सिफ्रका वह रियूका वह पेलगका वह एरका वह
३६ शेरहका। वह कैननका वह अफ़कसदका वह शिमका
३७ वह नृहका वह लामकका। वह मियूशलहका वह हनोक-
३८ का वह येईदका वह महनलेकका वह कैननका। वह
इनाशका वह शेतका वह जादमका वह इशवरका।
8 चैथाय पब्ले ।

१ यीशु की परिभाषा । १४ उसका उपदेश करना । १५ नामस्त्रों के सेवकों का कर्म उनका नहीं सुनना । ३५ एक मूलाँगक मनुष्यका चेहरा करना । ३८ पिताकी सरकारका चेहरा करना । ४० ब्रह्मा रामायणका चेहरा करना । ४२ नाम नागरम्य समय उपदेश करना ।

यीशु पवित्र ज्ञात्माके परिपूर्ण है, इतने से फिरा चैथाय ज्ञात्माकी विशेषता संगलम गया । चैथाय चालिस दिन शैतानके उसकी परिभाषा किंदे गईं चैथाय उन दिनों में उसके कुछ नहीं खाया पर पीछे उनके पूरे हीनेपर भूखा हुआ । तब शैतान उससे कहा जैन तू ईश्वरका पुत्र है तो इस पत्यर्ते कह दे कि रोटी बन जाय । यीशु उसके उत्तर दिया कि लिखा है मनुष्य केवल रोटीसे नहीं परत्तु ईश्वरको हर एक वातसे जीविता । तब शैतान उससे कहा जैन तू ईश्वरका पुत्र है तो यह ईश्वरको हर एक वातसे जीविता। चैथाय शैतान उससे कहा में यह सब जाधिकार चैथाय इन्हांका विभव तुम्हें देंजा क्योंकि वह मुक्ति लोंगा गया है चैथाय में उसे जिसका चाहता हूँ उसके देता हूँ । इसलिये जो तू मुक्ति प्राप्त करे तो सब तेज होगा । यीशु उसके उत्तर दिया कि है शैतान मेरे सामने स्त्रों दूर है क्योंकि लिखा है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वरको प्रशान्त कर चैथाय केवल उससे सेवा कर । तब उसकी यिशु रोमको में ले जाके मन्दिरके कलश पर खड़ा किया चैथाय उससे कहा जैन तू ईश्वरका पुत्र है तो अपने को यहांसे नीचे गिरा । क्योंकि लिखा है १० वि वह तेरे विश्वस्यने अपने दूतांको आज्ञा देगा कि
11 वे तेरी रक्षा करें। श्रीर वे तुम्हे हाथों हाथ उठा
12 लंगे न हो कि तेरे पांवमें पत्थरपर चार लगे। यीशुने
उसको उतार दिया यह भी कहा गया है कि त परमेश्वर
13 अपने ईश्वरकी परीक्षा मत कर। जब शीतान सब
परीक्षा कर चुका तब कुछ समयके लिये उसकी पाससे
चला गया।
14 यीशु ज्ञात्मकी शक्तिसे गालीलकी फर गया
श्रीर उसकी कोर्टी ज्ञापासके सारे देशमें पैल गई।
15 श्रीर उसने उनकी समाजीयों में उपदेश किया श्रीर समेत
उसकी बड़ाई किए।
16 तब वह नासरतकी ज्ञाया जहां पाला गया था श्रीर
अपनी रीतिपर बिखामके दिन सभाकेघरमें जाके पड़ने-
17 दिया गया श्रीर उसने पुस्तक बालवे वह स्वान पाया
18 जिसमें लिखा था: कि परमेश्वरका ज्ञात्मा मुक्ति है
इसलिए कि उसने मुक्ती अभिषेक किया है कि कंगालेंका
19 सुसमाचार सुनाओं। उसने मुक्ती भेजा है कि जिनके मन
चूर हैं उन्हें दंगा कहं श्रीर बंधुसोंका रूटनेकी श्रीर
बंधाँको दूषित पानेकी बातो दुनाजं श्रीर पेए हुझंका
निस्तार कहं श्रीर परमेश्वरके याहा बसका प्रचार
20 कहं। तब वह पुस्तक लपेटके सेवकके घासमें देके बैठ
गया श्रीर सभामें सब लोगोंकी ज्ञानें उसे तक रहती।
21 तब वह उन्हें कहते लगा कि जहां हैं हर्ममपुस्तकका
22 यह बचन तुम्हारे सुननमें पूरा हुआ है। श्रीर समेत
उसकी सराहा श्रीर जे अनुयहरुको बातं उसके मुखसे
निकलाई उनसे झांचा किया झार कहा क्या यह यूसफ़ का पुत्र नहीं है। उसने उन्होंने कहा तुम जवाब मुझसे २४ यह दुखाना कहाँगे किसे बैटर झपनेको चंगा कर। जो कुछ हमें सुना है कि कफनाहुमें किया गया सो यहां झपने देशमें भी कर। झार उसने कहा मैं तुमसे २४ सच कहता हूँ कि एलियाहेके २५ दिनों में जब ज्ञान को जीन बरस बन्द रहा यहांलों कि सारे देशमें बड़ा ज्ञान पड़ा तब इस्लाममें बहुत विधवा थीं। परन्तु एलियाह उन्हें सिक्को पाश २६ नहीं भेजा गया केवल सीटान देशके सारिफत नगरमें एक विधवाके पाश। झार इलिशा भाविष्यवटकारी २६ समय में इस्लाममें बहुत कठीरी थी परन्तु उन्हें सिक्को छोड़ गूहा किया गया केवल सुरीया देशका नामान। यह बातें सुनके सब लोग अभास फोड़ते भर २६ गये। झार उठके उसकी नगरसे बाहर निकलके २६ जिस पल्ले पर उनका नगर बना हुआ था उसकी बारीकरे में ले चले कि उसकी नीचे गिरा देव। परन्तु ३० वह उन्हें के बीचमें होकर निकला झार चला गया। ३१ झार उसने गालीके कफनाहुम नगरमें जाके बि- झार दिन लोगोंको उपदेश दिया। वे उसके उपदेशमें ३२ झांचमित हुए क्योंकि उसका बचन अधिकार सहित था। सभाके घरमें एक मनुष्य था जिसे अशुद्ध भूतका ज्ञाता ३३ लगा था। उसने बड़े शब्दमें चिल्लाके कहा है यीशु ३४ नासरी रहने दौड़ते झांपका हमसे क्या काम? क्या झार
हरे नाश करने बाये हैं। मेरे आपको जानता हुं आप।
इसके वजन हैं इंस्वरके पवित्र जन। यीशु ने उसकी हारकी
कहा चुप रहे श्रीर उससे निकल आ। तब भूत
उस मनुष्यके बीचमे गिराके उससे निकल आया।
श्रीर उसकी कुछ हानि न किए। इसपर सभे आचंभा हुआ। श्रीर वे आपसमें बात करके बोले यह
की नसी बात है कि बह प्रभाव श्रीर पराकासमें अशुदु।
भूतेंकी आशा देता है श्रीर वे निकल आते हैं। सो
उसकी बीति आसपासके देशमें सर्वें पैल गई।
सभे घरसे उठके हमने शिखानकी घरमें प्रवेश
किया श्रीर शिखानकी ताल बड़े ज्वरसे प्रीढ़ित थी। श्रीर
उन्होंने हमसे मांगे हमसे बिनी किए। हमसे हमके
विक झट हो ज्वरकी डांटा श्रीर वह हमसे बोल गया।
श्रीर वह तुरल उठके उनकी सेवा करने लगी।
सूर्य हुवते हुए जिन्होंके पास दुखी लोग नाना
प्रकारके रोगोंमें पड़े थे वे सब उन्हें हम पास लाये
श्रीर हमने एक एकपर हाय रखके हमने बंगा किया।
भूत भी चिलुआते श्रीर यह कहते हुए कि आप इंस्वरके
पुष्य खोपू हैं बहुतामे निकली परन्तु हमने उन्हें डांटा।
श्रीर बोलने न दिया क्योंकि वे जानते थे कि वह
खोपू हैं।
बिहान हुए वह निकलके जंगली स्थानमें गया। श्रीर
लगोंने उसकी दूंढ़ा। श्रीर उस पास श्रीर हरे रोकके।
लगे कि वह उनके पाससे न जाय। परन्तु हमने
उन्हें कहा मुखे श्रीर श्रीर नगरोंमें भी इंस्वरके राज्य-

23
का सुसमाचार सुनाना होगा किंतु मैं इसी लिये भेजा गया हूँ। सो उसने गालिकी समाचार में उपदेश किया। 

ये शेष कहते हैं- "प्रभु मेरे पास गाइयों में पापी मनुष्य हूँ। किंतु कहाँ उसके सब संगी लोग इन महर्षियोंके बख्त जानले
२० जा उन्होंने पकड़ी थीं बिस्मिल हुए। शैर वैसीही
अबद्रिये पुत्र याकूब शैर योहन भी जो शिशुकनी
साफ़ी थे बिस्मिल हुए। तब यीशु ने शिशुकनी कहा मत
२१ दर आसे तू मनुष्योंको देखेगा। शैर वे नावींको
tीरपर जाके सब कुछ ढेड़के उसके पीछे हो लिये।
२२ जब वह एक नगरमें था तब देखा एक मनुष्य कौंडसे
भरा हुआ वहां था शैर वह यीशुकी देखके मुंहके बल
गिरा शैर उसके बिन्दी किंग कि है प्रभु जो ज्ञाप चाहे
२३ ता सुकी पुत्र कर सकते हैं। उसने हाथ बढ़ा उसे
बूटकी कहा में ता चाहता हूँ पुत्र हो जा। शैर उसका
२४ शैर तुरंत जाता रहा। तब उसने उसे अज्ञात दिखी
कि विसीसे मत कह परम्लु जाके अपने तड़ यज्ञकी
दिखा शैर अपने पुत्र होनेके विषयमें चःढ़ाया
जैसा मुसाने अज्ञात दिखे तैसा लागान्दर साधी होनेके
२५ लिये ढ़ा। परम्लु यीशुकी कौंटी अधिक फैल गईः
शैर बुद्धते लाग मुननेको शैर उससे अपने रामगांसि
२६ चंगे जिये जानेको एक्टू हुए। शैर उसने जंगली
स्थानांत्र अलग जाके प्राणना किंग।
२७ एक दिन वह उपदेश करता था शैर फरीशी शैर
व्यवसायपक लाग जो गालील शैर मिह़दीयाके हर एक
गांवसे शैर मिह़दीलीमसे ज्ञाने थे वहां बैठे थे शैर
२८ उन्होंने चंगा करनेको प्रभुका सामय ग्रांट हुआ। शैर
देखा लाग एक मनुष्यकी जो श्रद्धांगी था खापर लाने
शैर वे उसके भीतर ले जाने शैर यीशुकी ज्ञाने रखने
२९ चाहते थे। परम्लु जब भीड़के कारण उसे भीतर ले
जानेका कोई उपाय उन्हें न मिला तब उन्होंने कोठिपर चढ़के उसका खात समेत छतरमें बिचमें योशुके लागे उतार दिया। उसने उन्हें जो बिद्वास देखके उससे दो कहा है मनुष्य तेरे पाप धुमा किये गये हैं। तब 21 धार्मिक श्रीर फरीशी लोग विचार करने लगे कि यह कीन है जो इंश्वरकी निन्दा करता है। इंश्वर-को बोड़ कीन पापन्नी धुमा कर सकता है। योशुने 22 उनके मनकी बातें जानके उनकी उतार दिया कि तुम लोग घपसे घपने मनसे क्या क्या विचार करते हो। कीन बात सहज है यह कहना कि तेरे पाप धुमा किये गये हैं। वह कहना यह कहना कि उठ श्रीर चल। परन्तु जिससे तुम जाना कि मनुष्यके पुषके 24 पृथिवीपर पाप धुमा करनेका शाखिकार है (उसने उस छद्मगिसे कहा) में तुमसे कहता हूं उठ घपनी खार उठाके घपने घरकी जा। वह तुरन्त उनके सामे दो उठाके जिसपर वह पढ़ा था उसकी उठाके इंश्वरकी स्तुति करता हुआ। घपने घरकी चला गया। तब सब दे लोग विस्तित हुए श्रीर इंश्वरकी स्तुति करने लगे। श्रीर ज्ञति भमान हाके बोले हमने श्रीज ज्ञानाथे बातें देखी हैं।

इसकी पीछे योशुने बाहर जाके लेरी नाम एक कर 25 उगाहनेहरूको कर उगाहनेकी स्थानमें बैठे देखा श्रीर उससे कहा मेरे पीछे आ। वह सब कुछ बोड़के उठा 28 श्रीर उसकी पीछे हो लिया। श्रीर लेबोने घपने घरमें 25 उसके लिये बड़ा भेज बनाया श्रीर बहुत कर उगाहने-
हारे शीर बहुत से शीर लेगे थे जो उनके संग मिलातन पर
30 बैठे। तब उन्होंने ध्यान लेने शीर फरीशी उसके शिष्यों-
पर कुड़कुड़ा बाले तुम कर उगाने शीर मार
31 पापियोंके संग कों खाते शीर पीत हो। यीशुने उनकी
उत्तर दिया कि निरोगियों को बैठका प्रयोजन नहीं
32 है परतु रोगियों को। भैं धर्मियों को नहीं परतु
पापियोंके प्रश्नातीले लिये बुलाने ज्ञाना हूँ।
33 शीर उन्हीं अब उससे कहा योहनके शिष्य कीं बार
बार उपवास शीर प्रार्थना करते हैं शीर बैंसेही फरी-
शिष्योंके शिष्य भी परतु छापेके शिष्य खाते शीर पीते हैं।
34 उसने उनसे कहा जब दूल्हा सबाशिमि संग हैं तब
35 क्या तुम उनसे उपवास करवा सबते हो। परतु बैं-
दिन शिविंगे जिनमें दूल्हा उनसे शलग किया जायगा तब
36 बैं उन दिनोंमें उपवास करंगे। उसने एक दूषित्व भी
उनसे कहा कि कैंई मनुष्य नये कपड़ेका टुकड़ा पुराने
बसत्मे नहीं लगाता है नहीं तो नया कपड़ा उसे
फाड़ता है शीर नये कपड़ा टुकड़ा पुरानेमें मिलता
37 भी नहीं। शीर कैंई मनुष्य नया दाख रस पुराने
कुपोंको नहीं भरता है नहीं तो नया दाख रस कुपोंका
 फाड़गा शीर वह दाख वह जायगा शीर कुणे नपु
38 होंगे। परतु नया दाख रस नये कुपोंमे भरा चाहिये
39 तब दोनोंके रसा होती है। कैंई मनुष्य पुराना दाख
रस पीके तुर्लन् नया नहीं चाहता है क्योंकि वह
कहता है पुराना ही ज्ञाना है।
ऐ छठवां पढ़िे।

१ यीशुका विषादबारको विषयमा निर्देश कर्ना। २२ बारह प्रीतिका ठहराना। २७ बहुत रोगियांको चंगा कर्ना। २५ धन्य बात छैन ह्येक्रम्र पियङ्गमा यीशुका उपदेश। २७ शुभेच्छाका प्रेम करानेका उपदेश छैन लडाई करलेका निर्देश। ३५ हृदयोंपर बेष्ट लगानेका निर्देश छैन भूटे उपदेशकोंका निर्देश। ३५ मनको स्वभावका दृष्टान्त। ४५ दर्जने नेल दालनेका दृष्टान्त।

पढ़िको दूसरे दिनको पीछे विषादमको दिन यीशु खेतीमा हाक्ने जाता था छैन उसको शिष्य बाली ताड़की हाथमें मल मलकी खाने लगने। तब कई एक फरीशियाँने उनसे कहा जो काम विषादको दिनमा करना उचित नहीं है सा कीं नहीं हो। यीशुने उनको उत्तर दिया क्रिया तुमने यह नहीं पढ़ा है कि टाकत्तने जब वह छैन उसको संगी लोग भूखे हुए तब क्रिया किया। उसने कोंकर ईश्वरको घरमें जाको भेंटकी रोटियाँ लेको खाई जिनसे खाना छैन किसीको नहीं केवल याजकोंको उचित है छैन अपने संगीयाँको भी दिये। छैन उसने उनसे कहा मनुष्यका पुष्क विषादवारका भी प्रभु है।

दूसरे विषादवारको भी वह सभाको घरमा जानको उपदेश देने लगा छैन वहाँ एक मनुष्य था जिसका दहिना हाय सूख गया था। अध्यापक छैन फरीशी लोग उसमें दूषण ठहरानेकी लिये उसे ताकते थे कि वह विषादको दिनमा चंगा करेगा कि नहीं। पर वह उनको मनकी बातं जानता था छैन सूखे हायवाले मनुष्यसे कहा उठ बीचमें खड़ा हो। वह उठकी खड़ा हुआ। तब यीशुने
उन्हेंसे कहा में तुमसे एक बात पूछूंगा क्या विषाणुके दिनोंमें भला करना अथवा बुरा करना आकोणीको बचाना

10 अथवा नाश करना उचित है। घर उसने उन सभापर चारां घर टूटी गई उस मनुष्यसे कहा अपना हाथ बढ़ा। उसने ऐसा किया घर उसका हाथ फिर टूटरेकी।

11 नाईं भला चंगा हो गया। पर वे बड़े घोड़ेसे भर गये। घर आपसमें बाले हम यीशुके क्या करें।

12 उन दिनोंमें वह प्राथणा करनेकी पत्ते पत्र गया घर

13 ईश्वरसे प्राथणा करनेकी सारी रात बिताई। जब बीमार हुआ तब उसने अपने शिष्योंके अपने पास बुलाके उन-मिंसे बारह जनांको चुना जिनका नाम उसने प्रेतित भी

14 घरा। अथवा शिमानको जिसका नाम उसने पिता भी

15 जो घर फिलिप घर बर्थलमईंको। घर मती घर

16 जो उदयागी कहावत है। घर याकवोंके भाई यिहूदाको

17 जो उदयागी कहावत है। घर याकवोंके भाई यिहूदाको

18 घर घर। उसके संग उतरके घर याकवोंके भाई यिहूदाको

19 घर घर। उसके संग उतरके घर याकवोंके भाई यिहूदाको
तब उसने अपने शिष्योंकी झोर दूरपूर कर कहा घन्य २०
तुम जो दीन हो कींकिंक ईरवा रा तुम हम्हारा है। घन्य २१
तुम जो झब भूखे हो कींकिंक तुम तुम किये जाओगे।
घन्य तुम जो झब रोते हो कींकिंक तुम हंसोगे। घन्य २२
तुम हो जब मणुष तुमसे बैर करें झोर जब थे मणुषको
पुराको लिये तुमहे ज्लग करें झोर तुमहारी निंदा करें
झोर तुमहारा नाम दुखुसा दूर करे। उस दिन झान-
२३
न्दित हो झोर उल्ले कींकिंक देखो तुम स्वर्गमें बहुत
फल पाओगे। उनको पितरांणे भविष्यद्वितिकारोंसे वैसाही
किया। परन्तु हाय तुम जो धनवान हो कींकिंक तुम २४
झपनी शांति पा चुके हो। हाय तुम जो भरपूर हो २५
कींकिंक तुम भूखे हो। हाय तुम हो कींकिंक तुम
झोर करोगे झोर राजोगे। हाय तुम लोग २६
जब सब मणुष तुमहारे विषयमें भला कहे। उनके
पितरांणे फूटे भविष्यद्वितिकारोंसे वैसाही किया।
झोर भी में तुमहीसे जो सुनते हो कहता हूं कि अपने २७
श्रवण्यका प्यार करो। जो तुमसे बैर करें उससे हलाई
करें। जो तुमहे साप देवं उनको श्राशी देखो झोर २८
जो तुमहारा अयमान करें उनको लिये प्रायरिया करो। जो २९
तुमहे एक गालपर मारे उसकी झोर दूसरा भी फेर दे
झोर। जो तरा दाहर छीन लेव उसका अंगा भी लेनेसे
मत बजे। जो झीर्दें तुमसे मांगे उसको दे झीर हो जा तरी ३०
बस्तु छीन लेव उससे फेर मत मांग। झीर जैसा तुम ३१
चाहते हो कि मणुष तुमसे करें तुम भी उससे वैसाही
करे। जो तुम उससे प्रेम करे जो तुमसे प्रेम करते हैं ३२
ते तुम्हारी क्या बड़रे क्यांकि पापी लोग भी अपने प्रेम
करनेहारसि प्रेम करते हैं। श्रीर जो तुम उनसे भलाई
करा जो तुमसे भलाई करते हैं ते भलाई क्या बड़रे
क्यांकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि देशा जिससे फिर पानेकि जाणा रखते हैं। ते
चूँकि पापी लोग भी अपने प्रेम
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। श्रीर जो तुम उन्हें
चूँकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं।
देखता है किंगार झपने भाईसे कह सकता है कि हे भाई राहिये में यह तिनका जो तेरे नेममें है निकालने हे कपट पहिले झपने नेमसे जट्टा निकाल दे तब शीर तिनका तेरे भाईसे नेममें है उसे निकालनेका तू जबली रोटि से टूटै दी जायगा।

कोई झर्का पेड़ नहीं है जा निकालना फल फले ॥४३ शीर कोई निकालना पेड़ नहीं है जा झर्का फल फले।

हर एक पेड़ झपनेरी फलसे पहचाना जाता है किंगार ॥४४ लेकि काबींके पेड़से गूढ़ नहीं टूटते शीर न केटैं भूढ़से दाख टूटते हैं। मला मनुष्य झपने मनके भले ॥४५ मंडासे भली बात निकालता है शीर बुरा मनुष्य झपने मनके बुरे मंडासे बुरी बात निकालता है किंगार जो मनमें भरा है साई सुभा बोलता है।

तुम सुफ़्के है प्रभु है प्रभु किंगार पुकारते है शीर जो ॥४६ में बहता हूं से नहीं करते। जी कोई मेरे पास झाके ॥४७ मेरी बात सुनके उन्हे पालपन करे में तुम्हें बताकर वह किसकी समान है। वह एक मनुष्यके समान है ॥४८ जो घर बनाता था शीर उसने गहरे खोदके पत्थरपर नेव हाली शीर जब बाढ़ झाड़े तब धारा उस घरपर लगी पर उसे हिला न सकी किंगार उसकी नेव पत्थरपर हाली गई। परन्तु जो सुनके पालन न ॥४९ करे से। एक मनुष्यके समान है जिसने मिट्टीपर बिना नेवका पर बनाया जिसपर धारा लगी शीर वह तुरस्त गिर पड़ा शीर उस घरका बड़ा बिनाश हुआ।


१ सातवां पाठ।

१ यीशुका एक शतपतिका दासको छाँगा करना। ११ नावन मदलकी विल्हवाये 
एकका बिलाला। १८ वा तेलका विश्वविद्यालय दसक बेना। २४ यूजीनो के विश्वविद्यालय 
उदयको शास्त्री। ३१ तस वाचको लगायतकी उपयथ। ३५ एक पारिवारको विश्वविद्यालय 
विभाग परािदीने उदयको बातचीत।

१ जब यीशु लोगोंकी अपनी सब बातें सुना चुका तब 
२ खपनाई हुमसे प्रवेश किया। शाेर किसी शतपतिका एक 
३ दास जो उसका प्रयत्न था रोगी हो मरनेकर था। शत- 
पतिने यीशुका चची सुनके यहूदीयानकी कई एक 
प्राचीनान्तो उससे यह बिन्दी करनेकर उस पास मेहसा 
४ कि जाने मेरे दासका छाँगा कोजिये। उन्होंने यीशु पास 
कामके उससे बड़े यद्यव बिन्दी किए शेार कहा छाघ 
५ जिसके लिये यह काम करने से इसके येग्य हैं। क्योंकि 
वह हमारे लोगों प्रेम करता है शेार उसी से सहानका 
ई पर हमारे लिये बनाया। तब यीशु उनके संग गया शेार 
वह घरसे दूर न था कि शतपतिने उस पास मिठानको 
बेड़े के उससे कहा है प्रभु दुःख न उठाये क्योंकि मैं इस 
६ येग्य नहीं कि छाघ मेरे घरसे छाघे। इसलिये मैंने 
अपनेकी आपकी पास जानेकी भी येग्य नहीं समक्षा 
परस्त बचन कहिए ता मेरा सेवक चंगा हो जायगा। 
८ क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूं शेार योद्धा मेरे बजर्मँ हैं 
शेार में एकको कहता हूं जा ता वह जाता है शेार 
दूसरेकी घर ता वह जाता है शेार अपने दासको यह 
९ बर ता वह करता है। यह सुनके यीशुने उस मनुष्यपर
अच्छा किया श्राय सुंह फेरके जो बहुत लग उसके पीछे झाड़ियों ने उन्हें से कहा मांगे कहता हूँ कि मेंने इस्माइली लोगों में भी ऐसा बढ़ा विश्वास नहीं पाया है। श्राय जो लग भी गये उन्होंने जब घर लौटा तब 10 उस रोगी दासकी चंगा पाया।

दूसरे दिन यीशु नाइन नाम एक नगरको जाता था 41 श्राय उसके जन्य शिष्य श्राय बहुतेरी लग उसके संग जाते थे। ज्याही वह नगरके फारसके पास पहुँचा त्याही 42 देखा लग एक मृतकी बाहर ले जाते थे लोग या श्राय वह विष्वास थी श्राय नगरके बहुत लग उसके संग थे। प्रभु उसकी देखके उसपर 43 दया किंद श्राय उससे कहा मत रो। तब उसने निकट 44 शाय के अर्थका शूरा श्राय उठाने लगे बढ़ी हुए श्राय उसने कहा है जवान में तुमसे कहता हूँ उठ। तब मृतक 45 उठ बैठा श्राय बोलने लगा श्राय यीशुने उसे उसकी मांका सेंप दिया। इससे समाप्ता भय हुआ श्राय वे 46 इंश्वरकी स्वाति करके बालि कि हमारे बीचमें बड़ा भविष्यदेवका प्रगत हुआ हैं श्राय कि इंश्वरने अपने लोगोंपर दृष्टि किया है। श्राय उसके विषयमें यह जात सारे 47 बिहारियां में श्राय झापदासके सारे देशमें फैल गईं।

यीशुने शिष्योंने इन सब बातेंके विषयमें याहन्से 48 कहा। तब उसने अपने शिष्योंसे दो जनानों बुलाके 49 यीशु पास यह कहनेकी भेजा कि जो झानवाला था सारे क्या जाणी हैं भयवा हम दूसरकी बात जोहें । उन 20 मनुष्योंने उस पास भ्य कहा यीशु विश्वास देखके देखने
हमें ज्ञापकी पास यह कहनेका भेजा है कि जो आनेवाला या तो का ज्ञापक हैं जयवा हम दूसरेकी बात जाइं । 21 उसी पड़ी यीशु बहुतीं का जा राग का पीड़ा या श्राश्र दुःखे हे चंगा किया श्राश्र बहुतीं श्राश्रीं का 22 नेतृ दिये । श्राश्र उसने उन्हें का उत्तर दिया कि जो बुझ तुमने देखा श्राश्र सुना है तो जाके योहनसे कहा कि ज्ञाने देखते हैं लंगड़े चलते हैं कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं बाहरे उनते हैं मृत्यु जिलाये जाते हैं श्राश्र कंगाले श्राश्रीं 23 सुसमाचार सुनाया जाता है । श्राश्र जो कोई मेरे विश्वय- मे ठाकर न खावे तो धन्य है । 24 जब योहनकी दूत लाग चले गये तब यीशु योहनकी विशष्यमें लागिंसे कहने लगा तुम जंगलमें का देखनेकी 25 निकले का पवनसे हिलते हुए नरकरक । फिर तुम क्या देखनेकी निकले क्या सूचम बस्त पभिने हुए मनुष्य- का । देखा जो भड़की बस्त पहिनते श्राश्र मुखसे रहते 26 हैं सो राजभवनांसे हैं । फिर तुम क्या देखनेकी निकले क्या महिष्यत्वक श्राश्री । हां में तुमसे कहता हूं एक मनुष्यका 27 जो महिष्यत्वक भी ज्ञापक है । यह वही है जिनके विशष्यमें लिखा है कि देख में घृपने दूतको तेरे ज्ञाने 28 भेजता हूं जो तेरे झागे तेरा पत्थ बनावेगा । में तुमसे कहता हूं कि जा स्वयंसे जन्मे है उममें योहन वपतीस- मा देखेहरे से बड़ा महिष्यत्वका कोई नहीं है परन्तु जो 29 इंस्वरके राज्यमें जाति ज्ञाता है सो उससे बड़ा है । श्राश्र सब लोगोंसे जिन्होंने सुना श्राश्र कर उगाहनेहरुने यह- 30 हनसे वपत्तसमा लेके ईंस्वरकी निर्देश ठहराया । परन्तु
फरीशियाँ शीर ब्यवस्थापकों ने उससे बपतिस्मा न लेकि इंशवरके भामिरायों को शपने विषयमें टाल दिया।

तब प्रभुरी कहा भी इस समयले लोगों को इस्मा ३५ लेकि किसी देंखी वे किसों समान हैं। वे बालकों समान ३२ लेकि जा बाजारमें बीठे एक दूसरी बुकार्के कहते हैं हमने तुम्हारे लिये बांसली बजाई शीर तुम न नाचि हमने तुम्हारे लिये बिलाप किया शीर तुम न रोय।

क्योंकि यहाँ बपतिस्मा देवनेहारा न रौठी खाता न इस दाख रस पीता खाया है शीर तुम कहते हो उसे भूत लगा है। मनुष्यका पुत्र खाता शीर पीता खाया है इस शीर तुम कहते हो देखा पत्र शीर मदाम मनुष्य कर चगाहनेहारं शीर पापियांबा निम्ब। परन्तु श्रान इस शपने सब समानसंग निर्दाश ठहराया गया है।

फरीशियांसंसे एकने योशुसे बिन्ती किंदे कि मेरे संग इसे भाजन कीजिये शीर वह फरीशिके घरमें जाके भाजनपर बैठा। शीर देखा उस नगरकी एक स्त्री जो पापिनी थी इस जब उसने जाना कि वह फरीशिके घरमें भाजनपर बैठा है तब उदाले पत्थरके पारमें सुगध तेल लाईं। शीर इस पीछे उसके पांवों पास खड़ी हो। रोते रोते उसके चर-शिया आस्फलिंगे मिंगाने लगी शीर पापने सिरकेबालींसे पोंडा शीर उसके पांव चूमके उनपर सुगध तेल मला।

यह देखके फरीशी जिसने योशुका बुलाया था शपने इस मनमें कहने लगा यह यदि भविष्यद्वाता होता तो जानता कि यह स्त्री जो उसको बुलूती है कौन शीर कैसी है क्योंकि वह पापिनी है। योशुसे उसका उत्तर दिया कि यह ४०
शिमान में तुमसे कुछ कहा चाहता हूँ. वह बोला है
81 गुरु कहिये। किसी महाजनकी दो झूठी थे एक पाँच सैा
82 सूका धारता या श्रीर दूसरा पचास। जब कि भर देनेका
उन्हींके पास कुछ न था उसने देनेकी श्रमा किया सा
83 कहिये उनमेंसे बीड़ उसकी आधिक प्यार करेगा। शिमा-
नाने उतर दिया मैं समभता हूँ कि वह जिसका उसने
आधिक श्रमा किया। यीशु उससे कहा तूने ठीक विचार
88 किया है। श्रीर स्तीकी श्रीर फिरके उसने शिमानसे
कहा तू इस स्तीकी देखता है। मैं तेरे घरमें आया तूने
मेरे पांवांपर जल नहीं दिया परन्तु इसने मेरे चरणोंका
आंसूचोंसे भिंगाया श्रीर अपने सिरके बालोंसे पोंछा
89 हैं। तूने मेरा चूमा नहीं लिया परन्तु यह जबसे में
86 धाया तबसे मेरे पांवांका चूम रही है। तूने मेरे सिरपर
तेल नहीं लगाया परन्तु इसने मेरे पांवांपर सुगन्ध तेल
90 मला है। इसलिये मैं तुफसे कहता हूँ कि उसके पाप जो
बहुत हैं श्रमा किये गये हैं। कि उसने तो बहुत प्रेम
किया है परन्तु जिसका घोडा श्रमा किया जाता है वह
88 घोडा प्रेम करता है। श्रीर उसने स्तीसे कहा तेरे पाप
98 श्रमा किये गये हैं। तब जो लोग उसके संग भोजनपर
बैठे थे सा अपने अपने मनमें कहने लगे यह कैन है जो
90 पापोंके भी श्रमा करता है। परन्तु उसने स्तीसे कहा
तेरे बिद्वासने तुफे बचाया है कुशलसे चली जा।

8 जाठवान पच्चै।
9 बीमूका मगर नगराँ खिरन। 8 श्रीर चोनेबरेरका दूष्णाल। 9 दूष्णानीसे
हस्ते करनेका कारब श्रीर दुब दूष्णालका घरै। 1१ दीपकका दूष्णाल श्रीर
इस पीछे यीशु नगर नगर श्रीर गांव गांव उपदेश करता हुआ श्रीर इंश्वरके राज्यका सुसमाचार मुनाता हुआ फिरा किया। श्रीर बारहाँ शिष्य उसके संग थे श्रीर जितनी स्तिथियां भी जो दुःख भूतांसे श्रीर रागांसे चंगी किंई गई थीं अर्थात मरियम जी मजदूरींनी कहावती है जिसमें सात भूत निनक गये थे। श्रीर हरीरदेश भंडारी क्रमके स्त्री योहाना श्रीर सेवाना श्रीर बहुतसे श्रीर स्तिथियां। ये ता तर्क नी सम्पत्तिसे उसकी देवा करती थीं।

जब बड़ी भीड़ एकदृश होती थी श्रीर नगर नगरके लोग उस पास आते थे तब उसने दृष्ट्यन्तमें कहा। एक बानेहारा तपस्या बीजबानेकी निकला। बीज बानेमें कुछ मार्गकी श्रीर गिरा श्रीर पांडांसे रांगा गया श्रीर ब्राह्मणकी पंडित्योंसे उस से चुग लिया। कुछ पत्त्यरपर गिरा श्रीर उपजा परतु तरावर न पानिसे सूख गया। कुछ कांतिन्द्र बीचमें गिरा श्रीर कांतिन्द्र एक संग बड़के उसकी दबा दाला। परतु कुछ जबकी भूमिपर गिरा श्रीर उपजा श्रीर सौ फल फला। यह बातं कहके उसने उंचे शब्दसे कहा जिसकी सुननेकी ज्ञान हैं सो सुने।

तब उसने शिष्योंने उससे पूछा इस दृष्ट्यन्तका अर्थ करता है। उसने कहा तुमकी इंश्वरके राज्यके भेद जाननेसे । श्रीर आधिकार दिया गया है परलोक श्रीर लोगांसे दृष्ट्यन्तोंमें बात होती हैं इसलिए कि वे देखते हुए न देखें।
91. गीत सुनते हुए न बुझे। इस दुःखान्तका अर्थ यह है।
92. गीत तो, दीपरका बचन है। मार्गकी सीरके वे हैं जो सुनते हैं तब चैतन्य स्वीकृति उनके मनमंत्रि से बचन छीन लेता है ऐसा न हो। कि वे विश्वास करके चार चार पारें।
93. पत्थरपरके वे हैं कि जब सुनते हैं तब अनान्दसे बचनके यहां करते हैं परन्तु उनके जड़ न बंधनसे वे घी बेलीं विश्वास करते हैं गीत परिभाषा के समयमें बहुक जाते हैं।
94. जो कांटके बीचमें गिरा सा वे हैं जो सुनते हैं पर भीनी चिन्ता गीत धन गीत जीवनके सुख बिलाससे दबते दबते दबते।
95. दबाये जाते गीत पल्ली वल नहीं फलते हैं। परन्तु अच्छी भूमिमंत्रका बीज वे हैं जो बचन सुनके भले गीत उत्तम मनमंत्रि रहते हैं गीत धीरजसे फल फलते हैं।
96. बाई मनुष्य दीपकका बारके बंटनसे नहीं ढांपता गीत न खाटके नीचे रखता है परन्तु दीपरके रखता है।
97. है कि जो भीतर गीति सा उनकी बेटी देखें। कुछ गुम नहीं है जो प्रगत न होगा गीत न कुछ छिपा है जो।
98. जाना न जायगा गीत ग्रसिदु न होगा। इसलिये सचेत रहें तुम किस रोमसे सुनते है। क्या कि जो बाई रखता है उसकी गीत दिया जायगा परन्तु जो कांटें नहीं रखता है उससे जो कुछ वह समक्षता कि मेरे पास है सा भी ले लिया जायगा।
99. यीनुकी माता गीत उसके भाई उस पास जाये परन्तु 10. भीड़के कारण उससे मेंट नहीं कर सके। गीत जोतना के उससे कह दिया कि वापसी माता गीत वापसी भाई 11. बाहर खड़े हुए गीत पकों देखने चाहते हैं। उसने उनकी
उतर दिया कि मेरी माता कंद ने मेरे बहाई ये ही लोग.
हैं जो ईंधनवाला बचन सुनके पालन करते हैं।
एक दिन वह शाहर उसके शिष्य नावपर चढ़े शाहर २२
उसने उनसे कहा कि ज्ञान हम चीलके उस पार चलें।
सो उन्होंने साह दिये। ज्ञों वे जाते थे त्यों वह सो गया २३
शाहर चीलपर चांदी उटी शाहर उनकी नाव भर जाने
लगी शाहर वे जाठिम में थे। तब उन्होंने उस पास झाके २४
उसे जगाके कहा है गरू है गरू हम नष्ट होते हैं। तब
उसने उठके बयारके शाहर जलके चिल्लियों डांगा शाहर
वे थम गये शाहर नीया हो गया। शाहर उसने उनसे कहा २५
तुम्हारा विभवास कहां है। परन्तु वे मंगमान शाहर अच्छे
मिलत हो। शाहरमें बीले यह चील है जो बयार शाहर चाल-
का भी चाँद देता है शाहर वे उसकी चाँदा मानते हैं।
वे गदरीयों के तेशमें जी गालोलकी साथी उस पार है २६
पहुंचे। जब यीशु तेरपर उतरा तब नगरका एक मनुष्य २७
उससे ज्ञान मिला जिसका बहुत दिनांसे मृत लगे वे शाहर
जो बस्त नहीं पहिनता न घरमें रहता था परन्तु कबर-
स्थानमें रहता था। वह यीशुका देखके चिल्लाया शाहर २८
उसकी दंडवत कर बड़े शब्दसे कहा है यीशु सम्बंधित
ईशःवरके पुष्कर चापसे मुक्त क्या काम। में चापसे बिन्दी
करता हूँ किसे मुझे पोड़ा न दीजिये। किंतु यीशुके २९
भ्रष्ट मृतको उस मनुष्यसे निकलनीका चाँदा दिये थी।
उस मृतके बहुत बार उसे पकड़ा था शाहर वह जंगीरीं
शाहर बेड़ियोंसे बंधा हुआ रखा जाता था परन्तु बंधनांकी
ताड़ देता था शाहर मृत उसे जंगलमें खदेड़ता था। यीशुके ३०
उससे पूछते तरा नाम क्या है। उसने कहा सेना। क्यांकि
31 भूत मूल उससे पैठ गये थे। शीर उन्होंने उससे बिन्दी किए कि हमें अच्छी कुंडमें जाननी खाना न दीजिये।
32 वहां भूत सूजरांका जो पड़ापर चरते थे एक कुंड था।
सो उन्होंने उससे बिन्दी किए कि हमें उन्होंने पैठने
33 दीजिये शीर उससे उन्हें जाने दिया। तब भूत उस मुन्यसे निकलके सूजरांमें पैठ शीर वह कुंड कड़ाँक-
34 परसे कौमलमें दौड़ गया शीर हुब मरा। यह जो हुआ था। सो देखके चरवाहे भागे शीर जाके नगरमें शीर
35 गांवमें उसका समाचार कहा। शीर लोग यह जो हुआ था। देखनेका बाहर निकले शीर यीशु पास आके जिस मुन्यसे भूत निकले थे उसका यीशुके सुपरांके पास।
36 वस्तु शीर शीर सुबुद्ध बैठे हुए पाके हर गये। जिन लेरियां देख था। उन्होंने उससे कह दिया कि वह भूत-
37 यस्त मुन्य क्षणक चंगा हो गया था। तब गदरांके शीर पासके सारे लेरिया। यीशुसे बिन्दी किए कि हमारे यहांसे चले जायें, क्यांकि उन्हें बढ़ा हर लगा। सो वह
38 नावपर चढ़के लौट गया। जिस मुन्यसे भूत निकले थे।
उसने उससे बिन्दी किए कि मनुष्के संग रहूं पर।
39 यीशुने उसे बिदा किया। शीर कहा अपनी घरको फिर जा शीर कह दे कि इंश्वरने तरीं लिये कैसे बड़े काम किये हैं। उसने जाके सारे नगरमें प्रचार किया कि यीशुने। उसके लिये कैसे बड़े काम किये थे।
40 जब यीशु लौट गया तब लेरिया उसे यहाँ किया।
41 क्यांकि वे सब उसकी बात जाहते थे। शीर देखा यांदें
नाम एक मनुष्य जो सभाका भाष्यका भी था चाहा जीवर यीशुके पांवा पड़के उससे बिनी बिच था कि वह उसके घर जाय। क्योंकि उसकी बारह बरसकी एक-४२ लीती बेटी थी जीर वह मरनेपर थी। जब यीशु जाता था तब भीड़ उसे दबाती थी।

जीर एक स्त्री जिसे बारह बरसाते लोहे बहनेका ४२ राग था जो अपनी सारी जीविका बैठोंके पीछे उठाके किसीसे चंगी न हो सकी। तिसने पीसेरे चा उसके ४४ बस्तके झांछकी बूझा जीर उसके लोहे बहना तुरंत परम गया। यीशुने कहा किसने मुखे बूझा। जब ४५ सब मुकर गये तब पिताने जीर उसके संगीयोंके कहा है गुरु लोग खापाय प्रेष लगाते जीर खापकी दबाते हैं जीर खाप कहते हैं किसने मुखे बूझा। यीशुने ४६ कहा किसीने मुखे बूझा क्योंकि में जानता हूं कि मुखदर्मीसे खंभित निकलती है। जब स्त्रीने देखा कि मैं छिपी ४७ नहीं हूं तब कांपते हुई चाई जीर उसे दंडवत कर सब कांगीक साथे उसका बताया कि उसने किस बारके से उसकी बूझा था जीर क्योंकि तुरंत चंगी हुई थी। उसने उससे कहा है पुची दाहुस कर तेरे विभासने ४८ तुफी चंगा किया है कुशलसे चली जा।

वह बोलताही था कि किसीने सभाका भाष्यके घरसे ४५ झा उससे कहा खापकी बेटी मर गई है गुसकी दुख न दीजिये। यीशुने यह मुनके उसकी उत्तर दिया कि मत ५० हर लेवल विभास कर ते वह चंगी हो जायगी। घरसे ५१ झा के उसने पितार जीर याबूज जीर यह हन जीर कन्याके
माता पिताका छोड़ श्रीर किसीको भीतर जाने न धेर दिया। सब लोग कन्याको लिये राते श्रीर बारी पोरते थे परन्तु उसने कहा मत राश्रो वह मरी नहीं मच पर सैती है। वे यह जानके कि मर गई है उसका धेर उपहास करने लगे। परन्तु उसने समेंको बाहर निकाला श्रीर कन्याको हाथ पकड़के उंचे शब्दों धेर कहा है कन्या उठ। तब उसका प्राण फिर ठीक श्रीर वह तुरंत उठी श्रीर उसने झाड़ा किंदे कि उसे धेर कुछ खानेको दिया जाय। उसके माता पिता विस्मित हुए पर उसने उनको झाड़ा दिए कि यह जा हुआ है जिससे मत कहा।

6 नवां पदने।

1 योग्यका बारह प्रेतिको भेजना । ७ उसके विषयमें इरोटिको विषय। ९ योग्यका प्रेतिको समाचार सुनना और लेगीको उपदेश देना । १२ योग्यका विषयमें लेगीको श्रीर प्रेतिका विषयका विचार श्रीर उसको प्राप्ती मृत्युका भविष्यवाणी कहना। २५ श्रीर शोधने विधि। ३५ योग्यका शोधने श्रीर कार्यों सोड़को दिशावर्तन देना। ३५ एक मृत्युका बाह्यको धेर। ४४ योग्यका श्रीर भविष्यवाणी कहना। ४४ नुस इन्द्रेको उपदेश । ४५ दुर्गे उपवेशको बार्त्तको नियोजन। ५४ एक विशेष उपवेशको वाल्मीकीको श्रीर बिन्ने उसकी यह भाषा न किया योग्यका नकल। ५४ योग्यका इन्द्रेको विषयमें योग्यका धेर।

7 योग्यते झापने बारह श्रीर्योंका एकटू बुलाके उनके सब भूलीको निकालनेको श्रीर रोगियोंको चांगा करनेका सामर्थ्य श्रीर अधिकार दिया। श्रीर उन्हें ईश्वरके राज्यको कथा सुनने श्रीर रोगियोंको चांगा करनेका भेजा। श्रीर उसने उनसे कहा मार्गके लिये कुछ मत लेको न लाठी न फ्रीको न राती न हैन्ये श्रीर दी दो
ब्रानी तुम्हारे पास न हैवें। जिस किसी घरमें तुम प्रवेश करें। उसीमें रहा मणिव वहीं निकल जाओ। जो काइं तम्हें यह न करें उसे नगरसे निकालते हुए उनपर साक्षी है। अलिया लिये रुपने पांवें खुल भी काड़ा दाला।
सो वे निकलके सब भाव सुसमाचार सुनाते श्राव लोगों को चंगा करते हुए गांव गांव फिरे।

चैताइका राजा हेराद सब कुछ जो यीशु करता था सुके दुबधामें गई। दीकि अंतिम जी उठा है। श्राव कितने कि एलियाह दिखाई दिया है श्राव चारों जो अगले भविष्यवृत्ताचोंसे एक जी उठा है। श्राव हेरादने कहा योहानका ता में सिर करबाया फर्या यह बीन है जिसके विषयमें में ऐसी बात सुनता हूँ। श्राव उसने उसे देखने चाहा।

प्रेमिताने फिर आके जो कुछ उनहें दिया था से यीशुको सुनाया। श्राव वह उन्हें संग लेके बैतसीता नाम एक नगरके किसी जंगली स्थानमें एकांतमें गया। लोग ११ यह जानने उसके पीछे ही लिये श्राव उसने उन्हें यह जार इंश्वरके राज्यके विषयमें उनसे बातें किंदे श्राव जी- राहनौं चंगा दिये जानेका प्रयोजन था उन्हें चंगा दिया।

जब दिन दलने लगा तब बारह शिखलने जा उससे १२ कहा लोगोंको बिदा कीजिये कि वे चारों श्रावको बस्तियों श्राव गावें जाके रिखें श्राव भोजन पावें कींकि हम यहाँ जंगली स्थानमें हैं। उससे उससे कहा तुम उन्हें १३ खानेका देखा। वे बाळ हमारे पास पांच रातियां श्राव दो मजबुरियोंते अधिक कुछ नहीं है पर हां हम जाके
२४ इन सब लोगों के लिये भोजन मेला लेवं तो होয। बे लोग पाँच सहस्रपुरुषों छानबकल थे, उसने अपने शिष्यों-से कहा उन्हें प्रचार प्रचार करने पांडति पांडति बैठाया।

२५ उन्होंने ऐसा किया चौर सभीं को बैठाया। तब उसने उन पाँच रातियों चौर दो मदालयें की स्वर्गीयी चौर देख के उनके उपर रााँचीस दिये चौर उन्हें तोड़के

२६ शिष्यों का दिया कि लोगों के आगे रखने। तो सब खाके तृप्त हुए चौर जो रुक कर उन्हें सब चस रहे उनकी बारह ट्यूकी उठाई गई।

२७ जब वह एकांतमें प्रार्थना करता था चौर शिष्य लोग उसके संग थे तब उसने उनसे पूछा कि लोग क्या

२८ कहते हैं में कीन हूं। उन्होंने उत्तर दिया कि वे श्रापका योहन बपतिस्मा टैनेहारा कहते हैं परलु फितने एलिया यह कहते हैं। चौर फितनेकहते हैं कि जगलभवियद्वुक्ता-

२९ चांदमे में चाई जो उठा है। उसने उसके कहा तुम क्या

३० कहते हैं में कीन हूं। पितारने उत्तर दिया कि इंचरका

३१ अभिषिक्त जन। तब उसने उन्हें दूढ़तासे बाज़ा दिये

३२ कि यह नात जिसी से मत कहा। चौर उसने कहा मनुष्यके प्रकोप आवश्य है कि बहुत दुःख उठावे चौर प्राचीनों चौर प्रधान यजकों चौर श्रापकांसे तुच्च किया जाय चौर मार डाला जाय चौर तीसरे दिन जी

३३ उसने सभीं कहा यदि कोई मेरे पीछे जाने चाहे

३४ उठाके मेरे पीछे जावे। क्योंकि जो कोई अपना प्राच
बचाने चाहे से उसे खाओगा परन्तु जो कोई मेरे लिये छपना प्राप्त खाओगे से उसे बचाओगा। जो मनुष्य सारे २५ जगतकी प्राप्त करे शाहर छपनीसे नाश करे छपवा गंवाये उसकी क्या लाभ होगा। जो कोई मुझसे शाहर २५ मेरी बातांसे लजावे मनुष्यका पुच जब छपने शाहर पिताके शाहर पवित्र दूतांके एश्रयिमें खाओगा तब उससे लजाओगा। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो यहां २५ खड़े हैं उनमेंसे कोई कोई हैं कि जबली इंश्वरका राज्य न देखें तबली मृत्युका स्वाद न चीखेंगे।

इन बातांसे दिन ज्ञात एकके पीछे यीशु पितार शाहर २८ यहां शाहर याकूबकी संग ले प्रार्थना करनेको पवेतपर चढ़ गया। जब वह प्रार्थना करता था तब उसके मुंहका २५ रूप शाहरही हो गया शाहर उसका बस्त उजला हुआ शाहर चमकने लगा। शाहर देखा दी मनुष्य एश्रीत मुसा ३० शाहर एलियाख उसकी संग बात करते थे। वे तेजामय ३१ दिखाई दिये शाहर उसकी मृत्युकी जिससे वह यिशुशलीम- में पूरी करनेपर था बात करते थे। पितार शाहर उसके ३२ संगियांकी चांसें नीदसे भरी थी परन्तु वे जागते रहे शाहर उसका एश्रयिमें शाहर उन दो मनुष्यांका शाहर उसकी संग खड़े थे देखा। जब वे उसके पाससे जाने लगे तब पितारने ३३ यीशुसे कहा है गुरु हमारा यहां रहना अच्छा है। हम तीन हरे बनावे एक ज्ञापके लिये एक मुसाके लिये शाहर एक एलियाखों लिये। वह नहीं जानता था कि क्या कहता था। उसकी यह कहते हुए एक मेघने शाहर उन्हें ३४ छा लिया शाहर जब उन दोनोंसे उस मेघमें प्रवेश किया।
34 तब वे दर गये । चौर उस मेघसे यह शब्द हुआ कि यह इसे मेरा प्रिय पुष्च है उसकी सुना । यह शब्द होने कि पीछे योगुः बकेला पाया गया चौर उन्होंने इसका गुप्त रखा चौर जो देखा था उसकी केवल बात उन दिनों में किसी से न कही ।

35 दूसरे दिन जब वे उस प्रवेश्ते उतरे तब बहुत लोग उससे च्रा मिले । चौर देखा भीड़में एक मनुष्यने पुकारके कहा हे गुरु में आपसे बिन्दी करता हूँ कि भेरे पुजहर दूषित कोई किये किये क्योंकि वह मेरा एकले है ।

36 चौर देखिये एक भूत उसे पकड़ता है चौर वह चांचांच चिल्लाता है चौर भूत उसे ऐसा मरोड़ता कि वह मुंहसे फून बहाता है चौर उसे चूर कर काठिनसे छोड़ता है ।

38 चौर भीते आपके शिष्योंसे बिन्दी बिकी कि उसे निकालें ।

41 परन्तु वे नहीं सके । यीशुने उतर दिया कि हे भविष्यसी चौर हटीले लोगो में कबलों तुम्हारे संग रहूँगा चौर

42 तुम्हारी सहुंग । अपने पुलकर यहां ले या । वह आताही या कि मृत्युने उसे परकरे मरोड़ा परन्तु यीशुने श्रुतु मृत्यु भूतके । डांके लड़केका चंगा किया चौर उसे उसके

45 पिताकी सूंप दिया । तब सब लोग ईश्वरकी महाशक्ति-से अच्छभत हुए ।

48 जब समस्त लोग सब कामांसे जो यीशुने विदे चांचभा करते थे तब उसने अपने शिष्योंसे कहा तुम इन बातोंको अपने काने में रखा किये किये मनुष्यका पुष्च मनुष्योंके

49 हाथमें पकड़वाया जायगा । परन्तु उन्होंने यह बात न समझी चौर वह उनसे दिली थी कि उन्हें बूढ़ा न पड़े ।
श्यार वे इस बातको विषयमें उससे पूछनेको दरटे थे।
उन्होंनें यह विचार होने लगा कि हमसे बड़ा श्यार ४५
है। यीशुने उनके मनका विचार जानकी एक बालकको ४०
लेके अपने पास खड़ा किया। श्यार उससे कहा जो ४८
कोई जने नामसे इस बालककी यहाँ करे वह सुखी
यहाँ करता है। श्यार जो कोई सुखी यहाँ करे वह
जने भेजनेहारीकी यहाँ करता है। जो तुम सभीमें
आति छोटा है वहीं बड़ा होगा।
तब यीशुने उससे दिया कि हे गुरु हमने किसी ५०
मनुष्यको शांतिके नामसे भूतांको निकालते देखा। श्यार
हमने उसे जना के किंवा यह हमारे संग नहीं चलता है।
यीशुने उससे कहा मत जना के किंवा जो हमारे बिन्दु
नहीं हैं तो हमारी शर्म है।
जब उसके उठाने जानकी दिन पूछने तब उससे ५१
यिष्यश्लीलम जानेको अपना मन ढूँढ़ किया। श्यार ५२
उससे दूतांको अपने शांति ने शांति है। श्यार उन्होंने जानकी उससे
के लिये तैयारी करनेको शामिरानियांको एक बाबसे
प्रवेश किया। परन्तु उन लंगाने उसे यहाँ न किया ५३
के किंवा यह यिष्यश्लीलमकी श्यार जानेका मुंह किये था।
यह देखके उसके शिष्य याकूब श्यार यीशु बोले है ५४
प्रभु शांति को इच्छा होय तो हम शांति जानाके गिरने
श्यार उन्हे नाश करनेकी शांति देवी जैसा निम्ना
भी किया। परन्तु उसने पीछे फिरके उन्हें डांटके कहा ५५
क्या तुम नहीं जानते हा तुम कैसे शांतिके है।
मनुष्यका पुछ मनुष्योंके प्राण नाथ करनेका नहीं परन्तु ५६
बचानेकी आया है । तब वे दूसरे गांवकर चले गये।

जब वे मार्गमें जाते पे तब किसी मनुष्यने यीशुसे कहा है प्रभु जहां जहां जाय जाये तहां में सापको पीढ़ी चलूंगा।

यीशुने उससे कहा लेएँ निश्चित वे मार्ग में उसकी आखाशी पीढ़ीकर बसे हैं परन्तु मनुष्यके पुत्रको सिर रखनेका स्वान नहीं है। उसने दूसरे कहा मेरे पीढ़ी आ । उसने कहा है प्रभु मुझे पहिले जाके अपने पिताको गाड़ने दीजिये। यीशुने उससे कहा मृत्युको अपने मृत्युकों को गाड़ने दे परन्तु तू जाके इंश्वरके राज्यको कथा सुना।

दूसरे भी कहा है प्रभु में जाके पीढ़ी चलूंगा परन्तु पहिले मुझे अपने परके लगासे विदा होने दीजिये।

यीशुने उससे कहा अपना हाथ हलपर रखके जो कोई पीढ़े से इंश्वरके राज्यके याग्य नहीं है।

१० दूसरां पढ़े।

९ यीशुका सत्तर ग्रंथोंको ठहराके भेजा । १३ कर्तार एक नगरोंके बाबावासपर बलहाना । १७ सत्तर ग्रंथोंके संग यीशुको दांतहोत श्रीर उसका अपने पिताका धन्य मानना । २४ ब्राह्मणपरिवारका उत्तर देना श्रीर दयालुता गृहमेरीनीका बुढाना । ३५ सत्तर श्रीर दिनमेरी यीशुकी दांतहोत ।

२ इसके पीढ़े प्रभुपने सत्तर श्रीर ग्रंथोंको भी ठहराके उन्हें दो दो करके हर एक नगर श्रीर स्वानको जहां वह जाप जाने पर अपने झांसे भेजा । श्रीर उसने उससे कहा करनी बहुत है परन्तु बालिहार चढ़े हैं इसलिये करनीकी स्वामीसे विन्ती करा कि वह अपनी कारनामों बालिहारपर भेजे । जात्रा देखा में तुम्हें मैसेरीकी नाई ।

४ हुंडारोंके बीचमें भेजता हूं । न चाली न मोर्रो न जूते
ले जाओं सी तार मार्ग में किसी का नमस्कार मत करो। जिस किसी घर में तुम प्रवेश करो पहले कहा इस घर का कल्याण है। यदि वहाँ कैसी कल्याण के योग्य हो तो तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा नहीं तो तुम्हारे पास फिर आवेगा। जो कुछ उन्हें यहाँ मिले से अप्पे हैं उसी घर में रहे क्योंकि बाँझार ज्ञपनी बानके योग्य हैं। घर घर मत फिरो। जिस किसी नगर में तुम प्रवेश करो तार लोग तुम्हें यहण करें वहाँ जो कुछ तुम्हारे बागे रखा जाय सो खाओ। तार उससे ही रागियां का भंग करो तार लगाने से कहा कि ईश्वर का राज्य तुम्हारे निकट पहुँचा है। परन्तु जिस किसी नगर में प्रवेश करो तार लोग तुम्हें यहण न करें उसकी सड़कें धारा कोरे। तुम्हारी नगर की धूल भी जो हमें जाने है तुम्हारे बागे लांदे हैं तैमी यह जाने कि ईश्वर का राज्य तुम्हारे निकट पहुँचा है। में तुमसे कहता हूँ कि उस दिन में उस नगर की दशा से 112 सदृश मका दशा सहने योग्य होगी।

हाय तू सी राजाजीन। हाय तू बैलसेदा। जो भाष्य यह 13 कर्म तुम्हें किये गये हैं तो यदि सीर सीर सीदारमें फिये जाते है बहुत दिन बोते होते कि वे टर पहिने राखैं बैंटे पश्चाताप करते। परन्तु बिचारके दिन में 14 तुम्हारी दशा से सीर सीर सीदारमें दशा सहने योग्य होगी। सीर है कफनाहुम जो स्वर्गलं ऊंचा किया 15 गया है तू नरकलों नीचा किया जायगा। जो तुम्हारी 16 मुन्ता हैं सों मेरी मुन्ता हैं सीर जो तुमें भूख जानता
हैं सो मुम्बे तुच्छ जानता है श्रीर जो मुम्बे तुच्छ जानता हैं सो मेरे भजनहरिका तुच्छ जानता है।
10 तब वे सतर शिश्न श्रीनान्दसे फिर शाही बाले है
18 प्रभु शाही नामसे भूत भी हमारे बशर्म ये हैं। उससे उनसे कहा मैं ने शैतानका विजलीका नाई स्वर्गसे गिरते
15 देखा। देखा मैं तुम्हें सांपों श्रीर विच्छूणका रौंदनेबा
श्रीर श्रुके सारे पराश्रमपर सामथे देता हूँ श्रीर
20 किसी बस्तुसे तुम्हें कुछ हानि न होगी। तौरीमे इसमे
श्रीनान्द मत करे कि भूत तुम्हारे बशर्म हैं परतु इसीमे
श्रीनान्द करे कि तुम्हारे नाम स्वर्गमें लिखे हुए हैं।
21 उसी घड़ी यीशु श्रीनात्मामे श्रीनान्दत हुआ श्रीर कहा है
पिता स्वर्ग श्रीर पृथिवीके प्रभु में तेरा पन्य मानता हूँ
कि तूँ इन बातोंकी श्रीवानें श्रीर बुद्धिमानते गुण
रखा हैं श्रीर उन्हें बालकोंपर प्रगट किया है। हाँ है
22 पिता क्षणके तेरी दूषितमें यही रच्छा लगा। मेरे पिताने
सुख सा कुछ जंजांपा है श्रीर मुच कैरान है सा कैराई
नहीं जानता केवल पिता श्रीर पिता कैरान है सा कैराई
नहीं जानता केवल मुच श्रीर वही जिसपर मुच उसे प्रगट
23 किया चाहे। तब उससे अपने श्रीपांकी श्रीर फिरके
निरालमें कहा जो तुम देखते है उसे जो नंच देखे तो
24 धन्य हैं। क्षणकी में तुमसे कहता हूँ कि जो तुम देखते
है उसकी बहुते भविष्यद्वारों श्रीर राजा कानें
देखने चाहा पर न देखा श्रीर जो तुम सुनते हो,
उसकी सुनने चाहा पर न सुना।
25 देखा किसी व्यवस्थापकों उठकेउसको परीष्ठाकरने-
की कहा है गुरु भौन काम करनेसे में झन्नत जीवनका आधिकारी होंगा। उसने उससे कहा व्यवस्था में लिखा 38 है। तू जैसे पढ़ता है। उसने उत्तर दिया कि तू परमहृदय- 29 ब्यवहार अपने इश्वर अपने सारे मनसे श्रीर अपने सारे प्रायक्षि श्रीर अपनी सारी शक्ति श्रीर अपनी सारी बुद्धि प्रेम कर श्रीर अपने पढ़ासी श्रीर अपने समान प्रेम कर। यीशुने उससे कहा तूने ठीक उत्तर दिया है। यह 28 कर ता तू जीविताः। परन्तु उसने अपने तद्दृश धर्मी 29 ठहरानेकी इच्छा कर यीशुसे कहा मेरा पढ़ासी कौन है। यीशुने उत्तर दिया कि एक मनुष्य यिश्वशलीमसे यिरी- 30 हाकी जाते हुए डाकूशंकों हाथमें पड़ा जिन्दोसने उसके बस्तं उतार लिये श्रीर उसे धावल कर अधमूशा छाड़के चले गये। संयोगसे किंदेय याजक उस मायख़े जाता था 31 परन्तु उसे देखके सामसेसे हाकी चला गया। इसी 32 रीति से एक लेखी भी जब उस स्थानपर पहुँच तब श्राके उसे देखा श्रीर सामसेसे हाकी चला गया। परन्तु 33 एक शीरसिानी प्रथिक उस स्थानपर श्राया श्रीर उसे देखके देखा कि। श्राय उस पास जाके उसके घावेंदर 34 तेल श्राय दाख रस ढालके पट्टियां बांधी श्राय उसे झपनेही पशुपर बेड़के सरायमें लाके उसकी राता किड़। बिहान हुए उसने बाहर जा दी सूकी निकालकी मिठि- 35 यारंको दीदेश्राय उससे कहा उस मनुष्यकी सेवा कर श्राय जो कुछ तेरा श्राय लगेगा सो में जब दिर स्वाराङ हवा तब तुफ़े भर देखंगा। सा तूका सम्बन्धता है जो डाकू- 36 झोंके हाथमें पड़ा उसका पढ़ासी इतने तीनःते श्रीर
जब यीशु एक स्थान में प्रार्थना करता था ज्यें उसने
समाप्ति किये त्यां उसके शिष्यों के से एकने उससे कहा
है प्रभु जैसे योहनने अपने शिष्यों की सिखाया तैसे आप
हमें प्रार्थना करने की सिखाये। उसने उनसे कहा जब
तभी प्रार्थना करो तब कहा है हमारे स्वर्गीय पिता
तेरा नाम प्रभु दिया जाय तेरा राज्य आगे तेरी इच्छा
जैसे स्वर्ग में वैसे पुराने पूरी हो। हमारे दिनभरको
रात्रि प्रतिदिन हमें दे। श्रीर हमारे पापोंको छामा कर
क्योंकि हम भी अपने हर एक कृषिको छामा करते हैं। श्रीर हमें परीक्षा में मत डाल परन्तु दुष्पली बचा।

श्रीर उसने उसके कहा तुममें से कैसे हैं कि उसका एक मिट है। श्रीर वह आधी रातको उस पास जाके उससे कहे कि हम मिट सुमंद्रेन रोटी उधार दीजिये।
क्योंकि एक पथिक मेरा मिट सुमंद्र पास आया है। श्रीर उसके आने रखनेको मेरे पास कुछ नहीं है। श्रीर वह भी तरए उत्तर देवे कि मुम्बे टुँक न देना ट्रूक ता द्वार रूप गया है। श्रीर मेरे बालक मेरे संग साथी युज हैं। मैं उठके तुम्हें नहीं दे सकता हूं। मैं तुम्मे कहता हूं जो वह इसलिये नहीं उसे उठके देखा कि उसका मिट है तैयार। उसके लाज छोड़के मांगनेका कारण उठके उसको जितना कुछ आवश्यक हो उतना देगा। श्रीर मैं तुम्मे से कहता हूं कि मांगो ता तुम्मे दिया जायगा ढूंढ़ो। ता तुम पास मेरो बरकरारो ता तुम्मे लिये बेची जायगा। क्योंकि जी।

कई मांगता है उसे मिलता है। श्रीर जो ढूंढ़ता है सो पाता है। श्रीर जो खरीरात है उसके लिये बेची जायगा।
तुममें से कैसे पिता होगा जिससे पुत्र रोटी मांगके का।
वह उसको पत्तर देगा। श्रीर जो वह मछली मांगता ता
क्या वह मछली सम्पत उसको सांप देगा। खयवा जी।
वह ढूंढ़ा मांगे ता क्या वह उसको विच्छ देगा। सो यदि।
तुम बुरे होके अपने लड़कोंको अच्छे दान देने जानते
है। ता जितना अधिक करके वर्गीय पिता उन्हें को
जी उसके मांगते हैं परिच आत्मा देगा।
यीशु एक भूतका जा गुंगा था निकालता था, जब भूत निकल गया तब वह गुंगा बालनेलगा शीर लोगेंगे।

अचान्हा किया। परन्तु उनमें कोई कोई बाल यह ता बालजिबुल नाम भूतका प्रधानकी सहायतासे भूतांका निकालता है। शीरोंने उसकी परीक्षा करनेका उससे जो जाता है उसका राज्य बिगड़ता है तो नाश होता है। शीर यदि शीतानमें भी फूट पड़ी हैं तो उसका राज्य केंद्रकर ठहरेगा। तुम लोग तो कहते हैं कि मैं बालजिबुलकी सहायतासे भूतांका निकालता हूं। पर यदि मैं बालजिबुलकी सहायतासे भूतांका निकालता हूं तो तुम्हारे सलाम जिसकी सहायतासे निकालता लते है। इसलिये वे तुम्हारे न्याय करनेहर शिगें। परन्तु जो मैं ईश्वरकी उंगलिसे भूतांका निकालता हूं तो जयमयम

ईश्वरका राज्य तुम्हारे पास पहुंच चुका है। जब ह्यियार बाधी हुए बलवत्त अपने घरकी रखवाली करता है।

उसकी सम्पत्ति अशुलसे रहती है। परन्तु जब वह जो उससे अधिक बलवत्त है उसपर जा पहुंचकर उसे जीतता है। तब उसके समपूर्ण ह्यियार जिनपर वह भरोसा रखता था छीन लेता शीर उसका लूट बुझा।

द्व मांता है। जो मेरे संग नहीं है सो मेरे बिंदु है शीर जो मेरे संग नहीं बटारता सो बिघराता है।

जब अशुल्त मनुष्यसे निकल जाता है। तब सूखे स्थानोंमें विशाल दुर्दमा फिरता है। परन्तु जब नहीं पाता।
तब कहता है कि में यापने घरमें जहाँसे निकला फिर आऊँगा। चित्तर वह छाके उसे कहा बुधारा सुहारा पाता २५ है। तब वह जाके यापनसे चाप्खा दुर्गृह सत्ता चित्तर भोतंकोिा २८ ले आता है चित्तर वे भीतर पैठके वहां बास करते हैं। चित्तर उस मनुष्यको पिढाला दशा पहिलोसे बुरी होती है।

वह यह वातें कहताही या कि भीड़में किसी स्वीने २९ ऊंचे शब्दसे उससे कहा धन्य वह गर्म जिसने तुफ़ी घारा खिया चित्तर वे स्तन जो तूने पिये। उसने कहा हां पर २८ बेही धन्य हैं जो इंश्वरका बचन सुनके पालन करते हैं।

जब बहुत लोगें को भीड़ एकटू होने लगी तब वह २५ बढ़ाने लगा कि इस समयके लोग दुर्भ हैं। वे चिंता बुझते हैं परन्तु बोहो चिंता उनकोकही नहीं दिया जायगा। उसमें गुनस्त मोहियुद्ध का थिया। जैसा गुनस्त निनियों को लोगें को बिन्ह था बैसाही मनुष्यका दुष्क इस समय-को लोगें को बिन्ह होगा। दक्षिणकी राणी विचारकी ३१ दिनमें इस समयके मनुष्यके संग उठके उनके दहारेगी कोंकी वह सुलदनाका झान झुननको पृथि-बििों झानासे झाड़ें चित्तर देखा यहां एक है जो सुलदनासे भी बड़ा है। निनियों की विचारकी दिनमें इस इ३२ समयके लोगें को संग खड़े हो उन्हें दासी दहारेगी कोंकी उन्हें गुनस्त का उपदेश सुनके पश्चातात खिया चित्तर देखा यहां एक है जो गुनस्तसे भी बड़ा है।

बोहो मनुष्य दीपकको बारके गुमरें जापवा बर्तनके ३४ नीचे नहीं रखता है परन्तु दीर्घका या भीतर चारें चित्तर देखें। शरीरका दीपक आख है इसलिये ३४
जब तेरी आँख निमंत्र है तब तेरा सकल शरीर भी उजागर है। परन्तु जब वह बुरी है तब तेरा शरीर इतना भी उजागर है। सो देख लो कि जो ज्योति तुम्हें इतनी है तो सा संध्याकाल न हों। यदि तेरा सकल शरीर उजागर हो श्रीर उसका कोई छांश संधियारा न हो तो जैसा कि जब दोपहर अपनी चमकसे तुम्हें ज्योति देवी तैसाही वह सब प्रकाशमान होगा।

जब यीशु बात करता था तब किसी फरीशीने उससे बिनती किये कि मेरे यहां भोजन कीजिये श्रीर वह भीतर जाकर भोजनपर बैठा। फरीशिने जब देखा कि उसने भोजनके पालिके नहीं धिया तब छांश भी धिया। प्रभुने उससे कहा श्रीर तुम फरीशी लेग कटरे श्रीर बालको बाहर बाहर छुड़ करते हैं। परन्तु तुम्हारा अन्तर छन्देर श्रीर दुपूरसे भरा हैं। ये निबद्ध ले गो जिसने बाहर-को बनाया क्या उसने भीतरको भी नहीं बनाया। परन्तु भीतरवाली बस्तुओं को दान करो तो देखिये तुम्हारे लिये सब कुछ छुड़ हैं। परन्तु यह तुम फरीशिया तुम नौरीने श्रीर खाकदेका श्रीर सब भांति साग पातका दसवां छांश देते है। परन्तु न्यायका श्रीर इंघरवरे प्रेमपीका उत्तमगण करते हैं। इन्हें करना श्रीर उन्हें न बूढ़ाना वाले!
तब व्यवस्थापकोंसे किसीने उसकी उत्तर दिया कि ५१ है गुरु यह बात कहनेसे चाहने की भी नित्या करते हैं। उसने कहा हाय तुम व्यवस्थापको भी तुम बोधि ५२ जिनका उताना बाँटन है मनुष्यांपर भालते हैं परन्तु तुम चाह उन बोधिलोको झण्डी एक वंशनाथ नहीं बूटे हैं। हाय तुम लोग तुम भविष्यद्वात्री झण्डी कबरें बनाते ५३ हैं जिन्हे तुम्हारेपितराने मार डाला। सो तुम झण्डी ५४ पितरांकी कामोंपर साश्व के तै है श्याम उनमें समाज ते हैं कोंकि उन्हें तो उन्हें मार डाला श्याम तुम उनकी कबरें बनाते हैं। इसलिए ईश्वरके झाँसने कहा ५५ है कि में उन्हेंके पास भविष्यद्वात्रीं श्याम प्रेरितांकी श्रेष्ठुंग श्याम वे उनमेंसे क्तिलोका मार डालेंगे श्याम सतावेंगे। कि हाविलके लोहूंसे लेके जिहरियाहके ५६ लोहूतक श्रेष्ठी बेदी श्याम मन्दिरके बीचमें भाट किया गया जितने भविष्यद्वात्रीं झण्डी लोहू जगतकी उत्पातिसे बहाया जाता है सवका लेखा इस समयके लेखेंसे लिया जाय। हां में तुमसे कहता हूं उसका लेखा इसी समय- ५७ के लेखेंसे लिया जायगा। हाय तुम व्यवस्थापको ५८ तुमने झाँसने कुंजी ले लिए है। तुमने झण्डी प्रवेश नहीं किया है श्याम प्रवेश करनेहारांके बजाय है।

जब वह उन्हेंसे यह बात कहता था तब अध्यापक ५९ श्याम फरीशी लोग निपट बैर करने श्याम बहुत बातकी विषयमें उसे कहवाने लगे। श्याम दांब ताकते हुए उसके ६० मुंहसे कुछ पकड़ने चाहते थे कि उसपर दांब लगावें।
१२ बारहवां पर्व ।

१ यीशुका अपने ग्रिस्योंका अनेक बातेंको विवरण दिताना । १३ निःकुर्द्दी ध्वनियांनका प्रसा । २२ यवनांस सन्त लगानेका निशेष । ३४ शेषगी रहनेका उपरेत श्री दे के का कुस्तापनका पुस्तापन । ४५ श्रीवैदुः शेषोंका भाषवम्भारका । ५४ कपारीश्चभार ।

१ उस समयमें सहसों लोग एक हुए यहाँ अंगे कि एक दूसरेपर गिरे पड़ते थे इसपर यीशु अपने भजियोंसे पहले कहने लगा कि फरीशियोंके खमरोंसे शरीरके अन्तिम कपसे ।

२ तैयार रहे । कुछ छिपा नहीं है ये प्रगट न किया जायगा श्रीका न कुछ गुप्त है जी जाना न जायगा ।

३ इसलिये जी कुछ तुमने जन्मावर कहा है सो उन्मानयान के सुना जायगा श्रीका जी तुमने का० रियामके कानीमं ।

४ कहा है सो कैपारीगरसे प्रचार किया जायगा । मैं तुम्हें जी नये आता है कहता हूँ कि जी भरीरको मार दालते हैं परन्तु उसके पीछे श्रीका कुछ नहीं कर सकते हैं ।

५ उससे मत डरा । मैं तुम्हें बताऊंगा तुम किसीं से डरा । घात करने बी नकर वालनका जिसका अधिकार है उससे डरा । हां मैं तुम्हें कहता हूँ उससे डरा ।

६ क्या दो पैसे मान गौरीया नहीं विकतिया तालीम ईश्वर ।

७ मैं तुमसे एकका भी नहीं मुझाता है । परन्तु तुम्हारे घर बाल भी सब गिने हुए हैं इसलिये मत डरा तुम बहुत ।

८ गौरीयांसे अधिक मालक हैं । मैं तुमसे कहता हूँ जी कोई मनुष्योंका शारी सुखे मान लेवे उसे मनुष्यका पुष्च ।

९ भी ईश्वरके दूतान्का शारी मान लेगा । परन्तु जी मनुष्यों- के शारी सुख मुका नकारे सो ईश्वरके दूतान्का शारी नकारा ।

१० जायगा । जी कोई मनुष्यको पुष्चको निरीफ़में वात कहे वह ।
उसके लिये भ्रमा किये जायगी परन्तु श्री पवित्र भ्रात्माकी निन्दा करे वह उसके लिये नहीं भ्रमा किये जायगी।
जब लोग तुम्हें सभागो श्रीर भ्रात्माकी श्रीर श्राधि- 99
कारियोंके ज्ञाने ले नार्वेि तब जिस रीतििे अथवा क्या
हत्तर देशों भ्रात्वा क्या कहांगे इसकी चिन्ता मत
करे। क्योंकि जो कुछ कहना चाहिए होगा तो पवित्र 12
श्रात्मा उसी घड़ी तुम्हें सिखावेगा।
भ्रामणी किसीने उससे कहा है गुरु मेरे भाईसे कहिये 13
कि पिताका घन मेरे संग बांटलेिे। उसने उससे कहा 14
हे मनुष्य किसने मुझे तुम्हें अभिं न्यायी भ्रात्वा बांटनेहारा
ठहराया। श्रीर उसने लोगोंके कहा देखा लोगोंके बचे 15
रहिा क्योंकि किसी घन बहुत होय तैबी उसका जीवन
उसके घनसे नहीं है। उसने उन्होंने एक दृश्यान्त भी कहा 16
कि किसी घनवान मनुष्यकी भूमिमें बहुत कुछ उपजा।
तब वह अपने मनमें बिचार करने लगा तो मैंने कहा कहां 17
क्योंकि मुझको अपना अभात रखनेका स्थान नहीं है।
श्रीर उसने कहा मैं यही कहनगा मैं अपनी बखारियां 18
तोड़के बड़ी बड़ी बनांजांगा श्रीर वहां अपना सब अभात
श्रीर अपनी सम्पति रखुंगा। श्रीर मैं अपने मनसे 19
कहांगा है मन तेिे पास बहुत बरसेंकि लिये बहुत सम्पति
रखी हुई है बिचार कर खा पी सुखसे रह। परन्तु 20
ईश्वरवाने उससे कहा है मूखे इसी रात तेिा प्राण तुमसे
ले लिया जायगा तव श्री कुछ तुनी एकटा किया है सो
किसका होगा। जो अपने लिये घन बटारता है श्रीर 21
ईश्वरवानी श्रीर घनी नहीं है तो ऐसाही है।
फिर उसने अपने शिष्यों से कहा इसलिये मैं तुमसे बाहर ठहरा हूं। अपने प्राणके लिये चिंता मत करो कि हम यह खाये न जाए तो ती के पाठिये ने भेजकर मासी के मासी ले। वे ने जाते हैं न लाते हैं हमने न भंडार न खता है। तब मैं वहाँ पहुँचे।

यदि देखो बात मान्य चिंता करने को अपना भाऊ की सहायता नहीं कर सकता है। सो यदि तुम भांति बोला भाव भी भांति बोला भांति हो। तुम मंगवाते हैं तुम मंगवाते हैं। सो यदि तुम मंगवाते हैं तुम मंगवाते हैं। और तुम मंगवाते हैं। और तुम मंगवाते हैं।

यदि देखो बात मान्य चिंता करने को अपना भाऊ की सहायता नहीं कर सकता है। सो यदि तुम भांति बोला भाव भी भांति बोला भांति हो। तुम मंगवाते हैं तुम मंगवाते हैं। सो यदि तुम मंगवाते हैं तुम मंगवाते हैं। और तुम मंगवाते हैं। और तुम मंगवाते हैं।

यदि देखो बात मान्य चिंता करने को अपना भाऊ की सहायता नहीं कर सकता है। सो यदि तुम भांति बोला भाव भी भांति बोला भांति हो। तुम मंगवाते हैं तुम मंगवाते हैं। सो यदि तुम मंगवाते हैं तुम मंगवाते हैं। और तुम मंगवाते हैं। और तुम मंगवाते हैं।

यदि देखो बात मान्य चिंता करने को अपना भाऊ की सहायता नहीं कर सकता है। सो यदि तुम भांति बोला भाव भी भांति बोला भांति हो। तुम मंगवाते हैं तुम मंगवाते हैं। सो यदि तुम मंगवाते हैं तुम मंगवाते हैं। और तुम मंगवाते हैं। और तुम मंगवाते हैं।

यदि देखो बात मान्य चिंता करने को अपना भाऊ की सहायता नहीं कर सकता है। सो यदि तुम भांति बोला भाव भी भांति बोला भांति हो। तुम मंगवाते हैं तुम मंगवाते हैं। सो यदि तुम मंगवाते हैं तुम मंगवाते हैं। और तुम मंगवाते हैं। और तुम मंगवाते हैं।

यदि देखो बात मान्य चिंता करने को अपना भाऊ की सहायता नहीं कर सकता है। सो यदि तुम भांति बोला भाव भी भांति बोला भांति हो। तुम मंगवाते हैं तुम मंगवाते हैं। सो यदि तुम मंगवाते हैं तुम मंगवाते हैं। और तुम मंगवाते हैं। और तुम मंगवाते हैं।

यदि देखो बात मान्य चिंता करने को अपना भाऊ की सहायता नहीं कर सकता है। सो यदि तुम भांति बोला भाव भी भांति बोला भांति हो। तुम मंगवाते हैं तुम मंगवाते हैं। सो यदि तुम मंगवाते हैं तुम मंगवाते हैं। और तुम मंगवाते हैं। और तुम मंगवाते हैं।
शीर न कहा बिगाहता है। क्योंकि जहां तुम्हारा 34 धन है तभां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।

तुम्हारी कमरं बंधी शीर दीपक जलते रहें। शीर 35 तुम उन मनुष्योंके समान होके जा अपने स्वामीकी बार देखते हैं कि वह बिबाहसे कब लौटेगा। इसलिए कि जब वह शाके द्वार खटखटावे तब वे उसके लिये तुरन्त खालें। वे दास धन्य हैं जिने स्वामी शाके जागते 30 पावे। मैं तुमसे सच कहता हूं वह कमर बांधके उन्हें भेजनपर बैठाता। शीर शाके उनकी सेवा करेगा। जो 38 वह दूसरे पहर आवे अध्ययन तीसरे पहर आवे शीर ऐसाही पावे तो वे दास धन्य हैं।

तुम यह जानते हो 38 कि यदि घरका स्वामी जानता चोर किस घड़ी आवेगा तो वह जागता रहता शीर अपने घरमें सेंध पड़ने न देता। इसलिए तुम भी तैयार रहा क्योंकि जिस घड़ीका 40 अनुमान तुम नहीं करते हो उसी घड़ी मनुष्यका पुष्प आवेगा।

तब पिताने उसके कहा है प्रभु का आप हमें सूरत 41 अध्ययन सब लागोर्ते भी यह दूर्गाण्ट कहते हैं। प्रभुने 42 कहा वह विश्वासयोग्य शीर बुद्धिमान भंदारी श्रीम है जिसे स्वामी अपने परिवारपर प्रधान करेगा कि समयमें उनहें सीधा दें। वह दास धन्य है जिसे उसका स्वामी 43 शाके ऐसा करते पावे। मैं तुमसे सच कहता हूं वह उसे 44 अपनी सब सम्पत्तिपर प्रधान करेगा। परलूँ जो वह दास 45 अपने मनमें कहे कि मेरा स्वामी ज्ञानमें बिलबंब करता है शीर दासीं शीर दशियंके मारने लगे शीर खाने पौने शीर मतवाला होने लगे। तो जिस दिन वह बात 46
बोहता न रहे श्रीर जिस पढ़ीका वह अनुमान न करे उसीमें उस दासका स्वामी आवेगा श्रीर उसको बढ़ी ताड़ना देके बबबश्वासियोंके संग उसका बांश देगा।

40 वह दास जो श्रापने स्वामीकी इच्छा जाता था परन्तु तैयार न रहा श्रीर उसकी इच्छाजो समान न किया बहुतसी मार खायाग परन्तु जो नहीं जाता था श्रीर मार खानेके योग्य क्राम किया सो ढोड़ीसी मार खाय- गा। श्रीर जिस किसीका बहुत दिया गया है उससे बहुत मांगा जायगा श्रीर जिसका लोगाने बहुत सांपा है उससे वे जाधिक मांगें।

45 में पृथिवीपर श्राग लगाने श्राया हूँ श्रीर में का 40 चाहता हूँ केवल यह कि भभी सुलग जाती। मुझे एक बपतिसमा लेना है श्रीर जबला वह सम्पूर्ण न होय तबलों 41 में कैसे सकतें हूँ। क्या तुम समझते हो कि में पृथिवीपर मिलाप करवाने श्राया हूँ। में तुमसे कहता हूँ सो नहीं 42 परन्तु फूट। क्योंकि जबसे एक घरमें पांच जन झलक झलक होंगे तीन दोके बिस्त्र श्रीर दो तीनके बिस्त्र।

43 पिता पुत्रके बिस्त्र श्रीर पुत्र पिताके बिस्त्र मां बटीके बिस्त्र श्रीर बटी मांके बिस्त्र सास झपनी पतोहके बिस्त्र श्रीर पतोह झपनी सासके बिस्त्र झलक झलक होंगे।

44 श्रीर भी उसने लेगाने कहा जब तुम मेंठी पत्रिचम- से चढ़ते देखते है तब तुरन्त कहते है कि मैं ही झाटी 45 है श्रीर ऐसा होता है। श्रीर जब दक्षिणकी बघार चलते देखते है तब कहते हैं कि घाम होगा श्रीर वह भी पढ़ा होता है। हे कपारी। तुम घरती श्रीर श्राकाशका रूप
चीनह सब्ते हो परन्तु इस समयका क्यांकर नहीं चीनहे हो। छौरा जो उचित है उसको तुम झाप हिसी किंग्न नहीं ५० बिचार कार्टे हो। जब तू झापने मुठूंवे संग झाप हिसी ५८ पास जाता है मागीहिमे उससे बूतने का यज कर ऐसा न हो कि वह तुम न्यायीके पास बीच ले जाय छौरा न्यायी तुम्हे प्यात्री के सांपे छौरा यादा तुम्हे बन्दीगुड़मे दाले। मैं तुमसे कहता हूँ कि जबलां तू कौड़ी कौड़ी ५५ भर न दे तबला वहांसे बूतने न पावेगा।

५३ तेरहवां पाञ्चें।

१ परवाताप करनेकी भावाप्यकता। ई निर्मल गुलार कृषिका बुझाना। २० योगुका एक कुढ़ही स्त्रीका चंगा करना और विशामारमे विश्वस्य निर्मित करना। २८ राठौं वाने और वालीको बुझाना। २१ वस्त्र फाटकमे पैठनेको उपदेश। ३१ देहरादून उल्लास और बिनस्तलीमे नाश दे नेकी भिन्नाख्वाको।

इस समयमे जितने लोग भा पूछने छौरा उन गाली-लियोंकी विश्वस्यमे जिनका लेख्ये पिलातने उनके बलिदानेके संग मिलाया था यीशुसे बात करने जगे। उससे २ उन्हें उत्तर दिया काँ तुम समक्षता है कि ये गालीली लोग सब गालीलियोंसे आधिक पापी थे कि उन्होंने ऐसी बिपत्ति पढ़ी। मैं तुमसे कहता हूँ सा नहीं परन्तु जो तुम प्रश्नमाताप न करा तो तुम सब उसी रोतन्ते नष्ठ होगे। अथवा काँ तुम समक्षते है कि वे झटारह जन ४ जिन्होंने श्रीलाहमे गुम्मर गिर पड़ा और उन्हे नाश किया सब मनुष्यांसे जा यिक्स्लीममे रहने थे आधिक अपराधी थे। मैं तुमसे कहता हूँ सा नहीं परन्तु जो तुम ५ प्रश्नमाताप न करा तो तुम सब उसी रोतन्ते नष्ठ होगे।
इसे उसने यह दृष्टान्त भी कहा किन्तु विभवी दासकी लाखाकी बारीमें एक गुलाब का वृक्ष लगाया गया था तव उसने अलीसे कहा देख मैं तीन बरसते हाले इस गुलाब के वृक्ष में फल हुँदे हूँ पर नहीं पाता हूँ। उसे काल डाल वह मुष्किलों की निकम्मी करता है। मोलीने उसको उत्तर दिया कि हे स्वामी। उसकी इस बरस भी रहने दीजिये जबली। मैं उसका थाला खोटे खाद भरक तव जी उसमें फल लगे ता मला. नहीं तो पीढ़ी उसे करवा डालिये।

विभामकी दिन गिन्यु एक सभाकी घर में उपदेश करता था। शीर देखा एक स्त्री थी जिसे घट्टारह बरसते एक दुबेरल करनेवाला भूत लगा था शीर वह कुछड़ी थी। शीर किसी रीतिसे अपनेको सीधी न कर सकती थी। यीशुने उसे देखके अपने पास बुलाया शीर उससे कहा नारी तू अपनी दुबेरलताते छुड़ाई गई है। तव उसने उसपर द्राघ रथा शीर। वह तुरन्त सीधी हुई। शीर इश्वरकी स्तुति करने लगी। परंतु यीशुने विभामकी दिनमें चंगा किया इससे सभाका अथ्यासु रितियाने लगा। शीर उत्तर दे लोगांसे कहा ये दिन है जिनमें काम करता उचित है। सा उन दिनामें शीरके चंगे किये जाते। शीरविभामकी दिनमें नहीं। प्रभुने उसकी उत्तर दिया कि हे कपटी क्या विभामकी दिन तुअंपर्से हर एक ज्ञानव बेला अथवा गद्यका थानसे खोलके जल पिलानेका नहीं। शीर देखा घट्टारह जो इबाहीमकी पुष्ची है जिसे शैतानने देखा घट्टारह
बरसते बांध रखा था विभामके दिनमें इस बंधनसे खाली जाय। अब उसने यह बात कहाँ तब उसके सब १७ विरोधी काममें लोग सब तत्तक तब करते थे जो वह करता था झानन्दित हुए।

फिर उसने कहा इंद्रवरका राज्य किसके समान है १८ शीर भी उसकी उपमा किससे देखता है। वह राज्यके एक १६ टानके नाई है जिसे किसी मनुष्यले लेके अपनी बारीमें बैठा शीर वह बहा शीर बड़ा पेड़ हो गया शीर आकाशीय पंखियोंने उसकी हालियंगर बसाया किया। उसने फिर कहा मैं इंद्रवरके राज्यके उपमा किससे देख- २० गा। वह खमीरके नाई है जिसके किसी स्त्रीले की तीन २१ पत्रिके जाममें छिपा रखा यहाँ जों कि सब खमीर हो गया।

वह उपदेश करता हुस्ना नगर नगर शीर गांव। गांव २२ ही पिथौश्लीमके शीर जाता था। तब किसीने उससे २३ कहा है प्रभु क्या चाहे पालेहारे धैर्यहै। उसने उन्होंने २४ कहा सवेरा फाटकसे प्रवेश करनेको साहस करो कोई भी में तुमसे कहता हूँ कि बहुत लोग प्रवेश करने चाहेंगे शीर नहीं सकेंगे। जब घरेलू बांधी उठके द्वार मूंद चुके- २५ गा शीर तुम बाहर खड़े हुए द्वार खरखराने लगोगे शीर कहाँ है प्रभु है प्रभु हमारे लिये खाली शीर वह तुम्हें उत्तर देगा में तुम्हें नहीं जानता हूँ तुम कहाँ हो। तब तुम कहाँ लगोगे कि हम लोग आपके साहि शीर शीर पै चे शीर आपने हमारी सड़कों में उपदेश किया। परन्तु वह कहेगा में तुमसे कहता हूँ में तुम्हें २० नहीं जानता हूँ तुम कहाँ हो। तब कुछ करनेहारे
तुम सब मुःसूं दूर होकर। वहां रोना शैल दात पीसना होगा कि उस समय तुम इबाहीम शैल इसहाज शैल याकूब शैल सब भविष्यद्विताणोंको ईश्वरके राज्यमें बैठे हुए शैल धनेको बाहर निकाले हुए देखाई। शैल लोग पूर्व शैल पश्चिम शैल उत्तर शैल दिखायके ाले ईश्वरके राज्यमें बैठे। शैल देखा कितने पिछले हैं। जो पिछले होंगे शैल कितने ाले हैं। जो पिछले होंगे।

उसी दिन कितने फरीखीयाँ भा। उससे कहा यहांसे निकलके चला। जा के ांकि हेरोट तुम्हें मार डालने चाहता है। उसने उससे कहा जाकि उस ज़ाम-हरसे कहा कि देखा में श्राज शैल कल भूतांका निकालता शैल रागियाँका चाना करता हू। शैल तीसरे दिन सिद्ध होंगा। तैभी श्राज शैल कल शैल परसों फिरता मुःके आवश्यक है के ांकि हो नहीं सकता कि कोई भविष्यद्वित्ता विख्यातीमके बाहर नाथ किया जाय। हे विख्यातीम विख्यातीम जो भविष्यद्विताणोंका मार हालती है शैल जो तेरे पास भी। गरे हैं उनके पत्तरवाह करती है जैसे मुःके धनेका बज्झूंका पंखाँको नीचे एक्टरू करती है। वैसी भी। भी। कितनी बेर तेरे बालकांका एक्टरू करनेकी इच्छा किईं परतु तुम्हने न चाहा। देखा तुम्हारा घर तुम्हारे लिये जजाड़ बढ़ा जाता है। शैल में तुमसे सच कहता हूं जिस समयमें तुम कहाँगे धन्य वह जो परमेश्वरके नामसे झाटा है वह समय जबलों न श्राजे तबलें तुम मुःके फिर न देखाई।
14 चैत्रह्वां पृष्ठ ।

1 योगुका विषामके दिनमि नक जलंधरीका चंगा करना। 9 नेवतारीकौंके दूराननं नम ब्राह्म के उपवेश। 12 नेवता करनके दूराननि परेपारङ्का उपवेश। 13 विषामका दूराना। 21 योगुके विषाम स्थिमि नक तुःख सहना देगा तबे ब्राह्मके महानेका उपवेश।

जब योगुक विषामके दिन प्रधान फरोशियोंमसे 1 किसीकौं घरमि रारी खानेको गया तब वे उसकी ताकते थे। श्रीर देखा एक मनुष्य उसकी सामन्ते था जिसे जलंधर रोग था। इसपर योगुके व्यवस्थायोंके श्रीर फरोशियोंसे कहा क्या विषामके दिनमि चंगा करना उचित है। परन्तु वे चुप रहे। तब उसने उस मनुष्यकी लेके चंगा करके बिटा किया। श्रीर उन्हें उत्तर दिया कि तुमसे किसका गधा अधूरा बूंदें मिरोगा। श्रीर वह हर नृत्त विषामके दिनमि उसे न निकालेगा। वे उसकी इन बातेंका उत्तर नहीं दे सके।

जब उसने देखा कि नेवतारी जाग कौंकड़ ऊँचे ऊँचे व्यापार चुन लेते हैं तब एक दूरानन् दे उन्हेंसे कहा। जब कौंकड़ तुम्हें विषामके भारमि बुलावे तब ऊँचे व्यापारमि मत बैठ ऐसा न हो कि उसने तुमसे अधिक झाड़के गाय किसीकौं बुलाया हो। श्रीर जिसने तुम्हें श्रीर उसे नेवता दिया से जाके तुमसे कहे किसमत मनुष्यका व्यापार दीजिये। श्रीर तब तू लाजित हो। सबसे नीचा व्यापार लेने लगे। परन्तु जब तू बुलाया जाय तब सबसे नीचे व्यापारमि जाए। 10 बैठ इसलिये कि जब वह जिसने तुम्हें नेवता दिया है जावे तब तुमसे कहे है मिच श्रीर ऊपर झाड़िये। तब तेरे संग बैठनेहारेंके साथे तेरा झाड़ होगा। कौंकड़ 99
जी कैसे अपनेका ऊंचा करे सा नीचा किया जायगा 
श्रीर जी अपनेका नीचा करे सा ऊंचा किया जायगा।

12 तब जिसने उसे नेवता दिया था उसने उससे भी 
कहा जब तू दिनका भयवा रातका भेजन बनावे तब 
अपने मिर्च वा अपने माढिया वा अपने कुरुंबें वा 
धनवान पड़ासिद्धियांका मत बुला ऐसा न हो कि वे भी 
इसके बदले तुम्हे नेवता देव श्रीर यही तेरा प्रतिफल 
13 होय। परन्तु जब तू भेज करे तब कंगाले दुईं लंगडं 
14 श्रीर अथैंका बुला। श्रीर तू धन्य होगा कोंक वे 
तुम्हे प्रतिफल नहीं दे सकते हैं परन्तु धाम्मियांके जी 
उठनेपर प्रतिफल तुम्हका दिया जायगा।

15 उसके संग बैठनेहारंमें एकने यह बातें सुनके उससे 
कहा धन्य वह जी इंग्लवरे राज्यमें रोटी खायगा।
16 उसने उससे कहा किसी मनुक्यने बड़ी बियारी बनाईं
17 श्रीर बहुतेंकी बुलाया। बियारीके समयमें उसने अपने 
दासके हाथ नेवतहरियांकी कहला भेजा कि आजो 
18 सब कुछ अब तैयार है। परन्तु वे सब एक मत हैके 
भ्रष्मा मांगने लगे। पहलीने उस दाससे कहा मैंने कुच 
भूमि मेल लिए हैं श्रीर उसे जाके देखना मुफ्ती अवशय 
19 हैं में तुम्हसे बिन्दी करता हूं मुफ्ती भ्रष्मा करवा। दूसरीने 
कहा मैंने पांच जोड़े बेल मेल लिये हैं श्रीर उन्हें 
परखनेका जाता हूं में तुम्हसे बिन्दी करता हूं मुफ्ती भ्रष्मा 
20 करवा। दूसरीने कहा मैंने विवाह किया है इसलिये मैं 
21 नहीं जा सकता हूं। उस दासने आके अपने स्वामीको 
यह बातें सुनाईं तब घरके स्वामीने श्रीराध कर अपने
दासते कहा नगरकी सड़कों हर गाँवांमें श्रीप से जाके बांगलाओं श्री ठुड़े हर लोगों हर श्राय निश्चिला का यहां ले जाना। दासते फिर कहा है स्वामी जैसे ज्ञानने आज्ञा दी तैसे किया गया है हर जब भी जगह है। स्वामीले दासते कहा है राजपथोंमें हर गाइडेंजी नीचे जाके लोगों बिन्ह लाने से मत बढ़ा कि मेरा घर भर जावे। क्योंकि में तुमसे कहता हूँ कि उन नेवते हुए मनुष्योंमें कोई मेरी बियारी न चीखेगा।

बांद्री भीड़ यीशुके संग जाती थी हर वसने पीछे फिरके उल्लभी कहा। यदि कोई मेरे पास जावे हर श्राय अपनी माता हर पिता हर स्त्री हर लड़की हर भाईयां हर बहिनेंकी हां हर अपने प्राणिको भी अप्रय न जाने ता। वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है। हर जो कोई अपना कृप्त उठाये हुए मेरे पीछे न जावे वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है। तुमसे अंचल है कि गढ़ बनाने चाहता हूँ हर पहली बैठके खिर न जाने कि समापि करनेकी बिसात मुक्त है कि नहिं। ऐसा न हो २५ कि जब वह नेव डानके समापि न कर सकि तब सब देखनेहारे उसे ठुटमें उड़ाने लगें। हर कहे यह मनुष्य बनाने लगा परन्तु समापि नहीं करता। अथवा कोई इँ राजा है कि दूसरे राजसे लड़ाई करनेकी जाता है हर पहली बैठके बिचार न करे कि जो बीस सहस्र लेके मेरे बिचटू जाता हैं भी दूसरे सहस्र लेके उसका सामना कर सकता हूँ कि नहिं। हर जो नहीं तो उसके टूट रहतेही बढ़ दूसरे ही मेरे सिलाई चाहता है। ऐसी रीति के इत |
तुम्हारे मंत्र जो बोलें अपना सर्वेस्व त्यागन न करें वह 34 मेरा शिष्य नहीं है सकता है। लेखा श्रद्धा है परन्तु यदि लेखका स्वाद बिगड़ जाय तो वह जिससे स्वादित जिया जायगा। वह न भूमिकाने न खाद्य जिये काम स्वभाव कर सकता है। लेख उसे बाहर फेंकते हैं। जिसका सुन-नेके काम हां सो सुने।

15 ग्रन्थवां पढ़े।

1 श्रृंखला हूँ बोल ध्वनि बोल खुशी के योग्यात्मा। 19 बढ़ायु पुस्तका योग्यात्मा।

2 कर उगाहनेहारे श्रृंखला पापी लेख सब योग्य पानी।

3 बोले मे यह उसकी सुननी। श्रृंखला प्रवाही श्रृंखला अध्यायपाया कुहुकुड़ा कहाँ लगे यह तो पापियांको यहण करता है।

4 श्रृंखला उनके संग खाता है। तब उस्ने उनकी सही।

5 कहा तुम्मसे जीन मनुष्य है किंतु उसने सी भेद हा श्रृंखला उस्ने उसकी एकको खाया हो। श्रृंखला वह निद्रानवेशा जंगलमें न खोड़े श्रृंखला जबलों उस खोड़े।

6 हुईंको न पावे तबलों उसके खोजमें न जाय। श्रृंखला वह उसे पाकर श्रानन्दसे अपने अन्तिमांगर रखता है।

7श्रृंखला घरमें जाके मिन्ना श्रृंखला पंडित्रांको एक्ष्टु बुलाके उनकी सही है मेरे संग कामना करो यिंके अनप-कर नो खोड़े हुईं भेद पाई। मैं तुमसे कहता हूँ किंतु इसी रीतिसे जिन्हें प्रश्चालाप करनेका प्रयोजन न होय। ऐसे निद्रानवें धर्मयांको श्रावक पापी से जी प्रश्चालाप कर स्वर्गमें श्रानन्द होगा।

8 अन्यया जीन स्त्री है किंतु उसकी दस मूकी हां। श्रृंखला वह जी एक सूकी खोजे तो दीपक बारके जी घर बुढ़हरके।
उसे जबलीं न पाये तबलीं यबसि न हूँ। शैर वह उसे ५ पाके सहियां शैर पड़ातिनियांकै एकटू बुलाके कहती है में रंग ज्ञान दरा कि मैंने जो सूकी खाइ़ पी सो पाई है। मैं तुमसे कहता हूँ कि इसी रीतिसे एक १० पापीके लिये जो पश्चात्ताय करता है इस्लामी के दूतों में ज्ञान होता है।

फिर उसने कहा किसी मनुष्यके द्वा पुछ थे। उनमें ५३ छठ लिये पितासे कहा है पिता सम्पतिमें जो मैं जंग है जो सूकी दूरिये। तब उसने उनकी जन्मी सम्पति बांट दिदे। बहुत दिन नहीं बोटे कि छुट्टा पुछ सब ५३ कुछ एकटा करके दूर देश चला गया शैर वह लुकपने में दिन बिताते हुए जन्मी सम्पति छुड़ा दिदे। जब ५४ वह सब कुछ डटा छुटा तब उस देशमें बड़ा जंगल पड़ा शैर वह कंगल है। गया। शैर वह नाके उस देश के ५४ निवासीयांन्में एक के यहां रहने लगा जिसने उसे जन्मी बिताने मुझे चरानेको में। शैर वह उन बीमियांसे ५६ जिन्हें मूंह बांट थे जन्मी पेर भरने चाहता या शैर कहाँ नहीं उसकी कुछ देता था। तब उसे चेत हुआ ५० शैर उसने कहा मेरे पिताके बितने मजुरारी भेजते जाय जन्मी राती है शैर में मुखसे भरता हूँ। मैं ५८ ऊँटके जन्मी पिता पास जांगा। शैर उसके छुएगा है पिता मैंने स्वर्णके बिस्तू शैर जन्मी सासे पाप किया है। मैं फिर जन्मी पुछ झाकवने के यागय नहीं हूँ ५५ मुखे जन्मी मजुरारी एक तुलना कीजिये। तब वह २० ऊँटके जन्मी पिता पास चला पर वह दूरहो था कि
उसके पिताने उसे देखके दया किए श्रीर दूरा उसके
21 गले मे दिया नसे भूमा । पुणे उसने कहा है पिता
मिरे स्वच्छे विरुद्ध श्रीर अपने साथ पाय निया है श्रीर
22 फिर ज्ञापका पुच कहावनेके याय नहीं हूं । परम्परा
पिताने अपने दसरसे कहा सबसे उत्तम वस्त मिरे निकालके
उसे पहिनाने श्रीर उसले हाथमे झंगदी श्रीर पांचमैं
23 जूते पहिनाने । श्रीर भोटा बछूल लाशे मारे श्रीर हुम
24 खारंश श्रीर ज्ञानद करे । कोईठि यह मेरा पुच सुत्रा था
फिर जीता है खा गया था फिर मिरा है । तब वे
25 ज्ञानद करने लगे । उसका जेटा पुच खेतमें था श्रीर
जब वह ज्ञान हुए घरी विकट पहुंचा तब बाजा श्रीर
26 नाचका शब्द सुना। श्रीर उसने अपने सेवकांसे एकरें
27 अपने पास जुलाके पूजा यह कया है । उसने उससे कहा
ज्ञापका भाई संयाय है श्रीर ज्ञापके पिताने भोटा बछूल
28 मारा है इसलिये कि उसे भला चंगा पाया है । परम्परा
उसने अईढ़ किया श्रीर भीतर जाने न चाहा इसलिये
29 उसका पिता बाहर था उसे मनाने लगा । उसने पिताके
उत्तर दिया कि देखिये मे इतने वस्तांसे ज्ञापके सेवा
करता हूं श्रीर कभी ज्ञापकी ज्ञापके उत्तांगन न किया
श्रीर ज्ञापने मुखी कभी एक मेंगा भी न दिया किया मे ज्ञापने
30 मिरे संग ज्ञानद करता । परम्परा ज्ञापका यह पुच जो
बद्हयाका ज्ञापकी सम्पत्ति खा गया है क्योंठि
ज्ञाया त्यांही ज्ञापने उसके लिये भोटा बछूल मारा है ।
31 पिताने उससे कहा है पुच तू सदा मेरे संग है श्रीर
32 जो कुछ मेरा है सा सब तेरा है । परम्परा ज्ञानद
करना शीर्ष हरित होना उचित था क्योंकि यह तेरा भई मूशा था फिर जीवा है खो गया था फिर मिला है।

16 सालहवां पढ़े।

१ जनुर मंडारिया ब्रूहाता । २ बनेक बालीका ब्रजबंग । १५ धनवाण शीर्ष विषारिया ब्रूहाता।

यी युग अपने शिक्षण से भी कहा कोई धनवाण मनुष्य था जिसका एक मंडारी था शीर्ष यह देख उसके अँगे मंडारीपर लगाया गया कि वह जापकी सम्पत्ति उड़ा देता है। उसने उसे बुलाकर उससे कहा यह क्या है जो में तेरे विषयमें सुनता हूँ। अपने मंडारनका लेखा दे क्योंकि तू जागेकोमंडारी नहीं रह सकेगा। तब मंडारीने अपने मनमें कहा में का कह जो मेरा स्वामी मंडारीका काम मुख्ये छीन लेता है। में कोह नहीं सकता हूँ शीर्ष भीख मांगनेसे मुखे लाज जाती है। में जानता हूँ। में क्या कहेगा इसलिये कि जब में मंडारनसे बुड़ा जांक तब लेगे मुखे अपने पहरमें यहज़ करें। शीर्ष उसने अपने स्वामीके फृणियांमें एक एकाका अपने पास बुलाकर पहिले कहा तू मेरे स्वामीका वित्तना धारता है। उसने कहा सात मन तेल। वह उससे बोला अपना पत्र लेशीर बैठके शीघ्र पत्रास मन लिख। फिर दूसरे कहा तू वित्तना धारता है। उसने कहा ती मन गएहूँ। वह उससे बोला अपना पत्र हे शीर्ष अस्सी मन लिख। स्वामीने उस शैहरसी मंडारीका सराहा कि उसने बुड़ीका काम किया है। क्योंकि इस संसारके समान अपने समयके लोगोंके विषयमें ज्यादातृतिके संतानोंसे छाई है।
8 बुद्धिमान हैं। श्रीर भी तुम्हारे कहता हूँ कि ऋषिकेश के धननंदा द्वारा अपने लिये भिष्म कर लो कि जब तुम छूट जाओ तब भी तुम्हें अनन्त निवासोंमें यहां करें।

90 जा भान साहि घोड़ें विद्वान मयाय है सा बहुत भी विद्वान मयाय है श्रीर जा भान साहि घोड़ें ऋषिकेश है क्योंकि उस्में भी ऋषिकेश है।

91 बहुत भी ऋषिकेश है। इसलिये जो तुम ऋषिकेश के धननंदा विद्वान मयाय न छूट है तो सब धन तुम्हें धारणे।

92 श्रीर जो तुम पराप्ये धनमुक विद्वान मयाय न छूट है तो तुम्हारा धन तुम्हें धारणे देगा। केवल सेवा करें दूसरे के स्वास्त्यप्राप्ति के सेवा कर सकता है क्योंकि वह एक ही बैर बाहर श्रीर दूसरके धारणे धारणे एक ही लगा रहेगा श्रीर दूसरके तुच्छ जानेगा। तुम इंश्वर श्रीर धन दानांकी सेवा नहीं कर सकते है।

93 श्रीर जो लाभी चे यह सब वातें सुनी।

94 श्रीर उसका बढ़ा दिया। उसने उन्हें कहा तुम तो मनुष्योंके शारी अपनी धारणे धारणे ठहराते हैं। परन्तु इंश्वर तुम्हारे मनोंके जानता है। जो मनुष्योंके लेके महान।

95 श्रीर जो इंश्वरके शारी गिनत हैं। क्योंकि धारणे धारणे दूसरके राजकीय सुसमाचार सुनाया जाता है श्रीर सब काई उसमें बरियाइसे प्रवेश करते हैं। क्योंकि एक बिन्दुके लेख होनेसे आकाश श्रीर पृथिवीका राज जाना सहज है। जो काई धारणे स्त्रीके दूसरके विवाह करे तो परस्त्री गर्भमन करता है। श्रीर जो स्त्री धारणे स्वास्त्यप्राप्ति त्याग करे तो परস्त्री गर्भमन करता है।
एक धनवान मनुष्य था जा बैठनी बस्त्र झीर मलमल १८ पहिनता झीर प्रतिदिन विभव झीर सुखसे रहता था। झीर इलियाजर नाम एक कंगाल उसकी डेवडीपर २० हाला गया था जो घाबोंसे भरा हुआ था। झीर उन २१ चूरचारिये झा धनवानकी मेजसे गिरते थे पेट भरने चाहता था झीर कुत्ते भी झाके उसकी घाबोंसे चारते थे। वह कंगाल मर गया झीर दूसरे उसका इब्राहीमकी २२ गोदम पुंहुंचाया झीर वह धनवान भी मरा झीर गाड़ा गया। झीर परलोकमें उसने पीड़ामें यढ़े हुए झपनी २३ झांखें उठाई झीर दूसरे इब्राहीमकी झीर उसकी गोदम 
इलियाजरकी देखा। तब वह पुकारके बोला है झिता २४ इब्राहीम सुपरर दया करके इलियाजरकी भेजिये कि झपनी उंगलीका झीर पानीमें झबोके मेरी जोभिया ठंढी 
करे कींकिमें इस ज्ञानमें कलपता हूं। परन्तु इब्राहीम- २५ 
मने कहा हे पुत्र स्मरण कर कि तू झपनी जोते जो झपनी 
सम्पत्ति पा चुका है झीर वैसाहि इलियाजर विपति 
परन्तु झब वह शांति पाता है झीर तू कलपता है। 
झीर भी हमारे झीर तुम्हारे बीचमें बढ़ा झन्टर ठहराया रहे 
गया है कि वे लोग इधरसे उस पार तुम्हारे पास जाया 
चाहे सा नहीं जा सबें झीर न उधरके लोग इस पार 
हमारे पास झावें। उसने कहा तब हे झिता में झापसे २६ 
बिन्ती करता हूँ उसे मेरे पिताकें घर भेजिये। कींकिमेरे २७ 
पाऊंच भाई हैं वह उनहें साझी देि ऐसा न हो कि वे मी 
इस पीड़ाकी स्थानमें झावें। इब्राहीमने उसने कहा मूसा २८ 
झीर मविश्वदुक्षाझाके पुस्तक उनके पास हैं वे उनकी
३० सुनें। वह बोला है पिता इब्राहीम से नहीं परन्तु यदि मृतकांमिते कोई उनके पास जाय तो वे पश्चा- ताप करेंगे। उसने उससे कहा जो वे मूसा शैर भविष्यद्वारकांकी नहीं सुनते हैं तो यदि मृतकांमिते कोई जो उठे तामी नहीं मानेंगे।

१० सच्चवां पर्व।

१ ठोकर खिलानेका निषेध। ३ चमा करनेका उपदेश शैर विश्वासके गुरुका बतान। ५ दाससे दूषणसे भ्रमितहका निषेध। ११ धर्मसु दश काँड़ियोंके संगा करना। २० अर्धाक्र राजपक्षा शासनका वर्णन। २३ समुद्रके पूलके शासनका वर्णन शैर ख्यातायलैंग शैर षडयंत्रके विनायगरू उत्स समयकी उपयोग।

२ यशुने शिप्यांसे कहा ठोकरांका न लगना जना नहीं है परन्तु हाय वह मनुष्य जिसके द्वारसे वे लगती हैं। इन छोटांसे एकही ठोकर खिलानेके उजसके लिये भला होता कि चढ़ीका पार उसके गलीमें बांधा जाता शैर वह समुद्रम पाला जाता।

३ भपने विषयम सचेत रहें। यदि तेरा भाई तेरा शपराध करे ता उसका समका दे शैर यदि पछतावे ४ ता उसे दमा कर। जो वह दिनभरसे सात बेर तेरा शपराध करे शैर सात बेर दिनभरसे तेरी शैर फिरके ५ कहे मैं पछताता हूं ता उसे दमा कर। तब प्रेतिने ६ प्रभुः कहा हमारा शिक्षास बढ़ाइये। प्रभुने कहा यदि तुमको राइके एक दासके तुल्य शिक्षास होता ता तुम इस गुलारके वृङ्खला जा कहते कि उखड़ा जा शैर समुद्रम लग जा वह तुम्हारी झाझा मानता।

६ तुममिते शैर है कि उसका दास हल जेताता शपथवा
चरवाही करता हो जीरा ज्योंही वह खेते से झावे त्योंही उससे कहेगा तुरन्त झा भेजनयर बैठ। क्या वह उसे देगे न कहेगा मेरी हियारी बनाके जबलों में झाले जीरा पीछे तबलों कमर बांधके मेरी सेवा कर जीरा इससे पीछे त झायगा जीरा पीयेगा। क्या उस दासका उसपर कुछ निहारा हुआ कि उसने वह काम किया जिसकी झावा उसका दिंदे गई। में ऐसा नहीं समझता हूं। इस २० रोटिसे तुम भी जब सब काम कर चुका जिसकी झावा तुम्हें दिंदे गई है तब कहा हम निकम्मे दास हैं कि जो हमें करना उचित था सोई भर किया है।

यीशु यदीश्वर जाते हुए शामिलोन जीरा गा २१ लीलके बीचमें होके जाता था। जब वह किसी गांव में २२ प्रवेश करता था तब दस कोडी उसके सन्मुख का दूर खड़े हुए। जीरा वे जंगी शब्दसे बोले है यीशु गुह हमपर २३ तथा कोज़ी। यह देखके उसने उन्हें कहा जाके जाने २४ तदें याजकोंका दिखाक्षा। जाते हुए वे शुद्ध किये गये। तब उनमें एकने जब देखा कि में चंगा हुआ हूं बड़े २५ शब्दसे ईश्वरकी स्तुति करता हुआ फिर झावा। जीरा २६ यीशुका धन्य मानते हुए उसके चरणोंपर सुहाए बल गिरा। जीरा वह शामिलोनी था। इसपर यीशुनी कहा २७ क्या दसें शुद्ध न किये गये तो नै कहां हैं। क्या इस २८ ज्ञानदेशीका छोड़ कोई नहीं ठहरे जा ईश्वरकी स्तुति करनेका फिर झावाँ। तब उसने उससे कहा उठ चला २८ जा तेरे विश्वासने तुके बचाया है।

जब फरीशियाँने उससे पूछा कि ईश्वरका राज्य कब २२
शाबेंगा तब उसने उन्होंने उत्तर दिया कि इश्वरका
29 राज्य प्रत्यक्ष रूपसे नहीं झाटा है। शीर न लोग कहेंगे
देखा यहां है अबया देखा वहां है क्योंकि देखा इश्वर-
का राज्य तुम्हें न है।
32 उसने शिष्यांसे कहा वे दिन शाबेंगे जिन्में तुम मनु-
पुके पुनरे दिना एक दिन देखने चाहेंगे पर न
33 देखेंगे। लोग तुम्हें कहेंगे देखा यहां है अबया देखा
वहां है पर तुम मत जाओ शीर न उनके पीछे हो।
34 लेखा। क्योंकि जैसे बिजली जो आकाशकी एक शीरसे
चमकती है आकाशकी दूसरी शीरतक ज्योति देती है
34 वैसाहि मनुष्यका पुके भी अपने दिना होगा। परन्तु
पहले उसका अवधार है कि बहुत दुःख उठावे शीर इस
35 समयके लोगांसे तुच्छ किया जाय। जैसा नूहके दिना
30 हुआ वैसाहि मनुष्यके पुके दिनामें भी होगा। जिस
दिनां नूह जहां जहां न बटा उस दिनां लोग खाते
पीते बिवाह करते शीर बिवाह दिये जाते हैं। तब उस
38 दिन जलमग्नि झाके उस समयके नाश किया। शीर
जिस रौतसे लूटके दिनामें हुआ कि लोग खाते पीते
25 में लेलीवेचते वाते शीर घर बनाते हैं। परन्तु जिस दिन
लूट सदामें निकला उस दिन झाक शीर गन्धक
30 आकाशसे बरसी शीर उस समयके नाश किया। उसी
31 रौतसे मनुष्यके पुके प्रगट होनेके दिनामें होगा। उस
दिनामें जो कोई हो शीर उसकी समयी घरामें
है। उसे लेनारे न उतरे शीर बैस्ते जो खेतमें
32 है। तो पीछे न फरे। लूतके स्तीको स्मरण करा।
जो कौँ झपना प्राप्त बचाने चाहे सा उसे खोबेगा ३३
सौर जा कौँ उसे खोबे सा उसकी रक्षा करेगा । मैं ३४
tुमसे कहता हूं उस रातमें दो मनुष्य एक खाटपर होंगे
एक लिया जायगा सौर दूसरा छोड़ा जायगा । दो ३५
सियां एक संग चक्की पोसती रहेंगी एक लिये जायगी
सौर दूसरी छोड़ी जायगी । दो जन खेतमें होंगे ३६
एक लिया जायगा सौर दूसरा छोड़ा जायगा । उन्होंने ३७
उसकी उत्तर दिया है प्रभु कहां । उसने उनसे कहा
हां लोष हाय तहां गिदु एक्टे होंगे ।

७८ छठार्हवां पद्वे ।

नित्य प्रार्थना करने सौर साहस न छोड़नें अनुय-प्रयक्तांके विषयमें योगुने उन्हें एक दुस्सन्त कहा । कि
किसी नगरमें एक बिचारकता था जो न ईश्वरसे हरता
न मनुष्यका मानता था । सौर उसी नगरमें एक विधवा
भी जिसने उस पास भा कहा मेरे मुदूरसे मेरा पलटा
कोजिये । उसनेकितनी बेरलों न माना परलुपपी अथवे
मनमें कहा यदापि मैं न ईश्वरसे हरता न मनुष्यका
मानता हूँ । तामी यह विधवा मुझे दुःख देती है इस
कारण मैं उसका पलटा लेजिया ैसा न हो । कि नित्य
नित्य झानसे वह मेरे मुंहमें गालिक लगावे । तब प्रभु
कहा सुने यह अधमती विचारकता क्या कहता है । सौर
ईश्वर यदापि अपने चुने हुए लोगोंके विषयमें जी रात दिन उस पास पुकारते हैं धीरज घरे तैभी कवा
उनका पलटा न लेगा। मैं तुमसे कहता हूं वह शीघ्र उनका पलटा लेगा तैभी मनुष्यका पुत्र जब आवेगा
तब कवा पृथिवीपर विश्वास पावेगा।
८ छायर उसने कितनांतर जो अपनेर भरोसा रखते थे
कि हमधम्मी हैं छायर छायरेंकोतुच्च जानते थे यह दूरप्राच्य
९ कहा। दो मनुष्य मन्दिरमें प्राणना करनेको गये एक
१० फोरीशी छायर दूसरा कर उगाहनेहरा। फोरीशीने छलग
खड़ा हो यह प्राणना किक्के कि हैईश्वर मैं तेरा धन्य
मानता हूं कि मैं छायर मनुष्योंको समान नहीं हूं जो
उपद्रवी अन्त्यायी छायर परस्तीगामी हैं छायर न इस कर
११ उगाहनेहरेि समान। मैं चौथेतमें दो बार उपवास
करता हूं मैं अपनी सब कमाईका दसवां अंश देता हूं।
१२ कर उगाहनेहरेि दूर खड़ा हो स्वागोंकी छायर तांबे
उठाने भी न चाहा परन्तु अपनी छाती पीरेकी कहा है
१३ ईश्वर मुक्त पापीपर दया कर। मैं तुमसे कहता हूं
कि वह दूसरा नहीं पर यही मनुष्य धम्मी उहराया
हुक्का अपने घरको गया कोंकि जो काई अपनेको
जंझा करे सा नीचा किया जायगा छायर जो अपनेको
नीचा करे सा ऊँचा किया जायगा।
१४ लोग कितने बालकोंको भी यीशु पास लाये कि
वह उन्हें चूबे परन्तु शिष्योंने यह देखके उन्हें दांता।
१५ यीशुने बालकोंको अपने पास बुलाके कहा बालकोंको
मेरे पास शाने दा। छायर उन्हें मत बर्जै। कोंकि ईश्वर-
का राज्य ऐसा है नैं कि जो १७ के इंशवरके राज्यकी बालककी नाई यहाँ न करे वह उसमें प्रबेश करने न पाएगा।

किसी प्रज्ञानने उससे पूछा है उत्तम गुरु कीन काम १८ करनें में अनन्त जीवनका अधिकारी होगा। यिशुमे १५ वससे कहा तू मुक्त उत्तम कीं कहता है। के इंशवर नहों है केवल एक अयोत इंशवर। तू आज्ञालालको २० ज्ञानता है कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिसा मत कर चौरी मत कर कूती साध्छी मत दे अपनी माता छैयर अपने पिताका चादर कर। उसने यह सनके २१ अपने लड़कपनसे पालन किया है। यिशुमे यह सनके २२ वससे कहा तुम एह अव भी एक बातकी घरी है। जो कुछ तेरा है तो बच्चे बांँधलालको बांट दे छैयर तू स्वर्गमें धन पाएगा छैयर आ और पीछे हो ले। वह यह सनके २३ अष्ठि उदास हुशा किया चंदण वह बड़ा धनी था।

यिशुमे उसे अष्ठि उदास देखके कहा धनवानींगी २४ इंशवरके राज्यमें प्रबेश करना कैसा कठिन होगा। इंशवरके राज्यमें धनवानके प्रबेश करनें उंटका सूईँके २५ कषमेंसे जाना सहज है। सूनसहारांने कहा तब ता २६ किसका चाला है। सकता है। उसने कहा जै वार्तें २७ मनुष्योंसे अन्नहारी हैं। तो इंशवरसे हो सकती हैं।

पिटरने कहा देखिये हम लोग सब कुछ होड़को साध- २८ के पीछे है। लिये हैं। उसने उसने कहा में तुमसे सच २८ कहता हूं कि जिसने इंशवरके राज्यके जिये पर वा माता पिता वा भाइयों वा स्त्री वा लड़कींगी त्यागा
20 है। ऐसा कोई नहीं है जो इस समयमें बहुत गुण अधिक चार परलोकमें अनन्त जीवन न पावेगा।
21 यीशुने बारह शिष्योंको लेकर उनसे कहा देखा हम यिहूदीनको जाते हैं चार जो कुछ मनुष्यके पुत्रके विषयमें भविष्यद्वातावशिष्टे लिखा गया है सा सब पूरा किया जायगा। वह चार देखियोंके हाथ सांपा जायगा चार उससे ढूंढू चार अपमान किया जायगा चार वे उसपर पूर्ण। चार उसे कोई मारके घाट करे चार वह तीसरे दिन जी उठेगा। उन्होंने इस बातमें कोई बात न समकी चार यह बात उनसे गुण रही चार जो कहा जाता था सा वे नहीं बुझे थे।
23 जब वह यिरोहा नगरके निकट आता था तब एक अन्या मनुष्य मार्गकी चार बैठा भीख मांगता था।
24 जब उसने सुना कि बहुत लोग साइसे जाते हैं तब पूछा यह क्या है। लोगने उसका बताया कि यीशु नासरी जाता है। तब उसने पुकारके कहा है यीशु दाजुदके सत्तान मुक्तपर दया कोजिये। जो लोग आगे जाते थे उन्होंने उसे डांटा कि वह चुप रहे परन्तु उसने बहुत अधिक दुःख दाजुदके सत्तान मुक्तपर दया कोजिये। तब यीशु खड़ा रहा चार उसे अपने पास लानेकी आज्ञा किये चार जब वह निकट आया तब उससे पूछा। तु क्या चाहता है कि मेरे तेरे लिये कहाँ।
26 वह बैठा है प्रभु में अपनी दूषित पाज। यीशुने उससे कहा अपनी दूषित पा तेरे बिश्वासने तुम्हें चंगा किया है। चार वह तुरन्त देखने लगा चार इश्वरकी स्तुति
यीशु यिरीहामे प्रवर्तित करके उसकी बीचसे हीके जाता था। श्रीर देखा जक्कूई नाम एक मनुष्य था जो कर उगाहनेहरूका प्रधान था श्रीर वह धनवान था। वह यीशुका देखने चाहता था कि वह श्रीमान मनुष्य हैं परन्तु भिड़के कारण नहीं सका क्योंकि नाता था। तब जिस मागसे यीशु जानिपा था उससे वह अभी दूर होके उसे देखनेकी एक गुलाबी बुझुपर बच्चा। जब यीशु उस स्थानत था तब उपर दूरपृष्ठ कर उसे देखा श्रीर उससे कहा है जक्कूई शीघ्र उतरा श्री क्योंकि चाज़ मुखी तेरे घरमे रहना होगा। उससे शीघ्र उतरके झानसे उसकी पहुनई किये । यह देखके नाम चाल खुंडखुंड़के बाले वह ता पापी मनुष्यके यहाँ पाहन होने गया है।

जक्कूईं खड्डा हो प्रभुसे कहा है प्रभु देखिये में अपना श्राय धन कंगालेको देता हू हुआ श्रीर यदि मूटे दूरपृष्ठ लगाके विस्ते कुछ ले दिया है ता चैगुमा फेर देता हू। तब यीशुके उसकी कहा चाज़ इस घरानेका चा भाषा हुआ, हसलीये कि यह भी इब्राहीमका संतान है। क्योंकि मनुष्यका पुक्क नेये हुएको दूर हुआ श्रीर बचाने श्राया है।

जब लोग यह सुनते थे तब वह एक दूरिर्दात्म भी कहने...
लगा इसैँही कि वह यिहूदी निकट था और उसके समक्ष थे कि इशारक राज्य तुरन्त प्रगट हो गा।
12 उसने कहा एक कुलीन मनुष्य टूट देखकर जाता था।
13 कि राजपत्र पाके फिर झावे। और उसने झापने दर्शित- ने दसका बुलाके उन्हें दस माह से देखके उनसे कहा जबलों।
14 मे न झावे तब जांमा झापा करो। परन्तु उसके नगरके निवासी उससे बड़े रखते थे। और उसके पूछे यह सन्देश था कि हम नहीं चाहते हैं कि यह हमारे राज्य करे। जब वह राजपत्र पाके फिर झापा तब उसने उन दासिंके जिन्हें रोके दिये थे। झापने पास बुलानेकी झापा फिरे जिसे वह जाने कि किसने ज्ञानसा झापा किया है। तब पहले झापे कहा है प्रभु झापकी मेहर।
15 से दस माह लाभ हुई। उसने उससे कहा यह है उतम दास तू जाने बैठिएं विश्वासधिक प्राप्त दस
16 नगरांपर झापकी अधिकारी है। दूसरे झापे कहा है प्रभु
17 झापकी मेहरसे पांच मेहर लाभ हुई। उसने उससे भी कहा तू भी पांच नगरांपर प्रधान है। तीसरे झापे कहा है प्रभु देखिए क्षापकी मेहर जिसे मैंने संगवा में
18 घर रखा। क्षापी में क्षापे ठहरा था इसैँराने कि क्षाप कठार मनुष्य हैं जा क्षापने नहीं धरा से। उठा लेते हैं।
19 क्षापर जो झापने नहीं बोया से लवते हैं। उसने उससे कहा है दुभु दास में तरह सुंहसे तुफी दाशी ठहरांजगा।
20 तू जानता था कि मैं कठार मनुष्य हूं जा मैंने नहीं धरा से। उठा लेता हूं। क्षापर जो मैंने नहीं बोया से लवता
21 हूं। ता तूने नेरी रोके काटिंग क्यों नहीं दिये क्षाप
में चाहे उसे व्याज समेत ले लेता। तब जो लोग निकट ६४
खड़े थे उसने उन्हें से कहा वह मोहर उससे लेखा श्रीर
जिस पास दस मोहर हैं उसका टेका। उन्होंने उससे २६
कहा है प्रभु उस पास दस मोहर हैं। मैं तुमसे कहता २८
हूं जो कोई रखता है उसके श्रीर दिया जायगा परन्तु
जा नहीं रखता है उससे जो कुछ उस पास है सा भी
ले लिया जायगा। परन्तु मेरे उन वैरियोंका जा २०
नहीं चाहते थे कि में उन्हें राज्य कहां यहां लाके
मेरे सामने वध करू।

जब यीशु यह बाति कह चुका तब यिष्क्ष्मोको जाते २८
हुए भागी बढ़ा। श्रीर जब वह जैन नाम परबंतके २९
निकट बैठफंगी श्रीर बैठिया गांवों पास पहुंचा तब
उसने अपने शिष्योंसे दाका यह कहके भेजा। कि जा ३०
गांव सन्नुबहू है उसमे जाओ श्रीर उसमे प्रवेश करते हुए
तम एक गद्दके बड़ेके। जिसपर कभी कोई मनुष्य नहीं
बढ़ा बंध हुए पासोंगे उसे खोलके लाया। जा तुमसे ३१
कहाँ पूरे तुम उसे किंब कहते हैं ता उससे यू कहा
प्रभुको इसका प्रयोजन है। जा भेजे गये थे उन्हें जाके ३२
जैसा उसने उससे कहा वैसा पाया। जब वे बड़ेके ३३
खोलते थे तब उसके स्वामियोंने उससे कहा तम बड़े
किया खोलते हो। उन्हें न खाया प्रभुको इसका प्रयोजन ३४
है। ता वे बड़ेके यीशु पास लाये श्रीर अपने कपड़े ३५
उसपर डालके यीशुको बैठाया। ज्यों ज्यों वह भागी बढ़ा ३६
त्यां त्यां लोगोंने अपने अपने कपड़े मार्गमें बिठाये। जब ३७
वह निकट खाया इथात जैन परवंतके उतारलों पहुंचा
तब शिष्योंकी सारी मंडली शानन्दित हैं सब शारच्चयं
कर्मांके हिये जो उन्होंने देखि थे बड़े शब्दसे इश्वरकी
स्तुति करने लगी . कि धन्य वह राजा जो परमेश्वरके
नामसे ज्ञाता हैं . स्वर्गमें श्रांति धीर सबसे जंचे स्थानमें
गुणानुबाद होय । तब भीड़में कि तने फरीशी लोग
उससे बाले हे गुह अपने शिष्योंका हांटिये । उससे
उसी उत्तर दिया कि मैं तुमसे कहता हूं जा थे लाग
पुर रहे तो पत्यर पुकार उठिए ।
जब वह निकट आया तब नगरको देखके उसपर
रोया . धीर कहा तू भी अपने कुशलकी बातें हां अपने
इस दिनमें भी जो जानता । परमुज अब वे तेरे नेचांसे
छिपी हैं । वे दिन तुफ़फ़र आवेंगे कि तेरे शाह तुफ़फ़र
भाई बांधिये धीर तुम्हें घर रंगे धीर चारे धीर रोक
रखेंगे । धीर तुफ़फ़र तेरे बालोंका मिट्टी-
में मिलावेंगे धीर तुफ़फ़र पत्यर पत्यर न छाड़ंगे
क्योंकि तुम्हे वह समय जिसमें तुफ़फ़र दूषि जिंदे
न जाना ।
तब वह मन्दिरमें जाके जो लाग उसमें बेचते क्षी
मेल रहते थे उन्हें निकालने लगा । धीर उनसे बीला
लिखा है कि मेरा घर प्रार्थनाका घर है । परमेसु तुमसे
उसे डाकूदियोंका शिख बनाया है । वह मन्दिरमें प्रतितिम
उपदेश करता था धीर प्रधान याजक धीर अध्यायक
धीर लोगोंकी प्रधान उसे नाश करने चाहते थे । परमुज
नहीं जानते थे कि क्या करें क्योंकि सब लाग उसको
सुननेका लैलाने थे ।
20 बीसवां पढ़ाई

1 यीशुका प्रधान याज्ञकों को निष्ठा करता। 5 कुष्ठ मालियांको बुझाना। 20 यीशुका कर देने के विषयमें करीष्टिकों को निष्ठा करता। 27 दी उनके विषयमें सुझावकों को निष्ठा करता। 41 अपने पदार्थों के विषयमें लोगों को निष्ठा करता। 45 बाह्यबाह्योंको वेष प्राप्त करता।

उन दिनोंमें एक दिन जब यीशु मन्दिरमें लोगोंको उपदेश देता श्रीर सुसमाचार सुनाता था तब प्रधान याज्ञक श्रीर अध्यापक लोग प्रार्थिलोंको संग निकर जाये। श्रीर उससे बोले हमसे कह तुम्ही ये काम करने-का कैसा अधिकार है अथवा कौन है जिसने तुम्हीको यह अधिकार दिया। उसने उनकी उत्तर दिया कि मैं भी तुमसे एक वात पूछूंगा मुफ्ते उत्तर देशा। योहनका बप- तिसमा देना कथा स्वर्गकी अथवा मनुष्योंकी श्रारसेहुस्हा। तब उन्होंने अपसमें विचार किया कि जो हम कहं स्वर्गकी श्रारसेता वह कहेगा फिर हमने उसका बिहार वों नहीं किया। श्रीर जो हम कहं मनुष्योंकी श्रारसेता सब लोग हमें पत्थरवाह करिए। किवं बे निश्चय जानतें हैं कि योहन मारेव्वुज़का था। सो उन्होंने उत्तर दिया कि हम नहीं जानते वह कहने हुस्हा। यीशुने उनसे कहा ता मैं भी तुमकी नहीं बताता हूँ कि मुफ्ते मे काम करनेका कैसा अधिकार है।

तब वह लोगोंसे यह दूषण्त कहने लगा कि किसी मनुष्यने दाखकी बारी लगाई श्रीर मालियांकी उसका ठीका दे बहुत दिनों परदेशको चला गया। समयमें उसने मालियांके पास एक दासकी भेजा किवं वे दाखकी
बारीका कुछ फल उसकी देवें परल्लु मालियोंशे उसे मारा-
91 के कुछ हाथ फ़ेर दिया। फिर उसने दूसरे दासके मेजा
शैर उन्हें उसे भी मारके शैर धन्मान करके कूद्दे
92 हाथ फेर दिया। फिर उसने तीसरे के मेजा शैर उन्हें नि-
93 उसे भी घायल करके निकाल दिया। तब दासकी
बारीका स्वामीने कहा मैं क्या कहूं। भें अपने प्रिय पुत्रकी
में कहा जाने वे उसे देखके उसका शादर करेंगे।
94 परल्लु माली लोग उसे देखके बापसमें बिचार करने
लगे कि यह ता उसी उसी हम उसे मार दालें
95 कि उसी उसी हमारा है जाय। शैर उन्हें उसे
देखने दासकी बारीसे बाहर निकालके मार दाला। इसलिये
96 दासकी बारीका स्वामी उन्हें से का करेगा। वह श्यामे
इन मालियोंशे नाम करेगा शैर दासकी बारी दूसरे शैर
हाथ देगा। यह सुनके उन्हें उसे इस नहीं होगा।
97 उसके उन्हांपर दूसरा दे कहा तो धम्मपुस्तकमें इस
बचनका अर्थ क्या है कि जिस शैरकी भवहोने
98 निकम्मा जाना वही अनिव निरा हुआ है। जा कोई
उस पत्थरपर गिरेगा सा चूर है। जायगा शैर जिस
99 किसीपर वह गिरेगा उसकी प्यास दालेगा। प्राधान
याज्ञकों शैर धन्मानकें उसी घड़ी उसपर हाथ बढ़ाने
चाहा कोई जानते थे कि उसने हमारे बिच्छु यह
दृष्टान्त कहा परल्लु वे लोगसे देर।
20 तब उन्हें दांव ताकवे मेजे भेंटियोंके मेजा जो बलसे
अपनेके धर्मी दिखावें इसलिये कि उसका बचन पकड़ूं
शैर उसे देशाध्यक्षके प्राण शैर आधिकारमें सांप देशें।
उन्होंने उससे पूछा कि है गुरु हम जानते हैं कि आप २९ यथार्थ कहते श्रृंगार सिखाते हैं श्रीर प्रसंगात्र नहीं करते हैं परन्तु ईश्वरका मार्ग सत्यतासे बताते हैं। क्या कैसर- २५ चो का देना हमें उचित है शायद नहीं। उसने उनकी २५ चतुराई बुक्के उनसे कहा मेरी परिदृश्या किंग करते हैं।
एक मुक्ती मुम्मे दिखाओ। इसपर किसकी मूर्ति श्रीर २४ छाप है। उन्होंने उत्तर दिया कैसरको। उसने उनसे २५ कहा तो जा कैसरका है सा कैसरको देशा श्रीर जो ईश्वरका है सा ईश्वरके देशा। वे लोगांके साथ० २५ उसकी बात पकड़ न सके श्रीर उसके उत्तरसे सच्चाहित हो चुप रहे।
सदृशी लेंगे भी जो कहते हैं कि मृतकांका जी उठना २५ नहीं होगा उन्होंने कितने उस पास जाये श्रीर उससे पूछा। कि है गुरु सबसे हमारे लिये लिखा कि यदि २५ किसीका भाई अपनी स्त्रीकी रहते हुए नि:सन्तान मर जाय तो उसका भाई उस स्त्रीसे विवाह करे श्रीर अपने भाईके लिये बंश खड़ा करे। सा सात भाई थे। पहिला २५ भाई विवाह कर नि:सन्तान मर गया। तब दूसरे भाईने ३० उस स्त्रीसे विवाह किया श्रीर वह भी नि:सन्तान मर गया। तब तीसरे उससे विवाह किया श्रीर वैसाहि ३१ जी मायोंने। पर वे सब नि:सन्तान मर गये। सबके ३२ पीछे स्त्री भी मर गई। से मृतकांके जी उठने पर वह इस उनमेंसे किसकी स्त्री होगी क्योंकि सातांने उससे विवाह किया। यीसुने उनको उत्तर दिया कि इस लोकसन्तान ३४ विवाह करते श्रीर विवाह दिये जाते हैं। परन्तु जी ३५
लोग उस लोकमें पहुंचने श्रार मृतकोंमें से जो उठनेके शंय गिने जाते वे न बिवाह करते न बिवाह दिये जाते इद हैं। श्रार ने वे फिर मर सकते हैं क्योंकि वे स्वर्गदूतोंके समान हैं श्रार जो उठनेके सत्तान होनेसे ईश्वरके 30 सल्तनत हैं। श्रार मृतक लोग जो जी उठते हैं यह बात मूसाने भी क्योंकी कथामें प्रगट किये हैं कि वह परमेश्वरकी इनाहीमका ईश्वर श्रार इसहाकका ईश्वर
38 श्रार याकूबका ईश्वर कहता है। ईश्वर मृतकोंका नहीं परलो जीवतांका ईश्वर है क्योंकि उसकी लिये 35 सब जीते हैं। अध्यापकोंमें कितनेंने उत्तर दिया कि 30 हे गुरु ज्ञानेवर बाच्चा कहा है। श्रार उन्हें फिर उससे कुछ पूछनेका साहस न हुआ।
39 तब उसने उनसे कहा लोग कवित्त कहते हैं कि 42 श्रीर दाजदका पुत्र है। दाजद ज्ञानेवर गीतांके पुस्तकमें 44 कहता है कि परमेश्वरने भरे प्रभुसे गहा। जबलों 47 में तेरे शबुश्रींको तेरे चरणको पीठी न बनाउं तबलों 
48 तू मेरी दृढ़नी श्रार बेठ। दाजद तौ उसे प्रभु फिर वह उसका पुत्र कवित्त है।
45 जब सब लोग सुनते ये तब उसने ज्ञानेवर शिशुंसे 48 हे कहा। अध्यापकोंसे चैकस रहा जो लंबे बस्त पाहिने हुए फिरने बाहते हैं श्रार जिनको जानारिंभि नमस्कार 
श्रार सभीके घरांसे उंचे जासन श्रार जेवनारिंभि उंचे 50 स्थान प्रिय लगते हैं। वे विधवाश्रींके घर खा जाते 
हैं श्रार बहानाके लिये बढ़ी बेरलों प्राप्ते करते हैं। वे शाहीक दंड पांव्ये।
21 एक दृष्टि अद्यावथः प्राप्ते ।

1 एक बिधवाको दामको प्राप्तेः। 5 मन्दिरको नाग होनेको भविष्यवादीः। 6 यस समयको चिन्ता। 12 विषयको अप्रकट हुँगा। 20 विषयको लोका बढ़ा कम्प्रार्थीः।
21 मनुष्यके पुत्रके बतानेको बगानेः। 25 गौरवके गुरुका वृहत्तृत्त्वः। 28 यशेत दर्शनका संपर्यः।

यीतुने जीते उताकि धनवानीको अपने अपने दान 1 मंदिरमें दालते देखा। जीते उसके एक कूलकाल 
बिधवाकी भी उसमें दो बदाम दालते देखा। तब 5 उसके कहा में तुमसे सच कहता हूँ कि इस कूलकाल 
बिधवानी सभीसं साधिक हाला है। क्योंकि इन सभी अपनी बढ़तीमें इंश्वरकी चढ़ाई हुई बस्तुओमें कुछ 
कुछ हाला है परन्तु इसके अपनी घरतीमें अपनी 
सारी जीविका हाली है।

जब जितने लोग मन्दिरके देखावे में बालते थे कि 5 
वह सुंदर पत्थरों में जीते चढ़ाई हुई बस्तुओंसे संबारा 
गया है तब उसके कहा। यह सब जो तुम देखते है। 6 
वे दिन जीविते जिन्हें में पत्थरपर पत्थर भी न चढ़ा 
जायगा जो गिराया न जायगा।

उन्हें उसके पूरा यह गुरू यह कब होगा जीते यह 5 
बातं जिस समयके ही जीविते उस समयका क्या चिन्त 
होगा। उसके कहा जीविते रहे कि भरमाये न जाये। 8 
क्योंकि बहुत लोग में नामसे जीवि रहे में वही हूँ 
जीते समय निकट जीविते है। तो तुम उनके पीछे मत 
जायें। जब तुम चढ़ाइये जीते हुलोड़की मची बुनी 5 
तब मत घमराये क्योंकि इनका पालिके होना आवश्य 
है पर अन्त तुलना नहीं होगा। तब उसके उन्हेंसे 10
कहा देश देशके श्रीर राज्य राज्यके बिहस्तु उठेंगे।

१२ श्रीर अनेक स्थानोंमें बड़े मुहीस्ताल श्रीर चकाल श्रीर मारियां हैंगी श्रीर भर्यकर लक्षण श्रीर चकालाशे बड़े बड़े चिन्ह प्रगट हैंगी।

१२ परन्तु इन सभीसे पहली लेयु तुम्हें लग खत्म नहीं हाथ बड़ावंगे श्रीर तुम्हें सताबंगे श्रीर मेरे नामके कारण सभाके घरों श्रीर बन्दीगौर्नें रखवाबंगे श्रीर राजाश्रीं

१३ श्रीर घाट लेखी ले साथेंगे। पर इससे तुम्हारे लिये साह्य है। जायगी। सा अपने अपने मनमें ठहरा रखे क्ष दे उत्तर देने लिये जाने से चिन्ता न करेंगे।

१५ क्योंकि में तुम्हें ऐसा बचन श्रीर ज्ञान देंगा कि तुम्हारे सब विरोधी उसका खड़न ज्ञान सामना नहीं कर सकेंगे। तुम्हारे माता पिता श्रीर भाई श्रीर कुरुक्षेत्र श्रीर दिन लेगा तुम्हें गळ याबंगे श्रीर तुम्हें कितनेंको

२० घात करवायींगे। श्रीर मेरे नामके कारण सब लेगा तुम-१८ से बैर करेंगे। परन्तु तुम्हारे सिरका एक बाल भी नहीं नहीं न होगा। अपनी धीरतासे अपने प्रायेंको रक्षा करो।

२० जब तुम यियुशलेलीभो सेनाश्रीं घरे हुए देखा तब जाना कि उसका उजड़ जाना निकट क्षाय है।

२१ तब जो यियुशदियांमें हाँ सा पहाड़ीपर भागे। जो यियु-शलेलीभो बीचमें हाँ सा निकल जावें श्रीर जो गांवांमें

२२ हाँ सा उसमें प्रवेश न करें। क्योंकि यही टंड देनेंके दिन हाँगा कि धर्मपुस्तककी सब बातें पूरी हाँव।

२३ उन दिनांमें हाय हाय गन्नवातियां श्रीर दूध जिलाने-वालियां क्योंकि देशमें बड़ा लेश श्रीर इन लोगांपर
शोध होगा। वे खड़की धारते मारी पड़ेगी शीर बस २५
देशके लोगोंमें बंधुवे किये जायगे शीर जबलों अन्य-
देशीयोंका समय पूरा न होवे तबलों फिल्सलीम
अन्यदेशीयोंसे रैंडा जायगा।

सूर्य शीर चांद शीर तारोंमें चिन्ह दिखाई देंगे २५
शीर पृथिवीपर टेक देशके लोगको संकट शीर घबराहट
होगी शीर समुद्र शीर लहरोंका गर्जना होगा। शीर नई
संसारपर ज्ञानीहरू बाताको भयसे शीर बार देखनसे
मनुष्य मृतकको ऐसे हो जायगे क्याँकि ज्ञातको
सेना डिग जायगी। तब वे मनुष्यको पुछको पराक्रम २०
शीर बड़े ऐश्वर्यसे मेघपर चाते देखिंगे। जब इन २०
बाताका ज्ञानम होगा तब तुम सीधे होके अपने सिर
उठाए क्याँकि तुमहारा उधार निकट जाता है।

उसने उत्तरसे एक दृष्टिकोण भी कहा कि गुजरको वृक्ष २५
शीर सब देखिए। जब उनको कोई स्थल निकलतो २०
हैं तब तुम देखकर ज्ञात होता है या कि धुपकाला शीर
निकट है। इस रीतिसे जब तुम यह वात होते देखिंगे ३१
तब जानो कि ईश्वरको राज्य निकट है। मैं तुमसे सच ३१
कहता हूं कि जबलों सब बातें पूरी न हो जायं तबलों
इस समयके लोग नहीं जाते रहेंगे। ज्ञातको शीर ३५
पृथिवी टल जायंगे परन्तु मेरी बातें कभी न रहेंगी।
अपने विषयमें सचेत रहें। ऐसा न हो कि तुमहारे ३४
मन अफराई शीर मतवालपन शीर सांसारिक चिंता-
श्रोंसे भारी हो जायंगे शीर वह दिन तुम्हारे सचांचक
शा पहुंचे। क्याँकि वह फंदेकी नाई सारी पृथिवीकी ३५
सब रहनेहरौंपर आवेगा। इसलिये जागते रहे चैत
नित्य प्रारंभना करो कि तुम इन सब ज्ञानेरा बातेंसे
बचनेको चैत मनुष्यको पुनर्के सन्मुख खड़े होलेको योग्य
गिने जाओ।

यीशु दिनका मन्दिरमें उपदेश करता था चैत
रातको बाहर जाके जैतून नाम पर्नेतपर टिकाता था।
चैत ताके सब लग उसकी सुननेको मन्दिरमें उस
pास जाते थे।

22 बाईसवाँ पाठ।

1 यीशुको बाध करनेका परमार्थ । 2 रिषुका विषालाघात करना । 3 गीताको निस्तार पाठको भेल खान। 4 उनको संग यीशुका भेल
करना । 5 गीताका निस्तार यीशुका भेलन बनाना। 6 उनको संग यीशुका भेलन
करना । 7 अनुमोदका निस्तार पाठका भेलन बनाया। 8 चैत आकारको निस्तार यीशुका भेलन
करना । 9 देव देवोका उपदेश । 10 पिताको पितामह सुकार जानेकी माओ देशमा । 11 देव
पिताको पितामह मन्दिरमें उपदेश । 12 पिताको पितामह सुकार जाना। 13 उसका
प्रकट बनाना । 14 उसका महामायाको पास ले जाना और पिताका उपदेश
सुकार जाना। 15 उसका प्रयास करना और बाधको विषाल ठहरना।

1 खण्डमेरी रोटीका पठि जो निस्तार पठि कहावता

2 है निकट जाया। चैत प्रधान याजक चैत धर्मायक
लाग खैज करते हे कि यीशुको क्या चाहा दालैं
क्योंकि वे लेरगाँसे दरते थे।

3 तब श्रीमानका विषुदामे जो इस्करियाती कहावता
है चैत बारह शिप्लैंमें गिनी जाता था प्रवेश चिंया।

4 उसने जाकेप्रधान याजकों चैत पहले जोंके अध्ययनको
संग बातचीत किँई कि यीशुको क्योंक्रां उल्लेखको हाथ
पकड़वाचे। वे आनन्दित हुए चैत स्पष्ट ठीके उसके उससे
नियम बांधा। वह अंगोकार बालक सब बिना हुलुड़के
उनहांके हाथ पकड़वाचे क्रांसर ढूंढने लगा।

32
तब श्यामौरी राटेरी पवत्वका दिन जिसमें निस्तार पवत्वका मेसा मारता उड़िया था रा पहुँचा। श्रीर यीशुने पितार श्रीर येरहनका यह कहके मेजा कि जाके हमारे लिये निस्तार पवत्वका भोजन बनाओ जो कि हम खायें। वे उससे बोले शाप कहां चाहते हैं कि हम बनावें। उसने उनसे बहा देखी जब तुम नगरमें प्रवेश करी तब एक मनुष्य जलका घड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा। जिस घरमें वह पैठे तुम उसके पीछे उस घरमें जाओ। श्रीर उस 11 घरके भागमें से कहा गुरु तुमसे कहता है कि पाहुन- शाला कहां है जिसमें मैं अपने शिष्योंसे संग निस्तार पवत्वका भोजन खाउं। वह तुम्हें एक सजी हुई बड़ी 12 उपरोची किरारी दिखावेगा वहाँ तैयार करो। उन्हें 13 जाके जैसा उसने उल्लेख कहा तैसा पाया श्रीर निस्तार पवत्वका भोजन बनाया।

जब वह घड़ी पहुँची तब येशु श्रीर बाहरहाँ प्रेरित 14 उसके संग भोजनपर बैठे। श्रीर उसने उससे कहा मैंने यह निस्तार पवत्वका भोजन दुःख भोगनेके पहिले तुम्हारे संग खानेके बड़ी खालसा किया। कोईके में तुमसे 15 कहता हूं कि जबलों वह इंद्रबरके राज्यमें पूरा न होवे तबलों में उसे फिर कभी न खाजगा। तब उसने कदरा 17 ले धन्य मानके कहा इसकी लेखा श्रीर शापसमें बांटे। कोईके में तुमसे कहता हूं कि जबलों इंद्रबरके 18 राज्य न खावे तबलों में दाख रस कभी न पीजगा।

फिर उसने रातरी ले के धन्य माना श्रीर उसे तोड़के 19 उनका दिया श्रीर कहा यह मेरा देह है जो तुम्हारे
लिये दिया जाता है। मेरे स्मरणकृं लिये यह किया
20 करूँ। इसी रूस्ती उसने वियारीवके पीटे कोटारा भी
देखे कहा यह कोटारा मेरे लेहूपर जा तुम्हारे लिये
बहाया जाता है नया नियम है।
21 परन्तु देखो मेरे पकड़वानेहरिका हाय मेरे संग
22 मेजपर है। मनुष्यका पुष्प जैसा ठहराया गया है वैसा-
ही जाता है। परन्तु हाय वह मनुष्य जिससे वह पकड़-
23 वाया जाता है। तब वे झापसमें विचार करने लगे
कि हममें ही नील है जो यह काम करेगा।
24 उन्हें ही यह बिवाद भी हुआ कि उनमें ही नील बड़ा
25 समक्षा जाय। यीशुने उनसे कहा अन्यदेशियके राजा
उन्हें जाने प्रभुता करते हैं और उन्हें और भिक्की लाएं
26 परायंकारी कहावतें हैं। परन्तु तुम ऐसे न होऊँ। पर
जो तुम्हें बड़ा है सो बोटकी नाई होि और जो
27 प्रधान हैं। सा सेवककी नाई होि। नील बड़ा हैं भोजनपर
बैठनेहरा भावा सेवक। क्यों भोजनपर बैठनेहरा बड़ा
नहीं है?
28 तुम्हारी हो जो मेरी प्ररोज्यावरों मेरे संग रहे हो।
29 और ऐसे मेरे पिताने मेरे लिये राज्य ठहराया है। तैसा
30 मे तुम्हारे लिये ठहराता हूँ। कि तुम मेरे राज्यमें मेरी
मेजपर खायो और पीया और संहासनें पर बैठके
इत्यादीवे बारह कुलांका न्याय करो।
31 और प्रमुखने यह है शिम्मोन है शिम्मोन देख शिताने
तुम्हें मांग लिया है। इसलिये कि गौड़की नाई तुम्हें फर रखे।
32 परन्तु मैंने तेरे लिये प्राणेना बिड़ते हैं। कि तेरा बिश्वास
घर न जाय झैय झब तू फिरे तब झपने भाइयोंका सियर कर। उसने उससे कहा है प्रभु में झपने संग इस बंदीगृहमें जानेका झैय मरलेका तैयार हूं। उसने इस कहा है पितर में तुमसे कहता हूं कि झाजही जबलें तू तीन बार मुझे नकारके न कहे कि में उसे नहीं जानता हूं तबलों मुझे न बोलेगा।

झैय उसने उससे कहा बब में तुम्हें बिन झैली है झैय बिन झीलो। बिन जूते भेजा तब क्या तुमको किसी बस्तुकी घटी हुई। वे बेले विसूकी नहीं।

उसने उससे कहा परन्तु झब जिस पास झैली हो सा इसे ले ले झैय भैसिंघा झौली भी झैय जिस पास झडू न होय सा झपना बस्त बेचके एकका भेजा लेवे।

किंकि में तुमसे कहता हूं झब अवश्य है जि धर्ममपुस्तकका ३० यह बचन भी कि वह कुकर्मिेंको संग गिना गया मुखपर फूरा किया जाय किंकि मेरे विशयमंकी बातें सम्पूर्णा फैलेनपर हैं। तब वे बेले हे प्रभु देखिये यहां कै दं झडू हैं। उसने उससे कहा बुढत है।

तब यीथु बाहर निकलके झपनी रितिके अनुसार ३० जीतून पन्नेंतपर गया झैय उसके शिश्य भी उसके पीछे हा लिये। उस स्थानमें पहुंचके उसने उससे कहा ९० प्रायोणा करे कि तुम परिश्वा में न पड़ा। झैय वह झाप ३१ देला फोकैंके टामिन उससे भाला गया झैय घुटने टेकरी प्रायोणा किई। वि हे पिता जो तेरी इच्छा हूय है ३२ तो इस करोरके मेरे पाससे ठाल दे तैभी मेरी नहीं पर तेरी इच्छा पूरी हो। जाय। तब एक दूत उसे सामर्थ्य ३५
44 टनेको स्वर्गसे उसका दिखाई दिया। श्रीर उसने बड़े संज्ञानमें होके अधिक घटङ्गारिसे प्रार्थना किए श्रीर उसका पसीना ऐसा हुआ जैसे लाहूके बन्ने जा भूमिपर गिरे।
45 तब वह प्रार्थनासे उठा श्रीर फय धनपे शिशुयको पास क्षा
46 उन्के शक्कुके मारे सोते पाया। श्रीर उनसे कहा किया
सोते हो उठा प्रार्थना करो कि तुम परीक्षामें न पड़ा।
47 वह बोलताही था कि देख बहुत लोग ज्ञाये श्रीर
बारह सियामें एक शिशु जिसका नाम यिहूदा था
उनके ज्ञाये ज्ञाये चलता था श्रीर यीशुका चूमा लेनेका
48 उस पास ज्ञाया। यीशुके मक्कसे कहा है यिहूदा क्षा तू
49 मनुष्यके पुत्रका चूमा लेके पकड़वाता है। यीशुके संगी
यांने जब देखा कि क्षा हानेवाला है तब उससे कहा है प्रभु
50 क्षा हम खड़से मारें। श्रीर उनमें एकने महायाजकके
दासका मारा श्रीर उसका दोहिना कान उड़ा दिया।
51 इसपर यीशुने कहा यहांतक रहने दे। श्रीर उस दास
52 का कान बुझे उसे चंगा किया। तब यीशुने प्रधान याज
का श्रीर मन्दिरके पहुंचने अधिकांश श्रीर प्रार्थनानि
जो उस पास ज्ञाये थे कहा क्षा तुम जैसे हाकूपर खड़
53 श्रीर लाठीयां लेके निकले है। जब में मन्दिरमें प्रति
दिन तुम्हारे संग था तब तुम्हारे मुक्तए हाथ न बढ़ाये
परन्तु यही तुम्हारी घड़ी श्रीर संघकारका पराक्रम है।
54 वे उसे पकड़के ले चले श्रीर महायाजकके घरमें लाये
55 श्रीर पितर दूर दूर उसके पीछे हा लिया। जब वे
संगीनमें स्मार सुलगाके एकटे बैठे तब पितर उन्होंके
56 बीचमें बैठ गया। श्रीर एक दासी उसे स्मारके पास बैठे
देखकै उसकी श्रीर ताकरै बाली यह भी उसकी संग था। उसने उसे नकारकी कहा है नारी मैं उसे नहीं जानता ५० हूँ। बेही बेर पीछे दूसरने उसे देखके कहा तू भी ५८ उनमसे एक है। पितरने कहा है मनुष्य मैं नहीं हूँ। घड़ी एक बीते दूसरने दूहतासे कहा यह भी सचमुच ५५ उसके संग था किंतु वह गालीली भी है। पितरने ६० कहा है मनुष्य मैं नहीं जानता तू क्या कहता है। श्रीर तुरंत ज्यों वह रहा ल्यें मुगे बाला। तब प्रभुने ६१ मुह फेरके पितरपर दूभिः किंतु श्रीर पितरने प्रभुका बचन स्मरण किया कि उसने उससे कहा था मुगे के बालनें झारे तू तीन बार मुहसे मुकरेगा। तब पितर ६२ बाहर निकलके बिलक बिलक राया।

जी मनुष्य योशुका धरे हुए थे वे उसे मारकर ठट्टा ६३ करने लगे। श्रीर उसकी झांसी दांपती उसकी मुंहपर ६४ थपंढ़ मारके उससे पृथ्वा कि भविष्यदात्री बाल किसने तुभे मारा। श्रीर उन्होंने बहुतसी हमार निन्दाकी बारं देखूँ उसके बिस्तरमें कहीं। येहीं विहान हुआ ल्यें ल्ये- दूभी गांके प्राचीन श्रीर प्रधान याजक श्रीर ज्याथापणा ली क्युहू हुए श्रीर उसे झपनी न्यासामें लाये श्रीर बाले जो तू झीरूँ हैं तो हमसे कह। उसने उससे कहा ६० जो मैं तुमसे कहूँ ता तुम प्रतीति नहीं करेगी। श्रीर ६८ जो मैं कुछ पूछता ता तुम न उत्तर देशरापा न मुके झड़ीück। झबसे मनुष्यका पुच सवालकमान ईश्वरकी दिली ईग श्रीर बैठेगा। सभाने कहा तो क्या तू ईश्वरका पुच है। ६० उसने उन्होंने कहा तुम ता कहते हा कि मैं हूँ। तब ६१
उन्होंने कहा जब हमें साक्षीका श्रीर क्या प्रयोजन कीांकि हमने जापही उसके मुखसे सुना है।

23 तेछस्वां पढ़िै।

1. पीयुक्ता पिलातके फाश सेप्टा बना और पिलातका उसे विचार दर्ज करना।
2. पिलातका उसे खैरके पास मेजरा।
3. इसका होकरके गूढ़त करते रहै।
4. पिलात करनेवाली संबंधों में योजकी कमान।
5. तुमका खूबसूरत पढ़ाई जाना।
6. उसपर लेगिंका बदलना।
7. उसपर योजकी बहुत।
8. श्रीपुरा युक्ता और प्राच स्थाया
9. तुमका बच्चा बनना।
10. युजकी उसके काबरम रखना।

1. तब सारा समाज उठके योजकी पिलातकेप फास ले।
2. श्रीर उसपर यह कहके दैष लगाने लगा कि हमने यही पाया है कि यह मनुष्य लेगिंका बहकाता है। श्रीर अपनेकी धीमू राजा कहके वैसरकी कर देना
3. बर्तता है।
4. पिलातने उससे पूछा क्या तू पियहूदियांका राजा है।
5. उसने उसकी उत्तर दिया कि जापही ती कहते हैं।
6. तब पिलातने प्रक्ष वाजने श्रीर लेगिंके कहा।
7. इस मनुष्य में कुछ दैष नहीं पाता हूं।
8. परलूक उन्हें नाके दूर तांतिंसे कहा वह गालीलते लेके यहाँ सारे
9. पियहूदियांमें उपसेव करके लेगिंका उसकाया है।
10. पिलातने गालीलता नाम सुनके पूछा क्या यह मनुष्य मनुष्य
11. गालीलता है। जब उसने जाना कि वह हेरोदके राज्य-
12. हेरोदके पास मेजरा कि वह भी उन
13. दिनेंमें विष्फशलीमें था।
14. हेरोद योजकी देखके भांति
आशा हुई। उसने उससे बहुत नाते पूर्वी स्वर्नु पर्यंत उसने ५ उसकी कुछ उतार न दिया। श्रीर प्रधान यज्ञकृं श्रीर १० भध्याय्नलोकों खड़े हुए बड़ी धुनसे उसपर द्वार लगाये।
तब हेरादने अपनी सेनाके संग उसे नुच्छ जानकी ठठा ११ किया श्रीर महकिला बस्त पाहराके उसे पिलातकी पास फेरे भेजा। उसी दिन पिलात श्रीर हेराद जिन्हाँके १२ बीचमं आगेसे श्रद्धुता थी श्रद्धुसम्म मिठ कि हो गये।
पिलातने प्रधान यज्ञकृं श्रीर भध्याय्नलोकों श्रीर ले- १३ गांवका एकठौ बुलाके उन्हाँसे कहा। तुम इस मनुष्यका १४ लघुगांवा बहकानेहारा कहके मेरे पास लाये हो श्रीर देखा मैंने तुम्हारे सामने विचार किया है परंतु जिन बातें तुम इस मनुष्यपर दार स्वामि हो उन बातांके विषयमें मैंने उसमें कुछ दार नहीं पाया है। न हेराद- १५ ने पाया है की अंकित मैंने तुम्हें उस पास भेजा श्रीर देखा बधके योग्य बैद्ध क्राम उससे नहीं किया गया है। सो १६ में उसे बौढ़े मारके बौढ़ देजंगा। पिलातक्षो श्रवण भी १७ था थाको उस प्रभें एक मनुष्यका लघुगांवा लिये बौढ़ देवे। तब लेगा सब मितांके चिचाची कि इसका ले जाइये १८ श्रीर हमारे लिये बरबाकी बौढ़ दिनाज्ये। यही बरबाक १९ किसी बलबके कारण जी नगरमें हुआ था श्रीर नर- हिसाबे कारय बनदीगुहिमें डाला गया था। पिलात यी- २० शुक्री बौढ़नकी इचा कर लघुगांवे सिफर बैला। परंतु २१ उन्हाँने दुकारा कि उसे कृष्णपर बढ़ाइये कृष्णपर बढ़ाइये। उसने तीसरी बेर उससे कहा की उसने कीमतसे २२ बुराईं किंदै हैं। मैंने उसमें बधके योग्य बैईं दार नहीं
पाया है इसलिये में उसे कैहि मारके छोड़ देंगा।

23 परन्तु वे जंचे जंचे शब्दसे यह करके मांगने लगे बि

24 नहीं चढ़ाया जाय श्रीर उन्हेंके श्रीर प्रधान

25 याजकोंके शब्द प्रवल ठहरे। सो हिन्दुपाणे श्रीका दिके

26 भि उनकी बिन्तीके अनुसार किया जाय। श्रीर उसने

27 उस मनुष्यको जो बलखे श्रीर नरिसके कारण बन्दी

28 दिया श्रीर यीशुके उनकी इज़ियाप सांप दिया। जब वे

29 उसे ले जाते थे तब उन्हें निम्नान् नाम कुरीनी देशके

30 एक मनुष्यको जो गाँवसे झाोठा था पकड़के उसपर क्रूश

31 घर दिया कि उसे यीशुके पीछे ले चले।

32 लोगांकी बड़ी बड़ी उसके पीछे हो लिनई श्रीर बहुतेरी

33 स्तियां भी जा। उसके लिये छाती पीटती श्रीर बिलाप

34 करती थीं। यीशुने उन्हें के श्रीर फिरके कहा है

35 यिझ्लुमो के पुरियो मेरे लिये मत रोशी परन्तु अपने

36 लिये श्रीर अपने बालबंधके लिये राशी। केरि देखे दिन

37 ने जिनहोंने लग कहीं धन्य वे स्तियां

38 जो बांध हैं श्रीर वे गर्म जिन्हें लड़के न जानाये।

39 श्रीर वे स्तन जिन्हें दूध न पिलाया हैं। तब वे वे

40 पर्वतासे कहां लगने कि हमाँपर गिरा श्रीर टीके कि

41 हमें बाँधा। केरि जो वे हरे पेड़े यह कारते हैं तो

42 सुखीसे का किया जायगा। वे श्रीर दो मनुष्योंके भी

43 जब वे उस स्थानपर जो श्रापड़ी कहावता है पहुंचे

44 तब उन्हें वहां उसके श्रीर उन कुक्कमियांकी एककी
दृष्टि शीर्ष के दृश्य से बाहर शीर्ष कृष्णापर चढ़ने।
तब यीशु ने कहा है खिलावा उन्हें समझा कर क्यांकि वे नहीं जानते कहा करते हैं। शीर्ष उन्हें चित्रित करके उसके कापड़े बांट लिये।
लोग खड़े हुए देखते रहे शीर्ष भने शीर्ष दृष्टिकोण भी उनके साथ संग तटा कर कहा उसने सीराकेदा बचाया जा वह इंसान बुझा हुआ जन खोया है तो अपनके पर बचावे।
श्री जी भी उससे टटा करने का निकाल रखने उसे इस सिरका दिया। शीर्ष कहा जा तू मिहूर्दि को राजा है।
तो अपनेंजो बचा। शीर्ष उसके उपर में एक पत्थर भी था जो युनानीय शीर्ष रोमीय शीर्ष इब्राइय श्राब्द में लिखा है यह यह यहूदियों का राजा है।
जो कुक्मरी लगताने गये थे उसमें एकने उसकी निन्दा कर कहा जा तू खोया है तो अपनेंजो शीर्ष हमें कोई बचा। इस पर दूसरी उसे टटा कहा कहा जा तू इंसान रसा कुप दर्ता भी नहीं। तुर्काप ता वैसा ही दांड़ दिया जाता है।
शीर्ष हमें उम्मंजो नयाका रोटी से दिया जाता क्यांकि हम अपने कर्मों के योग फल भेंट देते हैं परन्तु इसने कांई श्राप चाल माइ नहीं किया है। तब उसने यीशु से कहा है तब जब श्राप अपने राज्य में श्राब्द तब मेरी सुध लीजिये। यीशु उससे कहा मे तुमसे सच कहता है कि अजह तू मेरे साथ स्वर्ग लोक में होगा।
जब दू दू पहरके निकाल हुआ तब सारे दृष्टि सीसे पहलों संधकार हो गया। सूर्यों श्राद्धियों हो गया है। शीर्ष मन्दिर का परदा बीचीसे फट गया। शीर्ष यीशु बड़े बड़े
शन्दसे पुकारकर कहा है पिता में अपना ज्ञात्मा तरे
47 हायमें सांपता हूं बीयर यह कहके प्राण त्यागा। जा हुआ था। से देखके शतपति से ईश्वरका गुणानुबाद कर
48 कहा निश्चय यह मनुष्य धम्मी था। बीयर सब ले जा
यह देखनेका एकून हुए वे जा कुछ हुआ था वे सा
49 देखके अपनी अपनी बाती पीटते हुए फिर गये। बीयर
योगुके सब चिन्हार बीयर वे स्त्रियाँ जो गालीलसे उसके
संग आईं थीं दूर खड़े ही। यह सब देखते रहे।
50 बीयर देखा युसफ नाम यिहूदियोंके चारिमायता
नगरका एक मनुष्य था जे मनती था। बीयर उतम बीयर
धम्मी पुरुष हीके दूसरे मन्त्रीयोंके बिचार बीयर क्रामें
51 नहीं मिला था। बीयर वह शाय भी ईश्वरके राज्यकी
52 बार जोहता था। उसने पिलातके पास जाके यीशुकी
53 लेख मांग दिए। तब उसने उसे उतारके चट्टौंके लपेटा
बीयर एक कबरमें रखा जो पत्थरमें बादी हुई थी। जिसमें
54 कईं कभी नहीं रखा गया था। वह दिन तैयारीका दिन
55 था बीयर विज्ञानवार समूह था। वे स्त्रियाँ भीजा गालील
से उसके संग आईं थीं पीछे हो। लिधे बीयर कबरके। बीयर
56 उसकी लेख बिचार करी गई उसके देख लिया। बीयर
उन्होंने बीयरके सुगन्ध दृष्य बीयर सुगन्ध तेज़ तैयार किया
बीयर आज़ादी ब्रुनसार विज्ञानके दिनमें विज्ञान किया।

24 चालीसवां पंचम।
1 शिफ्रोंका दूसरे श्रीके जो उत्तराखंडा मसावर सुनना बीयर शिफ्रोंका कह देना।
19 श्रीके भस्मांजलों जाने हए। दो। शिफ्रोंका। दर्शन देना बीयर। उनमें बालकों
करना। इस पिक्रांगों में शिफ्रोंका। दर्शन देना बीयर। उन्हें प्रेष करता। 50
स्त्रियाँ आता।
तब अठारहवें दिन बड़ी भीर वे स्त्रियां द्वारा उनके संग रहे एक द्वारा स्त्रियां वह सुगन्ध जो उन्होंने तैयार किया था लेकिन कब्जपर थाई। परन्तु उन्होंने पत्थरवोट कब्जपर सामने से लुढ़काया हुआ पाया। द्वारा भीतर जाके प्रभु यीशुकी लोग न पाई। जब वे इस बातके विषयमें दुबारा कर रहेंगे तब दूशिया दो पुरुष चमकते बस्त पाहिए हुए उनके निकट खड़े हो गए। जब वे इन गांवों में द्वारा धरतीकी के द्वारा मुँह कुचये रहेंगे तब वे उनसे बोले तुम जीते तके मृत्युकों की चर्चा क्या दूर्रात है। वह यहाँ नहीं हैं परन्तु जो उठा है स्मरण करो कि उसने गाली-जर्म रहते हुए तुमसे कहा। अवश्य है कि मनुष्यका पुष्प पापी ले गया है। हाथमें पकड़ता जाय द्वारा खुशपर घात किया जाय द्वारा तीसरे दिन जी उठे। तब उन्होंने उसकी बातांकी स्मरण किया। द्वारा कबरसे लौटके उन्होंने ग्यारह शिखरांकी द्वारा शीरा समेंकी यह सब बातें सुनाईं। महारम मदतनी द्वारा येताना द्वारा यादवकी माता। महारम द्वारा उनके संगकी द्वारा स्त्रियां थीं जिन्होंने प्रेमितांसे यह बातें कहाँ। परन्तु उनकी बातें उन्होंने ११ है जाँहानीसी समफ पड़ीं द्वारा उन्होंने उनकी प्रतीति न कियाँ। तब पितार उकी कब्जपर दौड़ गया द्वारा १२ कुचके केवल चूटे पड़ी हुई। दूनी द्वारा जी हुआ या उसने अपने मनमें अच्छा करता हुआ चला गया।

दूनी उसी दिन उनसे दो जन इम्माज नाम एक १३ गांवकी जो यीशुलियाँसे कैश चार एक पर था जाते थे। द्वारा वे इन सब बातांपर जी हुईं थीं जापसें बात- १४
२४ पढ़े ।]  
लूक ।  ॥६१  

२४ चीत करते थे । ज्यों वे बातचीत श्रीर विचार कर रहे त्यों यीशू श्रापहि निकट छाई उनके संग हो लिया ।  
२५ परन्तु उनकी दृष्टि ऐसी रोकी गई कि उन्हें उसको  
२६ नहीं चीन्हा । उसने उनसे कहा यह क्या बातें हैं जिन-  
पर तुम चलते हुए श्रापसमै बातचीत करते श्रीर उदास  
२७ होते हैं । तब एक जनने जिसका नाम ख़ुल्लया था  
उत्तर देकर उससे कहा क्या केवल तुही यिश्वाशोंमें  
हेता करके वे बातें जी उसमें इन दिनोंमें हुई हैं नहीं  
२८ जानता है । उसने उनसे कहा कौनसी बातें । उन्हें उससे कहा यीशू नासरश्रीक इविष्यमें जो श्रापियोंका श्रीर  
ईश्वरके श्रीर सब लोगोंके श्रापे काममें श्रीर बचन-  
२९ में शक्तिमान पुष्प था । क्योंकर हमारी प्रधान याजकों  
श्रीर यश्न्द्योंने उसे संन्यास दिया कि उसपर बध किये  
जानेकी आश्चर्य दिया जाय श्रीर उसे जूठे पर घात किया  
३० है । परन्तु हमें आशा थी कि वही है जो इसायेलका  
जुदार करेगा । श्रीर भी जबसे यह हुआ तबसे चाच  
३१ उसका तीसरा दिन है । श्रीर हमें उसके कितनी स्त्रियोंने  
३२ भी हमें विस्मित किया है कि वे भारके काबरपर गईं। पर  
उसकी लोग न पापे फिर झाके बोलीं कि हमने स्वर-  
३३ द्योंका दर्शन भी पाया है जो कहते हैं कि वह जीता है ।  
३४ तब हमारे संगियोंसे कितने जन काबरपर गये श्रीर जैसा  
३५ स्त्रियोंने कहा तैसाही पाया परन्तु उसको न देखा । तब  
यीशूने उनसे कहा है निबुद्धि श्रीर भविष्यद्वृक्षोंको सब  
ये बातांतर बिश्वास करनें मनुष्यति लगाए । क्या सज्जय  
न था कि झोप यह दुःख उठाके अपने ऐश्बर्यमें प्रवेश
करे। तब उसने मसाते शीर तब भविष्यद्वारान्तः २८ शारंभ कर सारे धर्म-पुस्तकमें जयन्ने विषयमेंको वातांका अर्थ उन्हेंका बताया। इतनेमें वे उस गांवको पास पहुंचे २८ जहां वे जाते थे शीर उसने ऐसा किया जैसा कि आगे जाता है। परन्तु उन्हें यह कहके उसका रााका कि २८ हमारे संग राहिये कोंकि सांफ हो चली शीर दिन दल गया है। तब वह उनके संग रहनेका भीतर गया। जब ३० वह उनके संग भेजनयर बैठा तब उनसे राती लेके धन्यवाद किया शीर उसे ताड़के उनको दिया। तब ३१ उनकी टूटी खुल गईं शीर उन्हें उसका चीना शीर वह उनसे अलटनहैं हो गया। शीर उन्हें आपसमें २२ कहा जब वह मार्गमें हमसे बात करता था शीर धर्म- पुस्तकका अर्थ हमें बताता था तब क्या हमारा मन हममें न तपता था। वे उसी घड़ी उठके योक्तशिलोमको ३३ लौर गये शीर ग्यारह शिक्षको शीर उनके संगियोंको एकत्र हुए शीर यह कहते हुए पाया। वि निश्चय प्रभु ३४ जी उठा हैं शीर शिक्षका दिखाई दिया है। तब उन ३५ टूटनें कह सुनाया कि मार्गमें क्या हुआ था शीर यीशु कींकर राती ताड़नें उनसे पहचाना गया।

वे यह कहते ही थे कि यीशु आपकी उनकी बोलमें ३६ बड़ा है। उनसे बोला तुम्हारा कल्याण हो। परन्तु वे ३७ व्याकुल शीर भय माना हुए शीर समझा कि हम प्रेतकों देखते हैं। उसने उनसे कहा क्या व्याकुल हो शीर इं तुम्हारे मनमें सन्देह क्या उत्पन्न होता है। मेरे हाथ ३८ शीर मेरे पांव देखा कि मैं आपकी हूँ। मुफ्त टाइटे शीर
देख लो क्योंकि जैसे तुम मुफ्त में देखते हो तैसे प्रेतको
40 हाड़ मांस नहीं होते हैं। यह कहके उसने अपने हाथ
41 पांव उन्हें दिखाये। जों वे मारे आनन्दके प्रतीति न
करते थे श्रीर बचभिंत हो रहे त्यों उसने उनसे कहा
42 क्या तुम्हारे पास यहाँ कुछ मोजन है। उन्होंने उसको
43 कुछ भूनी मलाली, श्रीर मधुका ढहा दिया। उसने लेके
44 उनके सामने खाया। श्रीर उसने उनसे कहा यही वे
बातें हैं। जो मैंने तुम्हारे संग रहते हुए तुमसे कहीं कि
जो कुछ मेरे विषयमें मूसाकी व्यवस्थामें श्रीर भविष्यदेश
क्षारे। श्रीर गीतोंके पुस्तकांमें लिखा है सबका पूरा
45 होना अवश्य है। तब उसने धर्मपुस्तक समझनेका उन-
46 का ज्ञान खोला। श्रीर उसने कहा यूं लिखा है श्रीर इसी
रीतिसे अवश्य या कि खौश दुःख उठावे श्रीर तीसरे
40 दिन मृत्युकांमें जी उठे। श्रीर यिहुश्लीमसे आरंभ
कर सब देशोंके लोगोंमें उसके नामसे उच्चारणकी श्रीर
48 पाप मोचनकी कथा सुनाई जावे। तुम इन बातें हों
44 साधी हो। देखा मेरे पिताने जिसकी प्रतिज्ञा किये उसको
मैं तुम्हारे पर मेजता हूं। श्रीर तुम जबलों उपरसे शक्ति न
पाओ तबलों यिहुश्लीम क्षेत्रमें रहा।
50 तब वह उन्हें बैठनियालों बाहर ले गया श्रीर
51 अपने हाथ उठाके उन्हें आशीस दिये। उन्हें आशीस
देते हुए वह उनसे बलग हो गया श्रीर स्वर्गपर उठा
52 लिया गया। श्रीर वे उसको प्रशासन कर बड़े आनन्दसे
53 यिहुश्लीमका लौट गये। श्रीर नित्य मन्दिरमें इंगहरे-
की स्तुति श्रीर धन्यवाद किया करते थे। आविन।
यहाँ रचित सुसमाचार।

पहिला पाठ

1. येषु ब्रह्मकेश्वरायुक्ताको वर्णन। २. योहनको ईश्वराकी स्पर्श भेजा जाना श्रोर योज्यका दृष्टार्थ सेना। ३. उसके विषयम् योज्यको मार्ग। ४. चन्द्रय श्रोर ग्रंथम से से श्रीर निविदा श्रीर श्रीर श्रीर श्रीर खुलाया जाना।

आदित्यो मंचन या श्रीर मंचन ईश्वरके संग या श्रीर मंचन ईश्वर या। वह आदित्यो मंचनके संग या।

इसके दुरारा सुझा गया श्रीर जो सुझा गया है कुछ भी उस बिना नहीं सुझा गया। उसमें जीवन या श्रीर वह जीवन मनुष्योंका उदिताला था। श्रीर वह उदिताला संध्याकाली में चमकता है श्रीर संध्याकाली उसकी यथार्थ न किया।

एक मनुष्य ईश्वरकी श्रीरसे भेजा गया जिसका नाम योहन था। वह सांख्योंके लिये चाया कि उस उदिताले विषयम् सांख्य देवि इसलिये कि सब लोग उसके दुरारे विश्वास करे। वह चाप तो वह उदिताला न था परन्तु उस उदिताले विषयम् सांख्य देवि चाया।

सद्य उदिताला जो हर एक मनुष्योंका उदिताला देता है जगतम स्वानेवाला था। वह जगतम था श्रीर जगत १० उसके दुरारा सुझा गया परन्तु जगतम उसकी नहीं जाना। वह अपने निज देशमें चाया श्रीर उसके निज १२ लोगोंने उसे यथार्थ न किया। परन्तु जितने उसे यथार्थ १२
किया उन्हेंको अर्थात उसके नामपर बिश्वास बनाने-
हारे को उसने इंबराब्रे सत्तान होनेका अभिकार दिया।
13 उन्हेंका जन्म न लोहसे न शरीरकी इंबाने न मनुष्य-
14 की इंबाने परन्तु इंबराब्रे हुआ। चैर बचन देखारी
हुआ चैर हमारे बीचमें डेरा किया चैर हमने उसकी
महिमा पिताकी एकलैतिकीसी महिमा देखी। वह
15 अनुयह चैर सन्यास यरिपूर्ण था। योहनने उसके
विवायमें साधी दिए चैर पुकारको भांह यही था जिसके
विवायमें मैंने कहा कि जो मेरे पीछे जाता है तो मेरे भागी
16 हुआ है क्योकि वह सुमसे पहले था। उसकी भरपूरति
हम सभीने पाया है हां अनुयहपर अनुयह पाया है।
17 क्योकि ब्यवस्था मसाबे द्वारासे दिए गई अनुयह चैर
18 सन्यास यीशू छोपके द्वारासे हुए। किसीने इंबराब्रे
कभी नहीं देखा है। एकलैतिता पुज जे। पिताकी गादमें
है उसने उसे बर्जान किया।
19 योहनकी साधी यह है कि जब यिहूदीयांने यिविल-
लीमसे यात्रको चैर लेबीयांको उससे यह पूछनेका भेजा
20 कि तू कौन है। तब उसने मान लिया चैर नहीं मुकर
21 गया पर मान लिया कि मैं खोज नहीं हूं। तब उन्हें उससे
उससे पूछा तो कौन। क्या तू एलियाह है। उसने कहा
मैं नहीं हूं। क्या तू वह भविष्यद्वारा है। उसने उतर
22 दिया कि नहीं। फिर उन्हें उससे कहा तू कौन है
कि हम जापने मेजनेहारेंको उतर देने। तू जापने विवाय-
23 में का बहता है। उसने कहा मैं किसीका शब्द हूं जो
जंगलमें पुकारता है कि परंदेशवरका पन्थ सीधा करी।
१३६

याहन।

जैसा यिशौयाह भविष्यद्वृक्षाने कहा। जो ये गये थे सा अंवरीश्यों मैं थे। उन्होंने उससे पूछकर उससे कहा कि जो तुम न लीजें अंवर न यह भविष्यद्वृक्ष है तो क्यों बपतिस्मादे देता है। याहनने उन्हें उसका उत्तर दिया कि मैं तो जलसे बपतिस्मादे देता हूँ परनु तुम्हारे बीचमें एक खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते हो। वही है मेरे पीछे ज्ञानवाला जो मेरे भागे हुआ है। में २० उसकी जुटीका बन्ध खोलनेकी योग्य नहीं हू। यह बारे २८ यदेन नहीं उस पार वैशाखा गांवमें हुँडे जहां याहन बपतिस्मादे देता था।

दूसरे दिन याहनने गोष्टि झल्पने पास झाते देखा २६ अंवर कहा देखा इश्वरका मेजा जो जगतके पायकों
उठा लेता है। यही है जिसके विषयमें मैंने कहा कि ३० एक पुरुष मेरे पीछे झाटा है जो मेरे भागे हुआ है
क्यांकि वह मुखते पहले था। मैं उसे नहीं चिन्हता ३१
या परनु जिस्ते वह इस्योतिको लोगांपर प्रगट किया
जाय इसीलिये मैं जलसे बपतिस्मादे देता हुआ झाता हूं।
अंवर भी याहनने साधी दिदे कि मैंने झातमाको कपीत-
३२ की नाई स्वग्नमें उतरते देखा है अंवर वह उसपर ठहर
गया। अंवर में उसे नहीं चिन्हता था परनु जिसने ३३
मुख्ते जलसे बपतिस्मादे देनेका मेजा उसीने मुख्ते कहा
जिसपर तू झातमाको उतरते अंवर उसपर ठहरते देखे
वही तो पवित्र झातमासे बपतिस्मादे देनेहारा है। अंवर ३४
मैंने देखके साधी दिदे है कि यही इश्वरका पुष्च है।

दूसरे दिन फिर याहन अंवर उसके शिष्यमें दो ३५
१६ जन खड़े थे। कैथ्यों यीशु फिरता था त्यों वह उस-
१७ पर टूटिष्ठ करके बोला देखा इंश्वरका मेसा। उन द्वारा
शिष्यानि उसका बालति मुना कैथर यीशुके पीछे हो लिये।
१८ यीशुने मुंह पेक्षेके उनका पीछे चाहे देखके उनसे कहा
तुम क्या खाओ जै? उन्होंने उससे कहा है रब्बी
१९ अर्थात् है गुरु खाप कहां रहते हैं। उनसे उनसे कहा
खाओ देखा। उन्होंने जाके देखा वह कहां रहता था।
कैथर उस दिन उसके संग रहे कि दौ घड़ीके अर्थात
२० दिन रहा था। जो दौ जन योहानको सुनके यीशुके
पीछे हो लिये उनमेंसे एक तो शिमेन पितारका भाई
२१ अन्त्रिय था। उनसे पहिले झपने निज भाई शिमेनके
पाया कैथर उससे कहा हमने मसीहके अर्थात
२२ यीशुको पाया है। तब वह उसे यीशु पास लाया कैथर
यीशुने उसपर टूटिष्ठ कर कहा। तू यूसफका पुत्र शिमेन
है तू कैफा आर्थात् पिताके कहांवेगा।
२३ दूसरे दिन यीशुने गालीई देशका जानकी इच्छा
किंदे कैथर फिलिपका पाये उनसे कहा मेरे पीछे था।
२४ फिलिप तो अन्त्रिय कैथर पितारके नगर वैतसेकाका था।
२५ फिलिपने नक्नेलको पाये उससे कहा जिसके विषयमें
मुसाने व्यवस्थामें कैथर भावियुद्दासीं नि। लिखा है उसकी
हमने पाया है अर्थात् यूसफके पुत्र नासरत नगरके
यीशुको। नक्नेलने उससे कहा का खाई उत्तम बस्तु
नासरतसे उत्पन्न है। सकाती है। फिलिपने उससे कहा
२६ खाके देखिये। यीशुने नक्नेलको अपने पास खाते
देखा कैथर उसके विषयमें कहा देखा। यह सबमुख
इसायेरी हैं जिसमें कपट नहीं हैं। नयकेनने उससे कहा शाय तुफे कहां से पहचानते हैं। यीशु ने उसको उत्तर दिया कि फिलिपकी तुफे बुलाने के परिस्थित जब तू गौरके वृक्षतले था तब मैंने तुफे देखा। नयकेनने उसको उत्तर दिया कि है गुरु शाय इंश्वरके पुत्र हैं शाय इसायेरीको राजा हैं। यीशु ने उसको उत्तर दिया कि है गुरु शाय इंश्वरके पुत्र हैं शाय इसायेरीको राजा हैं। यीशु ने उसको उत्तर दिया तु गौरके वृक्षतले देखा कथा तू इसलिये विश्वास कराता है। तू इससे बड़े काम देखेगा। फिर उससे कहा में तुमसे सच सच कहता हूं। इसको पीछे तुम स्वर्गको खुला शीर इंश्वरके दूतोंको मनुष्यको पुर्खको ऊपरसे छाड़ते उतरते देखेगा।

२ दूसरा प्रार्थना।

१ यीशुका जलको दाखा रस बनाना। १२ विश्वसोंमें मन्दिरको बुखट करना।

२ जब युवाने सतने शीर दो उठनेके विषयमें भविष्यवाणा करना। २३ विश्वास
करनेहरूको बुखटको बाँचना।

तीसरे दिन गालोलको काना नगरमें एक विवाहका
भाजा या शीर यीशुकी माता वहाँ थी। यीशु भी शीर
उसको शिष्य लोग उस विवाहको भाजमें बुलायें गये। जब
दाखा रस घट गया तब यीशुकी माताने उससे कहा उनके
पास दाखा रस नहीं है। यीशु ने उससे कहा है नारी
शायको मुखसे को काम, मेरा समय अवलों नहीं
पहुंचा है। उसकी माताने सेवकोंसे कहा जा कुटिया
तुमसे कहे सो करो। वहाँ पत्यर्वा छ: मरको यिहूदियोंको
शुद्ध करनेकी रीतिको अनुसार घरे ये जिनमें हेड हेड
शायवा दो दो मन समाते थे। यीशु ने उससे कहा

०
ढगरकों का कमले भर देखा। सौ उन्होंने उन्हें मुंहामुंह भर दिया। तब उन्होंने उससे कहा जब उंडेला शीर भीजे प्रधानके पास ले जाकर। वे ली गये। जब भीजे प्रधानने वह जल जो दाख रस बन गया था चीखा शीर वह नहीं जानता था कि वह कहां से आया परन्तु जिन सेवकों ने जल उंडेला था वे जानते थे तब भीजे प्रधानने दूक्हे का बुजाया। शीर उससे कहा हर एक मनुष्य पहिले चीखा दाख रस देता शीर जब लगा पीकर झंक जाते तब मध्यम देता है। तूने चीखा दाख रस चबलों रखा है।

यिष्णु ने गालीके क्षाना नगरमें यिष्णुचर्चा कम्मीका यह यारंभ किया शीर अपनी महिमा प्रगट किए शीर उसके शिष्यों ने उसपर विप्रवस किया।

इसके पीछे वह शीर उसकी माता शीर उसके भाई शीर उसके शिष्य लाग कफनीहुस नगरको गये परन्तु वहां बहुत दिन न रहे। यििारियका निस्तार पयवे निकट था शीर यिष्णु यिष्णुचर्चा किया गया। शीर उसने मन्दिरमें गाहके शीर भेड़ा शीर कपोतांके वेचनेहारंके।

शीर सराफोंको बैठे हुए पाया। तब उसने रस्तियोंका कड़ा बनाके उन सभीको भेड़ा शीर गाहके समेत मन्दिरसे निकाल दिया शीर सराफोंके पैसे विघराके।

पीढियोंका उलट दिया। शीर कपोतांके वेचनेहारंसे कहा इनको यहांसे ले जाकर मेरे घरता घर व्यापारका घर भत बनाकर। तब उसके शिष्योंने समर्थ किया कि लिखा है तेरी घरके विशयमेंकी पुन मुखे खा जाती है।

इसपर यििारियके उससे कहा तू जे यह करता है
तो हर्म कैठना चिन्ह दिखाता है। यीशुने उनको उत्तर १५ दिया कि इस मंदिरको दा दो धीर में उसे तीन दिनों उठाते गा। यिहूदीयोंने कहा यह मंदिर छयालीस २० बरस में बनाया गया धीर तू का तीन दिन में इसे उठाया। परन्तु वह अपने देखके मंदिरको विषय में २१ बोला। सै जब वह मृतकोंसे जी उठा तब उसके २२ शिश्योंने स्मरण किया कि उसने उन्हें यह बात कही। धीर उन्होंने द्धमःपुस्तकपर धीर उस चरण पर जो यीशुने कहा था विषयवास किया।

जब वह निस्तार पलकें झड़ौंसे झूठनेलीमंडल में था तब २३ बहुत लोगोंने उसके शास्त्रव्य जानकार्य करके यह करता था देखके उसके नाम पर विषयवास किया। परन्तु २४ यीशुने अपनेरों उन्होंने हाय नहीं सांपा किया कि वह सभी कर्ता था। धीर उसे प्रयोजन न था कि मनुष्य- २५ के विषय में साधौं तो तो विषयक वह आप जानता था कि मनुष्य तो क्या है।

३ तीसरा पलक।

१ यीशुस्का निकोडीमको नाम जन के विषयमें उपदेश देना। ५ अपनी मृत्युको धीर विश्वास करनेके विषय में उपदेश देना। २२ यीशु धीर भोजनका अपत्तिसमा देना। २५ यीशुके विषयमें उपदेशकी साधौं।

फरौश्योंसे निकोडीम नाम एक मनुष्य था जो यिहूदीयोंका एक प्रधान था। वह रातको यीशु पास आया धीर उससे कहा है गुरु हम जानते हैं कि आप ईश्वरकी धीरसे उपदेशक आये हैं किया कि इन आत्मवर्ग्य कमलोंको काम आप करते हैं जो ईश्वर उसके संग न हो तो नहीं कर सकता है। यीशुने उसको उत्तर दिया कि में ३
तुमसे सच सच कहता हूँ कौई यदि फिरके न जन्मे तो
8 इंशवरका राज्य नहीं देख सकता है। निवृद्धिमने उससे कहा मनुष्य बूढ़ा होके क्योंकर जन्म ले सकता है। क्या बहुतापनी माताके गर्मी में दूसरी बेर प्रवेश करके जन्म ले
5 सकता है। यीहुने उत्तर दिया कि में तुमसे सच सच कहता हूँ कौई यदि जल शीर जन्मासे न जन्मे तो
6 इंशवरके राज्यमें प्रवेश नहीं कर सकता है। जो शरीरसे
जन्मा है तो शरीर है शीर जो जन्मासे जन्मा है सा
0 जन्मा है। अचम्बा मत कर कि मैंने तुमसे कहा तुमके।
8 फिरके जन्म लेना अवश्य है। प्रवन जहां चाहता है तहां
बहता है शीर तू उसका शब्द सुनता है परन्तु नहीं
जानता है वह कहांसे जाता शीर विधरके जाता है।
जो कौई जन्मासे जन्मा है सा। इसी रीतिसे है।
6 निवृद्धिमने उसको उत्तर दिया कि यह बातें क्योंकर
10 हो सकती है। यीहुने उसको उत्तर दिया कि तू इसका-
येलो लेगोंका उपदेशक है शीर यह बातें नहीं जानता।
11 में तुमसे सच सच कहता हूँ हम जो जानते हैं सा
कहते हैं शीर जो देखा है उसपर साधी देते हैं शीर तुम
12 हमारी साधी यहां नहीं करते हैं। जो मैंने तुमसे पृ-
ष्टिवीपकी बातें कहीं शीर तुम प्रतीत नहीं करते हैं
13 तो यदि में तुमसे स्वर्गमेंकी बातें कहूं तुम क्योंकर प्र-
14 तीति करोगे। शीर कौई स्वर्गपर नहीं चढ़ गया है
बेवल वह जो स्वर्गमें उत्तरा भरोत मनुष्यका पुष जो
14 स्वर्गमें है। जिस रीतिसे मुसाने जंगलमें सांपको जंचा
किया उसी रीतिसे अवशय है कि मनुष्यका पुष जंचा
किया जाय। इसलिये कि जो कोई उसपर विश्वास करे १५
सा नाश न होगा परन्तु अनन्त जीवन पावे। क्योंकि १६
इश्वर जगतको ऐसा प्यार किया कि उसने अपना एक-
लीता पुष्ट दिया कि जो कोई उसपर विश्वास करे सा
नाश न होगा परन्तु अनन्त जीवन पावे। इश्वर जगतको १७
पुष्टको जगतमें इसलिये नहीं भेजा कि जगतको उसको
योग्य ठहरावे परन्तु इसलिये कि जगत उसको द्वारा चारा
पावे। जो उसपर विश्वास करता है तो उसको योग्य नहीं
ठहराया जाता है परन्तु जो विश्वास नहीं करता तो उसको
योग्य ठहर चुका है क्योंकि उसने इश्वरको एकलीती
पुष्टको नामपर विश्वास नहीं किया है। जीवर उसको १८
योग्य ठहरावको कारण यह है कि उजियालो जगतमें
शाया है जीवर मनुष्यांणे संधियारको उजियालोसे दायिक
प्यार किया क्योंकि उसको काम बुरे थे। क्योंकि जो २०
कोई बुराई करता है तो उजियालोसे घिन्न करता है
जीवर उजियालोको पास नहीं आता है न है कि उसको
कामांगर उलनामा दिया जाय। परन्तु जो सत्तार्य चल-
ता है सा उजियालोको पास आता है इसलिये कि उसको
काम प्राप्त होते कि इश्वरको जीवरसे अर्पित गये हैं।

इसको पीछे यीशु जीवर उसको शिख्य यहूदिया देशमें २२
आये जीवर उसको वहां उनके संग । रहके विपत्तिसमा
दिलाया। योहन भी शालीमरके निकट ऐनन नाम २३
स्थानमें विपत्तिसमा देता था क्योंकि वहां बहुत जल था
जीवर लोग जीले विपत्तिसमा लेते थे। क्योंकि योहन २४
सबलों बन्दीगृहमें नहीं ढाला गया था।
याहने दिया चैर यिशुदियाँमें पुत्र करनेने विषयमें 
बिनात हुआ। चैर उन्होंने याहने पास चाहे उस- 
से कहा है गुरु जो यद्दनके उस पार जायके संग या 
जिसपर चारने साही दिए है देखिये वह वनवितसमा 
दिनामा है चैर सब लोग उसके पास जाते हैं।

याहने उत्तर दिया यदि स्वरेने उसको न दिया जाय तो मनुष्य कुछ नहीं पा सकता है। तुम चारही मेरे 
साही है कि बैठे कहा में सीगु नहीं हूं पर उसके 
चारे भेजा गया हूं। दूर्लभ हिस्सकी है साइ दूर्लभ है 
परन्तु दूर्लभका भिज जो खड़ा होके उसकी सुनता है 
दूर्लभके शब्दसे चात्ति सानन्दत होता है। मेरा यह 
झानन्द पुरा हुआ है। चात्ति है कि वह बढ़े चैर 
जो एम घटूं। चैर उपरसे चाता है सा सभापके उपर है। 
चैर पृथिवीसे है सा पृथिवीका है चैर पृथिवीकी बारं 
कहता है। चैर स्वरेने चाता है सा सभापके उपर है।

जो उसने देखा चैर सुना है वह उसपर साही देता 
है चैर के ओटे उसकी साही यह नहीं करता। जिसने 
उसकी साही यह नहीं किया है तो इस बातपर चार 
पुस्तका कि इंेश्वर सत्य है। इसलिये कि जिसे इंेश्वरने 
भेजा है सा इंेश्वरकी बारं कहता है चैर इंेश्वर 
उसकी चात्ति नापसे नहीं देता है। पिता पुत्रको 
प्यार करता है चैर उसने सब कुछ उसके हाथमें 
दिया है। जो पुस्तकर बिश्वास करता है उसको चानन्द 
जीवन है पर जो पुत्रकी न माने सा जीवनकी नहीं 
देखिये परन्तु इंेश्वरका चैर उसपर रहता है।
8. चैथा पर्वे।

1. श्रीमिरोनी स्त्रीसे मोहकी भावभोज और भ्रमण का उद्योग का कारण भोग वही उपासना का ज्ञान। 27. नागर्में उषा क्षीका यशुके विषयसे समाचार कहना। 31. विषयसे मोहकी भावभोज। 3. नागर्में तेजस्क उसपर विश्वास करना। 4. उसका गालेराग्ना अन्न और राक्षसी यहाँ के एक पुष्पके पुष्पका बोंगा करना।

जब प्रभु जाना कि फरीशियोंते सुनना है कि यीशु 1 शाहनसे आधिक शिक्षा करके उसके बप्तिस्मा देता है। तैभी यीशु चाप नहीं परलू उसके शिक्षा बप्तिस्मा देते थे। तब वह यहूदियाके छोड़ फि गालीमा गया। 3. शीर उसके श्रीमिरोनी देशसे जाना अवश्य हुआ। 4. सौ वह शिक्षा नाम श्रीमिरोनीके एक नगरपर उस भूमिके निकट पहुंचा जिसे याकूबने अपने युग यूसुफके दिया। शीर याकूबका कूचां वहां था ता योगु मार्गमें चलने से शकक भी उस कौणपर यूही बैठ गया शीर दो पहरके निकट था। एक श्रीमिरोनी स्त्री जल भरनेका आई। 6. यीशुने उससे कहा मुक्त पीनेका दीजिये। उसके शिक्षा 8 लोग भाजन मेल लेनेको नगरमें गये थे। श्रीमिरोनीस्त्रीने उससे कहा चाप यहूदी होके मुक्तके श्रीमिरोनी स्त्री हूं कोंकर पीनेको मांगते हैं क्योंकि यहूदी लोग श्रीमिरोनियेंके संग ब्यवहार नहीं करते। यीशुने 10 उसके उत्तर दिया जो तू इश्वरके दानके जानती शीर वह शीर नहीं है जो तुमसे कहता है मुक्त पीनेका दीजिये ता तुमसे मांगती शीर वह तुम ग्लोट्जल देता। स्त्रीने उससे कहा है प्रभु जल भरनेका चापके पास कूच नहीं है शीर कूचां गाहारा हैं ता वह ग्लोट्जल जल चापके कहां बिला है। क्या चाप हमारे पिता याकूबसे बड़े 12
हैं जिसने यह कृप्या हमें दिया श्रीर ज्ञानी अपने 13 सन्तान श्रीर अपने दौर समेट उसमेंसे पिया। यीशुने उसको उत्तर दिया कि जो कोई यह जल पीते सा फिर 14 पियासा होगा। पर जो कोई वह जल पीते जो मैं उसको देखा सा फिर कभी पियासा न होगा परन्तु जो जल मैं उसे देखा सा उसमें ज्ञान जीवनलें उम्मगतहारे 15 जलका सेता हो जायगा। स्त्रीने उससे कहा है प्रभु यह जल मुके दौरे जिये कि मैं पियासी न होऊं श्रीर न 16 जल भरनेको यहां जांच। यीशुने उससे कहा जा 17 अपने स्वामीका बुलाये यहां कस। स्त्रीने उत्तर दिया कि मेरे तड़े स्वामी नहीं हैं। यीशु उससे बोला तूने 18 स्वामी कहा कि मेरे तड़े स्वामी नहीं हैं। कोंकड़े तेरे पांच स्वामी हो चुके श्रीर जब जो तेरे संग रहता है सो तेरा 19 स्वामी नहीं हैं। यह तूने सच कहा है। स्त्रीने उससे कहा है प्रभु मुके सूक्ष महत है कि श्राय महत दूधका 20 हैं। हमारे पितार्थाने इसी पहाड़पर भजन किया हीर श्राय लोग कहते हैं कि वह स्वान जहां भजन करना 21 उचित है विकृषशलीमरीमें हैं। यीशुने उससे कहा है नारी मेरी प्रतीत कर कि वह समय जाता है जिसमें तुम न 22 कहाँ रहे। तुम लोग जिससे नहीं जानते हो उसका भजन करते हो हम लोग जिसे जानते हैं उसका भजन करते 23 हैं कृपांकी चार यहूदीयोंमें हैं। परन्तु वह समय जाता है श्रीर जब है जिसमें सबूत महत ज्ञात्मा श्रीर सबूतें से पिताका भजन करेंगे कृपांकी पिता ऐसे भजन करनेहारीं-
का चाहता है। इन्हें ज्ञात ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी

योग्य उससे कहा में जानती हूं कि मसीह ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम छोटी ज्ञातम
उसका मने तुम्हें काटनेको भेजा । दूसरोंने परिशम किया है । श्रार तुमने उनके परिशम में प्रवेश किया है।

उस नगरके शर्मिरानियोंमें बहुताने उस स्त्रीके बचनके कारण जिसने साधक दिये कि उसने सब कुछ जो मैंने किया है मुख्ते वहाँ है यीशुपर विश्वास किया ।

इसानवे जब शर्मिरानी लेग उस पास जाये तब उससे विनती कि व्ही हमारे यहाँ रहिये । श्रार वह वह वहाँ दीन रहा । श्रार उसके बचनके कारण बहुत त्योहार लेग विश्वास किया । श्रार उस स्त्रीके कहा हम अब तेरे बचनके कारण विश्वास नहीं करते हैं क्योंकि हमने अपहरी सुना है श्रार जानतेहैं कि यह सचमुच जगतका चामकता बिखू है ।

दो दिनके पीछे यीशु वहाँसे निकलके गालिलके गया । उसने तां अपहरी साधक दिये विभिन्नयुंक्ता अपने निज देशमें भी नहीं पाता है । जब वह गालिलके अप तब गालिलीयोंने उसे गहना किया क्योंकि वह तेरे विद्रोहलीय इमयहे में पनेरते किया था उन्होंने सब देखा था तक वे भी पनेरते गये थे । तेह यीशु फिर गालिलके काना बगारूदेशमें जाया जहाँ उसने जल्लः दाख रस बनाया था । श्रार राजकी यहाँका एक पुरुष था जिसका पुच कपनके हुमयूं रोगी था । उसने जब सुना कि यीशु यिहूदीसे गालिलेमें जाया है तब उस पास जाके उससे विनती कि व्ही श्रार तेरे पुचका चना कीजिये । क्योंकि वह लड़ा मरनेपर था । यीशुने उससे कहा जो तुम चिन्ह श्रार अब जाम न देखा तो विश्वास नहीं करें-
राजाके यहां के पुरुष ने उससे कहा है प्रभु मेरे ४५ बालकों मरनेके आगे आइये। यीशु ने उससे कहा ५० चला जा तेरा पुच जीता है। उस मनुष्यने उस बातपर जा यीशु ने उससे कही विश्वास किया श्रीर चला गया। श्रीर वह जाताही था कि उसके दास उससे खा मिले ५१ श्रीर सन्देश दिया कि धार्मिक लड़का जीता है। उसने उनसे पूछा कित घड़ी उसका जी हलका हुआ। उन्होंने उससे कहा कल एक घड़ी दिन फुकते ज्वलने उसको दी-ढ़ा। सो पिताने जाना कि उसी घड़ी में हुआ जिस घड़ी ५३ यीशु ने उससे कहा तेरा पुच जीता है श्रीर उसने श्रीर उसके सारे घरानेने विश्वास किया। यह दूसरा श्रायचयम ५४ करमे यीशु ने यहूदियाने गाजीलमे आके किया।

५ पांचवां पंक्ति।

१ यीशुका विश्वासके दिनमें बड़ों बालके रूपमे मनुष्यको बंधन करना। १४ यीशु महिलाओं द्वारा जानुकी चक्का करना। १५ उसका धार्मिक महिलाका बंधन करना। १० उसके विश्वासके सारे श्रीर रूपमें विश्वासके श्रीर धार्मिकपुस्तकों को आको बंधन करना।

इसके पीछे यहूदियाने पहुँच हुआ श्रीर यीशु यहूदि रूपमे करमो ने यहूदी ने गया। यहूदी ने भेड़ीपालके नाबाद एक कुँड है जो द्वारा भाषा विपश्चिदा कहावत है जिस- के पांच श्रीराओं हैं। इन्होंने रागियों संगीतों लगायाँ श्रीर ३ सुंदर बालकांकी बड़ी भेड़ पड़ी रहती थी जो जलके हिलनेकी बाद देखते थे। क्योंकि समयके अनुसार एक ४ स्वर्गीय उस कुँड में उतरते जलके हिलाता था इससे जो कारे जलके हिलनेकी पीछे उसमें पहुँचे उतरता था वे भी राग उसको लगा ही चंगा ही जाता था। स्वर्गीय
8 मनुष्य वहां था जो श्वासकेस वरससे रोगी था। यीशु उसे पड़े हुए देखके चौंका यह जानक़ि किने कि उसे बाब बहुत दिन है। चौंके उसे कहा कहा तू चंगा होने चाहता है। रोगीने उससे उतर दिया कि है प्रभु मेरा कैह मनुष्य नहीं है कि जब जल हिलाया जाय तब मुफ्त बुन्दें उतारे चौंके जबलों में जाता हूं दूसरा मुफ्ते बागे उतरता है। यीशु उससे कहा उठ अपनी खात उठाके 5 चल। वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया चौंके अपनी खात उठाके बलने लगा पर उसी दिन विष्णुवार था।

9 इसलिये यहूदियांने उस चंगा किये हुए मनुष्यसे कहा यह विष्णुवार दिन है खात उठाना तुम्हें उचित नहीं है। उसने उन्हें उतर दिया कि जिसने मुफ्त किया 9 उसने मुफ्त से कहा अपनी खात उठाके चल। उन्हांने उससे पूछा वह मनुष्य कौन है जिसने तुम्हें कहा अपनी खात उठाके चल। परन्तु वह चंगा किया हुआ मनुष्य नहीं जानता था वह कौन है क्या कि उस स्थानमें भीड़ है निसे यीशु बहांसे हर गया।

10 इसलिये यीशु उसका मन्दिर में पाके उसने कहा देख तू चंगा हुआ है फिर पाप मत कर न हो। 11 कि इस से बुरी कैह बिपति तुम्हें चाहे। उस मनुष्यने जाके यहूदियांसे कह दिया कि जिसने मुफ्त 9 चंगा किया से यीशु है। इस कारण यहूदियांने यीशुका सताया चौंके उसे भार दालने चाहा कि उसने विष्णुवार- 10 के दिनमें यह काम किया था। यीशु उसका उतर दिया कि मेरा पिता अबलों काम करता है में भी
काम करता हूँ। इस कारण गिनीदियाँने छैर भी उसे १८ मार हालने चाहा कि उसने न केवल विश्रामवार्की विषिकी लंगन किया परन्तु इन्हें जो निःपिता कहकर अपनेकी इन्हें तुल्य भी किया।

इसपर यहाँ उन्होंने कहा था तुमसे सच सच कहता १५ हूँ पुच ज्ञापसे कुछ नहीं कर सकता है केवल जो कुछ वह पिताका करते देख क्योंकि जो कुछ वह करता है उसे पुच भी वैसे-ही करता है। क्योंकि पिता पुनरका प्यार २० करता है छैर जो वह ज्ञाप करता सो सब उसकी बताता है छैर वह इससे बड़े काम उसकी बतावेगा जिससे तुम अच्छी करूँ। क्योंकि जैसा पिता मृत्तकेंद्रूँ २१ उठाता छैर जिलाता है वैसा-ही पुच्चभी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है। छैर पिता किसीका विचार भी २२ नहीं करता है परन्तु विचार करनेका बब अधिकार पुनरका दिया है इसलिये कि सब लाग जैसे पिताका आदर करते हैं वैसे पुनरका आदर करें। जो पुनरका २३ आदर नहीं करता है उस पिताका जिसके सब मेरा अच्छा आदर नहीं करता है। मैं तुमसे सच सच कहता हूँ २४ जो मेरा बचन सुनके मेरे भेजनेहारिपर विश्वास करता है उसकी ज्ञान जीवन है छैर दंडकी आज्ञा उसपर नहीं होती परन्तु वह मृत्युसे पार होकी जीवनमें पहुँचा है। मैं तुमसे सच सच कहता हूँ मेरे समय ज्ञाता २५ है छैर ज्ञाप है जिसके मृत्यु लाग इन्हें इन्हें पुनरका शब्द सुननें छैर जो सुननें सो जीवने। क्योंकि जैसा पिता २६ ज्ञापही से जीता है तैसा उसने पुनरका भी अधिकार
दिया है कि आपही मे जीवि . छैर उसका बिचार करनेका भी अधिकार दिया है क्योंकि वह मनुष्यका पुत्र है। इससे अर्थभा मत करे। क्योंकि वह समय छाए जाता है जिसमें जा करवाने में है सो सब उसका शब्द सुनके निकालेंगे . जिससे मलाई करनहारे जीवनके लिये जी उठेंगे छैर बुराई करनहारे ठंडके लिये जी उठेंगे । 

में आपमे कुछ नहीं कर सकता हूं जैसा में सुनता हूं छैर मेरा बिचार यथार्थ है क्योंकि में अपनी इच्छा नहीं चाहता हूं परन्तु पिताकी इच्छा जिसने मुफ्त मेजा । जा में अपने विषयमें साधी देता हूं ता मेरी साधी ठीक नहीं है । दूसरा है जा मेरे विषयमें साधी देता है छैर में जानता हूं कि जा साधी वह मेरे विषयमें देता है सो साधी ठीक है । 

तुमने योहनके पास मेजा छैर उसने सत्यभाष साधी दिइ। में मनुष्यसे साधी नहीं लेता हूं परन्तु में यह बातें कहता हूं इसलिये कि तुम चाह धारा । वह ता जलता छैर चमकता हुआ दीपक था छैर तुम दिखनी बेरलीं उसके उजालेमें चानन्द खर्चको प्रसन्न थे ।

परन्तु यहनकी साधीसे बड़ी साधी मेरे पास है क्योंकि जा काम पिताने मुफ्त पूरे करनेका दिये हैं वरीत यहीं काम जा में करता हूं मेरे विषयमें साधी देते हैं कि पिताने मुफ्त मेजा हैं । छैर पिताने जिसने मुफ्त मेजा आपही मेरे विषयमें साधी दिइ हैं । तुमने कभी उसका शब्द न सुना है छैर उसका रूप न देखा हैं । छैर तुम उसका बचन आपनेमें नहीं रखते हैं
कि जिसे उसने भेजा उसका विश्वास नहीं करते है।
धर्मपुस्तकों में दूरं। क्योंकि तुम समझते हो कि उसमें है 
अनंत जीवन हमें मिलता है ध्यार बढ़ी है जो मेरे विषय 
में साधी देता है। परन्तु तुम जीवन पानेको मेरे पास 80 
जाने नहीं चाहते हो। मैं मनुष्योंचे एंडर नहीं लेता 81 
हूं। परन्तु मैं तुम भांता हूं कि इश्वरका प्रेम तुममें 82 
है। मैं अपने पिताके नामसे जाया हूं ध्यार तुम 83 
मुझे यहाँ नहीं करते है। यदि दूसरा अपनेही नामसे 
जाये तो उसे यहाँ करोगे। तुम श्री एक दूसरेरे एंडर 84 
लेते हो ध्यार जो भाद्रै इश्वरसे है नहीं 
चाहते हो। क्योंकि विश्वास कर सकते है। मत समझी 85 
कि मेरे पिताके जागे तुमपर दीय लगाउँगा। तुमपर दीय 
लगानेहारा ता है। अभ्यास मूसा जिसपर तुम भरोसा 
रखते हो। क्योंकि तुम मूलका विश्वास करते तो 86 
मेरा विश्वास करते इसलिए कि उसने मेरे विषयमें 
लिखा। परन्तु जो तुम उसके लिखितपर विश्वास नहीं 87 
करते हो तो मेरे कहें तो क्योंकि विश्वास बरोगे।

ई छठवां पढ़िे।

1 यीशुका पांच वषस मनुष्योंको पीड़िों भेदवधे तुम करता | 81 समुद्रपर चलना |
29 बघुत से जोरीको ढेरे तुलना ध्यार उक्का सथाकी जोरीको रेतोके बृहतमाथे | 81 विश्वासमाता रिप्यांको दहर रेना | 49 बघुत तिकोका ढेरे 
30 होटला ध्यार प्रतिका विषयमें अक्षों को रहां।

इसके पीछे यीशु गाज़ोलकेसुमुद्र चर्यात तिबरियाए। 81 
समुद्रको उस पार गया। ध्यार बघुत लेगु उसके पीछे 82 
हो। जिसे इस बारे प्रि उनहाँ उसके बारे चर्चाचे कामोंको 
देखा ध्यार उस रोगियोंपर करता हो। तब यीशु परमेंतर 83
चढ़बी स्वपने शिशुओं के संग बहां बैठा। जीव बिहूदियांका
पब्ले अर्घ्य निस्तार पर्चे निकट था। यीशुने स्वपनी
चांचें उठाके बहुत लोगों का स्वपन पाने पास बाते देखा जीव
फिलिपसे कहा हम बहांसे राती माल लेबे कि ये लग
खायें। उसने उसे परखने को यह बात काही कोंकि जो
बह बतलाया था सा। जीव जानता था। फिलिपने उसको
उत्तर दिया कि दो सनी सुकियंकी राती उनके जिये
इतनी भी न होगी कि उनमें हर एकको पेड़ी पेड़ी
मिले। उसके गियंलिये एकने अर्ध्य शिमान पितरके
भाई अनत्रियने उससे कहा। यहां एक बाकारा है जिस
पास जबकी पाँच राती जीव दो महली हैं। परन्तु इतने
लोगों की लिये ये क्या हैं। यीशुने कहा उन मनुष्योंका
बैठाना। उस स्थानमें बहुत पास थी सो पूर्ण जी गी-
नीमें पाँच सहस्के झटकल दे बैठ गये। तब यीशुने
रात्रियों ले पत्न मानकी शिशुंकों बांट दिये जीव शिशुं-
ने बैठनेहारियंकों जीव वैसीह मदनलियंकों से जितनी बे-
चाहते थे उतनी दिये। जब वे तूफ़ हुए तब उसने झपने
शिशुंसे कहा बचे हुए तुड़ते बॉटर लो कि कुछ बिया न
धाय। तो उन्होंने बरो जीव जबकी पाँच रात्रियंके
जो तुड़ते खानेहारियंसे बच रहे उनसे बारह रोकरी भरीं।
उन मनुष्योंने यह शाश्चर्य करके जो यीशुने किया था
देखके कहा यह सचमुच वह भविष्यद्वाता है जा जगत में
स्वाति। जब यीशुने जाना कि वे मुक्त राजा
बनानेके लिये जाके मुक्त पकड़े तब वह फिर झकिला
प्रस्ताप गया।
जब सांख हुई तब उसके शिश्य लोग समुद्रके तीरपर १६४ 
गये। श्रीर नवपर चढ़के समुद्रके उस पार कफहोइमको १० 
जाने लगे। श्रीर अंधियारा हुई था। श्रीर योगु उनके 
प्रास नहीं आया था। बहु व्यारके बहनसे समुद्रमें १८ 
जहरें भी उठती थीं। जब वे डेड अयवा दो क्रोस ले गये १५ 
थे तब उन्होंने यीरुके समुद्रपर चलते श्रीर नववके निक- 
ङ्कत जाते देखा श्रीर दर गये। परन्तु उसने उनसे कहा में २० 
हूं डरे मत। तब वे उसे नवपर चढ़ा लेनेका प्रस्तु में २१ 
श्रीर तुरुन्त नाव उस तीरपर जहां वे जाते थे लग गई।

दूसरे दिन जा लोग समुद्रके उस पार खड़े थे उनने २२ 
जाना कि जिस नवपर यीसुके शिष्यम चढ़े उसे छोड़के श्रीर 
केवल नाव यहां नहीं थी। श्रीर यीसु अपने शिष्योंके 
संग उस नवपर नहीं चढ़ा पर केवल उसके शिष्य बने 
गये। तभी पीछे श्रीर नववर तिबरिया नगरमें उस स्थान- 
२३ 
के निकट बाइं थीं। जहां उन्हीं जब प्रमुख धन्य माना था 
रोटी खाई। सा जब लोगाने देखा कि यीसु यहां नहीं २४ 
है श्रीर न उसके शिष्य तब वे भी नवपर चढ़के यीसुके 
बूढ़ते हुए कफहोइमको आये। श्रीर वे समुद्रके पार उसे २५ 
पाके उससे बोले है गुरु चाप यहां कव आये। यीसु ने २६ 
उन्हीं उत्तर दिया कि मे तुमसे सच सच कहता हूं तुम 
मुके इसलिये नहीं बूढ़ते हैं। कि तुमने आश्रम ठगमका 
देखा परन्तु इसलिये कि उन रोटीयोंमें से बाकी तू हुए 
।

नाशमान भोजनके लिये परिषम मत करे। परन्तु २९ 
उस भोजनके लिये जा अनकत जीवनलां रहता है जिसने 
मनुष्यका पुत्र तुमका देगा क्योंकि पितामि आयत इश्वर-
२८ ने उसीपर छाप दिये है। उन्होंने उससे बाहा इश्वरके
२९ कायं करनेको हम का करें। यीशुने उन्हें उत्सर दिया
इश्वरका कायं यह है कि जिसे उससे भेजा है उसपर
३० तुम विश्वास करा। उन्होंने उससे बाहा छाप बौनसा
शाब्दिक तरीके करते हैं कि हम देखके आपका विश्वास
३१ करें। छाप का करते हैं। हमारे पिताराने जंगलमें
मन्ना खाया जैसा लिखा है कि उससे उन्हें स्वर्गको रात्रीय
३२ खानेको दिये। यीशुने उनसे कहा में तुमसे सच सच
कहता हूं मूसाने तुम्हें स्वर्गको रात्री न दिये परन्तु
३३ मेरा पिता तुम्हें सत्त्री स्वर्गको रात्री देता है। वी अनि
इश्वरको रात्री वह है जो स्वर्गसे उतरती छैर जगतकी
३५ जीवन देती है। उन्होंने उससे कहा हे प्रभु यही
३६ रात्री हमें नित्य दीजिये। यीशुने उनसे कहा जीवनकी
रात्री में हूं। जो मेरे पास ज्ञाने तो कभी भूखा न
होगा छैर जो मुक्तपर विश्वास करे सो कभी पियासा
न होगा। परन्तु मैंने तुमसे कहा कि तुम मुफ्ते देख भी
३० शुक्रे छैर विश्वास नहीं करते हो। सब जो पिता
मुफ्तको देता है मेरे पास आविगा छैर जो बाइं मेरे
पास ज्ञाने में है। कहीं रात्री करते हैं दूर न कहांगा।
३८ वी अनि में अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजनेहारीकी
३८ इच्छा पूरी करनेको स्वर्गसे उतरा हूं। छैर पिताकी
इच्छा जिसे भेजे भेजा यह है कि जिन्हें उससे मुफ्तको
दिया है उनमें में जिसीको न खाऊं परन्तु उन्हें
३० पिढ़ले हो उठाज। मेरे भेजनेहारीकी इच्छा यह
है कि जो बाइं पुस्को देखे छैर उसपर विश्वास
करे तो ज्ञानत जीवन पाहे श्रीर में उसे पिल्ले दिनमें
ठारांगा।

तब बिहूदी लोग उसके विषयमें कुड़कुड़ाने लगे इस- 81
लिये कि उसने कहा जा रोटी स्वर्गसे उतरी सा मैं
हूं। वे बोली क्या यह यूसफका पुष्य यीशु नहीं है जिसके 82
माता श्रीर पिताका हम जानते हैं। ता वह कींकर
कहता है कि में स्वर्गसे उतरा हूं। यीशुने उनका उसर 83
दिया कि आपसमें मत कुड़कुड़ाश्रो। यदि पिता जिसने 84
सुखे भेजा उसे न सीखि ता करै मेरे पास नहीं भा
सकता है श्रीर उसका में पिल्ले दिनमें ठारांगा।
भविष्यद्वेशीयोंके पुस्तकमें लिखा है कि वे सब इश्वरवर 85
सिखाये हुए हांगे सा हर एक जिसने पितासे सुना श्रीर
सीखा है मेरे पास भा ता है। यह नहीं कि जिसीने पिता-
ही
बेला जा इश्वरवरी श्रीरसे है उसीने
पिताका देखा है। मैं तुमसे सच सच कहता हूं जा केहाई 87
मुफ्रपर विश्वास करता है उसका ज्ञानत जीवन है। मैं 88
जीवनकी रोटी हूं। तुम्हारे पितामहे मंगलमें मत्रा 89
खाया श्रीर मर गये। यह वह रोटी है जा स्वर्गसे उतरती 90
है कि जा उससे खावे सा न मरे। मैं जीवती रोटी हूं। 91
जा स्वर्गसे उतरी। यदि केहाई जा रोटी खाय ता सदालें
जीनमे श्रीर जा रोटी में देवंगा सा मेरा मांस है जिसे
मैं जगतके जीवनके लिये देवंगा। इसपर बिहूदी लोग 92
आपसमें विख्यात करने लगे कि यह हमें कींकर जापना
मांस खानके हैं सकता है। यीशुने उनसी कहा मैं तुमसे 93
सच सच कहता हूं जो तुम मनुष्यके पुष्यका मांस न खाने।
तुम्हारा उसका लाहू न पीवा ता तुममें जीवन नहीं है। 
54 जै मेरा मांस खाता तू तेरा मेरा लाहू पीता है उसका 
ज्ञान जीवन है तू मैं उसे पिसावा दिनमें बढ़ाना जा। 
55 क्योंकि मेरा मांस सज्जा भोजन है तू मेरा लाहू सज्जा 
पीनेवें वस्तु है। तू मेरा मांस खाता तू मेरा लाहू 
पीता है तो मुझमें रहता है तू मैं उसमें रहता हूँ। 
56 जैसा जीते पिताने मुक्ते मेषा जीव तू मैं पितासे जीता 
तैसा वह भी मैं मुक्ते खाये मुक्ते जीये। यह 
रात रात है जो स्वागते उतरी। तैसा तुम्हारे पितारों 
मता खाया तू मैं गर गई ऐता नहीं। यह रात 
55 भाय सो सदालां जीये। उसमें अपनाहुममें उपदेश 
करते हुए समाके घरमें यह बातें कहीं। 
60 उसके शिष्यांमें बहुतांने यह सुनके कहा यह बात 
61 खाटिन है इसे बोई सुन सकता है। योशुने चढ़ने मनमें 
जाना कि उसके शिष्य इस बातके विषयमें कुड़कुड़ते 
हैं इसलिये उनसे कहा क्या इस बातसे तुमके ठोकर 
62 जगती है। यदि मनुष्यें पुक्के जहां वह शाया था 
63 उस स्थानपर चढ़ते देखा तो कहा कहोगे। शायमा तो 
जीवनदायक है शरीरसे कुछ लाभ नहीं। जो बातें में 
64 तुमसे बोलता हूं तो शायमा हैं तू मैं जीवन हैं। परबत 
तुमके ही खिलते हैं जो विश्वास नहीं करते हैं। योशु 
तो शायमेरे जानता था कि वे बोल तो जो विश्वास 
करनेहारे नहीं हैं तू मैं बोल वह बोल है जो मुक्ते इक्कू 
बाया। तू उसने कहा इसीलिये मेंने तुमसे कहा 
है कि यदि में पिताके तू मैं उसका न दिया शाय
ता केवल मेरे पास नहीं आ सकता है। इस समय द्वारा उसके शिष्यों के बढ़ते दृष्टिकोण हरे साहित्य उसके संग श्राय न चले। इसलिये यीसु उन बारह शिष्यों का क्या इंद्रुम भी जाने बाहर नहीं है। शिमान पिताने उसका उत्तर दिया जिसके पास जायें। श्राय शाखे पास जानना जीवनकी बातें हैं। श्राय हमने विश्वास किया इंद्रुम श्राय जान लिया है कि श्राय जीवने इंद्रुम लुप्त खोस्त है। यीसु उनका उत्तर दिया क्या हमने तुम बाहर हीं नहीं बुना श्राय तुममें एक तो शेतान है। वह शिमान- इंद्रुम पुष्च यीसु इंद्रुम ये क्रायरीयोताकी विषयमें बेला कोई वही उसे पकड़वानियर था श्राय वह बाहर शिष्यों में एक था।

6 सातवां पढ़े।

इन्हीं पीछे यीसु गालिलेमें फिरने लगा कीथि यीस्टियों लग उसे मार हालने चाहते थे इसलिये वह यीस्टियों में फिरने नहीं चाहता था। श्राय यीस्टियों का पंज ध्यान तंबूमस प्रवर्तन विषय था। इसलिये उसके भांड़े उसके कहा यहां निकलके यीस्टियों में जा कि तेरी शिष्य लग भी तेरे काम जो तू करता है देखें। कीथि काई नहीं गुप्से कुछ करता यीसु जापही प्रगट होने चाहता है। जो तू यह करता है तो जो अपने तांग अगत्सा दिखा। कीथि उसके भांड़े भी उसपर विश्वास नहीं करते थे। यीसु उनसे कहा मेरा समय अबली।
नहीं पहुँचा है परन्तु तुम्हारा समय नित्य बना है।

जगत तुमसे बैर नहीं कर सकता है परन्तु वह मुक्ति से बैर करता है क्याँकि में उसके विषयमें साधी देता हूं।

किंतु उसके काम बुरे हैं। तुम इस प्रबंध में जाओ। मेरे ज्ञानी इस प्रबंध में नहीं जाता हूं क्याँकि मेरा समय ऊर्जाविश्वास है।

लों पूरा नहीं हुआ है। वह उनसे यह बातें कहकर गालीलमें रह गया। परन्तु जब उसके भाई लोग चले गये तब वह भाप भी प्रगट होकर नहीं पर जैसा गुप होकर प्रबंध में गया।

यिहूदी लोग प्रबंध में उसे हूंदूते पे सीर बाले। वह कहा है। सीर लेग उसके विषयमें बहुत बातें आपसमें फुसफुसाकर कहते थे। कितने कहा वह उतम मनुष्य है परन्तु सीरोंने कहा तो नहीं पर वह लोगोंके भरमाता है। तैभी यिहूदीयांके हरण मारे कीई उसके विषयमें बालकेन नहीं बोला।

प्रबंध को जो तिवारी यीशु मंदिर में जाकर उपदेश करने लगा। यिहूदियोंके अच्छा कर कहा यह बिन सीख

कींकार बिदा जाता है। यीशुने उनके उत्तर दिया कि भेजनेहारका है। यदि कीई उसकी इच्छापर चला चाहे तो इस उपदेशके विषयमें जानेगा कि वह इंस्वरकी सीरसे है। अघवा में राखनी सीरसे कहता हूं। जो राखनी सीरसे कहता है तो राखनी ही बढ़ाई चाहता है परन्तु जो राखनी भेजनेहारकी बढ़ाई चाहता है सोई सत्य है सीर उसमें राखमें नहीं है। क्या मसाने तुमें व्यवस्था न दिये। तैभी तुममें कीई व्यवस्थापर नहीं चलता है। तुम कीं मुझे
मार डालने चाहते है लोगों के उत्तर दिया कि तुम्हे 20 भूत लगा है। श्री तुम्हे मार डालने चाहता है। यद्यपि 21 उसके उत्तर दिया कि मैंने एक काम किया श्रीर तुम सब ज्ञान स्त्री से करते है। सूर्य सब तुम्हें खतरनाक माहूँ 22 दिये। इस कारण नहीं कि वह मसाजी श्रीरी है परन्तु पितारों की श्रीरी है। श्रीर तुम बिषामके दिनमें मनुष्य-का खतना करते है। जो बिषामके दिनमें मनुष्यका 23 खतना किया जाता है जिस्त मसाजी अवश्य लंघन न होय तो तुम मुक्त से क्रिया इसलिये श्रीर करते है कि मैंने बिषामके दिनमें सप्ताह एक मनुष्यका चंगा किया।

सुन्ह देखको बिचार मत करो परन्तु यथार्थ बिचार करो। 24 तब विषामकी निवासियोंमें जितने बाले कथा 25 यह वह नहीं है जिसे वे मार डालने चाहते हैं। श्रीर 26 देखा वह बालको बात करता है श्रीर वे उससे कुछ नहीं कहते। कथा प्रधानांनी निर्धंश जान लिया है कि यह सचमुच खीपू है। परन्तु इस मनुष्यका हम जानते हैं कि 27 बहु कहां है पर खीपू जब खा विजया तब कोई नहीं जानेगा कि वह कहां है। यथाश्री मन्दिरमें प्रकाश करते 28 हुए जुड़कर कहा तुम मुक्त जानते श्रीर यह भी जानते है। कि मैं कहां हूँ। मैं तो श्रीर से नहीं ज्ञान हूँ परन्तु मेरा धेर नेहारा सत्य है जिसे तुम नहीं जानते है। मैं 29 उसे जानता हूँ क्योंकि मैं उसकी श्रीरी हूँ श्रीर उसने मुफ्त भेजा है। इस पर उन्होंने उसकापकड़े बाहा तैबही 30 किसने। उसपर हाय न बढ़ाया क्योंकि उसका समय अबलों नहीं पहुंचा था। श्रीर मानोंमें बहुतोंने उस- 31
पर विभवास किया श्रीर कहा खोश जब झाबेगा तब क्या इन शाक्तियों के से जो इसान निर्गत हैं भावना करेगा।
82 फरोशियों का लगाना को उसके विषय में यह बात दुम- दुधाके कहते सुना श्रीर फरोशियों श्रीर प्रधान याज- 
83 कों ने पादवका उसे पकड़नेका कहा। इसके यीशुने 
कहा में भाव योगी बेर तुम्हारे साथ रहता हूं तब 
84 अपने में ने दे भजनेहारे को पास जाता हूं। तुम सुधे दुशंगे श्रीर 
न झांगे श्रीर जहां में रहूंगा तहां तुम नहीं खा 
85 सङ्घार। यिहूदियों भाव पास कहा यह कहां जायगा 
कि हम उसे नहीं भाव। क्या वह यूनानियोंमें 
तितर बितर लोगों का पास जायगा श्रीर यूनानियोंका 
86 उपदेश देगा। यह क्या बात हैं जो उसके नहीं फि 
तुम सुधे दुशंगे श्रीर न झांगे श्रीर जहां में रहूंगा 
तहां तुम नहीं खा सङ्घार।
80 पिछले दिन पक्षके बड़े दिन में यीशु खड़ा है पुश्चा- 
रके कहा यदि कोई पियासा हावे तो मेरे पास झांगे 
88 पीवे। जो मुक्तिवर विभवास करे जैसा धम्मपुस्तक ने 
कहा तैसा उसके अन्तरसे समृत झांगी नदियां बहींगी।
86 उसने यह बचन झांगके विषय में कहा जिसे उसकर 
विभवास करनेहारे पानीयर ते कीन्ति पवित्र झांग 
झेरों नहीं दिया गया या इसलिये कि यीशुकी महिमा 
80 झेरों प्रगट न हुईं थे। लोगोंसे बहुताने यह 
बचन सुनके कहा यह सचमुच यह भविष्यवत्ता है।
81 झेरों कहा यह खोश है परन्तु झेरों कहा क्या खोश 
82 गालीमेंसे झावेगा। क्या धम्मपुस्तक नहीं कहा।
कि शीघ्र दाउदके बंधसे शैर वैतलहम नगरसे जहां
दाउद रहता था जागेगा। सो उसके बारे लोगोंमें ४५
विमेद हुआ। उनमेंसे जितने उसको पकड़ने चाहते ४६
थे परन्तु जिसीने उसपर हाथ न बढ़ाये।

तब प्यादे लोग प्रधान याजकों शैर फरोशियोंके ४८
पास आये शैर उन्होंने उनसे कहा तुम उसे किया नहीं
लाये हा। प्यादोंने उत्तर दिया कि किसी मनुष्यने ४८४
कभी इस मनुष्यकी नाईं बात न किंदै। फरोशियोंने ४६
उन्होंने उत्तर दिया का तुम भी भरमाये गये हा। का ४६
प्रधानोंं अथवा फरोशियोंमें किसीने उसपर बिगास
किया है। परन्तु ये लोग जो व्यवस्थाको नहीं जानते ४५
हैं साफिद हैं। निकोडीम जो राजको यीशु पास आया ५०
शैर आय उनमेंसे एक था उनसे बोला। हमारी ५१
व्यवस्था जबलें मनुष्यको न सुने शैर न जाने कि वह
क्या करता है तबलें का उसको दोषी उठराती हैं।
उन्होंने उसे उत्तर दिया का आय भी गालीलके हैं। ५२
हूंदौँदेशे कि गालीलमें भविष्यद्वत्ता प्रगट नहीं
होता। तब वह बोई अपने अपने परको गये। ५३

८ स्वात्त्व पब्बे।

१ यीशुका एक व्यभिषारितको हुडाना। २२ उसके उपदेशको समुदायका प्रमाण।
२२ तत्का विशिष्टको विचार। ३३ इज्राइयके सुभाषके जुगाड़ से उन्होंने
कुशलपर घलना देमा। ४५ अपनी सहितका बसलन करना।

परन्तु यीशु जैतून प्रभुतपर गया। शैर भारको फिर
मन्दिरमें आया शैर सब लोग उस पास आये शैर वह
बैठके उन्हें उपदेश देने लगा। तब आयापकों शैर
फरीशियाने एक स्त्रीकौ जो व्यभिचारमें पकड़ी गई थी।

उस पास लाखों बीचमें खड़ी किई। शैर उससे कहा है,

गुरु यह स्त्री व्यभिचार करते ही पकड़ी गई। व्यभि
सारने मूलमें हर्में आद्या दिखा कि ऐसी स्त्रियाँ पत्तरवाहरे
किई जाएं तो आय क्या कहते हैं। उन्होंने उसकी परोरी
करते हुए यह बात कही कि उसपर दाद लगानेका गौं
मिले परन्तु यीसू नोचे भुक्की ऊंगलिसे मुमिपर लिखने
लगा। जब वे उससे पूछते रहे तब उसने उठके उससे कही
तुम्हारे में जो नियमायी हो तो पहिले उसपर पत्तर
कहे। शैर वह फिर नीचे भुक्की मुमिपर लिखने लगा।

पर वे यह सुनके शैर अपने अपने मनसे दारे भरते
बड़ेहीं लेके बोरोबाहर एक एक करके निकल गये शैर
द्विज यीसू रह गया शैर वह स्त्री बीचमें खड़ी रही।

यीसूने उठके स्त्रीकौ बोर शैर किसीका न देखके उससे
कहा है नारी वे तेरे दादायक बढ़ाः हँ। क्या किसीने
तुफ़फ़ुर दंडकी आद्या न दिये। उसने कहा है प्रभु कि
सीने नहीं। यीसू उससे कहा में भी तुफ़फ़ुर दंडकी
आद्या नहीं देता हूं जा शैर फिर पाप मत कर।

तब यीसूने फिर लोगीसे कहा में जगतका प्रकाश हूं।
जो भेरे पीछे आवे सा संघकारमें नहीं चलेगा परन्तु
जीवनका उत्तियाला पासेगा। फरीशियाने उससे कहा तू
अपनेही विषयमें सादें देता हैं तेरी सादें ठीक नहीं
है। यीसू उनका उत्तर दिया कि जो में अपने विषयमें
सादें देता हूं तैभी मेरीसादें ठीक है कियांकि में जानता
हूं कि मैं कहांसे आया हूं शैर कहां जाता हूं परन्तु तुम
नहीं जानते हो कि मैं कहांसे जाता हूं जैर कहां जाता हूं। तुम शरीरका देखके बिचार करते हो मैं १५ बिसीका बिचार नहीं करता हूं। जैर जा मैं बिचार खाने करता हूं भी ता मेरा बिचार ठीक है क्योंकि मैं शक्तिलाही हूं परन्तु मैं हूं जैर पिता है जिसने मुफ़्ते भेजा।
तुम्हारी ब्यवस्थामें लिखा है कि दो जनोंकी साक्षी १५ ठीक होती है। एक मैं हूं जो इन विषयमें साक्षी देता हूं १८ जैर पिता जिसने मुफ़्ते भेजा मेरे विषयमें साक्षी देता है। तब उन्होंने उससे कहा तेरा पिता कहां है। हूं सौं उल्लास व्रत दिया कि तुम न मुफ़्ते न मेरे पिताको जानते हो। जो मुफ़्ते जानते ता मेरे पिताको भी जानते। यह बात योजने मन्दिरमें उपदेश करते २० दिन बाद घरमें कहीं जैर लिखने उसको न पकड़ा क्योंकि उसका समय झलक नहीं पड़ा।
तब योजने उससे फिर कहा मैं जाता हूं जैर तुम २१ मुफ़्ते दुःखों जैर इन द्वारों पापमें लोगों। जा मैं जाता हूं तहां तुम नहीं जा सकते हो। इसपर विद्वानों ने कहा २२ क्या वह इन पापोंकी मार डालेगा कि वह कहां है जहां मैं जाता हूं तहां तुम नहीं जा सकते हो। उससे उससे २३ बाहर हूं तुम नों खिला है मैं उपरका हूं। तुम इस जगतकी है मैं इस जगतका नहीं हूं। इसलिये मैं तुमसे कहा २४ क्या तुम इन पापोंमें लगे जैसकी जो तुम विश्वास न करो। कि वही हूं तो इन पापोंमें लगो। उन्होंने उससे कहा तौ कैसा है। योजने उससे कहा २५ पहले जैसे मैं तुमसे कहता हूं वह भी मुनें। तुम्हारे २६
विषयमें मुख बहुत कुछ बहना शैर विचार करना है। परन्तु मेरा भेजनेहारा सत्य है शैर जो मैंने उससे सुना 20 है साईं जगत से काहता हूं। वे नहीं जानते वे कि वह 28 उससे पिताके विषयमें बोलता था। तब यीशुने उनसे बाहर जब तुम मनुषयोंके पुक्कों का जंगा कराओ तब जानिएगे विषयमें में वह हूं शैर वि भागसे कुछ नहीं करता हूं। परन्तु जैसे मेरे पिताने मुखे सिखाया तैमैं है यह बातें 24 बोलता हूं। शैर मेरा भेजनेहारा मेरे संग है। पिताने मुखे हबकला नहीं बोला है क्योंकि मैं सदा ज्ञेन है। 30 है जिससे वह प्रसन्न होता है। उसके यह बातें बोलते-31 ही बहुत लोगों ने उसपर विश्वास किया। तब यीशुने उन विहारियोंंसे जिन्होंने उसपर विश्वास किया कहा जो तुम मेरे वचनमें बने रहे तो सचमुच मेरे शिष्य 32 है। शैर तुम सत्यको जानिए शैर सत्यको द्वारासे तुम्हारा उद्धार होगा।

33 उन्होंने उसकी उत्तर दिया वि हम तो उसा लोकस्तर विषयमें में शैर कभी किसीसे दास नहीं हुए हैं। तू क्योंकि 34 काहता हैं कि तुम्हारा उद्धार होगा। यीशुने उनकी उत्तर दिया मैं तुमसे सच सच कहता हूं वि जो कोई पाप करता 38 है सो पापका दास हैं। दास सदा घरमें नहीं रहता हैं। 38 पुक्क सदा रहता हैं। तो यदि पुक्क तुम्हारा उद्धार करे तो 30 निष्पादन तुम्हारा उद्धार होगा। मैं जानता हूं कि तुम इष्टाहोमोंके बंध हो परन्तु मेरा बचन तुममें नहीं समाता 38 हैं। इसलिए तुम मुखे मार हलने चाहते हैं। मैंने अपने पिताके पास जो देखा है सो कहता हूं शैर तुमने
झपने पिताको पास जो देखा है सो करते हो। उन्हाँने इस उसको उत्तर दिया कि हमारा पिता इब्राहीम है। योग्य उनसे कहा जा तुम इब्राहीमको सन्तान होते तो इब्राहीमको काम्य करते। परन्तु जब तुम मुफ्त अर्जात 89 एक मनुष्यको जिसने वह सत्य बचन जो मैं ने इंश्वर-से सुना तुमसे कहा है मार डालने चाहते हो। यह तो इब्राहीमने नहीं किया। तुम झपने पिताको काम्य 89 करते हो। उन्हाँने उससे कहा हम व्यभिचारसे नहीं जन्मे हैं हमारा एक पिता है अर्जात इंश्वर। योग्य उनसे कहा यदि इंश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुफ्त प्यार करते क्योंकि मैं इंश्वरकी श्रृंगरी निकलकर आया हूं। मैं झपसे नहीं झा दूं परन्तु उसने मुफ्त भेजा। तुम मेरी बात क्या नहीं बूढ़ते हो। इसीलिए 89 कि मेरा बचन नहीं सुन सकते हो। तुम झपने पिता 88 शैतानसे हो। श्रीर झपने पिताके अभिलाषेंपर चला चाहते हो। वह झारंभसे मनुष्यघाती या श्रीर सद्वाङ्गमें स्थिर नहीं रहता क्योंकि सद्वाङ्ग उसमें नहीं है। जब वह सूढ़ बोलता तब झपने स्वभावहींसे बोलता है क्योंकि वह सूढ़ा श्रीर सूढ़का पिता है। परन्तु में सत्य 89 कहता हूं। इसीलिए तुम मेरी प्रतीति नहीं करते हो। तुमसे श्रीर मुफ्त पापी उड़हाता है। श्रीर जा में 88 सत्य कहता हूं। तो तुम क्यों मेरी प्रतीति नहीं करते हो। जा इंश्वरसे हैं सा इंश्वरकी बातें सुनता है। 89 तुम इंश्वरसे नहीं हो। इस कारण नहीं सुनते हो।

तब यहूदीयांने उसकी उत्तर दिया क्या हम अभिं 89
नहीं कहते हैं कि तू शोभितरानी है जीर भूत तुम्हे लगा नत है। यीशु उत्तर दिया कि मुझे भूत नहीं लगा है परन्तु मैं अपने पिताका सम्मान करता हूं जीर तुम मेरा अस्मान करते है। पर मैं अपनी बड़ई नहीं चाहता हूं। एक है जो चाहता जीर बिचार करता है।

51 मैं तुमसे सच सच कहता हूं यदि कई मेरी बातका पालन करे तो वह कभी मृत्युका न देखेगा। तब पिूडियूने उससे कहा जब हम जानते हैं कि भूत तुम्हे लगा है इब्राहीम जीर भविष्यका लाग मर गये हैं जीर तू कहता है कि यदि कई मेरी बातका पालन करते तो वह कभी मृत्युका स्वाद न चीखेगा। क्या तू हमारे पिता इब्राहीमसे जी मर गया है बड़ा है? भविष्यका लेि भी मर गये हैं। तू अपने तहि क्या बनाता है। यीशु उत्तर दिया कि जो मैं अपनी बड़ई कहता कि मेरी बड़ई कुछ नहीं है। मेरी बड़ई करने-हारा मेरा पिता है जिसे तुम कहते हो कि वह हमारा इश्वर है। तब भी तुम उसे नहीं जानते हो परन्तु में उसे जानता हूं जीर जो मैं कहूं कि मैं उसे नहीं जानता हूं तो में तुम्हारे समान फूटा होगा परन्तु में उसे जानता जीर उसके बचनका पालन करता हूं।

53 तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखनेका होि होता 50 या जीर उससे देखा जीर जानन्द किया। पिूडियूने उससे कहा तू जाबलें पुछास बरसका नहीं है जीर क्या तूने इब्राहीमको देखा है। यीशु उससे कहा मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि इब्राहीमको होनेको पहले है।
भैं हूं। तब उन्होंने पत्थर उठाये कि उसपर फेरीं परत्तु यीशु दिखा गया और उन्होंने बीच मिसे होके मंदिर से निकला और यूही बुझा गया।

5 नवा पढ़े।

1 यीशु का एक बच्चे का देखा जा जन्मका शंखा था। और उसके शिष्यों उससे पूर्ण है गुरु कि सने प्राप किया इस मनुष्यने अर्थवा उसके माता पिताने जो शंखा जन्मा। यीशु ने उतर दिया कि न ता इसने न इसके माता पिताने प्राप किया परत्तु यह इसलिये हुआ कि दृष्टवर्के राम उसमें प्रगट किये जाये। मुक्ति दिल रहते जपने में जनहरके काम उसने करना स्वयं हैं। रात सबाई है जिसमें कबाई नहीं काम कर सकता हैं। जबली में जगतमें हूं तबलों जगतका प्रकाश हूं। यह कहके उनसे भूमिपर यूका और उस यूके मिट्टी गोली करके वह गोली मिट्टी स्थिरके आषांशेंर लगाई। और उसके कहा जाकि शीघ्र हो कुंडमें घो जिसका यह है भेजा हुआ। सो उसने जाकि मेशाया और देखते हुए भाया।

तब पढ़ासियों और जिन्होंने आगे उस संधा देखा या उन्होंने कहा कि यह वह नहीं है जो बैठा भीख मांगता था। विताने कहा यह वह है और उसने कहा यह उसकी नाई है बह भाय बेला में वह हूं। तब उन्होंने उससे कहा तरी आंखें चोकर खुली। उसने 11
उत्तर दिया कि यीशु नाम एक मनुष्यने मिट्टी गोली 
करके मेरी शरीरांपर लगाईं छैर मुक्ति कहा शीलाह- 
के बुड़का जा छैर घो तो वर्षे जाके घोया छैर दूधुप्रे 
92 पाई। उन्होंने उससे कहा वह मनुष्य कहां है। उसने 
कहा में नहीं जानता हूं।  
93 वे उसका जो शारे अंधा था फरीशियोंके पास 
94 लाये। जब यीशुने मिट्टी गोली करके उसकी शरीर 
95 खोली थीं तब विश्वासका दिन था। सा फरीशियोंने 
भी फिर उससे पूछा तूने किस रीतिसे दूधुप्रे पाई। वह 
उसने बोला उसने गोली मिट्टी मेरी शरीरांपर लगाईं 
96 छैर में घोया छैर देखता हूं। फरीशियोंमें घिरतने से 
कहा वह मनुष्य ईश्वरकी छैरसे नहीं है क्योंकि वह 
विश्वासका दिन नहीं मानता है। छैरोंने कहा पापी 
मनुष्य की मजबुर ऐसे आश्चर्य तक्ये कर सकता है। 
97 छैर उन्होंने बिभेद हुआ। वे उस अंधेरे फिर बोले 
उसने जो तेरी शरीर खोली ता तू उसकी विश्वासके का 
कहता है। उसने कहा वह भविष्यता है। 
98 परन्तु यद्यपि दियों जबलूं उस दूधुप्रे पाये हुए मनुष्यके 
माता पिताके नहीं बुलाया तबलूं उसकी विश्वास में प्रती- 
99 ति न किए कि वह अंधा था छैर दूधुप्रे पाई। छैर उन्होंने 
उसने पूछा क्या यह तुमस्तारा पुरुष है जिसे तुम कहते हैं 
कि वह अंधा जन्मा। ता वह छैर चिंतकर देखता है। 
20 उसके माता पिताके उनका उत्तर दिया हम जानते हैं 
कि वह हमारा पुरुष है छैर कि वह अंधा जन्मा। 
21 परन्तु वह छैर चिंतकर देखता है ता हम नहीं जानते.
शायद किसने उसकी शांति खोली हम नहीं जानते हैं।

वह सयाना है उसीसे पूछते वह जापने विषयमें शाय बोलेगा। यह बातें उसके माता पिताने इसलिये कहीं कि दो वो विहूदियांसे हरते उनके कोंकणी विहूदी लोग जापने में उड़ते चुके थे कि यदि कोई यीशुका बिखू वाकरे मान लेये तो सभामें से निकाला जायगा। इस कारण उसके २३ माता पिताने कहा वह सयाना है उसीते पूछते ह।

तब उन्होंने उस मनुष्यका जो अंधा था दूसरी बेर २४ बुलाकर उससे कहा ईश्वरका गुणानुबाद कर। हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है। उसने उत्तर दिया वह पापी २५ हैं कि नहीं सा में नहीं जानता हूं एक बात में जानता हूं। दिव्य जो अंधा था जब देखता हूं। उन्होंने उससे दह फिर कहा उसने तुफसे कथा किया। तेरी शांतिः किस रातिसे खोली। उसने उनका उत्तर दिया कि में शाय २० लोगांसे कह चुका हूं झौर शायलोगाने नहीं सुना। विलाली फिर मुना चाहते हैं। कथा शायलोगभी उसके शिष्य हुक्का चाहते हैं। तब उन्होंने उसकी निंदा कर २८ कहा तु उसका शिष्य है पर हम मुसलिम शिष्य हैं। हम २५ जानते हैं कि ईश्वरने शूसते बातें किंदु परन्तु इसका हम नहीं जानते कि कहांसे है। उस मनुष्यने उनका ३० उत्तर दिया इसमें शब्दभा है कि शायलोग नहीं जानते वह कहांसे है झौर उसने मेरी शांति खोली हैं। हम ३१ जानते हैं कि ईश्वर पापियांकी नहीं सुनता है परन्तु यदि कोई ईश्वरका उपासना हो झौर उसकी देखापर बोले तो वह उसकी सुनता है। यह कभी सुननेसे नहीं ३२
यीशुने सुना कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया था और उसकी पापकर्मी उससे कहा क्या तु इश्वरके इस पुष्पपर विश्वास करता है। उसने उत्तर दिया कि है प्रभु यह कैसा है कि मैं उसपर विश्वास करहूं। यीशुने उससे कहा तने उसे देखा था है जैसा जो तेरे संग बात करता है वही है। उसने कहा है प्रभु मैं विश्वास करता हूँ। जैसा उसकी प्रणाम किया। तब यीशुने कहा मैं इस जगतमें विचारकर लिये जाया हूँ कि जो नहीं देखते हैं।

सो देखे जैसा जो देखते हैं सो अंधे हो जावें। फरीशियोंसे जो जन उसके संग थे सो यह सुनकर उससे बोले।

क्या हम भी अंधे हैं। यीशुने उससे कहा जो तुम अंधे होते तो तुम्हें पाप न होता परन्तु जब तुम कहते हो कि हम देखते हैं इसलिये तुम्हारा पाप बना रहा।

हस्तवाण पढ़े।

हस्तवाण पढ़े।
है। उसको लिये द्वारपाल खोल देता है श्रीर भेड़ंका उसका शब्द सुनती हैं श्रीर बह अपनी भेड़ंका नाम ले ले बुलाता है श्रीर उन्हें बाहर ले जाता है। श्रीर जब वह अपनी भेड़ंका बाहर ले जाता है तब उनको जागे चलता है श्रीर भेड़ंका उसके पीछे हो लेती हैं क्योंकि वे उसका शब्द जानती हैं। परन्तु वे परायण हो नहीं जाएंगीं पर उसके सेवासेवी क्योंकि वे परायण हो शब्द नहीं जानती हैं।

मोक्ष में उनसे यह दूषण कहा परन्तु उन्हें न बुझाया कि यह क्या बात है जा वह हमसे बालता है। तब श्रीर ने फिर उनसे कहा में तुमसे सच सच कहता हूँ कि में भेड़ंका द्वार हूँ। जितनी मेरे जाने जाने से सब चार श्री हाकू हैं परन्तु भेड़ंके उनको न सुनी। द्वार में हूँ। यदि सुभरमसे कैद प्रवेश कर तो चार पावेगा श्रीर भीतर बाहर जाया जाया करेगा श्रीर चार पावेगा। चार किसी श्रीर कामका नहीं केवल चारी श्रीर धात श्रीर १० नाश करनेका जाता है। में जाया हूँ कि भेड़ं जीवन पावें श्रीर अधिकाईंसे पावें। में जचा गढ़ेरिया हूँ। जचा ११ गढ़ेरिया भेड़ंके लिये अपना प्रायां देता है। परन्तु मजूर १२ जा गढ़ेरिया नहीं हैं श्रीर भेड़ंके उसके निजकी नहीं हैं हुंडाको जाते देखके भेड़ंका हाकू देता श्रीर भाग जाता है श्रीर हुंडार भेड़ं पकड़के उन्हें चितर चितर करता है। मजूर भागता है क्योंकि वह मजूर है श्रीर भेड़ंकी कुब १३ चिन्ता नहीं भरता है। में जचा गढ़ेरिया हूँ श्रीर १४ जैसा पिता मुख्य जानता है श्रीर में पिताकी जानता हूँ जैसा में अपनी भेड़ंका जानता हूँ श्रीर अपनी भेड़ंकी
14 जाना जाता हूं। शैर में मेड़ौंके लिये अपना प्राप्त
16 देता हूं। मेरी शैर मेड़न हैं जो इस मेड़शालाको नहीं
हैं। मुझे उनको भी जाना होगा शैर वे मेरा शब्द
10 सुननगी शैर एक कुंड शैर एक रखबाला होगा। पिता
इस कारणसे मुझे प्यार करता है कि मैं अपना प्राप्त
18 देता हूं जिससे उसे फिर लें। कैद उसको मुखसे
नहीं लेता है परन्तु में भागसे उसे देता हूं। उसे
देतेका मुझे अधिकार है शैर उसे फिर लेनेका मुझे
अधिकार है। यह शायद मैंने अपने पितासे पाया।
18 तब यिहूदियोंमें इन बातोंके कारण फिर बिभेद
20 हुआ। उनमें से बहुतने कहा उसका मृत लगा है वह
21 बारहा है तुम उसकी कीया सुनते हो। शैरोंने कहा
यह बातें मृत्युस्तकी नहीं हैं। मृत क्या अंधांकी शांषी
शील सकता है।
22 यिहूदीहोमें स्थापन पब्वे हुआ शैर जागड़का समय
23 था। शैर यीश मंदिरमें मुलेरानके शैरासोंमें फिरता
24 था। तब यिहूदियोंने उसे घेरके उससे कहा तू हमारे
मनको कबलों दुरबधियाँ रखेगा। जे तू थीपु है ते हमसे
25 बालबंक कह। यीशुने उन्हें उतर दिया कि मैंने तुमसे
कहा शैर तुम विश्वास नहीं करते हो। जे काम मैं
अपने पिताके नामसे करता हूं वही मेरे विश्वास साही
25 देतें हैं। परन्तु तुम विश्वास नहीं करते हो विकांकी तुम
20 मेरी मेड़नसे नहीं हो जैसा मैंने तुमसे कहा। मेरी
मेड़न मेरा शब्द सुनती हैं शैर मैं उन्हें जानता हूं शैर
25 वे मेरे पीछे ह। लेटी हैं। शैर मैं उन्हें अनन्त जी-
बन देता हूं श्रीर वे कभी नाश न होंगी श्रीर कौई उन्हें मेरे हाथसे छीन न लेगा। मेरा पिता जिसने उन्हें मुक्त की दिया है सबसे बड़ा है श्रीर कौई मेरे पिताके हाथ- से छीन नहीं सकता है। मैं श्रीर पिता एक हैं। तब यह यहूदियोंने फिर उसे पत्थरबाह करनेका पत्थर उठाये। यीशुने उनका उत्तर दिया कि मैंने अपने पिताकी श्रीर से इस बहुतसंभले काम तुम्हें दिखायें है उनमेंसे जिस कामके लिये मुक्त पत्थरबाह करते हैं। यहूदियोंने उसका उत्तर यह दिया कि भले कामके लिये हम तुम्ही पत्थरबाह नहीं करते हैं परन्तु इश्वरकी निन्दा की लिये श्रीर इसलिये कि तू मनुष्य होके अपनेको इश्वर बनाता है। यीशुने उन्हें इस उत्तर दिया क्या तुम्हारी बयानमें नहीं लिखा है कि मैंने कहा तुम इश्वरगृह हो। यदि उसने उनका इश्वर- इस गण कहा जिनके पास इश्वरका वचन पहुँचा श्रीर धर्मपुस्तककी बात लेगा नहीं है सकती है। त्यो जिसे इस पिताने पवित्र करके जगतमें भेजा है उससे क्या तुम कहते हैं कि तू इश्वरकी निन्दा करता है। इसलिये कि मैंने कहा मैं इश्वरका युत हूं। जि मैं अपने पिताके इस कार्य नहीं करता हूं तो मेरी प्रतीति मत करें। परन्तु जो मैं करता हूं तो यदि मेरी प्रतीति न करें तात्पर्य उन वीर्याँकी प्रतीति करें इसलिये कि तुम जानो श्रीर बिच्छास करें कि पिता मुक्तमें है श्रीर मैं उसमें हूं।

तब उन्होंने फिर उसे पकड़ने चाहा परन्तु वह उनके हाथसे निकल गया। श्रीर फिर यदैक उस पार उस 80 स्थानपर गया जहां योहन पहिले वपतिसमा देता था।
41 श्रीर वहां रहा। श्रीर बहुत लेग उस पास लाल श्रीर बैले याहनने ता कैंदा ज्ञाणचय त्योस्त नहीं किया परन्तु जै कुछ याहनने इसके विषयमें कहा सते सब 42 श्रीर वहां बहुतने उसबर बिशिवास किया।

11 एँग्यारह्वां प्रवे।

9 ढिलियाजरका रोगी बेनान। 8 यीशुका अपने शिष्योंके बंग बात करना श्रीर ढिलियाजरके पास खाना। 18 ढिलियाजरकी बाहिनिमें संया सूक्तीका बालबंद।
89 प्रार्थना करनेरी पीसे ढिलियाजरका निम्नान। 45 रुम वाजचय परस्पर विषयमें विषयमें जब-दिवधारका विश्वास श्रीर कियाफाकी सहभागी।

9 ढिलियाजर नाम बेठनियाका सर्ध्वां मरिम श्रीर उसकी बढ़ीन भन्दा के गांवका एक मनुष्य रोगी था।

2 मरिम बही थी जिसने प्रभुपुर सुगन्ध तेल लगाया श्रीर उसकी चरणोंकी अपने बाल्में चंद्रा श्रीर उसका 3 भाई ढिलियाजर था जा रोगी था। से देनें बढ़ीनें यीशुका कहना भेजा कि ये प्रभु देखिये तिसे श्राप प्यार 4 करते हैं। ये रोगी है। यह मुनके यीशुने कहा यह रोग मृत्युकी लिये नहीं परंतु इंशवारकी महिमाके लिये है कि इंशवारकी पुचकी महिमा उसके द्वारा से प्रगट किंदे जाय। 5 यीशु मरिमका श्रीर उसकी बढ़ीनकी श्रीर ढिलियाजरकी प्यार करता था।

6 जब उसने सुना कि ढिलियाजर रोगी हैं तब जिस स्त्रा-
0 नमं बह था उस स्त्रानमें दो दिन श्रीर रहा। तब इसके 7 पीछे उसने शिष्योंसे कहा कि जाखी हम फिर विहीदि-
8 राकी चले। शिष्योंने उससे कहा है गृह विहीदी लोग भें ज्ञापको पत्यरवाह किया चाहते थे श्रीर श्राप क्षा-
फिर वहां जाते हैं। यीशुने उत्तर दिया क्या दिनकी 8 बारह घड़ी नहीं हैं। यदि कोई दिनका चले तो ठाकर नहीं खाता है किंतु वह इस जगतका उजियाला देखता है। परन्तु यदि कोई रातका चले तो ठाकर 10 खाता है किंतु उजियाला उसमें नहीं है। उसने 11 यह बातें कहीं श्रीर इसके पीछे उनसे बेला हमारा सिन्द इलियाजर सो गया है परन्तु इनमें उसे जगानेकी जाता हूँ। उसके शिष्योंके कहा है प्रभु जो वह सो 12 गया है तो चांगा हो जायगा। यीशुने उसकी मृत्युके 13 विषयमें कहा परन्तु उन्होंने समझा कि उसने नीटमें सो जानेके विषयमें कहा। तब यीशुने उनसे खोलके 14 कहा इलियाजर मर गया है। श्रीर तुम्हारे लिये मैं 15 झानन्द करता हूँ कि मैं भांत नहीं था जिससे तुम विश्वास करो। परन्तु झान्सा हम उस पास चले। तब श्रीमाने जो दिमां बहावता है अपने संगी 16 शिष्योंके कहा कि झान्सा हम भी उसके संग मरनेका जायें। सो जब यीशु झान्सा तब उसने यही पाया कि 17 इलियाजरके कबरमें चार दिन हो चुके।

बैठनिया यिस्खोलीमके निकट झानसाने क्रोश एक दूर 18 था। श्रीर बहुतसे यिहूदी लोग मर्मा श्रीर मरियमके 19 पास झान्से थे कि उनके माड़ींके विषयमें उनकी झांटि देवें। सो मर्माने जब झुना कि यीशु झाना है तब जाके 20 उससे मंत्र किये परन्तु मरियम घरमें बैठी रही। मर्माने 21 यीशुने कहा है प्रभु जो झाप यहां होते तो मेरा माड़ै 22 नहीं मरता। परन्तु मैं जानती हूं कि झाप भी जो कुछ 22
23 यीशु इश्वरसे मांगें इश्वर आपको देगा। यीशुने उससे 24 कहा तैर भाई जी उठेगा। मंदिरने उससे कहा मैं 25 जानती हूँ कि पिछले दिन पुनर्ज्यामिति में वह जी उठेगा। 26 यीशुने उससे कहा मैंने पुनर्प्रयोग श्रीर जीवन हूँ। जो 27 मुक्तपर विश्वास करे सा यदि मर जाय तैभी जीयेगा। 28 श्रीर जो काई जीवता है श्रीर मुक्तपर विश्वास करे तो भी नहीं मरेगा। क्या तू इस वातका विश्वास करती 29 है। वह उससे बाली हां प्रभु मैंने विश्वास किया है 30 किं इश्वरका पुत्र बीमार जो जगतमें ज्ञातवाला था तो 31 आपही हैं। यह कहको वह चाली गई श्रीर अपनी बहिन 32 मारियमको चुपकेते बुलाको कहा गुरु आयेहे श्रीर तुभी 33 बुलातेहे। मारियम जब उससे सुना तब श्रीगुर उठके 34 यीशु पास आई। यीशु चबलों गांवमें नहीं आया था 35 परन्तु उसी स्थानमें था जहां मरियमने उससे भेंट किये। 36 जो यिहूदी लोग मारियमकी संग घरमें थे श्रीर उसकी 37 शांति देते थे तो जब उसे देखा कि वह श्रीगुर उठके बाहर 38 गईं तब यह कहको उसकी पीड़ि हो लिये कि वह कनक- 39 पर जाती हैं कि वहां रहवे। जब मारियम वहां पहुंची 40 जहां यीशु था तब उसे देखके उसकी पांविं पड़ी श्रीर 41 उससे बाली है प्रभु जो आप यहां होते तो मेरा भाई 42 नहीं मरता। जब यीशुने उससे राते हुए श्रीर जो यिहूदी 43 लोग उसके संग आये उन्हैं भी राते हुए देखा तब 44 आत्मामें विकल हुआ श्रीर घबराया। श्रीर कहा तुमने 45 उसे कहां रखा है। वे उससे बाली है प्रभु आपके देखिये। 46 यीशु राया। तब यिहूदियोंने कहा देखा वह उसे कैसा 47
प्यार करता था। परन्तु उन्हें कितनांते कहा कि 37 यह जिसने अंधकार आंखें बोली यह भी न कर सकता कि यह मनुष्य नहीं भरता। यीशु भजनें में फिर बिकल 38 होके कबरपर जाया। वह गुफा थी श्रीर एक पताका उसपर धरा था। यीशुने कहा पताका सरकार श्रीर । 39 उस मरे हुएको बहिन मरी उससे बोली है प्रभु वह तो अभ बसाता है कानुकि उसका चार दिन हुए हैं। यीशुने उससे कहा का में तुमसे न कहा कि जो 40 तू बिश्वास करे तो इश्वरकी महिमाको देखेगी।

तब जहाँ वह मृतक पड़ा था वहांसे उन्हें पताका- 41 की सरकार श्रीर यीशुने ऊपर दृष्टि कर कहा है पिता में तेरा धन्य मानता हूँ कि तुम मेरी सुनी है। श्रीर 42 में जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है परन्तु जो बहुत लोग आसपास खड़े हैं उनके कारण में यह कहा कि वे बिश्वास करे कि तूने मुबंध भेजा। यह बारंब 43 कहके उसने बड़े शब्दसे पुकारा कि ही इलियाजज बाहर जा। तब वह मृतक चट्टासे हाथ पांच बांधे हुए बाहर 44 जाया श्रीर उसका मुंह अंगोंके लपेटा हुआ था। यीशुने उनसे कहा उसे खोला श्रीर जाने है।

तब बहुतसे यिहूदी लोगने जो मरियमके पास 45 जाये थे यह जो यीशुने किया था देखके उसपर बिश्वास किया। परन्तु उन्हें कितनांते फरोशियंबे पास जाके 46 जो यीशुने किया था सो उन्हें से कह दिया। इसपर 47 प्रधान यजकों श्रीर फरोशियंबे समा एकटी करके कहा हम क्या करते हैं। यह मनुष्य तो बहुत आश्चर्यः
५८ कम्मे करता है। जो हम उसे यूं छोड़ देते तो सब लोग उसपर विवाद करने चैत्र रामी लोग जाके हमारे
५९ स्थान चैत्र लोगके भी उठा देंगे। तब उनमें तियाफ़ा नाम एक जन जो उस बरसका महायाजाजक था उनसे
५० बाला तुम लोग कुछ नहीं जानते हो। चैत्र यह विचार भी नहीं करते हो कि हमारे लिये सच्चा है
कि लोगोंके लिये एक मनुष्य मरे चैत्र यह सम्पूर्ण
५१ लोग नाश न होवें। यह बात वह चैत्रसे नहीं बाला
परन्तु उस बरसका महायाजाजक होके भविष्यवाणीके
५२ कहा कि यीशु उन लोगोंके लिये मरनेपर था। चैत्र
क्षेत्र उन लोगोंके लिये नहीं परन्तु इसलिये भी कि
इेरुसलीम सन्तानोंको जो तितर चितर हुए हैं एकमें
५३ एकटू करे। सो उसी दिनसे उन्होंने उसे घात करनें-
५४ की चैत्रसे विचार किया। इसलिये यीशु प्रगट होके
यिहूदियोंके बीचमें चैत्र नहीं फिरा परन्तु वहांसे
जंगलके निकटके देशमें इस्लाम नामएक नगरको गया।
५५ चैत्र अपने शिखरोंके संग वहांं रहा। यिहूदियोंका
निस्तार पब्दे निकर था चैत्र बहुत लोग अपने तई
शुद्ध करनेको निस्तार पब्दे की देशमें चैत्र हो देशमें
५६ निकर गये। उन्होंने यीशुको दूंढ़ा चैत्र मन्दिरमें खड़े हुए
चैत्रसे कहा तुम का समक्ष है का वह चैत्रमें
५७ नहीं शाबिगा। चैत्र प्रधान याजकों चैत्र फ़रीशियांके
भी चाहा दिए थे कि हार्द कोई जाने कि यीशु कहां
है ता बताये इसलिये कि वे सब पकड़े।
१२ बारहवां पढ़ेः

१ मारियस्का यीशुके चरणांपर सुगम्य तेल लगाता । २ बहुसे लोगोंका दलितावरका देखनेके लिये यात्रा । १२ यीशुका विद्वानलीयसे खाना । २० ब्राह्मणभरका उस पास खाना शीर उसका अपने मूल्यका मिथ्याहटाका करता । २९ चारे लोगोंका विश्राम करता । ४४ यीशुका उपवेश ।

निस्तार पढ़ेके छः दिन भागे यीशु बैठन्यांमें खाया जहां इलियाजर था जो भागा गया था जिसे उसने मृत-क्रोधमें उठाया था । वहां उन्हेंं उसके लिये विद्यारी बनाई शीर मरने से वीठ इलियाजर यीशुके संग बैठने हारे दिनके एक था । तब मारियमने भाध सेर जारामासीका बहुमूल्य सुग्न्य तेलके यीशुके चरणांपर लगाया शीर उसके चरणांके अपने बालेंसे पौंछा शीर तेलके सुग्न्यसे घर भर गया । इसपर उसके शिष्यकें से पुष्कर यीशु इस्कूरियाती नाम एक शिष्य जो उसे पकड़वाने था बेला । यह सुग्न्य तेल कीं नहीं तीन से सुक्कियांपर बेचा गया शीर कंगालेंकी दिया गया । वह यह बात इसलिये नहीं बेला कि वह कंगालेंकी चिन्ता करता था परन्तु इसलिये कि वह चार था शीर चौंकी रखता था शीर जो उसमें डाला जाता तो उठाया था । यीशुने कहा स्त्रिया रहने दी । उसने मेरे गाड़े जानेके दिनके लिये यह रखा है । कंगाल लेंगे तुमहारे संग सदा रहते हैं परन्तु में सुहारे संग सदा नहीं रहूंगा ।

यीहूदियोंमें से बहुत लोगोंके जाना कि यीशु वहां है ५ शीर वे भेद के यीशुके कारण नहीं परन्तु इलियाजरकी
देखनेके लिये भी ज्ञाये जिसे उसने मृतकोंमें से उठाया । 10 या । तब प्रधान याज्ञवाले इलियाजरके भी मार । 11 डालनेका विचार किया । क्योंकि बहुत यिहूदीयांने उसके कारण जाके यीशुपर विश्वास किया । 12 दूसरे दिन बहुत लोग जो पन्ने में ज्ञाये थे जब उन्होंने । 13 सुना कि यीशु यिहूदशासनमें चाता है । तब बजौरीके पत्रे लेके उससे मिलनेकी निकले शैर पुकारने लगे कि जय जय धन क्यों इस्वायेलका राजा जो परमेश्वरके नामसे । 14 चाता है । यीशु एक गदीके बच्चीका पाके उसपर बैठा । 15 जैसा लिखा है कि है सियोनकी पुकी मत हर देख तेरा । 16 राजा गधीके बच्चीपर बैठा हुआ चाता है । यह बातें उसके विश्वयमें लिखी हुई थीं शैर कि उन्होंने उससे । 17 यह किया था । जै लोग उसके संग थे उन्होंने साधी दिदे कि उसने इलियाजरके कवरसे बुलाया शैर । 18 उसके मृतकोंमें से उठाया । लोग इसी कारण उससे झा मिले भी कि उन्होंने सुना कि उसने यह आश्चर्य । 19 कम्पे किया था । तब फरीशियांने शासनमें कहा क्या तुम देखते हो कि तुमसे कुछ बन नहीं पड़ता । देखा उसके पोछे गया है । 20 जै लोग पन्ने में भजन करनेका ज्ञाये उन्होंने से निकाने । 21 यूनानी लोग थे । उन्होंने गालीके वैतसेरा नगरके रहनेके फिलिपके पास ज्ञाये उससे विनती किये कि । 22 हे भगवान हम यीशुका देखने चाहते हैं । फिलिपने ज्ञाये ।
चिन्त्रियसे कहा चैत फिर चिन्त्रिय चैत फिलिपने यीशुसे कहा। यीशुने उनको उत्तर दिया कि मनुष्यको पुत्रकी २३ महिमाके प्रगट होनेकी घड़ी च्रापुंचही है। मैं तुमसे २४ सच सच कहता हूं यदि गेहूँका दाना भूमिमें पड़के मर न जाय तो वह चक्कीला रहता है परन्तु जो मर जाय तो बहुत फल फलता है। जो अपने प्राणीको प्यार करे सो २५ उसे खाँचेगा चैत जो इस जगतमें अपने प्राणीको अप्रिय जाने सा अनन्त जीवनलीं उसकी रक्षा करेगा। यदि २६ कई मेरी सेवा करे ता मेरे पीछे हा लेवे चैत जहां मैं रहुंगा तहां मेरा सेवक भी रहेगा। यदि कई मेरी सेवा करे ता पिता उसका आदर करेगा। अब मेरा मन २७ भाकुल हुआ है चैत मैं कहा कहूं। है पिता तुमके इस घड़ीसे बचा। परन्तु मैं इसी लिये इस घड़ीलीं चाहा हूं। है पिता अपने नामकी महिमा प्रगट कर। तब यह २८ चाकाशवानी हुई कि मैंने उसकी महिमा प्रगट किये हैँ चैत फिर प्रगट कहुंगा। तब जो लोग खड़े हुए सुनते २८ धे उनकीयों कहा कि मेघ गजा। चैतिर्मि कहा कई स्वर्ग दूरत उससे बेला। इसपर यीशुने कहा यह शब्द मेरे ३० लिये नहीं परन्तु तुम्हारे लिये हुआ। अब इस जगतका ३१ विचार होता है। अब इस जगतका अध्यय बाहर निकाला जायगा। चैत मैं यदि पृथिवीपरसे जंचा किया ३२ जांच ता सम्बूंगे अपनी चैत खोंचूंगा। यह कहनेमें ३३ उससे पता दिया कि वह कैसी मृत्युसे मरनेपर था। लोग उसकी उत्तर दिया कि हमने व्यवस्थामें सुना ३४ है कि खोशु सदाले रहेगा। तू कैंबर कहता है कि
मनुष्यवे पुकारकर जंचा किया जाना है। यह मनुष्यका पुकार की नीन्द है। यिशुने उससे कहा उजियाला बाबा चोड़िये बेर तुम्हारे साथ है। जबलीं उजियाला मिलता है तबलीं चलो न हो कि अंधकार तुम्हें घेरे। जो अंधकारमें चलता है सा नहीं जानता मैं कहां जाता है। जबलीं उजियाला मिलता है उजियालेपर विश्वास कारे कि तुम ज्योतिके सन्तान हासी। यह बातें कहके यिशु बला गया शीर उससे छिपा रहा।

39 परलु यदापि उसने उसके साथे इतने आश्चर्यमें कभी किये थे तो भी उन्होंने उसपर विश्वास न किया।

40 कि यिशियाह भविष्यदेखका बचन पूरा होवे जो उसने कहा कि है परमेश्वर किसने हमारे समाचारका विश्वास किया है शीर परमेश्वरकी भुजा किसपर प्रगट किए गई है। इस कारण वे विश्वास न कर

40 सके क्या कि यिशियाहने फिर कहा। उसने उनके नेच अंधे शीर उनका मन कठोर किया है ऐसा न हो कि वे नज़ारे टूटके शीर मनसे बुरे शीर फिर जावे शीर

41 में उन्हें चंगा कहतो। जब यिशियाहने उसका ऐसवर्य देखा शीर उसके विश्वासमें बोला तब उसने यह बातें

42 कहते। पर तामी प्रजानंसे भी बहुतने उसपर विश्वास किया परलु फरीशियाहं कारण नहीं मान लिया न नहीं। कि वे समाचारं निकाले जायं। क्या कि मनुष्येंकी प्रशंसामें उनकी इंश्वरकी प्रशंसासे ओधिक प्रिय लगती थी।

44 यिशुने पुकारकर कहा जा मुमक्क पर विश्वास करता है।
सेवा मुफ्तिय नहीं परलू मेरे भेजनेहरैपर विश्वास करता है । शोरा जो मुफ्त देखता है से मेरे भेजनेहरैपको ४५ देखता है । में जगतमें ज्योतिसा आया हूँ कि जो कोई ४५ मुफ्तिय विश्वास करे से अंधकारमें न रहे । शोरा ५० यदि कोई मेरी बारें सुनके विश्वास न करे तो में उसे टंडके योग्य नहीं ठहराता हूँ कोन्फ़ेक्ट में जगतका टंडके योग्य ठहरानेको नहीं परलू जगतका चाहे करनेको आया हूँ । जो मुफ्त तुफ़ जाने शोरा मेरी बातें यहाँ न ५५ करे एक उसका टंडके योग्य ठहरानेहरैपका है । जो बचन मैने कहा है वही मिलने दिनमें उसे टंडके योग्य ठहरावे-
गा । कोन्फ़ेक्ट मैने अपनी शोरसे बात नहीं किये है परलू ५५ पिताने जिसने मुफ्त मेजा आपके मुफ्त मेजा दी दिए है कि मैं क्या कहूँ शोरा का बालु । शोरा मैं ज़काता हूँ कि ५० उसको आज्ञा अन्तर्ज जीवन है इसलिए में जो बालु ता हूँ सो जैसा पिताने मुफ्तसे कहा है वैसाही बालु हूँ ।

१३ तरहवां प्राव ।

१ योग्य अपने जिओंको पारीको धोना । १२ पाँच अनेको तालग्य । २१ विश्वासके विश्वासों स्थापना भविष्यत्तथ्य कहना । २२ विश्वासको उपजेन बेना ।

निस्तार प्रप्नेको आये ये ज्ञाने जाना तक मेरी घरी आ ।

पहुँची है कि में इस जलतमें से पिताने पास जाने शोरा उसने अपने निज लोगाँको जो जलतमें से पार करके उन्हें अन्ततों पार किया । शोरा विश्वासको समयमें जब शैतान शिमाने के पुत्र यिहुदा इस्कारियोंकी मनमें उसे यक़ड़वानेका मत डाल चुका था । तब यीशु यह जानके कि पिताने सब कुछ मेरे हाथमें दिया है शोरा कि में
इश्वरकी श्राबंधके निकाल चाया श्रार इश्वरकी पास जाता

4 हूं। बियारीति उठा श्रार अपने कपड़े रख दिये श्रार
5 अंगोळा लेके अपनी कमर बांधी। तब पांवमें जल डालके
6 शिमाने श्रार घाने लगा श्रार जिस अंगोळे उसके
7 कमर बांधी थी उससे गंभीरने लगा। तब वह शिमान
8 पिताके पास चाया। उससे उससे कहा है प्रभु का चाय
9 मेरे पांव धागते हैं। यीशुने उसका उत्तर दिया कि जो मैं
10 बूढ़ा तू अब नहीं जानता है परन्तु इसके पीछे
11 जानेगा। पितारके उससे कहा श्रार मेरे पांव कभी न
12 धागते थे। गीताने उसका उत्तर दिया कि जो मैं तुम्हें न
13 धागते थे मेरे संग तेरा कुछ अंश नहीं है। शिमाने पितारके
14 उसके कहा है प्रभु के के मेरे पांव नहीं परन्तु मेरे
15 हाय श्रार सिर भी धुएँ। गीताने उसके कहा जो
16 नहाया है उसका पांव धागे बिना श्रार कुछ अवश्यक
17 नहीं है परन्तु वह सम्पूर्ण धुएँ है श्रार तुम ले शुठे धुएँ
18 परन्तु सब नहीं। वह तो आपने पकड़वानेराखी जानता
19 था इसलिये उसके कहा तुम सब शुठे नहीं है।
20 जब उसके उनके पांव धागे आपने कपड़े ले लिये थे
21 तब फिर बैठके उनके कहा तुम जानते हैं कि मैंने
22 तुमसे कहा चाया है। तुम सुभीत हो गुरु श्रार है प्रभु पकड़ा
23 रते हैं श्रार तुम छूखा कहते हैं किंतु मैं वहीं हूं।
24 सा यदि मैंने प्रभु श्रार गुरु होके तुम्हारे पांव धागे हैं
25 तो तुम्हें भी एक दूसरीके पांव धागे उचित है। किंतु
26 मैं तुमके नमुना दिया है कि जैसा मैंने तुमसे कहा
27 हूं तुम भी जैसा करो। मैं तुमसे सच सच कहता हूं।
दास जिन्होंने स्वामीसे बड़ा नहीं श्रीर न प्रेमित जिन्हे मेरे
बजनेहरीसे बड़ा है। जो तुम यह बातें जानते हैं यदि तू
उनपर चलो तो धन्य हो। में तुम सभी के विषयमें तू
नहीं कहता हूँ। जिन्हें मैंने चुना है उन्हें मैं जानता हूँ।
परन्तु यह इसलिये है कि धम्मपुस्तकका वचन पूरा है। वे
कि जो मेरे संग रोटी खाता है उसने मेरे बिह्न्दु जिन्हे
लात उठाई है। में जबसे इसके हालने हारे तुमसे तू
कहता हूँ। कि जब वह है जाय तब तुम विश्वस करो
कि मैं वहीं हूँ। मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि जिस
किसीको मैं भेजू उसका जा यहाँ करता है तो मुस्के
यहाँ करता है श्रीर जो मुस्के यहाँ करता है तो मेरे
भेजनेहरीका यहाँ करता है।

यह बातें कहकर यीशु ज्ञातमां स्वाभाविक हुआ श्रीर २१
साधी देखे बाला में तुमसे सच सच कहता हूँ। कि तुम
के एक सुभे पकड़वाया। इसपर शिष्य लेग्याँ यह २२
सन्देह करते हुए कि वह किसी विषयमें बोलता है
एक दूसरेकी श्रीर ताकने लगे। परन्तु यीशुके शिष्यों- २३
मंते एक जिसे यीशु भार करता था उसकी गोलमें
बैठा हुआ। तो शिमान पितारे उसको सैन किया २४
कि पुद्दये कौन है जिसके विषयमें जाप बलते हैं।
तब उसने यीशुकी छातीयर उठाके उससे कहा है प्रभु
कौन है। यीशुने उत्तर दिया वही है जिसके मैं यह श्री
रोटीका दुकड़ा दुबेकी देंजंगाँ। श्रीर उसने दुकड़ा दुबेकी
शिमानकी पुछ यिहूदा इस्कारियोतीका दिया। उसी २७
समयमें दुकड़ा लेनके पीछे श्रीटान उसमें पैठ गया। तब
यीशुने उससे कहा जो तू करता है सो बहुत शीघ्र कर।

२८ परन्तु बैठनेहारे में उसने जाना कि उससे किस कारण यह बात उससे कही। क्योंकि विहूंदा चैली जी रखता था इसलिये कितनें मांगका कि यीशुने उससे कहा पढ़ने के लिए जो हमें शाब्दिक है जैसे मेल ले।

३० अथवा कंगाले में कुछ दे। सो रुक़ड़ा लेनेके पीछे वह तुरन्त बाहर गया। उस समय रात थी।

३१ जब वह बाहर गया था तब यीशुने कहा अब मनुष्यके पुत्रके महिमा प्रगट होती है जैसा इश्वरकी महिमा

३२ उसके द्वारा प्रगट होती है। जैसा इश्वरकी महिमा उसके द्वारा प्रगट होती है। तो इश्वर भी ज्ञानी जीवन से उसकी

३३ महिमा प्रगट करेगा जैसा तुरन्त उसे प्रगट करेगा। जैसा रात छोड़े जैसा मैं रहूं कि जहां मैं जाता

३४ हूं। तहां तुम नहीं ज्ञान सकते हो। तैसा मैं ज्ञान तुमसे भी

३५ कहता हूं। मैं तुम्हें एक नई भाषा देता हूं कि एक दूसरे के मैं प्यार करो। जैसा मैं तुम्हें प्यार किया है। तैसा तुम

३६ भी ज्ञान दूसरे के मैं प्यार करो। जैसा तुम भाषा में प्यार करो तो। इसीसे सब लग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो।

३६ शिष्योंने पिताने उससे कहा है प्रभु ज्ञान कहां

जाते हैं। यीशुने उसके कहा। उससे उतर दिया कि जहां मैं जाता

३८ हूं। तहां तू ज्ञान मेरे पीछे नहीं ज्ञान सकता है परन्तु

३९ इसके उपरात्त तू मेरे पीछे जाइये। पिताने उससे

३१ हूं। मैं ज्ञान मेरे पीछे ज्ञान सकता

३२ हूं। मैं ज्ञान मेरे पीछे ज्ञान सकता

३३ हूं। मैं ज्ञान मेरे पीछे ज्ञान सकता
चत्तर दिया क्या तू मेरी लिये जनना प्राण देगा । मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जबलीं तू तीन बार मुझसे न मुक्तरे तबलों मुगे न बेलेगा ।

१४ चौदहवां पद्व ।

१ योगिका घरी श्रवण शालि बना । ५ शेषीका गर्व मार्गके विवाहसे इसर बना । ८ फिलिपका हैं जीर पिताका देखनेके विवाहसे इसर बना । १५ शालि- वालका मेवने श्रेयर शिवरोका ज्ञान श्रीर शालि बनेकी रत्नका ।

तुम्हारा मन व्याकुल न होवे । देशवर्यर विश्वास करे । श्रीर मुखपर विश्वास करा । मेरे पिताके घरमें बहुतसे रहनेके स्थान हैं नहीं ता मैं तुमसे कहता । मैं तुम्हारे लिये स्थान तैयार करने जाता हूं । श्रीर जो मैं जाके तुम्हारे लिये स्थान तैयार करता ता फिर जाके तुम्हें अपने यहां ले जाएगा कि जहां मैं रहूं तहां तुम भी रहो । श्रीर मैं कहां जाता हूं सो तुम जानते हो श्रीर मार्गका जानते हो ।

योगिका उससे कहा है प्रभु ज्ञान कहां जाते हैं सो हम नहीं जानते हैं । श्रीर मार्गका हम कींकर जान सकें । योगिका उससे कहा मैं ही मार्ग श्रीर सत्य श्रीर जीवन हूं । बिना मेरे द्वारसे काे दिता पास नहीं पहुंचता है । श्रीर तुम मुक्त जानते ता मेरे पिताका भी जानते श्रीर जबसे तुम उसको जानते हो श्रीर उसका देखा है ।

फिलिपके उससे कहा है प्रभु पिताका हमें दिखाये । हमारे लिये यही बहुत है । योगिका उससे कहा है । फिलिप मैं इतने दिनसे तुम्हारे संग हूं श्रीर का तूने मुक्त नहीं जाना है । जिसमे मुक्त देखा है उसके पिताका देखा है श्रीर जू रे कींकर कहता है निति पिताका हमें
10 दिखाइये। क्या तू प्रतीति नहीं करता है कि मैं पितामें हूं, श्रायर पिता मुँहरम है। जो बाते मैं तुमसे कहता हूं तो अपनी श्रायर से नहीं कहता हूं। परन्तु पिता जो मुँहरमें 11 रहता है वही इन कामःशंका करता है। मेरी प्रतीति करो कि मैं पितामें हूं। श्रायर पिता मुँहरम है नहीं ता 12 कामःशंका के कारण मेरी प्रतीति करो। मैं तुमसे सब सब कहता हूं कि जो मुँहरपर विभववास करे जो काम में करता हूं उन्हें वह भी करेगा। श्रायर इसके बज़े काम करेगा। 13 क्योंकि मैं अपने पिताके पास जाता हूं। श्रायर जो कुछ तुम मेरे नामसे मांगेगे तो मैं उसे कहेंगा। 14 जिस पुस्तके द्वारा पिताकी महिमा प्रदर्शन है। जो तुम मेरे नामसे कुछ मांगे तो मैं उसे कहेंगा। 15 जो तुम मुँहें प्यार करते हो तो मेरी ज्ञाताश्रीकिका 16 पालन करो। श्रायर में पितासे मांगेगा। श्रायर वह तुम्हें दूसरा शांतिदाता देगा कि वह सदा तुम्हारे संग रहें। 17 आपत सत्यताका ज्ञाता जिसे संसार गढ़ि पहले नहीं कर 18 सकता है क्योंकि वह उसे नहीं देखता है। श्रायर न उसे जानता है। परन्तु तुम उसे जानते हैं। क्योंकि वह तुम्हारे 19 संग रहता है। श्रायर तुम्हारे में होगा। मैं तुम्हें घानाय नहीं। 20 बोला दोही बारंबार संसार मुँहके फिर नहीं देखेगा परन्तु तुम मुँह देखेगे। 21 क्योंकि मैं जीता हूं तुम भी जीतेगे। उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पितामें हूं। श्रायर तुम मुँहरम ही 22 श्रायर मैं तुममें हूं। जो मेरी ज्ञाताश्रीकिका पायी उहें पालन 23 करता है वही है। जो मुँहे प्यार करता हैं श्रायर जो मुँहे
यार करता है सा मेरे पिताका यारा होगा श्रीर मैं वसे यार कहकोगा श्रीर अपने तई उसपर प्रगत कहंगा।

तब इसकारियाँ नहीं परन्तु दूसरे गिरहुदाने उससे २२ कहा है प्रभु श्राय किसलिये अपने तई हृमोंपर प्रगत करंगे श्रीर संसारपर नहीं। यीहुने उसको उत्तर दिया २३ यदि कोई मुक्ते प्यार करे ता मेरी बातको पालन करेगा श्रीर मेरा पिता उसे यार करेगा श्रीर हम उस पास शांतिवे श्रीर उसको संग बास करंगे। जो मुफ्ते प्यार नहीं २४ करता है सा मेरी बातें पालन नहीं करता है श्रीर जे बात तुम सुनते हो सा मेरी नहीं परन्तु पिताकी है जिलने मुफ्ते भेजा। यह बातें मैने तुम्हारे संग रहते हुए २५ तुमसे कही हैं। परन्तु शांतिदाता शरीरत पाविव श्रात्मा २६ जिसे पिता मेरे नामसे भेजेगा वह तुम्हें सब कुछ सिखावेगा। श्रीर सब कुछ जो मैने तुमसे कहा है तुम्हें समर्पण करावेगा। मैं तुम्हें शांति दे जाता हूं मैं अपनी शांति तुम्हें २० देता हूं। जैसा जगत देता है तैसा मैं तुम्हें नहीं देता हूं।

तुम्हारा मन व्याकुल न है य श्रीर डर न जाय। तुमने २८ सुना कि मैने तुमसे कहा में जाता हूं श्रीर तुम्हारे पास फिर शांतजा। जो तुम मुफ्ते प्यार करते ता मैने जो कहा कि मैं पिता पास जाता हूं इससे तुम शानदार करते किंतु मेरा पिता मुक्तसे बढा है। श्रीर मैने जब इसके २८ हालेंके शांति तुमसे कहा है कि जब उसह हा जाय तब तुम बिनिर्वास कर। मैं तुम्हारे संग श्रीर बहुत बातें न कहकोगा ३० किंतु इस जगतका शरीरत जाता है श्रीर मुफ्तमें उसका कुछ नहीं है। परन्तु यह इसलिये है कि जगत जाने कि ३१
में पिताजी क्या करता हूं चैर जैसा पिताने मुझे 
शान्त दिने तैसाही करता हूं, उठो हम यहाँ से चलें ।

१५ पन्तूहवां पद्यः ।

१ वाह लता चैर उसकी हालिलिका तुम्हारी। २ गियांसे धुकुता बहा प्रेम। १५ 
गियांसे गले ज्ञानकी महिमादाबादी। २२ झागके लगावको दोषका प्रमाण।

१ में सच्ची दासा लता हूं चैर मेरा पिता फिरान है।
२ मुखमे जो जा दाल नहीं फलती है वह उसे दूर करता 
है चैर जा जा दाल फलती है वह उसे शुद्ध करता है 
तुम तो उस वचनके गुसादे तात 
4 जो में तुमसे कहा है शुद्ध हो चुकी। तुम मुखमे रहे 
चैर में तुममे। जैसे दाल जो वह दासा लतांमे न रहे 
तो शापसे फल नहीं फल सकती है तैसे तुम भी जा 
5 मुखमे न रहे तो नहीं फल सकते है। में दासा लता 
हुं तुम ले लांग दालें हो। जो मुखमे रहता है चैर में 
उसमे से बहुत फल फलता है क्योंकि मुखमे अलग 
6 तुम कुछ नहीं कर सकते है। यदि के दुई मुखमे न रहे 
तो वह ऐसा पैठा जाता जैसे दाल पेंकी जाती चैर 
सुख जाती चैर ले अदी दालें बटरावें अग्रमे दाललैं 
7 हैं चैर वे जल जाती है। जो तुम मुखमे रहे चैर 
मेरी बातें तुममे रहं तो जो अच्छ तुम्हारी दीर्घ हो अ 
8 तो मांगो चैर वह तुम्हारे लिये हो जायगा। तुम्हारे 
बहुत फल फलनेमे मेरे पिताकी महिमा प्रगट होती 
है चैर तुम मेरी शिष्य हो आगे।

8 जैसा पिताने मुखमे प्रेम किया है तैसा में तुमसे प्रेम
किया है। मेरी प्रेममें रहा। जैसे मैंने अपने पिताकी १० आज्ञाओं का पालन किया है श्रीर उसके प्रेममें रहता हूं तैसे तुम जा मेरी आज्ञाओं का पालन करो ता मेरे प्रेममें रहांगे। मैंने यह बार्त तुमसे इसलिये कही है कि ११ मेरा आजान्द तुम्हारे में रहे श्रीर तुम्हारा आजान्द सम्पूर्ण हो जाय। यह मेरी आज्ञा है कि जैसा मैंने तुम्हें प्यार १२ किया है तैसा तुम एक दूसरेको प्यार करो। इससे बड़ा १३ प्रेम किसीका नहीं है कि बाई अपने सिंचिनके लिये अपना प्राण देव। तुम यदि सब काम करो तो मैं तुम्हें आज्ञा १४ देता हूं ता मेरे मिच्छ हो। मैं आज्ञाको तुम्हें दास नहीं १५ बहता हूं कियोंकि दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्यों करता है अंततु मैंने तुम्हें मिच्छ कहा है कियोंकि मैंने जा अपने पिताको मुना है सio सब तुम्हें जनाया है। तुमने १६ बहु नहीं चुना अंततु मैंने तुम्हें चुना श्रीर तुम्हें रहाया कितुम जाके फल फली श्रीर तुम्हारा फल रहे श्रीर कितुम मेरे नामसे जो कुछ पिताको मांगो वह तुम्हें देव। मैं तुम्हें इन बाताओंकी आज्ञा देता हूं इसलिये कि तुम १७ एक दूसरेको प्यार करो। यदि संसार तुमसे बैर करता १८ है तुम जानते हो कि उन्हें तुमसे पहले मुफ्तसे बैर किया। जो तुम संसारको होते ता संसार अपनाकी प्यार १८ करता परन्तु तुम संसारके नहीं है पर मैंने तुम्हें संसार- मैंने चुना है इसलिये संसार तुमसे बैर करता है। जो २० बचन मैंने तुमसे कहा कि दास अपने स्वामीको बड़ा नहीं है ता स्मरण करो। जो उन्हें मुफ्त सताया है ता तुम्हें भी सतावें जो मेरी बातको पालन किया है ता तुम्हारी
21 भी पालन करेंगे। परन्तु वे मेरे नामके कारण तुमसे यह सब करेंगे क्योंकि वे मेरे मेजनेहरुको नहीं जानते हैं।
22 जो में न श्लाता श्रीर उनसे बात न करता तो उन्हें पाप न होता परंतु अब उन्हें उनकी पापको लिये 23 कोई बहाना नहीं है। जो मुफ्त बैर करता है सो मेरे 24 पितासे भी बैर करता है। जो में उन कामेंको जो 25 श्रीर विकी नहीं किये हैं उन्हाँमें न किये होता तो उन्हें पाप न होता परंतु अब उन्हाँने देखके भी मुफ्तसे 26 श्रीर मेरे पितारे भी बैर किया है। पर यह इसालिये है कि जो बचन उन्हाँकी व्यवस्था में लिखा है कि उन्हाँने 27 मुफ्तसे अनकारण बैर किया सा पूरा होवे। परंतु शांतिदाता जिसे में पिताकी श्रीरसे तुम्हारे पास भेजुंगा शरीरत सत्यता का आत्मा जो पिताकी श्रीरसे निकलता है जब श्रावगा तब वह मेरे विषयमें सादृशी देगा। 28 श्रीर तुम भी सादृशी देखाने क्योंकि तुम शांतर्मसे मेरे संग रहे हो।

16 सालहवां पर्व।

1 शिवोके सताथे जानका भविष्यवादः। 2 पीयुके जानेको शांतिदाता का आत्मा। 3 शांतिदाताको जानका परमात्मा। 4 पीयुका जानेको बविष्यवादः श्रीको समाधाना श्रीर शांति देना।

1 मैंने तुमसे यह बातें कही हैं कि तुम ठाकर न 2 खाली। वे तुम्हें सभामें निकालेंगे हां वह समय शालता है जिसमें जो कोई तुम्हें मार डालेगा से समझेगा 3 कि में श्रवरको सेवा करता हूं। श्रीर वे तुमसे इसालिये यह करेंगे कि उन्हाँने न पिताको न मुफ्तको जाना है।
परन्तु मैंने तुमसे यह बातें कही हैं कि जब वह समय ४
झावे तब तुम उन्हें स्मरण करो कि मैंने तुमसे कह
दिया . शीर भी तुमसे यह बातें जारी नहीं बोला
क्योंकि मैं तुम्हारे संग था ।

पर जब मैं अपने भेजनेहरीके पास जाता हूं शीर तुमसे कोई
तुमसे कही नहीं मुक्त है कि झाप कहां जाती
हैं । परन्तु मैं जी यह बातें तुमसे कही हैं इसलिये
तुम्हारे मन झोकाते भर गये हैं । तैमो मैं तुमसे सच
बात कहता हूं तुम्हारे लिये अच्छा है कि मैं जांजो-
कि जो मैं न जांजू तो शांतिदाता तुम्हारे पास नहीं
झावेगा परन्तु जो मैं जांजू तो उसे तुम्हारे पास
झावेंगा ।

शीर वह झाकि जगतके पापके विषयमें शीर गर्मके
विषयमें शीर बिचारको विषयमें सम्भावेंगा । पापके
विषयमें यह कि वे मुक्तपर विषयात नहीं करते हैं ।
गर्मके विषयमें यह कि मैं अपने पितामह पास जाता हूं १०
शीर तुम सुमी फिर नहीं देखोगे । बिचारके विषयमें
यह कि इस जगतके अध्यादेशका बिचार किया गया है ।
सुमी शीर भी बहुत कुछ तुमसे कहना है परन्तु तुम १२
श्रवन नहीं सह सकते हो । पर यह जब झावेगा शराबात १३
सत्यताका झामा तब तुम्हें सारी सदृशाँ लागे बता-
झावेगा क्योंकि वह अपनी शीरसे नहीं कहेगा परन्तु जी
कुछ सुनेगा से कहेगा शीर वह झानवाली बातें तुमसे
कह देगा । वह मेरी महिमा प्रगट करेगा क्योंकि वह १४
मेरी बातमें लेके तुमसे कह देगा । जो कुछ पिताका १५
है सो सब मेरा है इसलिये मैंने कहा कि वह मेरी बातम्मे से लेके तुमसे कह देगा।

16 चौड़ी बेरम मुफ्त नहीं देखाये श्रायर फिर चौड़ी
17 बेरम मुफ्त देखाये किंवा फिर पिताके पास जाता हूँ। तब उसके शिष्यांमें ही काई काई भावसमे बाले यह क्या है जो वह हमसे कहता है कि चौड़ी बेरम मुफ्त नहीं देखाये श्रायर फिर चौड़ी बेरम मुफ्त देखाये। श्रायर यह 18 कि मैं पिताके पास जाता हूँ। सो उन्होंने कहा यह चौड़ी बेरकी बात जो वह कहता है क्या है। हम 19 नहीं जानते वह क्या कहता है। योजने जाना कि वे मुक्त ही पूछा चाहते हैं श्रायर उनसे कहा मैं जो बोला कि चौड़ी बेरम मुफ्त नहीं देखाये श्रायर फिर चौड़ी बेरम मुफ्त देखाये क्या तुम इसके विषय में भावसमे 20 विचार करते हैं। मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि तुम दोषानु श्रायर रिलाय करोगे परन्तु संसार श्रान-नित होगा। तुम्हें शेक होगा परन्तु तुम्हारा शेक 21 शान्ति है हो जायगा। स्पष्टीका जननी में शेक होता है किंवा हमारा उसका समय चा पुछा है परन्तु जब वह जान चुकी तब जगतमें एक मनुष्यके उत्पत्ति होनेके शान्ति के कारण ज्ञान पाने का फिर स्मरण 22 नहीं करती है। श्रायर तुम्हें तो आभी शेक होता है परन्तु मैं तुम्हें फिर देखूँगा श्रायर तुम्हारा मन श्रान-नित होगा श्रायर तुम्हारा शान्ति काई तुमसे छोन 23 न लेगा। श्रायर उस दिन तुम मुफ्तसे कुछ नहीं यौबूँगे। मैं तुमसे सच सच कहता हूँ जो कुछ तुम
मेरे नामसे पितासे मांगोगे वह तुम्हें देगा। अबलों २४
तुमने मेरे नामसे कुछ नहीं मांगा है। मांगा तो
पाएगों कि तुम्हारा ध्यान चार्ज मुक्की सम्पूर्ण होय। मैंने यह २५
बात हमें तुमसे दृष्टांतों में कही हैं परन्तु समय आता है
जिसमें हम तुमसे दृष्टांतों में क्रीर नहीं कहुंगा परन्तु
खोलके तुम्हें पितासे विषयमें बताऊंगा। उस दिन हमें
तुम मेरे नामसे मांगोगे क्रीर में तुमसे नहीं कहता हो
कि मैं तुम्हारे लिये पितासे प्रार्थना कहुंगा। क्योंकि २६
पिता इसके ही तुम्हें प्यार करता है इसलिये कि हमने
मुफ्त प्यार किया है क्रीर यह बिश्वास किया है कि
मैं इंश्वर में क्रीरसे निकल आया। मैं पितासे को
क्रीरसे निकलके जगतमें आया हूं। फिर जगतको
खोलके पिता पास जाता हूं। उसके शिक्षणों में उससे २५
कहा देखिये जब ता ज्ञाप खोलके कहते हैं क्रीर कुछ
दृष्टांत नहीं कहते हैं। ज्ञाप हमें ज्ञान हुआ कि ज्ञाप ३०
सब कुछ जाते हैं क्रीर ज्ञापको प्रयोजन नहीं कि
कोई ज्ञापसे पूछे। इससे हम बिश्वास करते हैं कि
ज्ञाप इंश्वर में क्रीरसे निकल आये। यिशुने उनको ३१
उत्तर दिया कह तुम ज्ञाप बिश्वास करते हो। देखो ३२
समय आता है क्रीर ज्ञानी ज्ञानाई है जिसमें हम सब
तितर वितर होके ज्ञापने ज्ञापने ज्ञानवीजेने
ज्ञाप मुफ्त खोलके खोलके। तैभी में ज्ञापला नहीं हूं
क्योंकि पिता मेरे संग है। मैंने यह बातें तुमसे कहीं ३३
हैं इसलिये कि सुभमें तुमको शांति होय। जगतमें तुम्हें
ज्ञेश होगा परन्तु दादास बांधो। मैंने जगतको जीता है।
१७ सच्चावां पद्मे।

१ यीमुका अपने लिये श्रीर प्रेतिंशां श्रीर सब शिवंको लिये पिताचे प्रार्थना करता।

२ यह बातं कहकर यीमुका अपनी आँखं स्वरंगंकी श्रीर उठाईं श्रीर कहा है पिता घड़ी श्र कहुंची है। अपने पुत्रको महिमा प्रगट कर कि तेरा पुत्र भी तेरी महिमा प्रगट करे। क्योंकि तुने उसको सब प्रार्थियंपर श्रध्यंकार दिया कि जिन्हें तुने उसको दिया है उन सभितंको वह आनंत जीवन दें। श्रीर आनंत जीवन यह है फि वे तुम्हारा जो अध्वृत सत्य इंश्वर है श्रीर बोधु।

४ लोकों जिसे तुने भेजा है पहचानें। मैंने पृथिवंपर तेरी महिमा प्रगट किंदै है। जी काम तने मुक्ति करनेको दिया सा मैंने पूरा किया है। श्रीर जभी है पिता तेरे सांग जगतको होलेको ज्ञान जो मेरी महिमा थी उस महिमासे तू अपने सांग मेरी महिमा प्रगट कर।

५ जिन मनुष्य को तुने जगतमेंसु मुक्त दिया है उनहांपर मैंने तेरा नाम प्रगट किया है। वे तेरे धे श्रीर तुने उन्हें मुक्ति दिया श्रीर उन्हांने तेरे बचनेको पालन किया है। अब उन्हांने ज्ञान लिया है कि सब कुछ जो तुने मुक्ति दिया है तेरी श्रास्से है। क्योंकि वह बातं जो तुने मुक्ति दिया है मैंने उन्हांको दिया हैं श्रीर उन्हांने उनको यहाँ किया है श्रीर निश्चय ज्ञान लिया है कि में तेरी श्रास्से निकल ज्ञान श्रीर बिष्वास किया है कि तुने मुक्ति भेजा। मैं उन्हांको लिये प्रार्थना करता हूँ। मैं संसारको लिये नहीं परलु जिन्हें तुने
मुख्य को दिया है उन्हीं के लिये प्रार्थना करता हूं क्योंकि वे तरे हैं। चाह जो कुछ मेरा है सो सब तरा है चाह १० जो तरा है सो मेरा है चाह मेरी महिमा उसमें प्रगट हुई है। मैं सब जगतमें नहीं रहूँगा परन्तु वे जगतमें ११ रहेंगे चाह में तरे पास आता हूं। हे पवित्र पिता जिन्हें तूने मुख्य को दिया है उनकी अपने नाममें रक्षा कर कि जैसे हम एकहैं हैं हैं वे एक ही हैं। जब मैं उनके १२ संग जगतमें था तब मैंने तेरे नाममें उनकी रक्षा किया। जिन्हें तूने मुख्य को दिया है उनकी बैठने रक्षा किया चाह उनमें बैठने नाश नहीं हुआ केवल बिनाश का पुन जितें धर्मपुस्तक का बचन पूरा होगा। चाह में तेरे १३ पास आता हूं चाह में जगतमें यह बात होती कहता हूं कि वे मेरा आनन्द अपने सम्पूर्ण पार्व। मैंने तेरा बचन १४ उन्हें दिया है चाह संसारमें उनसे बैठ किया है क्योंकि जैसा में संसारमें नहीं हूं तैसे वे संसारमें नहीं हैं। मैं यह प्रार्थना नहीं करता हूं कि तू उन्हें जगतमें १५ ले जा परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्कुशी बचा रख। जैसा में संसारमें नहीं हूं तैसे वे संसारके नहीं हैं। १६ अपने सब में उन्हें पवित्र कर। तेरा बचन सब में १७ जैसे तूने मुख्य जगतमें भेजा तैसे मैंने उन्हें भी जगतमें १८ भेजा है। चाह उनके लिये में अपनें का पवित्र करता १५ हूं कि वे भी सब में पवित्र किये जावें।

चाह में केवल इनके लिये नहीं परन्तु उनके लिये २० भी जा इनके बचने के लिये मुख्य बिनाश करते प्रार्थना करता हूं कि वे सब एक ही हों। जैसा तू है पिता २१
सुन्यमें है श्रीर में तुममें हूँ तैते वे भी हममें एक ह्यांहि इसलिये जि जगत बिद्यास करे जि तुने मुहु भेजा।
22 श्रीर वह महिमा जा तुने मुफ्तसा दिदै है मैंते उनको।
23 दिदै है कि जैसे हम एकहि तैते वे एक ह्यांहि, मैं उनमें
श्रीर तू मुफ्तसा कि वे एकामें सिदू तैते श्रीर कि जगत
ज्ञाने कि तुने मुहु भेजा श्रीर जैसा मुहु य्यार किया।
24 तैसा उन्हें य्यार किया है। हे पिता में चाहता हूँ ब्रि
जहां में रहूँ तहां वे भी जिन्हें तुने मुफ्तसा दिया है
मेरे तंग रहैं कि वे मेरी महिमाको दबें जा तुने मुफ्त-
को दिदै कवांकि तुने जगतको उत्पातके आगे मुहु य्यार
किया। हे धम्मी पिता संसार तुम्हि नहीं जानता है
परन्तु में तुम्हि जानता हूँ श्रीर दे लाग जानते हैं ब्रि
25 तुने मुहु भेजा। श्रीर मैंने तेरा नाम उनको जनाया
है श्रीर जनाउंगा कि वह य्यार जिससे तुने मुहु य्यार
किया उनमें रहे श्रीर में उनमें रहूँ।

श्री अधारवां पढ़े।
1 पिंडाका योङुका पकड़नामा। 2 प्रयोंका देखे ले जाना। 11 पिता श्रीर
श्रीवाका उदनको दोहे है सेना। 15 महाशिवराहको घासा उपका विचार होना। 19
पिताका उदनके मुकर जाना। 28 उपका विलाकके घास सेना जाना। 33
पिताका देखे विचार करमा श्रीर ब्रह्मको शुका करता।

1 यीशु यह बार्ते कहके अपनेशिष्यांको संग बिद्ग्यान
लाखेको उस पार निकल गया जहां एक बारी थी जिससे
2 वह श्रीर उसके शिष्य गये। उसका पकड़वानिहारा
षिंदू भी वह स्वाम जानता था कवांकि यीशु बार्तबार
3 धार अपनेशिष्यांको संग एकटा हुंका था। तब षिंदू
पलटनको श्रीर प्रधान याज्ञों श्री फरीशयेंक्री श्रीरसे
यादें की लेकि दीपकों स्वर भागमों स्वर हयियारीकोलिये हुए भांग जाया। साथी यीशु सब साभारों जो उसपर 4 भागखाली थिलांको निकला स्वर उनमें कहा तुम किसको बुझते हो। उन्होंने उसको उत्तर दिया कि 5 यीशु नासरीको। यीशुने उनसे कहा में हूं। स्वर उसका पड़ावानेहारा यिहूदा भी उनके संग खड़ा था। ज्यांही उसके उत्तर कहा में हूं त्यांही वे पीछे हटके 6 भुमिपर गिर पड़े। तब उनसे फिर उनसे पूछा तुम 7 किसको बुझते हा। वे बोले यीशु नासरीको। यीशुने 8 उत्तर दिया मैंने तुमसे कहा कि मैंने हूं तो जो तुम सुकी बुझते हो तो इन्होंने जाने देखो। यह इसलिये हुआ 9 कि जो बचन उससे कहा था कि जिन्हें तूने सुकी दिया है उनमें मैंने किसीका न बोला सा पूर्वा होवे। शिमान पिताके पास खड़ा था। वह उसने उसे खींचके 10 महायाजकके दासके मारा स्वर उसका दहिना कान कार दाला। उस द्रासका नाम मलक था। तब यीशु 11 पितारे कहा अपना खड़ा काठमें रख। जा कटारा पिताने सुकी दिया है क्या में उसे न पीज़न।

तब उस पलटने स्वर सहस्रपति ने स्वर यिहूदि- 12 जो के वादों ने यीशुके पड़के बांधा। स्वर पहले उसे 13 हत्तस्तके पास ले गये क्योंकि कियाफा जो उस बरसका महायाजक था उसका वह सुसूर था। लियाफा वह 14 था जिसने यिहूदियोंको परामशं दिया कि एक मनुष्य- का हमारी प्रकोपके लिये मरना इच्छा है।

शिमान पिताके स्वर दूसरा शिष्य यीशुके पीढ़ियों है 15
योग्य। वह शिष्य महायाजकका जान पहचान या चौर
16 यीशुके संग महायाजकके बंगलोके भीतर गया। परन्तु
पितर बाहर द्वारपर खड़ा रहा से दूसरा शिष्य जो
महायाजकका जान पहचान था बाहर गया चौर
17 द्वारपालिनसे कहके पितरको भीतर ले चाहा। वह
दासी अर्धात् द्वारपालिन पितरसे बाली क्या तू भी
इस मनुष्यके शिष्यांसे एक है। उसने कहा मैं नहीं
18 हूँ। दास चौर प्यारे लोग जाड़के कारण धारणकी
क्षाग सुलगाके खड़े हुए तापते थे चौर पितर उनके
संग खड़ा हो तापने लगा।
19 तब महायाजकने यीशुके उसके शिष्यांके विषयमें
20 चौर उसके उपदेशके विषयमें पूछा। यीशुने उसको
उत्तर दिया कि मैंने जगतसे खाली बाति जिदे मैंने
सभाके परमें चौर मन्दिरमें जहाँ धीमी लोग नित्य
एकटे होते हैं सदा उपदेश किया। चौर गुप्तमें कुछ नहीं
21 कहा। तू मुख्ते किंग पूछता है। जिन्हांने सुना उन्होंने
पूछ ले कि मैंने उनसे क्या कहा, देख वे जानते हैं कि
22 मैंने क्या कहा। जब यीशुने यह कहा तब प्यारे मेंसे
इतने जो निकट खड़ा था उसको घेड़ा मारके बेला क्या
23 तू महायाजकको इस रोमिने उत्तर देता है। यीशुने उसे
उत्तर दिया यदि मैंने बुरा कहा तो उस बुराइके साधों
24 दौ परतु यदि भला कहा तो मुक्ते किंग मारता है। हमसने
यीशुके बंधे हुए किया फा महायाजकके पास भेजा।
25 शिमान पितर खड़ा हुआ चाग तापता था। तब
उन्होंने उससे कहा क्या तू भी उसके शिष्याःमें एक है।
उसने मुकरकर कहा मैं नहीं हूं। महायाजकजी दासिंदास देखा दी एक दास जो उस मनुष्यका कुटुंब था जिसका बाला वहाँ भी धीरजिंद में उसके संग न देखा। पितर फिर मुकर गया श्रीर तुरन्त मुंगे बोला। २७
तब भेर आ श्रीर वे यीशुका कियाफाके पाससे २८ भाष्यभवनपर ले गये परलो में शाय भाष्यभवनके भीतर नहीं गये इसलिये कि भासुद्र न है वहाँ परलो निस्तार पब्लेका भेजन खाबे। सो पिलात उन पास २८ निकल शाया श्रीर कहा तुम इस मनुष्यपर क्या देख लगाते हो। उन्हांने उसका उत्तर दिया कि जै यह ३० शुकाम्बरी न होता तो हम उसे शायको हाथ न संपाते।
पिलातने उनसे कहा तुम उसका लेखा श्रीर अपनी ३१ बहवस्थाने अनुसार उसका विचार करें। विहूदियोंने उनसे कहा किसीको बड़ा करनेका हमें जाहिकार नहीं है। यह इसलिये हुआ जिसे यीशुका वचन जिसे ३२ कहनेमें उसने पता दिया कि वह अती मूल्यम्यते मर- निपर था पूरा होते।
तब पिलात फिर भाष्यभवनके भीतर गया श्रीर ३३ यीशुका बुलाके उससे कहा क्या तू विहूदियोंका राजा है। यीशु उसका उत्तर दिया क्या शाय अपनी श्रीर- ३४ से यह बात कहते हैं अर्थवा श्रीरांने मेरे विप्रमें शायपसे कही। पिलातने उत्तर दिया क्या में विहूदी हूं। ३५ तरही में लेगाने श्रीर प्रधान याज्ञिकांने तुभी मेरे हाथमें सांपा। तने क्या किया है। यीशु उत्तर दिया कि मेरा ३५ राज्य इस जगतका नहीं है। जै मेरा राज्य इस जगत-
का होता तो मेरे सेवक लड़ते जिसतः में यिहूदियोंके हाथमें न संपा जाता. परली जब मेरा राज्य यहांका नहीं है. पिलातने उससे कहा फिर भी तु मारते है. यीशुने उत्तर दिया कि जाप ठीक कहते हैं कियाँति में राजा हूं. मैंने इसलिये जन्म लिया है श्रीर. इसलिये जगतमें चाहा हूं कि सत्यपर साथी दें. जो कोई सत्यकी श्रीर है तो मेरा शब्द सुनता है. पिलातने उससे कहा सत्य क्या है श्रीर यह कहके फिर यिहूदियोंके पास निकल गया श्रीर उनसे कहा मैं उसमें कुछ देश नहीं पाता हूं. परली तुम्हारी यह रीति है कि में निस्तार पत्तमें तुम्हारे लिये एक जनका बड़ दें तो बका तुम चाहते हैं कि में तुम्हारे लिये यिहूदियोंके राजाका बड़ दें. तब सभीने फिर मुकारा कि इसकी नहीं परली बरबादी. श्रीर बरबाद हाकू था.

8. उनीसवां पद्भे.

8 येट्टाब्रोका यीशुका सामनां कराना. 4 पिलातका उसे हांडने के मुक्ति करनेके पारं पारको हाथ श्रीरना. 15 उसका अश्वपर बड़घाय जाना. 23 उसके बीका बांटका जाना. 21 उसका वापर्ना सत्यका माशके लिये बनाना. 28 उसका बिरका डोन श्रीर प्राथ भागना. 19 येट्टाब्रोका चक्के पारमे बड़े मारना. 38 नूकका उसे काबरमे रखना.

7. तब पिलातने यीशुका लेकि उसे काड़ मारे. श्रीर येट्टाआरने कांटोंका मुकू गूळके उसके तिरपर रहा.

8. श्रीर उसे बेजनी वस्तु पाहिराया. श्रीर कहा है यिहू-

7. तब पिलातने फिर बाहर निकलके लोगिंसे कहा

8. देखा में उसे तुम्हारे पास बाहर लाता हूं. कि तुम जाना.
योगिन ।

कि मैं उसमें कुछ देख नहीं पाता हूँ। सी यीशु का रंग का सुंदर जीवां बेजनी वस्त्र पहने हुए बाहर निकला जीवां उसने उन्हें बाहर देखा यही मनुष्य है। जब इस प्रधान यज्ञों जीव व्याकरण उसे देखा तब उन्हें फकरा कि उसे की ज्ञातवर चढ़ाई ज्ञातवर चढ़ाई। पिलातने उससे कहा तुम उसे लेकि की ज्ञातवर चढ़ाई की वांछ में उसमें देख नहीं पाता हूँ। यीशुदियों उस- का उत्तर दिया कि हमारी भी व्यवस्था है जीव हमारी व्यवस्थाके आनुसार वह जग ही हमने गोपय है की अंतु उसने अपनेका इतिहासका पुनः कहा। जब पिलातने यह बात सुनी तब जीव भी उठ गया। जीव फिर ज्ञातवु- भवने भी उठ गया जीव यीशुसे बला तू कहां है। परन्तु यीशुने उसका उत्तर न दिया। पिलातने उससे १० कहा क्या तू ज्ञातवसे नहीं बालता क्या तू नहीं जानता है कि तुम्हे की ज्ञातवर चढ़ाईका मुफ्तका ज्ञातवकार है जीव तुम्हे बड़ा देनेका मुफ्तका ज्ञातवकार है। यीशुने ११ उत्तर दिया जा ज्ञातवका ऊपरसे न दिया जाता तो ज्ञातवका मुफ्तकर कुछ ज्ञातवकार न होता इसलिये जा मुफ्त ज्ञातवके हाथमें पकड़वाता है उसका ज्ञातव पाप है।

इससे पिलातने उसको बड़ा देने चाहा परन्तु यीशुदि- १२ यीशुने पुकारके कहा जो ज्ञातव इसका बड़ा देने तो ज्ञातव कौशलके मिश नहीं हैं। जो कोई ज्ञातवका राजा कहता है से कौशलके बिस्तर बालता हैं। यह बात सुनको पिलात १३ यीशुका बाहर लाया जीव जो स्थान चयन हुए तो परन्तु इब्राइय मानसमें गवथा कहावता है उस स्थानमें बिचार
14 झासनपर बैठा । निस्तार पब्बेकी तैयारीका दिन जीर त्री पहरके निकट था । तब उसने यिहूदियोंके कहा देखा
15 तुम्हारा राजा । परन्तु उन्हें उए पुकारा कि ले जाया ले जाया उसे कृष्णपर चढ़ाया । पिलातने उनसे कहा क्या में तुम्हारी राजाकी कृष्णपर चढ़ाया जाएगा । प्रधान याज-कोंने उत्तर दिया कि राष्ट्रका ब्राह्मण हमारा और राजा नहीं है । तब उसने यीशुको कृष्णपर चढ़ाये जानेको उन्हेंंकी हाथ सेंपा । तब वे उसे पकड़के ले गये ।
16 जीर यीशु झपना कृष्ण उठाये हुए उस स्थानकी जो ब्राह्मणका स्थान कहावता जीर ब्राह्मण भाषामें गलगथा कहावता है निकल गया । वहां उन्हें उसकी जीर उसके संग दे जीर मनुष्योंके कृष्णपर चढ़ाया एकको
17 हथर जीर एकको उधर जीर बीचमें यीशुको । जीर पिलातने दीघपथ लिखके कृष्णपर लगाया जीर लिखी
18 इस बात यह थी यीशु नासरी यिहूदियोंका राजा । यह दीघपथ बहुत यिहूदियोंने पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहां यीशु कृष्णपर चढ़ाया गया नगरके निकट था जीर पत्र ब्राह्मण यीशु यूनानी जीर रोमीय भाषामें लिखा हुआ
19 था । तब यिहूदियोंके प्रधान याजकोंने पिलातने कहा यिहूदियोंका राजा मत लिखिये परन्तु यह कि उसने
20 कहा में यिहूदियोंका राजा हूं । पिलातने उत्तर दिया कि मेंने लिखा है सो लिखा है ।
21 जब योद्धासीं ने यीशुको कृष्णपर चढ़ाया था तब उसके कपड़े ले चार भाग लिये हर एक योद्धाके लिये एक भाग । जीर छंगा भी लिया परन्तु छंगा
बिन सीधन ज़परसे नीचेलों बिना हुआ था। इसलिये २४ उन्होंने शापसमें कहा हम इसको न फाड़ परन्तु उसपर चिंतिया हालें कि वह जिसका होगा। जिसीं धर्म-पुस्तकका बचन पूरा होवे कि उन्होंने मेरे कपड़े शापसमें बांट लिये श्रीर मेरे वस्त्रपर चित्रिया हाली। तो यहाँ लिखा यह लिखा।

परन्तु यीशुकी माता श्रीर उसकी माताकी बहिन मारियम जा क्षियोपाकी स्ती थी श्रीर मारियम मगद-लीनी उसके कृष्णके निकट खड़ी थीं। तो यीशुके अपनी २४ माताकी श्रीर उस शिष्योंकी जिसे वह प्यार करता था उसके निकट खड़े हुए देखके अपनी मातासे कहा है नारी देखिये श्रायका पुच। तब उसने उस शिष्योंके २६ कहा देख तेरी माता। श्रीर उस समयसे उस शिष्योंने उसको अपने घरमें ले लिया।

इसके पीछे यीशुके यह जानकी कि अब सब कुछ २६ ही चुका जितने धर्म-पुस्तकका बचन पूरा हो जाय इसलिये कहा में पियासा है। सिरकेरे भरा हुआ एक २६ बरनने घरा था सो उन्होंने इत्याकी श्रीमों में सिरकेरे भिङ्गाके अतीवके नलपर रखके उसके मुंहमें लगाया। जब ३० यीशुके श्रीरका लिया था तब कहा पूरा हुआ है श्रीर सिर भुकाके प्राण त्यागा।

वह दिन तैयारीका दिन था श्रीर वह विश्वासवार ३१ बड़ा दिन था इस कारण जिसीं लोथ विश्वासके दिन ढूँढपर न रहे विहृदियोंने पिया नुसे ब्रह्मी किले कि उनकी रागें ताही जारे। श्रीर वे उतारे जारे। तो ३२
यादृच्छिक शाक्त पहिलेका रंगें ताड़ीं तब तूसरे भी जो यीशुका संग क्रूशपर बढ़ाये गये थे। परन्तु यीशु पास शाक्तज जब उन्हें देखा कि वह मर चुका है तब उसके रंगें न ताड़ीं। परन्तु यादृच्छिक में एकने बर्बर से उसका पंजर बेगा शाह तुरन्त लोहा शाह पानी लिखा। इसका देखनेहारे सादी दिइ है शाह उसकी सादी सत्य है शाह वह जानता है कि सत्य कहता है इसे लिये कि तुम बिषवास करा। क्योंकि यह वात इसे लिये हुईं कि धर्मपुस्तकः बचन पूरा होिे वो उसकी कोई हड़ी नहीं ताड़ी ायणी। शाह फिर धर्मपुस्तकः दूसरा एक बचन है कि जिसे उन्हें बेगा उसपर उे दूिि करिे।

इसके पिछे अनितानित नगरके युसफने जा यीशुका शिष्य था परन्तु यिहूदियोंके हरसे इसके छिपाये रहता था पिलातसे बिनती किं धी कि मैं यीशुका लोगका ले जाँ। शाह पिलातने ाझ दिइ से। वह ाके यीशुका लाय ले गया। निकादीम भी शाक पहिले रातके यीशु पास ा का प्रचार सर्का अरकल मिलाये।

हुए गन्धरस शाह एलवा लेिे ाया। तब उन्हें यीशुका लोगका लिया शाह यिहूदियोंके गाड़नेकी रौि- के अनुसार उसे सुगन्धके संग चटरमं लपेटा। उस स्थानपर जहाँ यीशु क्रूशपर बढ़ाया गया एक बारी थी शाह उस बारीमें एक नई कबर जिसमें कोई कभी नहीं रखा गया था। सा यिहूदियोंकी तैयारीके दिनके कारण उन्हें यीशुका वहां रखा क्योंकि वह कबर निकट थी।
20 बीसवां पढ़ें।

1. मोह पक्ष की उड़नेका दिन मालिनी भूई। उड़नका दिन मालिनी भूई।

2. अजीत राहती हैं। अजीत हैं।

3. अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये। बच्चे अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये।

4. अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये। बच्चे अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये।

5. अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये। बच्चे अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये।

6. अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये। बच्चे अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये।

7. अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये। बच्चे अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये।

8. अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये। बच्चे अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये।

9. अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये। बच्चे अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये।

10. अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये। बच्चे अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये।

11. अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये। बच्चे अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये।

12. अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये। बच्चे अजीत ने दूसरे निकलके कबरपर आये।
टूटा को उत्तर मत पढ़ने हुए देखा कि जहां यीशु की लोथ पड़ी थी तहां एक सिरहाने श्रीर दूसरा पैताने 93 बेठा था। उन्होंने उससे कहा है नारी तू कितने रोती है। वह उनसे बाली बे मेरे प्रभुका ले गये हैं श्रीर में 94 नहीं जानती कि उसे कहां रखा है। यह बहुके उसने पीछे फिरके यीशुका खड़े देखा श्रीर नहीं जानती थी। 95 कि यीशु है। यीशुसे उससे कहा है नारी तू कितने रोती है किसको हुंदती है। उसने यह समझके कि माली है उससे कहा है प्रभु जो ज्ञापने उसका उठा लिया है तो मुझसे कहिये कि उसे कहां रखा है श्रीर में उसे ले 96 जाऊँगी। यीशुसे उससे कहा है मारियम। वह पीछे 97 फिरके उससे बाली है रब्बुनी झांकत है गुहा। यीशुसे उससे कहा मुख मत हूँ किंतु में जबलों ज्ञापने पिता-के पास नहीं चढ़ गया हूँ परन्तु मेरे भाईंके पास जाके उसने कह दे कि मैं ज्ञापने पिता श्री तुम्हारे पिता श्रीर ज्ञापने ईश्वर श्री तुम्हारे ईश्वर पास चढ़ जाता 98 हूँ। मारियम मगदलीनी जाके शिशुका समेट दिया कि में प्रभुका देखा है श्रीर उसने मुखसे यह बारें कहत। 99 श्रद्धवर्के उस पहले दिनके सांख होते हुए श्रीर जहां शिशु लोग एकठु हुए थे तहां द्वारा यिहूदीयोंके दरके मारी बनद होते हुए यीशु शाया श्रीर बीचभन्द 20 खड़ा होके उनसे कहा तुम्हारा कल्याण हाय। श्रीर यह कहके उसने ज्ञापने हाथ श्रीर ज्ञापना पंजर उनका दिखाये। तब शिशु लोग प्रभुका देखके ज्ञानन्दित हुए। 101 यीशुसे फिर उनसे कहा तुम्हारा कल्याण हाय।
पिताने मुकें मेजा है तैसे मे भी तुम्हें मेजता हूं। यह २२ कहके उसने फूल दिया शीर उनसे कहा पवित्र श्रामा लेशा। जिन्होंने पाप तुम श्रामा करो वे उनके निये २३ श्रामा बिये जाते हैं। जिन्होंने तुम रखी वे रखे हुए हैं।

परन्तु बारहांमें एक जन अर्यात धामा जा दिया न २४ कहावता है जब यीशु श्राया तब उनके संग नहीं था।

सा दूसरे शिष्योंने उससे कहा हमने प्रभुको देखा है। २५ उसने उनसे कहा जो में उसके हाथों में कोलेंका चिन्ह

न देखू शीर कोलेंका चिन्हमें अपनी उंगली न हालू शीर उसके पंजरमें जन्मा हाय न हालू तो में विश्वास

न कहाना। श्राइ दिनके पीछे उसके शिष्य लोग फिर नौ घरके भीतर थे शीर धामा उनके संग था। तब द्वारा

बन्द होते हुए यीशु श्राया शीर बीचमें खड़ा होके कहा तुम्हारा कल्पाल होय। तब उसने धामासे कहा २९ जन

अपनी उंगली यहां लाके मेरे हाथोंका देख शीर जन्मा हाय लाके मेरे पंजरमें हाल शीर श्रामासी

नहीं परन्तु विश्वासी है। धामाने उसको उत्तर दिया २५

कि है मेरे प्रभु शीर मेरे इंद्रवर। यीशुने उससे कहा २५

है धामा तूने मुकें देखा है इसलिये विश्वास किया है।

धन्य वे है जो बिन देखे विश्वास करेत।

यीशुने अपने शिष्योंके श्रागे बहुत शीर श्रामाश्व्य ३० घरमें भी किये जो इस पुस्तकमें नहीं लिखेहैं। परन्तु ३१

वे लिखे गए हैं इसलिये कि तुम विश्वास करो कि यीशु जा है सा इंद्रवरका पुच ग्नेय है शीर कि विश्वास

करनेसे तुमको उसके नामसे जीवन होय।
21 इददियाउँ यह है।

1 यीशुका साइडिया के समुद्र के तीरपर भज्जींका दिखाया आए, इस रीति से दिखाया। शिमेन पितार शेर बोले जो दिव्युम कहा-वता है, शेर गालीपोल क्षेत्र नगरका न्यायन शेर जबदीना देनी पुत्र शेर उसके शिप्पों में दो शेर जन एक संग थे। शिमेन पितार उनके कहा में मछली पकड़नें। आज हूँ। वे उससे बोले हम भी तेरे संग जायेंगे। सो वे निकलकर तुरन्त नावपर चढ़े। शेर उस रात कुछ नहीं पकड़ा। जब भेर हुआ। तब यीशु तीर-पर खड़ा हुआ। तैयरी शिष्य लोग नहीं जानते थे कि यीशु है। तब यीशुने उससे कहा हे लड़की का तुम्हारे पास कुछ खानेका है। उन्होंने उसका उत्तर दिया कि इनाहीं। उसने उसके कहा नावकी दहिनी शेर जाल झाला तो भागी। सो उन्होंने झाला शेर झब लियोंके मुंडके कारण वे उसे बौन न सके। इसलिये शेर उसका शिद्ध किसी यीशु प्यार करता था। पितारसे बोला यह तो प्रभु है। शिमेन पितार जब सुना कि प्रभु है तब कमरमें झंगरखा कस लिया किसकि वह नंगा था।

शेर समुद्रमें कुद पड़ा। परन्तु दूसरे शिद्ध लोग नाव-पर मछलियाँका जाल घसीटते हुए चले भाग पे किसकि वे तीसरे दूर नहीं प्राय दो सी हाथपर थे। जब वे तीरपर उतरे, तब उन्होंने कोब्यालेकी भाग घरी हुई दो शेर मछली
उसपर रखी हुई झौरे रोटी देखी। यीशुने उनसे कहा जो १० मछलियां तुमने भभी यकड़ी हैं उनमें ले शाया। शिमीन पितरने जाके जालको जो एक सी तिरिन ११ बड़ी मछलियों से भरा या तीरपर बिंच लिया झौर इतनी हैनसे भी जाल नहीं फटा। यीशुने उनसे कहा १२ कि झौर भाजन करो। परन्तु शिमीनमें किसीतो शाहस न हुआ कि उससे पूछे झाप झौर है कि छांकिये जानते थे कि प्रभु है। तब यीशुने झौरे रोटी लेके १३ उनको दिदु झौर बैठनी मछली भी। यह झब तीसरी १४ बेर हुआ कि यीशुने मृतकोंमें उठके झापने शिमीनको दर्शन दिया।

तब भेजन करनेको पीछे यीशुने शिमीन पितरने १५ कहा है यूनसको पुच शिमीन क्या तू मुफ्दो इन्हिंसे अधिक झाप करता है। वह उससे बेला हां प्रभु झाप जानते हैं कि मैं झापको झाप करता हूं। उसने उससे कहा मेरे भेजांको चरा। उसने फिर दूसरी बेर उससे कहा १६ है यूनसको पुच शिमीन क्या तू मुफ्दे झाप करता है। वह उससे बेला हां प्रभु झाप जानते हैं कि मैं झाप- 
की झाप करता हूं। उसने उससे कहा मेरी भेजांको रखवाली कर। उसने तीसरी बेर उससे कहा है १७ यूनसको पुच शिमीन क्या तू मुफ्दे झाप करता है। पितर उदास हुआ कि यीशुने उससे तीसरी बेर कहा क्या तू मुफ्दे झाप करता है झौर उससे बेला है प्रभु झाप सब कुछ जानते हैं झाप जानते हैं कि मैं झाप- 
की झाप करता हूं। यीशुने उससे कहा मेरी भेजांको
२९ चरा। मैं तुमसे सच सच कहता हूँ जब तू जवान था तब अपनी कमर बांधके जहां चाहता था वहां चलता था परन्तु जब तू बुढ़ा होगा तब अपने हाथ पैला-चेहरा तूसरा तेरी कमर बांधके जहां तू न चाहे वहां तुम्ही ले जायगा। यह कहनेमें उसने पता दिया कि पितार बैठी मृत्युसे ईश्वरकी महिमा प्रगट करेगा ईशार यह कहके उसने बाला मेरे पीछे हो ले।

२० पितारने मुंह प्रेक्षके उस शिष्यका जिसे योशु प्रार करता था ईशार जिसने बियारमें उसकी छातीपर उठगके कहा है प्रभु ईशान्त पकड़वानिहारा कैन है।

२१ पीछे से जाते देखा। उसकी देखके पितारने योशुसे कहा है प्रभु इसका क्या होगा। योशुने उससे कहा जो मैं चाहूं कि वह मेरे ज्ञाने रहे ता तुम्हि क्या। तू मेरे पीछे है। इसलिये भाइयों में यह बात फैल गई कि वह शिष्य नहीं मरेगा। तैभी योशुने यह नहीं कहा कि वह नहीं मरेगा परन्तु यह कि जो मैं चाहूं कि वह मेरे ज्ञाने रहे ता तुम्हि क्या।

२२ यह ता वह शिष्य है जो इन बातोंके विषयमें सादी पता है ईशार जिसने यह बातें लिखी ईशार हम जानते हैं कि उसकी सादी सत्य है। ईशार बहुत ईशार काम भी हैं जो योशुने लिखे। जो वे एक एक करके लिखे जाते तो मुक्त बुझ पड़ता है कि पुस्तक जो लिखे जाते जगतमें भी न समाते। ईमान।
प्रेरितांकी क्रियाओंका वृत्तान्त।

1 पहिला पन्ने।

1 यीशुका खिया का ज्ञान देना और स्वयंसे ज्ञान। 12 खिया का शक्ति रहको प्राप्यना करना। 15 खिया का अतिशयाको प्रेरितको कामयाब ठहराना।

हे खिया वह पहिला वृत्तान्त मैंने सब बातिबन्धी विषयमें रचा जा यीशु उस दिनले करने कीर सिखानेका आरंभ किये था। जिस दिन वह पविच आतमको द्वारसे जिन प्रेरितांकी उसने चुना था उन्हें आज्ञा दे करके उठा लिया गया। कीर उसने उन्हें बहुतों अचल प्रमाणियोंसे अपने तद्वे दुःख भोगनेको पीछे जीवनता दिखाया कि चालिस दिनलाई उसे देखा करते थे कीर वह इंश्वरके राज्यके विषयमें उसने बातें करता था। कीर जब वह उनके संग एकटा हुआ तब उन्हें आज्ञा दिया कि यिश्वशलीमको मत छाड़ जाको परतु पिताको जा प्रेत्ता तुमने सुनसे सुनी है उसकी बात जाहते रहा। क्योंकि याहने ता जलसे बपरितसमा दिया परतु धड़ी दिनेंमे पीछे तुम्हें पविच आतमसे बपरितसमा दिया जायगा। सो उन्होंने एकटा होके उससे पूछा कि है प्रभु का आप इसी समयमें इस्लामी लोगेंको राज्यफर देते हैं। उसने उससे कहा जिन कालियो अथवा समयंका पिताने अपनेंका बशामें रखा है उन्हें जाननेका अधिकार मैं नहीं है। परतु तुम्म पर पविच आतमके जानेसे तुम सामय्य पात्रोंगे कीर यिश्वशलीमें कीर सारीयहूदिया कीर शामिलरान देखाईं।
5 श्रीर पृथ्वीके अतलों मेरे साथी हासिये। यह कहके वह उनके देखते हुए ऊपर उठाया गया श्रीर मेघने ।
10 उसे उनकी दृष्टि से ठिक लिया। ज्यांही वे उसके जाते हुए स्वर्गकी श्रीर तकते रहे त्यांही देखा दू पुत्र उजला।
11 वस्तु पहिचे हुए उनके निकट खड़े हो गये। श्रीर कहा है गालीजी लोगे तुम कीं स्वर्गकी श्रीर देखते हुए खड़े हो। यही ये जा तुम्हारे पासते स्वर्गपर उठा लिया गया है जिस रूतिसे तुमने उसे स्वर्गकी जाते देखा है उसी रूतिसे झरेगा।

12 तब वे ज्यूस नाम प्रचंदि जा यिढ्युलकी निकट अर्धात एक विशाशामवारकी बार भर दूर है यिढ्युलकीको।
13 लैठे। श्रीर जब वे पहुँचे तब उपरिठकी कार्यरी मंगे जहां वे अर्धात पिता श्रीर याकूब श्रीर योहन श्रीर अन्द्रिय श्रीर फिलिप श्रीर थे माता श्रीर बर्धलमई श्रीर मती। श्रीर झलफईका पुत्र याकूब श्रीर थे मोरागी श्रीर याकूब।
14 का भाई यिहूदा रहते थे। ये सब एक चित होके स्मृतियंके श्रीर योशुकी माता मरिमके संग श्रीर उसके भाईंके संग प्राप्तना श्रीर विनिमये लगे रहते थे।

15 उन दिनीमं पितर शिशुकी बीच में खड़ा हुका। एक।
16 सै बीस जनके शरकल एकउँ थे। श्रीर कहा है भाइया अवश्य या कि धर्मपुस्तकका यह वचन पूरा होय जो पवित्र श्रामाने दांतके मुखसे यिहूदा विश्वमं जा योशुके पकड़ेहराकर आगुवा था आगसे कह दिया।
17 क्यांकि वह हमारे संग गिना गया था श्रीर इस सेवकाई।
18 का झाड़िकार पाया था। उसने तो अधमंकी मजूरीसे
एक खेत मेल लिया श्रीर श्रैंधे सुंह गिरके बीचसे फर गया। श्रीर उसकी सब जनतहियां निकल पड़ीं। यह बात २५ यिहूदीमक़े सब निवासियोंका जान पड़ी। इसलिये वह खेत उनकी भावामें हमलादामा भर्ती लेहूका खेत कहलाया। गीतिकी पुस्तकमें लिखा है कि उसका २० घर उज़ाड होय श्रीर उसमें कोई न बस। श्रीर बक उसका रखबालीका काम दूसरा लेवे। इसलिये प्रभु २१ यीहू यहाँके बपतिसमामे समयसे लेके उस दिनलों कि वह हमारे पाससे उठा लिया गया जितने दिन हमारे बीचमें ज्ञान जाया किया। जो मनुष्य सब दिन हमारे २२ संग रहें हैं उन्हें संच जिन्हें संग यीहूदी जो उठने का साध्य है। तब उन्हें देको २३ अष्टाध्याय यूजफरके जो वर्षा कहावत है जिसका उपनाम युस्त या श्रीरतियाहका खड़ा किया। श्रीर प्रार्थना २४ करके तो यह प्रभु सब में संघ जनताओं में इन दानिमेंते एकका जिसे तूने चुना है उहरा दे। जिस वह इस तेव- २५ बाई श्रीर प्रेतिताइका अधिकार पावै जिससे यिहूदा पतित हुआ कि उसपने नज स्थानका जाय। तब उन्हें २६ चित्रियां हाली श्रीर चित्री मततियोहके नामपर निकली। श्रीर वह यागार तथा प्रेतिताइके संग गिना गया।

२ दूसरा पर्व।

१ प्रवेश ब्राह्मका दिया जाना श्रीर गियोंसा हनेको बेलिया बेलिया। ५ लेगोंसा झंडा करना। १४ पिताका उपदेश। २५ बहुत लेगोंसा इल उपदेशको सुख करना। २९ उन्हें बपतिसमा को श्रीर सुखाल बलके बलना।

जब प्रेतितोष्ण पर्वका दिन श्री पहुंचा तब वे सब १ एक चित होकर एक्षें हुए थे। श्रीर ऋषिचक्र प्रवेश २
बहुरके चलनेकासा स्वर्गते एक शब्द हुआ जिससे इ सारा घर जहां वे बैठे वे भर गया। शीर आगकीसी जोंच मालग गलग होती हुई उन्हें दिखाई दिदेश शीर
8 वह हर एक जनपर ठहर गई। तब वे सब पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हुए शीर जैसे आत्मा उन्हें बुज़-बाया तैसे शान शान बालियाँ बालने लगे।
5 यिहूदीममे जितने भल यिहूदी लोग बास करते है जो स्वर्गके नीचके हर एक देशके शाये थे। इस शब्दके होनेपर बहुत लोग एकछ हुए शीर घबरा गये क्योंकि उन्होंने उनकी हर एक अपनीही भाषामे बालते हुए सुना। शीर वे सब बिस्मित शीर अचरमित है। आपसमे कहने लगे देखो वे सब जो बालते हैं का
8 गालीली लोग नहीं हैं। फिर हम लोग कांश हर एक अपने अपने जन्म देशकी भाषामे सुनते हैं। हम जो घरी शीर मादी शीर यन्मी लोग शीर मिसरपता-मिया शीर यिहूदिया शीर कपदेखिया शीर पन्त शीर
10 आशिया। शीर मगिया शीर पंडुलिया शीर मिसर शीर कुरौनीके आसपासका लूबिया देश इन सब देशोंके निवासी शीर राम नगरसे शाये हुए लोग का यिहूदी
11 का शीर मतावलंबी। कीतीय भी शीर शरब लगाहे उन्हें अपनी अपनी बालियाँमें इत्सवरके महाकायाँ-
12 की बात बालते हुए सुनते हैं। सेसे वे सब बिस्मित है। दुबासमे पड़े शीर एक दूसरसे कहने लगा इसका
13 शर्य का है। परन्तु शीर लोग ठड़में कहने लगे वे नई मदरासे झकझूंक हुए हैं।
तब पितारने रग्वर शिष्यांंकी संग बढ़ा होके जबने १४ शन्दसे उन्हें कहा है यम्हूदिया शिखार विश्वशालीमक्के सब निवासियो इस बातका बूक ले शिखार मरी वातांपर कान लगाको। ये तो मतवाले नहीं हैं जैसा तुम १५ समकते है दोंकी पहरहि दिन चढ़ा है। परन्तु यह १६ बह बाल है जो याएल भविष्यद्वाक कहीं गई। \( \text{कि} \) १७ इश्वर कहता है पिछले दिनांते ऐसा होगा कि मे सब मनुष्यांपर अपना ज्ञात उंडलूंगा शिखार तुम्हारे पुरुष शिखार तुम्हारी पुनियां भविष्यद्वाक कहेंगे यौह शिखार तुम्हारे जबान लेग दर्शन देखेंगे यौह तुम्हारे वृद लेग स्वप्न देखेंगे। यौह भी मे अपनो दासों यौह अपनी दासियों- १८ पर उन दिनांते अपना ज्ञात उंडलूंगा यौह वे भविष्यद्वाक कहेंगे। यौह मे उपर आकाशम म श्रद्व १८ काम यौह नीचे पृथिवीपर चिन्ह अधाने लाहू यौह ग्राम यौह धुएकी भाफ दिखाजंगा। परमेश्वरके बड़े २० यौह प्रसिद्ध दिनांके जीवने पहले सूर्य अधियारा यौह चांद लोहास हो जायगा। यौह जी कोई पर- २१ मेशालके नामकी प्राप्तना करेगा सो चाय पावेगा।

हे इसायेली लोग इने बातें सुनी। यीशु नासरी एक २२ सनुप जिसका प्रमाण इश्वरसे आश्चर्य ममीं यौह श्रद्व कामके यौह कित्तोंसे तुम्हें दिया गया है जो इश्वर-ने तुम्हारे बीचम म जैसा तुम ग्राम भी जानते है। उसके द्वारासे लिये। उसीका जब वह इश्वरके सियर मत यौह २३ भविष्यत ज्ञानके अनुसार सेंपा गया तुमने लिया यौह अधिमियोंके हाथेंके द्वारा ज्ञाधारिता हाथेंके द्वारा खृष्णपर ठंकके मार झाला।
२५ उसीको इंश्वरने मृत्युके बंधन खोलके जिला उठाया।
२६ क्योंकि अन्हाना था कि वह मृत्युके बाशम रहे। क्योंकि दाजुदने उसके विषयमें कहा मेंने परमेश्वरको सदा अपने साम्हने देखा कि वह मेरी दहिनी चौर है जिस्ते २६ में हिड़ा न जांज। इस कारण मेरा मन आनन्दित हुआ चौर मेरी जीव दर्शित हुई हां मेरा शरीर भी शाश्वें
२० विषम करेगा। क्योंकि तू मेरे प्राणके परलाकः न
२८ बढ़ाइ चौर न अपने पवित्र जनका सहने देगा। तूने मुके जीवनका मार्ग बताया है तू मुके अपने सम्पूर्ण आनन्दके परिपूर्ण करेगा।
३२ हे भाइयो उस कुलपति दाजुदने विषयमें में तुमसे खोलके कहूँ। वह तो मेरा चौर गाड़ा भी गया चौर.
३० उसकी बाब आजलों हमारे बीचमें है। सो भविष्यद्वारका होके चौर यह जानके कि इंश्वरने मुफ़से फिरिया खाइँ है कि में शरीरके भावसे ब्योलका तरे विषयमें उत्पाद
३१ कहता कि वह तरे सिहासनपर बैठे। उसने हाँचारको भागिने देखके ब्योलको उत्तरके विषयमें कहा कि उसका प्राण परलाकः नहीं बढ़ा। गया चौर न उसका देह सड़
३२ गया। इसी ब्योलका इंश्वरने जिला उठाया। चौर इस
३३ बातके हम सब साध्य है। सो इंश्वरके दहिने हाय जंच
पद प्राप्त करके चौर पवित्र आत्मको विषयमें जा। कुछ प्रतिज्ञा किया गया सोई पितासे पाके उसने यह जो तुम
३४ शब्द देखते चौर सुनते है। उंडेल दिया है। क्योंकि दाजुद स्वर्गपर नहीं चढ़ गया परलुि उसने कहा कि शब्द परमेश्वरके मेरे प्रभुले कहा। जबलों में तरे श्रुतिको-
क्री तरी चरणेंकी पीढ़ी न बनांछ तबलां तू मेरी
दहली श्रार बैठ। सा इशायेंका सारा भराना इह
निधाय जाने कि यह यीशु जिसे तुमने कृष्णपर धात
किया इसीकी देशवरने प्रभु श्रार यीशु ठहराया है।

तब सुननेहरांके मन छिट गये श्रार वे पितसे ३६
श्रार दूसरे प्रेरितांसे बाले हे भाइया हम क्या करें।

पिताने उसने कहा परशुताप करा। श्रार हर एक इ°
जन यीशु लीघुके नामसे बपतिसमा लेखा कि तुमहारा
पापमेजङ्ख हैय श्रार तुम पविच श्रास्त्रमा दान पाश्रोगे।
क्योंकि वह प्रतिज्ञा तुम्हांके लिये श्रार तुमहारे सन्नारंके-
३६
श्रार दूर दूरके सब लोगांंके लिये हे जितनांके
परसेजङ्ख हमारा हैवश्र धपने पास बुड़े। बहुत ४०
श्रार बातसे भी उसने साधी श्रार उपदेश किया कि
इस समयके रेठे लोगांंसे बच जायः।

तब जिनहांने उसका बचन झानन्द से यहण किया ४१
उन्हांने बपतिसमा लिया श्रार उस दिन तीन सहस
जनके अरकल शिष्यांमें मिल गये। श्रार वे प्रेरितांके ४२
उपदेशकर्म श्रार संगतिमें श्रार राडीतावनमें श्रार प्रार्थना-
में लगे रहते थे। श्रार सब मनुष्यांके भय हुशा श्रार ४३
बहुतेरे बहुत काम श्रार चिन्ह प्रेरितांके द्वारा प्रगट होते
थे। श्रार सब बिश्वास करनेहरां एकठूँ थे श्रार उन्हांकी ४४
सब सम्पति सामंकी थी। श्रार वे धन सम्पतिका वेचके ४५
जैसा जिसका प्रयोजन होता था तैसा सभ्यान्में बांट लेते
थे। श्रार वे प्रतिदिन मन्दिरमें एक चित होके लगे रहते ४६
थे श्रार घर घर रोटी तोड़ते हुए झानन्द श्रार मनकी
४० सुधायमें माता रे चैत्र ईश्वरको स्तुति करते रे चैत्र सब लगानका उपर भानुकाल था . चैत्र प्रभु शाखा पानेहारोंका प्रतिदिन मंडलमें मिलाता था ।

३ तीसरा पर्व ।

१ पितरभे एक लंबड्रेका घाँट थाना । २ लंगड्रोंका एकटु थाना । १२ पितरभा उसके बाल्की करना ।

१ तीसरे पहर प्रार्थनाको समयमें पितर चैत्र योहन २ एक संग मन्दिरको जाते रे । चैत्र लग किसी मन्दिरमा जो झरने माताको गर्भंसे लंगडा था लिये जाते रे जिसकी ब्रे प्रतिदिन मन्दिरको उस द्वारपर जो सुन्दर कहावता है रख देते रे कि वह मन्दिरमें जानेहारोंसे ३ भीख मानी । उसने पितर चैत्र योहनको देखके कि ४ मन्दिरमें जानेहर हैं उसने भीख मांगी । पितरने योहनको रंग उसकी चैत्र दूधृ नारे कहा हमारी चैत्र देख ।

५ सो वह उसके कुछ पालकी भाषा करता हुए उनकी ६ चैत्र ताकणे लगा । परतु पितरने कहा चाँदी चैत्र सोना भेरे पास नहीं हैं परतु यह जो भेरे पास हैं ७ तो सो देता हूं यीशु ब्रीवु नासरिको नामसे उठ चैत्र ८ चल । तब उसने उसका दहिना हाथ पकड़के उसे उठाया चैत्र तूरत उसको पांवों चैत्र घुटियांमें बल ९ हुआ । चैत्र वह उठलकी खड़ा हुआ चैत्र फिरने लगा चैत्र फीता चैत्र कृदता चैत्र ईश्वरकी स्तुति करता हुआ उनके संग मन्दिरमें प्रवेश रे ।

५ सब लगाने उसे फिरते चैत्र ईश्वरकी स्तुति १० करते हुए देखा । चैत्र उसका चोरा कि वही है जो
मन्दिरके सुन्दर फारवाह के लिये बैठा रहता था शेर जो उसका हुश्चा था उससे वे आति अचंभित शेर बिस्मित हुए। जिस समय वह लंगड़ा शेर चंगा ११ हुश्चा था पितर शेर याहनको पकड़े रहा सब लेग बहुत अचंभा करते हुए उस शेरसारमें जा सुलेमानका बाहावता है उनके पास टैंडे शेर है।

यह देखके पितरने लोगांसे कहा है इज्बायेली जागै १२ तुम इस मनुष्यते कों अचंभा करते हो अथवा हमारी शेर कों ऐसा ताकते हो कि जैसा हमने अपनीही शक्ति अथवा भूति इसकी चलनेका सामय किया होता। इज्बायेल इसहाक शेर याकबके ईश्वरने १३ हमारे पितरेंके ईश्वरने अपने सेवक यीशुकी महिमा प्रगट किये जिसे तुमने पकड़वाय शेर उसकी पिलातके सन्मुख नकारा जब कि उसने उसे बाढ़ देनेके ठहराया था। परंतु तुमने उस पवित्र शेर धम्मको नकारा १४ शेर मांगा कि एक हत्याका तुम्हें दिया जाय। शेर १५ तुमने जीवनके कलाका घात किया परंतु ईश्वरने उसे मृतकोंमें उठाया शेर ईश्वर इस बातके हम सादी हैं। शेर उसके नामके विश्वाससे उसके नामहीने इस १६ मनुष्यको जिसे तुम देखते है पानी है। जानते है सामय दिया है हां जो विश्वास उसके द्वारासे है उसीसे यह संपूर्ण श्लाकाय तुम समेंके साथे इसका मिला है।

शेर चब है भाद्रय में जानता हूं कि तुम्होंने वह १७ काम चन्द्रानतासे किया शेर वैसे तुम्हारे प्रधानांने भी किया। परंतु ईश्वरने जा बात उसने अपने सब भविष्य- १८
हृदयांको मुखसे स्वागे बताई थी कि खोज दुःख भेजेगा ।

२५ बह बात इस रीतिसे पूरी किई । इसलिए प्रश्नात्मक
करके फिर जाओ कि तुम्हारे पाप मिराये जाये जिस्तें
जीवका रंढा है निं का समय परमेश्वरकी जरासे जाओ ।

२० जीर वह यीशु खोजको भेजे जिसका समाचार तुम्हें
२१ जागे से कहा गया है । जिसे चक्षर है कि स्वरे सब
बातें की सुधारे जानकी उस समयलों यहाँ करे जिस-
की कथा इंश्वरने जादिए धमने पावने पवित्र भविष्यात्मका-
होंगे मुखसे कही है ।

२२ मूसाने पितरेंसे कहा परमेश्वर तुम्हारा इंश्वर
तुम्हारे भाइयोंसे मेरे समान एक भविष्यात्मकी तुम्हारे
लिए उठायेगा जो जो बातें वह तुम्हें कहे उन सब
२३ बातें मू स हमकी सुनो । परन्तु हर एक मनुष्य जो
उस भविष्यात्मकी न सुने लोगोंसे नाथ किया जाय-
२४ गा । जीर सब भविष्यात्मकों भी शामुएलसे जीर
उसके पिकेके भविष्यात्मकों लेके जितनें बातें
२५ जिंदे इन दिनोंका भी जागे सन्देश दिया है । तुम
भविष्यात्मकों जीर उस नियमके सन्तान हो जो
इंश्वरने हमारे पितरेंको संग बांधा कि उसने इत्ताहिमसे
कहा पृथिवीके सारे घराने तेरे बंशके द्वारसे आशीस
कई पावने । तुम्हारे पास इंश्वरने अपने सेवक यीशुको
उठाके पाहिले भेजा जो तुम्हें से हर एकके तुम्मारे
कुकम्मांसे फिरानेमे तुम्हें काशीस देता था ।
¶ चैथा पढ़े।

1 पितार श्रीर योगका धर्मोगम में हला होना। 13 पितारका महायज्ञके बारे चरण देना। 23 अन्योका शास्त्रमं दिशा करना श्रीर पितार श्रीर योगका धमकाना श्रीर ठेंडू देना। 32 श्रीरके शिष्योंके पंजा मिलने श्रीर प्रधान करना। 32 श्रीरका धर्मका शास्त्रमं बांट लेना श्रीर योगका एकाता।

जिस समय वे लोगोंसे कह रहे याजकलोग श्रीर मन्त्रिके पहलोंका साध्याय श्रीर सटूकी लोग उनपर ढंग आये। कि वे अप्रसन होते थे इसलिये कि वे लोगोंका सिखाते थे श्रीर मृतकोंमे जो उनकों बात यीसुके प्रमाणसे प्रचार करते थे। श्रीर उन्होंने उन्हें पत्थरसे बिहानले बन्दीगृहें में बेंकरिंग साधक हुई थी। परंतु वचनके सुनेन्हरोंमे भहुताने विस्वास किया श्रीर उन मनुष्योंकी गिन्ती पांच सहस्रों सत्कल हुई।

बिहान हुए लोगोंके प्रधान श्रीर प्राचीन श्रीर साध्यापक लोग। श्रीर हवस महायज्ञक श्रीर कियाफा श्रीर योगके सिकन्दर श्रीर महायज्ञके घराने जितने लोग थे वे विभिन्न शलीमे एक हुए। श्रीर उन्होंने पितार श्रीर योगके वीचमे कहा करके पूर्वा तुमने यह काम किस सामथर्यात साधवा किस नामसे किया। तब पितारे प्रवचन ज्ञातमसे परिपूर्ण हो उनसे कहा है लोगके प्रधाना श्रीर इसार्णके प्राचीन। इस दुर्श्ल समुद्रपप जो महादेव लिए गई है यदि उसके विषयमे छाज हमसे पूर्वा जाता है कि वह किस नामसे चंगा किया गया है। तो छाया लोग सब जानिये श्रीर समस्त इस्मा- 10 यही लोग जानें कि यीसु खीरू नासरीके नामसे जिसे छाया लोगोंने कूफिपर घात किया जिसे इंश्वरने मृतकों-
मंसे उठाया उसीसे यह मनुष्य झाप लोगेंके झागे चंगा
११ खड़ा है | यही वह पत्थर है जिसे झाप पादयोंने तुच्छ
१२ जाना जो बानेका तिरा हुआ है | झार किसी दूसरेरे
चार नहीं है किया कि स्वगेंके नीचे दूसरा नाम नहीं है जो
मनुष्येंके बीचमें दिया गया है जिससे हमें चार पाना
होगा |
१३ तब उन्हेंने पितर झार योहनका साहस देखके झार
यह जानके कि वे बिदाहरीन झार ज्ञान मनुष्य हैं
झांभा किया झार उनका चीन्हा कि वे यीशुके संग थे |
१४ झार उस चंगा किये हुए मनुष्येंको उनके संग खड़े देखके
१५ वे कोई बात बिरोधमें न कह सके | परलू उनका समाके
बाहर जानेका झांझा देके उन्हें झापसमें बिचार
किया | कि हम इन मनुष्येंसे क्या करें किया कि एक प्रार्थ
झाणचर्या करमें उन्हें हुआ है यह बात यीशुके मनके
सब निवासियेंपर प्रगत है झार हम नहीं मुकर सकते
१६ हैं | परलू जिस्ते लोगेंमें अधिक फैल न जावे झांझा
हम उन्हें बहुत धमकावें कि वे इस नामसे फिर किसी
१८ मनुष्येंसे बात न करें | झार उन्हें उन्हें बुलाके झांझा
दिंदे कि यीशुके नामसे कुछ भी मत बालो झार मत सिं-
१९ झांझा | परलू पितर झार योहनने उनका उत्तर दिया
कि इश्वरसे अधिक झाप लोगेंके मानना क्या इश्वरके
२० झापे उचित हैं सा झाप लोग बिचार कीजिये | किया कि
जो हमने देखा झार सुना है उसका न कहना हमसे
२१ नहीं है। सक्ता है | तब उन्हेंने झार धमकी देके उन्हें
छोड़ दिया कि उन्हें दंड देनेके लोगेंके कारण झार
उपयाय नहीं मिलता था क्योंकि जो हुआ था उसके लिये सब लोग इंश्वरका गुणानुबाद करते थे। क्योंकि वह २२ मनुष्य जिसपर यह चंगा करनेका आश्रय करने का निर्देश दिया गया था चालीस बरसके उपरका था।

वे दूरके अपने संगीथियाँके पास शाये श्रार जो कुछ नृप मुख यां जो श्रार प्राचीनांने उनसे कहा था सौ दिया। वे सुनके एक चित हाकर झंका शब्द करके इंश्वरसे बाले हें प्रभु तू इंश्वर हैं जिसने स्वर्ग श्रा पृथिवी श्रा समुद्र श्रार सब कुछ जो उनसे है बनाया। जिसने श्र अपने सेवक दादांके मुखसे कहा अन्यदेशियाँने किया श्रार लोगांनेकी श्रार लोगांने क्यां स्वर्ग चिन्ता किये। परमें- इंश्वरके श्रार उसके आभिषित्त जनके बिन्दु पृथिवीके राजा लोग खड़े हुए श्रार श्रार लोग एक संग एकटू हुए। क्यांकि सचमुच तेरे पवित्र सेवक स्वर के बिन्दु जिसे २० तूने सेवक किया हैराद श्रार पान्त विलाय भी अन्यदेशियां श्रार इसारेली लोगांके श्रार एकटू हुए। जिसे २८ जो कुछ तेरे हाय श्रार तेरे मतने आगे ठहराया था जो है माय सोइ करें। श्रार श्रार हें प्रभु उनकी धमक- २८ श्रार देख। श्रार चंगा करनेके लिये श्रार चिन्हां श्रार ३० अद्वैत कामेंके तेरे पवित्र सेवक स्वरुके नामसे किये जानेके लिये अपना हाय बढ़ानेके अपने दासांको यह दोहियें कि तेरा बचन बड़े साहससे बालं। जब उन्हें के ३२ प्रार्थना किये थे तब वह स्वयं जिसमें वे एकटू हुए थे हिल गया हैर वे सब पवित्र श्रार श्रार साहससे बालं लगी।
विधवासियों की मंडलीका एक मन श्रीर एक जीव था श्रीर न कोई अपनी सम्पत्ति मंडली कोई बस्तु अपनी कहता 38 या परन्तु उन्होंकी सब सम्पत्ति सामान्य थी। श्रीर प्रेतित लेख बड़े सामर्थ्यसे प्रभु योगुको जी उन्होंको साक्षी देते 39 ये श्रीर उन समझौता बड़ा अनुयाय था। श्रीर न उनमंसे बाई दरिद्र था। क्योंकि जो जा लेख भूमि अघि घरोंके 40 अधिकारी थे से उन्हें बेचते थे। श्रीर बेचना हुईं बस्तुओं- का दाम लाके प्रेतितके पांविंपर रखते थे। श्रीर जैसा 41 जिसकी प्रयोजन होता था। तैसा हर एकका बान्टा 42 जाता था। श्रीर योगी नाम कुप्रस टापूका एक ले सिय जिसे प्रेतिति बन्ध अर्थात शांतिका पुत्र कहा उसकी 43 कुछ भूमि ही। सो वह उसे बेचके हप्पोंका लाया 44 श्रीर प्रेतितंके पांविंपर रखा।

5 पांचवां पर्व

1 ओलानियाई श्रीर सफोराका कपट करना श्रीर मर जाना। 92 प्रेतितंके बालीका 
2 रामचरिय बस्ता। 97 प्रेतितंका बन्धुगिरियों रखा जाना श्रीर स्वागतिका उन्हें 
3 कूद नापा। 98 पितरका मदायारंभको दृष्टर देना। 99 गामतिपपरमाण 
4 प्रेतितंका मर खाके खूंट जाना श्रीर अत्यधिके बालीका भागद करना।

1 परन्तु ओलानियाई नाम एक मनुष्यने अपनी स्त्री 2 सफोराके संगमें कुछ भूमि बेची। श्रीर दाममंडली कुछ रख 
3 छोड़ जो उसकी स्त्री भी जानती थी। श्रीर कुछ लाके 4 प्रेतितंके पांविंपर रखा। परन्तु पितरके कहा है ओलानि- 
5 याह शेतानने कोई तेरी मनमंडल मस दिया है कि तू 
6 पविच्च आत्मासे मूट बोले। श्रीर भूमिके दाममंडली कुछ 
7 रख छोड़ गई। जबलां वह रही चका तेरी न रही श्रीर जत
बिक गई क्या तेरी बात में न थी। यह क्या है कि तुने यह बात अपने मनमें रखी है। तू मनुष्यों से नहीं परलू ईश्वरसे मृत बोला है। ज्ञानियाह यह बात सुनते ही गिर पड़ा श्री प्राप्त छोड़ दिया श्रीर इन बातेंकी सब सुननेहरारींकी बड़ा भय हुआ। श्रीर जवानिन्दे उठके उत्ते लपेटा श्रीर बाहर ले जाके गाड़ा। पहर एकके पीछे उसकी स्ती यह जो हुआ था न जानके मीतर छाई। इसपर पितरने उससे कहा मुखसे कह दे क्या तुमने वह भूमि इतनेहींमें बेची। वह बाली हां इतनें। तब पितरने उससे कहा यह क्या है कि तुम दोनों परमेश्वरके आत्माकी परीक्षा करनेकी एक संग युक्ति बांधी है। देखते ही स्वामीके गाड़नेहरारींकी पांव द्वारपर है। श्रीर वे तुफे बाहर ले जायंगे। तब वह तुरंत उसके पांवेंके पास गिर पड़ी श्री प्राप्त छोड़ दिया श्रीर जवानिन्दे मीतर छाई। उसे मरी हुई पाण्या श्रीर बाहर ले जाके उसके स्वामीके पास गाड़ा। श्रीर सारी मन्दलींकी श्रीर इन बातेंकी सब सुननेहरारींकी बड़ा भय हुआ।

प्रितिके हाथपैंसे बहुत चिन्ह श्रीर अरुंत काम से लगते ही छिंके बीचघे किये जाते थे। श्रीर बे सब एक चित हैं। इसलिए श्रीसारौंसे फिर बाहर छिंके उनके संग मिलते ही सहस्त नहीं था परलू लोग उनकी बड़ाई करते थे। श्रीर श्रीर भी बहुत लोग पुरूष श्रीर स्तिथया भी बिश्ववास करके प्रभुसे मिल जाते थे। इसके ११ लोक रागियोंके बाहर सड़कोंमें लाके खाटीं श्रीर क्षटरोंके रखते थे कि जब पितर जावे तब उसकी
16 तब महायाजक उठा श्रीर उसकी सब संगी जो सटी-
18 किया तांत्रिक पंथ है श्रीर हासे भर गये. श्रीर प्रेरितांकी
14 पकड़के उन्हें सामान्य बन्दीघृह में रखा। परन्तु परमेश्वर-
के एक दूसरे राता बन्दीघृह के द्वार खोलके उन्हें बाहर
20 लाके कहा. जाश्र श्रीर मंदिर में खड़े होके इस जीव-
21 नकी सारी बातें लोगें कहा। यह तुम्हें उन्हें भोरको मंदिर में प्रवेश किया श्रीर उपदेश करने लगे.
तब महायाजक श्रीर उसकी संगी लगा श्राये श्रीर न्याय-
योंको समाजे श्रीर इसायेलको सन्तानोंके सारे प्राची-नेंको एकटु बुलाया श्रीर यादेंको बन्दीघृह में भेजा कि
22 उन्हें लाये। प्रादेंको जब पहुंचे तब उन्हें बन्दीघृह में
23 न पाया परन्तु लौटके सन्देश दिया. कि हमने बन्दीघृ-
को बड़ी दूसरे सारे बंद किये हुए श्रीर पहुँचेंको बाहर
द्वारहों सारे खड़े हुए पाया परन्तु जब खोला तब भीतर
21 किसीको न पाया। जब महायाजक श्रीर मन्दिर के पहुँ-
चेंको अध्ययन श्रीर प्रधान याजकों ने यह बातें सुनीं तब
योंके विषयमें दूबधमें पहुँ ति कि यह क्या था?
24 बात था है। तब किसी श्राके उन्हें सन्देश दिया कि
देखिये ए युनियजनको श्राय लोगेंको बन्दीघृह में रखा
25 मंदिर में खड़े हुए लोगेंको उपदेश देते हैं। तब पहुंचे-
थे श्राको अध्ययन यादेंको सारे जाके उन्हें ले नाया परन्तु
बरियाद़िसे नहीं क्यांकि वे लोगांसे जरूर थे ऐसा न हो कि पत्तरवाह किये जाये।

उन्हें उन्हें लाके न्यायियोंकी सभामें खड़ा किया 20 श्रीर महायाजकने उनसे पूछा। क्या हमने तुम्हें दूढ़ 28 आज्ञा न दिये कि इस नामसे उपदेश मत करा। ताभी देखा तुमने यिख्शलिमकी छपने उपदेशसे भर दिया है श्रीर इस मनुष्यका लोहू हमांपर लाने चाहते है। तब पितरने श्रीर प्रेतिताने उतर दिया कि मनुष्यांकी 25 आज्ञासे स्थायिक इश्वरकी आज्ञाकी मानना चाहित है।

हमारे पितरांके इश्वरने योशुके जिसे जाप लगाने 30 काठपर लटकाके घात किया जिला उठाया। उसकी 31 इश्वरने कार्ना श्रीर चाताका जंच पद अपने दहिने हाथ दिया है कि वह इस्साके लोगांसे प्रब्धाताप करवाके उन्हें पापमेचन देवे। श्रीर इन बातोंमें हम उसके 32 साह्यें हैं श्रीर पवित्र आत्मा भी जिसे इश्वरने अपने आज्ञाकारियोंका दिया है साह्यें है।

यह सुननेसे उसकी तीरसा लग गया श्रीर वे उन्हें वह मार डालनेका विचार करने लगे। परन्तु न्यायोंकी इस सभामें गमलियल नाम एक फरोशी जो ब्यवस्थापक श्रीर सब लगांमें मम्मटदिक था खड़ा हुआ श्रीर प्रेतितानी चाहदी वेर बाहर करनेकी आज्ञा दिये। श्रीर इस उन्हे कहा है इस्साके मनुष्यां। अपने विषयमें सचेत रहे कि तुम इन मनुष्यांसे क्या किया चाहते है। क्यांकि इस इन दिनने के ज़ा पूरा यह कहता हुआ उठा कि में भी कोई हूं श्रीर लग गिनतीमें चार सातके अकल उसके
साथ लग गये परन्तु वह मारा गया चौर जितने लोग उसका मानते थे सब तितर बिचर हुए चौर बिला 37 गये। उसके पीछे नाम लिखाने दिनों में यहूदा गाली-ली उठा चौर बहुत लोगों को अपने पीछे बहका लिया। वह भी नमुना हुआ। चौर जितने लोग उसका मानते थे 38 सब तितर बिचर हुए। चौर सब में तुम्हारे कहता हूँ। इन मनुष्यों के हाथ उठाया। चौर उन्हें जाने दे। क्योंकि यह विचार अच्छा। यह क्रांति मनुष्यों की 39 चौरसे हाय तो लोप हो जायगा। परन्तु यदि इंद्रवरसे है। तुम उसे लोप नहीं कर सकते है। ऐसा न हो। कि तुम इंद्रवरसे भी लड़नेहरे ठहरो।

40 तब उन्होंने उसकी मान लिए। चौर प्रतिपादक बुलाके उन्हें कोड़ा। मारके श्राजा दिये कि यीशु के नामसे बात 41 मत करे। तब उन्हें कोड़ दिया। सा वे इस बातसे कि इन उसके नामके लिये निजियाँ होने वाले। योग गिने गये ज्ञान जरूर हुए। न्यायकों के साथों सामने चले 42 गये। चौर प्रतिपादन मन्दिर में चौर घर घर उपदेश करने। चौर यीशु खीपुका सुसमा चार सुनाने से हैं खंगे।

6 छठवां पंबे।

1 कंग्रेसकी सेवा के लिये राह रेहाको हाराया जाना। 6 रिजल्टका द्वारकश खाना। 11 विश्वनाथका दस्तर मुदा देखा खाना।

9 उन दिनों में जब शिष्य बहुत होने लगे तब यूनानीय भाषा बालनेहरू इंग्लिष पर कुड़काड़ लगे कि प्रतिदिनकी सेवकाईने हमारी विभवाश्रोंकी सुध नहीं लिड़े 2 बात। तब बारह प्रतिपादने शिष्यांकी मंडलीको अनपने
प्रास बुलाकर कहा यह श्लोका नहीं लगता है कि हम लोक ईश्वरका बचन छोड़के खिलाने पिलानेके सेवकादेवों में रहें। इसलिये हम भावृता शिवरेवनते सात सुख्यात मनु-यझ्यांकौ जा पविच्छ शात्मासे श्रीर बुधिसे परिपूर्ण हाँ चुन ली कि हम उनके इस कामपर नियुक्त करें। परन्तु हम तो प्रार्थनामें श्रीर बचनके सेवकादेवों में लगे रहेंगे। यह बात सारी मंदलीके शरीर लगी श्रीर उन्होंने स्त्रियां एक मनु-प्रेता जो विश्वाससे श्रीर पविच्छ शात्मासे परिपूर्ण या श्रीर फिलिप श्रीर प्रखर श्रीर निकानर श्रीर तीमान श्रीर परम्परा श्रीर अन्तिका नगरके धनुर्धीर मतावलंबी निकालावकी चुन लिया। श्रीर उन्हें देश में प्रेतांके श्रीर चुने खड़ा किया श्रीर उन्होंने प्रार्थना करके उनपर हाथ रखे। श्रीर ईश्वरका बचन फैलता गया श्रीर यिष्टशालीमें शिव लोग गिन्तिमें बहुत बढ़ते गए। श्रीर बहुतते याजक लोग विश्वासके बधिन हुए।

स्त्रियां विश्वास श्रीर सामग्रिः पूर्ण होके वड़े बड़े अर्थुत श्रीर श्राप्चयक कर्म लोगांमें बीचमें करता था।

तब उस सबापिंते श्रीर लिबररिनियांकी कहावती है श्रीर कुरीनी श्रीर निरंदरीय लोगांमें श्रीर किलिकिया श्रीर शांतिया देशांकी लोगांमें जितने उठके स्तिरानसे बिवाद करते लगे। परन्तु उस ज्ञानका श्रीर उस 10 शात्माका जिन करके वह बात करता था सामना नहीं कर सकते थे।

तब उन्होंने लोगांमें उभादा जा बढ़े हमने उसके 11 मुसाके श्रीर ईश्वरके विराममें निन्दाशकी बातें बोलते
१२ सुना है। श्रीर मांगों श्री प्राचीनों श्री अध्यापकों को उसकाके वे चढ़ आये श्रीर उसे पकड़के न्यायियाँ को
१३ समाहमें लाये। श्रीर मूठे साधियाँको खड़ा किया जो बाले यह मनुष्य इस प्रविष्ठ स्थानको श्रीर व्यवस्थाको बिरोधमें।
१४ निन्दाकी बारे बालनेस नहीं घंटा है। किवांकि हमने उसे कहते सुना है कि यह यीशु नासरी इस स्थानको
हायगा श्रीर जो व्यवहार मूसाने हमें सांप दिये चलनें
१५ बदल डालेगा। तब सब लोगों जो समाहमें बेढ़े ये उसकी श्रीर ताककै उसका मुंह स्वर्ग दूतके मुंहके ऐसा देखा।

१ सातवां पदः।

१ सिसिफाकका महायाजकको उत्तर देना। वर्गाहीम वस्त्रादिका लक्ष्य। १२ सुसाँ- को क्रमा। ४१ विज्ञानिको सूर्यमुखाका वृद्धांसा। ४४ ग्नूगाको विश्वासको नम्भारा। ४५ विज्ञानिको विश्वासको
पश्चातःके मारणा।

२ तब महायाजकने कहा करा यह बारें में हैं। सिसिफाकके कहा है भाइयो श्रीर पितरो सुनो। हमारा पिताएके
इब्राहीम हारान नगरमें बसनेके पहले जब मिसपताने- मियादेशमें या तब तेज़मय ईश्वरने उसको दर्शन दिया।
३ श्रीर उससे कहा तू अपने देश श्रीर अपने कुरुबेमेंसे
४ निकलके जो देश में तुम्हें दिखाए उसमें जा। तब उसने
कलदियाँके देशसे निकलके हारानमें वास किया श्रीर
बहांसे उसकी पिताके मरनेके पीछे ईश्वरने उसकी इस
देशमें लाके बसाया जिसमें अप लाग जब बसते हैं।
५ श्रीर उसने इस देशमें उसकी कुछ अधिकार न दिया
पैर रखने मर भूमि भी नहीं परलूकसको पुष्ण न रहतेही
उसको प्रतिज्ञा दिये कि में यह देश तुमको श्रीर तेरे।
भीि तेि बंशका भाषिकारके लिए देंजंगा। ऋयर ई इंशवरने यूं कहा कि तेि सत्तान पराये देशमे बिदेशी होि ऋयर वे लाग उन्हे दास बनाविंगे ऋयर चार सी बरस उन्हे ढूंढ़ देंगे। ऋयर जिन लोगोंके वे दास होि जन लोगाांका (इंशवरने कहा) मेि विचार कहंगा ऋयर इति वे निक्षल ऋयर से ऋयर इति स्थानमे मेरी सेवा करने। ऋयर उसने उसके बतनेका लियत दिया ऋयर इस रीति से इति उसके उत्पन्न हुि ऋयर उसने ऋयर देि दिन उसका बतना किया। ऋयर इति याकूबका ऋयर याकूबने बारह कुलपति यांका। ऋयर फ कुलपति यांके यूसफसे हार करि उसे मिसर देश जाने-हारिंको हाथ बना परतु इंशवर उसके संग था। ऋयर उसके सब लोगोंसे छड़के मिसरके राजा फिरजनके लोग अनुयहके याम ऋयर बुद्धिमान किया। ऋयर उसने उसे मिसर देशपर ऋयर अपने सारे घर पर देश दहराया। तब मिसर ऋयर कनाके सारे देशमे चकाल ऋयर बड़ा नग्र पहा ऋयर हमारे पितरंको अत्य नहीं मिलता था। परतु याकूबने यह सुनके फि मिसरमे ऋयर नाज है हमारे पितरंको पहिली बेर भेजा। ऋयर दूसरी बेरमे यूसफ अपने भाइयेंसे वहचाना गया। ऋयर यूसफका घराना फिरजपर प्रगट हुि। तब यूसफने ऋयर अपने पिता याकूबको ऋयर अपने सब कुंबेंका जो पदनेर जन। ये बुलवा भेजा। सी याकूब मिसरको ऋयर गया। ऋयर वह जाप मरा। ऋयर हमारे पितर लग। ऋयर वे शिखिन नगरमे पहुंचाये गये। ऋयर उस कबरमे ऋयर
रखे गये जिसे इब्राहीमने बांदी देखे शिक्षिमें पिता हमें रेनें सन्तानेंसे मेल लिया।

 परन्तु जो द्रौत अपनी हालात मंगल उससे समय ज्याही मिलते थे उसका समय ज्याही निकट बाणा यूंही थे।

 ले लग मिसरमें बड़े छाए बहुत हो गये। इतने में दूसरा राजा उठा जो यूसफ़का नहीं जानता था। उसने हमारे ले गेंसे चतुराई करके हमारे पितारंगे साथ ऐसी बुराई बिड़े कि उनके बालोंका बाहर फिक्काया कि वे जीते न रहे। उस समय में मसा उत्पन्न हुआ जो परस्मृतर था।

 छाए वह अपने पिताके घरमें तीन मास पाला गया। जब वह बाहर पका गया तब फिरजनकी बेटीने उसे उठा लिया। छाए अपना पुत्र करके उसे पाला। छाए मशाका मिसरियांकी सारी बिड़ता सिखाई गईं छाए वह बातिंगे छाए कामेंसे सामंथरीया। जब वह चालीस वर्षबार हुआ तब उसके मनमें शाया कि अपने भाईयांंका अर्थत इब्राहीमने सन्तानेंका देख लेवे। छाए उसने एकपर अन्याय होते देखके रक्षा किंद्रे छाए मिसरियांका मारके सताये।

 हुएं लोटा लिया। वह विचार करता था कि मेरे भाई समझेंगे कि इंद्रवर मेरे हाथसे उनका निस्तार करता है।

 परन्तु उन्होंने नहीं समजा। अगले दिन वह उन्हें जब वे अपसे में लड़ते थे दिखाई दिया छाए यह कहके उन्हें मिलाई करते। नायका किंद्रे यह मनुष्य तुम तो भाई हो।

 एक दूसरे कों अन्याय करते है। परन्तु जो अपने पढ़ाने कों अन्याय करता था उसने उसका हटाया कहा।

 कितने तुम्हें हमें अपने अध्याय छाए नयायी ठहराया। क्या
जिस रीति से तूने कल मिसरीका मार डाला त मुझे मार डालने चाहता है। इस बातपर मूसा भागा शीर निदि- २६ यान देशमें परदेशी हुशा शीर वहां दूर पुर मस्का उत्तम हुए। जब चालीस बरस बीत गये तब परमेश्वरका दूरने ३० सौनई परमेश्वर जंगलमें उसका एक कजारिका ज्ञानी ज्ञानी मदन दिया। मूसाने देखके उस दर्शनसे ज्ञाना ३१ नियत शीर जब वह दूरपुर करनेका निकट ज्ञाना था तब परमेश्वरका शब्द उस पास पहुंचा। क्योंकि तेरे अंजंग से ३२ ईश्वर अपाकु इबाहीमका ईश्वर शीर इस्लामका ईश्वर शीर याकुबका ईश्वर हू। तब मूसा बांपने लगा शीर दूरपुर करनेका उस सहस न रहा। तब परमेश्वरने ३३ उससे बही औपने पांवोंकी जूतियां खील कोंकड़ वह स्वास जिसपर तू खड़ा है पवित्र भूमि है। मैंने दूरपुर ३४ उससे औपने लोगोंको जो मिसरमें हैं दूरपुर देखी है। शीर उनका कहरना मुना है शीर उन्हें कहानि। उतर शीर हू। शीर जब शीर में तुम्ही मसरका भेंजूना। यही शीर मसा जिसे उहुसे नकारकी बही किसके तुम्ही अध्यात्म शीर न्यायी ठहराया उसको ईश्वर ने उस दूरके हायसी जिसके उसको क्फारों में दर्शन दिया अध्यात्म शीर निस्तारक परे करके भेजा। यही मिसर देशमें शीर लाल समुद्रमें ३५ शीर जंगलमें चालीस बरस अदबूल काम शीर चिन्ह दिखाके उन्हें निकाल लाया। यही वह मूसा है जिसके ३६ इसायेको नंतरानांसे बहा परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे माइयेंमेंस मक्का एक भविष्यका तुम्हारे लिये उठावेगा तुम उसकी सुने। यही है जो जंगलमें ३७
मंडलीके बीचमें उस दूसरी संग जो सीनाई पब्नंतपर वससे बोला श्रीर हमारे पिताेंके संग था श्रीर उसने हमें देनेके लिये जीवती बानियां पाई। पर हमारे पिताेंके उसके आज्ञाकारी हानिकी इच्छा न किई परन्तु उसे हराके अपने मनमें मिसरकी श्रीर फिरे। श्रीर हारानसे बोले हमारे लिये देवंको बनाये जो हमारे आगे जायें की कीं यह मूसा जो हमें मिसर देशमें निकाल लाया उसे हम नहीं जानते का हुआ है।

उन दिनमें उन्हींके बच्चू बनाके उस मूंतके आगे बलि चढ़ाया श्रीर अपने हाथें का मामलांसे मगन होते थे।

तब ईश्वरने मुह फिरके उन्हीं आकाशकी सेना पूजनको त्याग दिया जैसा भविष्यद्विकाशींके पुस्तकामें लिखा है क़ि हे दस्तागिलिके घराने का तुमने चालीस वरस जंगलमें मेरे आगे पशुमेड़ श्रीर बलि चढ़ाये। तैभी तुमने मालकका तंबू श्रीर अपनी देवता निर्मनका तारा उठा लिया। अर्थात् उन आकाशरेंको जो तुमने पूजनको बनाये। श्रीर में तुम्हें बाबुलसे श्रीर उधर ले जाके बसाँकर बीसेंकर जो आकाशरेंका तंबू जंगलमें हमारे पिताेंके बीचमें था जैसा उसींसे उहराया जिसने मूसाते कहा क़ि जो आकाशरेंका तुने देखा है उसके आनुसार उसको बना। श्रीर उसको हमारे पिताें लोग यहीराशुआंकि संग जगलांसे पाके तब यहां लाये जब उन्हींसे उन अन्यदेशियंका आधिकार पाया जिन्हें ईश्वरने हमारे पिताेंके सामसे निकाल दिया। साइं दाजूदके दिनांतक हुआ जिसपर ईश्वरका आनुयय पर श्रीर जिसने मांगा कि में याकूबके ईश्वरके
लिये डेरा ठहराने। पर सुलेमानने उसके लिये घर ४० बनाया। परन्तु सवबंधान जो है तो हाथके बनाये हुए ४८ मन्दिरों में बास नहीं करता है जैसा माहिष्यदुर्गाने कहा है । कि अमरेश्वर कहता है स्वर्ग मेरा सिंहासन श्रीर ४२ पृथ्वि मेरे चरणों की पीढ़ी है तुम मेरे लिये जैसा घर बनाओगे जयस्मा मेरे विषामका शीक्षा स्थान है । क्या मेरे हाथने यह सब बस्तु नहीं बनाई। ५० है हठीले श्रीर मन श्रीर ज्ञानीके खतनाहीन लोगा ५१ तुम सदा पवित्र ज्ञानमका साम्हना करते है । जैसा तुम्हारे पितारोंने तैसा तुम भी । माहिष्यदुर्गाने ममिंसे ५२ तुम्हारे पितारोंने जिसका नहीं सताया । श्रीर उन्होंने उन्हें मार डाला जिन्होंने इस धर्मी जनके ज्ञानीका गामके सन्देश दिया जिसको तुम शब बढ़ानेहारे श्रीर हत्यारे हुए हो । जिन्होंने स्वर्ग दूरोंके द्वारा ५३ ठहराई हुईं व्यवस्था पाई है तैमी पालन न रखिए ।

यह बातें सुननेसे उनके मनका तीरस्ता लग गया श्रीर ५४ वे स्तिफानकर दांत पोसमने लगे। परन्तु उसके पवित्र श्रां- ५५ ह्यसमसे परिपूर्ण है स्वर्गकी श्रीर तामके इंश्वरकी महि- माको श्रीर यीमुको इंश्वरकी दहिनी श्रीर खड़े देखा । श्रीर कहा देखी में स्वर्गको खुजे श्रीर मनुष्को पुष्करी शई इंश्वरकी दहिनी श्रीर खड़े देखता हैं। तब उन्होंने बड़े ५० शब्दसे चिल्लाकर अपने कान बन्द किये श्रीर एक चिंत होके उसपर लपके । श्रीर उसे नगरके वाहर निकालके ५६ पत्यरवाह करने लगे श्रीर साध्योंने अपने जमदार शा- बल नाम एक जवानके पांवों पास उतार रखे। श्रीर ५६
उन्होंने स्तिफानको पत्र दिया जो यह कहते थे "क्या गृही यीशु मेरे जात्मको यहाँ कर।"

श्रीर घुटने टेकके उसने बड़े शब्दसे पुकारा है प्रभु यह पाय उनपर मत लगा श्रीर यह कहते थे गया।

8 शाहरां पढ़े।

1 शपथके कारक मंडलीके लोगोंका तितिर बितर श्रीर। 8 फिलिपका श्रीमिरानके-
वाकी सुसमाचार सुनाया । 5 श्रीमिरान टीम्हाका बृत्ताता । 25 फिलिप श्रीर
नूवुशिया बचन ।

1 शाहर निकानके मारे जानिए सम्मति देता था, उस
समय यिशूशीलीमकी मंडलीपर बड़ा उपद्रव हुआ। श्रीर
प्रीतिका उड़ वे सब यह दिया श्रीर श्रीमिरान देशोंमें
2 तितिर बितर हुए। भक्त लोगों ने स्तिफानकी कबरमें
3 रखा श्रीर उसके लिये बड़ा बिलाप किया। शाहर
मंडलीका नाश करता रहा कि घर घर पुस्तको पुस्तको
श्रीर निकानका पकड़के बन्दौग्रहमें हालता था।

4 ज़ा तितिर बितर हुए सो सुसमाचार प्रचार करते
5 हुए फिरा किये। श्रीर फिलिपने श्रीमिरानके एक
6 नगरमें जाके खीमुकी कथा लीगांको सुनाई। श्रीर जो
बाते फिलिपने वहीं उन्होंपर लीगांने उन ज्ञानचक्री
कम्योंका जा वह करता था सुनने श्रीर देखनेंसे एक
7 चित होके मन लगाया। क्योंकि बहुतमें जिन्हें
रष्ट्र भूत लगी थे वे भूत बड़े शब्दसे पुकारते हुए
निकले श्रीर बहुत आंगंगी श्रीर लगावे लोग चंगे किये
8 गये। श्रीर उस नगरमें बड़ा बाढ़ हुआ।

6 परमतु उस नगरमें जाके श्रीमिरान नाम एक मनुष्य
था जो देखा करके श्रीमिरानको लीगांको विस्मित करता।
या श्रीर श्रापनेत्री कौं बड़ा पुरुष कहता था। श्रीर 10 चौरसे बड़तक सब उसकी मानके कहते थे कि यह मनुष्य ईश्वरको माहा शक्ति ही है। उसमे बहुत दिने मे उन्हे रोने बिस्मित किया था इसलिये वे उसका मानते थे। फर्तिन जब उन्हांने फिलिपका जी ईश्वरके राज्यके 12 श्रीर यथौ श्रीरके नामके विश्वयमूका सुसमाचार सुनाता था बिश्वबास किया तब पुरुष श्रीर स्तिया भी बपतिसमा लेने लगे। तब शिमेनाने श्रापभी बिश्वबास किया श्रीर 13 बपतिसमा लेके फिलिपके संग लगा रहा श्रीर भाष्यके बने थे देखके बिस्मित होता था।

जा प्रेरित विद्वानके थे उन्हांने जब सुना कि श्री- 14 मिरिलीयोंने ईश्वरका वचन यहण किया है तब रितर श्रीर योहनका उनके पास भेजा। श्रीर उन्हांने जाके 15 उनके लिये प्रार्थना किंवा कि वे पविच श्रात्मा पावें। कैसा बह ज्ञानों उनमूके अन्योपरि नहीं पड़ा था। केवल 16 उन्हांने प्रभु यीशुके नामसे बपतिसमा लिया। तब 17 उन्हांने उनपर हाथ रखे श्रीर उन्हांने पविच श्रात्मा पाया।

शिमेनान यह देखके कि प्रेरितके हाथें रखने से 18 पविच श्रात्मा दिया जाता है उनके पास हपैये लाया। श्रीर कहा मुक्तका भी यह अधिकार दीजिये कि जिस वि- 18 सीपर मे हाथ रखूं वह पविच श्रात्मा पावे। पर्वत 20 पितरने उससे कहा तेरे हपैये तेरे संग नजूँ हाथवे कौंकि तुमे ईश्वरका दान हपैयंसे माल लेनेका विचार किया है। तुभी इस वारमे न भाग न अधिकार है कौंकि तेरा 21


२२ मन ईश्वरके जागे सीधा नहीं है। इसलिये आपनी इस बुराईसे प्रश्नाताप करके ईश्वरसे प्रार्थना कर क्या २३ जाने तैरे मनका विचार खुशा किया जाय। क्योंकि मैं २४ देखता हूँ कि तू शाति कड़िये पितामें ईश्वर अधम्मके बंधन- में पड़ा है। शिमानने उत्तर दिया कि जाप लेग मेरे प्रभुसे प्रार्थना कीजिये कि जो बातें जाप लेगाने कही हैं उनमेंसे कोई बात मुक्तपर न पड़े।

२५ तो वे साझे देके ईश्वर प्रभुका बचन सुनाके यिथुश- लिमको लैटे ईश्वर उन्हाँने शामिरोगियोंके बहुत गावंमें सुसमाचार प्रचार किया। परन्तु परमेश्वरको एक दूतने फिलिपसे कहा उनके दखलको उस मार्गपर जा जो यिथुशलिमके खजा नगरको जाता है वह जंगल है।

२६ वह उनके गया ईश्वर देख। कृष देशका एक मनुष्य था जो तपस्या ईश्वर कृपियोंको राष्ट्रीय कन्दाकीका एक प्रधान ईश्वर उसके सारे घनपर अध्ययन था ईश्वर यिथ- लिमके भजन करनेको ज्ञाया था। ईश्वर वह लैटता था ईश्वर अपने रथपर बैठा हुआ यिथुश्वर भविष्युक्तका पुस्तक पढ़ता था। तब बहाताने फिलिपसे कहा निकट ३० जाने इस रथसे सिल जा। फिलिपने उस ईश्वर दौड़के उस मनुष्यके यिथुश्वर भविष्युक्तका पुस्तक पढ़ते हुए सुना ईश्वर कहा क्या जाप जो पढ़ते हैं उसे बूढ़ते हैं।

३१ उसके कहा यदि कोई खुफ़्ने न बताये तो मैं कोंकत वुद्ध सकूं के ईश्वर उसने फिलिपसे बिनती किया कि चढ़के मेरे संग बैठिये। धर्मपुस्तकका अध्याय जो वह पढ़ता था यही था कि वह भेड़की नाई वध होनेको पहुंचाया गया
श्रीर जैसा में श्रीर अपने रूम कतरनेहरुके साथे सबौल है तैसा उसने श्रीरा मुनह न बेला। उसकी दीनताईए- 33 में उसका न्याय नहीं होने पाया श्रीर उसके समयके केल्गोंका बर्नैं कैन करेगा कोंकि उसका प्राण पृथ्वीसे उठाया गया। इसपर नपुंसकने फिलिपसे कहा में 34 ज्ञापसे विन्दी करता हूं भविष्यद्वद्वा यह जात किसके विषयमें कहता है अपनी विषयमें ज्ञाना किसी तृसरे-के विषयमें। तब फिलिपने श्रीरा मुनह खेलके श्रीर 35 धर्मपुस्तकके इस बचनसे आरंभ करके यीशुका सुसमाचार उसका सुनाया। मार्गमें जाते जाते वे किसी पानी- 36 के पास पहुंचे श्रीर नपुंसकने कहा देखिये जल हैं बप-तिसमा लेनेमें मुख कया रोक हैं। [फिलिपने कहा जो 37 ज्ञाप सारे मनसे विश्वास करते हैं ते हैं सक्ता है। उसने उतर दिया में विश्वास करता हूं कियों यीशु इंश्वरका पुच हैं।] तब उसने रथ खड़ा करनेकी जाज्ञा 38 दिए श्रीर वे दोनों फिलिप श्रीर नपुंसक भी जलमें उतरे श्रीर फिलिपने उसका बपतिसमा दिया। जब 39 वे जलमेंसे ऊपर आयेतब परमेश्वरका आत्मा फिलिप-का ले गया श्रीर नपुंसकने उसे फिर नहीं देखा कोंकि वह अपने मार्गपर आनन्द करता हुआ चला गया। परन्तु फिलिप अस्तदे नगरमें पाया गया श्रीर आगे 40 बढ़के जबलों कैसरिया नगरमें न पहुंचा सब नगरोंमें सुसमाचार सुनाता गया।

५ नवां पर्व।

१ दमेशकके बाते हुए शाब्दलका यीशुका दर्शन पाना श्रीर मन बिराना। १०
श्रावलाजिसको चबलों प्रमुखें शिख्रीयें. धमकानेसे श्री धात करनेको सांस फूल रही थी महाया जज्ञेयपासागया.

श्री उससे दर्शन के नगराको सभाश्रेणी नामपर चिर्दिर्यां मांगी इसलिये कि यदि कोई सिलेन का पुरुष का स्त्रियां जो उस प्राण्यको हां ता उन्हें बाँधे हुए यिथुशलोकेको.

ले राधा। परन्तु जाते हुए जब वह दर्शन नीकत पहुँचा तब चर्चाकर स्वयं एक ज्ञपालित उसकी चारों

श्री चमकी। श्री वह भूमिपर गिरा श्री एक शब्द मुआ जो उससे बोला है शावल है शावल तू मुझे कीं

सताता है। उससे कहा है प्रभु तू श्रीन है। प्रभुने कहा में योशु दूौं जिसे तू सताता है पैरापर लात जाना तेरी

लिये कठिन है। उससे कांपित श्री अचार्य इसहास है कहा है प्रभु तू का चाहता है कि में कहां। प्रभुने उससे कहा उद्से पर गरमों जो श्री तुम्हारे कहा जायगा तुम्हे का

करना कठिन है। श्री जे। मनुष्य उसकी संग जाते थे तें चुप खड़े थे कि वे शब्द तो मुनते थे पर विनीको

नहीं देखते थे। तब शावल भूसे उठा परन्तु जब अपने खांसे खाली तब विनीको न देख सका पर वे

उसका हाय भाव उठावे उसे दर्शन करने लगे। श्री वह तीन

दिनलों नहीं देख सकता था श्री न खाता न पीता था।

दर्शन करनेसे अनन्याय नाम एक शिख्र था श्री धमकुले
दर्शनमें उससे कहा है अननियाह . उसने कहा है प्रभु देखिये मैं हूँ । तब प्रभुने उससे कहा उठके उस गलीमें १२ जा सीधी कहावती है जा श्रीर यिहूदा के घर में शाबल नाम तारस नगर के एक मनुष्यको टूटा की प्रके देख वह प्रार्थित करता है । श्रीर उसने दर्शनमें यह देखा है १२ कि अननियाह नाम एक मनुष्यने भीतर जाके उसपर हाथ रखा कि वह दूषित पावे । अननियाहने उत्तर दिया १३ कि है प्रभु मैंने बहुतसे इस मनुष्यके विषयमें सुना है कि उसने यिहूदलीमें तेरे पारबच लेनांसे कितनी बुराई फैली है । श्रीर यहां उसका तेरे नामको सब १४ प्रार्थित करनेहरारंको बांधनेका प्रधान ताजकांकी श्रीरसे आधिकार है । प्रभुने उससे कहा चला जा कीकांकि वह १५ अन्यदेशियों श्रीर राजाः श्रीर इसाहिलके सत्तानेंको शाने मेरा नाम पहुँचानेको मेरा एक चुना हुआ पाँच है । कीकांकि में उसे बतावूंगा कि मेरे नामको लिये १६ उसका बैला बड़ा दुःख उठाना होगा ।

तब अननियाहने जाके उस घरमें प्रवेश किया श्रीर १७ उसपर हाथ रखके कहा है भाई शाबल प्रभुने आत्म योजने जिसने उस मार्गमें जिससे तू झाता था तुम जाके दर्शन दिया मुखे भेजा है इसलिये कि तू दूषित पावे श्रीर पावित्र झातसाते परिपूर्ण होवे । श्रीर तुरंत उसकी चां- १८ खांसे डिलकसे गिर पड़े श्रीर वह तुरंत देखने लगा श्रीर उठके बपतिसमा किया श्रीर भेजन करके बल पाया ।

तब शाबल कीतने दिन दम्भसकमें गियीको संग था । १५ श्रीर वह तुरंत समाहरमें गीदुस्की कथा सुनाने लगा २०
21 कितना इश्वरका पुरा है। श्रीर तब सुननेवाली बिनमित हो कहने लगे क्या यह वह नहीं है। जिसने यिहूदीलिममें इस नामकी प्रार्थना करनेवालींको नाश किया श्रीर यहां इसीलिये भाया था कि उन्हें बांधे हुए प्रधान याजकें के
22 झागे पहुँचावे। परन्तु शावल श्रीर भी ठूड़ हेता गया श्रीर यही सीगू है। इस वातका प्रमाण देखे दमेयकें में
23 रहनेवाले यिहूदीयोंको व्याकुल किया। जब बहुत दिन
भीत गये तब यिहूदीयोंने उसे मार डालनेका आपसमें
24 विचार किया। परन्तु उनकी कुम्भकर्णा शावलको जान
पढ़ी। वे उसे मार डालनेका रात श्रीर दिन फाटकेंपर
25 भरा भी देते थे। परन्तु शिष्योंने रातकें उसे लेके
टोकरोंमें लटकाके भीतपरते उतार दिया।
26 जब शावल यिहूदीलिममें पहुँचा तब वह शिष्योंसे
मिल जाने चाहता था। श्रीर वे सब उससे हरते थे क्योंकि
27 वे उसके शिष्य होनेकी प्रतीति नहीं करते थे। परन्तु
बयँका उसे ले करते प्ररितियाँ पास लाया। श्रीर उससे
कह दिया कि उसने क्योंकर मार्गमें प्रभुकी देखा था। श्रीर
प्रभु उससे बोला था। श्रीर क्योंकर उसने दमेयकें में यीशु-
28 के नामसे खैलके बात किंगई थी। तब वह यिहूदीलिम-
में उनके संग भाया जाया करने लगा। श्रीर प्रभु यीशु-
29 के नामसे खैलके बात करने लगा। उसने यूनानियों
भाया बालनेहारोंसे भी क्षया श्रीर बिवाद किया पर वे
30 उसे मार डालनेका यह करने लगे। यह जानकी भाई
ले। उसे कैसरियांमें लाये श्रीर तारसको श्रीर मेजा।
31 सा सारी यिहूदिया श्रीर गालिल श्रीर जीमोरानें
मंडलियोंका चैन होता था चैर वे सुघर जाती थीं चैर प्रभुके भयमें चैर पविच ज्ञातमाको शांतिमें चलती थीं चैर बढ़ जाती थीं। तब पितार सब पविच लगिमें ३२ फिरते हुए उन्हें चारा पास भी ज्ञाया जो लुटा नगरमें बास करते थे। वहाँ उसने ऐनिय नाम एक मनुष्यको चारा ३३ जो अंग्रेजी था चैर चार बरसमें खाटपर पड़ा हुआ था। पितारने उससे कहा है ऐनिय यीशु ख्रिष्टु तुम्हें ३४ चंगा करता है उठ चैर चारा बिच्छिन्ना सुधार। तब वह तुरन्त उठा। चैर लुटा चैर शारानकी सब ३५ निवासियोंने उसे देखा चैर वे प्रभुके चैर फिरे।

याफी नगरमें तबीथा अधीत दक्षा नाम एक शिष्या ३६ थी। वह सुकम्म में चैर दानांसे जो वह करती थी पूरी थी। उन दिनामें वह रागी हुई चैर मर गई। चैर ३० उन्हें उसे नहलाके उपरीटी कैटाकरी में रखा। चैर ३८ इसलिये कि लुटा याफीको निकट था शिष्याने यह सुनके कि पितार वहाँ हैं दो मनुष्योंक उस पास भेजके बिन्ती किंदे कि हमारे पास ज्ञानमें विभंग न कीजिये। तब ३५ पितार उठके उनके संग गया चैर जब वह पहुंचा तब वे उसे उस उपरीटी कैटाकरीमें ले गये चैर सब विधवाएं रोती हुईं चैर जो कुरते चैर वस्त्र दक्षा उनके संग हीं। ते हुए बनाती थी उन्हें दिखाती हुईं उस पास लड़ी हुईं। परन्तु पितारने सभीके बाहर निकाला चैर पुरने टेकके ४० प्रार्थना किंदे चैर लेखकी चैर फिरके कहा है तबीथा उठ। तब उसने ज्ञानी जांबं कोली चैर पितारकी देखके उठ बैठी। उसने हाथ देखि उसकी उठाया चैर पविच ४१
लेग्यां शैर विध्वाशेंगे बुज़के उसे जीवती दिखाई।
82 यह बात सारे याफोंश में जान पड़ी शैर बहुत लेग्यांगे।
83 प्रमुख विश्वास किया। शैर पितार याफोंश शिमोन
नाम किसी चमारके यहां बहुत दिन रहा।

10 दस्सवां पश्चि।

1 स्थानितकी बादाने कर्णीलियक बुज़का भेजना। 2 पितारका एक
दर्पण पाना। 17 कर्णीलियके दूंतंके संग पितारकी वातवीत शैर पितारका
बनके वायक बादाना। 24 कर्णीलियके पितारकी वातवीत। 38 पितारका सुवमा-
शार प्रवाच करना। 48 कर्णीलिय शैर उक्ने समस्तवं प्रवीच शास्त्रका उतरना
शैर उकना जातायाला लेना।

1 कैसे प्रियामें कर्णीलिय नाम एक मनुष्य था जे इत-
2 लीय नाम प्रलटनका एक शतपति था। वह भर जन था
शैर अपने सारे घराने समेत ईश्वरसे हरता था शैर
लेग्यांगे बहुत दान देता था शैर नित्य ईश्वरसे प्रार्थना
करता था। उसने दिनके तीसरे पहरके निकट दर्शन-
में प्रत्यक्ष देखा कि ईश्वरका एक दूत उस पास भीतर
3 आया शैर उससे बोला था कर्णीलिय। उसने उसकी
शैर ताकके शैर भयमान होके कहा है प्रभु का हा है
उसने उससे कहा तेरी प्रार्थनाओं शैर तेरे दान स्मरण-
5 लैयर ईश्वरके ज्ञान पहुंचि हैं। शैर शब मनुष्योंके
याफो नगर भेजके शिमोनकी जा पितार कहावता है
ई बुला। वह शिमोन नाम किसी चमारके यहां जिसका
घर नस्तके तीरपर है पाहुन है। जे कुछ तुम्ही करना
6 चुकत है सा बही तुभसे कहेगा। जब वह दूत जे
कर्णीलियसे वात करता था चला गया तब उसने
अपने सेवकांके देखी शैर जे उसके यहां लगे रहते
चे उनमें से एक भक्त योद्धा को बुलाया । शीर्ष उन्हें बोले 8 सब बातें सुनाए उन्हें यादें की में ।

tूसरे दिन ज्योंही वे मार्ग में चलते वे शीर्ष नगरको निकट पहुंचे लिए वे पितार के पहरके निकट प्राप्त न करने के कोठे पर चढ़ा । तब वह बहुत भस्मु हुशा शीर्ष 10 कुछ खाने चाहता था पर जिस समय वे पीयार करते वे वह बेसुध हो गया । शीर्ष उसने स्वर्ग को बुले शीर्ष 11 बड़ी चट्टरकी नाड़ी किसी पाचको चार केने से बाढ़े हुए शीर्ष पृथिवीके शीर्ष लटकाये हुए अपनी शीर्ष उतरते देखा । उसमें पृथिवीके सब चीयारे शीर्ष बन पाशु 12 शीर्ष रंगनेहारि जन्तू शीर्ष काकाशको पंड्रो में । शीर्ष एक 13 शब्द उस पास पहुँचा कि हे पितार उठ मार शीर्ष खा ।

पितारने कहा है प्रभु ऐसा न होवे कोई मैंने कभी कोई 14 जयपीत जयबा चशुद बस्तु नाहीं खाई । शीर्ष शब्द 15 फिर दूसरी वेर उस पास पहुँचा कि जो कुछ इंशवरने शुद्ध किया है उसको तू चशुद मत कह । यह तीन 16 बार हुशा तब वह पात फिर स्वर्गपर उठा लिया गया ।

जिस समय पितार अपने मनमें दुबधा करता था कि 17 यह दर्शन हो जा मैंने देखा है क्या है देखा वे मनुष्य जो कर्मोऽलियक हो शीर्षसे मेंजे गये वे मिशननके परका ठिकाना पा करके देवदीपर खड़े हुए । शीर्ष पुजारकं पूछते थे क्या 18 मिशन शीर्ष पितार कहावता है यहाँ पाहूँ है । पितार 18 उस दर्शनके विषयमें सोचताही था कि बातमाने उससे कहा देख तीन मनुष्य तूके हूँ दुंदते हैं । पर तू उठके उतरा 20 जा शीर्ष उनके संग वेस्करे चला जा कोई मैंने उन्हें
29 भेजा है। तब पिताने उन मनुष्योंके पास जो कर्षिलिय- 
की घररसे उस पास भेजे गये थे उतरकर कहा देखो 
जिसे तुम हुंदते हो सा मैं हूँ तुम किस कारणसे चाहे 
28 हा। वे बाले कर्षिलिय शतपति जो धम्मी मनुष्य घरर 
ईश्वरसे डरनेहारा घरर सारे यिहूदी लोगोंमें सुख्यात 
है उसको एक पवित्र दूसरे जाना दिये गई कि खाप- 
27 का अपने घरमें बुलाके घरर से बातरे सुने। तब पितर- 
ने उन्हें भीतर बुलाके उनकी पहुँच किए घरर दूसरे 
दिन वह उनकी संग गया घरर यापते भाइयोंमें 
कितने उसके साथ हो लिये।

28 दूसरे दिन उन्हें घरर नैसरियामें प्रवेश किया घरर 
कर्षिलिय अपने कुरुंबों घरर प्रिय मिथुनोंको एकत्रे बुलाके 
25 उनकी बार बताहता था। जब पितर भीतर जाता था 
तब कर्षिलिय उससे जा मिला घरर पांवों पड़े प्रणाम 
किया। परन्तु पितरने उसकी वजद कहा छड़ा हो मैं 
20 खाप भी मनुष्य हूँ। घरर वह उसके संग बातरे बनता 
26 हुआ भीतर गया घरर बहुत लोगोंको एकत्रे पाया। घरर 
उनसे कहा तुम जानते हो कि अन्य देशोंकी संगती करना 
अथवा उसके यहां जाना यिहूदी मनुष्योंका वर्जित है 
परन्तु ईश्वरने मुक्ते बताया है जि तू किसी मनुष्योंका 
25 खापविच अथवा अणुशु तल कह। इससे में जो 
बुलाया गया तो इसके बिन्दु कुछ न कहकर चला 
खाया सा मैं पृथ्वी हूँ कि तुम्हारे किस बातके लिये 
30 सफे बुलाया है। कर्षिलियने कहा चार दिन रूपए कि 
मैं इस घड़ीलों दपवास करता था घरर तीसरे यहर
अपने घर में प्रार्थना करता था कि देखो ऐसा पुष्प चमक-ता बस्त पाहिने हुए मेरे श्यागे खड़ा हुआ। श्रीर बोला यह है कर्मालिक तेरी प्रार्थना सुनी गई है श्रीर तेरे दान ईश्वरके श्याम समरा किये गये हैं। इसपर याफो तेरा नगर भेजके शिष्णवका जो पिता कहावता है बुला। वह समुद्रके तीरपर शिष्णव चमकके घर में पाहुन है। वह श्यामके तुमसे बात करेगा। तब मैंने सुरूत श्याप- ईश्वर के पास भेजा श्रीर श्यापने श्याम किया जो श्याम हैं। सा श्रीर ईश्वरके जो कुछ श्यापका श्या दिने हैं तो सुननेका हम सब यहां ईश्वरके सामने हैं।

तब पितारे मुंह में खोलके कहा मुझे सचसुच बुंद पड़- ईश्वर है कि ईश्वर मुंह में देखा विचार करनेहरा नहीं है। परन्तु हर एक देखके लागेमें जो उससे डरता है श्रीर ईश्वर में काम्य करता है सा उससे यह निया पिया जाता है।

उसने वह बचन तुमसमके पास भेजा है जो उससे इसा- ईश्वर एक सातारोंके पास भेजा श्रीर यीशु यीशुके द्वारसे जो समेंका मुझे है सांचितका सुसमाचार सुनाया। तुम वह ईश्वर बात जानते हैं। जो उस बपतिस्माके पीछे जिसका योधनिये उपदेश किया गालीसे आरंभ कर सारे यिहू- दियामें पैल गई। श्रीर नामसारत नगरके यीशुओंविषय- ईश्वर में कोणके ईश्वरके उसके पवित्र श्रीर काम्य- से आभिप्रेय निया श्रीर वह भलाई करता श्रीर समेंका जो श्रीतालसे परे जातीये चंगा करता फिरा क्या की ईश्वर उसके संग था। श्रीर हम उन सब कामेंके साथी हैं। जो ईश्वर उसने यिहूदियांके देशमें श्रीर यिहूडीशालीमें भी किये
80 जिसे लोगोंने आठपर करकारे मार हां। उसको
ईश्वरने तीसरे दिन जिला उठाया श्रीर उसको प्रगट
81 होने दिया। सब लोगोंके श्राग नहीं परन्तु साधियोंके
श्रागे जिन्हें ईश्वरने पहिले से ठहराया था, यथायत होमांके
श्रागे जिन्हें उसके मृतकोंसे जो उठने लगे उसके
82 संग खाया साहिर खाया। श्रीर उसने होमाङ्के श्राहा दिइए
कि लोगोंकी उपदेश श्रीर साहिर देसी कि वही है जिस-
की ईश्वरने जीवतों साहिर मृतकों का न्याय ठहराया है।
83 उसपर सारे भविष्यद्वाता साहिर देते हैं कि जीविकाइ उसपर
बिश्वास करे। उसके नामके द्वारा पापमोचन पावेगा।
84 पितार यह बात बहताही था कि पवित्र झात्मा
85 बचनके सब सुननेहरायरपर पड़ा। श्रीर जातना किये
हुए बिश्वासी जितने पितरके संग श्राये थे निर्मित हुए
कि अन्यदेशियंपर भी पवित्र झात्माका दान चंडेला
86 गया है। कियांकि उन्हाँने उन्हें झानेक बोलियाँ बोलते
80 श्रीर ईश्वरकी महिमा करते सुना। इसपर पितर-
के कहा कि कोई जलको रेखा सकता है जिस
लोगोंके जिन्हें हमारी नाइं पवित्र झात्मा पाया
88 है बप्तिस्मा न दिया जाये। श्रीर उसने श्राहा दिइए
कि उन्हें प्रभूके नामसे बप्तिस्मा दिया जाये। तब
उन्हाँने उससे कई एक दिन ठहर जानेकी बिन्ती किये।

91 एम्यारहवा पावन।
1 अन्यदेशियंपका सुवासमाचार सुनानेकें विश्वयं पितरका वसर। 95 शान्तियांमें युक्-
माराके प्रवार कि बाबाको बर्बन। 12 नैयतिन्द्र नैयरके समके प्रकाशकांको काम।
1 जि प्ररित श्रीर भाई लोग विहूरदियामें भे उन्हाँने
सुना कि अन्यदेशियंपका भी ईश्वरका बचन यहा किया

Xarized by Google
है। श्रीर जब पितर यिथ्यशलीमको गया तब खतना किये हुए लोग उससे बिबाद खराने लगे। श्रीर बाले तूने खत-नाहीन किया यहां जाके उनके संग ख़ाया। तब पितर ने श्रांवं कर एक श्रीरसे उन्हें कह सुनाया। कि मैं यानी नगरमें प्रार्थना करता था श्रीर बेरुध होके एक दश्नेन अश्रुत स्वर्गपरसे चार श्रांवंसे लटकाई हुई बड़ी चट्टरको नाइ किसी पाषको उतरते देखा श्रीर वह मेरे पासलीं ख़ाया। मैंने उसकी श्रीर ताक्को देखा लिया श्रीर प्रथिवीक से चापणयों मेरे प्रशिक्षण श्रीर को बन पशुओं श्रीर रंगिनहारे जन्तुएँको श्रीर शाकाशको पंडितयाँको देखा। श्रीर एक श्रद्धु नुमा जी मुखःसे बोला है पितर उठ भार श्रीर खा। मैंने बहा है प्रसु ऐसा न होवे क्योंकि बारे ज्ञानविच ज्ञायता श्रद्धु वस्तु मेरे मुहमें कभी नहीं गई। परन्तु श्रद्धु दूसरी बेर स्वर्गसे मुखः उत्तर दिया कि जो कुछ ईश्वरने श्रद्धु किया है उसको तू श्रद्धु मत कह। यह तीन भार हुई। तब सब कुछ फिर दरगाह पर बोला गया। श्रीर देखा तूना तीन मनुष्य जो सैनिकयाँसे मेरे पास 91 भेजे गये थे जिस घरमें मैं था उस घरपर खा पहुँचे। तब शहामके मुखःसे उनके संग बेहतरीन चले जानेको 92 कहा श्रीर ये छ। भाद्रै भी मेरे संग गये श्रीर हमने उस मनुष्यको घरमें प्रवेश किया। श्रीर उसने हमें बताया कि 93 उसने कींकर अपने घरमें एक दूसरों को बड़े हुए देखा था। जो उससे बोला कि मनुष्यको यानी नगर भेजने शिमेनको जो पितर कहावता है बुला। वह तुम्हें 94 बारें कहेगा जिनके द्वारा तू श्रीर तेरा सारा घराना चाहे!
प्रृतिता क्रिया।

19 पावे। जब मैं बात करने लगा तब पवित्र ज्ञात्मा जिन्हें रोपते भ्रांमण हमें पढ़ा उसी रोपते संन्यासां उन्हें रखहै। न भी पढ़ा। तब मैं भुजुक बचन स्मरण किया के उसने जिस हेतु गोष्ठी स्थान की जिससे बुद्धित्व प्रदान दिया परन्तु तुम्हें पवित्र ज्ञात्मा बुद्धित्व प्रदान दिया जायगा। सौ जब कि इश्वरने प्रभु यीशु श्रीपृतियों विश्वास करनेहरू को जैसे हमें हेतु उन्हें भी एकसां दान दिया तातै भ्रांमण या कि इश्वरने रोका सकता। वे यह सुनके चुप हुए श्रेयर यह कहके इश्वरने स्तुति करने लगे के तब तो इश्वरने ज्ञात्मा उन्हें को पहचानाप्रेम दान किया है कि वे जीवन।

20 निष्कामके कारण जो श्रीपृति हुआ तिसके हेतु हेतु। लोग तितर बितर हुए वे उनहें नैनोकिया देश श्रीर कृप्त राम पृति श्रीर ज्ञात्मा नगरलों में मिला हुए किसी श्रीर अन्य नहीं केवल यहिंदियों बचन सुनाया। परन्तु उन्हें निश्चित कितने कपी श्रीर कुरीणीय मनुष्य थे जो ज्ञात्मा प्रतिक बालक यूनानीयद्वीप अन्य नहीं। सुनामाचार सुनाने लगे। श्रीर प्रभुके हाथ उनके संग श्रीर बहुत लोग विश्वास करके प्रभुकी श्रीर फिरे।

21 तब उनके विराम में वह बात योक्त श्रीरकी मंडलीये खानों में पुहूंची श्रीर उन्हें नन्दवांश भेजा के वह ज्ञात्मा जान। वह जब पुहूंचा श्रीर इश्वरने ज्ञात्मा देखा तब ज्ञानित हुआ श्रीर सेंकों उपदेश दिया कि मनकी ज्ञानिया साहित प्रभुसे मिले 28 रहौ। केवल वह मनुष्य श्रीर पवित्र ज्ञात्मा श्रीर विश्वास से परिपूर्ण था। श्रीर बहुत लोग प्रभुसे
मिल गये। तब बर्ज़े शावलकी हूंड़ने की लिये तारस- २५ का गया। शैर वह उसकी पांके अलीखियामें लाया २६ शैर वे दोनों जन बरस भर मंडलीमें एकदा होते वे शैर बहुत लोगों का उपदेश देते वे शैर शिप्ष लोग तहीले अलीखियामें बीपियान कहलाये।

उन दिनोंमें कई एकभाविस्मदका विश्वास्समसे नामे- २७ बियामें शाये। उनमेंसे शाइवाल नाम एक जनने उठते २८ शात्मकी शिष्यासे बताया कि सारी संसारमें बड़ा श्रावकाल पड़ेगा शैर वह श्रावकाल शैवदिदृश्य कैसरके समयमें पड़ा।

तब शिष्यांने हर एक अपनी अपनी सम्पत्ति अनुसार २५ यहूदियामें रहनेहारी भाइयांकी सेवकाइंदेव लिये कुछ भेजनेका तहराया। शैर उन्होंने यही किया अयोत ३० बर्ज़े शैर शावलके हाय प्राचीनांके पास कुछ भेजा।

१२ सारवाल प्रङ्खः।

१ हैरादका याकूबको बघ करना शैर पितरको बवोर्गायको बालना। २ दूसरका पितरका बुझाना। १२ पितरका मरयमके घरामें जाना। १८ हैरादका पहऱ्य- प्रियोंका बध करवाना। २० हैरादका समर।

उस समय हैराद राजाने मंडलके कई एक जना- १ को दुःख देतेका जनकार हाय बढ़ाये। उसने याजहनले २ भाइ याकूबकी बढ़ुके मार हाला। शैर जब उसने ३ देखा कि यहूदी लोग इससे प्रसन्न होती हैं तब उसने पितरको भी पकड़ा शैर श्रावकी रात्रके पब्लके दिन थे। शैर उसने उसे पकड़के बन्दीगृहमें हाला। शैर ४ चार चार यादातीतें चार पह्रोंमें सौंप दिया कि वे उसकी रखे। शैर उसकी निस्तार पब्लके पीछे लोगों- के बागे निकाल लानिके इच्छा करता था।
५ सो पितर बन्दीगृहमें पहरेमें रहता था परन्तु मनोजी 
ली लगाते उसके लिये इश्वरसे प्रार्थना करती थी।
६ शीर जब हेराद उसे निकाल लानियर था उसी रात 
पितर दो यादाश्रीके बीचमें दो जंजीरोंसे बंधा हुआ 
सेता था। शीर पहलए द्वारके राहे बन्दीगृहकी रक्षा 
करते थे। शीर देखा परमेश्वरका एक दूत एक खडा 
हुआ शीर कौटरमें ज्योति चमकी शीर उसने पितर- 
के पंजरपर हाय मारके उसे जगाके कहा श्रीप उठा। 
१ तब उसकी जंजीरें उसके हाथोंसे गिर पड़ीं। दूसरे 
उससे कहा कमर बांध शीर अपने जुटे पाहिन ले शीर 
उसने चैता किया। तव उससे कहा अपना वस्त्र शीर- 
के भरे पीछे हो ले। शीर वह निकलके उसके पीछे 
चलने लगा शीर नहीं जानता था कि जो दूसरे दिखा 
जाता है। सो सत्य है परन्तु समक्षता था कि में दर्शन 
१० देखता हूं। परन्तु वे पहले शीर दूसरे पहरेमें निकले 
शीर नगरमें जानिके लोहिके फाटकपर पड़ते जो खापसे 
शाय उनके लिये खुल गया। शीर वे निकलके एक गलीके 
अन्तरों वहे शीर तुरन्त दूसरे पितरके पाससे चला 
११ गया। तब पितरका चेत हुआ शीर उसने कहा अब 
में निश्चय जानता हूं कि प्रभुने अपना दूत भेजा है 
शीर मुक्त हेरादके हाथसे शीर सब बातेंसे जिनकी 
शास यिहूदी लेग देखते थे। बढ़ाया है। 
१२ शीर यह जानकी वह योगन जो मायी कहावता है 
तिसकी माता मरियमके परगर श्राया जहां बहुत लोग 
१३ एकत्र हुए प्रार्थना करते थे। जब पितर देवढ़ीके द्वारपर
खरखराया तब रोदा नाम एक दासी चुप चाप सुननेके आई। शद्र गितरका शब्द पहचानके उसने नानन्दके १४ मारी द्वार न खोला परन्तु भीतर दौड़के बताया कि पितर द्वारापर खड़ा है। उन्होंने उससे कहा तू बैराही १५ है परन्तु वह दूढ़तसि बाली कि ऐसाही है। तब उन्हों- ने कहा उसका दूत है। परन्तु पितर खरखराया रहा १६ शद्र बी द्वार खोलके उसे देखके विस्मित हुए। तब १७ उसने हाथसे उन्हें चुप रहनेका सैन किया शद्र उनसे कहा कि प्रभु बौकंकर उसकी बन्दीगृहमें से बाहर लाया था। शद्र बैला यह बारें याकूबसे शद्र भाईयांसे कह दीजिये तब निकलके दूसरे स्थानको गया।

विहान हुए यादुश्रामों बड़ी घबराहर होते लगी १८ कि पितर क्या हुका। जब हैरादने उसे बुंदा शद्र १६ नहीं पाया तब पहलांको जांचके खाजा कियें कि वे बध किये जायं। तब यहूदियासे बैसरियाकी गया शद्र वहां रहा।

हैरादने सेर शद्र सीट्रोनको लोगसे लड़नेका २० मन था परन्तु वे एक चित होके उस पास जाये शद्र बलास्तको जो राजाके शयनस्थानका साध्या था मनाके मिलाप चाहा क्यांकिर राजाके देशसे उनके देशका पालन होता था। शद्र ठहराये हुए दिनमें हैरादने राजबस्त २१ प्रहिनके सिंहसनपर बैठके उन्हांको कथा सुनाई। शद्र २२ लोग पुकार उठे कि ईश्वरका शब्द है मनुष्यका नहीं। तब परमीश्वरके एक दूतने तुरन्त उसको मारा क्यांकिर २३ उसने ईश्वरकी स्तुति न किए शद्र बोिी उसको खा।
२४ गये श्रीर उसने प्राण छोड़ दिया। परन्तु ईश्वरका बचन अधिक अधिक फैलता गया।

२५ जब वशेषा श्रीर शावलने वह सेवकाई पूरी किते थे तब वे योहनको भी जी मारके कहावता था संग लेके यिहुदळीमे से लेटे।

१३ तेरहवां पढ़िँ।

१ बर्म्बा श्रीर पायलका प्राण बान देवोंसें भेजा जाना। ८ उनका सुधमाचार प्रबार करना श्रीर दुमा टोम्बका बाचा करना। १३ उनका पिविदिया देखि बनाखिया नगरमे पदहुना और पायलका उपदेश। ५२ बहुत लेरोका रख उपदेशको ग्याब करना। ४४ पिविदिया किरोध करना।

१ अन्ततिकियाण्य्की मंडलीमे लितने महिष्यदुर्दुका श्रीर उपदेशक थे अर्थात वशेषा श्रीर शिमियहन जो निगर कहावता है श्रीर कुरीनोख लक्षिय श्रीर चायाबड़ी राजा

२ हेरोटका दूधभाई मनहेम श्रीर शावल। जिस समय वे उपवास सहित प्रभुकी सेवा करते थे पवित्र झाटमाने बहा मिने बर्म्बा श्रीर शावलको जिस कामके लिये बुनाया है उस कामके निमित उन्हें मरे लिये चलग ३ करो। तब उन्होंने उपवास श्रीर प्रार्थना करके श्रीर उनपर हाथ रखके उन्हें बिदा किया।

४ सो वे पवित्र झाटमाने में हुए सिलुकिया नगरको

५ गये श्रीर वहांसे जहाजपर कुप्रस टापूका चले। श्रीर सालामी नगरमे पहुँचके उन्होंने ईश्वरका बचन यिहूदियोंकी समाग्रीमे प्रचार किया श्रीर योहन भी सेवक होके उनके संग था। श्रीर उन्होंने उस टापूकीबिचे पाफो नगरलां पहुँचके एक टानिया पाया जो कूट महिष्यदुर्दुका

६ श्रीर यिहूदीया था जिसका नाम बरयीशु था। वह सान्ति
पावल प्रधानके संग था जो बुद्धिमान पुरुष था । उसने बर्षेंवा शौर शावलके अपने पास बुलाके ईश्वरके बचन सुनने चाहा । परन्तु दुलुमा टैन्हा कि उसके नामका ८ यही धर्म है उनका सासा करके प्रधानका बिवशवकी शौरसे बहकाने चाहता था । तब शावल अधीन पावल- ८ ने पवित्र आत्मासे परिपूर्ण होके शौर उसकी शौर ताकिये कहा । हे सारे कपट शौर सब कुछ जाने भरे हुए १० शैतानके पुच सकल धर्मके बेरी करो तू धर्मके साथे मार्गको टेढ़ा करना तो छूटा गा । अब देख प्रभुका हाथ ११ तुषारपर है शौर तू जिनके समयके अंधा होगा शौर सूर्यको न देखेगा । तून्ता युधसार शौर अंधकार उसपर पड़ा शौर वह इतने उधर रटायने लगा कि लाग उसका हाथ पकड़ीं। तब प्रधानने जो हुआ था तो देखको प्रभुके १२ उपदेशसे अचरण्मित हो बिब्ववास किया ।

पावल शौर उसके संसी पापासे जहाज खेलके पंडु- १३ लिया देशके पगो नगरमें जाये परन्तु पीड़न उन्हें खूब यिन्दुस्थलीमको लौट गया । शौर पगासे भागे बढ़के वे १४ रिसिदिया देशके अन्तर्विया नगरमें पहुँचे शौर बिवशव- के दिन सभके घरमें प्रवेश करके बैठ गये । शौर १५ व्यवस्था शौर भविष्यद्वकारङ्को पुस्तकमें खट्टे जानेके पीछे सभके अध्यक्षाने उनके पास कहना भेजा कि हे भाइया यदि लोगांके लिये उपदेशकी कोई बात जाप लोगांके पास होय तो कहिये । तब पावलने खड़ा होके शौर १६ हाथसे सैन करके कहा हे इसायेली लोगा शौर ईश्वरसे दरनेहरा सुनो । इन इसायेली लोगांके ईश्वरसे हमारे १७
पितारंकों को चुन लिया शिरा इन लोगों के मिसर देशमें परदेशी होते हुए उन्हें झंझ पद दिया शिरा बलवान
18 भुजासे उस देशमें निकाल लिया। शिरा उसने चालीस
15 एक बरस जंगलमें उनका निम्बाह किया। शिरा कनान
देशमें सात राज्यके लोगों का नाश करके उनका देश
20 चिदियां हलवाके उनका बांट दिया। इसके पीछे उसने
साधे चार सी बरसके अटकल शमुएल भविष्यद्वेषकों
21 उन्हें न्याय करनेहारे दिये। उस समयसे उन्हें राजा
चाहा शिरा इंश्वरने चालीस बरसलों बिनामीनको कुल-
के एक मनुष्य सर्वाधिक कोशमे पुन शाखलको उन्हें दिया।
22 शिरा उसको ऋषय करके उसने उन्होंके लिये दाजउको
राजा होनेको उठाया जिसके विषयमें उसने साधी देखके
कहा में यिश्वका पुन दाजउ अपने मनके अनुसार
एक मनुष्य पाया है जो मेरी सारी इंश्वका पूरी करेगा।
23 इसके बंशमंसे इंश्वरने प्रतिज्ञके अनुसार इन्हिनके
24 लिये एक चाककर्ता अश्वात्मायुशको उठाया। पर उसके
आनेके आगे यहने सब इनिन्हें लोगोंका प्रश्नमात्रथ-
25 की बपतिसमाका उपदेश दिया। शिरा यहन जब अपनी
होड़ पूरी करता था तब बोला तुम क्या सम्बन्ध है
में कीन हूँ। में वह नहीं हूँ परन्तु देखा मेरे पीछे एक
श्वरता है जिसके पांचोंकी जूती में खालने योग्य नहीं हूँ।
26 है भाइयो तुम जो इबाहीमके बंशके सन्तान है शिरा
तुम्हें जो इंश्वरसे दर्नेहारे हो तुम्हारे पास इस चारण-
20 को कथा भेजी गई है। क्योंकि यिश्वलिमके निवासी-
गंगे शिरा उनके प्रधानतै यिशुको न पहचानके उसका
विचार करनें में भविष्यद्वाणीकरण का बातं भी जा हर एक विश्वासयार चढ़ी जाती हैं पूरी कित्ते। शीर उन्होंने लड़के चौथे दौर उसमें न पाया तैयार पिलाती बिनती किंदी कि वह घाट किया जाय। शीर जब उन्होंने उसके चौथे विश्वयार में लिखी हुई सब बातं पूरी कित्ते थीं तब उन्हें काठपर्से उतराकर बाबर में रखा। परन्तु इंश्वरने उसे मूढ़ अरमांसे उठाया। शीर उसने बहुत दिन उन्होंने जो उसके संग गालीलसे विचारशाली में आये थे दर्शन दिया शीर वे लोगोंके पास उसकी साखी हैं। हम उस प्रतिज्ञा- इंश्वर का जो फिर रंग तो होते मुस्माचार सुनाते हैं। कि इंश्वरने यीशुकी उठाने में यह प्रतिज्ञा उनके सत्ताने- इंश्वर के अर्थात हमें लिये पूरी कित्ते हैं जैसा दूसरे गीतां भी लिखा है कि तू मेरा पुर्ण है मैंने शाजही तुम्हें जन्म दिया है। शीर उसने जो उसके मृत्युकोंमें उठाया इंश्वर वह कभी सड़ न जायगा। इसलिये यूं कहा हैं। कि मैंने दाजूदपर जो अचल कृपा कित्ते सो तुम्हें कहरगा। इसलिये उसने दूसरे एक गीतां भी कहा हैं। कि तू अपने पवित्र जनको सड़ने न देगा। दाजूद तो इंश्वरकी इच्छासे अपने समय लोगोंकी सेवा करके तो गया शीर अपने पितारोंमें लिला शीर नाड़ गया। परन्तु जिसकी। इंश्वरने जिला उठाया वह नहीं सड़ गया। इसलिये है भारतीय जाना कि इसीसे द्वारा पाप- इंश्वर माचनको कथा तुम्हें सुनाई जाती है। शीर इसीके हैं हेतुसे हर एक बिश्वासी जनसब बातंसे निर्देशतहरया जाता है जिनसे तुम मृत्यु की ब्यवस्थाके हेतुसे निर्देश।
80 नहीं ठहर सकते थे। इसलिये छैकस रहे कि जी भविष्यद्वारा जीवित के पुस्तकमें कहा गया है से तुमपर न
81 पड़े। कि है निन्दकों देखा। चैत्र श्रमित हो। चैत्र
लेना हो जाता। क्योंकि मैं तुम्हारे दिनाँमें एक काम
करता हूं ऐसा काम कि यदि कोई तुमसे उसका वर्णन
बारे तो तुम कभी प्रतीति न करगी।
82 जब यहूदी लोग सभाके घरमें लिखाहै थे तब
ज्ञानदेशियोंने बिन्नी किंदु कि यह बातें छाली विश्वाम-
83 चार हमसे कही जायें। चैत्र जब सभा उठ गई तब
यिहूदियोंमें चैत्र भक्तिमान यिहूदीय मतावलबियोंमें
महत्त्व लोग पावल चैत्र वर्णनके पीछे है। लिये चैत्र
उन्हें उनसे बात करके उन्हें समझाया कि इश्वरके
अनुयोग बने रहे।
84 छाली विश्वामवार, नगरके प्राय सब लोग इश्वरका
85 विचार सुननेका एक हाई चायें। परन्तु यिहूदी लोग भोड़-
का देखके डाहसे भर गये चैत्र बिबाद चैत्र निन्दा करते
86 हुए पावलकी बातें विद्वंद्व बालने लगे। तब पावल
चैत्र वर्णनके साहस करके कहा व्यवहार था कि इश्वर-
का बचन पहले तुम्हांसे कहा जाय परन्तु जब कि तुम
उसे दूर करते है। चैत्र अपनेतो आनत जीवनके अयोग्य
घराते है। देखे हम ज्ञानदेशियोंकी चैत्र फरते हैं।
87 क्योंकि परमेश्वरने हमें यूंही आज्ञा दी है कि मेंने तुमहे
ज्ञानदेशियोंकी व्याप्ति ठहराई है कि तू पृथिवीके अस्तलों
88 चामकती हाथे। तब ज्ञानदेशी लोग जी सुनते थे ज्ञान-
निर्दित हुए चैत्र प्रभुके बचनकी बढ़ाई करते लगे चैत्र
जितने लोग ज्ञानत जीवनके लिये ठहराये गये थे उन्होंने विश्वास किया। तब प्रभुका बचन उस सारी देश- ४५ में पैलने लगा। परन्तु य्हूदियांने भक्तिमती श्रीर कुल- ५० वन्ती स्त्रियांकी श्रीर नगरके बहे लोगांकी। उसकाया श्रीर पावल श्रीर बर्थवापर उपद्रव करवावे उन्होंने अपने सिवानांके से निकाल दिया। तब वे उनके बिस्तर अपने ५१ पांडियांकी धूल खाड़के इमामिया नगरमें जाये। श्रीर ५२ शिखर लोग ज्ञानन्दसे श्रीर पविच जात्मासे पूर्ण हुए।

१४ चौदहवां पढ़े।

इमामियांमें उन्होंने य्हूदियांके सभाके घरामें एक संग प्रवेश किया श्रीर ऐसी बातें बिखरी कि य्हूदियांके श्रीर युनानीयांमें भी बहुत लोगांने विश्वास किया। परन्तु ता माननेहारे य्हूदियांने अन्यदेशियोंके मन भाष्यांके बिस्तर उसकाये श्रीर बुरे कर दिये। सा उन्होंने प्रभुके भरोसे जी अपने अनुग्रहके बचनपर साही देता था श्रीर उनके हाथांसे चिन्ह श्रीर अतुल काम करवावा था साहसी बात करते हुए बहुत दिन बिताये। श्रीर नगरके लोग विभिन्न हुए श्रीर कितने ते य्हूदिये- यांकी साथ श्रीर कितने प्रेरितांकी साथ थे। परन्तु जब अन्यदेशियों श्रीर य्हूदियांने भी अपने प्रधानांके संग उनकी दुराला करवे श्रीर उन्हें पत्थरवाह करनेके हठ नहीं किया, तब वे जान गये श्रीर लुकास्रोगिया देशके लुस्ता
स्वामी नगरों में स्वामी आसपासके देशमें भाग गये।

० स्वामी बहां सुसमाचार प्रचार करने लगे।

१ लुस्तामे एक मनुष्य पांचोंका निबंद बैठा था जो भापनी माताके गर्वहिसे लंगड़ा था स्वामी कभी नहीं

२ बला था। वह पाणलका बात करते सुनता था स्वामी उसने उसकी स्वामी ताकके देखा कि इसका भंगा निकले

३ जानका बिश्ववास है। स्वामी बड़े शब्दसे कहा अपने पां-बोंपर सीधा खड़ा हो। तब वह कूदने स्वामी फिरने लगा।

४ पाणलने जो किया था उसे शब्दके लोगाने लुकाके स्वामीनय भाषामे ऊंचे शब्दसे कहा देवगातमनुष्यांके

५ समान होके हमारे पास उतर आये हैं। स्वामी उन्हाने बर्शाका जूपितर स्वामी पाणलका हमी कहा की विभिन्न

६ वह बात करनेमें मुख्य था। स्वामी जूपितर जो उनके नगरके साम्हने था उसका याजक बैलिका स्वामी की दोनांके

७ हारेने फारकांपर लाके लोगांके अंग बलिदान किया

८ चाहता था। परन्तु प्रेतिगते जयीत बर्शाका स्वामी

पाणलने यह सुनके अपने कपड़े फाड़े स्वामी लोगांकी

३ स्वामी लपक गये स्वामी पुकारके बोले। हे मनुष्यो यह बोल। भापे समान दुःख सुख भागी मनुष्य हैं स्वामी तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं कि तुम इन व्यर्थ विश्वयोंसे जीवते दृशबाटी स्वामी फिरा

३ हिसने स्वरने स्वामी पृथ्वीके समुद्र स्वामी सब कूद जा

४ तनमें है बनाया। उसने गीती हुई गीतयोंमें सब देशाँके लोगांके अपने अपने मार्गमें चलने दिया।

५ तैयार उसने अपनेका बिना साक्षी नहीं रख छोड़ा है
बिन्द वह मलाईः किया करता श्रीर श्राकाशे बर्षा श्रीर फलवत्त चुःतु देऊने हमांकै मनकै भाजन श्रीर श्रानंदसे तृप्त किया करता है। यह कहनेसे उन्हांने लोगेंको १८ कठिनातासे रोका कि वे उनके श्रागे वाल्डान न करें।

परन्तु जितने यहूदीयांने श्रातिकिया श्रीर इत्या- १५ नियासे ज्ञाने लोगेंको मनाया श्रीर पावलेण पत्थर-बाह्य किया श्रीर यह समझके कि वह मर गया है उसे नगरके बाहर घसीट ले गये। परन्तु जब श्रिप्पे लोग २० वस पास घिरे श्राये तब उसने उठके नगरमें व्रजेश किया श्रीर तूसरे दिन बर्षेकांके संग दर्जनको गया।

जब उन्हांने उस नगरके लोगेंको मुस्माचार सुनाया २१ श्रीर बहुतेंको श्रिप्पे किया था तब वे लुस्ता श्रीर इत्यानिया श्रीर श्रातिकियांको लोटे। श्रीर यह उपदेश २२ बार रहे कि विवेकाः वे रहें श्रीर कि हमें बड़े कृप्षेंसे इंतचरके राज्यमें व्रजेश करना होगा। श्रिप्पे ज्ञाने नमको स्विर करते गये। श्रीर हर एक मंडलीमें प्राची- २३ ज्ञाने उपनर दूरके उन्हांने उपवास सहित प्राचीन आरके उन्हें प्रभुपके हाथ सांपा जिसपर उन्हांने विवेकाः किया था। श्रीर पिस्तिदियाते होके वे पंप्लुलियांमें ज्ञाने। २४ श्रीर पर्गरमें बचन सुनाके ज्ञातालिया नगरके गये। २५ श्रीर बहांसे वे जहाँ जहाँ श्रातिकियांके चले बहांसे वे २६ उस कामके लिये जो उन्हांने पुरा किया था इंतचरके धनुयचरके सज्जे गये थे। वहां पहंचके श्रीर मंडलीको २० एकटू आरके उन्हांने बताया कि इंतचरके उन्हांंके साथ बैसे वड़े काम जिये थे श्रीर कि उसने ज्ञातेश्यांको
२८ लिये विश्वासक्रा द्वार खोला था। चौर उन्होंने वहां शिष्योंको संग बहुत दिन विचारे।

१५ पन्द्रहवां पन्थे।

१ जतमें विषयमें विवाद बेबा चौर उक्त निर्देशको लिये जितने माहेंको विश्वासलीको बना। ५ प्रेस्टोंगार द्वार बिचार करना। २२ देव बातका निर्देशको पदमें लिखना। २० देव पत्रका शासनसृजन परूशार्था बना।

२ पालक चौर बख्तका जलंग बनना करन।

१ वितने लोग विचारियोंसे झाले भाईयोंको उपदेश देने लगे के जो मूसाकी रीतियों अनुसार तुम्हारा खतना न किया जाय ता तुम चाश नहीं पा सकते है।

२ यह पालक चौर बर्षेबासे चौर उन्होंने बहुत विवाद चौर विचार हुस्ना था तब भाईयोंने यह ठहराया के पालक चौर बर्षेबासे चौर हमें से जितने चौर जन इस प्रशंसके विषयमें यिन्हेंलीको प्रेषितां चौर प्राचीनांके पास जायें। सा मंड्लीसे सुच दूर पहुंचाये जाबे वे फैनिनिया चौर गोमरानसे होते हुए अन्यदेशियोंके मन फैलनेका समाचार कहते गये चौर तब भाईयोंको बहुत आनंदित किया। जब वे यिक्षलीमें पहुंचे तब मंडलीने चौर प्रेषितां चौर प्राचीनांने उन्हें यहां किया चौर उन्होंने बताया के इद्दर्वने उन्हें साथ बैठे बढ़े।

५ चाम जिये थे। परन्तु फरीशियोंके पंखके लागोंमें कितने जिम्हा ते विश्वास किया था उठके बाले उन्हें खतना करना चौर भुजधकी ब्यवस्थाको पालन करनेकी झाना डेना उचित है?

६ तब प्रेषित चौर प्राचीन लोग इस बातका बिचार?

७ करनेको एकदम हुए। जब बहुत विवाद हुस्ना तब पितरने
चठके उनसे कहा है भाईये तुम जानते हो कि बहुत दिन हुए ईश्वरने हमसे चुन लिया कि मेरे मुंहसे अन्यदेशी लेग्य सुसमाचारका वचन सुनके विश्वास करें । छाई अन्तर्गती ईश्वरने जैसा हमका तैसा उनको भी पवित्र शात्मा देके उनके लिये साही दिख । छाई विश्वाससे उन्हांके मनको शुद्ध करके हमांके छाई उन्हांके बीचमें कुछ मेंद न रखा । तो शब्द तुम कों १० ईश्वरकी परीक्षा करते है कि शिखेरांके गलेर जूझा रखना जिसे न हमारे पितार ले गा न हम ले गा चठा सके । परन्तु जिस रूपसे वे उसी रूपसे हम भी प्रभु यीशु ११ श्रीपुरी अनुग्रहसे चारावं आनको विश्वास करते हैं ।

तब सारी समा चुप हुई छाई बर्खावा छाई पावलकी १२ जो यह वताते थे कि ईश्वरने उनको द्वारा कैसे बड़े चिन्ह छाई बहुत काम अन्यदेशीयांको बीचमें किये थे सुनती रही । जब वे चुप हुए तब याकूबने उत्तर दिया कि है १३ भाईये मेरी सुन लोजिये । शिखेराने बताया है कि १४ ईश्वरने कोंकार अन्यदेशीयांकर पहली दुर्घुष किये थे कि उनमें अपने नामको लिये एक लोकोंका ले लेवे । छाई १५ इससे भविष्यद्वात्ताशेंकी बातें मिलती हैं जैसा लिखा है । कि परमेश्वर जो यह सब करता है तो कहता है १६ इसके पीछे में फिरके दाजुदका गिया हुजा डेरा उठान्य छाई उसकी संज्ञा मनान्य छाई उसे खड़ा बनान्य । इसलिये कि वे मनुष्य जो रह गयें हैं छाई सब १६ अन्यदेशी लेगे जो मेरे नामसे पुकारे जातें हैं परमेश्वर-को बुद्धिं । ईश्वर अपने सब कामिंको चाहिंता जानता है। १६
इसलिये मेरा विचार यह है कि अन्यदेशियों में तो लोग दैवतकारी शीर्ष फिरते हैं हम उनका दुःख न दें।

20 परन्तु उनके पास लिखा कि वे मूर्तलोकी अभूतुक बस्तुअंति शीर्ष व्यवस्थापित शीर्ष गला घोंटे हुकीकि 21 माससे शीर्ष लोहसे पर रहे हैं। क्योंकि पूर्वोंक समयते मूलके पुस्तकों नगर नगरमें प्रचार करते हैं शीर्ष हर एक विषाणुवार वह सभाके घरोंमें पढ़ा जाता है।

22 तब सारी मंडली सहित प्रेरितों शीर्ष प्राचीनोंका बच्चा लगा कि अपनेमें मनुष्योंका चुनौत अभिनव तिहूदा-का जा भर्ष्य बहावता है शीर्ष सीलावों जो भाइयोंमें बड़े मनुष्य थे शीर्ष उन्हें पावल शीर्ष भर्ष्यबाबों संग चत्त-33 खियाकों में। शीर्ष उनके हाथ यही लिख भेज कि प्रेरित शीर्ष प्राचीन शीर्ष भाई लोग अन्तिमिया शीर्ष सुरिया शीर्ष विलिकियामें उन भाइयोंका जो अन्यदेशियोंमें 24 हैं नमस्कार। हमने सुना है कि कितने लोगें हममें निकलके सुनें तुम्हे बाताओं से भाकुल कि है कि वे खतना शर्माने को शीर्ष व्यवस्थाको पाणन करते कहते हुए तुम्हारे मनकों चंचल करते हैं पर हमने उनको सा जा न 25 दिये। इसलिये हमने एक चित होके बच्चा जाता 26 है। कि मनुष्योंका चुनौत अपने प्यारी भर्ष्यबा शीर्ष पाव- लके संग जो ऐसे मनुष्य हैं कि अपने प्राचीनोंको हमारे प्रभु योगु ब्रह्मने नामके नियो आये औं दिया है तुम्हारे पास 27 भेजे। सो हमने तिहूदा शीर्ष सीलावों भेजा है जो चाप 28 भी यही बारंबुर मुखबचनसे बढ़ दें। पवित्र श्रात्माको शीर्ष हमको बच्चा लगा है कि तुम्हारोंपर इन श्रावधर्मक
बातेंसे अधिक कोई भार न रखें. शरीर कि मूर्ति को भाग बैल किये हुनेंसे शोर लोहसे शोर गला घाटे हुनेंसे मांससे शोर व्यभिचारसे परे रहें. इन्हैंसे श्यामनिक सब रखनेसे तुम भला करेगे. शाने शुभ।

सो वे बिदा होके अन्तःकरणामें पहुंचे शोर लेगोंसे 30 एकउँ बढ़े वहं पश दिया। वेपढ़े उस शांतिकी 31 बातसे आनन्दित हुए। शोर यहूदा शोर सीलाने 32 जो श्याम भी भविष्यव्याख्या से बहुत बातेंसे माइंगे का समकालीन स्पर्श किया। शोर कुछ दिन रहने वे प्रेमिता के 33 पास जानेंको कुशलसे माइंगे बिदा हुए। परन्तु 34 सीलाने वहाँ रहना अच्छा जाना। शोर पावल शोर 35 बर्जवा बहुत शोररंगे संग प्रभुके बचनका उपदेश करते शोर सुसमाचार सुनाते हुए अन्तःकरणामें रहे।

कितने दिनांको पीछे पावलनी बर्जवासे कहा जिन 36 नगरांमें हमने प्रभुका बचन प्रचार किया शाश्व हर एक नगरमें फिरके अपने माइंगे के देख लेंचे कि वे कैसे हैं। तब बर्जवासे यहूदी जो मारी कहावता 37 है संग लेनेका विचार किया। परन्तु पावलने उसकी 38 जो पंफुलियासे उनके पाससे चला गया शोर कामपर उनके साथ न गया संग ले जाना अच्छा नहीं समकाल।

सो ऐसा टंटा हुआ कि वे एक दूसरके चोटी गये शोर 39 बर्जवा मारी के जहाजपर बुकसे गया। परन्तु 40 पावलने सीलाने चुन लिया शोर माइंगे देशवरके अनुगत्य हर संपाते जाके निकला। शोर मकबरपे निकला। शोर मकबरपे स्फिर 41 करता हुआ सारे सुरिया शोर फिकियामें फिरा।
पावलका सिमोथिको खत्मा कर्न चौर च्वस्नक ठार फिरना। ५ उसका एक
वर्ष दिन पाना चौर उसका चित्तीय नगरको जाना। १३ तुबितोखा दुःखना। १५ एक मूर्तगल ठारसे मूर्तका निकाला जाना। १५ पावल चौर तुलाका वन्यजागरण हारा जाना। २५ वन्यजागरणका रथका प्रसुकी चौर फिरना। २५ पावल चौर तुलाका वन्यजागरणुकी हुझाँ जाना।

तब पावल दर्शी चौर लुम्स्तामें पहुँचा चौर देखी बहाँ चित्तीय नाम एक शिशु प्रयोग तो चोजी विविधवाको
यिकुदिनीका पुष्प तथा परल्लु उसका पिता यूनानी दिया।
चौर लुम्स्ता चौर इकोनियमेंगे भाई लेग उसकी सुखा-
श्याम त्य करते थे। पावलने चाहा कि यह मेरे संग चार चौर जो यिकुदी लोग उन स्थानों मैं चुमे कारख
उसे लेकन उसका खेतना दिया की कोंकि चुमे सब उसके
पिताको जानते थे कि वह यूनानी था। परल्लु नगर
नगर जाते हुए उन्होंने उन विद्याधारी हुए चीत्शलीमें
स्वयं प्रतिवका चौर प्राचीनके दुराराई गई थीम भाईयांको
सांप दिया कि उनका पालन करें। चीत्नाजलीय
विविधजानै स्याह होती थी चौर प्रतिवका गिन्नैमें बढ़ती
लेई। चौर चुम्रे चौर फ्रिग्नो चौर गलानिया देशमें फिर
चुमे चौर पवित्र आत्माने उन्हें आशिया देशमें बाल
सुनानेको बज्या। तब उन्होंने मुसिया देशपर जाके विस्तर
निया देशका जानकी चित्ती मुख्य चुढ़िया परल्लु आत्माने उन्हें जा-
चौर मुलियांसे हारे चुमे चौर नगरमें बाये।
चौर एक देर्शन पावलका दिखाई दिया कि चौर माहिदानी पुरुष बढ़ा हुआ उससे बिन्ती करके कहता था कि उस पार माहिदानिया देश जाके हमारा उप-
कार कीजिए। जब उसने यह दर्शन देखा तब हमने 90
निश्चय जाना कि प्रभुमें हम उन लोगोंके तद्देशमार्गार
सुनानेको बुलाया है इसलिये हमने तुरन्त मानिए-नियाको जाने चाहा। साघातासे खोलके हम सामोजा- 91
की रामचन्द्री सप्तधी याये चीर दूसरे दिन नियापलि नगर-
में पहुंचे। वहांसे हम फिलिपी नगरमें याये जा मानिए- 92
दोनीयाके उस चंपका पहिला नगर है चीर रामियोङ्गी
बस्ती है चीर हम उस नगरमें कुछ दिन रहे।
बिशाखाने दिन हम नगरके बाहर नदीके तीरपर गये 93
जहां प्रार्थना किए जातये यी चीर बैठके स्तं्यांसे जा
एकटी हुई थी उस बात करने लगे। चीर लड़िया नाम 94
पुश्करी महानगरके एक स्ती बैजनी बस्ती बैठकेहारी जो
ईश्वरकी उपासना किया करती थी सुनता थी चीर
प्रभुमें उसका मन खोला कि वह पावलकी बातिंग पर
विच्छल लगावे। चीर जब उसने चीर उसके घरमें 95
बपतिसमा लिया था तब उसने बिन्दु किए कि यदि
उकट लगानेके समको प्रभुकी विश्वासी नाग लिए है
ता मेरे घरमें उकट रहिये चीर बह हमें मनाको ले गई।
जब हम प्रार्थनाको जाती थे तब एक दासी जिसे 96
शासका भूत लगा था हमको मिली जो शासके
कहनेसे अपने स्वामियोंके जिये बहुत कमा लाती थी।
वह पावलकी चीर हमारी पीछे आको पुकारने लगी कि 97
ये मनुष्य सब्बिप्रधान ईश्वरकी दास हैं जो हमें चाहकी
नागकी कथा सुनते हैं। उसने बहुत दिन यह किया 98
परन्तु पावल आप्रस्त्र हुज्जा चीर मुंह फूरके उस भूतके
बहा में तुम्हें यीशु सीधुके नामसे शाश्वा देता हूं कि उससे हिनकल वा शाशर वह उसी घड़ी निकल शाशा।

जब उसके स्वामियोंसे देखा कि हमारी कामाइकी शाश्वा गई है तब उन्हींने पावल शाशर सीलाहों पकड़े-पकड़े चाकु लाए। शाशर उन्हें सहयोग लाके कहा ये मनुष्य जो तिहार है।

हमारे नगरके लोगोंको व्याकुल करते हैं। शाशर व्यव-हारेरोंको प्रचार करते हैं जिन्हें गृहशंसा करना अध्ययन करते हैं।

मानना हमारे जो रामी हैं उचित नहीं है। तब लोग उनके बिना एकठोर चढ़ शाश्वे शाशर सहयोगोंने उनके कपड़े फाड़ डाले। शाशर उन्हें वेत मारनेकी अश्वाना हेतु दिए। शाशर उन्हें बहुत घायल करके बन्दीगृहमें डाला। शाशर बन्दीगृहके रक्षकोंके उन्हें यत्ते रखनेकी अश्वाना हेतु दिए। उसने ऐसी अश्वाना पाके उन्हें भीतरकी कॉठरीमें डाला। शाशर उनके पांव काॅठरीमें ठांके।

शाश्वा रातके पावल शाशर सीला प्राथ्याना करते हैं। इंग्लिशके भजन गाते थे शाशर बंधुए उनकी सुनते थे। तब बदांचक ऐसा बड़ा उठाया। हुआ कि बन्दी-गृहकी नवं हिलीं शाशर तुरन्त सब द्वारा कुल गये शाशर।

समांके बंधन कुल पड़े। तब बन्दीगृहका रक्षक जागा शाशर बन्दीगृहके द्वारा कुले देखके खड़े, बींचा शाशर अपने तैयः मार डालनेपर था कि वह समझता था कि बंधुए लोग भाग गये हैं। परन्तु पावलने बड़े बदन्दे पुकारके कहा अपनेको कुल दुःख न देना शाश्वा कि हम सब यहां हैं। तब वह दीपक मंगाके भीतर...
लपन्ह गया क्षीर कांपित हाकिय पापल क्षीर सीलाक्षा
दंडवत बिदी . क्षीर उनको बाहर लाके कहा हे प्रभुको 30
चाष पानेको मुखे का करना होगा . उन्होंने कहा 31
प्रभु यीशु खोराप विषवास कर ता तू क्षीर तेरा
घराना चाष पावेगा . क्षीर उन्होंने उसको क्षीर 32
समेतको जा उसके घरमे थे प्रभुका बचन सुनाया ।
क्षीर रातका उसी घडी उसने उनको लेकि उनके 33
घावेको घया क्षीर उसने क्षीर उसके सब लोगिने
दुर्गत वपसिमा लिया । तब उसने उन्हें अपने घरमे 34
लाके उनके आगे भोजन रखा क्षीर सारे घराने समेत
ईश्वररपर विषवास किये ते आनन्दित हुआ ।

विहान हुए अध्यायोंने यादिएको हाथ कहला भेजा 35
कि उन मनुष्योंको छोड़ देखो । तब बन्दीगृहको रखकाने 36
यह बारें पावलसे कह सुनाई कि अध्यायोंने कहला
भेजा हे कि अाप लोग छोड़ दिये जाय से अब निकलके
खुशलसे जाइये ! परन्तु पावलसे उनसे कहा उन्होंने 37
हमें जो रोमी मनुष्य हैं टंके याय ठहराये बिना
लोगिने आगे मारा क्षीर बन्दीगृहमे वाला क्षीर अब
क्या चुपकेसे हमे निकल देते हैं । तो नहीं परन्तु
आपकी आखे हमें बाहर ले जावे । यादिएको यह बारें 38
अध्यायोंसे कह दिये क्षीर वे यह सुनके न रोमी हैं
हर गये । क्षीर आके उन्हें मनाया शीर बाहर लाके 39
बिन्ती बिदी कि नगरसे निकल जाइये । वे बन्दीगृहमेंसे 40
निकलके लुढ़ियाको यहां गये क्षीर भाइयोंको देखके
उन्हें उपदेश देवे चले गये ।
17 सचम्बां पढ़िे।

1 बिलाललिखिता नगरमें लोगोंका किन्नूर भिक्षु बिखार चैर प्रेषितका निकाला जाना।
2 बिले नगरके करोंका पाबले गुरुवार श्रेष्ठे विश्वास करता।
3 उन्होंने नगरके लोगोंकी गवाही विनाश करता।
4 चैर पावल अपनी रीतिपर उनके यहां गया।
5 चैर तीन बिखार मार्ग उनमें धर्म प्रस्तुत करते बारे किए।
6 चैर यहीं चैराल देता चैर समकालिका रहा।
7 चैर मूर्तिकीहीं जो उठाना साधक्य था।
8 चैर फिर ये गीत जिसकी कथा में ह्रम्में सुनाता हूं।
9 बहुत चैरू है।
10 उनके कितने जलेंचि चैर भक्ती गूणानियोंकैं बहुत लोगों चैर बहुत सब बड़ी बड़ी निपेंद्रने मान जिया।
11 चैर पावल चैर सीलारे सिला।
12 चैर उन्हें न पाखि वे यह पुकारते हुए यासीनके चैर कितने भाघूं के नगरमें धर्म मचाई।
13 चैर यासीनके घरपर चढ़ाई।
14 चैर सीलारे लोगों पास लाने चाहा।
15 चैर उन्हें न पाखि वे यह पुकारते हुए यासीनके चैर कितने भाघूं के नगरमें धर्म मचाई।
16 चैर यासीनके घरपर चढ़ाई।
17 चैर सीलारे लोगों पास लाने चाहा।
18 यहां भी चैर है।
19 चैर यासीनके उनकी पहुंच जत्त है।
20 राजा है बैसरकी आजादीके बिंदु करते हैं।
21 उस्त्रांले लोगों चैर नगरके प्रधानीं जी।
सूत्रते च व्याकुल बिया । शार उन्होंने यात्रियोंसे शार ८ दूसरोंसे मुचलका लेके उन्हें छोड़ दिया।

तब भाईयोंने तुरंत राताका पावल शार नौलके १० बिया नगरके भेजा । शार हे पहुँचके यिहूदियोंकी सभाके घरमें गये। ये तो थिसलोनिकामें यिहूदियोंसे ११ सुशील के शार उन्होंने सब भांतिसे तत्पर होके बचनके प्राप्त बिया शार प्रतिदिन धम्मपुस्तकमें ढूंढते रहे कि यह बातें यूही हैं कि नहीं। तो उनमें बहुताने शार १२ यूनानीय कुलवती स्त्रियोंमें शार पुश्करियोंसे बहुतें रें बिश्वास बिया। परन्तु जब थिसलोनिकाके यिहूदियोंने १३ जाना कि पावल बियामें भी इंश्वरका बचन प्रचार करता हैतब वे बहां भी जाने लोगोंका उसकाने लगे। तब भाईयोंने तुरंत पावलको बिदा किया कि १४ बह जमुदकी शार जावे परन्तु नौला शार तिमानाथ्य बहां रह गये। पावलके पहुँचनेके उसे शारीनी १५ नगरके लाये शार नौला शार तिमानाथ्यके लिये उस पास बहुत शीघ्र जानेकी जाना लेके बिदा हुए।

जब पावल शारीनीमें उनकी बात जोहता था तब १६ नगरके मूलतोंसे भरे हुए देखनेसे उसका मन भीतरसे उभर जाया। तो बह उनकाके घरमें यिहूदियों शार १७ भक्त लोगोंसे शार प्रतिदिन चौकमें जो लोग मिलते थे उन्होंसे बातें करने लगा। तब इपिकूरीय शार स्त्रियोंके १८ स्थानियोंसे कितने उससे विवाद करने लगे शार कितने बोले यह बकवादी का कहने चाहता है पर शारारणे जेहा बह जपसी देवताश्रीका प्रचारक देख पड़ता है।
क्योंकि वह उन्हें यिशुका श्रीर जी उठनेका सुसमाचार ६५ सुनाता था। तब उन्होंने उसे लेके श्रीरयोपाग नाम स्वानपर लाके कहा क्या हम जान सकते कि यह नया २० उपदेश जो तुम्हारे सुनाया जाता है क्या है। क्योंकि ताके ज्ञानी बातें हमें सुनाता है सो हम जानने चाहते हैं। २१ जिसे इनका अर्थ क्या है। सब ज्ञानीय लोग श्रीर परदेशी जी वहां रहते थे किसी श्रीर काममें नहीं केवल नई नई बातके कहने सबबा सुननेमें समय कार्यते थे। २२ तब पावलने श्रीरयोपागके बीचमें खड़ा होके कहा है क्योंकि जब मैं फिरते हुए श्राप लोगोंकी पूज्य वस्तुकांकोंकी देखता था तब एक ऐसी बदी भी पाई जिसपर लिखा हुआ था कि ज्ञानी ईश्वरकी। २३ सो जिसे श्राप लोग बिन जाने पूजते हैं उसीकी कथा २४ में श्राप लोगोंके सुनाता हूं। ईश्वर जिसने जगत श्रीर सब कुछ जो उसमें है बनाया सो स्वाने श्रीर पृथिवीका प्रभु हैं। कौन हाथके बनाये हुए मन्दिरोंमें बास नहीं करता २५ है। श्रीर न किसी वस्तुका प्रयोजन रखनेसे मनुष्योंकी हाथींकी सेवा लेता है क्योंकि वह आपकी समेतिका जीवन २६ श्रीर प्रवास श्रीर सब कुछ देता है। उसने एकही लो- हुसे मनुष्योंको सब जातिगण सारी पृथिवीपर वस्तुके बनाये हैं श्रीर ठहराये हुए समयके श्रीर उनके २० निवासके सिवाने इसलियें बांधा है। कि वे परमेश्वरकी हृदें क्या जाने। उसे टाइलके पारं श्रीर तैभी २५ वह हममेंंसे किसीत सूप नहीं है। क्योंकि हम उसीके
जीति श्रीर फिरति श्रीर होते हैं जैसे श्राप लोगों के यहाँ कितने कावियांने भी कहा है कि हम ता उसकी बंजा हैं। सा जो हम द्वारकें बंजा हैं ता यह समक सत्रि कि द्वारकत्व लाने क्रयवा रूपे क्रयवा पत्थरबे अधिगत मनुष्यको कारीगरी श्रीर काल्पनको गढ़ी हुई बस्तुके समान है हमें उचित नहीं है। इसलिये द्वारक श्रान्ति ३० ताके समयसे शानाखानी करके अभी सम्बंध सब मनुष्योंको पश्चाताप करनेकी धारा देता है। क्यों- ३१ कि उसने एक दिन ठहराया है जिसमें वह उस मनुष्यके द्वारा जिसे उसने नियुक्त किया है धर्मसे जगतका न्याय करेगा श्रीर उसने उस मनुष्यको मृत्तकामें उठाने सभींको निश्चय कराया है।

मृत्तकांके जी उठनेको वात सुनके कितने ठठा करने ३२ लगे श्रीर कितने बाले हम इसके विषयमें तुफसे फिर सुनने। इसपर पाओल उनके बीचमें चला गया। ३३ परन्तु कई एक मनुष्य उससे मिल गये श्रीर बिश्वास ३४ किया जिनमें दियानुसिय अर्जेयोपागी था श्रीर दामारी नाम एक स्ती श्रीर उनके संग कितने श्रीर ले।

४९ खटारहाँ पवे।

१ पायलका करिले नगरमें मुखमाध्य प्रयाल करना। २२ बिहूतियोंका गालियांके प्राप्त पायलका तालियां करना। ९२ पायलका प्रणयके नगरमें श्रीर वेशोंमें प्रयाल। २४ ब्रह्मवाक्य शवान।

इसके पीछे पायल शाहीनीसे निकलके करिल १ नगरमें झाता। श्रीर झूकुला नाम पन्त देशका एक २ बिहूती था जो उन दिनोंमें इतिहास देशसे झाता था इसलिये कि झूकुलीने सब बिहूतियोंको राम नगरसे निकल
जानेकी आज्ञा दिई थी. पावल उसको श्रीर उसकी
स्त्री प्रिस्कौलिका पाकि उनके यहां गया। श्रीर उसका
श्रीर उनका एकही उद्दाम या इसलिये वह उनके यहां
रहके कमाता या कींकि तबू बनाना उनका उद्दाम था।
4 परन्तु हर एक विभागवार वह सभाकी घरमें बारे करवे
5 यीहूदियों श्रीर यूनानियोंका भी समक्षता था। जब
सीला श्रीर तिमाहिय साक्षीदानियोंसे स्त्रो तब पा-
वल श्रात्मके वरमें होके यीहूदियोंका सांसी देता था
क्ष जीसु तो जीसु है। परन्तु जब वे विरोध श्रीर
निन्दा करने लगे तब उसने कपड़े स्नातक उनसे कहा
तुम्हारा लेहू तुम्हारे तिरपर हाय. में निर्देश हूं.
6 जबसे में अन्यदेशियोंके पास जाँझा। श्रीर वहांसे
जाके वह युस्त नाम इंग्लिशके एक उपासकके घरमें
8 झाया जिसका घर सभाकी घरसे लगा हुआ। तब
सभाके अध्यक्ष कीस्ने झपने सारे घराने समेत
प्रमुख बिश्वास किया श्रीर कारिनियोंसे बहुत लाग
8 सुनके बिश्वास करते श्रीर बघतिसमा लेते थे। श्रीर
प्रभुने रातके दर्शनके द्वारा पावलते कहा मत हर परन्तु
10 बात कर श्रीर चुप मत रह। कींकि में तेरे संग हूं
श्रीर बोई तुम्हें बढ़ाई न करेगा क्ष तुम्हे दुःख देबे
11 कींकि इस नगरमें मेरे बहुत लाग हैं। तिसी वह उन्हों-
में इंग्लिशका वचन सिखाते हुए देग बरस रहा।
12 जब गालिया ज्ञानाया देशका प्रधान या तब यीहूदी
लाग एक चित होकर पावलपर चढ़ाई करके उसे
13 विचार झासनके झागे लाये। श्रीर बेले यह ता मनुष्यों-
ब्रो ब्यवस्थाको विपरीत रोलिसिंग बरबँडी उपासना करनेको सम्भावना है। ज्योंही पावल मुह खालनेपर था २४ त्योहारी गालियोंहरू र यिहूदियोंसे बकाबा है यिहूदियों जो आपूर्वक स्थिति बुरी बुचाइ होती तो उचित जानेको मैं तुम्हारी सहता। परन्तु जो यह विवाद उपदेशको १५ छै नामिङेखो छै तुम्हारी यहाँकी ब्यवस्थाको विषयम तो तुम्हारी जानी क्वांतिने मैं इन बातिको न्यायी होने नहीं चाहिए हुं। छै उसनेउ नन्हे विचार ब्रासन- १६को भागमे खडेड़ दिया। तब सारे यूनारियोंने सम्भावे १३ अध्यक्ष सालिनिको पकड़को विचार ब्रासनको सारे मारा छै गालियों ने इन बातिको कुछ चिन्ता न किये।

पावल छै भी बहुत दिन रहा तब भाईयोंसे बिदा १५ होके जहाजपर सुरिया देखियो गया। छै उसको संग प्रिस्क्रोजा छै ब्रा ब्रा। उसने चिंकिया नगमै शिरे नुमा सिर मुंडराया कोंकि उसने मस्त्र मानी थी। छै उसने इफिस नगरमे पहुँचको उनको वहां ढूँढा १५ छै छापही समाही घरमै विभेद करके यिहूदियोंसे बारें किये। जब उनहोंने उससे बिनती किये तो हमारे २० संग कुछ दिन छै रहिये तब उसने न माना। परन्तु २१ यह कहके उनसे विदा हुनु कि ब्राह्मवाला पर्यंप यिहूदीलोकमें करना मुफ्त बहुत अवधय है परन्तु इस्बार चाहे ता मैं तुम्हारे पास फिर लौट जाँगा। तब उसने इफिसमे खाल दिया। छै ब्रासियों में ब्रा २२ तब (यिहूदीलोक) जाको मंडलीको नमस्कार किया छै ब्रा अन्तिक्याको गया। फिर कुछ दिन रहके वह २३
प्रतिवंशी क्रिया।

निकला शैल एक शैतल गलातिया शैल प्राणिया
देशांमें सब शिष्योंको स्मिर करता हुआ फिरा।

२४ अपले नाम सिकटदिया नगरका एक यिन्हे जो
सुवका पुरुष शैल धर्मपुस्तकमें सामर्थ्य था इफिसमें
आया। उसने प्रभुके मार्गकी शिखा पाई थी शैल
श्रात्माकै अनुरागी हैकी प्रभुके विषयमेंकी बातं बड़े
यबसे सुनाता शैल सिखाता था परन्तु केवल येहनाके
है बपतिस्टमाकी बात जानता था। वह सभाके घरमें
साहससे वात करनें लगा पर लाकुला शैल प्रिस्कीलाने
उसकी सुनके उसे लिया शैल इश्वरका मार्गे उसकी
२५ शैल ठीक करके बताया। शैल वह आखायोंको जाने
चाहता था तो भाइयोंने उसे डावस देखे शिष्योंके
पास लिखा कि वे उसे यह ऐसा करें शैल उसने पहुंचके
अनुयहसे जिन्होंने विश्वास किया था उन्होंने बड़े
२६ सहायता किये। केवल योमु जो खीघु है यह वात
धर्मपुस्तकके प्रमानोंंते बतलाके उसने बड़े यबसे
लेखाओंके बांट यिन्हे दिशियोंको निर्धार किया।

१५ उनीसवां पढ़े।

१ श्राकत नगरमें धार शिष्योंकी पवित्र श्रात्मका दिया जाना। १ पालवका
उपदेश शैल विश्वास करना शैल वरने श्राचर्य कस्माकै उवसे प्रागट होना।
२ देशमें पुस्तकका बर्जन शैल देनहोंके पुस्तकका बताया जाना। २१ दीमीट्रिया
पुस्तका पावलपर उपदेश सबाना।

१ अपले शैल करिनशमें हाते हुए पालव ऊपरके सारे
२ देशमें फिरके इफिसमें आया। शैल यितने शिष्योंको
पाके उनसे कहा क्या तुमने विश्वास करके पवित्र आत्मा
प्राया। उन्होंने उससे कहा हमने तो सुना भी नहीं।
कि पवित्र शात्मा दिया जाता है। तब उसने उनसे कहा तो तुमने किस बातपर बपतिसमा लिया। उन्हींने कहा यहाँने बपतिसमापर। पावलने कहा योहनने पश्चातायका बपतिसमा देकै शनये पीढ़े शानिवालेही-पर विषवास करनेका लगाने से कहा श्रात्तात्त्विक यीनसु-पर। यह सुनके उन्हींने प्रभु यीशुके नामसे बपतिसमा लिया। श्रार जब पावलने उनपर हाथ रखे तब पवित्र शात्मा उनपर भाया श्रार वे बनेक बोलिया बोलने श्रार भविष्यवाचक बाहन्ने लगे। ये सब मनुष्य वारह एक थे।

तब पावल सभाके घरमें प्रवेश करके साहससे बात करने लगा स्वात तीन मास इंश्वरके राज्यके विषयमेंकी बातें सुनाता। स्वात समक्षता रहा। परन्तु जब वितने लाग अठार हो गये, स्वात नहीं मानते थे स्वात लगाने क्षार इस मार्गकी निन्दा करने लगे तब वह उनके पास से चला गया। स्वात शिण्यांकी अलग करके तुरान नाम किसी मनुष्यके विद्यावादमें प्रतिद्वंद्व बातें किए। यह दो बरस होता। रहा यहांलें कि श्रारवाके निवासी यिहूदी स्वात युनानी भी सभेंने प्रभु यीशुका बचन सुना। स्वात इंश्वरने पावलके हाथनेसे शनाखी शाश्वत्य करमें 91 किये। यहांलें कि उसके देखपरें अंगोद्वंस्ते स्वात इंश्वर इंश्वर देखनेके पास मुखाये जाते थे स्वात राग उनसे जाते रहते थे स्वात दुश्मन मनसें निकल जाते थे।

तब यिहूदी लगामेंसे जो इधर उधर फिरा करते 93 स्वात भूत निकालनेका विवरण देते थे कितने जन उन्हीं-
पर जिनको दुःख मूत लगे थे प्रभु योगेशुका नाम यह बह्से लगे थे कि योगेशजिसे पावल प्रचार करता है

हम उसीको तुम्हें जिरिया देते हैं। स्वयं नाम राखा रिख्दीय प्रधान याजको सात पुष्प थे जो यह करते थे।

परन्तु दुःख मूतने उसर दिया कि योगेशको मे जानता हूं।

श्रीर पावलको पहचानता हूं पर तुम चैन हो। श्रीर वह मनुष्य जिसे दुःख मूत लगा रा उनपर लपकबे श्रीर उन्हें बर्षरे लाके उनपर ऐसा प्रबल हुआ जिसे वे नंगे।

श्रीर घायल उस घरमें से भागे। श्रीर यह बात इफिकी निवासी रिख्दी श्रीर युनानी भी सब जान गये श्रीर उन समेंको दर लगा श्रीर प्रभु योगेशको नामको महिमा।

जिक्से जाती थी। श्रीर जिन्हें बिववास खिया रा उन्हें-भरते बहुताने श्राको अपने काम मान लिये श्रीर बरत-

लये। टेंना करनेहरामसे भी अनेकने अपनी प्रायिया एकरी करके समेंबे साथे जला दिएं श्रीर उन्हेंको दाम जीड़ गया ते। पचास सहस रुपये ठहरा।

यूं पराकमते प्रभुका बचन पैला श्रीर प्रबल हुआ।

जब यह बात है चुकीं तब पावलने ात्मामें माहंदीनिया श्रीर श्रावनाको बंचे पिशवालीम

जानेको ठहराया श्रीर कहा कि वहां जानेके रीत बुफे रोमको भी देखना होगा। तो उसकी सेवा करते थे उनमेंसे देखी अर्धत तिमाहिया श्रीर इरास्तको माहं-

दीनायंतें भेड़के वह आपही श्राव्यामें कुछ दिन रह गया। उस समय इस मार्गके विषयमें बड़ा हुल्लु हुआ।

कींकरे दीमोसिया नाम एक सुनार ातिमोकें मान्देरको
झांदीकी मूर्ति बनाने से कारीगरांशी के बहुत काम दिखाता था। उसने उन्हें का सौंदर्यांशी ऐसी ऐसी बस्तुश्रीलिखी कारीगरांशी- २५ की एक खुश करने का है मनुष्यो तुम जानने हैं फि इस कामांशी हमें की सम्पत्ति प्राप्त होती है। कैलाश तुम देखते यसं कैलाश सुनने हैं फि इस पावलने यह कहने कि जी हाथीया से बनाये जाते तो इस भवन्दर नहीं हैं केवल इफिश के नहीं परन्तु प्राय समस्त ज्ञानियांकी बहुत लोगों से समकाली भरमाया है। कैलाश हमें केवल यह हर नहीं है कि २७ यह उदय, निद्रासं जी जान परन्तु यह भी कि बड़ी देवी ज्ञानियांकी मंदिर तुल्च समका जाय कैलाश उसकी महिमा जिंसे समस्त ज्ञानिया कैलाश जगट पूजित है नष्ट हो जाय। वे यह सुनकर कैलाश क्वागे पूर्ण ही न बुकारने २८ जग इफिशियांकी ज्ञानियांकी जय। कैलाश सारे नगरसं २२ बड़ो गड़बड़ा हुईं कैलाश लोग गायस कैलाश ज्ञानियांकी दूर मानकिन्यांकी जी। पावलने संगी पथिक थे पकड़े एक चित्त हीके रंगशालामसं दौड़ गये। जब पावलने ३० लोगोंके पास भीतर जाने चाहा तब शिक्षि उसकी जाने न दिया। ज्ञानियांकी प्रधानने भी जितने जो ३१ उसके मिनट थे उस पास मेजो उससे बिनती किये कि रंगशालामें जानकी जाओं मत अपनेपर बठाइये। सात ३२ कैलाश कुछ कैलाश कैलाश कुछ पुकारते थे क्यांकि समा घबराई हुईं थी कैलाश आधिक लोग नहीं जाते थे हम किस कारण एक खुश हुए हैं। तब भी देशिने जितने सिकन्दर- ३३ की जिंसे पिछुदि खड़ा किया था ज्ञानी बढ़ाया कैलाश सिकन्दर हाथसे नैन करके लोगोंके ज्ञानी उतर दिया।
इस चाहता था। परन्तु जब उन्होंने जाना कि वह गिर्ने है
सबकी सब एक शब्द से दो घड़ी के अरकल इन्फ़िसियॉन्की
वातिलों की जरूरत रहै। तब नगरी लेहकों के लो-
गों की शांत करने कहा है इन्फ़िसी लोगो कौन मनुष्य है
जो नहीं जानता कि इन्फ़िसियॉन्की नगर बड़ी देवी वातिलों
की श्रीर जूतिलारकी चीर रेगी हुई मूर्तिका रहलुबा
है। तो जब कि इन बातों का खंडन नहीं हो सकता है
उचित है कि तुम शांत हो जाओ शीर बोख़ा कौँ काम उतावली-
ि से न करो। क्योंकि तुम इन मनुष्यों की लायो हो जो न
पवित्र बस्तु गों की चीर न तुम्हारी देशों की निन्दक है। तो
जो दोमर गों चीर उसके संगके कार्यरों का किसी-
से विवाद है तो बिचारके दिन होते हैं चीर प्रधान
क लोग हैं वे एक दूसरे नाजिल लगे। परन्तु जो तुम
दूसरी बातों के विषयमे कुछ पूछते हो तो व्यवहारी
80 सभामें निषेध किया जायगा। क्योंकि जो चाज हुई है
उसके हेतुसे हमपर बलव क्या देश लगाये जानेका दर
है इसलिये कि कोई कारण नहीं है जिस करके हम
81 इस भीड़का उत्तर दे सकिंग। चीर यह कहके उसके
सभामें बिट्टा किया।

20 बीसवां पढ़ैँ।
1 पावलका कई एक वेदापि चीरों को जाना। 9 वस्तुका मरना
चीर फिरके विलाया जाना। 13 पावलका निवृत्त नागमें पहुँचना। 17
बापसी दोस्तके प्राचीनके उपदेश बनाना। इस बहादुर बिट्टा देखा।
1 जब हुसन्द थम गया तब पावल शरीयाण्डों को चपे
पास बुलाके चीर गोरे लगाके माकरोनिया जानेका
2 चल निकला। उस सारे देशमें फिरके चीर बहुत बातिांसे
उन्हें उपदेश देकर वह युवान देशमें लाया। दौर सात हर्षके जब वह जहाज पर सुरियाका जानेपर था। ग्याहदी लीग उसकी प्राति में लगे इसलिये उसने मानि-देशाकाओ होके लीग जानेका ठहराया। बिरिया नगरका 
पातार दौर खिसलानियाँ में जाप्रान्त में दौर सिकुन्द 
दर्ज समान गायस दौर तिमेनायिय दौर जाप्रान्त 
देशका उत्सक दौर चान्फिम जाप्रान्त लो उसके संग हो 
लिये। इन्हें लीग जाके चान्फिम वह बात देखी। 
भार हम लीग जाप्रान्त रातिके पत्ते पर दिन दिनंनी पीछे 
जहाज पर फिलिपिण चले दौर पांच दिन दिन चान्फिम वह 
उसके पास पहुँचे जहां हम सात दिन रहे। 
हर्षके पहले दिन जब शिक्षा लीग रातिके तोड़ने-
कर एक्कर हुए तब पानवने जो अलगा दिन चले जानेपर 
था उनसे बाते। निये दौर जाप्रान्त में बात करता 
रहा। जिस उपराती काटरी में वे एक्कर हुए थे उसमें 
गुरुत्र दीपक करते थे। दौर उत्तन नाम एक जवान 
खिड़कौप बैठा दुधा भारी नींदसे तुफ रहा था। दौर 
पानवने बड़ी बेंगल में बात करते थे। वह नींदसे भुकमे 
ती सी चाटारी में नीचे गिर पड़ा दौर मूचा उठाया 
गया। परन्तु पानवने उसकी उसपर दौर में पड़ गया। 
दौर उसे गोटिके लेके बाला मत धूम कहाँ किया-
कि उसका प्राण उसमें है। तब ऊपर जाके दौर राति 91 
तोड़के दौर खाके दौर बड़ी बेंगल में भारतक बात चीत 
कर्के वह चला गया। दौर वे उस जवानके जीते ले 12 
भारी दौर बहुत शांति पाई।
२० पढ़िे ।] प्रारंभाकी क्रिया । ४१५

३३ तब हम लोग झागते जहाजपर चढ़के सासस

नगरको गये जहांसे हमें पावलको चढ़ा लेना या कृपा-

कि उसने यूं ठहराया या इसलिये कि झापही पेटल

३४ जानेवाला था । जब वह आससमें हमसे ब्रा मिला

३५ तब हम उसे चढ़ाके मितुलनी नगरमें झाये । चौर

बहांसे बैठके हम टूसरे दिन खैया टायङके चामक्षे

पहुंचे चौर झगले दिन सामा टायङमें लगान किया फिर

झागुलिया नगरमें रहके टूसरे दिन मिली नगरमें

३६ झाये । कृपा कि पावलने दुफसकी एक चौर चौड़के

जाना ठहराया इसलिये कि उसको आशियामें आबेर

न लगे कृपा कि वह श्रीमा जाता या कि जो उससे बन

पड़े ता पैंतिकापु खाके दिनलां यिहूदिलीमें पहुंचे ।

३० मिलीतसे उसने लोगेंको दुफस नगर भेजके मंडली-

३८ के प्राचीनको बुलाया । जब बे उस पास झाये तब उसने

उनसे बहा तुम जानते है कि पहले दिनसे जा में

आशियामें पहुंचा में हर समय कृपाकर तुम्हारे बीचमें

३९ रहा । कि बड़ी दीनताइते चौर बहुत रा रोके चौर

उन परीश्चालामें जा सुभाष यिहूदियांकी कुमांचशास्ति

३० त्वरों में प्रभुको सेवा करता रहा । चौर कृपाकर में लां-

भानी बातांमें केहां बात न रख छाड़ी जा तुम्हें न बताईं

३१ चौर लोगेंको झागे चौर घर घर तुम्हें न सिखाई । कि

यिहूदियां चौर युनानियांकी भी में साधौ पेवलै मैंद्वरके

झागे पशुचालाय करनेको चौर हमारे प्रभु योगु लीणपूर

३२ बिज्ञास करनेकी बात कहता रहा । चौर घर देखा में

झातमासे बना हुसा यिहूदिलीमें जाता हूँ चौर नहीं
जानता हूँ कि वहां मुक्तर क्या पड़ेगा। बेवल यही २३ जानता हूँ कि पवित्र भाव मन नहीं तब भी धीरे तब ने लिये घर हैं। परन्तु मैं किसी २४ बातकी चिन्ता नहीं करता हूँ जोर न अपना प्राप्त है तब भी भेदवरकी सुनायी सबसे योग्य देनकी सेवकाईकी जो मैंने प्रभु योजके पाई है पूरी करना बहु-मूल्य है। जोर अब देखा में जानता हूँ कि तुम सब २५ जिन्होंने मैं ईश्वरकी राज्यको योग्य तुम दिया फिर हूँ मेरा मुख फिर नहीं देखा। इसलिये मैं नारकी दिन ईश्वर-२६ की साह्यी रखके तुमसे कहता हूँ कि मैं सभी ली नींदीहैं। कोई नेमकी ईश्वरकी सारे मतमसे बात २० न रख छोड़ौं जो तुम्हें न बताई। तो अपने विषयमें ओ २८ जोर देकी विषयमें जिसी बीचमे पवित्र भाव भावकी तुम्हें रखके ठहराये हैं सचेत रहा कि तुम ईश्वरकी संदेहकी चरवाही करो जिसे उसके अपने लिए मेल लिया है। कोई नेमकी यह जानता हूँ कि मैं नारकी पीढ़ी २८ कोर हुंदार तुम्हारी प्रवृत्त करेंगे जो फुंडकी न होंगी। तुम्हारही बीचमसे भी मनुष्य उठेंगे जो शिपण्ड्री अपने ३० पीढ़ी में बीच लेनकी रेडी बात कहेंगे। इसलिये मैंने जो ३१ तीन बरस रात है जोर दिन रो रोके हर एकका चिताना न छोड़ा यह स्मरण करते हुए जागते रहो। जोर अब इं ३२ है भालिये में तुम्हें ईश्वरकी जोर उसकी योग्यताकी बचन-की सांप देता हूँ जो तुम्हें सुधारने जोर सब पवित्र किये हुए लोगके बीचमका अधिकार देने सकता है। मैंने किसी-३३
के रूपे जानवा साने जानवा बस्तका लाजच नहीं किया।

तुम शापही जानते हैं कि इन हायें मेरे प्रयोजनको

शैर मेरे संगियंको रहल किर्दे। मैंने सब बातें तुम्हें बताईं विस्म मेरे रितिसे परिषम करते हुए दुबलेका उपकर करना शैर प्रभु योशुइं बातें सम्राह करना चाहिये कि उसने कहा लेनें देना अधिक धनय है।

यह बातें कहके उसने अपने घुरने रेखके उन समय-ये संग प्रायेखा किर्दे। तब वे सब भहुत रोये शैर

पाँवके गलें मिलने रहिये उसे चुमने लगे। वे सबसे अधिक उस बातसे शोक करते थे जो उसने कही थी कि तुम मेरा मुंह फिर नहीं देखा रे। तब उन्होंने उसे जहाजको पहुँचाया।

21 इकाईसवां पढ़े।

1 पावलका शैर नगरमें माणिक्यसे मंड फलना। 2 कैपिया नगरमें चलिये मंड फलना। 10 ब्राह्मणका भविष्यातथा शैर पावलकी बहुतई। 15 शैर तवके संगियंको विस्मलाईमें पहुँचना। 18 भाषिया पावलको प्रतिमा रेणा।

2 विहारियंको उसको पकडना। 21 रेणी सबसंपत्तका उसे विजयंको ढापके झीन लेना। 30 शंभियसे पावलकी बातची।

जब तुमने उससे झंग होके जहाज खोला तब सिधे सिधे कौस टैपूकी चले शैर दूसरे दिन राउट टैपूकी।

शैर बहांसे पातारा नगरपर पहुँचे। शैर एक जहाजको जा पैनी बोलियाको जाता था पाले हमने उसपर ढूंढके खोल दिया। जब कुप्रस टैपू देखनेमें झाया तब हमने उसे बायें हाथ झीडा शैर सुरियाको जाके सैर नगरमें लगान किया। तब कीं कि जहाजकी बोलत्ता वहा 8 उतरनेर पर थे। शैर बहांसे शिपियंको पाले हम वहा।
सांत दिन रहे. उन्हें अभ्रत्माकी शिक्षास्व पावलसे कहा यिहशलीमको न जाईये। जब हम उन दिनें- की पूरे कर चुके तब निकलको रहने लगे शियर समेत हमें नगरके बाहरलें भुन्हाया शियर हमें नीरपर घुटने रेके पार्ष्ना किंच। तब एक दूसरेको गले लगाको हम तो जाहाजपर चढ्छे शियर वे अपने अपने घर बाइटे।

तब हम शोरसे जलयाचा पूरी करके तलमाई नगरमें पहुंचे शियर भाइयेंको नामस्कार करके उनको संग एक दिन रहे। दूसरे दिन हम श्री पावलको संगकें जहाँसे बलको बैसाहियमें बाइए शियर फिलिप सुसमाचार प्रचारको घरमें जो सातोमसे एक था प्रवेश करके उसको यहां रहे। इस मनुष्यको चार कुवारी प्रूचियाँ थीं जो भविष्यद्वारी कहा करती थीं।

जब हम बहुत दिन रह चुको तब श्रागाव नाम एक भविष्यद्वारका यिहूदीयासे श्राया। वह हमारे पास श्राये श्री श्राय पावलका पट्टका लेकी श्राय अपने हात श्राय पाँव बांधको बोला पविच अभ्रत्मा यह कहता है कि जिस मनुष्यका यह पट्टका है उसका यिहशलीममें यिहूदी लोग यूहें बांधने श्राय अन्यदेखियांको हाथ सापंगे। जब हम से यह बार्तें सुनी तब हम लोग श्राय उस स्थानके रहनेहरु भी पावलसे बिन्नी करने लगे कि यिहशलीमको न जाईये। परन्तु उसको उतर दिया कि तुम क्या करते हैं कि रोते श्राय मेरा मन चूर करते हैं। में ता प्रभु यीशुके नामको लिये यिहशलीममें
केवल बांधे जानिए नहीं परन्तु मरनेको भी तैयार 14 हूं। जब वह नहीं मानता था तब हम यह कहके चुप हुए कि प्रभुको इच्छा पूरी होवे ।
15 इन दिनोंकी पीछे हम लागे बांधे बांधको यिस्क्षनीम- 16 को जाने लगे । वैदिन्यवाे रिख्योंमें भी कितने हमारे संग है लिये चार मनासून नाम कुप्रसके एक प्राचीन रिख्यके रास जिसके यहां हम पाहुन होवे ।
17 हमें पहुँचाया । जब हम यिस्क्षनीममें पहुँचे तब भाईयोंने हमें बाननद्वे यह वाय खिया ।
18 दूसरे दिन पावल हमारे संग याकूबके यहां गया ।
19 चार सब प्राचीन लागे ढ़ाये । तब उसने उनको नम- 20 स्कार कर जो जो कमरे देखती उसकी रेकाईवे द्वारासे चान्दनक्षीयमें खिये पे उन्हें एक एक करके बर्जन खिया ।
20 उनहाँने सुनके प्रभुकी स्तुति किता चायर उससे कहा है भाई चाय देखते है कितने सहस्रों यिस्क्षयोंने बियवास 21 खिया है चायर सब ब्यवस्थाकी लिये पुन लगाये हैं। चायर 22 उनहाँने चायकी वियवयमें सुना है कि चाय चान्दनक्षीयमें बीचमें सब यिस्क्षयके तैदै मूसाीको त्याग करनेका सिखाते है चायर कहते हैं कि चायने बानकोंका खतना 22 मन करो चायर न ब्यवहाररांपर चलो । से कहा है कि बहुत लाग निविषय एकटे हाँगे कीयकि वे सुनेंगे कि चाय 23 खायें । इसलिये यह जो हम चायसे कहते हैं कीजिये ।
24 हमारे यहां चाय मनुष्य हैं जिन्होंने मध्य मानी है । उन्हें 25 लेखे उनके संग अपनेको शुद्ध कीजिये चायर उनके लिये ।
र्कों दीजिये फिर वे सिर मुंडवे तब सब लाग जानेंगे फिर
जा बातें हमने इसके विषयमें सुनी थीं सो कुछ नहीं है परन्तु वह साप भी व्यवस्थाओं पालन करते हुए उसके अनुसार चलता है। परन्तु जिन अन्यदेशियों ने विश्वास २५ किया है हमने उनके विषय में यही ठहराये लिख भेजा कि वे ऐसी बात न माने बेचवल मरतांके जाने बति किये हुएसे बार लोहुसे बार गला बांटे हुसंबा मांससे बार व्यभिचारसे बचे रहें। तब पावलने उन मनुष्योंके साधारणरूपी दिन उनके संग शुद्ध होके मन्दिरमें प्रवेश किया बार सन्देश दिया कि शुद्ध होके दिन अर्थात उनमंसे हर एकके लिये चढ़ावा चढ़ाये जानेतके दिन के पूरे होंगे।

जब वे सात दिन पूरे होनेपर थे तब बाबुस याके २७ विहूदियोंने पावलके मन्दिरमें देखके सब लगाकर उसकाया बार उसपर हाथ हालके पकारा। है इससे- २८ येली लगी सहायता करता यही वह मनुष्य है जो इन लगाकर बार व्यवस्थाके बार इस स्थानके विनियम सब में सब लगाकर उपदेश देता है। हा बार उसके यूना- नियोंको मन्दिरमें लाकर इस पवित्र स्थानके अववर्तिक भी किया है। वहीके तो इसमेंपहले चाहिए इफिको २८ पावलके संग नगरमें देखा था बार समझते थे कि वह उसके मन्दिरमें लाया था। तब सारे नगरमें घबराए- ३० हर हुई बार लाग एकदेखी बार पावलके पकड़के उसे मन्दिरके बाहर खूंच लाये बार तुर्कत हुए मन्दे गये।

जब वे उसे मार हाज़ी चाहते थे तब पलटके सह- ३१ सपतिशेष सन्देश पहुँचा कि सारे विलुस्नीमें घबराहर
तब वह तुरन्त यादुआँको शीर शतपतियोंको लेके उन पास दौड़ा शीर उन्होंने सहस्रपतिका शीर यादुआँको देखके पावलको मारना बाढ़ दिया। तब सहस्रपतिने निकार भाके उसे लेके शाज्जा किया किन्रे न्द्रा जाय शीर पूछने लगा यह कैन है शीर क्या किया है। परन्तु भीड़में काई कुछ शीर काई कुछ पुकारते थे शीर जब सहस्रपति हुल्ला भाने मारे निघच्छ नहीं जान सकता था तब पावलको गड़में ले जानकी शाज्जा किया। जब वह सीढ़ीपर पहुँचा ऐसा हुआ कि भीड़की बरियाँदeurs कारण यादुआँको उसे उठा लिया।
कींको ले गांवी भीड़ उसे दूर कर पुकारती हुईं पीछे जाती थी।
जब पावल गड़के भीतर पहुँचाये जानेपर था तब उसने सहस्रपतिसे कहा जो आपसे कुछ कहनेकी मुफ्त शाज्जा हाय तो कहूं। उसने कहा कहा तू युनानीय भाषा जानता है। तू क्या तू वह मिसरी नहीं है जो इन दिनांको शागे बलवा करके कटारबन्ध ले-गांवसे चार सहस्र मनुष्योंको जंगलमें ले गया। पावलने कहा में ते तारसका एक बहुती मनुष्य हूं। जिल्लिकियाओ एक प्रसिद्ध नगरका निवासी हूं। शीर में आपसे बिन्ती करता हूँ कि मुफ्त ले-गांवसे बात करने दीजिये।
जब उसने शाज्जा दिया तब पावलने सीढ़ीपर खड़ा होके ले-गांवको हापसे सैन किया। जब वे बहुत चुप हुए तब उनसे द्वैतीय भाषामें उनसे बात कीई।
22 बाईसवां घब्बे।

1 यिहूदी सेवाओं प्रावलकी कक्षा। 22 विमलपिरोजका उसे चारे मार्मकी भावा देना चेत किर होऊँ देना। 30 उसका विनोभियोंकी न्यायभावोंकी झालो का क्रिया बनाना।

उसने कहा है भाइयों श्रीर पितरो मेरा उत्तर जो मैं जाप ले गांसकी झागे झब देता हूँ सुनिये। वे यह सुनकर रंगे रहे हमसे इबाई भावामें बात करता है श्रीर भी जुप हुए। तब उसने कहा मैं तो यिहूदी मनुष्य हूं जो भिनिकियोंकी तारस नगरमें जन्मा पर इस नगरमें पाला गया श्रीर गमलियोंकी चरणेंधरोंकी पास पित्रोंकी व्यव-स्थायी ठीक रीतियप सिक्खाया गया श्रीर जैसे श्राज तुम सब हैं ऐसही देवरके लिये धुन लगाये था। श्रीर मैंने इस पन्थे ले गांसकी मृतुलें सताया कि पुर्यों श्रीर स्तिथेंकी भी बांध बांधके बनदीरूढेंमें ठालता था। इसमें महायाजक श्रीर सब प्राचीन ले ग मेरे साध्यों हैं जिनसे मैं भाइयोंकी नामपर चिठ्ठियाँ पास दमेसबंको ठालता था किजे वहाँ थे उन्हें भी ठाइना पानकी बांध हुए यिहूद-लीमें लाए। परल्लु जब मैं ठालता था श्रीर दमेसको 6 श्मीय पहुँचा तब दो पहर्वकेनिकट झाँचाक बड़ी ज्योति स्थायी से मेरी चार्यों श्रीर चमकी। श्रीर मैं भूमिपर गिरा श्रीर एक शब्द सुना जो मुहस्ते बोला है शावल है शावल तू मुहसे की सताता है। मैंने उत्तर दिया कि है प्रभु तू कैल है। उसने मुहसे कहा मैं योगु नासोरी हूं जिसे तू सताता है। जो ले ग मेरे संग थे उन्होंने वह 8 ज्योति देखी श्रीर हर गये परल्लु जो मुहसे बोलता था
२२ पन्ने । ]

प्रेतलंकी क्रिया।

२२ उसकी बात न सुनी। तब मैंने कहा है प्रभु मैं क्या कहते। प्रभु ने मुझसे कहा उठके दमेसकर्का जा श्रीर जो जो काम करनेका तुम्हे ठहराया गया है सबके विषयमें

२३ वहां तुफसे कहा जायगा। जब उस ज्योतिके तेजके मारे मुझे नहीं सुकरता था तब मैं झपने संगियांके हाथ पकड़े।

२४ हुए दमेसकर्के श्राया। श्रीर जननियांह नाम व्यवस्थाके आनुसार एक भक्त मनुष्य जो बहांके रहनेहारे सब

२५ यिहूदियांके यहां सृष्टा था मेरे पास श्राया। श्रीर निजात खड़ा होके मुझसे कहा है भाई शावल झपने

२६ दृष्टि पा श्रीर उसी घड़ी मैंने उसपर दृष्टि किये। तब उसके कहा हमारे पितारोंके देशवरने तुम्हे ठहराया हैं कि

२७ उसकी इच्छा की जा ने श्रीर उस धम्मीका देखे श्रीर

२८ उसके मुंहसे बात सुने। क्योंकि जो बातें तूने देखी श्रीर सुनी हैं उनके विषयमें तू सब मनुष्योंके झागे उसका

२९ साँझ होगा। श्रीर जब तू कीं बिंक बारता है। उठके

३० बयानसमा ले श्रीर प्रभुके नामकी प्रायणा करके झपने

३१ प्रायोंके था डाल। जब मैं यिह्रश्लीमको फिर झाया

३२ श्रीर उसके देखा कि मुझसे बोलना था शोषिता करके

३३ तेरी साँझी यहां न करिंगे। मैंने कहा है प्रभु बे

३४ जब तेरे साँझी स्तिफानाका लेहू वहां जाता था तब

३५ मैं भी झाय निकात खड़ा था श्रीर उसके मारे जानेमें
सम्मति देता था शीर उसके धातकोंके कपड़ोंकी रख-चाली करता था। तब उसने मुफ्ते कहा चला जा 29 क्योंकि मैं तुमें खाने तो शिक्षाकिंद्रे नाम पास दूर भेजूँगा।

लेगा ने दस बातलें उसकी सुनीं तब जंगी शब्दसे 22 पुकारा कि ऐसे मनुष्यका प्रौढीपरसे दूर कर कि उसका जीता रहना उचित न था। जब वे चिल्लाते 23 शीर कपड़े फंकते शीर झाकाश धूळ उड़ाते थे। तब 24 सहस्पतिति उसकी गद्दे में ले जानकी झांझा किंद्रे शीर कहा उसे कोई मारकी जांचा कि मैं जानूँ लोग किस कारणसे उसके विभिन्न ऐसा पुकारते हैं। जब वे पावलके 25 चमड़ेके बंधीसे बांधते थे तब उसने शतपतिति झा खड़ा या कहा क्या मनुष्यका जो रामी है शीर दंडके योग नहीं ठहराया गया है कोई मारना तुम्हें उचित है। शतपतिति यह सुनके सहस्पतिति पास जाने कह दिया 26 कि देखिये धाम क्या किया चाहिए हैं यह मनुष्य तो रामी है। तब सहस्पतिति उस पास जाके उससे कहा 29 मुफ्ते कहा तू रामी है। उसने कहा हां। शहस- 28 पति उतर दिया कि मैंने यह रामानवासीकी पदवी बहुत रूपांतर मेल किये। पावलने कहा परंतु में ऐसाही जन्मा। तब जा लोग उसे जांचनेपर थे ती 25 तुरन्त उसके पास से हट गये शीर सहस्पति भी यह जानकी कि रामी है शीर मैंने उसे बांधा है दर गया।

शीर दूसरे दिन वह निश्चय जानने चाहता था कि 30 उसपर यिहूदियोंसे कोई दोष लगाया जाता है इसलिये उसकी बंधनेंसे खेल दिया शीर प्रधान याजकों का
श्रीर न्यायोंकी सारी समाको ज्ञानकी झाड़ा दिई 
श्रीर पालवको लाकस उनकी झागे खड़ा किया।

२३ तैद्दस्वां पन्थें।

१ पालवको क्रा श्रीर समाको विभिन्न क्षेत्र। २२ चालोक कलेकका उदे मार 
झानेका निवास बाध्यन। २१ पालवको मौजका महायाजका तथा जातका 
शंदेश देना। २२ पालवका श्रीलक्ष प्रणयके पाया भेजा जाना। २४ 
शंदेशका पत्र। २५ पालवका श्रीलक्षके पाया पदुस्थ।

० पालवले न्यायोंकी सभाको श्रीर ताककी कहा हे 
भाइयो में इस दिनलें समेथा इंधवरकी झागे शुद्ध मनले 
हुँ। परन्तु ज्ञानियाह महायाजकने उन लेगोंकी 
श्री उसकी निकट खड़े थे उसकी सुहमें मारनेकी झाड़ा 
दिई। तब पालवले उससे कहा हे चूना फेरी हुई। भीति 
इंधवर तुम्हें मारेगा। क्रा तो मुम्मे व्यवस्थाके ज्ञानसार बिचार 
करनेके बेटा है श्रीर व्यवस्थाकी लघुन करता हुसा 
मुम्मे मारनेकी झाड़ा देता। श्री लेग निकट खड़े थे ता 
बीले क्रा तो इंधवरकी महायाजकी निन्दा करता है।

४ पालवले कहा हे भाइयो में नहीं जानता था कि यह महायाजक है। क्यांकि लिखा है अपने लेगोंके प्रधानकी बुरा 
मत कह। तब पालवले यह जानके किंग एक भाग स्टूकी 
श्रीर एक भाग फरीशी हैं समसे पुकारा है भाइयो 
फरीशी श्रीर फरीशीका पुछ हूँ मूतकींकी क्षासा 
श्रीर जी उठनेके विपणमें मेरा बिचार किया जाता है।

७ जब उसले यह बात कही तब फरीशियाँ श्रीर स्टूकीयें-
में विवाद हुआ श्रीर समा बिभिन्न हुई। क्यांकि स्टूकी 
कहते हैं कि न मूतकींका जी उठना न टूट न झालमा 
है। परन्तु फरीशी दोनांकी मानते हैं। तब बहुः धूम मची
शैर जैसा चाहा आपका फरीशियांके भागके थे सो उनके लड़ते हुए कहने लगे कि हम लोग इस मनुष्यमें कुछ बुराई नहीं पाते हैं परन्तु यदि शैर आत्मा अयप्ता दूर उससे बोला है तो हम इश्वरसे न लड़ें। जब बहुत १० विबाद हुआ तब सहस्रपतिको शंका हुई कि पावल उससे फाड़ न डाला जाय इसलिये पलटनको लाभा दिये कि जाने उसके उसके बीचमें छोनके गड़में लाए।

उस रात प्रभुभरे उसके निकट बैठे ही कहा है पावल ११ दाख्तक कर किंतु जैसा तूने यिहूदीलोगमें मेरे विषयमें-बी सात्ती दिये है तैसाही तुफेरोमें भी सात्ती लिया होगा।

विहान हुए कितने यिहूदियाँने एका करके प्रण बांधा १२ कि जबलें हम पावलको मार न हालें तबलें जा खायें अयप्ता पीयें तो हमें धिक्कार है। जिन्हाओं आपसमें यह १३ फिरिया खाई थी सा चालोस जनसंपी साधिक थे। वे १४ धार्मन यात्राको शैर प्राचीनके पास जाके बोले हमने यह प्रण बांधा है कि जबलें हम पावलका मार न हालें तबलें यदि कुछ चीजें भी तो हमें धिक्कार है।

इसलिये चब आग लोग न्यायोंकी सभा समेत सहस-१५ पतिको समझाइये कि हम पावलके विषयमेंकी बातें शैर टीक करके निषेध करने सा अच उसे कल हमारे पास लाई। परन्तु उसके पहुंचने को पहलेही हम लोग उसे मार हालनेको तैयार हैं।

परन्तु पावलके भाजने उनका घातमें लगना सुना १६ शैर आगे गढ़में प्रवेश कर पावलका सन्देश दिया। पावलने श्रद्धापतियाँमें एका अपने पास बुलाके कहा १०
इस ज्ञानको सहस्रपतिको पास ले जाइये क्योंकि उसको
18 उससे कुछ कहना है। सो उसने उससे ले सहस्रपतिको पास लाकर कहा पाबल बन्धुवेंने मुझे अपने पास बुलाके बिनती कियी कि इस ज्ञानको सहस्रपतिको कुछ कहना
19 है उसे उस पास ले जाइये। सहस्रपतिको उसका हाय पकड़के श्रीर एकांतमें जाके पूजा तुमको जो मुझसे कहना है सो कहा है। उसने कहा यहूदियोंने अपने यही बिनती करनेको अपसमें ठहराया है कि हम पाबलके विघममें कुछ बात श्रीर ठीक करके पूछिए सो।
20 शाय उसे कल व्यावहारकी समार्थको लाइये। परन्तु शाय उनकी न मानिये क्योंकि उनसमें चालीससे अधिक मनुष्य उसकी धातुमें लगें हैं जिन्होंने यह प्रश्न बांधा है कि जबलां हम पाबलको मार न हालें तवलों जो शायें अश्वता पीयें ता हमें धिक्कार है श्रीर शब वे तैयार हैं श्रीर शायकी प्रतिष्ठाकी शास देख रहें हैं।
21 सो सहस्रपतिको यह शाया देके कि किसीते मत कह कि मेंने यह बातें सहस्रपतिको बताईं हैं ज्ञानकों, बिदा
22 किया। श्रीर शतपतियांमें देखको अपने पास बुलाके उसने कहा दो सो। यहाँ श्रीर शत घुड़चढ़ों श्रीर दोसों भालीतांको यहर रात बीते बैसरियाको जानकी
23 लियें तैयार करें। श्रीर वाहन तैयार करें। किवे पाबलको बैठके फोलिंकस्थ अध्यादेशको पास बचाके ले जावें।
24 उसने इस प्रकालकी चिट्रों भी लिखी। कौदिय लुसिय महामहिमन अध्यादेश फोलिंकस्को नमस्कार। इस मनु-
25 प्रयोको जो यहूदियोंसे प्रकट गया था श्रीर उनसे मार
हाले जानेपर या मैंने यह सुनके विश वह रोमी है
पलटने के संग जा पहुंचके छुड़ाया। चौर मैं जानने सै
बाहता था कि वे उसपर बिस कारणे दृष्ट लगाँते
हैं इसलिये उसे उनकी न्यायिकी समामें लाया। तब 28
मैंने यह पाया कि उनकी व्यवस्थाओं बिबादों को विशय में
उस पर दृष्ट लगाया जाता है परन्तु वध किये जाने
शयना बांधे जानके योग्य कैदः दृष्ट उसमें नहीं है।
जब मुके बताया गया कि विदुही लोग इस मनुष्यी की 30
घातमें लगाये तब मैंने तुरंत उसके शायद पास भेजा
चौर देशदूतलोंको भी जाना दिये कि उसके विदुह
जो बाल है उसे शायद जाने कहीं। ज्ञान शुभ।

यहाँ लोग जैसे उन्हें जाना दिये गई थी तैसे पा—31
बच्चों। लेके रातही शान्तिपाची नगरमें लाय।
दूसरे दिन वे गढ़की लौटे चौर घुड़चढ़की उसके संग 32
जाने दिया। उन्हें अर्थार्यांमें पहुंचके चौर शाध्या—33
की चिटू की पावलकों भी उसके ज्ञाने खड़ा किया।
शाध्याजी पढ़के पूछा यह कौन प्रदेशमें है चौर जब 34
जाना कि जिलियलिया है। तब कहा जब तेरे दृष्ट—35
दूरक भी ज्ञानें तब मैं तेरी सुनूंगा। चौर उसने उसे
हेतुदाते राजमंडल में पहरें में रहनेकी जाना दिये।

24 चौरससाव्य पढ़े।

1 कीलिककी शावी विदुहीको पावलय पालिश करना। 10 पावलका उत्तर।
22 उनके विशयमें कोलिककी जाना। 24 उनका कोलिककः चौर उसकी पढ़ी—
के द्वारकाकी ज्ञाने करना।

पांच दिनके पीछे ज्ञानिययाह महायाजक प्राचीनांके
चौर तत्त्व नाम किसी सुविकाले संग ज्ञान चौर उन्हें
2 अध्यक्षों के खास गाया पावलयर नालिश किए। जब पावलयर
बुलाया गया तब तर्क यह कहके उसपर देश लगाने
लगा कि है महामहिमन फोलिक्स झापके द्वारा हमारा
बहुत कल्याण जो होता है झाप झापकी प्रवीक्षातिसे इस
देशके लोगांके लिये कितने काम जो सुफल होते
3 हैं। इसका हम लोग सब्जिया झाप सब्जिया बहुत धन
4 मानके यह बना करते हैं। परन्तु जिसीं मेरी झापके
झापके अधिक बिलाब न हो यह में बिलाब करता हूँ
कि झाप झाप इनके सुशीलतातिसे हमारी संशोध
5 लीजिये। क्योंकि हमने यही पाया है कि यह मनुष्य
एक मरीज़ी ऐसा है झाप झाप से राय यही दिये
बलवा करनेहरा झाप झापकी कुपन्यका प्रधान।
6 उसने मन्डरके भी झापविच करनेकी चेष्टा किए झाप
हमने उसे पकड़के झापनी व्यवस्थाओं अनुसार विचार
0 करने चाहा। परन्तु लुसिय सहस्यपतिने झापके बड़ी
बरियाईंसे उसका हमारे हाथने झीन लिया झाप हम-
के टापटायकोंकी झापके पास झापकी झापा दिई।
8 उसीसे झाप पूछते इन सब बातेंकी विषयमें जिनसे हम
उसपर देश लगाते हैं झापही जान सकेंगे। यही दिये-
जिने भी उसके संग लगाके कहा यह बातें यूंतियों हैं।
10 तब पावलयर जब अध्यक्षों वालनेका सैन उससे
किया तब उत्तर दिया कि में यह जानकि कि झाप
बहुत बरसांसे इस देशके लोगांके व्यायि हैं झापही
साहसिक झापने विषयमें बतातोंका उत्तर देता हूँ।
11 क्योंकि झाप झाप सकतें हैं कि जबसे में यिल्यालससस्में
भजन करनेका भक्ति मुझे चारह दिनसे अधिक हारी हुई। श्रीर उन्होंने मुझे न मंदिरमें न समाजके घरेलू न नगरमें किसीसे विवाद करते हुए भयबा लोगेंकी भीड़ लगाते हुए पाया। श्रीर न वे उन बातेंकी १३ जिनकी विषयमें वे मुक्तमपर देख लगाते हैं उहरा सकते हैं। परन्तु यह में भाषके भक्ति मान जेता हूं १४ कि जिस मार्गके वे कुपन्य कहते हैं उसीकी रीतिपर में अपने पितारंगोंकी ईश्वरकी सेवा करता हूं श्रीर जो बातें व्यवस्थामें श्रीभविष्यदकाशाकोंके पुस्तकें लिखी हैं उन समेंका विवास करता हूं। श्रीर ईश्वरसे भाषा १५ रखता हूं जिसे वे भी भाषाके रखते हैं कि धर्मी श्रीर अध्यमीं भी सब मृतकोंका जी उद्घाटन होगा। इससे में १६ भाषा भी साधना करता हूं कि ईश्वरकी श्रीर मनुष्यों-वर्ती श्रीर मेरा मन सदा निरांश रहें। बहुत बदतांकी १७ पीछेमें अपने लोगेंकी दान देनेकी श्रीर चढ़ावा चढ़ानेकी भक्ति। इसमें इनहें नहीं पर भाषाशियाके १८ कितने गिनहदेंजाने मुझे मंदिरमें हुए किये हुए न भीड़के संग श्रीर न धूमधामके संग पाया। उनकी उदचत १९ था कि जी मेरे दिशक उनकी किने बात होय तो यहां भाषके भक्ति होते श्रीर मुक्तमपर देख लगाते। भयबा २० यहीं लेगी भाषाके कहें कि जब मे न्यायशंका समाके भक्ति बढ़ा था तब उन्हें मुक्तमें कृतस्माके कुक्तमपर पाया। केवल इसी एक बातके विषयमें जो मैंने उनके बीचमें २१ बढ़ा होके पुकारा कि मृतकोंके जी उनकी विषयमें मेरा विचार भाषा तुमसे किया जाता है।
22 यह बातें सुनके फोलिक्सने जो इस मार्गकी बातें
बहुत ठीक करके वृद्धता था उन्हें यह कहने ताल दिया
कि जब लुटिय सहस्रपति शास्त्री तब मैं तुम्हारे विश्वास-
23 की बातें निर्णय करलगा। शैर उसने शतपतिका शाहा
दिए कि पावलकी राष्ट्र कर पर उसको अवबाह हें
शैर उसके विचारमें में किसीका उसकी तेवा करने
अथवा उस पास खानेमें मत रोक।
24 कितने दिनेंके पीछे फोलिक्स अपनी स्त्री दुसिल्लार्के
संग जो धिहुदिनी थी शाशा शैर पावलकी बुलवाके
25 खीरूपर विश्वास करनेके विश्वमें उसकी सुनी। शैर
जब वह धम्म शैर संयमके शैर श्यामवाले विचारके
विश्वमें बारे करता था तब फोलिक्सने भयमान होके
उतर दिया कि श्राब ता जा शैर अवसर पाके में तुम्हे
26 बुलांका। वह यह शाशा भी रखता था कि पावल मुझे
हपपैये देगा कि में उसे छोड़ दें। इसलिये शैर भी बहुत
27 बार उसकी बुलवाके उससे बातचीत करता था। परन्तु
जब दो बरस पूरे हुए तब फीछे पीछे फोलिक्सका
क्षाम पाया। शैर फोलिक्स धिहुदिनयंका मन रखनेके
इच्छा कर पावलकी बंधा बुला छोड़ गया।
28 पचीसवां पढ़िए।

1 फीछे पावलके बोवदरणकोके कैसरियमें पुस्ताना। 4 पावलका फीछे खाने
विचार शेषा शैर कैसरकी वेशार्क देना। 13 कौशुका फायलकी खाना प्राघिपासे
कहना। 28 विचार खानेमें कौशुका कथा।

1 फीछे उस प्रदेशमें पहुँचे तीन दिनके पीछे कैसरियमें
2 से धिहुदिनयंका गया। तब महायजनके शैर धिहू-
दियंके बहे ले गये उसके खाने पावलपर नालिश किये।
श्रीर उससे बिन्ती कर उसके बिस्त्र यह अनुयाह चाहा २ कि वह उसे यिहूदीमें संगवाय क्यौंकि वे उसे मार्गमें मार हाजिरको घात लगाये हुए थे। फीज्ये उत्तर दिया ४ कि पावल राष्रियामें पहरेमें रहता है श्रीर में शाय वहां शीघ्र जांगंग। फिर बेला तुम्हारे से सामर्थ्य ५ लोग हैं तो मेरे संग चलें श्रीर जो इस मनुष्यमें कुछ द्राप होय तो उसपर द्राप लगायें।

श्रीर उनके बीचमें दस एक दिन रहके वह कैसरिया-की गया बेला दूसरे दिन बिचार ासनपर बैठके पावलकी लानेकी शागा किई। जब पावल शाया ६ तब जो यिहूदी लेग यिहूदीमें शाये थे उन्हाँने ासपास खड़े होके उसपर बहुत बहुत श्रीर भारी भारी द्राप लगाये जिनका प्रमाण वे नहीं देसकते थे। परन्तु ८ उसने उत्तर दिया कि मैंने न यिहूदियांको ब्यवस्थाके न मान्दरके न कैसरके बिस्त्र कुछ अपराध किया है। तब फीज्ये यिहूदियांका मन रखनेकी हुष्ठा कर पा- १० वलको उत्तर दिया क्या तू यिहूदीमें जाकी वहां मेरे शाये इन बाताँको विषयमें बिचार किया जायगा। पावलने कहा में कैसरके बिचार ासनके शाये खड़ा १० हूं जहां उचित है कि मेरा बिचार किया जाय। यिहू- दियांका जैसा शाय भी शाय रीतिसे जानते हैं मैंने कुछ अपराध नहीं किया है। क्यौंकि जै में अपराधी ११ हूं श्रीर बघके याग्य कुछ किया है तो मैं मृत्युसे छुड़ाया जाना नहीं मांगता हूं परन्तु जिन बाताँके वे मुकपर े द्राप लगाते हैं यदि उनमें कराई बात नहीं ठहरती है।
ता बाढ़े मुझे उन्हें के हाथ नहीं सांप सकता है \( \text{मैं} \) ने 12 बैसलकी दोहाई देता हूँ। तब फीघुने मंचियों की सबसे सेवा वात करके उत्तर दिया क्या तूने बैसलकी दोहाई दिए हैं \( \text{तू} \) बैसलकी पास जायगा।

13 जब फिटे दिन बीत गये तब झाड़ीया राजा श्रीरवर्णकी फीघुकी नमस्कार करनेको बैसलियोंमें झाड़ी-या श्रीर उनके बहुत दिन वहां रहते रहते फीघुने पाँवलखी क्या राजाको सुनाई कि एक मनुष्य है जिसे फोसिकस 15 बंघर में भ्रष्ट गया है। उसपर जब मैं सियालमें था तब प्रधान याजकोंने श्रीर यिहूदियोंके प्राचीनोंने नाजिश्व फिक्स श्रीर चाहा कि दंडकी झाड़ी उसपर दिए जाय।

16 परन्तु मैंने उनके उत्तर दिया रामियोंकी यह रीति नहीं है कि जबलांग वह जिसपर दोष लगाया जाता है झाड़ी दॉपदायकोंके झाड़ी सासे न हो श्रीर दॉपदायके विषयें उत्तर देनेका अवकाश न पाय तबलां जिसी मनुष्यको 17 नाश किये जानेकी लिये दोष देवें। सा जब वे यहां एकटे हुए तब मैंने कुछ विलंब न करके अगले दिन विचार चा-

18 सन्दर थे तक उस मनुष्यको जानेकी झाड़ी फिक्स। दॉप-दायकोंने उसके झासपास छड़े हाके जैसे दॉप में समकटा 19 था श्रीर कोई दोष नहीं लगाया। परन्तु झाड़ी पूजाके विषयें श्रीर जिसी मरे यिशुकी विषयें है जिसे पावल कहता था कि जीता है वे उससे फिटे विवाद जारी थे।

20 मुख्य इस विषयके विवादमें सन्देह था इसलिये मैंने कहा क्या तू फोसिकसकी जाके दर्ज रहा इन बातोंके विषयमें 21 विचार किया जायगा। परन्तु जब पावलने दोहाई दे...
कहा मुम्बे श्यग्गङ्ग महाराजासे विचार किये जानेकी रखिये तब मैंने आशा दिये कि जबलाम मैंने सेवक के पास न भेजूं तबलों उसकी रक्षा किंग्रे जाय। तब आयिपा- २२ ने फीगूसे कहा मैं भाग भी उस मनुष्यकी सुननेसे प्रसन्न होता। उसने कहा भाग कल उसकी सुनिंग।

ता दूसरे दिन जब आयिपा श्यार व्यायकिने बड़े २३ धुष्कामसे आवे सहस्रपतियों श्यार नगरके प्रभु मनुष्यवंशी संग समाज स्त्रामने प्रवेश किया श्यार फीगूसे आशा किंग्रे तब वे पावलके ले भागे। श्यार फीगूसे कहा हे २४ राजा आयिपा श्यार हे सब मनुष्यो जो यहां हमारे संग हे भाग लोग इसकी देखते हैं जिसके विषयम सारे विद्यादिगों विद्युक्षालीमने श्यार यहां भी मुखसे विनती करके पुकारा है कि इसका श्यार जीता रहना उचित नहीं है। परन्तु यह जानकी कि उसने बधके याग्य कुछ २५ नहीं किया है जब कि उसने भाग श्यग्ग महाराजाके दोहाई दिये मैंने उसे भेजनेका ठहराया। परन्तु मैंने २६ उसके विषयम कोई निर्दयकी बात नहीं पाई है जो में महाराजाके पास जिखुं इसलिये में उसे भाग लोगोंके सारे श्यार निज करके है राजा आयिपा भागकी सारे काया हैं कि विचार दिये जानकी पीछे मुफ्त कुछ लिखनी-की मिले। क्योंकि वन्यविका भेजनेमें ठाय जो उसपर २० लगाये गये हैं नहीं बताना मुफ्त संगत देख पड़ता है।

२६ छबीसवां प्रवृत्त।

१ आयिपाके भाग मारलका उतर देना। २० पाठ श्यार आयिपाके पावलकी बात-शीत। २० उसका निर्दय ठहराया भागा।
1. अथियपाने पावलते कहा तुम्हे अपने विषयमें बोलनेकी आज्ञा दिदे जाती हैं। तब पावल हाथ बढ़ाके उतरर
2. देने लगा। क्यों है राजा अथियपा जिन बातेंसे यहूदी लाग मुफ्तपर देश लगतहैं उन सब बातेंसे विषयमें अपनेकी धन्य सम्बन्ध हूँ कि राजा जानक आगे उतरर
3. देनंगा। निज करके इतनी लिये कि अथाप यहूदीयांके बीचके सब व्यवहार और विबादोंका बुझते हैं। तो मैं अथापसे विनती करता हूँ धीरज करके मेरी सुन लीजिये।
4. लड़कपनसे मेरी जैसी चाल चलन ज्ञारंभसे यिखशलीम-में मेरे लागोंके बीचमें थे। सब यहूदी लाग जातें हैं। वे जो साधक देने चाहते तो आदिसे मुक्त पहचानते हैं कि हमारे धर्ममें सबसे खरे पन्थके अनुसार मैं फरीदी-6 का चाल चला। और जब जो प्रतिज्ञा ईश्वरके पितारोंसे कहै मैं उसकी आशाकी विषयमें विचार किये जानेबो।
5. खड़ा हूँ। जिसे हमारे बारहमें कुछ रात दिन यसे सेवा करते हुए पानेकी आशा रखतहैं। इसी आशाकी विषयमें है राजा अथियपा यहूदी लाग मुफ्तपर देश लगतहैं।
6. अथाप लागोंके यहां यह कीं विद्वानसके ध्याण
7. जाना जाता है कि ईश्वर मृत्युकोंको जिलाता। मैंने तो अपनेमें सम्बन्ध कि यीशु नासरीके नामके ब्रह्मु
8. बहुत कुछ करना सुनित है। और मैंने यिखशलीमें वही किया, भी और प्रधान याज्ञवल्ले अधिकार पाके पवित्र लागोंमेंसे बहुतोंका बन्दीगृहेंमें मूंद रखा और जब वे पात, किये जाते थे तब मैंने। अपनी सम्बन्ध दिदे।
9. और समस्त सभाके घरोंमें मैं बार बार उनके
ताड़ना टेषे योगकी निन्दा करवाता था श्रीर उनपर भावना श्रायथे उन्मत होके वाहले नगरांतक भी सताता था । इस बीचमें जब मैं प्रधान याज्ञवल्क्से १२ शाधिकार श्रीर शाव्या लेके दमेसकी जाता था । तब १३ हे राजा मार्गमे दो यहर दिनके मैंने स्वर्गी सूयरके तेजसे शाधिक एक ज्योति अपनी श्रीर अपने संग जानेहार्की चारां श्रीर चमकती हुई देखी । श्रीर १४ जब हम सब भूमिपर गिर पड़े तब मैंने एक शब्द सुना जो मुझसे बोले श्रीर इब्राय भायामें कहा है शावल हे शावल तू मुझे की कों सताता है । पैलेंपर लागत मार्ना तेरे जिन्हे वहिन है । तब मैंने कहा है १५ प्रभु तू श्रीर है । उसने कहा मैं योगकी हूँ जिते तू सताता है । परन्तु उल्लू साधने पार्वितंपर खड़ा हो क्वांति १६ मैंने तुम्हे इसीलिये दर्शन दिया है कि उन बातेंका जो तूने देखी है श्रीर जिनमें मैं तुम्हे दर्शन देंगे तुम्हें सेवक श्रीर साभी रहेगा । श्रीर में तुम्हे तेरे १० लोगांसे श्रीर जन्मदेवियांसे बचावंगा जिनके पास मैं जब तुम्हे भेजता हूँ । कि तू उनकी आंखें खोले १८ इसलिये है कि वे शाधिकारिये उजजिलेकी श्रीर श्रीर शैतानके शाधिकारसे इंसरगकी श्रीर फिरे जिसंत पाप- मोचन श्रीर उन लोगांमें जो मुक्तपर विश्वास करते से पवित्र किये गये हैं शाधिकार पार्व ।

ता हे राजा श्रायिया मैंने उस स्वर्गीय दर्शनकी १५ बात न राली । परन्तु पहिले दमेसक श्रीर यित्यंशिले २० के विश्वासियांकी तब यित्यंशियांकी तारे देखमें श्रीर
ऋषिदेशियोंका पश्चात्ताप करनेका धीर इश्वरको
धीर फिरनेका धीर पश्चात्तापको योग्य काम करनेका
२१ उपदेश दिया । इन बातेंको कारण यिहूदी लोग मुक्ति
२२ मन्दिरमें पकड़के मार हाजनेकी चेष्टा करते थे । तो
इश्वरसे सहायता पाके में ढाई धीर बड़ेके साथी
देता हुआ धाजलों ठहरा हूं धीर उन बातेंको ढाई
कुछ नहीं कहता हूं जो भविष्यद्विकाशोंने धीर मूसाने
२३ भी कहा फिर हालेवाली हैं । अभित्त खीरूकी दुःख
भोगना होगा धीर वही मृतकोंसे पहले उठके
हमारे लोगेंको धीर ऋषिदेशियोंका ज्यातिकी कथा
सुनावेगा ।
२४ जब बह यह उत्तर देता था तब फोघणे बड़े शब्दसे
कहा है पावल तू बड़हा है बहुत बिदा तुके बड़हा
२५ करती है । पर उसने कहा है महामहिमन फोघु में
बड़हा नहीं हूं परन्तु सद्वागे धीर बुद्धीकी बातें कहता
२६ हूं । इन बातेंकी राजा बुकता है जिसके फ्रेंट में बुलूक-
के बालता हूं क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि इन बातें-
मेंसे कोई बात उससे छिपी नहीं हैं कि यह तो कोनेमें
२० नहीं किया गया है । हे राजा ख्रियपा क्या झाप भवि-
ष्यद्विकाशोंका विश्वास करते हैं । में जानता हूं कि झाप
२८ विश्वास करते हैं । तब ख्रियपाने पावलसे कहा तू घोड़में
२४ मुक्ति खीरूयान हालेकी मनाता है । पावलने बहाँ
इश्वरसे मेरी प्रार्पणा यह है कि क्या घोड़में का बहुतमें
केवल झाप नहीं परन्तु सब लोग भी जो झाप मेरी
सुनते हैं इन बन्धनेंको बड़ेके ऐसे ही जारे जैसा में हूं ।
जब उसने यह कहा तब राजा धृतराष्ट्र धृतराष्ट्र ३०
बर्षानुक्रमिक धृतराष्ट्र उनके संग बैठनेहारे उठे. धृतराष्ट्र जलग ३१
जाके भारसभी बाले यह मनुष्य बघ किये जाने अस्थाया
बाधे जानेके गाय कुछ नहीं करता है। तब श्राविनाने ३२
फिसे यह जो यह मनुष्य वैसरकी दोहाए न दिये
होता तो छोड़ा जा सकता।

२५ सताईसवाँ पंजी

१ पावलका वहाजापर बढ़ाया जाना धृतराष्ट्र रौम नगरकी धृतराष्ट्र जाना। ५ पावलका
प्रतापसँग धृतराष्ट्र सेनोंगा उठे न माना। १३ बादे बांधकी उठा। २२ पावलका
सेनोंगा समाहार धृतराष्ट्र महादेवका समाचार। ३२ वहाजापा दुःगा धृतराष्ट्र
सेनोंगा बघ निकला।

जब यह ठहराया गया कि हम जहाजपर इतलियाकी
जायें तब उन्हांने पावलका धृतराष्ट्र फितंगे धृतराष्ट्र वनधेकी
भी यूलिया नाम अगस्तकी पलटनकी एक शतपतिकी हाथ
सांप दिया। धृतराष्ट्र जादूआलिया नगरके एक जहाजपर
जै धार्मिकी तीर्यनगे स्थानोंके जाता या चढ़ेके
हमने बोल दिया धृतराष्ट्र चारसभी नाम धिलोतिकीको
एक मानिंद्यारा हमारे संग था। ३२ रे दिन हमने
सीटानमे लगान किया धृतराष्ट्र यूलियने पावलके साथ
प्रसंगे व्रित्वार करके उसे मिशेंके पास जाने धृतराष्ट्र पाहुन
होने दिया। बहां से बोलके व्यारके समस्त होनेके
कारण हम कुपके नीचे होके चले। धृतराष्ट्र निजिकीकी
धृतराष्ट्र यूलियने निकटके समुद्रके होके लुकिया देशके
सुरा नगर पहुंचे। बहां शतपतिे सिमन्दरियाकी एक
जहाजके जै इतलियाकी जाता या पाके हमें उसपर
बढ़ाया। बहुत दिनांके हम धीरे धीरे चलके धृतराष्ट्र व्यार
8 शीर भाषातील उसके पाससे होते हुए शुमलंगबारी नाम एक स्थानात पहुंच जहां ते लासे नगर निलकट था।

9 जब बहुत दिन बीत गये थे शीर जलयाच्याच जोखिम होती थी किंतु उपवास पर्यंत भी श्री बीत युक्ता था।

10 तब पावलने उन्हें समझावे कहा. हे मनुष्यो मुंह सोक पडता हे कि इसे जलयाच्यातील हानि शीर बहुत दूरी वेगवान बाबाळाने शीर जहाजकी नहीं परलंपुरुहारे प्राप्तनेकी भी हुजा चाहती है। परलंपुरु शतपतिने पावलकी बातें से श्राधिक मांस्फिकी शीर जहाजकी स्वामिकी मान लिड़।

12 शीर. वह लंगबारी जाड़का समय काटनेका अच्छी न थी इसलिये बहुतेरीने परामर्श दिया कि वहांसे भी खेलकी जो किसी रीतिसे हा सके ता फेनीकी नाम क्रीटिकी एक लंगबारीमध्ये जो दक्षिण पश्चिम शीर उन्न पश्चिमकी शीर खुलती है जा रहे शीर वहां जाड़का समय कारे।

13 जब दक्षिणकी बयार मन्द मन्द बहने लगी तब उन्हें यह समझता कि हमारा श्राभिप्राय सुफल हुजा हे लंगर उठाया शीर तीर धरे धरे क्रीटिके पाससे जाने लगे। परलंपु यात्री बेरमें क्रीटिपरने ज्ञात श्राधिक एक बयार उठी जो उरकलूदन कहावती है। यह जब जहाज-पर लगी शीर वह बयारकी सामी ठहर न सका तब हमने उसे जाने दिया शीर उड़ूँ से हुए चले गये। तब क्रीटादा नाम एक बोटे टापूकें नीचे जाके हम काठिन-
तासे डिंगोंको घर सच्च। उसे उठाको उन्हाँने अनेक १० उपाय करके जहाजको नीचिसे बांधा शैर चूर्णी नाम
चढ़ार रिख जानेको भयसे मस्तल गिराको यूंहीं चढ़ाये
जाते थे। तब निपट बढ़ी शांधी हमपर चलती थी ९८
इसलिये उन्हाँने दूसरे दिन कुछ बोमाई फेंक दिइँ।
शैर तीसरे दिन हमने झपने हायांसे जहाजको सामयी ९८
फेंक दिइँ। शैर जब बहुत दिनांतक न सूयं न तारे २०
दिखाई दिये शैर बढ़ी शांधी चलती रही अन्तमें
हमारे बचनेको सारी झाशा जाती रही।

जब वे बहुत उपवास कर चुके तब पावलने उनके २१
बाँचमें खड़ा होके कहा है मनुष्यों उचित था कि तुम
मेरी बात मानते शैर कोतिसे न खालते न यह हानि
शैर टूटी उठाते। पर जब मैं तुमसे बिनती करता हूं २२
कि ढाड़स बांधो कींकि तुम्हाँमें किसीकी प्राणका नाश
न होगा केवल जहाजका। कींकि इंश्वर जिसका मैं २३
हूं शैर जिसको सेवा करता हूं उसका एक दूत इसी
रात मेरे निकट खड़ा हुआ। शैर कहा है पावल मह २४
हर तुम्हे कैसरके जागे खड़ा होना अवस्थ है शैर
देख इंश्वरने सभीको जो तीरे संग जलायाचा करते
हैं तुम्हे दिया है। इसलिये है मनुष्यों ढाड़स बांधो २५
कींकि मैं इंश्वरका विश्वास करता हूं कि जिस रीति-
से मुक्के कहा गया है उसी रीति से होगा। परन्तु हमें २५
किसी टापूपर पड़ना होगा।

जब बैद्धकी रात पहुंची ज्येंही हम शादिया समुद्र- २६
में इधर उधर उड़ाये जाते थे लोगी शांधी रातरेन निकट
भूलाहिंने जाना कि हम किसी देशके समीप पहुँचते थे हैं। चैर याह लेके उन्हांने बोस पुरसे पाये। चैर बेड़ा छांगे बड़के फिर याह लेके पन्द्रह पुरसे पाये।

२५ तब पत्रेले स्थानिकर गिरक जानके हरसे उन्हांने जहाज-की पिढ़ाईसे चार लंगर डाले चैर भेंका होना मनाते रहे। परन्तु जब मल्लाह लेग जहाजपर हांगने चाहते थे चैर गलहिसे लंगर डालनके बहा-

३१ नासे दिगी समुद्र में उतार दिए। तब पावलने शत-पति चैर यादुश्रोंसे कहा जो ये लेके जहाजपर न रहे तो तुम नहीं बच सकते हो। तब यादुश्रोंने दिगीके रस्ते कारके उसे गिरा दिया।

३३ जब भेंक होनेपर थे तब पावलने यह कहके समेंसे भेंजन करेंकी बिनती किए कि चाज चौदह दिन हुए कि तुम लेके ज्ञास देखते हुए उपवासी रहते हैं चैर कुछ भेंजन न किया है। इसलिए मैं तुमने बिनती भरता हूँ कि भेंजन करो जिसपे तुम्हारा बचाव होगा। यांतर तुमसे फिरसे किसी से एक बाज न गिरी-गा। चैर यह बात कहके चैर दिवारी लेके उसने समेंसे साथा इज़वर्का धन्य माना चैर तोड़केखाने कई लगा। तब उन समेंने भी दाढ़स बाँधके भेंजन बिखया। हम सब चैर जहाजपर ये दो सा छिव्हतर जन थे। भेंजनसे तृप्त होके उन्हांने गेंहूंके समुद्रसे परन्तु जहाजको हलका किया।

३५ जब बिहान हुआ तब वे उस देशको नहीं चोनते थे परन्तु किसी खाजको देखा जिसका चैरस तीर था।
कैर बिचार किया कि जो हा सबे ता इसीपर जहाज़-का टिकावे। तब उन्हाँने लंगरोंको कारक समुद्रमें 80 ब्राह्म किया कैर उस समय पतवारोंके बंधन खोल दिये। कैर बयारके सम्मुख पाल बढ़ाके तीरकी कैर चले। परन्तु देखा समुद्रके संगमके स्थानमें पड़के उन्हाँने 91 जहाज़की टिकाया कैर गलाही तो गड़ गई। कैर हिल न सकीं परन्तु पिघाड़ी लाहरोंकी बरियाईसे दूर गईं।

तब या दुर्गाऊँका यह परामर्श था कि बन्धुवेंकी मार 82 हालें ऐसा ही कि कोई पैरको निकल भागे। परन्तु 83 शहतपती पावलको बचानेकी इच्छासे उन्हें उस मतलब पीका कैर जो पैर सकते थे उन्हें झाड़ा दिए कि पहिले कूटके तीरपर निकल चले। कैर दूसरोंका कि 88 कोई पतवारपर कैर कोई जहाज़मेंकी वस्तुओंपर निकल जायें। इस रूपसे तब कोई तीरपर बच निकले।

२८ झटाईसवा पढ़े।

१ मलिता टापुको लोगोंका विभिन्नसार। ३ पावलको सापको काटनेको कुड़ हुँसको न पाना। ११ पवित्रस्वरूप लोगोंका आरोप पड़ता है। ११ रोग नागरको आरोप जाना कैर साथ भावनाके भावना करना। १५ रोगमें पिघाड़ीको बात करना कैर सुसमाचार बुनाना।

जब वे बच गये तब जाना कि यह टापु मलिता १ कहावता है। कैर उन जंगली लोगोंने हमारे से अनोखा २ प्रेम किया कि एवं भोजन्य हमें कारण जो पहुँच तो कैर जादुके कारण उन्हाँने झाग सुलगाके हम सभी यहां किया।

जब पावलने बहुतसी लकड़ी बटोरके झागपर रखी ३ तब एक साथने झांचके निकलके उसका हाय घर
प्रितिबावसे पहुँचौँ करौँ। प्रवेश करौँ प्रारंभिका चर्चा थियो। उसे उसने हरे महाशय करके अपने दिन
8 प्रितिबावसे पहुँचौँ करौँ। प्रारंभिका चर्चा थियो। उसे उसने हरे महाशय करके अपने दिन
9 अगर जो इस टापूमें रोगी थे तो उसे रोगी थे। तो उसे रोगी थे। तो उसे रोगी थे।
10 उस टापूमें रोगी थे जो उसे रोगी थे। तो उसे रोगी थे। तो उसे रोगी थे।
11 तीन मासके पीछे हम लौट सिकंदरियाके एक जाहाजपर जिसने उस टापूमें जाएँका समय करा। था
12 जिसका बिन्दु दिया था। चल निकल। सुराक्षी
13 नगरमें लगान करके हम तीन दिन रहे। वहांत के हम
14 वहां भाट्यांका पाके हम उनके यहां सात
दिन रहनेका बुलाये गये छैयर इस रीतिसे रामको
चले। वहाँसे माई लोग हमारा समाचार मुनि के श्राप- १५
यथीक छैयर तीन सरायलें हमसे मिलनेको निकल
शायें जिन्हें देखके पावलनें ईंगरका घन् भानके
ढारस बांधा।
जब हम राममें पहुंचे तब शतपतिने वन्यवेरों ने सनापतिके हाय संप दिया परल्ल पावलका एक योद्धा-
के संग जो उसकी रच्छा करता था ताकोला रहनेकी
शाजा हुई। तीन दिनकी पीछे पावलने दिखरू मिखरू बड़े १५
बड़े लोगोंको एक बुलाया छैयर जब वे एक देर हुए तब
उससे कहा है भाीयो मैंने हमारे लोगोंके अयवा पिता
तरंगें यवहरांके बिस्त्र कुछ नहीं किया था तामी
बन्धुका होंके दिखरूलीसे रामयोंके हाय में संपा
गया। उन्होंने मुकः जानको बड़े देने चाहा कोिका ८
मुक्कमं बघको योग्य अई देर न था। परल्ल जब १५
दिखरू लाग इसके बिस्त्र बोलने लगे तब मुद्दे कैसर-
को दाहाई देना श्राप्य हुआ पर यह नहीं कि मुद्दे
शापने लागें पर अई देर लगाना है। इस कारणसे २०
मैंने श्राप लोगोंका बुलाया कि श्राप लोगोंके देखके
बात कहयं कोंकि इसरूपको श्रापे के लिये मैं इस
जंगीसे बन्ध हुआ हूं। तब वे उससे बोले न हमांने २१
श्रापके विषयमें दिखरू दियासे चिठ्ठियां पाई न भाीयोंसे
किसीने श्रापके श्रापके विषयमें बुरा कुछ बताया अथवा
कहा। परल्ल श्रापका मत कहा है तो हम श्रापसे मुना २२
चाहें हैं कोंकि इस प्रन्तके विषयमें हम जानतें हैं कि
२३ सबसे उसके बिस्त्र में बातें किई जाती हैं। सो उन्हं-ने उसके एक दिन ठहराया छैर बहुत लोग बासेपर उस पास आये जिनसे वह इंश्चरको राज्यको साथी देता हुआ। छैर यीशुकी विषयमेंकी बातें उनहं मूसाको व्यवस्थासे छैर भविष्यद्वारककों युस्तकसे भी समक्षाता हुआ भारसे सांख्यों चाची करता रहा। तब जितने उन बातानों का मान लिया छैर जितनें तत्तीति न किई। सो वे सापसमें एक मत न होके जब पाबलने उनसे एक बात कही थी तब बिदा हुए जिस पाषाण भारसे हमारे पितारोंसे यिशूयाह भविष्यद्वारका- रई वे द्वारासे खुफा कहा। जिस लोगांके पास जाके वह तुम सुनते हुए सुनाने परलू नहीं बूढ़ी गई। छैर देखते हुए देखाये पर तुम्हें न सुनिएगा। क्योंकि इन लोगांका मल मेटा हो गया है। छैर वे कानांसे ऊंचा सुनते हं। छैर अपने नेव मूल्य लिये हं ऐसा न हो। किसे कभी नेचानसे देखें छैर कानांसे सुनें। छैर मनसे समक्षे। छैर फिर जावें छैर वे उन्हें चंगा कहं। सो तुम जाना कि इंश्चरको चालकी ओपा चन्द्रदेशियोंकी पास भेजी गई है। छैर वे सुनाने। जब वह यह बातं कह चुका तब यहूदी लोग सापसमें बहुत बिवाद करते हुए चले गये।
४० छैर पाबलने दि वरस मर खपने भाड़के घरमें रहके ते सभेंनों। जो उस पास जाते ये पहण किया। छैर जिना टाओटाओ बड़े साहससे इंश्चरको राज्यकी ओपा सुनाता छैर प्रभु यीशु खीरुकी विषयमेंकी बातें सिखाती रहा।
रामियोंका पावल प्रेरितकी पत्री।

1 पहिला प्रवन।

1 प्रेमीका श्रावण । 8 पावतगी रामियोंका सुसमाचाऱ तुनानेकी चक्का । 14 सुसमाचाऱको गुम्ब । 18 मृत्यु पूजनमें मनुष्योंको देवीं हिन्दुका प्रसं । 28 मृत्युंसुपहराकोंको बडेव बडेव पापोंका दर्शन।

पावल जो योशु खौशुकी दास श्रीर बुलाया हुँका प्रेरित श्रीर ईश्वरके सुसमाचारकी लिये जलग किया गया है । वह सुसमाचार जिसकी प्रतिज्ञा उसने अपने 2 मह्युद्वात्कारें द्वारा धर्मपूर्वकें श्रोतेरके किये थे । सच्चात उसके पुन हमारे प्रभु योशु खौशुकी विषयमें जी सुसमाचार जो शरीरके भावसे दाअके बंधनमें उत्पन्न हुँका । श्रीर पवित्रताके ज्ञानात्मके भावसे मृत्युकोंके जी चढ़नेसे पराक्रम सहित ईश्वरका पुन ठहराया गया । जिससे हमने अनुयह श्रीर प्रेरिताइ राई है कि उसके जो नामके कारण सब देशोंके लोग विशवससे श्राष्ट्राकारी हो जायें । जिन्हें तुम भी योशु खौशुकी बुलायें हुए हो । ई रामले उन सब निवासियोंको ह ईश्वरके वारे श्रीर बुलायें हुए पवित्र लोग हैं । तुम्हें हमारे पिता ईश्वर श्रीर प्रभु योशु खौशुकी अनुयह श्रीर शान्ति मिले ।

पहिले मैं योशु खौशुकी द्वारा तुम सबेंके लिये अपने ईश्वरका धन्य मानता हूं कि तुम्हारे विज्ञानका चर्चा सारे जगतमें किया जाता हैं । क्योंकि ईश्वर 5 जिसकी सेवा में अपने मनसे उसके पुनसे सुसमाचारमें
करता हूँ मेरा साध्य है कि में तुम्हें जैसे निरंतर स्मरण

10 करता हूँ जैसे नित्य अपनी प्रार्थनाओं में बिन्दू करता हूँ कि किसी रोगिते सजब मे तुम्हारे पास जानेको मेरी.

11 याच्छै ईश्वरकी इच्छा सुफल होय। क्योंकि मैं तुम्हें देखनेकी लालसा करता हूँ कि मैं कोई आत्मिक वरदान तुम्हारे संग बांट जेंज जिसी तुम स्फूर्त नियं जायो।

12 अर्थात कि मैं तुम्हारे अपने अपने परस्पर विश्वासके

13 द्वारा से तुम्हारे संग शांति पाहू। परन्तु हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूँ कि तुम इससे अनजान रहो कि मैंने बहुत बार तुम्हारे पास जानेका विचार किया जिसी जैसा दूसरे अन्यदेशियों में तैयार तुम्हें मेरा कुछ फल हावे परन्तु जबलों में रौका रहा।

14 मैं युनानियों की अन्यभाषियों की अंग्रेज मुहम्मदीं

15 कैन निर्देशियों की शुरऊ हैं। यू मैं तुम्हें मेरा जा रोमां,

16 रहते है सुसमाचार सुनानेका तैयार हूँ। क्योंकि मैं ब्रॉज़ी सुसमाचारसे नहीं लजाता हूँ इसलिए कि हर एक विश्वास करनेहारीं को लिये पहले यहूदी फिर युनानीों लिये वह चारासे निमित ईश्वरका सामज्ञा है। क्योंकि उसमें ईश्वरका धर्मी विश्वासके विश्वास के लिये प्रगट किया जाता है जैसा लिखा है कि विश्वासके धर्मी जन जीविता।

17 जो मनुष्य सब्बाईंको अधम्मसे रोकते हैं उनकी सारी शरीरके जैसे अधम्मपर ईश्वरका रूपाध स्वर्गीय प्रगट कि-

18 या जाता है। इस कारण कि ईश्वरके विषयका ज्ञान उनमें प्रगट है क्योंकि ईश्वरके उनपर प्रगट किया।
क्योंकि जगतकी सत्यिः उसके अदृश्य गुण अस्पष्ट उसके २० सनातन सामवेय शैर ईश्वरस्रव देखे जाते हैं क्योंकि वे उसके कार्योंके प्रभाते जाते हैं यहाँको वि वे मनुष्य निर्देश नहैं। इस कारण शैर उन्होंने ईश्वरस्रवको जानकी न २१ ईश्वरस्रवको योग्य गुणाशुद्धिका विषय नृं धन्य माना परन्तु धनर्यक्ष बाद विचार करने लगे शैर उनका निशुष्टि मन धन्यशिलाः हो गया। वे शैरनेंको झाँकी कहको मूर्ख २२ बन गये। शैर आचारार्यो ईश्वरको महिमाको नाश- २३ मान मनुष्य शैर वंदनें शैर बौद्धायो शैर रंगनें- हारे जन्मुंको कृत्तिको मूर्खकी समानतासे बदल डाला।

इस कारण ईश्वरके उन्हें उनको मनकी श्रमिलाएंको २४ धनुसार आशुद्धताके लिये त्याग दिया कि वे श्रामसमें शैरनें शरीरिका धनादर करें। दिनहेंते ईश्वरकी २६ सानुको फूलसे बदल डाला शैर समिको पूजा शैर सेवा सजनहारकी पूजा शैर सेवासे अधिक निःकेठ जो सम्बंधता धन्य है। श्रामन। इस हेतु ईश्वरके उन्हें २५ नीच कामनार्यांको बश्में त्याग दिया कि उनकी स्त्रियांने भी स्वाभाविक व्यवहारको उससे जो स्वाभाविक विकृत है बदल डाला। वैसेही पुरुष भी स्त्रीके संग स्वाभाविक २७ व्यवहार बढ़के शैरनें कामुकताती एक दूसरेंकी शैर जलने लगे शैर पुरुषोंके साथ पुरुष निलंब बन्ध करते पै शैर शैरनें भ्रमको फल जो उचित था शैरनें भौगते थे। शैर ईश्वरकी चितरा रखना जब कि उन्हें २८ बच्चा न लगा इसलिये ईश्वरके उन्हें निकृष्ट मनकी बश्में त्याग दिया कि वे आनुचित कम्मे करें। शैर सारे २९
श्रध्में श्री व्यभिचार श्री तुष्टता श्री लोभ श्री बुराईसे भरे हुए श्रीर हाह श्री नरहिंसा श्री बेर श्री चल श्री दुभावसे भरपूर हैं . श्रीर फुसफुसिये ऋणबादी ईश्वर- द्राही निन्दक ऋभिमानी दंभी बुरी बातििी बनानेहरे 31 माता पिताकी श्रात्रा लंघन करनेहरे . निबुद्धि कूठे 32 मयारहित युमारहित श्री निर्वृंह होवें . जा ईश्वरकी 
बिधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेहरे मृत्युभी 
श्राय श्रे तभी न-केवल उन कामकी करते हैं परन्तु 
करनेहरांसे प्रस्त भी होते हैं ।

2 दूसरा पाब्रे ।

1 जो श्रीरेोक दोषी ठहरावू उत्ते समकाके लिये उपेय । 12 श्रीमेदीयोके 
विषयवर ईश्वरका यथार्थ बिचार । 17 पियस्वरे श्री श्रीक कामाक । 25 श्रातििे 
उनका बवाल न श्राना ।

2 सा है मनुष्य तू कै दी हो जा दूसरोंका बिचार बतातां 
है तू निहलत है । जिस बातमें तू दूसरोंका बिचार 
बात है उसी बातमें आपनेकी दोषी ठहराता है कीहिं 
2 तू जी बिचार बात है आपही वेही काम बात है । पर 
हम जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेहरांपर ईश्वर- 
3 को दंडकी श्राय यथार्थ है । श्रीर है मनुष्य जो ऐसे ऐसे 
काम करनेहरांका बिचार बात श्रीर आपही वेही 
काम करता है का तू यही समकता कि में ती ईश्वर- 
4 को दंडकी श्राय बमसे बचूगा । श्रायवा का तू उसकी कुपा 
श्री सहनशीलता श्री धीरजे धनके तुच्छ जानता है 
श्रीर यह नहीं बुकता है कि ईश्वरकी कुपा तुम्हे पश्चा- 
5 ताप करनेकी तिबाति है । परन्तु आपनी बर्तारता श्रीर
निप्रभचालापी मनके हेतुसे अपने लिये क्राघके दिनलीं हा दंशवके यथावर्ष विचारके प्रगट होके दिनलीं क्राघके संचय करता है। वह हर एक मनुष्यको उसके कमर्मंके अनुसार प्राक्त देगा। जा सुकम्मसे स्त्रिय रहने से महिमा श्रीराध श्रीराध अमरता दुन्दे हैं उन्हें वह अनन्त सीवन देगा। यहुत जा विवाही हैं श्रीराध सत्यकी नहीं मानते पर अधम्मके मानते हैं उनपर क्राघ पड़ेगा। हर एक मनुष्यके प्राक्त जा बुरा करता है। श्रीराध संकट पड़ेगा पहले यिहूदी फिर यूनानीके। पर हर एकी जी भाला करता है महिमा श्रीराध श्रीराध कल्याण होगा पहले यिहूदी फिर यूनानीके। कौंकि ईश्वरके यहां प्रक्षेपात नहीं है।

कौंकि जितने लोगोंने बिना ब्यवस्था पाप किया है 12 श्री बिना ब्यवस्था नाश भी होंगे श्रीर जितने लोगोंने ब्यवस्था पाके पाप किया है सो ब्यवस्थाके द्वारसे दंड-के यो प्रेयोग ठहराये जायने। कौंकि ब्यवस्थाके सुननेहारे 13 ईश्वरके यहां धर्मी नहीं हैं यहूदी ब्यवस्था पर चलनेहारे धर्मी ठहराये जायने। फिर जब अन्यदेशी लोग 14 जिनके पास ब्यवस्था नहीं है स्थभावसे ब्यवस्थाकी बातींपर चलते हैं तब यदापि ब्यवस्था उनके पास नहीं है तैमी वे अपने लिये अपहरी ब्यवस्था हैं। वे ब्यवस्थाका कार्यां अपने अपने ईदमें लिखा हुआ 15 दिखाते हैं श्रीर उनका मन भी सानी देता है श्रीर उनकी चिन्ताएं परस्पर दीपक लगातीं। ब्यवस्था दीषका उतर। देती हैं। यह उस दिन होगा ब्रिस्ट दिन ईश्वर 16
मेरे सुसमाचारके अनुसार यीषु ख्रिस्तके द्वारासे मनुष्यों-बी गुप्त बातेंगाका विचार करेगा।

१० देख तू यिशुदी कहावता है चैर व्यवस्थापर मरेंसा
१८ रखता है चैर ईश्वरके विषयमें घमंड करता है। चैर
उसकी उच्चाको जानता है चैर व्यवस्थाकी शिक्षा पाने
१४ विशिष्य बातेंकी परखता है। चैर अपनेपर मरेंसा
रखता है किमें अन्यांका झगड़ा चैर अन्यथाकारमें रहने-
२० हारेंका प्रकाश। चैर निशीदुंबियांका शिक्षक चैर बाल-
कोंका उपदेशक हूं चैर झांक चैर सन्धाइंका रूप मुझे
२१ व्यवस्थामें भिजा है। सो कया तू जो दूसरे को सिखाता
है अपनेका नहीं सिखाता है। कया तू जो चारी न
२२ करनेका उपदेश देता है चापही चारी करता है। कया
तू जो परस्तीगमन न करनेको कहता है चापही पर-
स्तीगमन करता है। कया तू जो सुरतांसे भिन करता है
२३ पवित्र बस्तु चुराता है। कया तू जो व्यवस्थाके विषयमें
घमंड करता है। व्यवस्थाको लंघन करनेसे ईश्वरका अन्न-
२४ दर करता है। कयांकि जैसा लिखा है तैता ईश्वरका
नाम तुम्हारे कारण अन्यांदेशियांमें निन्दित होता है।
२५ जो तू व्यवस्थापर चलें तो सतनेसे लाभ है परन्तु
जो तू व्यवस्थाको लंघन किया करे ते तेरा सतना ऋषभ-
२६ तना है। गया है। सो यदि सतनाहीन मनुष्य व्यवस्था-
की बिधियांका पालन करे ते कया उसका ऋषभनाए
२० सतना न गिना जायगा। चैर जो मनुष्य प्रकृतिते
सतनाहीन हाके व्यवस्थाको पूरी करे सो कया तुक्चे
जो लेख चैर सतना पाके व्यवस्थाको लंघन किया
बारता है दीयी न ठहरावेगा। क्योंकि जो प्रगटमें २८
पिघुदी है तो पिघुदी नहीं चार खतना जो प्रगटमें
चारात देहमें है तो खतना नहीं। परन्तु पिघुदी वह २६
है जो गुप्तमें पिघुदी है चार मनका खतना जो लेखसे
नहीं पर आत्मामें है सादे खतना है। ऐसे पिघुदीकी
प्रशंसा मनुष्यांकी नहीं पर ईश्वरकी चारसे है।

३ तीसरा पब्बे।
१ पिघुदी चौने का पल। २ ईश्वरका विचार प्रार्थण चौने का प्रमाण। ३ चारे
मनुष्यांके पापांका वर्णन। ४ ध्यानधार गयुरार तत्त्वदे देवी दोना। २१
प्रासुधुके हारमार चिन्ताविषयके धर्ममें ठहरावे जानका उपाय। २७ वस मतसे
आभासानका नाथ और पिघुदीकी और अन्य देवीका सेल और ध्यानधार व्यापम।

ता पिघुदीकी क्या चेष्टुता हुई अधया खतनेका क्या
लाभ हुआ। सब प्रकारसे बहुत कुछ। पहली यह वि
ईश्वरकी बाबियां उनके हाथ सांपी गई। जो किंतु ने
विश्वास से लिया ता क्या हुआ। क्या उनका अविश्वास
ईश्वरके विश्वासका व्यर्थ ठहरावेगा। ऐसा न हो।
ईश्वर सच्चा पर हर एक मनुष्य मुटा हाय जैसा लिखा है
कि जिससे तू अपनी बातमें निर्देश ठहराया जाय चार
तेरा विचार किये जानमें तू जय पाये।

परन्तु यदि हमारा अधम्में ईश्वरकी धम्मपर प्रमाण
देता है तो हम क्या कहें। क्या ईश्वर जो क्रैम नक्ता
है अन्यायी है। इसकी में मनुष्यकी रोतिपर बहता हूं।
ऐसा न हो। नहीं तो ईश्वर क्रोंकर जगतका विचार
करेगा। परन्तु यदि ईश्वरकी सच्चाई उसकी महिमाके
लिये भें भरता है तो वे विषयका व्यस्तको प्रगट हुई तो में
क्यों सच भी पापीको नाइ चंदकते व्यस्त ठहराया जाता
8 हूँ। तो क्या यह भी न कहा जाय जैसा हमारी निन्दा बिनामें जाती है श्रीर जैसा त्यतने लोग बोलते कि हम बहते हैं कि श्राढ्य हम बुराई करें जिसें मलाइं निकले। ऐसे पर तंद्रकी श्राढ्य यथार्थ है।

9 तो क्या क्या हम उनसे अच्छे हैं। कभी नहीं किया जिसके हम प्रभाव दे चुके हैं कि पिघूटी श्रीर युनानी भी सब 10 पापके वशमें हैं। जैसा लिखा है कि कोई धर्ममे जन 11 नहीं है एक भी नहीं। बाई बुफ़नेहरा नहीं कोई 12 ईश्वरका बुफ़नेहरा नहीं। सब लोग भटक गये हैं के सब एक संग निकामे हुए हैं कोई मलाइं करनेहरा नहीं। 13 एक भी नहीं है। उनका गला खुली हुईं कबर है उन्हें अपनी जीमेरसे बल किया है सांपेंको किया उन- 14 के हांटिंग के प्रेम हैं। श्रीर उनका मुंह साप श्रीर कड़- 15 वाहसे महा है। उनके पांव लेखते वहानेको फुर्ती- 16 हुई हैं। उनके मागिंमें नाश श्रीर नेश है। श्रीर उन्हें 17 कुशलका मागे नहीं जाना है। उनके नेताओंके शागे ईश्वरका कुछ भय नहीं है।

18 हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है से उनके लिये कहती है जो व्यवस्थाके सधीन हैं इसलिये कि हर एक मुंह बनदा किया जाय श्रीर सारा संसार 20 ईश्वरके शागे तंद्रकी यथार्थ ठहरे। इस कारण कि व्यव- शाके कमजोरसे कोई प्रश्न। उसके शागे धर्ममे नहीं 21 ठहराया जायगा श्राढ्य किसी व्यवस्थाके द्वारा पापकी पह- चान होती है।

21 पर क्या व्यवस्थाके न्यारे ईश्वरका धर्ममे प्रगट
हुआ है जिसपर व्यवस्था श्रीर भविष्यवक्ता लोग साधी देते हैं। श्रीर यह इंशवरका धर्म्म यीशु लोध्यप विश्वास २२ करनेसे समेंसे लिये श्रीर समेंपर है जा विश्वास करते हैं क्योंकि कुछ मेठ नहीं है। क्योंकि समेंसे पाप बिया २३ है श्रीर इंशवरकी प्रशंसा याग्य नहीं होतीहैं। पर उसके २८ जनुपहसे उस उद्घारके द्वारा जो खीरू यीशुसे है संतमेि धर्म्मी ठहराये जाते हैं । उसकी इंशवरने प्रायश्चित्त व्रह स्थापन किया कि विश्वासके द्वारा उसके लोहीसे प्रायश्चित्त होि जिससे श्रागे बिये हुए पापेसे इंशवरकी सहनशीलतासे आनाकानी जो किते गई तिसके बारे वह जिन्दा धर्म्म प्रगत करे । हां इस वर्तमान समयमें जन्म जिन्दा धर्म्म प्रगत करे यहां य यीशुके विश्वासके जवलजवीका धर्म्मी ठहरानेमें भी धर्म्मी ठहरे ।

तो वह जम्म लागना कहां रहा । वह बजरंग हुआ । २७ श्रीक व्यवस्थाके द्वारसे । क्या कर्मोकी । नहीं परन्तु विश्वासकी व्यवस्थाके द्वारसे । इसलिये हम यह सिद्धांत २८ करते हैं कि विना व्यवस्थाके कर्मके मनुष्य विश्वासते धर्म्मी ठहराया जाता है । क्या इंशवर केवल यहीथियोंका २६ इंशवर है । क्या जन्मदिननियोंका नहीं । हां जन्मदिननियोंका भी है । क्योंकि एकही इंशवर है जो खतना किये हुशीकी ३० विश्वाससे श्रीर खतनाहोन्नीका विश्वासके द्वारसे धर्म्मी ठहरावेगा । तो क्या हम विश्वासके द्वारा ३१ व्यवस्थाका वर्ष ठहराते हैं । ऐसा न हो परन्तु व्यवस्थाकी स्थापन करते हैं ।
8 बीथा प्रबंध

1. इब्राहिमके धम्मी ठहरावे जानेकी कथापे पूणाफ बातोंके प्रमाण। 5 करना जिने हुने चौर खतानाहीन समेत क्रम बन आनुबंधके सम्बन्धी, जोना। 13 उक्तका द्योकर्मांकी कस्मिके हुने नहीं पर विश्वासके हुने मिलना। 18 इब्राहिमके विश्वासकी निःशरार्थीका यथार्थ। 23 सब विश्वासके उक्तके श्रेणी जोना।

2. ता हम का ताहिं कि हमारे पिता इब्राहिमने 2 शरीरके अनुसार पाया है। यदि इब्राहिम कस्मिके हेतुसे धम्मी ठहराया गया तो उसे बड़ाई करनेकी जगह है। परन्तु इंश्वरके जागे नहीं है क्योंकि धम्मे पुस्तक का कहता है। इब्राहिमने इंश्वरका विश्वास किया।

3. चैत्र यह उसके लिये धम्मे गिना गया। अब कार्यं करनेहरुके माधुरी देना अनुपहर्ती बात नहीं पर अनुप है। चूँके बात गिना जाता है। परन्तु जो कार्यं नहीं करता पर भक्तिहरुके धम्मी ठहराकरेर पर विश्वास करता है उसके लिये उसका विश्वास धम्मे गिना जाता है। जैसा दाजुद भी उस मनुष्यकी धन्यता जिसको 0 इंश्वर बिना कस्मिके धम्मी ठहरावे बताता है। जब धन्य वे जिनके कुक्मे धम्मा किये गये चैत्र जिनके 8 पाप ढांगे गये। धन्य वह मनुष्य जिसे परिश्वर पापी न गिने।

4. ता यह धन्यता का खतना लिये हुए लगेङ्गी लिये है। अयथा खतनाहीन लगेंनी लिये है। क्योंकि हम कहते हैं कि इब्राहिमके लिये विश्वास धम्मे गिना 10 गया। ता वह काँसर उसके लिये गिना गया। जब वह खतना किया हुआ था। अयथा जब खतनाहीन था। जब खतना किया हुआ था। ता नहीं परन्तु जब खत-
नाहीं था। छायर उसने खतनेका बिन्ह पाया कि तो ११ बिवशवस उसने खतनाहीन दशा में किया था और उस बिवशवस के धम्मकी छाय होने जिसे जो लाग खतनाहीन दशा में बिवशवस करते हैं वह उन सभें चाला पिता है कि वे भी धम्मकी ठहराये जायें। छायर जो लाग १२ न केवल खतना लिये हुए हैं परन्तु हमारे पिता इब्राहीम के उस बिवशवस की लोकपर चलनेहारी भी हैं जो उसने खतनाहीन दशा में किया था उन लोगों के लिये खतना किये हुन्नें का पिता ठहरे।

क्योंकि वह प्रतिज्ञा कि इब्राहीम जगतका अघि- १३ कारी होगा न उसकी न उसके बंशके व्यवसाय के द्वारा- ते मिली परन्तू बिवशवस के धम्मके द्वारा के। क्योंकि १४ यदि व्यवसाय के घरबंदी अधिकारी हैं तो बिवशवस व्यष्ट छायर प्रतिज्ञा निष्कल ठहराई गई हैं। व्यवसाय तो छाय १५ जन्माती है क्योंकि जहां व्यवसाय नहीं है तहां वस्सून भी नहीं। इस कारण प्रतिज्ञा बिवशवस से हुई कि सनु- १६ यहकी रीतिपर है। इसलिये वह सारे बंशके लिये तूढ़ है। केवल उनके लिये नहीं जो व्यवसाय के घरबंदी हैं परन्तु उनके लिये भी जो इब्राहीम इसे बिवशवस के घरबंदी हैं। वह तो उसके बारे जिसका उसने बिवशवस १७ किया अछूत इब्राहीम से जागे जो मृतकों का जिलाता है छायर जी। वांते नहीं हैं उनका नाम ऐसा लेता वह जैसा बेह न हम सभें पिता है जैसा लिखा है वह उन्हें तुले बहुत देशिये लोगें का पिता ठहराया है।

वहने जहां जाणा न देख पहली थी तहां जाणा ९८
रखके विश्वास किया इसलिये कि जो कहा गया था कि तेरा बंश इस रितिसे होगा उसके अनुसार वह १८ बहुत देरांके लेिगा का पिता है। झीर विश्वासमें दुन्नेिल न होिे उस्ने यदापि सै एक वरसका था तैभी न खपने शरीरके जो खब मृतकता हुआ था झीर न २० सारंके गर्भकी मृतककीसी दशाको सीचा। उसने ईश्वरकी प्रतिष्ठाप र आविश्वाससे सन्देह किया था नहीं परन्तु विश्वासमें दूढ़ होके ईश्वरकी महिमा प्रगट किई। २१ झीर निखचय जाना कि जिस बातकी उसने प्रतिष्ठा २२ किई है उसे करनेकी भी सामर्थ्य है। इस हेतुसे यह उसके लिये धर्मी गिना गया। २३ पर न केवल उसके कारण लिखा गया कि उसके २४ लिये गिना गया। परन्तु हमारे कारण भी जिनके लिये गिना जायगा षट्ष्यात हमारे कारण जो उसपर विश्वास करते हैं जिसने हमारे प्रभु यीसुकी मृतकोंमें वू४ उठता। जो हमारे अपराधोंके लिये पकड़ता गया झीर हमारे धर्मी ठहराये जानेके लिये उठता गया।

१ पांचवां पवने।

१ विश्वासके बनें फलोंका धर्मके ईश्वर गये बढ़े प्रेमका व्यास। १२ गादमके पाणि दहराए मृतु ईश्वर ईश्वरके प्रभुयानुसार यीसु कीड़े द्वारा चमा ई धर्मी ई चन्द्र बीवरका प्राप्त बनाई। १३ तो जब कि हम विश्वाससे धर्मी ठहराये गये हैं तो हमारे प्रभु यीसु कीड़े द्वारा हमें ईश्वरसे मिलाय २ है। झीर भी उसके द्वारा हमने इस अनुयायमें जिसमें स्थिर हैं विश्वाससे पहुँचनेका अधिकार पाया है झीर
रेमियांकि।

देश्वरकी महिमाकी श्राशाके विषयमें बड़ाई करतेहैं। शीर बेवल यह नहीं परन्तु हम लोगसंगी विषयमें भी 3 बड़ाई करतेहैं कौंक जानतेहैं कि लोगसंगी धीरज। शीर धीरजसे खरा निकलना शीर खरे निकलनेते 4 श्राशा उत्पन्न होती है। शीर श्राशा लज्जित नहीं 5 करती है कौंक पवित्र श्रात्माको द्वारासे जो हमें दिया गया ईश्वरका प्रेम हमारे मनमें उड़ेला गया है। कौंक का जव हम निज़वेल है रहे थे तबती खीघु समयपर भक्त- हीनांब लिये मरा। धार्मीज जनकेसे लिये बाई मरे यह 0 दुर्लभ है पर हां भले मनुष्यज लिये क्या जाने किसीको मरनेका भी साहस होय। परन्तु ईश्वर हमारी शीर अपने प्रेमका महात्मा यूं दिखाता है कि जब हम पापी हो रहे थे तबती खीघु हमारे लिये मरा। सो जब तम 6 हम अधि अपने लेक्खे गुस्ते धार्मीज ठहराये गये हैं ता बहुत अधिक करके हम उसके द्वारा ओघसे बचेंगे। कौंक यदी हम जब श्रावू थे तब ईश्वरसे उसकेपुत्रकी 90 मृत्युद्वारासे मिलाये गये हैं ता बहुत अधिक करके हम मिलाये जाके उसके जीवनके द्वारा चाष पावेंगे। शीर केवल यह नहीं परन्तु हम अपने प्रभु यीशु 91 खीघुके द्वारासे जिसके द्वारा हमने अध निजलाप पाया है ईश्वरके विषयमें भी बड़ाई करते हैं।

इसलिये यह ऐसा है जैसा एक मनुष्यके द्वारासे 92 पाप जगतमें श्राया शीर पापके द्वारा मृत्यु आई। शीर इस रीतिसे मृत्यु सब मनुष्यांपर बोती कौंक सभी ने पाप किया। कौंक व्यवस्थाले पाप जगतमें भा पर 93
जहां ब्यवस्था नहीं है तहां पाप नहीं गिना जाता।
कहीं भी ज्ञात से मृतादं मृत्युनि उन लोगों कर रहे यह नज़र आती जिन्होंने ज्ञात के अपराधके समान पाप नहीं किया था। यह ज्ञात उस ज्ञातवालों चिन्ह है।
परन्तु जैसा यह अपराध है तैसा वह बरदान भी है सो नहीं क्योंकि यदि एक मनुष्यके अपराधके सह बहुत लेग मूर्त तो बहुत अधिक करके देशवरका अनुयह चैत्य वह दान एक मनुष्यके अनुयह योशु ब्रह्मके अनुयह से बहुत लोगों के अधिकार दिया। चैत्य जैसा वह दंड जो एकके द्वारा से हुआ जिसका पाप किया तैसा वह दान नहीं है क्योंकि निर्धित से एक अपराधके कारण दंडकी ज्ञाजा हुई परन्तु बरदानसे बहुत अपराधेंसे निर्दीप
उधर जानेका फल हुआ। क्योंकि यदि एक मनुष्यके अपराधके मृत्युनि उस एकके द्वारा से राज्य किया तो बहुत अधिक करके जो लोग अनुयहको चैत्य घरमसे दानकी अधिकारी पाते हैं तो एक मनुष्यके अनुयह योशु ब्रह्मके द्वारा से जीवनमें राज्य करें। इसलिये जैसा एक अपराध सब मनुष्योंके लिये दंडकी ज्ञाजा कारण हुआ तैसा एक घरमसे भी सब मनुष्योंके लिये घरमसे उधर जानेका कारण हुआ जिससे जीवन होय।
क्योंकि जैसा एक मनुष्यके ज्ञाजा लंघन करनेसे बहुत लेग पापी बनाईं गये तैसा एक मनुष्यके ज्ञाजा माननेसे बहुत लेग घरमसे बनाईं जायें। पर ब्यवस्था भी प्रवेश हुआ कि अपराध बहुत होय परन्तु जहां पाप बहुत हुआ तहां अनुयह बहुत अधिक हुआ। कि जैसा
पापने मृत्युमें राज्य किया तैसा हमारे प्रभु यीशु खीरुके द्वारा ज्ञान्यह भी ज्ञान्य जीवनके लिये धर्मिक द्वारासे राज्य करेः।

ई छठवां पढ़े।

1 दिव्याविद्याएँ के पापने खेता रहना ध्यान है। 2 उनका बपतिस्मा सेना भी मृत्युमें खेता जानका ज्ञान्या है इससे धर्मिक प्रमाण। 3 पापने ब्रह्ममें रहना उनका चाहिए होगा। 4 पापने भगवानने ज्ञानें देख जाने ज्ञानें इसका प्रमाण।

ता हम का कहें। क्या हम पापने माने जिससे ज्ञान्यह बहुत हो। ऐसा न है। हम जो पापने लिये मूंग हैं क्योंकर जाब उसमें जीवियें।

क्या तुम नहीं जानते हो कि हममें जितनें खीरु खीरुका बतातिका लिया उसकी मृत्युमें बतातिका लिया। तो उसकी मृत्युमें बतातिका लिये हम उसके संग गाड़े गये कि जैसे खीरु खीरु पितामह ऐरवाईंसे मृत्युमें संग गाड़ा गया तैसे हम भी जीवनकी सी नई चाल चलने।

क्योंकि यदि हम उसकी मृत्युमें समान्तामें उसके संयुक्त हुए हैं तो निखचय उसके जी उत्तलकी समान्तामें भी संयुक्त होंगे। क्योंकि यह जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके संग क्रूरपर ढाला गया इसलिये कि पापना भीरिर भय किया जाय जिससे हम फिर पापने दास न होंगे। क्योंकि जो भय है सा पापने चुढ़ाया गया है। जैसा यदि हम खीरुके संग मूंग हैं तो बिद्वास करते हैं कि उसके संग जीवियें भी। क्योंकि जानते हैं कि खीरु मृत्युमें संग फिर नहीं मरता है। उसपर फिर मृत्युकी प्रभुता नहीं है। क्योंकि वह जो मरा तो 10
पापके लिये एकही बेह मरा पर वह जीता है तो
११ ईश्वरके लिये जीता है। इस रीति से तुम भी अपनेका
समक्र विं कि हम पापके लिये ता मृत्तक हैं परन्तु हमारे
प्रभु लोकार्पणें ईश्वरके लिये जीविते हैं।
१२ सा पाप तुम्हारे मरनहार शरीरमें राज्य न करे
कि तुम उसके अभिलाषासिं लिये पापके जीवाकारी हो।
१३ श्रीर न श्रुपने अंगेंके धम्मके हरियार करके पाप-
त्वा संप देखी परलो जैसे मृतकोंमें जी गये हो। तेसे
अपनेके ईश्वरके संप देखी श्रीर अपने अंगेंके
१४ ईश्वरके ताँद्रे धम्मके हरियार करके संप। किंगकि
तुम पर पापकी प्रभुता न होगी इसलिये कि तुम व्यव-
स्थायी अधिन नहीं परलो अनुशिक्षे अधिन हो।
१५ तो क्या। क्या हम पाप किया करें। इसलिये कि तुम
व्यवस्थाके अधिन नहीं परलो अनुशिक्षे अधिन है। ऐसा
१६ न हो। क्या तुम नहीं जानते है बि तुम श्राज्ञा मान-
लेके लिये जिसके यहां अपनेके दास करके संप देने
हो उसीके दास हो जिसी श्राज्ञा मानते हो चाहे
मृतके लिये पापके दास चाहे धम्मके लिये श्राज्ञापा-
१७ जनके दास। पर ईश्वरका धन्यवाद हो बि तुम
पापके दास ता। ये परलो तुम जिस उपदेशके सांचेमें
१८ दाले गये मनसी उसके श्राज्ञाकारी हुए। श्रीर में तुम्हारे
शरीरकी दुर्बेलताके कारण मनुष्यकी रीतियां कहता हैं
१९ कि तुम पापसी उद्धार पाके धम्मके दास बने हो। जैसे
तुमने अपने अंगेंके धम्मके लिये प्रशुदुता श्रीर
धम्मके दास करके प्रपेध किया तेसे श्रव अपने अंगेंके
क्रमांक विषयके लिये धर्मसे दास करके अर्पण करें।
जब तुम पापके दास थे तब धर्मसे निर्भैन्ध थे। 20
तथा उस समयमें तुम क्या फल फलते थे? वे कर्मविनि जिनसे 21
तुम चर्चा करते हैं क्योंकि उनका ज्ञान मृत्यु है।
पर चर्चा पापके उत्तर पापे चर्चा इश्वरके दास बनके 22
तुम प्रिविषयताके लिये फल फलते थे चर्चा उसका
ज्ञान अनन्त जीवन है। क्योंकि पापकी मजूरी मृत्यु 23
है परन्तु इश्वरका बरदान हमारे प्रभु श्रीराम यीशुमें
अनन्त जीवन है।

7 सातवां पद्मे।

1 विभाषी लोग यथायथके अधीन नहीं हैं। इसलिये इश्वरकी बेहद करना उन्हें
व्यवस्था दें इसका प्रभाव। 2 यथायथ उत्तम है तो भी पाप उसके हेतु श्रेयक
देता है इसका वर्धन। 3 यथायथ नहीं अतः पापका स्वभाव मृत्युका का-
रण है इसका अहरण।

हे भाईया क्या तुम नहीं जानते हैं क्योंकि मैं व्यव-
स्थाके जाननेहारांसे बोलता हूं कि जबलां मनुष्य
जीता रहे तबलां व्यवस्थाकी उसपर प्रभुता है। क्योंकि 2
विवाहिता स्त्री अपने जीवते स्वामीके संग व्यवस्थासे
बन्धी हैं परन्तु यदि स्वामी मर जाय तो वह स्वामीकी
व्यवस्थासे बुद्ध गई। इसलिये यदि स्वामीके जीतेजी 3
वह दूसरे स्वामीकी है। जाय तो व्यभिचारिणी कहा-
बेगी परन्तु यदि स्वामी मर जाय तो वह उस व्यव-
स्थासे निर्भैन्ध हुईं यहाँलां कि दूसरे स्वामीकी हो जानेसे
भी वह व्यभिचारिणी नहीं। इसलिये है मेरे भाईया 4
तुम भी श्रीराम के देखके द्वारसे व्यवस्थाके लिये मर गये
कि तुम दूसरे हो जा फिन अर्थात् स्तोत्र जो मृत्युके के
जी उठा इसलिए जिस हम इंस्वरके लिये फल फलें।

क्योंकि जब हम शारीरिक दृष्टियों में तब पापेंके श्राहिक-लाह जो अवस्थाके द्वारा से हमारे अंगामें कायमी द करवाते थे जिसमे मृत्युके लिये फल फलें। परन्तु जब हम जिसमे बल्के थे उसके लिये मृत्यु हाके अवस्था-से बूढ़े गये हैं यहांलों कि लेखकी पुरानी रीतिपर नहीं परन्तु श्यात्माकी नई रीतिपर सेवा करते हैं।

तो हम कथा कहें। कथा अवस्था पाप है। ऐसा न हो। परन्तु बिना अवस्थाके द्वारा से में पापको न पह-चानता हां अवस्था जो न कहती कि लालच मत कर।

तो में लालचकी न जानता। परन्तु पापने अवस्थाके आज्ञाकी द्वारा सब प्रकारका लालच मुखमें जन्मा।

या क्योंकि बिना अवस्था पाप मृत्यु है। में तो अवस्था बिना अज्ञाते जीवता था परन्तु जब शायद शायद तब पाप जी गया शैर में मृत्यु। शैर वही शायद जो जीवनके लिये थी मेरे लिये मृत्युका कारण ठहरी।

क्योंकि पापने अवस्था पापे शायदके द्वारा मुखे दुगा।

शैर उसके द्वारा मुखे मार डाला। पर अवस्था पापी है शैर शायद पाप शैर यथार्थ शैर उत्तम है।

तो कथा वह उत्तम वस्त्र मेरे लिये मृत्यु हुई। ऐसा न हो। परन्तु पाप जिसमे वह पापसा दिखाई देवे उस उत्तम वस्त्रके द्वारा से मेरे लिये मृत्युका जन्मानेहारा हुआ इसलिए कि पाप शायदके द्वारासे अत्यन्त टापिक बाज है।

हो जाय। क्योंकि हम जानते हैं कि अवस्था अत्याधिक है परन्तु में शारीरिक शैर पापके हाथ बिका हू।
कीांकि जो में कार्ता हूं उसको नहीं समक्षता हूं कीांकि १५ जो में चाहता हूं सोई नहीं कार्ता हूं परंतु जिससे घिनाता हूं तोई कार्ता हूं। पर यदि में जो नहीं चाहता १६ हूं सोई कार्ता हूं तो मैं व्यवस्थाको मान लेता हूं कि अच्छी है। तो जब तो मैं नहीं उसे कार्ता हूं परंतु १७ पाप जो मुक्तमें बसता है। कीांकि में जानता हूं कि १८ बेठेरा उतम बस्तु मुक्तमें अर्प्पात मेरे शरीरमें नहीं बसती है कीांकि चाहना तो मेरे संग है परंतु अच्छी करनी मुक्ती नहीं मिलती है। कीांकि वह अच्छा काम २० जो में चाहता हूं मैं नहीं कार्ता हूं परंतु जो बुरा काम नहीं चाहता हूं सोई कार्ता हूं। पर यदि में जो २१ नहीं चाहता हूं सोई कार्ता हूं तो जब मैं नहीं उसे कार्ता हूं परंतु पाप जो मुक्तमें बसता है। तो मैं २२ यह व्यवस्था पाता हूं कि जब मैं अच्छा काम किया चाहता हूं तब बुरा काम मेरे संग है। कीांकि में २३ भीतरी मनुष्यत्वकी भावसे इश्वरकी व्यवस्थासे प्रसन्न हूं। परंतु में अपने संगमें दूसरी व्यवस्था देखता हूं २४ जो मेरी बुद्धिकी व्यवस्थासे लड़ती है और मुक्त मुक्त पापकी व्यवस्थाकी जो मेरे संगमें है बन्धनमें दालती है। जां २४ भागा मनुष्य जो मैं हूं मुक्त इस मृत्युके देहसे कौन विशालवेगा। मैं इश्वरकी धन्य मानता हूं कि हमारे २५ प्रभु यीशु खोजके दारासे वही बचानेहारा है। तो मैं राम बुद्धिसे तो इश्वरकी व्यवस्थाकी सेवा परंतु शरीरसे पापकी व्यवस्थाकी सेवा कार्ता हूं।
8 झाटवां पंचे ।

१ प्राप्त श्रीवश्चारे कुट बानेका वाणपाय । ५ शारीरिक व्रज शीर शारीरिक व्रजठाका ध्याना । १२ शारीरिक व्रजठाम मौन शीर लेहालक पदक प्राप्त होना । १५ देहनार महिमाकार श्रावाश जे शारीर शृंगठि शीर चित्र करने वाली दासी शेष रखते हैं उक्तका बर्मन । २७ पवित्र श्रावाशका प्राणियाम शहायता करना । २८ चक्षुर- का ज्ञाने प्रिव लंगोंका श्राव प्रकारकी श्रायोश देना । ३१ उनका उसके कभी किसी रोगिके बालए न शेना ।

१ सो चित्र जी लोग श्रीवश्च रणेशम एंस धवित श्राराके अनुसार नहीं परन्तु श्रावाशके अनुसार चलते हैं उन- २ पर कहीं दंडकी जाजा नहीं है। क्योंकि जीवनके श्रावाशके ब्यवस्थाने श्रीवश्च रणेशम मुखे पापकी ची।

३ मृत्युकी ब्यवस्थासे लिखित निमं किया है। क्योंकि जी ब्य- 

स्थान अन्नहाना। या इसलिये कि श्राराके द्वाराते वह 

दुनिया की उसकी इश्वर्वरने किया अर्थात अपनेही पुष्करी 

पापके श्राराकी समानतामें ची ची पापके कारण भेजके

४ श्रारामे पापपर दंडकी जाजा दिई । इसलिये कि 

ब्यवस्थाकी विधि हमारमें जो श्राराके अनुसार नहीं 

परन्तु श्रावाशके अनुसार चलते हैं पूरी किदे जाय ।

५ का श्राराके अनुसारी हैं सो श्राराकी बातंपर मन लगाते हैं पर जी श्रावाशके अनुसारी हैं सो श्रावाशकी 

बातंपर मन लगाते हैं। श्रारापर मन लगाना तो 

मृत्यु है परन्तु श्रावाशपर मन लगाना जीन ची ची

६ काल्पनिक है। इस कारण कि श्रारापर मन लगाना 

इश्वरसे शुभता करना है क्योंकि वह मन इश्वरकी व्य- 

वस्त्रीक बिनम है नहीं होता है क्योंकि जी नहीं सकता है।

६ ची जी शारीरिक द्रष्टान्त हैं सो इश्वरकी प्रस्ताव नहीं 

कर सकते हैं। पर जब कि इश्वरका श्रावाश तुममें वसता
है तो तुम शारीरिक दंशामें नहीं परन्तु ज्ञात्मिक दंशामें है। यदि किसीमें स्नेहका ज्ञात्मा नहीं है तो वह उसका जन नहीं है। परन्तु यदि स्नेह तुममें है तो देह पापके 90 कारण मृत्यु है पर ज्ञात्मा धर्मके कारण जीवन है। धीर जिसने यीशुका मृत्युक्रमसे उठाया उसका ज्ञात्मा 91 यदि तुममें बसता है तो जिसने स्नेहका मृत्युक्रमसे उठाया से तुम्हारे मरनहार देखिया भी जिसने ज्ञात्मा-के कारण जो तुममें बसता है जिन्दाबादें।

इसलिये है भक्तो जम शरीरके ज्ञात्मा नहीं हैं कि 92 शरीरके ज्ञात्मा द्वारा दिन कार्ती। क्योंकि यदि तुम शरीरके 93 ज्ञात्मा द्वारा कार्ती तो मरांगे परन्तु यदि ज्ञात्मा देखकी जियाशंका मारी तो जीवनगे। क्योंकि जितने 94 लोग इंश्वरके ज्ञात्माके चलाये चलते हैं वहीं इंश्वरके पुष्प हैं। क्योंकि तुमने दासत्वका ज्ञात्मा नहीं पाया है 95 कि फिर भयानक होया परन्तु लोपजापनका ज्ञात्मा पाया है जिससे हम है बहसा ज्ञात्मा है पिता पुकारते हैं। ज्ञात्मा ज्ञात्मा हमारे ज्ञात्मके संग साधार देता है 96 कि हम इंश्वरके सन्तान हैं। धीर यदि सन्तान हैं तो 97 अधिकारी हैं हां इंश्वरके अधिकारी धीर ज्ञात्मके संगी अधिकारी हैं जि हम तो उसके संग दुःख उठाते हैं जिसतं उसके संग महिमा भी पावें।

क्योंकि में समझता हूं जि इस वर्तमान समयके दुःख 98 इस महिमाके चारे जा हमेंमें प्रगत किंग्ज जायगी कुछ गिननके यात्रा नहीं हैं। क्योंकि सबकी प्रत्येका इंश्वरके 99 सन्तानके प्रगत होनेकी वात ज्ञात्ती है। क्योंकि सुख 20
प्रिय दोस्त,

मैं आपके सामने आया हूँ। आपके सामने आया हूँ क्योंकि मैं आपके सामने आया हूँ। आपके सामने आया हूँ क्योंकि मैं आपके सामने आया हूँ। आपके सामने आया हूँ क्योंकि मैं आपके सामने आया हूँ।

हमारे द्वारा आपने मनोरंजन और शिक्षा के लिए एक सुगम होटल सुविधाओं के लिए सहायता की है।

धन्यवाद,

[आपका नाम]
उसने अपने पुत्र के रुप में दुःख होनेका आंगिे उहराया जिससे वह बहुत भाषायमें पहिलोता होवे। फिर 30 जिन्हें उसने आंगिे उहराया उन्हें बुलाया भी तीर जिन्हें बुलाया उन्हें धम्म म ठहराया भी तीर जिन्हें धम्म म ठहराया उन्हें महिमा भी दिए।

तो हम इन वातांपर क्या कहे। यदि ईश्वर हमारी 31 तीर है तो हमारे बिन्दु तीर उन्ही होगा। जिसके अपने 32 निज पुत्र इनके न रख छोड़ा परन्तु उसे हम सभीने लिये श्रीमान दिया । उसके संग हमें तीर सब कुछ कोंकर न देगा। ईश्वर के चुने हुए ले गींगापर देख तीर लागाविगा । 33 क्या ईश्वर जो धम्म म ठहरानेहारा है। 34 दंडकी आदा दिने- 34 हारा तीर होगा। क्या रोशी जो मरा हां जो जी मे वाता जे। ईश्वर की दृढ़ती तीर मे है जो हमारे लिये बिन्दु भी करता है। तीर हमें वशीकृत प्रमसे झलल झर करेगा। क्या झगर वा संकेत वा उपद्रव वा सकाल वा नंदाई वा जाकिम वा खट। जैसा लिखा है कि इन तेरे लिये हम दिन भर घात किये जाते हैं हम वध होनेवाली भेंडांकी नाई गिने गये हैं। नहीं पर इन इन सब वातां पर हम उसके द्वारासे जिसने हमें प्यार किया है जयवत्से मे ज्ञातिह है। कोंकर में निष्क्रय जान- 38 ता हूं कि न मृत्यु न जीवन न दूर्गण न प्राणान्त न परामर्श न बताते हा । हम भविष्य न जानें न गाहे- इन राई न तीर तीर हमें ईश्वर के प्रमसे जो हमारे प्रभु ब्रह्म योक्तें है। अलग कर सकेंगी।

______________________

Xarized by Google
नवां पंक्ति

मै बौद्धों के दर्शनीय प्राकृतिक अवसर बहुत रोगों का कारण है। अन्यथा हर जीवी जिसे भिन्न भिन्न \( \text{सौंदर्यका विशेष शुक्लवा बहुत अच्छा है।} \)

मेरे नाम का सत्य कहता हूँ, मैं फूट नहीं बोलता हूँ। शीर्षसे मेरा मन भी प्रविधि शातिमार्ब मेरा सायो है।

किसी सुन्दर बड़ा शीर्षक शीर्ष रंग मेरे नक्षत्र निर्तल ब्रह्म है। कीचण्डी में ध्यान प्रार्थना कर सकता कि ज्ञान पी भैयांकृ से लिये जो शरीर के भावसे मेरे कुरान हैं।

मेरे बौद्धों साधित होता है, जब इसारेली लोग हैं शीर्ष शीर्षक प्राकृतिक धर्म हैं। तेज नियम शीर्ष व्यवस्था के निकृत्त पर शीर्ष संबंधक शीर्ष प्रतिज्ञाएं उनकी हैं। पिताल लोका भी उन्हीं हैं। शीर्ष उनके शरीर के भावसे बौद्ध है। जो सहिं व्यवस्था इंश्वर सब्बदा प्रमाण है। ज्ञानी।

पर ऐसा नहीं है जब इंश्वरका बचन रह गया है। कीचण्डी सब लोग इसारेली नहीं जो इसारेलीसे जन्मे हैं।

शीर्ष न इसलिए कि इब्राहीमके बंधन हैं। वे सब उसके सन्तान हैं। पर्यन्त (लिखा है) इसकाबी जो ही सो तेरा बंधन कहाँ तेरा। भाषात शरीरके जो सन्तान से इंश्वर-के सन्तान नहीं हैं पर्यन्त प्रतिज्ञाके सन्तान बंधन गिने मेरे हैं। कीचण्डी यह बचन प्रतिज्ञाका था जब इस समयके अनुसार मेरे साधु शीर्ष सारः के पुष्प होगा।

शीर्ष अय्यवल यह हैं। पर्यन्त जब रिवाज़ा भी एकसे भाषात हमारे पिता इसहासने गमवती हुईं। शीर्ष
बालक नहीं जन्मे थे श्रीर न कुछ भना उच्चाया बुरा किया था तबही उससे कहा गया कि बड़का बुरके दास होगा। इसलिये कि इंशवरकी मनसा जो उसके १२ चुन लेनके अनुसार है अभिप्राप्त हुतसे नहीं परन्तु बुला-नेहारेकी श्रीरसे बनी रहे। जैसा लिखा है कि मैंने १३ याकूबकी यार किया परन्तु यसीको अभिप्रय जाना।

तो हम क्या कहें? क्या इंशवरकी यहां अन्याय है। १४ देसा न हो। क्योंकि वह मूसासे कहता है में जिस १५ बिसीपर दया कहने उसपर दया कहनगा श्रीर जिस बिसीपर कृपा कहने उसपर कृपा कहनग। सो यह न १६ तो चाहनेहारेका न तो दोड़नेहारेका परन्तु दया करनेहारे इंशवरका आम है। क्योंकि धर्मपूर्तक फिर-१७ जनसे कहता है कि मैंने तुम्हें इसी बातके लिये बढ़ाया कि तुम्हें अपना पराक्रम दिखाजं श्रीर कि मेरा नाम सारी पृथिवीमें प्रचार किया जाय। सो वह जिसपर दया १८ किया चाहता है उसपर दया करता है परन्तु जिसे कठोर किया चाहता है उसे कठोर करता है। तो तू १५ मुक्ते कहेंगा वह फिर देश कीं देता है क्योंकि कोन उसकी इच्छाका सासा करता है। हां पर हे मनुष्य तू २० कोन है जा इंशवरसे विभाद करता है। क्या गद्दी हुई बस्तु गढ़नेहारेको कहेगी तूने मुक्ते इस तीतिसे कों बनाया। उच्चा क्या कुमारकी मित्रीपर आधिकार २१ नहीं है कि एकही पिंडमेंते एक पाचकी झाड़के लिये श्रीर दुसरेकी झानादरके लिये बनाये। श्रीर यदि २२ इंशवरसे झपना क्रोध दिखानेकी श्रीर झपना सामर्थ
ग्राम करनेवाली इच्छासे आपको पास जो विनाशकी ग्राम जिये गये चे बड़े धीरज़े सही। चैर द्याके पास जिन्हें उसने महिमाके लिये चांगले तैयार किया छत्ती महिमाकी धनका प्रगट करनेवाली इच्छा खिले ता तू चैर है जो भवाद करे। इसे का उसने बुलाया भी अर्थत हमें जो बेवल यहाँ रहने से नहीं परन्तु अन्यदेशाली में भी हैं। जैसा वह हृदयको ग्राम पुस्तकम भी कहता है कि जो मेरे लाग न थे उन्हें मेरे छपने लाग किया चैर जो गारी न थी उसे गारी कहूँगा। चैर जिस स्थानमें लागाने कहा गया कि तम मेरे लाग नहीं हो वहाँ वे जीवन देशबाधित सन्तान 20 कहाँ रहे। परन्तु यिशियाह इसायेनकी विषयमें पुकारता है यदापि इसायेनकी सन्तान निकी समुद्र की नाइं हो तारी जो बच रहेंगे उन्हें को भया होगी।

25 कौनसा परमेश्वर बातका गूरी करनेवाला चैर धम्मकी श्रीष्ठ निबाहने वाला है कि वह देशमें बातका शीघ्र समाप 25 करेगा। जैसा यिशियाहने कहा भी कहा था कि यदि सेनाओंका भ्रुम हमारे लिये बंग न ढोला देता तो हम सदृश करेंगे हो जाते चैर भ्रमरूप समाप किया जाते।

30 ता हम का कहे। यह कि अन्यदेशाले जो धम्मकी पीछा नहीं करते वे धम्मकी अर्थत उस धम्मका 31 जी विश्वाससे है प्राप्त किया। परन्तु इसायेनी लाग धम्मकी व्यवस्थाका पीछा करते हुए धम्मकी व्यवस्था- 32 का नहीं पहुँचे। किसलिये। इसलिये कि वे विश्वाससे नहीं परन्तु जैसे व्यवस्थाके आमांसे उसका पीछा
कार्ति चे कि उन्होंने उस देखीं के पत्थरपर ठाकर खाईं।
जैसा लिखा है देखा भें नियमें एक देखीं के पत्थर श्री
भार ठाकरकी चटान रखता हूं श्री जो भैरू उसपर विश्वास करे सा लाभित न होगा।

10 दसवां पर्व।

1 वियुहियोंका यम करना परन्तु महू धर्ममं प्राप्तन रहना। 8 व्यवस्था धर्मं
श्री भैरव वह धर्ममं के विश्वाकार द्वारा है भैर दोनोंका व्योरा। 14 सुसमाचारका
प्रचार किया जाना श्रीर वियुहियोंका बचे न मानना।

हे भार्यो इस्माईलम्र लिये भेरे मनकी दूसरा श्री
भेरे प्रारंभण भे में इंग्लैंडसे करता हूं उनकी चाकू के लिये
है। क्योंकि में उनपर सांस हेता हूं कि उनकी इंग्लैंडके
लिये पुनः रहती है परन्तु युनाकी रीतिसे नहीं। क्योंकि
वे इंग्लैंडके धर्ममं न चीनसे पर अपनअही धर्ममं स्था-
पन करनेका यह करके इंग्लैंडके धर्ममं ऐसीनहीं हुए।
क्योंकि धर्ममं निमित्त हर एक विश्वास करनेहारीमे
लिये खींट व्यवस्था धर्ममं अन्त है। क्योंकि मुसा उस धर्ममं
विश्वासदे भे व्यवस्था है लिखा है कि जो मनूष्य
यह बातं पालन करे ता उसे जीवन। परन्तु जो
धर्ममं विश्वाससे है ता यूं कहता है कि अपने मनमं
मत कह कौन स्वर्गपर चढे ग। यह ता खींटकी
उतार लानेको लिये होता। जाबा कौन पातलमं
ठारू गा। यह ता खींटकी मृत्कोंमे ऊपर लानेको लिये
होता। फिर क्या कहता है। परन्तु बचन तेरे निकट
तेरे मुंहमं श्रीर तेरे मनमं है। यह ता विश्वासका
बचन है जो हम प्रचार करते हैं। कि यदि तू अपने
मुंहांसे प्रभु यीशुकी मान लेवे श्रीर अपने मनमं विश्वास

Xanized by Google
करे कि ईश्वरने उसका मृतकोंमें उठाया तो तू चाहा

90 पावेगा। क्योंकि मनसे धर्ममें लिये विश्वास किया जाता है ईश्वर मुझसे चाहने लिये मान लिया जाता है। क्योंकि धर्मपुस्तक कहता है कि जो कोई उसपर विश्वास करे सा लज्जित न होगा। यिहूदी ईश्वर यूनानीमें कुछ भेद भी नहीं है क्योंकि समेंका एकही प्रभु है जो समेंके लिये जो उससे प्रार्थना करते हैं घनी है। क्योंकि जो कोई परमेश्वरके नामको प्रार्थना करेगा सा चाहा पावेगा।

91 फिर जिसपर लोगाने विश्वास नहीं किया उसते वे क्योंकर प्रार्थना करें ईश्वर जिसकी उन्हें सुनी नहीं उसपर वे क्योंकर विश्वास करें ईश्वर उपदेशक बिना वे क्योंकर सुनें। ईश्वर वे जो भेजे न जायें ता क्योंकर उपदेश करें जैसा लिखा है कि जो कुलका सुसमाचार सुनाते हैं धर्माल भली बातेंका सुसमाचार प्रचार करते हैं। उनके पाव सैंस सुन्दर हैं। परन्तु सबलोगाने उस सुसमाचारके नहीं माना क्योंकि विभूषियाह बहुत है वे परमेश्वर किसने हमारे समाचारका विश्वास किया है।

92 बचनके द्वारसे स्नाता है। पर में कहता हूं क्या उन्होंने नहीं सुना। हां बढ़न (लिखा है) उनका शब्द सारी पृथ्वीकर ईश्वर उनकी बातें जगतके सिवानेंतक निकल गईं। पर में कहता हूं क्या इसायेली लोग नहीं जाते थे। पहिले मुसा कहता है में उन्हेंपर जो एक लोग नहीं हैं तुमसे डाह करवांगे में एक निरुप्ति लोगपर
तुमसे क्षोध करवाऊंगा। परंतु यिशैयाह साहस करके 20 कहता है कि जो मुके नहीं दूढ़ते वे उनसे मैं पाया गया जो मुके नहीं पृुढ़ते वे उनपर मैं प्रगट हुआ। परंतु इसायेली लागकों का वह कहता है मैंने सारे दिन 21 अपने हाथ एक झालांलंगन श्री विवाद करनेहरू लागको श्रीर पसारे।

11 एग्यारह्वान पल्ले।

१. इशवरने जो इसायेली लागकोंमैं जितनेको अपने भनुद्रहे भुजा है शोर दुबरे इसायेली लागा पातिस हुए वन बातोक्रि प्रमाण। ११ इसायेलीयोको पतननेहरू द्वारे भ्रमयोकियोकर कृपया हुर्ड शोर तीर्थका स्वतः इसायेलिका मूल शाह्कार भना रहा इसका भ्रमयोकियोपर प्रगट करन। २१ हुसायेलियर वहीं फिर कृपा रोगी इसका भविष्यका श्रीर बिवर्जन । ३३ इशवरके भान श्रीर न्यायका व्याख्या।

ता मैं बहाता हूँ क्या इशवरने अपने लागकों त्याग दिया है। ऐसा हो बोल्यांकि मैं भी इसायेली जन इसायेलीको बंशसे श्रीर बिनयामीनको तुलना हूँ। इशवरने अपने लागकों जिन्हें उसने श्रीरी जाना त्याग नहीं दिया है। क्या तुम नहीं जानते हो कि धम्मिपुस्तक यलियाहको कथामैं क्या कहता है कि वह इसायेलिको बिल्ड़ इशवरसे बिल्ड़ करता है। क्या है परमेश्वर उनहींने तेरेभविष्यका श्रीरी गाँठ दिया है श्रीर तेरी बेदियाको खाद दाखा है श्रीर मैंहो झकेला छुट गया हूँ श्रीर वे मेरा प्राय लेने चाहते हैं। परंतु इशवरकी बारी उसने क्या कहता है। मैंने अपने लिये सात सहस मनुष्योंको रूढ़ छोड़ा है जिन्हेंवाङ्कलश्रीरी गुरुना नहीं रोका है। सो इस रोतिसे इस बर्तमान समयमैं भी जनुष्णहस्ते चुने हुए जितने लाग बच रहे हैं। श्री यह जनुष्णहस्ते हुसाँ
है तो फिर काम्मैंसे नहीं है नहीं तो अनुयह झब झनुयह नहीं है। पर यदि काम्मैंसे हुज्ज वह फिर अनु- ० अन नहीं है नहीं तो काम्से झब कस्मे नहीं है। तो क्या ज्ञती है। इसके लाग जिसको हुज्ज़ते हैं उसका उन्होंने प्राप्त नहीं किया है परन्तु चुने हुज्जाते प्राप्त किया है
८ शीर दूसरे लाग कठोर किये गये हैं। जैसा लिखा है
क्या इंशबरने उन्हें जाने दिनले जड़ता। भाषा हां अांखिं जो न देखें शीर क्षण जो न सुनें दिये हैं।
१० शीर दाजाद बहता है उनकी निशं उनके लिये फंदा शीर जाल शीर ठाकरका कारण शीर प्रतिफल है
११ जाय। उनकी शाँखींपर शान्ति हो चा जाय कि वे न
देशें शीर तू उनकी पीठकी नित्य भुका दे।
१२ तो में कहता हूं क्या उन्होंने इसलिये देखाता खाई कि
गिर पड़े। ऐसा न है परन्तु उनके गिरनें हेतु सजन-
१२ देशियोंका ढाल हुज्जा हैं कि उनसे डाय करबाये। परन्तु
यदि उनके गिरनें जगतका घन शीर उनकी हालिसे
अन्यदेशियोंका घन हुज्जा ता उनकी मर्पूरीसे वह घन
१३ जितना आधिक बनके होगा। में तुम अन्यदेशियोंसे
कहता हूं। जब वि में अन्यदेशियोंके लिये प्रेरित हूं में
१४ अपनी सेवकाईंको बढ़ाई करता हूं। कि किसी रोतिसे
में उनसे जो नेरे श्रीरकी ऐसी हैं डाय करबाये उनमें
१५ बढ़ाई एककी भी बचाई। क्योंकि यदि उनके त्याग दिये
जानें जगतका मिलाय हुज्जा ता उनके प्रहण किये
१६ जानें क्या होगा। क्या मूलकोंसे जीवन नहीं। यदि
पहिला फल पविच हैं ता पिंड भी पविच हैं शीर यदि
जह तरवच है तो हालियां मे पवार है। परन्तु यदि १७ हालियांमे कितनी ताड़ हाली गईं चौर तू जंगली बलपाईं होके उन्हांमें सारा गया है चौर बलपाईंके बृक्षकी जड़ चौर तेलका भागी हुआ है ता हालियांके बिस्त्र घमंड मत कर। परन्तु जो तू घमंड करे तैमी १८ तू जड़का बाघार नहीं परन्तु जड़ तेरा बाघार है।

फिर तू कहेगा हालियां ताड़ हाली गईं कि में सारा २० जां। बाघा वे खबीलासके हेतुते ताड़ ताड़ हाली गईं २१ पर तू बिलाससे खड़ा है। खबीलासी मत है परन्तु भय कर। कौंकिय यदि इंधवरनेस्वभाविक हालियां न २२ खड़ीं तो ऐसा न हो कि तुमें भी न खड़ीं। तो इंधवरकी २३ कुपा चौर बढ़ाईं देख। जे गिर पड़े उनपर कड़ाई परन्तु तुमपर जो तू उसकी कुपामें बना रहे तो कुपा नहीं तो तूभी कार हाला जायगा। चौर वे भी जे २४ खबीलासके न रहें तो सारे जायेंगे कौंकिय इंधवर उन्हें फिर सार सकता है। कौंकिय यदि तू उस जलपाईंके २५ बृक्षके जि स्वभाविक जंगली हैं कारा गया चौर स्वभाविक बिस्त्र जंगली जलपाईंके बृक्षमें सारा गया तो कितना खाधिक करके ये जि स्वभाविक हालियां हैं खपनेही जलपाईंके बृक्षमें सारे जायेंगे।

चौर है माइयों में नहीं चाहता हूं फिर तुम इस २६ भेदिे अनजान रहे ऐसा न हो कि खपने लेके बुढ़ीमान होई। लघित कि जबलों चल्चित्रियोंकी सम्पूर्ण संख्या लुप्त न करे तबलों कुछ कुछ इसायेल्योंकी कठिएता रहेगी। चौर तब सारा इसायेल चाख पाओगा जैसा २७
लिखा है कि बचानेहारा सियासे आवेगा चीरः
20 लघुर्मीपनको याकूबसे जलग करेगा। जब तब उनके धर्मार्थों दूर कहिएगात तब उनसे यही मेरी चीर्से लिया
28 होगा। वे सुसमाचारके भावसे तुम्हारे कारण बैरी हैं परन्तु चुन लिये जानके भावसे धर्मार्थों के कारण ध्यारे
28 हैं। क्योंकि ईश्वर अपने बदानिन्से चीर बुलाहट्से
30 कभी पछतानेराला नहीं। क्योंकि तुमसे आगे ईश्वरकी ज्ञाना लंघन किए परन्तु शुभे उनके ज्ञाना
31 उन्नतिरने हेतुसे तुमपर दया किए गई है। तसे इन्हे भी शुभ ज्ञाना लंघन किए है कि तुमपर जी दया किए
जाती है उसके हेतुसे उनपर भी दया किए जाय।
32 क्योंकि ईश्वरने सम्भंको ज्ञाना उन्नतिनम्नें बन्द कर
रखा इसलिए कि सम्भंपर दया करे।
33 ज्ञाना ईश्वरके धन चीर बुझी चीर ज्ञानकी गंभीरता। उसके विचार कैसे अध्यात्म चीर उसके मार्ग कैसे
34 अगम्य हैं। क्योंकि परमेश्वरका मन किसने जाना
35 ज्ञाना उसका मनों कौन हुआ। ज्ञाना किसने
उसके पहिले दिया चीर उसका प्रतिफल उसके
इद दिया जायगा। क्योंकि उससे चीर उसके द्वारा चीर
उसके लिये सब कुछ है। उसका गुणानुबाद सबंदा
हाय। आमीन।

19 बारहवां पाठः।
1. चैतने चैतने द्रव शांतयोंके भुजुर्कर प्रभुकी उद्धर करता विद्याविश्वाको भावयश है बसका बहरै । 4. प्रेम चीर निराला चीर ज्ञाना यहाँ दिक्कर कानेका उपदेश ।
5. ताहे है भाई। मैं तुमसे ईश्वरकी दयाके कारण
बिन्दु करता हूँ कि अपने शरीराँको जीवता श्रीर पवित्र श्रीर इंश्वरकी प्रसन्नता योग्य बलिदान करके चढाश्री कि यह तुम्हारी मानसिक सेवा है। श्रीर इस संसारकी रीतिपर मत चला करे परलु तुम्हारे मनके नये हानीसे तुम्हारी चाल चलन बदली जाय जिसंते तुम परबें कि इंश्वरकी इस्म्या भागीत उत्तम श्रीर प्रसन्नता योग्य श्रीर पूरा कार्य का है। कैंगकि जै अनुयह मुक्षे दिया गया है उससे में तुममेंके हर एक जनसे कहता हूँ कि जो मन रखना उचित है उससे जंचा मन न रखे परलु ऐसा मन रखे कि इंश्वरने हर एकों बिश्वासका जो परिमार्ग बांट दिया है उसके सनुसार उसको सुबुद्ध मन होय। कैंगकि जैसा हमें एक देहमें बहुत ब्रह्म हैं परलु तब ब्रह्मको एकही काम नहीं है। तैसा हम जो बहुत हैं ख़ोपु्रमें एक देह हैं। श्रीर पृथ्वी करके एक दूसरेर्को ब्रह्म हैं। श्रीर जो कैंगकि हमें दिया गया है जब कि उसके सनुसार भिन्न भिन्न वर्तवाह हमें मिले हैं ता यदि भविष्यद्वाका दान है। ता हम बिश्वासके परिमार्गके सन्तार बालें। यथवा सेवकाईका दान हो ता सेवकाईमें लगे रहें। यथवा जो सिखानेहारा हो सा शिशुमें लगा रहें। यथवा जो उपदेशक हो सा उपदेशमें लगा रहें। जा बांट देवी सा सीधाईसे बांटे। जा यथवा यथवा करे सा यथवा करे। जो दया करे सा हरैछे करे।

प्रेम निश्चय होय। बुराईसे धिन्त करे भलाईमें लगे रहें। भ्रातीय प्रेमसे एक दूसरेरपर नया रखें। पर- १०
१२ त्यसप्रेर भ्रातार जरग्रेम संक्रमित दुःखाति हो। सात्मनीयार अनुराग हो। प्रभुका तेवार 

१२ किया करेः। भ्रातासें भ्रातानित हो। ध्वजार स्थिर 

१३ आरोही। प्रार्थनामेंलगे रहे। पवित्र लोगेंकी की भ्रातादयक 

१५ उसमें उनकी सहायता करेः। भ्रातिसेवाकी चेष्टा 

१५ करेः। भ्रातारे सतानेरांकी भ्रातीस देयते। भ्रातीस 

१५ देयते। साध मत देयते। भ्रातन्द करनेहरांकी संग भ्रात 

१५ देयते। साध मत देयते। भ्रातन्द करनेहरांकी संग भ्रात 

१५ नन्द करेः। भ्रातरानेरांकी संग राहेः। एक दूसरेकी 

१५ राहेः। उच्च मन राहेः। उच्च मन मत राहेः परन्तु 

१५ बुद्धिमान मत होते। भ्रातारे लेषे बुद्धिमान मत होते। 

१५ किसीसे बुराईके बदले बुराई मत करो। जी बार्त 

१५ शब मनुष्यांको भ्रात भली हें उनकी चिन्ता किया करेः। 

१५ यदि हो सके तुम ता भ्रातोसे सब मनुष्यांको संग 

१५ भार। हे भार। भ्रातारे पलटा मत लेयते परन्तु 

१५ भ्रातीस देयते कीकं कील्सा हे पलटा लेना भेजा 

२० वर्ण भ्रातोसे सब मनुष्यांको संग 

२० परमेश्वर कहता है में प्रतिफल देनेंगा। 

२० इसलिये यदि तेरा शहुँ भूखा है ता उसे बिला यदि 

२० प्रासा है ता उसे गिला कीकं यह करनेसे तू उसकी 

२० इसलिये यदि तेरा शहुँ भूखा है ता उसे बिला यदि 

२० निरपर भ्रागके संगारांकी देरी लगावेगा। बुराईसे 

२१ मत हार जा परन्तु भलाईसे बुराईके जीत ले। 

२१ तेरहवां पत्रेः 

१ भ्राताकारिकेऽवेचे पत्रेः रहनेकी भ्रातयकता। १२ प्रम भ्राताका स्वर है 

२ भ्राता वि भ्रातारे यावक। १२ समय देखकी भ्राताकी कामीक त्यागाको उपदेष्ट । 

२ हर एक मनुष्य प्रधान भ्राताकी भ्रातीन होवे 

२ कीकं भ्रातै। भ्रातिक भ्रातै। भ्रातिक नहीं है जो इशवरकी भ्रातिक न
हा पर जो स्थिति है तो ईश्वरवते ठहराये हुए हैं।
इससे हो सा अधिकारका बिराध करता है तो ईश्वरको विधिका सासा करता है छैर सासा करनेहारे अपने लिये तंड पाँवेंगे। क्योंकि अध्यात्म लोग भले मामेंसे नहीं परन्तु बुरे कामेंसे दरानेहारे हैं। क्या तू अधिकारीसे निर्दर रहा चाहता है। भला काम कर ता उससे तेरी सराहना होगी क्योंकि वह तेरी भलाईके लिये ईश्वरका सेवक है। परन्तु जो तू बुरा काम करे तो भय कर क्योंकि वह खदुका वृथा नहीं बांधता है। इसलिये कि वह ईश्वरका सेवक सरितात कुक्रमिकारिय ध्रुव पहुंचानेका दंडकारक है। इसलिये धारीन होना अभेष उस ध्रुवके कारण नहीं परन्तु बिवेकके कारण भी ध्वस्त है। इस हेतुके कर भी देशा क्योंकि वे ईश्वरके सेवक हैं। जो इसी बातमें लगे रहते हैं। सो सभेंको जा जा कुछ देना उचित है। सो सो देशा जिसे कर देना हो उसे बढ़ा जिसे महसूल देना है। उसे महसूल देशा जिससे भय करना है। उससे भय करी जिसका आदर करना है उसका आदर करे।
किसीका कुछ ध्रुव मत धारा बिवेक एक दूसरेंका प्यार करनेका ध्रुव क्योंकि जो दूसरेंको प्यार करता है। उसने ब्यवस्था पूरी कियें है। क्योंकि यह कि परस्त्रीगणना मत कर नरहिता मत कर चौरी मत कर फूटी साक्षी मत दे लाजच मत कर चौरी कोई दूसरी चाचा यदि होय ता। इस बातमें सरितात तु अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर सबका संपर्क है। प्रेम पड़ोसीकी कुछ।
बुराई नहीं करता है इसलिए प्रेम करना व्यवस्थापन युक्त करना है।

11 यह इसलिये भी किया चाहिए कि तुम समयके जानते हो कि नींदमें हमारे जागनेका समय अब हुआ है क्योंकि जिस समयमें हमने विश्वास किया उस समयसे अब हमारा चारण अधिक निकट है। रात बढ़ गई है ०० दिन निकट आया है इसलिये हम अनन्य-क्षणका कामसंग हम उतारके ज्योतिक किलम पहिन लें।

13 जैसा दिनका चाहिये तैसा हम शुभ रोतिसे चलें। लोला चौड़ा शी मतवालपनमें अवथ अभिव्यक्त है।

14 लुचनकी में अधिक ने कहा डाहेमें न चलें। परन्तु प्रभु योगु खीबुरका लोग आया शरीरके लिये उसके अभिलापका युक्त करनेको चिन्ता मत करों।

14 चादहावा प्रभु।

1 दुर्भाग़े सुम्ब बातिका विभाज करनेका वियोग। २ श्रावका पहिला प्रमाण अवराग सब विश्वासी तोग प्रमुखोंका वियोग है। ३ उपवास प्रमाण भारि शीर्षक दिवाला वचित नहीं है। ४ तीसरा प्रमाण अवराग देशका राज्य आयतिक राज्य है जिसमें भाजनका विवाह नहीं परन्तु प्रेमका सारे सारे भाजनका विवाह है। ५ दुर्भाग प्रसं विश्वासके चलनेका वियोग।

1 जी बिश्वासके दुर्भाग है उसे अपनी संगतिमें ले
2 लेकिन पर उसके मतका विभाज करनेको नहीं। एक जन विश्वास करता है कि सब कुछ खाला उचित है
3 परन्तु जी दुर्भाग है तो साग पात खाता है। जी खाता है सो न खानेहरिका तुच्च न जाने जी नहीं खाता है सो खानेहरिका दायी न ठहरवे कियांकि
4 इश्वरके उसका यहा किया है। तू सुनाने जी परावे

61
सेवकों दोषी ठहराता है। वह अपनेही स्वामिके जाने खड़ा होता है ध्ययन गिरता है। परन्तु वह खड़ा रहेगा क्योंकि ईश्वर उसे खड़ा रख सकता है।

एक जन एक दिनकी दूसरे दिनसे बड़ा जानता है दूसरा जन हर एक दिनकी एकसां जानता है। हर एक जन अपनेही मनमें निर्धच्य कर लेवे।

जो दिनकी मानता है सो प्रभुके लिये मानता है। दे बैर जो दिनकी नहीं मानता है सो प्रभुके लिये नहीं मानता है। जो खाता है सो प्रभुके लिये खाता है क्योंकि वह ईश्वरका धन्य मानता है दैर जो नहीं खाता है सो प्रभुके लिये नहीं खाता है दैर ईश्वरका धन्य मानता है। क्योंकि हममें कोई अपने लिये नहीं जिता है दैर कोई अपने लिये नहीं मरता है।

क्योंकि यदि हम जीवें तो प्रभुके लिये जीते हैं दैर जीव यदि मरें तो प्रभुके लिये मरते हैं सो यदि हम जीवें ध्ययन यदि मरें तो प्रभुके हैं। क्योंकि इसी बातके लिये सीधु मरा दैर उठा दैर फिरने जीया भी कि वह मृतकों दैर जीवतांका भी प्रभु हावे।

तू अपने १० भाईंकौं किया दोषी ठहराता है। ध्ययन तू भी अपने भाईंकौं किया तुच्छ जानता है। क्योंकि हम सब सीधुवृकौं बिचार आसनके जाने खड़े हावे। क्योंकि लिखा है कि ११ प्रमेयवर बहता है जो में जीता हूँ तो मेरे जाने हर एक घटना भूलकै दैर हर एक जीव ईश्वरके जाने मान लेंगे। सो हममें हर एक ईश्वरके अपना १२ ध्ययन लेखा देगा।
13 सो हम भव फिर एक दूसरे का दोषी न ठहरावै
परन्तु तुम यही ठहरावै कि भाई के ख़ाने हम टेस
14 भयवा ठोकरका कारण न रखैंगे । मैं जानता हूँ श्रीर
प्रभु श्रीकृष्ण सुभं निश्चय हुँना है कि कोई बश्च श्रापसे
श्रापुत्र सिंह स्त्रिया है लेकिन जो जिस बस्तुका श्रापुत्र जानता
15 है उसके लिये वह श्रापुत्र है । यदि तेरे भेजनके कारण,
तरा माई उदास होता है तो तू भव प्रेमकी रीतिके
नहीं चलता है । जिसके लिये खीण मूर्षा उसके तू
श्रापने भेजनके द्वारासे नाश मत कर ।
16 सो तुम्हारी भलाई की निन्दा न किये जाय।
17 किंतु ईश्वरका राज्य खाना पीना नहीं है परन्तु धम्मे
श्रीर मिलाका श्रीर उन्नत जो पवित्र अत्मासे है ।
18 किंतु जो इन बातिन खीणकी सेवा करता है सो
ईश्वरकी भावता श्रीर मनुष्योंके यहाँ मध्य तहराया
19 जाता है । इसलिये हम मिलाकी बातिन श्रीर एक
20 दूसरे के सुधारनकी बातिनकी चेष्टा करैं । भेजनके हेटु
ईश्वरका काम नाश मत कर । सब कुछ शुद्ध ते है
परन्तु जो मनुष्य खानसे ठाकर खिलाता है उसके लिये
21 जुरा है । अच्छा यह है कि तू न मांस खाय न दाख
रस पीय न कोई काम करै जिससे तेरा माई टेस श्रापवा
ठाकर खाता है भयवा दुम्बेल होता है ।
22 क्या तुम्हें विश्वास है । उसे ईश्वरके भागे अपने
मनमें रख । धन्य वह है कि जो बात उसे अच्छी देख
23 पढ़ती है उसमें अपने का दोषी नहीं ठहराता है । परन्तु
जो सन्देह करता है सो यदि खाय तो दंडके योग्य ठहरा
है क्योंकि वह विश्वासका काम नहीं करता है। परन्तु जो जा काम विश्वासका नहीं है तो पाप है।

१५ पन्द्रहवां पद्वः

१ उक्तव्यत भाषके विश्वासका धीर्य प्रमाण अर्थत्स खोट्ये रैसाहि नूना विकाया। १० खीणका विश्वी और अन्यवेदी दोनाहि यो बाबाहि होना। १४ रासाय भंडालोके प्राप्त तिलसनेम पावलका अतिमस्त्र। १५ रामबी सेवकहि का वर्ण। २२ रेम नार जानेकी बुच्चा। ६० मंदिरोंसे यह बिंदी करना कि वे उसके लिये प्रार्थना करें।

हमें ज़ा बलवत हैं उचित है कि निबल्लोंको दुन्वल-ताकोंको सहिं शायर अपनेहीको प्रस्त्र न करें हममे से हर एक जान फ़ोरासीको भलाईके लिये उसी सुधारके निमित्त प्रस्त्र करें। क्योंकि खीणके भी अपनेहीको प्रस्त्र न करया परन्तु जैसा लिखा है तेरे नित्कोंकी निन्दाकी बार्ति मुख्य पर जा पड़ीं। क्योंकि जो कुछ ज्ञान लिखा गया तो हमारी शिष्यके लिये लिखा गया कि धौरताके शायर शातिके द्वारा जा धम्मप्रस्तुक्तके होती है हमें साशा है। शायर धौरता शायर शातिका इंद्रवर तुम्हें खीण मिथुनके अनुसार ज्ञापसं के एकसां मन रखनेका दान देवें। जितने तुम एक चित होके एक सुहसे हमारे प्रभु यीशु खीणके पिता इंद्रवरका गुणानुबद्ध करें। इस खारण इंद्रवरको महिमाके लिये जैसा खीण तुम्हें यहण किया तैसे तुम भी एक दूसरकी गहण करें।

में कहता हूं कि जो प्रतिज्ञाएं पितरसे किन्हे गईं उन्हें दूह करनेको यीशु खीण इंद्रवरको सच्चाईके लिये खतना किये हुए लोगेंका सेवक हुआ। पर अन्य्देशी लोग भी दयाके खारण इंद्रवरका गुणानुबद्ध करें जैसा
लिखा है इस कारण में सन्यात्मिक्यांमें तेरा घन्य मानता
90 छैर तेरे नामको गीते गाउँगा। छैर फिर कहा है हे
91 सन्यात्मिक्यां उसको लोगोंको संग आनन्द करा। छैर
फिर है सब सन्यात्मिक्यां पर्यावरणकी सुति करा। छैर
92 है सब लोगो उसे सराहा। छैर फिर यिशैयाह कहता
है यीशुका एक मूल होगा छैर सन्यात्मिक्यांको प्रवाह
हानिका एक उठेगा उसपर सन्यात्मी लोग आशा रखेंगे।
93 आशाका ईश्वर तुम्हें विश्वास करनेमें सब्ज आनन्द
छैर शांतिसे परिपूर्ण करे कि पवित्र आत्माके सामर्थ्यसे
तुम्हें शांतिक करके आशा हो य।
94 है। मेरे माहियों में आप भी तुम्हारे विषयमें निश्चय
जानता हूं कि तुम भी आपको भलाईसे भरपूर छैर
सारे ज्ञानसे परिपूर्ण हो छैर एक दूसरीको चिता सकते
95 है। परन्तु है माहियों में तुम्हें वेत दिलाते हुए तुम्हारे
पास कहीं कहीं भहुत साहससे जा लिखा है यह उस
उनुपहरे कारण हुआ जा ईश्वरने मुफ्त दिया है।
96 इसलिये कि सन्यात्मिक्योंके जिये यीशु खोजका सेवक
हांज छैर ईश्वरके सुसमाचारका याजकीय काम्में कहाँ
जिस्ते सन्यात्मिक्योंका चढाया जाना पवित्र आत्मासे
पवित्र किया जाको याहा हो य।
97 से उन बातोंमें जा ईश्वरसे संबंध रखती है मुफ्त
98 यीशु यीशुमें बहाई करनेका हेतु मिलता है। क्योंकि
जो काम यीशुने मेरे द्वाराते नहीं किये उनमेंसे में किसी
कामके विषयमें बात करनेका साहस न कहांगा परन्तु
उन कामके विषयमें कहांगा जो उसने मेरे द्वारासे
शान्तदेवश्रीयांकी वधीनताके लिये बचन श्री काम्सें श्रीर चिंहिं श्री बहुत कामांको सामर्थ्यसे श्रीर इश्वरके शात्माको शक्तिसे झिंके हैं। यहांलां कि यिर्हशलीम श्रीर १५ चारिं श्रीरके देशसे जेके इलुरिया देशलां मैंे सीघुके सुसमाचारके सम्पूर्ण प्रचार किया है। परन्तु में सुसमा- २० चारिं इस रीतिसे सुनानेकी चेष्टा करता था अद्यावली कि जहां सीघुका नाम लिखा गया तहां न सुनाए ऐसा न हो कि पराइ नेवपर घर बनाजे। परन्तु ऐसा सुनाए २१ जैसा लिखा है कि जिन्हें उसका समाचार नहीं कहा गया वे देखने श्रीर जिन्होंने नहीं सुना है वे समझने।

इसी हेतुसे में तुम्हारे पास जानेमें बहुत चार रहकर २२ गया। परन्तु श्राव हुके इस श्रीरके देशें में श्रीर स्थान २३ नहीं रहा है श्रीर बहुत वरसांसे मुफ्त तुम्हारे पास श्लानकी लालसा है। इसलिये में जब कभी इस्पानिया २४ देशका जाने तब तुम्हारे पास श्लानका। कोंकि में शाश्वत हूं कि तुम्हारे पाससे जाते हुए तुम्हें देखूं श्रीर जब में पहिले तुमसे कुछ कुछ तृप्त हुआ। हूं तब तुमसे कुछ टूट उघर पहुंचाया जाए। परन्तु जब में पवित्र २५ लोगांकी सेवा करनेके लिये यिर्हशलीमकी जाता हूं। कोंकि माकिदानिया श्रीर शाखायाकी लोगांकी इच्छा २६ हुई कि यिर्हशलीमकी पवित्र लोगांमें जा कांगाल हैं।

उनकी कुछ सहायता करें। उनकी इच्छा हुई हो श्रीर २७ वे उनकी स्वायत्त ही हैं कोंकि यदि अन्यायकी लोग उनकी शान्तिके दृष्टिको भागी हुए तो उन्हें वधित हैं कि शारीरिक बस्तुमें उनकी भी सेवा करें। सा जब में यह २८
कायम पूरा कर चुकूं शीर उनके लिये इस फलपर चाप
dे चुकूं तब तुम्हारे पासते हाके इस्पानियाको जांजगा।
शीर में जानता हूं कि तुम्हारे पास जब में शाजं तब
श्रीपुं सूरमाचारकी श्राक्षीकी भरपूरीसे शाजंगा।
शीर है माइया हमारे प्रभु यीशु श्रीपुं के कारण शीर
पवित्र श्रात्मकी प्रेमों के कारण में तुमसे बिन्ती करता
हूं कि इश्वरसे मेरी लिये प्राध्यात्मिक करनेमें मेरी संग परिशम
करो। कि में यिहूदियामैं क्रविश्वासियोंसे बचू शीर
कि यिहूदशलीमके लिये जे। मेरी सेवकाहैं हे सा पवित्र
लोगोंकी भावे। जिसमें इश्वरकी दबासे तुम्हारे पास
आनन्दसे शाजं शीर तुम्हारे संग विश्वास कह। शांतिका
इश्वर तुम समांके संग हावे। अमीन।

१५ दोलजहाँ पावे।
१ पावलका रोमियांसे बिनी करता कि पैदी बालिका की प्रज्ञा
विश्वासियों शीर विश्वासियोंके पास नमस्कार लिखना। १५ टोकर खिचलां-
हरेके खिचलां उन्हें खिचलाना। २१ प्रपनी शीर कितने भागायको शीरसे नमस्कार
लिखना। २५ वश्यवाद करो पश्चिमको समस्त करो।

२ में तुम्हारे पास हम लोगोंकी बहिन उदोंकी शीर
किंक्रियामैं मंडलोंकी सेवकी है सराहता हूं। जिस्तमें
तुम उसे प्रभुमें जैसा पवित्र लोगों योग्य है वैसा यहशा
करे शीर जिस किसी बातमें उसको हृदय इसको सहायता कोणीकि वह भी बहुत लोगोंकी
शीर मेरी भी उपकारिशी हुई है।

३ प्रिस्तकीला शीर भकुलाकी को श्रीपुं यीशुमें मेरे सह-
४ क्रम को है नमस्कार। उन्होंने मेरे प्राणीके लिये श्रापनाही
गाजा धरार प्रदाहिनका के वल में नहीं परन्तु अन्यायिनीयों-
भी सारी मंडलियाँ भी धन्य मानती हैं। उनके घरमंड़ीं की मंडलियाँ भी नमस्कार। इसे निम्न मे यारिकों जो खीरू के लिये रात्रियाँ का पहिला फल है नमस्कार। मरियम-6 की जिसमे हमारे लिये बहुत परिशम किया नमस्कार। अन्तर्विक शार यूरिय मेरे कुरुक्के शार मेरे संगी बन्धु-जानी जो प्रेरित में प्रसिद्ध है शार सुनके पहिले खीरू-में हुए थे नमस्कार। जम्पलिय प्रभु मेरे यारिकों नमस्कार। उन्नाति खीरू में हमारे सहकर्मी को शार स्ताहु मेरे यारिकों नमस्कार। जापीलिका जो खीरू में 90 जांचा हुआ है नमस्कार। आरस्तूलिके घरानिके लो-गाँड़ी नमस्कार। हेरादियान मेरे कुरुक्कूका नमस्कार। 91 नार्किसके घरानिके जो लोग प्रभु में हैं उन्हाँकिए नमस्कार। जुफिना शार जुफिसाको जिन्होंने प्रभु में परिशम किया 92 नमस्कार। यारी परसीका जिसमे प्रभु में बहुत परिशम किया नमस्कार। जूफिना जो प्रभु में चुना हुआ है शार 93 उसकी शार मेरी माताको नमस्कार। बृहस्पति शार 94 फिलेलीय शार हमारा शार पात्रबाबा शार हर्मीको। शार उनके संगी माइयाँको नमस्कार। फिलेलीय शार यू-95 लियाको शार नौरिय शार उनकी बहिनको शार बलुम्पाको शार उनके संगी सब पवित्र लोगांगको नमस्कार। एक दुसरीको पवित्र चूमा-लेके नमस्कार 96 करा। तुमको खीरू की मंडलियाँ जाको शार से नमस्कार।

हे माइया मेंतुमसे बिन्ती करता हूं कि जो लोग उस 97 शिक्षकों के बिराज जो तुमने पाई है नाना भाग्यको बिराज शार ठाकरा हालते है उन्हे देखश्रेय शार उनसे फिर
18 जानो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्टकी नहीं परन्तु अपने पेटकी सेवा करते हैं जीर चिकनी जीर।
19 मीठी बातों से सुधे लोगोंके मनको घात्य देते हैं। तुम्हारे आज्ञापालनका चेतो सब लोगोंमें फैल गया है इससे मैं तुम्हारे विषयमें आनन्द करता हूं परन्तु मैं चाहता हूं कि तुम भलाईचे लिये बुद्धिमान पर बुराइके लिये सुधे हो।
20 शांतिका ईश्वर चेतानकी शीघ्र तुम्हारे पाश्रों तले कुचले-गा। हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्टका अनुयाय तुम्हारे संग हो।
21 तिमाधिय मेरे सहकामका जीर लूकिय जीर यासिन।
22 जीर सासिपातर मेरे कुरुंबाका तुमसे नमस्कार। मुफ्त तत्सिय पत्रीके लिखनेहरुका प्रभुमें तुमसे नमस्कार।
23 गायस मेरे जीर सारी मंडलीके शांतियकारीका तुमसे नमस्कार। इरास्तका जो नगरका मंडारी है जीर भाई।
24 कार्तका तुमसे नमस्कार। हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्टका अनुयाय तुम सभेंसे संग हो। जामिन।
25 जो मेरे सुसमाचारकी अनुसार जीर यीशु ख्रिस्टके विषयके उपदेशके अनुसार अचैतू उस भेदके प्रकाशके के अनुसार तुम्हें स्मर कर सकता है। जो मेरे सनातनसे गुप्त रखा गया था परन्तु अब प्रारंभ किया गया है जीर सनातन ईश्वरको आज्ञाले भविष्यवाणीके पुस्तकें द्वारा सब देशों लोगोंको बताया गया है किवे विध्वा-20 से आज्ञाकारी हा जायें। उसको अचैतू अतुल बुद्धिमान ईश्वरकी यीशु ख्रिस्टको द्वारसे धन्य हो जितका गुरुअनुशंद सबेंदा होये। जामिन।
कारिन्यियोंका पावल प्रेरितकी पहिली पत्री।

1 पहिला पत्री।

1 पत्रीका आभाय। 8 कारिन्यियोंकी विषयम पावलका धन्वाद। 10 ज्ञानीसंख्याका ज्ञान और उनके विषयम उन्हें समझाना। 18 यीशुकी मूर्तियुका सुमार-भाग प्रचार करनेके गुंज। 25 ईश्वरका प्रथम सेवोके प्राप्ती मिलाके बुलाना।

पावल ज्‍यो ईश्वरकी इच्छासे यीशु ख्रिस्तुका बुलाया। हुसा प्रेरित है शुरा भाई सज्जिमनी। ईश्वरकी संदीपका जा कारिन्यम है जा ख्रिस्तु यीशुकी पवित्र की की हूँ शुरा बुलाये हुए पवित्र लोग हैं उन सभेके संग जा हर स्थानमें हमारें हां उनके शुरा हमारें भी प्रभु यीशु ख्रिस्तुके नामकी प्राथमिक करते हैं। तुम्हें हमारें पिता ईश्वर शुरा प्रभु यीशु ख्रिस्तुके अनुभव शुरा शांति मिले।

मैं सता तुम्हारे विषयम शरीर ईश्वरका धन्य मानता हूँ इसलिए कि ईश्वरका यह अनुभव तुम्हें ख्रिस्तु यीशुमें दिया गया। कि उसमें तुम हर बातमें अर्थात सारे बचन शुरा सारे ज्ञानमें धन्वान की गये। जैसा ख्रिस्तुके विषयको सासी तुम्हारे हूँ तुम्हें। यहांलां कि किसी बर- दाता तुम्हें घरी नहीं हैं शुरा तुम हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्तुके प्रकाशकी बार जीते हो। वह तुम्हें अच्छालों भी टूट जानी एंखों कि तुम हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्तुके दिनमें निर्देश हो। ईश्वर विश्वासयोग्य है जिससे तुम उसके पुत्र हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्तुकी संगतिमें बुलाये। गये।
10 है भाइयो में तुमसे हमारे प्रभु यीशु ख्रीस्तीके नामके ज्ञानण बिन्नी करता हूं कि तुम सब एकही प्रकारकी बात बोला श्रीर तुम्हारेंमें बिबेद न होवें परन्तु एकही मन श्रीर एकही बिचारमें सिद्द होाँका। क्यांकि है मेरे भाइयो ख्रीस्तीके घरानेके लोगसे मुक्तपर तुम्हारी विशयमें प्रगार किया गया है कि तुम्हारे में बैर विराघ हैं। श्रीर में यह कहता हूं कि तुम सब यूं बोलते है। श्रीर कि मे पावलका हूं बाई कि मे ख्रीस्तीके जोदे कि मे बोफाका काहे कि मे ख्रीस्तीका हूं। क्या ख्रीस्ती विभाग किया गया है। क्या पावल तुम्हारे लिये ख्रीस्तीपर गात किया गया अयवा क्या तुम्हें पावलके नामसे बपतिसमा दिया गया। मैं इंश्वरका धन्य मानता हूं कि ख्रीस्ती श्रीर गायसको ख्रीस्ती मैंने तुम्में किसीका बपतिसमा नहीं दिया।
13 ऐसा न होकि कौई कहे कि मैंने ख्रीस्ती नामसे बपतिसमा दिया। श्रीर मैंने स्तिकानके घरानेके भी बपतिसमा दिया। श्रीर में नहीं जानता हूं कि मैंने श्रीर किसीको बपतिसमा दिया। क्यांकि ख्रीस्ती मूह्रे बपतिसमा देनके नहीं परन्तु सुसमाचार सुनानेके भेजा पर बयानके ज्ञानके अनुसार नहीं जिष्ठी ऐसा न हो कि ख्रीस्तीका ख्रीस्ती भर्यो ठहरे।
18 क्यांकि ख्रीस्तीका काहा उन्हें जा नाश होते हैं मूर्खत्व है परन्तु हमें जा चाहा पाते हैं इंश्वरका सामथ्य है।
19 क्यांकि लिखा है कि मैं ज्ञानवानोंके ज्ञानको नाश कहन्गा। ज्ञानवान जान्हां है। अध्यायक जान्हां। इस संसारका विवादी जान्हां।
क्या ईश्वरने इस जगतको ज्ञानको मूर्तिता न बनाई है।
क्याकि जब कि ईश्वरको ज्ञानसे यूं हुआ कि जगतको २९ ज्ञानको द्वारासे ईश्वरकी न जाना तो ईश्वरकी इच्छा हुई कि उपदेशको मूर्तिताको द्वारासे विश्वास करनेहारी-को बचावे। यिहूदीलोग ते चिन्ह मांगते हैं चीर युनानी २२ लोग भी ज्ञान दूरायें हैं। परन्तु हम लोग कृपया मारे २३ गये खींचका उपदेश करते हैं जो यिहूदियांको ठाकरका कारण चीर युनानियोंको मूर्तिता है। परन्तु उन्हींको हां २४ यिहूदियांको चीर युनानियोंको भी जा बुलाये हुए हैं ईश्वरका सामर्थ्य चीर ईश्वरका ज्ञान रूपी खींचका है।
क्याकि ईश्वरकी मूर्तिता मनुष्योंको अधिक ज्ञानवान है २५ चीर ईश्वरकी दुर्भिक्तता मनुष्योंको अधिक शक्तिमान है।
क्याकि है भाईया तुम अपनी बुलाहटको देखते हो २६ जि कि न तुममें शरीरके अनुसार बहुत ज्ञानवान न बहुत सामर्थ्य न बहुत कुलीन हैं। परन्तु ईश्वरने जगतको २७ मूर्तिता चुना है कि ज्ञानवानांको लाभजत करे चीर जगतको दुर्भिक्तांको ईश्वरने चुना है कि शक्तिमानांको लाभजत करे। चीर जगतको अधिमान चीर तुष्ठांको हां २८ उन्हें जो नहीं हैं ईश्वरने चुना है कि उन्हें जा हैं लोप करें। जिसली चाहिए प्राप्ती ईश्वरको ज्ञान धम्म जी पवित्रता जी उद्यार हुआ है। जिसली जैसा लिखा है जो बढ़ाई करे जो परमेश्वरको ३३ विषयमें बढ़ाई करे।
२ दूसरा पढ़ें।

१ इसका आवेश करना कि सामाजिक ज्ञान की संभावना रहस्य पर इश्वरके सामाजिक साथ था। इसके उपेक्षा ज्ञान का प्रकाश था जो केवल प्रत्येक ज्ञातिको वहाँतिसे समका जाता है।

२ हे भाईयों में जब तुम्हारे पास आया तब बचन अयथा ज्ञानकी उत्तमताती हुमें इश्वरकी साथी सुनाता।

३ ह्यूसा नहीं आया। क्योंकि मैंने यही ठहराया कि तुम्हें-में चौर किसी बातको न जानुं केवल यीशु खोपूलार हां।

४ खूँशपर मारे गये खोपूलार। चौर में तुम्हारे चौर भयबरे।

५ साथ चौर बहुत कांपता हुसा तुम्हारे यहां रहा। चौर मेरा बचन चौर मेरा उपदेश मनुष्योंके ज्ञानकी मननेवाली बातिसं नहीं परन्तु आत्मा चौर सामाजिक प्रमाणसे था। जिस्तु तुम्हारा बिज्ञान मनुष्योंके ज्ञानपर नहीं परन्तु इश्वरके सामाजिक होवे।

६ तैरभी हम सिद्ध लोगोंमें ज्ञान सुनाते हैं पर इस संसारका अयथा इस संसारके लोप होनेहारे प्रदानिन्द्रका।

७ ज्ञान नहीं। परन्तु हम एक भेदमें इश्वरका गुप्त ज्ञान जिसे इश्वरने सनातनसे हमारी महिमाके लिये ठहराया सुनाते हैं। जिसे इस संसारके प्रदानिन्द्रिश्चित किसीने न जाना क्योंकि जो उसे जानने तो तेजामय प्रभुको।

८ खूँशपर घात न करते। परन्तु जीता लिखा है जो आखने नहीं देखा चौर कानने नहीं सुना है चौर जो मनुष्यके हृदयमें नहीं समाया है वही हैं जो इश्वरने उनके लिये।

९ जो उसे प्यार करते हैं तैयार किया है। परन्तु इश्वरने उसे अपने आत्माके हमेंपर प्रगट किया है क्योंकि आत्मा सब बातें हां इश्वरकी गोमिर बातें भी गाँवता।
है। क्योंकि मनुष्योंसे कैसे है जो मनुष्यकी बातें ११ जानता है केवल मनुष्यका ज्ञात्मा जो उसमें है। वैसे-ही ईश्वरकी बातें भी कही निहीं जानता है केवल ईश्वरका ज्ञात्मा। परन्तु हमने संसारका ज्ञात्मा नहीं १२ पाया है परन्तु वह ज्ञात्मा जो ईश्वरकी ओरसे है इसलिये कि हम वह बातें जाने जो ईश्वरने हमें दिये हैं। जो हम मनुष्योंके झाँसकी सिखाई हुईं बातें में १५ नहीं परन्तु पवित्र ज्ञात्मकी सिखाई हुईं बातें में ज्ञात्मक बातें ज्ञात्मक बातें मिला मिलाके सुनाते हैं। परन्तु प्राणिक मनुष्य ईश्वरके ज्ञात्मकी बातें यहूं १५ नहीं करता है क्योंकि वे उसके लेखे मूर्ति हैं और वह उन्हें नहीं जान सकता है क्योंकि उनका विचार ज्ञात्मक रूपसे किया जाता है। ज्ञात्मक जन सब कुछ १५ विचार करता है परन्तु वह ज्ञाप किसी विचार नहीं किया जाता है। क्योंकि परमेश्वरका मन किसी जाना १५ है जो उसे सिखावे। परन्तु हमकी ज्ञापका मन है।

३ तीसरा पक्ष।

१ कारिन्येयोंकी शारीरिक चालका उत्सव । ५ प्रति के धार्मिक पत्रवनका निषेध ।
१८ ज्ञापका मन नहीं संदर्भकी नेत्र है उसकर जाननेकी विचार । १४ ईश्वरके सृजनकी पवित्रता । १८ शांतिका आरक्षकी निषेध।

ही भाद्रायण में तुमसे जैसा ज्ञात्मक लोगसे तैसा नहीं १ बात कर सका परन्तु जैसा शारीरिक लोगसे हां जैसा उन्हें से जो ज्ञापके बालक हैं। सैनी तुम्हें दूध पिलाया २ अन्न न खिलाया क्योंकि तुम तबलीं नहीं खा सकते बे बरन चबला भी नहीं खा सकते हो क्योंकि जब तक शारीरिक है। क्योंकि जब तक तुम्हारे में दाह और बैर ३
चौथे बिरोध हैं तू क्या तुम शारीरिक नहीं हो चौथे
मनुष्यकी रोतिपर नहीं चलते हो। कोंक्ष जब एक
कहता हैं भू में पावलका हूं चौथे दूसरा में अपूर्वका हूं
tू क्या तुम शारीरिक नहीं हो।

तू पावल कौन है चौथे अपूर्वका कौन हैं। केवल
सेवक लाग जिनके द्वारा जैसा प्रभुने हर एकी। दिया
तैसा तमने विश्वास दिया। मैंने लगाया अपूर्वको
सींचा परन्तु इंश्वरने बढाया। सान न तू लगानेहारा
कुछ है चौथे न सींचनेहारा परन्तु इंश्वर जो बढाने-
वाह है। लगानेहारा चौथे सींचनेहारा दोनों एक
हैं परन्तु हर एक जन अपनेही परिष्कारके अनुसार
अपनीही बन गई पावेगा। कोंक्ष हम इंश्वरके सह-
कर्मी हैं। तूम इंश्वरकी खेती इंश्वरकी रचना है।

इंश्वरके अनुयहके अनुसार जो सुकी दिया गया मैंने
झानवान पवर्डेशी नाई ने भार डाली है चौथे दूसरा मनुष्य
उसपर घर बनाता है। परन्तु हर एक मनुष्य सचेत
रहे कि वह किस रोतिसे उसपर बनाता है। कोंक्ष जो
ने भार पड़ी है अभ्यत यीं खींचू उसे ढाकरे दूसरी ने
बैठ नहीं डाल सकता है। परन्तु यदि बैठ इस नेवपर
सींचा वा ठुपा वा बहुमूल्य पत्थर वा काठ वा घास वा
फूस बनावे। तू हर एकका क्राम प्रगट है जायगा कोंक्ष
कि वही दिन उसे प्रगट करेगा इसलिये कि ज्ञान सहित
प्रभाव होता है चौथे हर एकका क्राम कैसा है सो वह
ज्ञान परखेगी। यदि किसीका काम जो उसने बनाया
है ठहरे तू वह मजूरी पावेगा। यदि किसीका क्राम
जल जाय ते उसे टूटी लगेगी परंतु वह शाय बचेगा पर ऐसा जैसा जागे बीचे होके कोई बजे ।

क्या तुम नहीं जानते है कि तुम इंश्वरके मन्दिर है १९ श्रीर इंश्वरका आत्मा तुम्हें बसता है। यदि कोई मनुष्य २० इंश्वरके मन्दिरका नाश करे तो इंश्वर उसको नाश करेगा क्योंकि इंश्वरका मन्दिर पवित्र है श्रीर वह मन्दिर तुम है।

कोई अपनेको डाल न दें । यदि कोई इस संसारमें २१ अपनेको तुम्हें ज्ञानी समझे तो मूसे बने जिन्हें ज्ञानी हो जाय । क्योंकि इस जगतका ज्ञान इंश्वरके यहां २२ मूल्यता है क्योंकि लिखा है वह ज्ञानियोंको उनकी चतुराइं में पकड़नेहरा है। श्रीर फिर परमेश्वर ज्ञानियों- २३ की चिंताएं जानता है कि वे व्यर्थ हैं। तो मनुष्योंके २४ विषयमें कोई घमंड न करे क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है। क्या पावल का ज्ञान छपूली। क्या श्रीफा का जगत का २५ जीवन का मरण का वर्तमान का विषय सब कुछ तुम्हारा है। श्रीर तुम लोगे हो श्रीर लोगूं इंश्वरका है। २६ ८ चैत्र अक्षरे।

१ प्रेमित लोग इंश्वरके भक्त हैं और उनका विचार इंश्वरको करेगा इतना वर्णन।
२ प्रभुमान श्री बिभदा उलझा और प्रेमितोंके दुःख श्रीर देनता है। वस्तुता।
३ पावलका कारिन्योंका बालोंको नायी उपदेश देना और प्रभुमानियोंको बिचारा।

यूंही मनुष्य हमें लोकके सेवक श्रीर इंश्वरके भेदअंके १ मंडारे करके जानी। फिर मंडा रियोंमें लोग यह चाहते हैं कि मनुष्य विश्वासयोग्य पाया जाय। परन्तु मेरे २ लेखें ज्ञात छारी बात है कि मेरा विचार तुम्हें श्रीच ए मनुष्यका न्यायने किया जाय हां में अपना विचार भी
8 नहीं करता हूँ । क्योंकि मेरे जानते में कुछ सुकूसे नहीं हुआ परन्तु इससे में निर्देश नहीं ठहरा हूँ पर मेरा विचार करनेवाला प्रभु है । तो जबलां प्रभु न जाए सबसे अधिक खारी वचन चीर तो निण्यानक गुप्त वर्तें ज्योंनरीं दिखावेंगा वैर वर्तें पराभूत करेगा वैर तब इंसान के वैर से हर एक भी सराहना होगी ।

6 इन बातें ने मेरे तुम्हारे कारण मैंने श्रवणे पर वैर अपरभूत तुम्हारी लगाया है इसलिए कि हमें में तुम यह सीखे कि जो लिखा हुआ है उससे अधिक उंचा मन न रखा जिसके तुम एक दूसरे के पश्चातं वैर व मनुष्य की बिछूत फूल न जाओ । क्योंकि वैर तुम भिन करता है । वैर तेरे पास क्या है जो तुम दूसरे से नहीं पाया है । वैर यदि तुम दूसरे से पाया है तो किंतु ऐसा मयंद करता है कि मानो दूसरे से नहीं पाया । तुम तो तृप्त हो चुके तुम भली है । चुके तुम भले हमारे बिना राज्य किया है हं में बाहर हूँ कि तुम राज्य करते हैं कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनुष्यों के वास कि मनु
शैला दांवाड़ाल रहते हैं शैला अपने नहीं हाथोंसे कमानेमें परिश्रम करते हैं। हम अथवा यादि जानेपर आशीर्स १२ देते हैं सताये जानेपर सह लेते हैं निन्दित होनेपर बिन्दी करते हैं। हम अभिलोभ जगतका बुझा हं सब बस्तु- १३ शैलीकी खुशचनकी ऐसे बने हैं।

मैं यह बातें तुम्हें लज्जित करनेका नहीं लिखता हूं १४ घरनु अपने प्याऱे बालकोंकी नाई तुम्हें चित्राता हूं। क्योंकि तुम्हें थीपूर्में यदि दस सहस्त शिक्षक हैं तैमी १५ बहुत पिता नहीं हैं क्योंकि थीपूर्म थीपूर्में सुसमाचारके द्वारा तुम मेरेही पुष्ट ही। सो मैं तुम्हें बिन्दी करता हूं १६ तुम मेरेही चाल चलें। इस हेतु मैंने तिमिन्यायित- १७ जो प्रभुमें मेरा प्यारा शैला बिपक्षियाइयामें पुष्ट है तुम्हारे पास मेजा है शैला थीपूर्में जो मेरे मार्ग हैं उनके वह जीसा मैं सब्भेष हर कंडलरीमें उपदेश करता हूं। तैसा तुम्हें चेत दिलावेगा। कितने लोग फूल गाये हैं १८ माना कि मैं तुम्हारे पास नहीं शानेवाला हूं। परन्तु १६ जो प्रभुकी इच्छा है तो मैं शीघ्र तुम्हारे पास ब्रजांगा शैला उन फूलों हुए लोगोंका बचन नहीं परन्तु सामर्थ्य बुक लेंगा। क्योंकि ईश्वर का राज्य बचनें नहीं परन्तु २० सामर्थ्यके हैं। तुम क्या चाहते हैं। मैं छड़ी लेकि अन्यवा २१ प्रमसे शैला नमनताके अज्ञातके तुम्हारे पास ब्रजांग।

पांचवां पान्व।

१ एक ध्यामिनकी शरीरमें निकलनेका उपवेश । ५ मनकीने बुझ देनेकी आत्मस्मकता । ७ के लोग बिद्वासी कहाँ परन्तु कुछकराँ उनके बालमा रहनेको आत्मा।
9 यह सब्जै सुननेमें शाता है कि तुम्हारे व्यभिचार है चौर ऐसा व्यभिचार कि उसका चचा देवपूजकों भी नहीं होता है कि कोई मनुष्य अपने पिताको स्तोति
2 बिवाह करे। चौर तुम फूल गये है यह नहीं कि शीघ्र किया जिस्ते यह काम करनेहारा तुम्हारे बीचमेंसे
3 निकाला जाता। मैं ते शरीरें दूर परन्तु ज्ञातामें साश्वात होके जिसने यह काम इस रोगिते किया है
4 उसका विचार जैसा साश्वातमें कर चुका हूँ। कि हमारे भ्रूण यीशु ख्रिस्तीके नामसे जब तुम चौर मेरा ज्ञाता हमारे भ्रूण यीशु ख्रिस्तीके सामर्थ्य सहित एकदेश हुए हैं।
5 तब ऐसा जन शरीरके विनाशके लिये जैतानको सांपा जाय जिस्ते ज्ञाता भ्रूण यीशुके दिनमें चाव पावे।
6 तुम्हारा घमंड करना अच्छा नहीं है। क्या तुम नहीं जानते हो कि खण्डासा खमीर सारे पिंडको खमीर
0 कर डालता है। सा पुराना खमीर सबका सब निकाला ने चौर तुम खमीरी हो तैसे नया पिंड होते चौर चौर ने, जिनकी हमारा निस्तार पन्थका मेरा अष्टाद ख्रीशु हमारे लिये
8 बल दिया गया है। सा हम पन्थका न ते पुराने खमीरसे चौर न बुराई। चौर दुष्कायकी खमीरसे परन्तु सोधाई चौर सद्बाइकी खमीरीभी समस्रे रखें।
9 मैंने तुम्हारे पास पत्रीमें लिखा कि व्यभिचारियांकी संगति मत करो। यह नहीं कि तुम इस जगतके व्यभिचारियों वा लोभियों वा उपद्रवियों वा मृत्युपको-की सद्बाइ संगति मत करो नहीं ते तुम्हें जगतमें लिखा
11 जाना ज्ञात आता। सा मैंने तुम्हारे पास यही लिखा
कि यदि कैसे जो भाई कहलाता है व्यभिचारी वा लोभी वा मृत्तिकाजन वा निन्दक वा मदाप वा उपद्रवी ह्यात् ते उसकी संगति मत करी बरन ऐसे मनुष्यके संग बाधा भी नहीं। क्योंकि भीमे बाहरवालेयंका बिचार १२ करनेसे क्या काम, क्या तुम भीतरवालेयंका बिचार नहीं करते हो। पर बाहरवालेयंका बिचार इंकार करता है। १३ फिर उस कुक्कम्मन्यका अपनेमें निकाल दें।

ई ७ छठवां पद्मः

१ बचिब्याधविवेकसे भागी नालिका करनेका निवेदः १० ऐसेरे राजपक्षी पवित्रता। १२ विद्याभिवेकजी देह को बोधके बंध और पवित्र भान्ताके संतां में इस कारण व्यभिचारका निवेदः।

तुम्हेंसे जो किसी जनको दूसरे से बिदाद ह्यात् ते १ व्या उसे अधिम्मियंको बागे नालिका करनेका साहस ह्यात् है श्वर पवित्र लोगेंको चागे नहीं। क्या तुम नहीं ज्ञानते हो कि पवित्र लोग जगतका बिचार करने श्वर यदि जगतका बिचार तुमसे किया जाता है तो क्या तुम सबसे बोटी बातींका निर्देशके अनुमय हो। क्या तुम नहीं ज्ञानते हो कि सांसारिक बातीं पौछि रहे हसम तें स्वर्गदौंतांहीका बिचार करने। सो यदि तुम्हें ४ सांसारिक बातींका निर्देशके ह्यात् तो जो मंडलमें कुछ नहीं गिने जाते हें उन्हींका बैठाधो। में तुम्हारी ५ ज्ञाना निर्मित कहता हूं। क्या ऐसा है कि तुम्हेंमें एक भी बाँधनी नहीं हें जो अपने भाइयंके बीचमें बिचार कर सकेगा। परंतु भाई में भाइपर नालिका करता है श्वर साँई अविभाजित बागे भी। सो तुम्हेंमें निश्चय ६ दृष्ट हुज्जा है कि तुम्हेंमें आपसमें बिदाद ह्यात् हें। क्यां
नहीं वरन झन्याय सहते हा। कोइं नहीं वरन टगाईं 
8 सहते हा। परन्तु तुम झन्याय करते चौर टगते हा। 
9 हां माइयांसे भी यह करते हा। क्या तुम नहीं जानते हा। 
कि झन्याई लोग ईश्वरके राज्यके अधिकारी न होंगे। 
10 धार्मा मत खाओ। न व्यभिचारी न मूर्तिपूजक न 
परस्तीगामी न शुद्धदे न पुरुषगामी न चौर न लोअमी 
न मदाप न लिन्दक न उपद्रवी लोग ईश्वरके राज्यके 
11 अधिकारी होंगे। चौर तममंसें कितने लोग ऐसे घे 
परन्तु तुमने चापनेको धिया परन्तु तुम पाविच किये 
घे परन्तु तुम प्रभु यीशुके नामसे चौर हमारे ईश्वरके 
झातमा से धम्मी ठहराये घे। 
12 सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ 
लाभका नहीं है। सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु 
13 मे भिसी नारको अधिन नहीं होंगा। भौजन पेटके 
लिये चौर पेट भौजनके लिये है परन्तु ईश्वर इसका 
चौर उसका दानांका छस करेगा। पर देह व्यभिचारके 
लिये नहीं है परन्तु प्रभुके लिये चौर प्रभु देहके लिये 
14 है। चौर ईश्वरने अपने सामर्थ्यं प्रभुका जिला उठाया 
15 चौर हरमें भी जिला उठायेगा। क्या तुम नहीं जानते 
हा कि तुम्हारे देह शरीरके छंग हैं। से क्या में शीर्षके 
छंग ले करके उनके वेद्यके छंग बनावं। ऐसा न है। 
16 क्या तुम नहीं जानते हा कि जो वेद्य्यासे मिल जाता 
है से एक देह होता है कोंकिं कहा है जे दानां एक 
17 तन होंगे। परन्तु जो प्रभुसे मिल जाता है से एक 
18 झातमा होता है। व्यभिचारसे बचे रहो, हर एक
पाप जो मनुष्य करता है देहके बाहर है परन्तु व्य-भिचार करनेहरा अपनेही देहके बिस्तु पाप करता है। क्या तुम नहीं जानते हो कि पविच आत्मा जो १५ तुमहारे है जो तुम्हें इंश्वरकी ओरसे मिला है तुम्हारा देह उसी पविच आत्माका मन्दिर है और तुम अपने नहीं हो। क्योंकि तुम दाम देके मैल लिये गये हो २० सो अपने देहमें और अपने आत्माओं जो इंश्वरके हैं
इंश्वरकी महिमा प्रगट करा।

७ सातवा पदवे।

१ सती पुष्पको श्वासहारको विषयमें पायलका कारणत्वयेंको प्रणाली है सती पायलका उत्तर देना। १२ विषयको श्रीर आमेश्वरको सती पुष्पको संबन्धका क्षेत्र। ११ धरारणामें जो भुलाया जाय उच्चक वष धरारणा उपवेश। २५ भवनारुपसंिको विषयमें पायलका प्रणाली। २५ गहतको प्राणित श्रीदेवीये चेत विद्या। १२ विषयको हिंदुका निषेध।

जो वातें तुमने मेरे पास लिखी उनके विषयमें १ 
कहता हूं मनुष्यको लिये अच्छा है कि स्त्रीका न कूबे। 
परन्तु व्यभिचार कर्मोंके कारण हर एक मनुष्यको अप- 
नीही सती है और हर एक स्त्रीको अपनाही स्वामी 
है। पुरुष अपनी स्त्रीको जो सेह उचित है सो किया ३ 
करे स्रीर वैस्तवमें तिमी भी अपने स्वामीसे। स्त्रीको 
अपने देहपर अधिकार नहीं पर उसको स्वामीको अधिकार है स्रीर वैस्तवमें पुष्पको भी अपने देहपर 
अधिकार नहीं पर उसको स्त्रीको अधिकार है। तुम ५ 
एक दूसरे से मत झलक रहे केवल तुम्हें उपवास श्री 
प्रार्थनाको लिये श्रवणकाश मिलनेको कारण जो देहनामें 
सम्मतिसे तुम कुछ दिन झलक रहे तो रहा स्रीर फिर
एकटू है जिस्तै शैतान तुम्हारे तीनसमाय तारा तुम्हारे \- 
द्र री परीता न कर। परन्तु मैं जो यह कहता हूँ तो
अनुमति देता हूँ चाहा नहीं करता हूँ। मैं तो चाहता 
हूँ कि सब मनुष्य ऐसे हैं जैसा मैं चाहते हूँ परन्तु 
हर एकने इंश्वरकी श्रीरस स्र शयना शयना वर्दान पाया 
है किसी ने इस प्रकार का किसी ने उस प्रकार का। पर ने 
भी चाकिलें। श्रीर शिब्याश्री कहता हूँ कि यदि 
वे जैसा मैं हूँ तैसे रहे तो उनके लिये शाच्चा है। परन्तु 
जो वे श्रीयमनी हैं तो बिवाह करने को अंतः बिवाह 
करना जल्दे रहने से ज्ञाता है। बिवाहिताओं में नहीं 
परन्तु प्रभु चाहा देता है कि स्त्री चाहे स्वामिते चलक 
न हो। पर जो वह चलक भी होय तो चाकिलें 
रहे छाया चाहे स्वामिते मिल जाय। श्रीर पूर्ण 
शरीर स्त्रीकृता न त्यागे। 

१२ दोसरेंसे प्रभु नहीं परन्तु मैं चाहता हूँ यदि किसी 
भाईको आनन्दाश्वासनी स्त्री हैय श्रीर वह स्त्री उनके संग 
रहनेको प्रस्तुत होय ता वह उसे न त्यागे। श्रीर जिस 
स्त्रीको आनन्दाश्वासी स्वामी हैय श्रीर वह स्वामी उनके 
संग रहनेको प्रस्तुत होय वह उसे न त्यागे। कींकिके वह 
आनन्दाश्वासी पूर्ण शरीर स्त्रीकृता कारण पावित किया 
गया है श्रीर वह आनन्दाश्वासी स्त्री आपने स्वामीके 
कारण पावित किये गई है नहीं तो तुम्हारे लड़के 
१५ नही उत्ते पर चब ता वे पावित है। परन्तु जो 
वह आनन्दाश्वासी जन चलक होता है ता चलक होय। 
ऐसी दशामें भाई छाया बहिन बंधा हुष्या नहीं है।
परन्तु ईश्वरने हर्में मिलायें तिलें बुलाया है। क्योंकि १६८
है स्ती तू क्या जानती है कि तू अपने स्वामिओं
बचायेंगी कि नहीं सप्तवा है पुरुष तू क्या जानता है
कि तू अपनी स्तीका बचायेगा कि नहीं।

परन्तु जैसा ईश्वरने हर एकने बांट दिया है जैसा १७
प्रभुमें हर एकना बुलाया है तैसाही वह चले। श्रीर
में सब मंडलियों में यूही जाता देता है। कोई खतना १८
किया हुआ बुलाया गया है तो खतनाहिनसा न बने।
कोई खतना हुआ बुलाया गया है तो खतना न दिया
जाय। खतना कुछ नहीं है श्रीर खतनाहिन होना कुछ १५
नहीं है परन्तु ईश्वरकी ज्ञानीका पाणन करना
सार है। तर एक जन जिस दशामं बुलाया गया उसीमें २०
रहे। क्या तू दास हो करके बुलाया गया। चिन्ता २१
मत कर पर यदि तेरा उद्दार हो भी सकता है तो
बरन उसका भेग कर। क्योंकि जैसा दास प्रभुमें बुलाया
गया है सा प्रभुका निबन्ध दिया हुआ है श्रीर वैसही
निबन्ध जैसा बुलाया गया है सा श्रीकृत्ता दास है। तुम २२
दास देके माल लिये गये हो। मनुष्यको दास मत
बने। है भाइया हर एक जन जिस दशामं बुलाया
गया ईश्वरकी झागे उसीमें बना रहे।

नाजुकियांके विषयमें प्रभुमं बुलाये जाता सुन्दर नहीं २५
मिली है परन्तु जैसा प्रभुमें मुक्तपर दया किंद्र है कि
में विषयावस्थायों होकर तैसा में परमार्थम देता हूँ। ता में यह
विचार करता हूँ कि बर्तमान तौहके कारण यहीं सबह
है सर्वात मनुष्यका वैसही रहना सबहा है। क्या तू यह
स्त्रीको संग बंधा है। जुटनेबार यह मत जरूर तू स्त्रीको संग बंधा है। स्त्रीको इच्छा मत जरूर। तैसी जा तू बिवाह करे तो तुम्हें पाप नहीं हुआ श्रीर यदि सूंवारी बिवाह करे तो उसे पाप नहीं हुआ पर ऐसींसंग में स्त्री शोभा गया। परन्तु में तुम्मय भार नहीं देता हूं।

हे भाईया मैं यह कहता हूँ कि अब तो सभी संघर्ष
किया गया है। इसलिये कि जिन्हें स्त्री आहें ऐसे हारे जैसे हारे जैसे उन्हें स्त्री आहें ऐसे हारे जैसे अन्य रानेहारे भी ऐसे हारे जैसे नहीं रानेहारे जैसे भानुन्द करनेहारे ऐसे हारे जैसे भानुन्द नहीं करते जैसे देव लेनेहारे ऐसे हारे जैसे नहीं रक्षाते.

श्रीर इस संसारको में भाग करनेहारे ऐसे हारे जैसे जातिभेंग नहीं करते क्योंकि इस संसारको रूप बीतता जाता है।

में चाहता हूँ कि तुम्हें चिनता न हो। अबिवाहित पुरुष प्रभुको बातेंकी चिनता करता है कि प्रभुको देव किंकर प्रसन्न करे। परन्तु बिवाहित पुरुष संसारको बातेंकी चिनता करता है कि अपने स्त्रीको किंकर प्रसन्न करे। जैसे है। श्रीर किंकर में भी भेद है। अबिवाहित नारी प्रभुकी बातेंकी चिनता करती है कि वह देव श्रीर शार्माको भी पवित्र होि के परन्तु बिवाहित नारी संसारकी बातेंकी चिनता करती है कि अपने स्वामीको किंकर प्रसन्न करे। पर भी यह बात तुम्हारेही जानको लिये कहता हूँ। अचारको जो तुम्मय फटा, खाली इसलिये नहीं परन्तु तुम्मय शुष्क चाल चलाने श्रीर दुःखित न होको प्रभुमें लीली रहने के लिये कहता हूँ। परन्तु यदि कोई समझे कि में अपने
कन्यासे अग्रभ काम करता हूँ जो वह स्यानी हो श्रीर 
ईसा होना आवश्यक है तो वह जो बाहता है सा करे 
वस पाप नहीं है । वे बिवाह करे । पर जो मनमें दूः रहता है श्रीर उसको आवश्यक नहीं पर अपनी 
इच्छाकै विषयमें आधिकार है श्रीर यह बात अपने 
मनमें ठहराई है कि अपनी कन्याको रखे वह इच्छा 
करता है । इसलिये जो बिवाह देता है सा इच्छा ३८ 
करता है श्रीर जो बिवाह नहीं देता है सा भी श्रीर 
इच्छा करता है । 

स्ती जबलों उसका स्मारी जीता रहे तबलों व्यव- 
इच्छासे बंधी है परम्तु यदि उसका स्मारी मर जाय तो 
वह लिनेंथ है कि जिससे बाहे उससे व्याही जाय । 
पर केवल प्रभु मे । परम्तु जो वह वैसीही रहे तो मे ४० 
विचारमें श्रीर भी घन्य है श्रीर में समस्ता हूँ कि 
इेवरका आत्मा मुखमें भी है ।

६ आठवां पर्व ।

१ प्रेमका श्रानवे उतम होना । ४ मूर्ति कुक नहीं है परम्तु बंडवर सब कुक है 
सत्तका बार्बर नौ । ५ मूर्तिसे समस्ता भोजन करनसे निवर्त भानको ठौकर रवि- 
लाना डोवत न होना ।

मूर्ताके श्रागे बन जिद हुई वस्तुत्रांके विषयमें में १ 
काहता हूँ । हम जानते हैं कि हम सभेंको ज्ञान है । 
ज्ञान फुलाता है परम्तु प्रेम सुधारता है । यदि केवल २ 
समके कि में कुछ जानता हूँ तो जैसा जानना इच्छ 
है तैसा जलालों कुछ नहीं जानता है । परम्तु यदि ३ 
केवल जन्म इव्वरको प्यार करता है तो वही इव्वरसे 
ज्ञाना जाता है ।
4 सा मरतींके खागे बलि किदी हुईं बस्तूरणोंके खानेके विशयमं दे कहता हूँ। हम जानते हैं कि मृत्ति जगतमें कुछ नहीं हैं श्राय कि एक इंशवरके खाडीके काई दूसरा इंशवर नहीं है। कोंकी यदापि का शाकाशमं का पृथिवीपर कितने हैं जो इंशवर कहलाते हैं जैसा बहुतसे इंशवर बहुतसे प्रभु हैं। तैमी हमारे लिये एक इंशवर पिता है जिससे सब कुछ हैं श्राय हम उसके लिये हैं श्राय। एक प्रभु यीपू ब्रीडू है जिसके द्वारासे सब कुछ हैं श्राय हम उसके द्वारासे हैं।

5 परलु सभामं यह ज्ञान नहीं है पर कितने लोग खाबलौं मृत्ति जानके मृत्ति के खागे बलि किदी हुईं बस्तू मानके उस बस्तूका खाते हैं श्राय उनका मन दुबेलन है। भाजन तो हमें इंशवरके निकट नहीं पहुँचाता है कोंकी यदि हम खाबेंं ता हमें कुछ बहुत नहीं श्राय यदि नहीं खाबेंं ता कुछ घरती भी नहीं। परलु सचेत रहा ऐसा न हो तुम्हारा यह आधिकार कहीं दुबेललौंके लिये टाॅकरका कारण है।

90 जाए। कोंकी यदि काई तुमी जिसका ज्ञान है मृत्ति मं मंदिरमं भाजनपर बैठे देखे ता कर ऐसलिये कि वह दुबेन है उसका मन मृत्ति के खागे बलि किदी हुईं बस्तू खानेका टूट न किया जायगा। श्राय कर वह दुबेन भाई जिसके लिये सीशु मुखा तरे खानेका हेतु नाश न होगा। परलु इस रोतिसे भाईयंका अग्राध करनेसे श्राय उनके दुबेल मनकी चार देने से तुम सीशु का अग्राध करते हैं। इस कारण यदि भाजन मेरे भाईयंको
टक्कर खिलाते है ता में कभी किसी रीति मात्र न 
बांजगा न हो कि मैं अपने भाईयों के टक्कर खिलाक ।

5 नया पद्म ।

1 बुकमातारी प्रावर्जुका प्रतिपालन किस रीति से हुशा चाहिये बनका 
निम्न । 15 प्रावलका वह भातों बिपयम भापने चारितका बन्धन करना । 28 
प्रावारों बैठनेका हुए ।

क्या में प्रितत नहीं हूं । क्या में निवेदन नहीं हूँ ।
क्या मैंने हमारे प्रभु योशु खीणकाका नहीं देखा है । क्या 
तुम प्रभुका मेरे कृत नहीं हो । जा में चारिक लिये 
प्रितत नहीं हूं तीभी तुम्हारे लिये ता हूं क्या क्या तुम 
प्रभुका मेरी प्रितता का चाप हो । जा मुझे जांच कर ।

१ चनके लिये यही मेरा उत्तर है । क्या हमें खाने चार 
पीनेका शाखिका नहीं है । क्या जैसा दूसरे प्रिततां 
चार प्रभुका भाइयोंका चार कैफाका तैमा हमका भी 
शाखिका नहीं है कि एक प्रम्वांस हसे बिवाह करके 
अले लिये फिरँ । अयथा क्या छेवाल मुक्को चार वर्ण- 
वाकी शाखिका नहीं है कि कमाई करना छैं । छैन 
कभी अपनेही खचे से वितापन किया करना है । छैन 
दृष्की बारी लगाता है चार उसका कुछ फल नहीं खा- 
ता है । अयथा छैन में आंके हुंदका रखवाली करता है 
चार हुंदका कुछ दुःख नहीं खाता है । क्या में यह 
बारे मनुष्यका रीतिपर बोलता हूं । क्या ब्यवस्था भी 
यह बारे नहीं कहती है । क्यांकि मृसाको ब्यवस्थामें ।

८ लिखा है कि दृष्की बेलका मुह मत बांध । क्या 
ईश्वर बेलकी चिन्ता करता है । अयथा क्या व्य 

१० निज खारके हमारे कारण कहता है । हमारे हारक
लिखा गया कि उचित है कि हल जातनेहारा आशासे हल जाते छोर दाखनेहारा भागी हानेकी आशासे
11 दाखनी करे । यदि हमने तुम्हारी लिए शान्तिक बस्तु बांध हैं तो हम जो तुम्हारी शांतिक बस्तु लाव करा
12 यह बड़ी बात है । यदि दूसरे जन तुम्पर इस शान्ति- कारको भागी हैं तो का हम शान्तिक करेक नहीं हैं . परन्तु हम यह शान्तिकार कामने न लाये पर सब कुछ सहते हैं जिसंत है के सुमाचारको कुछ रोक न करेन।
13 वा तुम नहीं जानते हा कि जो लोग याजकीय काममे करते हैं सा मंदिरमे खाते हैं छोर जा लोग बेदीकी
14 सेवा करते हैं सा बेदीकी जोशधारी हैते हैं । मूर्ति प्रभुने भी जो लोग सुमाचार सुनते हैं उनके लिये ठहराया है कि सुमाचारसे उनकी जीविका है।
15 परन्तु में इन बातेंमे कोई बात काममे नहीं लाया छोर मैने ते । यह बाति इसलिये नहीं लिखीं कि मेरे विश्वमे मूर्ति किया जाय कबांकि मरना मेरी लिये इससे भाला है कि कोई मेरा बड़हाई करना ब्यर्थ ठहराये।
16 कबांकि जो में सुमाचार प्रचार कांठे ता इससे कुछ मेरी बड़हाई नहीं है कबांकि मुक्ति जनवध्य पहटा है छोर जे में सुमाचार प्रचार न कांठे ता मुक्ति सन्ताप है।
17 कबांकि जा में अपनी इच्छासे यह करता हूं ता मजूरी मुक्ति मिलती है पर जा जनिचासे ता मंडारीपन मुफ़्फ़ि
18 सांपा गया है । सा मेरी कौनसी मजूरी है । यह कि सुमाचार प्रचार करनमे में है के सुमाचार संतका ठहरांज यहांता कि सुमाचारमें जा मेरा शान्तिक है।
उसका मैं छातिभूग न कहूँ। क्योंकि सभी सत्य संवेदन १५ है कि मैंने सबका काम नहीं किया कहना जिसे आधिक लेखकों का प्राप्त कहूँ। श्रीय यह इंग्रेडियेंट्स में यहूदीसा २० बना कि यह इंग्रेडियेंट्स का प्राप्त कहूँ। जो लग ब्यवस्थाके अधीन है उनके लिये में ब्यवस्थाके अधीन ऐसा बना कि उन्हें जो ब्यवस्थाके अधीन हैं प्राप्त कहूँ। ब्यवस्था २१ होना लिये में जो ऊंचवरकी ब्यवस्थासे ही नहीं परन्तु ऊंचवरसे ब्यवस्थाके अधीन हूँ ब्यवस्थाहीनसा बना कि ब्यवस्थाहीनांकी प्राप्त कहूँ। में दुबेर्नांकी लिये २२ दुबेर्नांकी बना कि दुबेर्नांकी प्राप्त कहूँ। में सब्नांकी लिये सब कुछ बना हूँ कि में नवाप्त कहूँ एकाएकी बचांज। श्रीय यही में सुसमाचारके कारण करता हूँ २३ कि में उसका भागी हो जांज।

क्या तुम नहीं जानते हो कि जबड़के दैवनेहरे २४ सबही दैवश्चति हैं परन्तु जीतनेका फल एकही पाता है। में सबसे पहले दैवृता कि तुम प्राप्त करो। श्रीय हर एक २५ लड़के हर सब वातावरण में संयमी रहता है। सी भी तो नामकरण सुधी परन्तु हम लग जबनाराण में सुधी लेनेका ऐसे इतने रहते हैं। में भी तो ऐसा दैवश्चति हूँ जैसा २६ विन दैवश्चति दैवश्चति में ऐसा नहीं सुधी लड़ता हूँ जैसा बधारका पीरता हुआ लड़ता। परन्तु में पहले दैवके २७ ताहील करके वशमें लाता हूँ ऐसा न ही कि में श्रीरंजना उपदेश देके ज़ाहें किसी रोतिसे निकृप्त बनूँ।

१० २५ कारिन्यायोंका दूसरनके कारिन्यायोंका विस्तार। १५ मूलंके समझयोंमें भागी कारिन्यायोंका विस्तार। १५ भागिनेमें सुधारनेका काम करनेका उपदेश।
१ हे भाईयो में नहीं चाहता हूँ कि तुम इससे जन्मान रहा कि हमारे पिता लोग सब मेघे नीचे थे।
२ है रा सब समुद्रके बीचमसे गये। है रा समेतो भें मेघे प्रभास मृणाल बपतिस्मा दिया गया।
३ है रा सभीने एकही आत्मक भोजन खाया। है रा सभीने एकही आत्मक पानी पिया किंग वे उस आत्मक पवित्र से जे उनके पीछे पीछे चलता था पीते थे है रा।
४ वह पवित्र ब्रह्म है। परन्तु ईश्वर उनमें स ऐसे लोगों पर नहीं था किंग वे जन्मल मारे पड़े।
५ यह बातें हमारे लिये दर्श्न हुईं इसलिये कि जैसे उन्होंने लालच किया तैसे हम लाग बुरी बस्तुओं
६ जानची न होंयूं। है रा न तुम मूर्तिपूजक होइये जैसे उन्होंने विताने पै जैसा लिखा है लाग खाने है रा।
७ पीनेका बैठे है रा बजनेका दे। है रा न हम भविष्य करें जैसा उन्होंने विताने भविष्य किया है रा एक
८ दिनमें तेज सहस्र गिरे। है रा न हम ब्रह्मकी परीक्षा करें जैसा उन्होंने विताने परीक्षा किये है रा साँपों
९ नाश किये गये। है रा न कुछ का जैसा उन्होंने
१० किये कुछ का है रा नाशकसे नाश किये गये। पर यह
११ सब बातें जे उनपर पड़ी दर्शन थीं है रा वे हमारी
१२ बातों सब पहुंचे हैं। इसलिये जा समय लिखा है कि मैैं
१३ खड़ा हूँ सो सचेत रहे वि गिर न पड़े। तुमपर कोई
परीक्षा नहीं पड़ी है भें वैसे जैसी मनुष्कों हुआ भरति है है रा ईश्वर विश्वासयोग है जे तुम्हें तुम्हारे
सामर्थ्यः कार्यात परिवर्तित होने न देगा परन्तु परीक्षा-
के साथ निपटास भी करेगा कि तुम सह सको। इस १४
कारण है मेरे प्यारे मूर्तिपूजासे बचे रहै।

मैं जैसा बुटिमानोंसे बालता हूँ, जा में कहता हूँ १५
उसे तुम विचार करो। वह धन्यवाद देना करो जिसके १६
ज़ुपर हम धन्यवाद करते हैं क्या खोपके लोहकी संगति
नहीं है। वह रोटी जिसे हम टोड़ते हैं क्या खोपके
देहकी संगति नहीं है। एक रोटी है इसलिए हम जो १७
बहुत हैं एक देह हैं क्योंकि हम सब उस एक रोटीके
भागी होते हैं। शारीरिक इसायेलखा देखा है। क्या बनी- १८
दानांके खानेहरे बॉटीके साम्र नहीं हैं। ता में क्या १८
कहता हूँ। क्या यह फूल बुध है तथा कि मूर्तिके
आंगका बलिदान कुछ है। नहीं पर यह फूल टेव्युजक २०
लोग जो कुछ बलिदान करते हैं वे। इच्छावद्ध शांगे नहीं
पर भूतांके आंगे बलिदान करते हैं शार में नहीं चाहता
हूँ कि तुम भूतांके साम्र हो जाओ। तुम प्रभुकी करोते २१ शार
भूतांके करोते दानांसे नहीं पी सकते हैं। तुम
प्रभुकी मेज शार भूतांकी मेज दानांके भागी नहीं है
सकते हैं। तथ्या क्या हम प्रभुकी बढ़ते हैं। क्या २२
हम उससे अधिक शक्तिमान हैं।

सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ लाभका २३ नहीं है। सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ
नहीं सुधारता है। कौइ तथ्या लाभ न बूढ़े परन्तु हर २४
एक जन दूरसे लाभ बूढ़े। जो कुछ मानसकी हारमें २५
बिकता है सा खाओ शार विवेकके कारण कुछ मत
२८ पृष्ठा । क्योंकि पृथिवी श्रीर उसकी सारी सम्पत्ति २० परमेश्वरको है। श्रीर यदि अभिव्यक्तीयित हो कर तुम्हें नेवता देवे श्रीर तुम्हें जानेकी इच्छा है तो जै कुछ तुम्हारे आगे रखा जाय सा खाणा श्रीर बिवेकके शरीर कारण कुछ मत पृष्ठा । परन्तु यदि काई तुम्हें कहे यह ते मूर्तिके आगे बलि किया हुआ है तो उसी बतानेहारी कारण श्रीर बिवेकके कारण मत खाणा। (क्योंकि पृथिवी श्रीर उसकी सारी सम्पत्ति परमेश्वर- २५ की है)। बिवेक जै में कहता हूँ सो अथवा नहीं परन्तु उस दूसरे का क्योंकि मेरी निर्विन्न्धता कों दूसरे बिवेक- ३० से बिचार किये जाती है। जै में मन्यवात करके भागी होता हूँ ता जिसके ऊपर में धन्य मानता हूँ उसके ६१ लिये मेरी निन्दा कीं होती है। ता तम जै खाणा अथवा पीया अथवा काई काम करो ता सब कुछ इंद्रधनु- ३२ की महिमाके लिये करो । न विहूँदियां न यूनानि- ३३ याँको न इंद्रधनुको मंडलकोठी ठाकर खिलाणा। जैसा में भी सब बातोंमें सभी को प्रस्तुत करता हूँ श्रीर अथवा लाभ नहीं परन्तु बहुतांका लाभ घूँघुटा हूँ तिं वे खाण पाएँ ।

२९ एक्यारहं राखा ।

१ उपरके उपदेशकी समापि । २ पूणः श्रीर स्त्रीका श्रीर विहरार्या वजनकी सबहें बाजिये देखका विषय । ३० प्रमु भाजां को कार्यवेष्य मंडलीको भावरीत दीदी को उढ़का उठहना । ३१ प्रमु भाजांके निषिद्धका तृणालम । ३२ प्रमु भाजाके वाणि अथवा सम जाँचनेकी भाष्यवक्ता ।

२० तुम मेरीसी चाल चला जैसा में खाणुकीसी चाल चलता हूँ ।
हे भाइयों मैं तुम्हें सराहता हूँ कि सब वातों में तुम मुखे स्मरण करते है जैसे व्यवहारों का जैसा मैंने तुम्हें उठरा दिया तैसाही धारण करते है। पर मैं चाहता हूँ कि तुम जान लें कि खिलौना हर एक पुरुष का सिर है जैसे पुरुष स्त्रीका सिर है जैसे खिलौना सिर ईश्वर है। हर एक पुरुष जी सिरपर कुछ सिकटे हुए प्रार्थना करता अथवा भविष्यद्वाका कहता है अपने सिरका अथपान करता है। परन्तु हर एक स्त्री जो उथाए सिर प्रार्थना करती अथवा भविष्यद्वाके कहती है अपने सिरका अथपान करती है क्योंकि वह मुंडी हुई से कुछ भिड़ नहीं है। यदि स्त्री सिर न ढाके तो बाल भी करता वे परन्तु यदि बाल करता अथवा मुंडवाना स्त्रीका लज्जा है तो सिर ढाके। क्योंकि पुरुषका तो सिर ढाकना उचित नहीं है क्योंकि वह ईश्वरका रूप जैसे महिमा है परतु स्त्री पुरुषकी महिमा है। क्योंकि पुरुष स्त्रीसे नहीं हुआ परतु स्त्री पुरुषते हुई। जैसे पुरुष स्त्रीकें लिये नहीं सजा गया परतु स्त्री पुरुषके लिये सजी गई। इसी लिये तूतियों का खारण स्त्रीको उचित है कि अधिकार अपने सिरपर रखे। तैसा प्रभुमि न तो पुरुष बिना स्त्रीसे ११ जैसे न स्त्री बिना पुरुषसे है। क्योंकि जैसा स्त्री पुरुषसे १२ है तैसा पुरुष स्त्रीकें द्वारसे परतु सब कुछ ईश्वरसे है। तुम अपने अपने मनमें बिचार करे। क्या उघाड़ १३ ईश्वरसे प्रार्थना करना स्त्रीको सोहता है। अथवा १४ जैसे अपहर तुम्हें नहीं सिखाती है कि यदि
पुरूष लंबा बाल रखे ता उसको चानादर है। परन्तु यदि स्त्री लंबा बाल रखे ता उसको शादर है क्योंकि ।
बाल उसका चौड़नीके लिये दिया गया है। परन्तु यदि कोई जन बिबादी देख पड़े ता न हमारी न इंश्वरकी मंडलीयाँकी ऐसी रीति है।

परन्तु यह चान्द्र देवमें मुझे नहीं सराहता हूँ कि तुम्हारे एकटू हेनिसे मलाई नहीं परन्तु हानि होती है। क्योंकि पहले मैं सुनता हूँ कि जब तुम मंडलीमें एकटू होते हा तब तुम्हारी अनेक बिचेद होते हैं शेर।
में कुछ कुछ प्रतीत करता हूं। क्योंकि कुपन्य भी तुम्हारी अवधय हांगे इसलिये कि जो लोग ख्यात हैं सो तुम्हारी प्रगत हा जावें। सो तुम जी एक स्थानमें एकटू ।
होते हा ता प्रभु भाज खानेके लिये नहीं है। क्योंकि खानेके हर एक पालने अपना अपना भाज खा लेता ।
है शेर एक तो खूब है दूसरा मतवाला है। क्या खाने तैयार पीनेके लिये मुझे घर नहीं है। अपना क्या तुम इंश्वरकी मंडलीके तुच्छ जानते हा शेर जिनके नहीं हैं उन्हें लाचित करते हा। में तुमसे क्या कहूँ। क्या इस बातमें मुझे सराहूँ। में नहीं सराहता हूं।

क्योंकि मैं ने प्रभुसे यह पाया जो मैंने मुझे भी सांप दिया कि प्रभु यू शुभे जिस रात वह पकड़वाया गया ।
उसी रातकी राती लिए। शेर पहने मानके वसे तोड़ा। शेर कहा लेना खाना यह मेरा देह है का तुम्हारे लिये तोड़ा जाता है। मेरे समरके लिये यह किया नह करे। इसी रीत्तिसे उसने बियारीके पीढ़े कराता भी लेके
कहा यह कर्टारा मेरे लोहूपर नया नियम है। जब जब तुम इसे पीवा तब मेरे स्मरणके लिये यह किया करें। क्योंकि जब जब तुम यह रात्री खावा श्रीर यह करो- यद्दरा पीवा तब प्रभुके मूर्त्यके जबलीन वह न सावे प्रचार करते है। इसलिये जो कोई अनुचित रीतिसे यह रात्री 20 खावे सावषा प्रभुका कटेरा पीवे तो प्रभुके देह श्रीर लोहूके दंडके याग्य होगा। परन्तु मनुष्य अपनेका परके 28 श्रीर इस रीतिसे यह रात्री खावे श्रीर इस कटेरिसे पीवे। क्योंकि जो अनुचित रीतिसे खाता श्रीर पीता 28 है तो जब कि प्रभुके देह का विशेष नहीं मानता है तो खाने श्रीर पीनेसे अपनेपर दंड लाता है। इस हेतुसे 30 तम्मोंमें बहुत जन थुबेल श्रीर रोगी हैं श्रीर बहुतसे सोते हैं। क्योंकि जो हम अपना अपना विचार करते तो 31 हमारा विचार नहीं किया जाता। परन्तु हमारा वि- 32 श्रीर जो किया जाता है तो प्रमुख हम ताड़ना किये जाते हैं। इसलिये जि संसारके संग दंडके याग्य न ठहराये जारे। इसलिये है मेरे भाइयो। जब तुम खानेको एकटू 33 होके तब एक दूसरके लिये ठहरे। परन्तु यदि कोई 34 भुखा है तो घरमें खाय जिस्ते एकटू होनेसे तुम्हारा दंड न होवे। श्रीर जो कुछ रह गया है जब कभी मैं तुम्हारे पास खाउंग तब उसके विषयमें आज्ञा देंजंगा।

92 वार्तवां पाठ।

1. भारतमक दार्शनकं प्रभावं। 4. अनेक प्रकारकं दार्शनकं प्रभावं ब्राम्मम्ये दिया जाना। 7. एक एक विश्वासंकं पुष्पकं पुष्पकं दार्शनकं मिलना। 12. यह विश्वासंकं लागु पुष्पकं करहुंगं प्रभाबं हैं परन्तु यद्यपि एक देह हैं श्रीर एक दूसरके उपकारमुँ हस्तको कथा। 28 मंदालोंमें अनेक प्रदेशकं तर्फबन।
1. हे भाइये में नहीं चाहता हूँ कि तुम आत्मिक
2. विश्वेयांमें अनन्यजन रहो। तुम जानते हैं कि तुम
devar-prakar, जैसे जैसे सिखाये जाते जैसे भासी जाते हैं
3. गंगी मुरुंतांकी श्रार मरक जाते थे। इस कारण में
तुम्हें बताता हूँ कि कैसे जी इंश्वरके आत्मासे बोलता
है यीवुकी सापित नहीं कहता है श्रार कैसे यीवुकी
प्रभु नहीं कह सकता है केवल पवित्र आत्मासे।
4. बरदान ता बंटे हुए हैं परन्तू आत्मा एकही है।
5. श्रार सेवकायां बंटी हुई हैं परन्तू प्रभु एकही है।
6. श्रार कायां बंटे हुए हैं परन्तु इंश्वर एकही है जो
सभी से ये सब कायां करवाता है।
7. परन्तु एक एकमनुष्यकी आत्माका प्रकाश दिया जाने
है जिसमे नाम है। कैंसमे एकीकी आत्माके द्वारासे
बुद्धीकी बात दैही जाती है श्रार दूसरके उसी आत्माके
8. सन्तुल ज्ञानकी बात। श्रार दूसरके उसी आत्मासे
बिश्वास श्रार दूसरके उसी आत्मासे चंगा राखनेके बर-
9. 8 दारे, फिर दूसरके आश्रयक कम्मे राखनेकी शक्ति श्रार
दूसरके मानविवधात्वक बालनेकी श्रार दूसरके आत्माके
श्रार यह बालनेकी श्रार दूसरके भावासेका आर्य लगा-
10. नेकी शक्ति दैही जाती है। परन्तु ये सब कायां वही
एक आत्मा राखता है श्रार अपनी इच्छाके सन्तुल
हर एक मनुष्यका पृथक पृथक करनेके बांट देता है।
11. कैंसमे जैसे दैही ता एक है श्रार उसके बांट बहुतसे हैं
परन्तु उस एक दैहीके सब बांट धर्मिप बहुतसे हैं तैमी
एकही देह है तैसीही ब्रीष्य भी है। क्यांकि हम लोग १३ क्या गीहट्टै क्या युनानी क्या दास क्या निर्वीन्य समख्ये एक देह होनेका एक ज्ञातमसे सप्तिसमा लिया श्रीर सब एक ज्ञातमां पिलायै गये। क्यांकि देह एकही श्रंग १४ नहीं है परन्तु बहुतसे श्रंग। यदि पांव कहे में हाथ १५ नहीं हूं इससारिये में देहका श्रंग नहीं हूं तो क्या वह इस कारणसे देहका श्रंग नहीं है। श्रीर यदि कान १६ कहे में श्वांख नहीं हूं इससारिये में देहका श्रंग नहीं हूं तो क्या वह इस कारणसे देहका श्रंग नहीं है। जा १७ सारा देह श्वांख होता तो सुनना कहाँ। जा सारा देह कानही होता तो सुष्णना कहाँ। परन्तु श्रवते १८ इनस्वरने शंगांको श्रीर उनमेंसे एक एकजिया देहमें अपनी इतारों जनुसार रखा है। परन्तु यदि सब श्रंग एकही २० हैं परन्तु एकही देह। श्वांख हाथसे नहीं कह सकती है २१ कि मुफ्ते तेरा कुछ प्रयोगन नहीं श्रीर फिर सिर पांवांसे नहीं कह सकता है कि मुफ्ते तुम्हारा कुछ प्रयोगन नहीं। परन्तु देहके जो श्रंग श्रीर दुबूज देख पड़ते हैं २२ सा बहुत ज्ञान करके ज्ञानवशयक हैं। श्रीर देहके जिन २३ शंगांको हम ज्ञात निरादर समकत हैं उनपर हम बहुत ज्ञान क्षादर रखते हैं श्रीर हमारे श्रीभावजी श्रंग बहुत ज्ञान श्रीभावमान किये जाते हैं। पर हमारे श्रीभाव- २४ मान शंगांको इसका कुछ प्रयोगन नहीं है परन्तु इंशवर- ने देहके मिला लिया है श्रीर जिसं शंगांको घटी यी उसको बहुत ज्ञान क्षादर दिया है, कि देहमें विभेद २५
न होय परन्तु ऋष एक दूसरेके लिये एक समान २८ चिन्ता करें। शार यदि एक ऋष दुःख पाता है ता सब ऋष उसके साथ दुःख पाते हैं अथवा यदि एक ऋषकी बड़आई किवी जाती है ता सब ऋष उसके साथ २० आनन्द करते हैं। सा तुम लोग हिन्दूके देह हा शार पृथक पृथक करके उसके ऋष हा।

२८ शार ईश्वरने कितने का मंडलमें रखा है पहिले प्रितिको दसरे भविष्यद्वाकाण्डको तीसरे उपदेशकों तब आश्चर्यों कम्मींको तब चंगा करनेके बर्दानांको शार उपकारींको शार प्रधानतांको शार जनेक प्रकारको

२४ भाषानेंतको। क्या सब प्रीति हैं। क्या सब भविष्यद्वाका हैं। क्या सब उपदेशक हैं। क्या सब आश्चर्यों कम्मे ३० करनेहारे हैं। क्या सभींको चंगा करनेके बर्दान मिले हैं। क्या सब जनेक भाषा बोलते हैं। क्या सब अर्प ज़गाते हैं। परन्तु ऋषी ऋषी बर्दानांको। अभिलाषा करे शार में तुम्हें शार भी एक जेब मारे बताता हूँ।

९३ तेरहवा पद वे।

१ श्रेष्ठी भावधारका । ८ श्रेष्ठी गुरु । ५ श्रेष्ठी नितिया । १३ श्रेष्ठी चेतुता ।

१ जो में हृदयों शार स्वर्गद्वैतांको बोलिया बोलूं पर सुभूम प्रेम न है ता में उनकारता पीतल अथवा एक २ नाती स्वाभाव हूं। शार जो में भविष्यद्वाका बोल सबूं शार सब में देवीं शार सब ज्ञानकी समस्तूं शार जो में सम्पूर्ण विश्वास हैय यहाँलों कि में पहाड़ींको राजा देवं ३ पर सुभूम प्रेम न है ता में कुछ नहीं हूं। शार जो में ऋषीनी सारी सम्पति बंगलानंका खिलाउं शार जा में
जलाये जानेके। अपना देह सांप देंज़ पर सुफ़्में प्रेम न हो तो मुफ़्ह कुछ लाभ नहीं है।

प्रेम पृरज्वन्त श्री कृपाल है। प्रेम दाह नहीं करता है। प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता है श्रीर फूल नहीं जाता है। वह अनरोप्ति नहीं चलता है वह आयस्वार्थी नहीं है। वह खिजलाया नहीं जाता है वह बुराइंकी चिन्ता नहीं करता है। वह सघर्मसे जानान्द नहीं होता है परन्तु सज्जा करर आनंद करता है। वह सब बातें सहता है सब बातेंका विश्वास करता है सब बातेंकी आशा रखता है सब बातेंके स्वर रहता है।

प्रेम कभी नहीं रहता जाता है परन्तु जी भविष्यवाणियां हां। वे लोप होंगी भर्षवा बलियां हां। तो उनका अन्त लगेगा भर्षवा ज्ञान है तो वह लोप होगा। क्योंकि हम ओंसङ्क माँच जातें हैं श्रीर ओंसङ्क माँच भविष्यवाणियां कहते हैं। परन्तु जब वह जी समपूर्ण है ज्ञावेगा तब यह जी ओंसङ्क माँच है लोप हो जायगा। जब में बालक या चरत में बालककी नाई बलिता या में बालककासा मन रखता या में बालककासा विचार करता या परन्तु में जो ओब मनुष्य हुआ हूं तो बालककी बातें झूठ दीदिं हैं। हम ता जब दर्पणमें गुड़ ओर्थसा देखते हैं परन्तु चरत में ओब ओंसङ्क माँच जानता हूं परन्तु तब जैसा पहचाना गया हूं-तैसाही पहचानुंगा।

तो ओब विश्वास आशा प्रेम वे तीनीं रहते हैं १३ परन्तु इनमेंसे प्रेम चारू है।

__________________________________________

Nurtured by Google
18 चैतन्यवां पढ़िँ ।

1 भन्ने भाषा बोलनेको बदवानसने भिविष्यवादीको बदवानकी स्थिति । २ भविष्य- द्वारा बोलने उपरेको संकेतो सुझाव जानेका वर्तमान । १४ मशीना योग भवन भन्ने भाषामा वालेको सहज रुपमा वालेका उपदेश । १४ मशीनीमा बब बारा व्यवसाय रीति से करानेका उपदेश ।

2 प्रेमकी चित्रा करो तैभो भाषामा षिक्षाको बदवानेको सभी नामले करो परन्तु षिक्षा करको जितने भविष्यवादका प्रभु हो । की भन्ने भाषा बोलाने यह सम्भव हो सो मनुष्यो नाहीं परन्तु ईंधनसह मनुष्यो नसक्को नहीं बुझाना है की यह भाषा पर्यन्त बोलेका यथा है ।

3 पर भाषामा वह गुढ बाटै बोलिएका है । परन्तु जो भविष्यवादकार कहाँ है तो मनुष्याको सुधारामा बोल्नेको योग कर्ता है । जो भन्ने भाषा बोलाने सो अपनेहीको सुधार हो परन्तु जो भविष्य द्वार भविष्यवादका गहिन हो सो मंडलीका सुधार हो । मनुष्याला हुन की तुम सब जनेका जनेका भाषा बोलनेको परन्तु ज्ञान बोलनेका करको जितने भविष्यवादका कहाँ है की यह जनेका भाषा जनेका भाषा बोलिएका यदि ज्ञान न लगाए बिन मंडली सुधारी जाय तो भविष्यवादका कहनेका उससे बढ़ा है।

4 जब हे भाषा जो में तुहाँ पास जनेका भाषा बोलता हुई ज्ञान तैभी जो में प्रकाश या ज्ञान अश्वाभाव भविष्यवादी या उपदेश करको तुहाँ से बोलाई तो मुक्त हुई ।

5 तुम्हारा क्या जान होगा । निर्जित बस्तु पर जो शब्द देती हैं चाहे बंसी चाहे बीषा यदि स्वरोंमें भेद न कर देने तो जो बंसी अश्वाभाव बीषपर बजाया जाता है सो कींगकर पहचाना जायगा । की भन्ने तरही भी यदि
धानिकर्षय शब्द देवे तो कौन घयङकी लड़िईके लिये
तैयार करेगा। वैसे ही तुम भी यदि जीन्से स्पष्ट बात
न करो तो जो बला जाता है तो कौंकर बुझा जायगा
क्योंकि तुम नयारे से तो बात करनेहारे ठहरोगे। जगतमें २०
क्या जाने कितने प्रकारकी बालि आ जाएगी क्योंकि
किसी प्रकारकी बाली निरंतर नहीं है। इसलिये जो
भी में बालीका अर्थ न जानू तो वे बालनेहारे लेके
परदेशी हांज़गा बिया बालनेहारा मेरे लेखे परदेशी
होगा। तो तुम भी जब कि आत्मक विषयके रूपी- २२
भी है। तो मंडलीके सुधार्नेके निमित बड़ा जानेका यह
करें। इस कारण जो अन्य भाषा बाली से प्रार्थना २५
करे कि अर्थ भी लगा सके।
क्योंकि जो में अन्य भाषामें प्रार्थना कहत में मेरा २६
आत्मा प्रार्थना करता है परन्तु मेरी बुझा निष्ठल है।
ता क्या है। में आत्मासे प्रार्थना कहता बिया बुझि २४
भी प्रार्थना कहता में आत्मासे गान कहता बिया बुझि
भी गान कहता। नहीं तो यदि तू आत्मासे धन्यबाद ६८
करे तो जा जनसिखकीसी दजार्निहै। ते धन्य मान-
नैयर क्योंकि आत्में अहें वह ते नहीं जानता तू
क्या कहता है। क्योंकि तू तो भली रीतीसे धन्य मानता
है परन्तु वह दूसरा सुधारा नहीं जाता है। में अन्ये २८
िध्वरका धन्य मानता हूं तक में तुम सभीसे आधिक कर-
के अन्य अन्य भाषा बोलता हूं। परन्तु मंडलीके यह
सहस्र बारूं अन्य भाषामें कहते में वाच बारूं अपनी
बुझिते कहना अधिक चाहता हूं जिंते हीरार्नें। भी
20 सिखायें। हे भाइयो ज्ञानम सबलक मत होसो तैभी बुराईमें सबलक होसो परत्व ज्ञानम सयाने होसो।
21 ब्रह्मस्थामैं लिखा है कि परमेश्वर कहता है जन्म भाषा बालनेहारेिंकि द्वारा चैति पराये मुखके द्वारा इन लोगणसे बात कहंगा चैति वे इस रीति से भी मेरी न 22 सुनंगे। ता जन्म जन्म बलियां बिखासियोंके लिये नहीं पर अबिखासियोंके लिये चिन्ह हैं परत्व भविष्य- द्वारे अबिखासियोंके लिये नहीं पर बिखासियोंके 23 लिये चिन्ह है। ता यदि सारी मंडली एक संग एकत्र होय चैति सब जन्म जन्म भाषा बोलें चैति नसिब जन्म जन्म अबिखासी लेजे भीतर चारे तो का वे न 24 कहेंगे कि वे लोगबैरहें। परत्वूदि सब भविष्यद्वारा कहें चैति कौई अबिखासी जन्म नसिब जन्म अनुष्ठ 25 भीतर चारे तो वह समेंकी चारसे दोषी ठहरता है। 26 चैति समेंसे जांचा जाता है। चैति इस रीति से उसकी मनकी गुप्त बातें प्रगट हो जाती हैं चैति यूं वह मुखके बल गिरिये ईश्वरको प्रशाम करेगा चैति बतावेगा चि ईश्वर निश्चय इन लोगणोंके बीचमें है।
27 ता है भाइयो क्या है। जब तुम एकत्र होते हो तब तुममेंसे हर एकके पास गीत हैं उपदेश हैं जन्म भाषा है प्रकाश हैं भाषाका रघु हैं। चबुक सुधारनके लिये 28 किया जाय। यदि कौई जन्म भाषा बोले तो दो दो जन्म बहुत होय तो तीन तीन चैति पारी पारी बोलें 29 चैति एक मनुष्य जन्म लगावे। परत्व यदि जन्म 30 लगानेहारा न हो तो मंडलमें चुप रहे चैति जन्म न
श्रीर इंश्वरसि बाले। भविष्यद्वका दो जयवा तीन २५
बालें श्रीर दूसरे बिचार करें। श्रीर यदि दूसरेपर ३०
जा बेठा है कुछ प्रगत किया जाय तो पहिला चुप
रहे। कोंक्ष तुम सब एक एक करके भविष्यद्वारका ३१
कह सकते हैं। इसलिये कि सब सीखें श्रीर सब शांति
पाएं। श्रीर भविष्यद्वारकाषोंके सातमा भविष्यद्वारकाषोंके ३२
बशमें हैं। कोंक्ष इंश्वर हुलुइड़ाका नहीं परन्तु शांतिका ३३
शर्त है जैसे पवित्र लोगोंकी सब मंडलियोंमें हैं।

तुमहारी स्थिया मंडलियोंमें चुप रहें कोंक्ष उन्हें ३४
बात करनेकी नहीं परन्तु बशमें रहनेकी झांझा दिए गईं
है जैसे अवस्था भी कहती है। श्रीर यदि वे कुछ सीखने ३५
शाहती हैं तो घरमें अपनेही स्वामियोंसे पूछँ कोंक्ष
मंडलोंमें बात करना स्थियोंका लज्जा है।

क्या इंश्वरका बचन तुमहेंमिसे निकला झाँझा भेवल इंश
तुमहारेही पास पहुंचा। यदि करई मनुष्य म्याबिष्यद्वका ३६
झाँझा झांझिका जन देख पड़े तो में तुमहारे पास जो
बातिं लिखता हूँ वह उन्हें माने जिने प्रभुकी झांझार्य
हैं। परन्तु यदि करई नहीं समक्षा है तो न समक्ष। ३८
सो है माया भविष्यद्वाक कहनेकी झमिलाशा करो। ३९
श्रीर अनेक माया बोलनेकी मत बजाँ। सब कुछ ४०
शुभ रीतिसे श्रीर ठिकाने सिर किया जाय।

६४ पद्मरवां प्रभें।

१ योयुके जो उठनेकी कथा श्रीर वपर बहुल सीगोकी भावो। ४२ पुनज्यापनो
कारनेके जो बार्त निकलती हैं उनका वर्णन। ३० योयुके पुनज्यापनोदे जब
मनुष्योंके जो उठनेका प्रमाण नूर नुरानाके रीति। ४५ उसका फल।

हे मायेया में वह सुसमाचार तुम्हें वताता हूँ। जो मैंने १
तुम्हें सुनाया जिति तुमने यह भी किया जिसमें तुम खड़े भी रहते ही। जिसके द्वारा जो तुम उस बचनको जिस करके मैं तुम्हें सुसमाचार सुनाया धारण करते हो तौ तुम्हारा चार भी होता है। नहीं तो तुमने वृथा विश्वास किया है। क्योंकि सबसे बड़ी बातों में मैं यही तुम्हें सांप दीदी जो मैंने यह भी किया थी कि दीपज
4 धर्मपुस्तकको अनुसार हमारे पापोंको लिये मरा। श्रीर कि वह गाड़ा गया श्रीर कि धर्मपुस्तकको अनुसार वह तीसरे दिन जी उठा। श्रीर कि वह कैफ़ाको तब वारहीं शिशुओंको दिखाई दिया। तब वह एकही बेरमें पांच सैसी भाइयोंको दिखाई दिया जिनमें से आधिक भाई।
7 बबलों बने रहे परन्तु कितने सा भी गये हैं। तब वह याकबको फिर सब प्रेमितांको दिखाई दिया। श्रीर सबकी पीछे वह मुक्मकी भी जैसे झसमयके जल्द हुयः।
8 दिखाई दिया। क्योंकि मैं प्रेमितांमें सबसे दूरा हैं। श्रीर प्रेमित कहलानेको योग्य नहीं हूं। इस कारण कि मैंने 9 \(1\) ईश्वरको मंडलीको सताया। परन्तु में जो कुछ हूं तो ईश्वरकी अनुयहते हूं। श्रीर उसका अनुयह जो भण्डपर हुया के ब्यर्थ नहीं हुआ। परन्तु मैं सब से आधिक करके परिश्रम किया तौभी मैंने नहीं। परन्तु ईश्वरके
91 अनुयहने के। मेरे संग या परिश्रम किया। सो का में का बे हम यूंही उपदेश करते हैं। श्रीर तुमने यूंही विश्वास किया।
92 परन्तु जो दीपजकी यह कथा सुनाई जाती है कि वह मृतकोंमें जी उठा हैं ता तुममें खड़े एक जन क्योंकर
कहते हैं कि मृतकोंका पुनर्निर्माण नहीं है। यदि मृतकों- १३ का पुनर्निर्माण नहीं है तो ब्रीघु भी नहीं जो उठा है।
क्यों जो ब्रीघु नहीं जो उठा है तो हमारा उपदेश व्यर्थ है। १४
क्यों हम ईश्वरके १५
विषयमें कुटिल साधी भी ठहरते हैं क्योंकि हमने ईश्वरपर
साधी दियौं कि उसने ब्रीघुको जिला उठाया पर यदि
मृतक नहीं जो उठते हैं तो उसने उसको नहीं उठाया।
क्योंकि यदि मृतक नहीं जो उठते हैं तो ब्रीघु भी १६
नहीं जो उठा है। क्यों जो ब्रीघु नहीं जो उठा है तो १७
tumhārā vibhava vyaṁ hi. tum chaṁlāṁ açāpi pāpyāṁ
pṛthvī hi.

तब वे भी जो ब्रीघुमें सा। गये हैं नष्ट हुए १८
हैं। जो ब्रीघुपर केवल इसी जीवनलां हमारी आशा १८
है ता सब मनुष्यिः हम लाग आधिक आभारे हैं।

पर जब तो ब्रीघु मृतकोंमें जो उठा है ईश्वर उन्हें- २०
का जो सा गये हैं परिण फल हुआ है। क्योंकि जब २१
कि मनुष्यिः द्वारासि मृत्यु हुइं मनुष्यिः द्वारासि मृत-
कोंका पुनर्निर्माण भी होगा। क्योंकि ईश्वर आदमीं २२
सब लाग मरते हैं तैसाही ब्रीघुमें सब लाग जिलाये
जाये। परन्तु हर एक अपने अपने पदको अनुसार २३
जिलाया जायगा ब्रीघु परिण फल तब ब्रीघुकों लाग
उसको आनेपर। पीछे जब वह राज्यको ईश्वर करौत २४
पिताको हाथ सपेंगा जब वह सारी प्रधानता ईश्वर
सारा आधिकार ईश्वरको पराक्रम लाग करेगा तब चतुर
गा। क्योंकि जबलां वह सब यजुर्वेदोंको अपने चरणोंतले २५
न कर ले तबलां राज्य करना उसको आदरण है। पिठाला २६
27 शुद्ध जो लाप किया जायगा मृत्यु है। क्योंकि (लिखा है) उसने सब कुछ उसके चरणों तक रखकर उसके अधीन किया। परन्तु जब वह कहेगा कि सब कुछ अधीन किया गया है तब प्रगत है विकिरि जिसने सब कुछ उसके अधीन किया वह नाप नहीं अधीन हुआ अर्थात् जब सब कुछ उसके अधीन किया जायगा तब पुनः नाप भी उसके अधीन होगा जिसने सब कुछ उसके अधीन किया जिस्ते इश्वर सभी सब कुछ हो यां। नहीं ता जो मृत्तिकाओं लिये बपतिस्मा लेते हैं सा क्या करेंगे। यदि मृतक निश्चय नहीं जो उठते हैं ता वे किं नृत्तिकाओं लिये बपतिस्मा लेते हैं। हम भी किं इं घड़ी जाक्षामें रहते हैं। तुम्हारे विषयमें श्रीष सर्वु हमारे प्रभुमें जो बड़ाई में करता हूं उस बड़ाईको साहित में प्रतितिदिन मरता हूं। जो मनुष्यावर रीतिपर में दिक्षामें बन प्रभुराओंसे लड़ा ता मुम्बा क्या लाम हुआ। यदि मृतक नहीं जो उठते हैं ता खासिय हम खाबिं श्री। पीरीं विकिरि बिहान मर जायगे। धर्म मत खासिय। बुरी संगति शब्दी भालको रिगाड़ित है। धर्मके लिये जाग उठो श्रीर पाप मत करो। क्योंकि खितने हैं जो इश्वरको नहीं जानते हैं। मैं तुम्हारी कज्जा निमित्त कहता हूं।

34 परन्तु कोई कहेगा मृतक लोग जिस रीतिसे जी उठते हैं श्रीर केसा देह धरके झाटे हैं। है मूस्क जो कुछ तू बोता है सा यदि मर न जाय ता जिला-30 या नहीं जाता है। श्रीर तू जो कुछ बोता है वह मूर्ति जो हा जायगी नहीं बोता है परन्तु निरा एक
दाना चाहे गेहूंका चाहे शीर जिसी अनाजका। परन्तु इत्यः भए श्रीपरमेश्वर अपनी इच्छाके अनुसार उसकी मूर्ति कर देता है सीर हर एक बीजकी अपनी अपनी मूर्ति। हर इत्यः एक शरीर एकही प्रकारका शरीर नहीं है परन्तु मनुष्योंका शरीर शीर है पशु-श्रीका शरीर शीर है मछलियोंका शीर है पंख-विंकोंका शीर है। स्वरूपमें ४० देह भी हैं शीर पृथिवीपरके देह हैं परन्तु स्वरूपमें देहोंका तेजः शीर है शीर पृथिवीपरके देहोंका शीर है। सूर्योंका तेजः शीर है चन्द्रमाका तेजः शीर है शीर ४१ तारोंका तेजः शीर है क्योंकि तेजः एक तारा दूसरे तारोंसे भिन्न है। वैसही मृत्तिकोंका पुनरृत्यान भी होगा । ४२ वह नाशमान बोय जाता है अविनाशी उठाया जाता है। वह अनादर सहित बोय जाता है तेजः सहित ४३ उठाया जाता है। दुीखता सहित बोय जाता है सामर्थ्य सहित उठाया जाता है। वह प्राणियके देह ४४ बोय जाता है ज्ञातिमक देह उठाया जाता है। एक प्राणियके देह है शीर एक ज्ञातिमक देह है। उं लिखा ४५ मैं है कि पहिला मनुष्य ज्ञातिमक जीवता प्रायो हुआ । पिछला ज्ञातिमक जीवनलौक ज्ञातिमक है। पर जो ज्ञातिमक है साई पहिला नहीं है परन्तु वह जो प्राणियके तब वह जो ज्ञातिमक है। पहिला मनुष्य पृथिवीसे ४६ मिटटीका था । दूसरा मनुष्य स्वरूपत है। वह ४७ मिटटीका जैसा या वैसे वे भी हैं जो मिटटीके हैं शीर वह स्वरूपत जैसा है वैसे वे भी हैं जो स्वरूपत हैं। शीर जैसे हमने उसका रूप जो मिटटीका या ४८
धारणा किया है तैसे उस स्वर्गवासीका रूप भी धारण । । ॥

पर हे भाईये मैं यह कहता हूँ कि माता श्री हिंदू ईश्वरकी राज्यके अधिकारी नहीं हो सकते हैं। ॥

क्योंकि तुर्की पौरी जायगी श्री मृतक अविनाशी उठाये जायगे है श्री अविनाश का पहिन लेते हैं। क्योंकि अविनाश का पहिन लेते हैं। श्री जब यह नाशमान अविनाश का पहिन लेगा। श्री यह मरनहार अमरताको पहिन दबाव तब क्षत्रिय है कि जयमें मृतु निगली गई पूरा है। जायगे। ॥

मृतु तेरा डंडा कहां है परलोक तेरी जय कहां। ॥

मृतुका डंडा पाप है श्री श्री पापका बल अवस्था है। ॥

परलु ईश्वरका धन्यावाद हो जो हमारी प्रभु योगु श्री दास द्वारा। हमें जयवन्त करता है। सी है तेथे प्यारे भाईया तू हो श्री चालन रहे है। श्री यह जानबी कि प्रभुमें तुमहारा परिप्रेय बयार नहीं है। प्रभुके कामे सदा बढ़ते जाते है। ॥

१६ सौलहवां पावन ।

२० चन्द्र विषयक विषयक बाधा । २५ उत्सवके पावनकी बाधा । २० भक्तिविषयक गृहत्या करनकी बिनी श्री अपका समाचार । २५ भक्तिविषयक उपदेश । २५ नमस्कार श्रीहि योगी समाप्ति ।

१२ कथाचे चन्द्रके विषयके जो पावन लेगांके लिये ठहर-
राया गया है, जैसा मैं ने गलातियाबी मंदिरियों को शान करे। हर छठबारिके पहले दिन
तुमसे हर एक मनुष्य जो कुछ उसकी सम्पत्ति में बदलती
दिए जाय लो। जिसने पास एकटा कर रखे ऐसा नहीं कि जब मैं झांख तब चन्दे उगाही जायें। 
चार जब मैं पहुंचूंगा तब जो कौई तुम्हें बची देख पड़े उन्हें
मैं चिटिया देके भेजूंगा कि तुम्हारा दान यिहशालीम-
का ले जावें। पर जो मेरा भी जाना चित होय तो
वे मेरे संग जायेंगे।

जब मैं माकिदोनियासे हाके निकल चुका तव तुम्हारे
पास झांखेंगा। वियक्ति में माकिदोनियासे हाके निकलता
हूं। पर क्या जाने तुम्हारे यहाँ तहलूंगा बरन जाइंका
समय भी कारूंगा कि तुम झिड़ते कहीं मेरा जाना होय
अर्ध मुक्का कुछ दूरलों पहुंचवाएँ। वियक्ति में तुम्हें झू
भागमें चलते चलते देखने नहीं चाहता हूं। पर झांख
रखता हूं कि यदि प्रभु ऐसा होने देवै तो कुछ दिन
तुम्हारे यहाँ ठहर झांख। परन्तु पंतिकोश्लीूं लै इश्वर
रहूंगा। वियक्ति एक बड़ा झूर कार्य पुण्य द्वार मेरे
लिये खुला है झूर भूलसे बिरोधी हैं।

यदि तिमाष्टीय झूर ता। देखो कि वह तुम्हारे यहाँ
निर्भय रहे वियक्ति जैसा में प्रभुका कार्य करता हूं। तैसा
बह भी करता है। सो कौई उसे तुक्का न जाने परन्तु
उसका कुछलासे झाग पहुंचाएँ कि वह मेरे पास झूर
वियक्ति में भाईयोंके संग उसकी वात देखता हूं। भाई
गृहीतोंके विषयमें यह है कि मैं ने उससे भूल बिन्दो
कितने कि भाइयोंके संग तुम्हारे पास जाय पर उसको इस समये जानेकी कुछ भी इच्छा न थी परन्तु जब छवसर पाएगा तब जायगा।

13 जागते रहो . विश्वसामै टूड़ रहो . पुष्पार्थ करो।
14 बलवन्त हाओ। तुम्हारे सब कर्म प्रेमसे किये जायें।
15 ईश्वर हे भाइयो। मैं तुमसे यह बिन्ती करता हूं। तुम स्तिफानके घराने को जानते हो कि अआखायका पान हो। ईश्वर उन्होंने अपने तद्व पान लेगाएं।
16 सेवकाईनेलिये ठहराया हैं। तुम ऐसीखे ईश्वर हर एक मनुष्यके ध्यान है जो सहकामरी ईश्वर परिषम करनेल।
17 हारा है। स्तिफान ईश्वर फरनात ईश्वर आाखायकी आनसे मैं आनन्दित हूं कि इन्होंने तुम्हारी घरीन।
18 पूरी किहे हैं। क्योंकि उन्होंने मेरे ईश्वर तुम्हारे मनके सुख दिया है इसलिये ऐसीखे माना।

19 आ्यायकी मंडलियांकी ईश्वर से तुम्हका नमस्कार।
20 कुला ईश्वर प्रस्फुलका ईश्वर उनके घरंसी दंडलियां।
21 तुमसे प्रभुमे बहुत बहुत नमस्कार। सब भाइ लागें।
22 तुमसे नमस्कार। ऐस दूसरीका पावन। बूमा लेके नमस्कार।
23 करो। मुफ्त पावलका अपने हाथका लिखा हुआ नम-24 स्कार। यदि कई प्रभु योशु लीघोका प्यार न करे तो
25 आविक हो। मारानाथा (अर्थात प्रभु आता है)। प्रभु
26 योशु लीघोका अनुप्रयत हुमारे संग होय। लीघो योशुमें
मेरा प्रेम तुम सभीके संग होये। आमीन।

____________________
करिन्ययोका पावल प्रेतिकी
दूरतार पत्री।

१ पहिला पत्री।

१ प्रतीका श्राम्य। इ दुःखका हरित दिये जानेका लिये ईश्वरका धन्यबाद करना।
२ ईश्वरका ब्रह्मार्वास ब्रह्म हृद देखाया ब्रह्म भी तिथिका दृष्टान्त। १२ पावलका
अपनी ईश्वर सुमन्ताकी क्रियाका भ्रमार्वा भोजा ईश्वर कारिन्यका न जानेका हेतु
बोधन करना।

पावल जै ईश्वरका इच्छासी यीशू श्रीमृत्तिका प्रेतित है ईश्वर भारी तिमाहित ईश्वरकी मंडलीका जै कारिन्यके
हैं उन सब पवित्र लोगको संग जै सारे श्राम्यका
देशमा हैं। तुझे हमारे पिता ईश्वर ईश्वर प्रभु यीशू
श्रीमृत्तिका अनुयोग ईश्वर शांति मिले।

हमारे प्रभु यीशू श्रीमृत्तिका पिता ईश्वरका जै द्याका
पिता ईश्वर समस्त शांतिका ईश्वर है धन्यबाद हो।
जै हमें हमारे सारे ईश्वरके शांति देता है इसलिये जै
हम उनके जै किसी प्रकारके ईश्वरके हैं उस शांतिसे
शांति दे सको जिस करके हम अाय ईश्वरसे शांति
पाते हैं। कैसे देखा ईश्वरके दुःख हमें बहुत होता
हैं तैसा हमारी शांति भी श्रीमृत्ति द्वारकादी बहुत होती
है। परन्तु हम यदि ईश्वर पाते तो यह तुम्हारी
शांति ईश्वरके निष्ठारके लिये है जै इन्हें दुःखों में जिन्हें
हम भी उठाते हैं स्थिर रहनेमा गुण करता है। अधिक
यदि शांति पाते हैं तो यह तुम्हारी शांति ईश्वरके निष्ठारके
लिये है। ईश्वर तुम्हारे विषयमें हमारी शाश्वा दूढ़ है।
क्योंकि जानते हैं कि तुम जैसे उस्मांड़े तैसे शांतिके भी भागी हो।

८ हे भाई जा हम नहीं चाहते हैं कि तुम हमारे उस क्रेनके विशयमें जनजान रहे जो ज्ञानियाँ ने हमको हुआ कि सामथंसे अधिक हमपर अत्यन्त भार पड़ा। यहाँ लों जिसके प्राण बचानेका भी हमें उपाय न रहा। वरन हम ज्ञान मृत्युकी झांझा झपनेमें पा चुके हैं कि हमारा भरोसा झपनपर न हो जनजान इंश्वरपर जो मृत्युका जिलाता है। उसने हमें ऐसी बड़ी मृत्युसे बचाया शैर बचाता है। उसने हमें झांझा रखी है कि वह फिर भी बचायेगा। जिसे तुम भी हमारे जिये प्राणके करके सहायता करायें जो बर्तन हुतोंसंकद्वारसे हमें मिलेगा उसके कारण बहुत लोग हमारे जिये धन्यबाद करें।

१२ क्योंकि हमारी बड़ाई यह है अधिक हमारे मनकी सास तक जगतमें पर शैर भी तुम्हारे यहां हमारा व्यव-हार इंश्वरकी यंग्की सीधाईं शैर सजाई सहित प्रार-रिक श्यानके अनुसार नहीं परन्तु इंश्वरके अनुसार अनुसार या। क्योंकि हम तुम्हारे पास शैर कुछ नहीं लिखते हैं रेवल वह जो तुम पढ़ते अथवा मानते भी।

१४ हो शैर मुखी भरोसा है कि जन्तों भी मानाने। जैसा तुमने कुछ कुछ हमारी भी माना है कि जिस रोचके प्रभु योशुकि दिनमें तुम हमारे जिये बड़ाई करनें हेतु इस उसी रोचके तुम्हारे लिये हम भी है। शैर इस भरोसे में चाहता था कि पहले तुम्हारे पास झांझ जिस्ते तुम्हें दूसरी बेर दान मिले। शैर तुम्हारे पाससे
हाँ कि माकिटोलियाको जांच श्रैर फिर माकिटोलियाको तुम्हारे पास जांच श्रैर तुम्हारे सिद्धिको श्रैर कुछ दूरलों पहुंचाया जाए। सा इतना बिचार करनेमें का १७ मैंने हलकाई किए अथवा मैं जो बिचार करता हूँ का शरीरको अनुसार बिचार करता हूँ कि मेरी बातमें हां हां श्रैर नहीं नहीं हैं। देशवर बिश्वासयोग्य साधी १८ है कि हमारा वचन जो तुमसे कहा गया हां श्री नहीं न था। किंतु इंश्वरको पुत्र यशो खोप जिसका हमारे १६ द्वारा अथवैत मेरे श्री सीलाको श्री तिमनाथको द्वारा तुम्हारे बीचमें प्रचार हुआ हां श्री नहीं न था पर उसमें हां ही था। केवल इंश्वरकी प्रतिघाण्यां जितनी हां २० उसमें हां श्रीर उसमें आमीन हैं जिस्त हमारे द्वारा इंश्वरकी माहिमा प्रगट है। श्रीर जो हमें तुम्हारे साथ २१ खोप में दूढ़ करता है श्रीर जिसने हमें भामिक किया है तो इंश्वर है। जिसने हमपर छाप भी दिखी है श्रीर २२ हम लोगांके मनमें पवित्र झामोका बयाना दिया है। परन्तु में इंश्वरको अपने प्रार्थन पार्थी बदता २३ हूँ कि मैंने तुमपर दया किंदे जो अबलों कारिन्य नहीं गया। यह नहीं कि हम तुमपर विश्वासके विषयमें २४ प्रभूताई करनेहारे हैं परन्तु तुम्हारे झानन्दके सहायक हैं किंतु तुम विश्वाससे खड़े हो।

२ दूसरा पार्श्व

१ पायलके कारिन्य न झानका कारिन्य । ११ प्रकाशकी भाषाको झमा करेका उपवेश । १२ सीतसको सुयावमें न पानके कारिन्य पायलका माकिटोनियामें झाना । १३ बुधमारामे जितनको झोलका जितनको मरबका मम्मा निलना ।
परन्तु मैंने भावने लिये तुम्हारे विषयमें यही ठहराया।
किन्तु मेरे फिर उनके पास उदास होके न जाओगा। क्योंकि जो मैं तुम्हें उदास कहूँ तो फिर मुझे आंनदित करने-हारा छीन है केवल वह जो सुकमसे उदास किया जाता है।
मैंने यही बात तुम्हारे पास इसलिये लिखी कि ज्ञानिपर मुझे उनकी शांति न हो जिनकी शांति जचित था कि मैं ज्ञानित होता क्योंकि मैं भी सम्बंधका भरोसा रखता हूँ कि मेरा ज्ञानद तुम समें।
तुम्हारे पास करने के काम मे मैं बहुत दोराया तुम्हारे पास निष्का इसलिये नहीं कि तुम्हें शोक होता पर इसलिये तुम उस प्रेमका जान लेंगे जो मैं तुम्हारी शांति अधिक करके रखता हूँ।
परन्तु जिसीने यदि शोक दिलाया है तो मुझे नहीं पर मैं बहुत भार न दें। इसलिये कहता हूँ कुछ कुछ तुम सबमें शोक दिलाया है। ऐसे जनके लिये यह तुड़ जो भाईयोंमें अधिक लगाने दिया बहुत है। इसलिये इसके बिल्कुल तुम्हें शांति कर भाई प्रेमका जान लें जो तुम्हारी शांति देना न हो कि ऐसा मनुष्य अत्यन्त घोषामं हूँ जाय। इस कारण मैं तुमसे बिन्दी करता हूँ कि उसका भाव प्रेमका प्रमाण देखो। क्योंकि मैं इस हेतुसे लिखा भी कि तुम्हारी परिश्रम लेके जानूँ कि तुम सब बातोमें ज्ञाताकारी होती है कि नहीं। जिसका तुम कुछ द्यामा करते है मैं भी द्यामा करता हूं क्योंकि मैंने की यदि कुछ द्यामा किया है तो जिसका द्यामा किया है उसका तुम्हारे कारण छोटूँ छोटूँ साधार द्यामा किया।
हे. व्यौँ शैतानका हमपर दांव न चले क्योंकि हम ११ उसकी जुगतेसे बझान नहीं हैं।

जब में श्रीरुका सुसमाचार प्रचार करनेको चोशामें १२ खाया चीर प्रमुख कामका एक द्वार मेरे लिये खुला था। तब मैंने अपने भाई तीतस्को जो नहीं पाया १३ ता मेरे मनको चैन न मिला परन्तु उसके बिदा हालि मैं माकिदानिया को गया।

परन्तु इंश्वरका धन्यवाद है जो सदा श्रीरुके १४ हमारी जग करवाता है चीर उसके ज्ञानका सुगन्ध हमारे द्वारसे हर स्थानमें पैलाता है। क्योंकि हम १५ इंश्वरका उनमें जा चाहा पाते हैं चीर उनमें भी जा नाश होते हैं श्रीरुके सुगन्ध है। इनकी हम मृत्युके १६ लिये मृत्युके गन्ध हैं पर उनकी जीवनके लिये जीवनके गन्ध हैं। चीर इस कामके योग्य कौन है। क्योंकि १७ हम उन बहुतोंकी समान नहीं है जो इंश्वरकी बचनमें मिलावट करनेहरे परन्तु जैसे सबैदेसे बोलनेहरे परन्तु जैसे इंश्वरकी चोरसे बोलनेहरे तैसे इंश्वरके सन्मुख श्रीरुकी बातें बोलते हैं।

३ तीसरा पर्व।

१ कारिन्मीच संहतीका प्रेरितीको प्रदीको प्रमाण ब्राह्मा। ४ प्रेरितीको गर्दिका द्वारको ध्वनि रात्रि होनाय। ६ वृहदको क्षयकृती गुरुषारको चेतु ब्राह्मा। १२ सुसमाचारका द्वारा बारके प्रयोग रात्रि ब्राह्मा।

क्या हम फिर अपनी प्रशंसा खरने लगे हैं अथवा १ जैसा कितनोंमा तैसा क्या हमेंका भी प्रशंसा को परिहार तुम्हारे पास लानेको अथवा तुम्हारे पाससे ले जानेका प्रयोजन है। तुम हमारी पत्ती हो जो हमारे हृदयमें २
यह नहीं कि हम जैसे अपनी चीज़ों के किसी बातची किसी बिार खाप्से करने के याग्य हैं परन्तु हमारी योग्यता
$\text{8}$. यह नहीं कि हम जैसे मृत्यु की सेवकाई का लेखने थे उसे सेवक होने के
$\text{9}$. क्या खाप्से लेखने के सेवक के पद्धति धर्मों जैसे सेवकाई के बारे में उसे लेख
$\text{10}$. क्या नदी हंगामी सेवकाई जैसे अच्छी सेवकाई एक तेज थी तो
$\text{11}$. क्या वह वह जैसे जैसे हानिचक्र था जैसे जो बना रहेगा तेजपीमं या
$\text{12}$. से ऐसी ज्ञाता रखने से हम बहुत बोलके बात करते
$\text{13}$. हैं . चीज ऐसे जैसा मूल से अपने मुंह पर परदा
हालता या कि इससे येने नस्तान दस लाय लाई विषयक संघ प्रति दूपुर न चार। बरन उनकी बुद्धि मन्द हुई १४ वियांकि जातियां पुरुषे नियमके तड़के वही परदा पड़ा रहता है चार नहीं खुलता है कि वह ब्रीम्हों लाए लिया जाता है। पर जातियां जब मसाका पुस्तक पढ़ा जाता १५ है उनकी हट्यपर परदा पड़ा है। पर्यानुज यह प्रभुकी १६ चार फिरेगा तब वह परदा उठाया जायगा। प्रभु तो १७ आत्मा है चार जहां प्रभुका आत्मा है तहां निर्वर्वन्धता है। चार हम सब उपादें मुह प्रभुका तेज जैसी दर्पणमें १८ देखते हुए माना प्रभु अर्घत आत्माके गुणसे तेजपर तेज प्राप्त कर उसी रूपमें बदलते जाते हैं।

४ चालक पछ।

१ प्रेमिकों निर्जानका बर्दन चार सुभाषारको जितनेसे गुप्त रहनेका कारण।

८ प्रेमितका नाना प्रकारका ब्रोट उठाना। १२ पीके मद सुसा पानकी दाला रखना।

इस कारण जब कि उस दरम्यान भनुमार जो हमपर चिकिए गई यह सेवकाई हमें मिली है हम कारे नहीं होते हैं। पर लजाके गुप्तके कामें त्यागके न चतुराईसे चलने हैं न ईश्वरके बचनमें मिलायें करते हैं परन्तु सत्यके प्रसार करनेसे हर एक मनुष्यके विश्वका ईश्वरके आगे अपने विश्वमें प्रभाव देते हैं। पर हमारा सुभाषारकं यदि गुप्त भी है तो उन्हें सुभाषारकं गुप्त है जो नाश होते हैं। जिनकों देख पड़ता है कि इस संसारके ईश्वरके आविष्कारियोंके बुपूर्द्र चार इसी ही कि ब्रीम्हों जो ईश्वरके प्रतिमा है तिसके तेजके सुभाषारकी ज्योति उनपर प्रकाश न आय। कियांकि हम अपनेकी नहीं परमु ब्रीम्ह ५
यीशुका प्रभु करके प्रचार करते हैं छाई ज्ञानके।
वे यीशुके कारण तुम्हारे दास बनते हैं। क्योंकि ईश्वर जिसने आज्ञा किंद्री कि अन्धकारमें ज्योति चमके वही है जो हम लोगोंके हृदयमें चमका कि ईश्वरका जो तेज यीशु खोजके मुंहपर है उस तेजके ज्ञानकी ज्योति प्रकाश हो।

9. परन्तु यह सम्पति हमें मिट्टीके बर्तनोंमें मिली है कि सामर्थ्यकी अधिकाई ईश्वरकी ठहरे छाई हमारी
8. जोरसे नहीं। हम सर्वभूता क्षेत्र पाते हैं पर सबकेमें नहीं हैं। दुखधारे हैं पर निर्हाय पाते हैं। सताये जाते हैं पर त्यागे नहीं जाते। गिराये जाते हैं पर नाजुक।
7. नहीं होते। हम नित्य प्रभु यीशुका मरण देहमें लिये फिरते हैं कि यीशुका जीवन भी हमारे देहमें प्रगट।
6. किया जाय। क्योंकि हम जो जीते हैं तदा यीशुके कारण मृत्यु भोगनेकी सम्पे जाते हैं कि यीशुका जीवन भी।
5. हमारे मरनहार शरीरमें प्रगट किया जाय। ते मृत्यु हमें परन्तु जीवन तुम्हारोंमें कार्य करता है।

4. परन्तु बिश्वासका वही ज्ञात्मा जैसा लिखा है मिने बिश्वास किया इसलिये बोला जब कि हमें मिला है हम भी बिश्वास करते हैं इसलिये बोलते भी हैं।
3. क्योंकि जानते हैं कि जिसने प्रभु यीशुका जिला उठाया सा हमें भी यीशुके द्वारा जिलाके तुम्हारे संग ज्ञाने।
2. ज्ञाने खड़ा करेगा। क्योंकि सब कुछ तुम्हारे लिये है जिसने अनुयाय बहुत ही कोई ईश्वरको महिमाके लिये।
1. बहुत लोगोंके पन्थबादके हृदये बढ़ता जाय। इसलिये
हम कार्य नहीं होते हैं परन्तु जो हमारा बाहरी 
मनुष्यत्व नाश भी होता है तैमी भीतरी मनुष्यत्व 
दिनपर दिन नया होता जाता है। क्योंकि हमारे १५ 
प्रेमका खुश मरका हलका बांध हमारे लिये महिमाका 
भावना भाव अभिक्षु अभिक करके उत्पन्न करता है। 
क्यों हम तो उदाह्र विषयेंकी नहीं परन्तु उदाह्र विषयेंका १८ 
देखा करते हैं क्योंकि उदाह्र विषय आन्तित्व है परन्तु 
उदाह्र विषय नित्य है।

पांचवाँ पढ़े।

१ प्रभु सुकी भान्ता रखनेसे प्रतिष्ठी शोध। २ विद्वानको विनको वचना 
करनेसे तनको प्रख्यात। १५ ध्वन्नी प्रेममे कारण उनका अपने तने उनकी 
वेदान्तो लिये भीषे देना। १८ लिखको सुसमाचारका व्याख्या।

हम जानते हैं कि जो हमारा पृथकीपरका डेरासा 
बार गिराया जाय ता उससे ही भवन हुमें मिला है 
जो बिन हायका बनाया हुआ नित्यस्या घर स्वर्गसे 
है। क्योंकि इस डेरेमें हम कहरते भी हैं श्वार अपना 
बह बासा जो स्वर्गसे है ऊपरसे पहिलनेकी लालसा 
करते हैं। जो ऐसाही ठहरे कि पहिने हुए हम नंगे नहीं 
पाये जायेंगे। हां हम जो इस डेरेमें ही बोधसे दबे हुए 
कहरते हैं क्योंकि हम उतारनेकी नहीं परन्तु ऊपरसे 
पहिलनेकी उच्च करते हैं कि जीवनसे यह मरनहार 
निमित जाय। श्वार जिससे हमें इसी बातको लिये तैयार 
किया है तो उदाहर है जिससे हमें पवित्र आत्माका 
बयाना भी दिया है। सो हम सदा बांध सांभते हैं श्वार 
यह जानते हैं कि जबलां देहमें रहते हैं तबलां प्रभुसे
6 जलग होते हैं। क्योंकि हम रुप देखने से नहीं परन्तु विषाणुस से चलते हैं। इसलिये हम साहस करते हैं। जो यही अधिक चाहते हैं कि उन्हें जलग होकर प्रभुके संग रहें।

8 इस कारण हम चाहें संग रहते हुए चाहें जलग होते हैं। हुए उसकी प्रसन्नता योग्य होनेकी वेप्पा करते हैं। क्योंकि हम सभीका खीरुकी बिचार ज्ञानकी आगे प्रगत किया जाना अवश्य है जिसे हर एक जन का बला काम का बुझा जा बुझ किया हो। उसके अनुसार दूसरे द्वारा लिये हुएका फल पाए। सो प्रभुके मानके हम मनुष्योंकी समक्षते हैं। पर ईश्वरके साथ हम प्रगत होते हैं। जो नहीं परलोक परस्तु तुमके विषयमें बड़ाई करनेका कारण देते हैं। कि जो लोग हृदयपर नहीं परलोक रूपपर घमंड करते हैं उनके बिन्दु बड़ाई करनेकी जगह तुमके हैं। यदि हम बेसुध हों। ता ईश्वरके लिये बेसुध हैं। चाहें सुबुध हैं। ता तुम्हारे निमित में लिये सुबुध हैं।

12 खीरुकी प्रेम हमें बश दर लेता है। क्योंकि हमने यह बिचार किया कि यदि सभीके लिये एक मरा ता वे सब मृत्यु। जो यह सभीके लिये इस कारण मरा कि जो जीवित हैं। सो जब अपने लिये न जीविं परलोक उसके लिये।

13 जो उनके निमित मरा क्षेत्र जी उठा। सो हम एकसे किसीका शरीरके अनुसार करके नहीं समक्षते हैं। क्षेत्र यदि हम खीरुकी। शरीरके अनुसार करके समक्षते भी हों नहीं।
तत्त्वभी जब उसको नहीं ऐसा समझते हैं। सो यदि १६ कादेखी ख्रिश्चुमें हाय ता नई सृष्टि है। पिछली बातें दीक्ष गई हैं देखो जब बातें नई हुई हैं।

श्रीर सब बातें इश्वरकी श्रीरहें हैं जिसने यीशु ख्रिश्चु १८ 
द्वारा हमें अपने साध संभाला लिया श्रीर मिलापकी 
संवकाई हमें दिया। अर्थात कि इश्वर जगतके लोगोंके १८ 
अपराध उनपर न लगाके ख्रिस्तमें जगतके अपने साध 
मिला लेता या श्रीर मिलापका बचन हमेंकी संघ 
दिया। सो हम ख्रिस्तकी सन्ती दूत है मानो इश्वर २० 
हमारे द्वारा उपदेश करता है। हम ख्रिस्तकी सन्ती 
बिन्दी करते हैं इश्वरसे मिलाये जाती। क्योंकि जो २१ 
पापसे अनन्त या उसको उसने हमारे लिये पाप 
बनाया कि उसमें हम इश्वरकी धर्मी बनें।

६ ुठावा पढ़े।

१ प्रतितंत्रका उँ ख्म भेंगना और उनका रिमाय और भर्तीकार। ११ पापी और 
श्रीरविश्वासी लोगोंकी संस्करे बला रहनेका उपदेश।

सो हम जो सहकम्मी हैं उपदेश करते हैं कि इश्वरके 
ख्रिस्तकी बृहा यह न करो। क्योंकि वह कहता है 
मने शुभ कालमें तेरी सुनी श्रीर निस्तरकी दिनमें तेरा 
उपकार किया। देखो जब वह शुभ काल है देखो जब 
वह निस्तरकी दिन है। हम किसी बातसे कुछ ठोकर 
नहीं खिलाते हैं कि इस सेवकाइपर टाप न लगाया 
जाय। परंतु जैसे इश्वरके सेवक तैते हर बातसे अपने 
लिये प्रमाण देते हैं अर्थात बहुत पोरतासे ख्रिश्चोंमें दरित्र- 
दत्तामें संकरोंमें। मार खानैमें बन्दीगृहांमें हुकुमोंमें परित।
ह समाने साधारण रहने से अध्यात्मिक लक्ष्य से दूर रहने से अध्यात्मिक लक्ष्य से दूर रहने से
7. सत्य के बचने के इश्वर के सामान्य से दूर ही जा जाये धर्म में
8. हस्तियार से आदर जैसा निराशर से आप के जैसा सुकूर्त
9. कि भरमानेहरार के ऐसे हैं तैमी सब हैं। अजजाने
10. हुल्ले ऐसे हैं तैमी जाने जाते हैं मरते हुल्ले ऐसे हैं
11. जीवते हैं ताड़ना किये हुल्ले ऐसे हैं जीवते हैं
12. घाट नहीं किये जाते हैं। उदासीने ऐसे हैं परन्तु सदा
13. जीवन करते हैं कंगालों के ऐसे हैं परन्तु बहुतों का धन-
14. वान करते हैं ऐसे हैं जैसा हमारे पास कुछ नहीं है
15. तैमी सब कुछ रखते हैं।
16. है करिन्त्यो हमारा सुन हुमारी जीव खुला है
17. हमारा हृदय विस्तारित हुआ है। तुम्हें हमीं सकेता
18. नहीं है परन्तु तुम्हारेहरु अन्य करण में तुम्हें सकेता है।
19. पर में तुमको जैसा अपने लड़कों को इसका वैसाही बद-
20. जा बताएं हूं कि तुम भी विस्तारित होजो। मत
21. अविश्वासियों के संग अन्य मान सूजन्त नुजत जाँचो कींगि
22. प्रमा जीव अधमत का भाव सामा है जीव अन्धकार-
23. के साथ ज्योतिकी जीव संगति। जीव विजयने के संग
24. खोटी की जीव सम्मान है भयावा अविश्वासी के साथ
25. विश्वासी का भाव। जीव मुर्ति ग्रंथ इंश्वर के
26. मंदिर का जीवन समान्य है कींगि तुम ता जीवते
27. इंश्वर के मंदिर है जैसा इंश्वर जाने कहा में उनमें बसू-
28. गा जीव उनमें फिरंगी जीव में उनका इंश्वर होगा
29. जीव रे मे लोग होंगे। इसलिये परमेश्वर कहता
है उनके बीचमें निकलो शीर हार स्वतंत्र होँगा शीर श्यामुद्य बस्तको मत छोड़ो तो मैं तुम्हें यहाँ कहनगा। शीर मैं तुमहारा पिता हूँ गा शीर तुम मेरे पुत्र शीर १८ पुत्रिया हूँगे सब्जेक्शनमान परमेश्वर कहता है।

० सातवां पढ़े।

१ उपरको उपवेशको समाप्ती । २ कार्निक्यको पालको प्रेमको सम्बन्ध । ३ वचन तीसरको हुरारांग शान्ति प्राप्त करना । ४ वचनको पहली पत्रीका प्रलय । १५ वचनका उनको विवेकम शान्ति करना।

सा है प्यारो जब फिर यह प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं। ब्रजोहर हम अपने का शरीर शीर ज्ञानमान का सब मालिकतासे शुद्ध करें शीर इंद्रि रका भय रखते हुए सम्पूर्ण पवित्रताको प्राप्त करें।

हमें यहाँ करें हमने न ज्ञान से अनाय फिर न किसीको बिगाड़ा न किसीको टहला। मैं उदाहरणो कहता हूँ की मैं चेतने चाहते कहा है अति तुम हमारे मनमें है। ऐसा कि हम तुमहारे संग नहीं शीर तुमहारे संग जीनेका तैयार हैं। तुमहारी, शीर मेरा साहस बहुत है तुमहारी विषयमें मुफ्त बड़हाई करनेका जगह बहुत है हमारे सब लोकाके विषयमें मैं शांति भर गया हूँ। शीर अधिकसे अधिक शान्ति करता हूँ।

की मैं जब हम मानित निर्माणमें जायें तब भी हमारे शरीरका कुछ चैन नहीं मिला पर हम समस्त प्रकारसे लोक पते थे। बाहरसे युद्ध भीतरसे भय था। परनतु की दोनोंका ज्ञान देनेहारी अर्थात ईश्वरने तीतसे ज्ञाने-बेहमेंका ज्ञाति दिये। शीर केवल उसके ज्ञानसे नहीं पर।
उस शांतिसे भी जिस करके उसने तुम्हारी लाजसा जी तुम्हारे बिलाय जी मेरे जिये तुम्हारे अनुरागका समाचार हमसे कहते हुए तुम्हारे विपश्यमे शांति पाई यहांलां कि मैं श्राधिक शान्तिन्द्र हुँ।

क्योंकि जो मैंने उस पत्रीसे तुम्हें शोष दिलाया तौ-भी मैं यदापि पढ़तात था तब नहीं पढ़ताता हूँ। मैं देखता हूँ कि उस पत्रीसे यदि केवल थीडी बेल्लों तौभी
7 तुम्हें शोष तो दिलाया। अभी मैं अनन्द भरता हूँ
इसलिए नहीं कि तुमने शोषाक जिया परलु इसलिए कि शोषा करनेसे प्रभावता जिया क्योंकि तुम्हारा शोषा
8 इंश्वरकी इच्छाके अनुसार या जिस्ते तुम्हें हमारी शोष-
9 से किसी बातमें हानि न है। क्योंकि जो शोषा
इंश्वरकी इच्छाके अनुसार हैउससे वह प्रभावता उत्पन्न होता है जिस करके चार है शोषा जिससे विशेष कि उठी पढ़ताता है। परलु संसारके शोषके मृठ उत्पन्न होती
10 है। क्योंकि अपना यही इंश्वरकी इच्छाके अनुसार
शोष दिलाया जाना देखा कि उससे जितना यद हां
उत्तर देनेकी जितनी चिन्ता हां जितनी रिस हां जितना
भय हां जितनी लाभसा हां जितना अनुराग हां दंड
देनेका जितना विचार तुम्हें उत्पन्न हुँ। जिमने
11 समस्त प्रकारसे अपने लिये इस बातमें निद्राइश होनेका
12 प्रमाण दिया है। सो मैंने जो तुम्हारे पास लिखा
तौभी न तौ उसके कारण लिखा जिसका अधिक
किया न उसके कारण जिसका अधिक किया गया
परलु इस कारण कि हमारे लिये जो तुम्हारा
बहुत है से तुम्हारे में इंतजर के सच्चा प्रगट किया जाय।

इस कारणसे हमने तुम्हारी शांति पाई। जीव बहुत अधिक करके तीतसे ज्ञानसे जीव भी ज्ञानन्दित हुए क्योंकि उसकी मनका तुम सभी की जीवारे तुम दिया गया है। क्योंकि यदि में उसके ज्ञाने तुम्हारे विषयमें कुछ बड़ाई फिर तो लाजित नहीं किया गया हूँ। परन्तु जैसा हमने तुम्से सब बातें सच्चाईं कहती तैसा हमारा तीतसे ज्ञाने बड़ाई करना भी सत्य हुआ है। जीव वह जो तुम सभी की ज्ञानापालनके स्मरण करता है कि तुमने क्योंकि गर्दने जीव अम्बरे हुए उसकी यह यह। किया तो बहुत अधिक करके तुम्पर रेह करता है। में ज्ञानस करता हूँ जिस क्योंकि सम्भव सम्बल लक्षारे स्वाभाविक बन्धता है।

8 शायद पवने।

1 कंवाल भाष्यांको सहायता करके विषयमें मार्कोरोरांको मछलियांका बखान। 9 इसके विषयमें कारिनिद्वेगांका उपदेश जीव ठाड़ुड़ देना। 18 जी शायद अदेश चित्ते के रूपांतर संज्ञा थे उनकी प्रशंसा।

हे भाइया हम तुम्हे इंदिरवरका वह अनुयाय जनातिहै। 1 जी मार्कोरोरांकी मछलियांमें दिया गया है कि 2 श्रेष्ठकी बड़ी परीशामें उनकी ज्ञानन्दकी अधिकाई जीव उनकी महा दरिद्रता इन दोमांकी बड़ा जानिए उनकी उदारताका धन प्रगट हुआ। क्योंकि में साश्वी दिया हूँ 3 कि वे अपने सामर्थ भर जीव सामर्थ्यमें अधिक झापहोंसे तैयार थे। जीव हमे बहुत मनकी बिन्दी करते थे 4 कि हम उस दानकी जीव परिवर लेगौंकी लिये जो सेव-
5 काईं तिसकी संगतिकी यहंश बारें । शीर जैसा हमने
धाशा रखी थी तेसा नहीं परन्तु उन्हाँने अपने तद्व
धाः वरकी इखासे हमांहीं दिया ।
6 यहाँंगैं कि हमने तीतसं खिंती किंदै कि जैसा उसने
काबा श्यारंभ किया था तेसा तुम्हारमें इस अनुया्यकी
क्रमंकौ समाप भी कर ले ।
7 परन्तु जैसे हर एक बातमें अर्धाव बिश्वासमें शीर
बचनमें शी ज्ञानमें शी सारेय हलमें शी हमारी शीर
तुम्हारे प्रेममें तुम्हारी बढ़ती होती है तैसे इस अनुयाव
8 के क्रममें भी तुम्हारी बढ़ती है । मैं श्यानको रीतिपर
नहीं परन्तु शीराँधंशी यह करनके कारण शीर तुम्हारे
9 प्रेमगो सस्काेनकी परबनके लिये कहता हूं । क्योंकि तुम
हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्तका अनुयाव जानते है कि वह जी
भानी तो तुम्हारे कारण दौरान हुआ जिसकी दौरान-
10 ताके द्वारा तुम धनी होका । शीर इस बातमें मैं परामर्श
देता हूं क्योंकि यह तुम्हारे लिये अस्त नहीं । तो तुम
दृश्यको शीरे करनके नहीं परन्तु चाहनेका भी शारंभ
11 भागसी कर चुकी । सी शाब करनेकी भी समापि कररा जि
कि जैसा चाहनेका तुम्हारे मनकी तैयारी थी वैसा तुम्हारी
सम्पत्रकी समान तुम्हारा समापि करना भी होके ।
12 क्योंकि यदि भागसी मनकी तैयारी होती है तो शी
जिसके पास नहीं है उसके अनुमाव नहीं परन्तु जो
13 जिसके पास है उसके अनुमाव वह याहस है । यह इस-
लिये नहीं है कि शीराँको चैन शीर तुम्हारी खेश मिले ।
14 परन्तु समतासे इस वर्तमान समयमें तुम्हारी बढ़ती
उन्होंने की घटती में काम का आत्मा इसलिये कि उनकी बढ़ती भी तुम्हारी घटती में काम का आत्मा जिसके समता है। जैसा लिखा है कि जिसने बहुत संचय किया उस- १५ का कुछ उभरा नहीं ढीर जिसने ढीरा संचय किया उसका कुछ घरा नहीं।

ढीर इतना धन्यबाद है जो तुम्हारे लिये वही २६ वह कि उसने वह बिन्दु १० उस यह तीतके हृदय में देता है कि उसने वह बिन्दु २० भावना जिन्हे बरन वात यथावत होके वह अपनी इच्छाए तुम्हारे पास गया है। ढीर हमने उसके संग उस १८ भाई के भेजा है जिसकी प्रशंसा सुसमाचारके विषय में सब मंडलियों में होती है। ढीर केवल इतना नहीं १५ परम्परा वह मंडलियों में ठहराया भी गया कि इस अनुयाह के कामों के लिये जिसकी सेवकाई हमसे बिन्दु जाती है हमारे साथ बिन्दु जिसके प्रभुकी महिमा ढीर तुम्हारे मनकी तैयारी प्रगत बिन्दु जाते हैं। हम इस बातम प्रै- २० क्षति देते हैं कि इस आधिकारिकों विषय में जिसकी सेवकाई हमसे बिन्दु जाती है बाइंदु हमपर देख न लगावे। क्योंकि जो बातें केवल प्रभुकी भावना नहीं परम्परा २१ मनुष्यों के भावना भी महत्व है हम उनकी चिंता करते हैं। ढीर हमने उसके साथ बाहर प्रभुकी भाई के हैं जिसकी २२ हमने बारंबार बहुत बातों में परम्परा यथावत पाया है यह अब तुम्हारे जो बढ़ा भरोसा है उसकी कारण बहुत आधिक यथावत पाया है। यदि तीतके पूछी २३ जाय तो। वह मेरा साथी ढीर तुम्हारे लिये सहकारमै है चथा हमारे भाई लेग हैं तो वे मंडलियों के दूत।
24 श्रीर लोकदीन की महिमा हैं। तो उन्हें मंडलियोंके समुख ऋणने प्रेमका श्रीर तुम्हारे विषयमें हमारे बड़ाई खरेनका प्रमाण दिखायें।

5 नवां प्रबंध।

1 चन्द्रिको विषयमें भाषायको मेलेनका श्रावमण्य । इ चंद्रिकके ग्रहण श्रीर भर्डी कृपाजे हेतु श्रेर इस चन्द्रिकके फलके हेतु श्रारिनन्यको तेरेको विचाराः।

2 परिवर्तनो लोकाने लिये जो सेवकाई तिलोकी विषयमें तुम्हारे पास लिखना मुखी ऋणमण्य नहीं है। कोंकेहूं तुम्हारे मनकी तैयारकी जानता हूं जिसकी लिये मैं तुम्हारे विषयमें माकिदाको जागे बड़ाई करता हूं यदि ऋणारोंको लग बरस दिनसे तैयार हुए हैं श्रीर तुम्हारे ऋणारोंको बहुताने हिस्सा दिलाया है। परन्तु मैंने भाष्यको इसान पर भेजा हैं यदि तुम्हारे विषयमें जो हमने बड़ाई किर्दही है सो इस बातमें वचन्य न ठहरे ज्ञात कि जैसा मैंने कहा तैसे तुम तैयार हो रहे।

3 ऐसा न हो यदि कोई माकिदानी लग मेरे संग जाकी तुम्हें तैयार न पावें तो क्या जानें इस निम्नेय बड़ाई करनेमें हम न कहें तुम लाजित होएगी पर हममैं लाजित होंगे। इसान मैंने भाष्यको पद्धति करना ऋणमण्य समका यदि वे खासगी तुम्हारे पास जावें श्रीर तुम्हारे उदारताका फल जिसका संदेश खास दिया गया था खासगी सिूट करें कि यह लोभके नहीं परन्तु उदारताके फलके ऐसा तैयार हावे।

4 परन्तु यह हैं कि जो छुदतासे बैठता हैं सो छुदतासे लावेगी भी श्रीर जो उदारतासे बैठता हैं सो उदारतासे
लबेगा भी। हर एक जन जैसा मनमें ढाने तैसा दान करे ६ 
कुठ ाँ दकाले ऋषवा दबावसे न दैव कोईंक इंशवर हरपसे 
देनहरीकी प्यार करता है। शीर इंशवर सब प्रकारका ८ 
अनुजय तुम्हें अधिकाईसे दे सकता है जिसत हर बातमें 
शीर हर समयमें सब कुठ जा ऋषवय हैय तुम्हारे पास 
रहे शीर तुम्हें हर एक ऋषवी कामके लिये बहुत सामर्थ 
हैय। जैसा लिखा है उसने बियराया उसमे कोगालांकी 
दिया उसका धम्मे सदालों रहता है। जो बोनेरीको १० 
बीज शीर भेजनके लिये राते देनहरी है से तुम्हें देबे 
शीर तुम्हारा बीज फलवत करे शीर तुम्हारे धम्मेके 
फलोंकी अधिक करे। कि तुम हर बातमें सब प्रकार- ११ 
की उदारताके लिये जो हमारे द्वारा इंशवरका धन्य 
वाद करवाती है धनवान लिये जावा। कोंक इस १२ 
उपकारकी सेवकाई न केवल पाविच लागाकी घटियांकी 
पूरी करती है परन्तु इंशवरके बहुत धनवादके द्वारा 
उभरती भी है। कोंक वे इस सेवकाईसे प्रमाण लेके १३ 
तुम जो स्त्रीकृ के सुसमाचारके अधीन हानिका संगी- 
कार करते हो उस अधीनताके लिये शीर उनकी 
शीर समेंकी सहायता करतेमें तुम्हारी उदारताके 
लिये इंशवरका गुणानुपात करते हैं। शीर इंशवरका १४ 
सर्व्यत अनुजय जो तुमपर है उसकी कारण तुम्हारी 
लालसा करते हुए तुम्हारे लिये प्रार्थना करनेस भी 
इंशवरकी महिमा प्रगट करते हैं। इंशवरका उसके १५ 
ऋकथय दानके लिये धन्यवाद हैवे।
10 दसवां पढ़े।

1 पावलका श्रपने पदका और भारितसिं युद्धका वर्णन करना। 9 विरोधियोंको समाहण। 12 शब्दाने परिवर्तको बदला जाना।

9 मैं यही पावल हो तुम्हारे साम्र तुम्हारे तीन हुं परन्तु तुम्हारे पीछे तुम्हारे जो तास करता हूं तुमसे खोजको नमता जो अंगातको कारण बिन्दी करता
2 हूं। मैं यह बिन्दी कारता हूं कि तुम्हारे साम्र मुख्य उस दूर्हाते साहम करना न पड़े जिसमें जितने, जो हमारे संघर्षको अनुसार चलने हार समक्ष हैं साहस
3 करनेका बिचार कारता हूं। क्योंकि यदापि हम संघर्षमें चलते फिरते हैं ताभी संघर्षको अनुसार नहीं लड़ते
4 हैं। क्योंकि हमारे युद्धके हथियार शारीरिक नहीं परन्तु
5 गढ़ाका ठोड़े लिये इंशवरके कारण सामर्थ्य हैं। हम
tकरीका जो हर एक जंघी बातका हो इंशवरके ज्ञानके बिस्तर उठती है खेड़न करते हैं जो हर एक भावाका
खोजकी आज्ञाकारी करनेके लिये बन्दी कर लेते हैं।
6 जो हर तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञाकार जूते है। जाय तब हर एक आज्ञामनका दंड दें।
7 क्या तुम जो बड़ा सम्बद्ध है उसका देखते है।
8 यदि कार्य श्रपनेमें भरोसा रखता है कि वह खोजकी
है तो आपकी हिंसा यह समके वह खोजकी
8 हैं। तैयार हम लोग भी खोजके हैं। क्योंकि हमारे
उस शास्त्रके विषयमें जिसे प्रभुने तुम्हें नाश करनेके
लिये नहीं परन्तु सुधारनेके लिये हमसे दिया है बड़ा
शास्त्रक करने भी बड़ाई वालु ता लाजित न होगा।
पर यह न होवे कि मैं ऐसा देख पड़े कि तुम्हें पति यां हराता हूँ। क्या कि वह कहता है उसकी पति यां तो १० भारी श्री प्रबल हैं परन्तु साध्वाते उसका तेह दुनिया श्रीर उसका बचन तुच्छ है। ऐसा मतः यह सभी ११ कि हम लोग तुम्हारे पीछे पति यां की द्वारा बचने के जैसे है तुम्हारे साम्राज्य भी कर्मसँग वैसी होंगे।

क्या कि हमें साहस नहीं है कि जो लोग अपनी १२ प्रशंसा करते हैं उनमें से कितनांक संग अपने किए गिने अस्थाय अपने किये उनमें मिलाके देखें परन्तु वे अपने किये अपने से आप नापते हुए श्रीर अपने किये अपने से मिलाके देखते हुए जान प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा
जो अपनी प्रशंसा करता है वह नहीं परन्तु जिसकी प्रशंसा प्रभु करता है वही ग़हस योग्य ठहरता है।

11 एग्यारह्वा पढ़े।

1 पायलके अपना बस्तान करनेका शब्द । 2 कारिनियोंके कुछ शब्दवे न संज्ञेका कार्य । 18 मूर्ति प्रितिलोका धर्मन । 16 पायलके बढ़ाई करनेकी भावायकताका दर्शन । 22 विलायती ज्ञानके विवरण में शांत हूँ हूँ शांत हूँ तुम्हें दुःख से तुम्हें दुःख तुम्हें दुःख करना।

2 में चाहता हूं कि तुम मेरी भजानतामें थोड़ा सा भौ लेते । हां मेरे सह मेरी भी लेती। क्योंकि मैं इशारके लिये तुम्हारे विवरण में धुन लगाये रहता हूं।

3 परन्तु में दरता हूं कि जैसे सांपने अपनी चतुराइसिसे हवाणी उगा रहती तुम्हारे मन उस सीघातसे जो खोज़ को शांत है ख़ानी भौ न कर दिये जाये। यदि वह जैसे तुम्हारे पास आता है दूसरे योगका प्राचार करता है जिसे हमने प्राचार नहीं किया शर्मा शांत आता तुम्हें मिलता है जो तुम्हें नहीं मिला था शर्मा शांत सुसमाचार।

4 तथा समझता हूं कि मैं किसी बात में उन सट्टाला बड़े प्रतिष्ठिते घट नहीं हूं। यदि मैं बचने में अनाही हूं तो भाई ज्ञान में नहीं परन्तु हम हर बात में सभी हो बारे तुम्पर प्रगट किये गये।

5 में जो अपनेका नीचा करता या कि तुम उंची फिये जावा का इसमें मैंने पाप किया । क्योंकि मैंने सत्मेत दीशरका सुसमाचार तुम्हें सुनाया। मैंने शांत मंडलियां-
क्षी लूट लिया जितुम्हारी सेवाको लिये मैंने उनसे मजुरी लिये। शॉर जब मैं तुम्हारे संग था शॉर मुझे घटी \[५\] हुई तब मैंने बिसोपर भार नहीं दिया क्योंकि भाइयों-ने मानियातियाती बाके मेरी घटना पूरी किये शॉर मैंने सबवा अपनका तुम्हारे भार हि नसी बचा रखा शॉर बचा रखा। जी लीयोकी श्राव श्राहम है तो \[१०\] मेरे विशयम यह बड़ाई श्राह दृश्म मैं नहीं बन्द किये जायगी। किस कारण क्या इसलिये कि मैं \[११\] तब मेरे यार नहीं करता हूँ। \[१२\] देशबर जानता है, पर \[१२\] में जा करता हूँ सोई ककसं। क्या शॉए दांव दूंदते हैं उन्हें मैं दांव पाने न देंगे कि किसे बातमे वे घामड़ करते हैं उसमे वे हमारी समान ठहरे।

क्योंकि ऐसे लोग फूटे प्रिट हैं चलका कायम करने- \[१३\] हारे लीयोकी प्रिताका रूप घरसिहारे। शॉर यह कुछ \[१४\] धर्मभीमे बात नहीं क्योंकि शैतान श्राय भी ज्योतिके दृश्म का रूप घरता है। तो यदि उसकी सेवाका भी घरमे- \[१५\] के सेवाकोशाका रूप घरने तथा कुछ बड़ी बात नहीं है। पर उनका ज्ञान उनके कर्माने श्रानुसार होगा।

मे फिर कहता हूँ शॉए मुखे मूखे न समके शॉर नहीं \[१६\] तो यदि मूखे जानके तैभी मुखे पहाड़ की। नोडालय भी मे भी बड़ाई कहते। में जा बोलता हूँ उसकी प्रभुकी \[१७\] नामालय श्रानुसार नहीं रचनमै इस निष्मण बड़ाई करने मैं श्राके मूखाते बोलता हूँ। जब कि बहुत लोग शरीरके \[१८\] श्रानुसार बड़ाई करते हैं मे भी बड़ाई कहता। तुम तो \[१८\] बुद्धिमान है श्रानुसार मूखाकी सह लेते है। क्योंकि \[२०\]
यदि कोई तुझे दास बनाता है यदि कोई खा जाता है
यदि कोई ले लेता है यदि कोई अपना बढ़ापन करता
है यदि कोई तुम्हारे मुंहपर चपेट भारता है तो तुम
21 सह लेते है। इस अनादरकी रीतिपर मैं कहता हूं
माना कि हम तुम्हें नहीं ले जाते मैं कोई साहस
करता है मैं मेरे साथ मैं कहता हूं मैं भी साहस बारता हूं।
22 क्या वे इतनी लोग हैं। मैं भी हूं। क्या वे इसी समय
हैं। मैं भी हूं। क्या वे इतनी लोग हैं। मैं भी हूं।
23 क्या वे खूपके सेवक हैं। मैं वृद्धासनसे बोलता हूं
उनसे बड़कर मैं बहुत अधिक परिश्रम करनेसे श्री
अत्यन्त मार खानेसे श्री बन्दीगुहमें बहुत अधिक पड़नेके
देश मृत्युमें बादशाह पहुँचनेसे खूपके सेवक ठहरा।
24 पांच बार मैंने द्वितीयांको हापसे उन्नलोक्स उन्नतालीस
25 कोई खाये। तीन बार मैंने बैठ खाई एक बार पत्तर-
बाह किया। तीन बार जहाँ जिनपर मैं चढ़ा था।
26 दूसर गये एक रात दिन मैंने समुद्रके काटा। नदियांको
अनेक जालियां बांधकू आकू जालियां अनेक जालियां आपने लगायें
अनेक जालियां जालियां जालियां जालियां अनेक जालियां नगरमें
अनेक जालियां जालियां जालियां अनेक जालियां समुद्रमें अनेक
जालियां जालियां जालियां के मायाओं को भारतके अनेक जालियां
20 सहित बार बार याता करनेसे। श्रीर परिश्रम श्री
लोग बार बार जागते रहनेसे भूख श्री वातावरण बार
बार उपवास करनेसे जाड़े श्री नगाइरों में खूपके सेवक
28 ठहरा। श्रीर श्रीर बातके श्रीर बातके यह भीड़ श्री प्रति-
दिन मुखपर पड़ती है अथातः सब सदाभिषेकोंकी चिन्ता।
बीन दुब्बल है बीर में दुब्बल नहीं हूँ। बीन दंकर दूस खाता है बीर में नहीं जलता हूँ। यदि बड़ाई करना 30 नवव्य है तो में अपनी दुब्बलताकी बातेंपर बड़ाई कांगा। हमारे प्रभु यीशु ख्रिष्टका पिता इंश्वर जो सबूता 31 धन्य है जानता है कि में कूठ नहीं बालता हूँ। दम्मेसकमें 32 दरिता राजाकी बीरसे जो अध्यक्ष था तो मुझे पकड़ने-को इससे दम्मेसक्यों में नगरम परहा दिलाता था। बीर में बिड़की टैके टैकरमें भीतपरसे लटकाया गया 33 बीर उसके हापसे बच निकला।

92 बारहवां पढ़ें।

1 पालकका स्वर्गलोकमें चढ़ा लिया बाना बीर पीछे संजूत धाना। 11 कारिन्यवेदि-का फिर समाहना। 15 उसके बीर तीर्थकर माहित्रका एक समान धाना।
15 उसके बाहर उसके मुखप्रमेयके लिये यह बांसे लिखना।

बड़ाई करना मेरे लिये अच्छा तो नहीं है। मे प्रभुके 1 दर्शनां बीर प्रकाशांका बर्णन कांगा। में ख्रिष्टमें एक मनुष्यको जानता हूँ कि चौदह बरस हुए का देख सहित में नहीं जानता हूँ का देख रहित में नहीं जानता हूँ। इंश्वर जानता है ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग-लों उठा लिया गया। में ऐसे मनुष्यको जानता हूँ का देख सहित का देख रहित में नहीं जानता हूँ। इंश्वर जानता है कि स्वर्गलोकपर उठा लिया गया। बीर अध्यक्ष बाने मुनी जिनके बारेको सामर्थ्य मनुष्यको नहीं है। ऐसे मनुष्यके विषयमें में बड़ाई कांगा परन्तु अपने विषयमें बड़ाई न कांगा केवल अपनी दुब्बलताशेंपर। क्योंकि यदि में बड़ाई करने-को इस्सा कांगा तो मृत्यु न होंगा क्योंकि सत्य बेह-
लूंगा परन्तु में एक जाता हूं ऐसा न हो कि कोई जो कुछ बह देखता है कि मैं हूं जलबा मुसूसे सुनता
है उससे मुसूसे कुछ बड़ा समझे । श्रीर जिस्ते में प्रकाशिकी आधिकारिक साधनी न हो जान्ज इस-
लिये शरीर में एक काँटा माने सूफ़ी घुसे मारनेको शैतानका एक दूत मुर्मि दिया गया कि मैं साधनी
न हो जान्ज । इस बातपर मैंने प्रभुते तीन बार बिनती
किन्तु कि मुसूसे यह दूर किया जाय । श्रीर उसने मुसूसे कहा मेरा अनुयह तिरे लिये बस है कोशिक मेरा सामथर्य दुष्कलतामें सिद्ध होता है । सत में उत्ति शानन्तसे अपनी दुष्कलताश्राओँके विषयमें बड़ाई ख़बर-
है कि बसूका सामथर्य मुसूसे जा बसे । इस कारण में बसूके लिये दुष्कलताश्राओँसे श्री निन्दाको श्री
दरिद्रतासे श्री । उपदानमें श्री संकटोंसे प्रसत हूं कोशिक जब मैं दुष्कल हूं तब बलवत हूं ।
मैं बड़ाई करनेमें मूर्ख बना हूं तुमने मुसूसे ऐसा करवाया है । उचित था कि मेरी प्रभुता तम्हारसे किन्तु
तामे कोशिक यदापि में एक नहीं हूं तोभी उन जात्यन
बड़े प्ररितसे किसी बातमें घट नहीं था । प्ररितके लक्षण
तम्हारे बीचमें सब प्ररितके धीरज साहित चिन्हांसे श्री
छूट बातां श्री आश्रम्य कर्मोंसे दिखाये गये । कौनसी
बात थी जिससे तुम श्रीर श्रीर मंडलियोंसे घर थे केवल
यह था कि मैं आपमे तुमपर भार नहीं दिया । मेरी यह
अनीति छुआ कोशिके । देखो मैं तोसरी बार तम्हारे
पास छानेबो तैयार हूं श्रीर मैं तुमपर भार न दूंगा
ब्यांकि मैं तुम्हारी सम्पत्तिका नहीं पर तुम्हीका चाहता हूं ब्यांकि उचित नहीं है कि लड़के माता पिताके लिये पर माता पिता लड़केंके लिये संचय करें। परन्तु १५ यदापि मैं जितना तुम्हें आधिक प्यार करता हूं उतना चोड़ा प्यारा हूं तैभी मैं अति आनंदसे तुम्हारे प्राणोंके लिये सबचे कब्जे चाहर चर्चा लिया जाएगा।

सा ऐसा ही हाय मैंने तुम्पर बेकार नहीं डाला। तैभी १६ कहते हैं कि मैंने चतुर होके तुम्हें छलसे पकड़ा। ब्याप जिन्हें मैंने तुम्हारे पास भेजा उनमें से किसीका १७ भी सकते कि इसके द्वारा मैंने लोभ कर कुछ तुम्से लिया। मैंने तीतसे बिन्ती बनाई। चाहिे उसके १८ संग भेजा। ब्याप तीतसे लोभ कर कुछ तुम्से लिया।

ब्याप हम एकही ज्ञातमासे न चले। ब्याप एकही लोकपर म चले।

फिर क्या तुम समक्त हो। क्या हम तुम्हारे साथ १५ खपना उत्तर देते हैं। हम तो ईश्वरके साथे खैरमें बालते हैं पर है प्यारा सब बातें तुम्हारे सुयारनके लिये बालते हैं। क्यांकि मैं हरता हूं ऐसा न हो क्या २० क्या जानें मैं आके तुम्हें न ऐसे पाजे जैसे मैं चाहता हूं। चाहर में तुमसे ऐसा प्यारा जानू जैसा तुम नहीं चाहते हो। क्या क्या जानू नाना मातीके बेर छाह ज्ञाध बिबद तुरंत फुसफुसाहट ब्रह्मामान चाहर बसें। चाहर मेरा ईश्वर नहीं सुके फिर आनंदपर २१ तुम्हारे यहां हटा करे चाहर में उनहमेंसे बहुतोंके लिये शोभ करं जिन्हें जाये पाप किया था चाहर उन्हें.


उष्ण कालसे कारो वार्षिक कारो कुचलनसे जो उनहाँने
किये प्रवासात्मक नहीं किया है।

१३ तेरहवां पढ़िे।

१ पालवका कारिन्यात्से समभाना देखा न हो कि चन्दयं देख देखा चन्दयं
क्षय। ११ उदयेश शीर नामस्तार शहीत पश्चात्ती सममान।

२ यह तीसरी बार में तुम्हारे पास जाता हूं। दो
शीर तीन साक्षीदारों सुनहते हर एक बात ठहराई१
जायगी। में पहले कह चुका शीर जैसा तुम्हारे साथ
दूसरी बोर जानते कहता हूं शीर तुम्हारी पीठके पीछे
उन लोगोंके पास जिन्हांने जाने पाप किया था शीर
शीर सब लोगोंके पास अब लिखता हूं कि जो मैं फिर
तुम्हारे पास जायंगे तो नहीं जीडी। तुम तो खैरूके
सुकमसे बढ़नेका प्रमाण बुद्धते हो जा तुम्हारी शीर
४ दुब्बेल नहीं है परन्तु तुम्हांमें सामर्थ्य है। क्योंकि
यदापि वह दुब्बेलतासे खैरपर पछाड़ किया गया तामी
इंश्वरके सामर्थ्यसे जीता है। हम भी उसमें दुब्बेल हैं
परन्तु तुम्हारी शीर इंश्वरके सामर्थ्यसे उसके संग
अपनेका परखिए कि विश्वासमें हो कि नहीं
अपनेका जांचो। अथवा क्या तुम अपनेका नहीं
पहचानते हो कि यीशु खैरू तुम्हांमें है नहीं तो तुम
६ निकृष्ट है। पर मेरा भरोसा है कि तुम जानेगे कि
७ हम निकृष्ट नहीं हैं। परन्तु में इंश्वरसे यह प्रार्थना
क्षरता हूं कि तुम कौई कुकमये न करो इसलिये नहीं
कि हम खरे देख पड़े परन्तु इसलिये कि तुम सुकमये
८ करो। हम बरन निकृष्टके ऐसे हाविंग तो हाविंग। क्योंकि
हम सत्यके बिल्लू कुछ नहीं कर सकते हैं परन्तु सत्यके निमित्त। जब हम दुःख हैं पर तुम बलवन्त हो तब हम ज्ञान चाहते हैं श्रीर हम इस बातकी प्रारथना भी करते हैं अयोग्य तुम्हारे सिद्ध होनेकी। इस कारण १० मैं तुम्हारे पीछे यह बात लिखता हूं कि तुम्हारे साथ सभी उस अधिकारके अनुसार जिसे प्रथुने नाश करनेके लिये नहीं परन्तु सुधारनेके लिये सुधा दिया है क़बाइंसे कुछ करना न पड़े।

अन्तमें है भाई। यह कहता हूं कि ज्ञानन्दित ११ रहीं सुधर जाएगा शांत होकर एकही मन रखें मिले रहे श्रीर प्रेम श्री शांतिका दृश्व तुम्हारे संग होगा।
एक दूसरीको पवित्र चूमा लेको नमस्कार करो। सब १२ पवित्र लोगोंका तुमकि नमस्कार। प्रभु योग बिबृका १४ ज्ञानह श्रीर दृश्वरका प्रेम श्रीर पवित्र श्रांताको संगति तुम सभींके साथ रहे। जामीन॥
गलातियोंका पावल प्रेतिकी पत्री।

1 पहिला पन्थे।

1 प्रथीका आभाय। ई गलातियोंके स्वप्न मनते फिर जानेका उलझना। 11 प्राणय वेश हय वताना कि मैं हाय सुसमाचार मनुष्यसे नहीं परलोक संयोजन कर्ता। 12 उसकी श्रावसी चालाते संघ विश्वास करनेके प्रेति परिश्रम करते यह वातका प्रभाव।

2 पावल जो न मनुष्योंकी स्वरसे श्राय न मनुष्यों

3 द्वारासे परलोक योग को श्रीपुरे द्वारासे श्रीर ईश्वर पिताके

4 द्वारसि जिसने उसकी मृतकोमथुं उठाया प्रेरित है। श्रीर सब भाई लगा जो मरे संग हैं गलातियाकी मंडलियोंको।

5 तुम्हें अनुयज कर श्राय शांति ईश्वर पिता श्रीर हमारे प्रभु।

6 योग स्वरुप से मिले। जिसने अपनेको हमारे पापोंके लिये दिया कि हमें उस सर्वभाष बुरे संतारसे बचावे।

7 हमारे पिता ईश्वरको इच्छाके अनुसार। जिसका गुणानुबाद सदा सबूतो होवे। आमीन।

8 भी सचमुच करता हूँ कि जिसने तुम्हें श्रीपुरे अनुयज के

9 द्वारा बुलाया उसके तुम ऐसे श्रीपुर श्रीरही सुसमाचारको

10 श्राय फिरे जाते है। श्राय वह तो दूसरा सुसमाचार

11 नहीं है पर केवल जितने लगें हैं हर हमें व्यकुल करते हैं। श्राय श्रीपुरे सुसमाचारको बदल दालने चाहते हैं।

12 परलोक यदि हम भी अथवा स्वगसे एक दूत भी उस सुसमाचारसे भिड जा हमने तुमको सुनाया दूसरा

13 सुसमाचार तुम्हें सुनावे तो साधित होवे। जैसा हमने
पहले कहा हैं तैसा में घर भी फिर कहता हूं कि जिसका तुमने यहूद किया उससे भिन्न यदि काँहें तुम्हें दूसरा सुसमाचार सुनाता है तो ब्राह्मण होणे। क्यांकि ९० में घर का मनुष्यमिका अरु याइशवरको मनाता हूं। अरु-
त्वा का में मनुष्यमिका प्रसन्न करने चाहता हूं। जो में घर भी मनुष्यमिका प्रसन्न करता तो कीषका दास न होता।
हे भाइया में उस सुसमाचारकी विषयम जो में ९१ प्रचार किया तुम्हें जनाता हूं कि वह मनुष्यमि मतके अनुसार नहीं है। क्यांकि में भी उसका मनुष्यमि १२ छात्र से नहीं पाया शैर न में खिलाया गया परन्तु
श्रीशु श्रीकृष्णको प्रकाश करनेके द्वारसे पाया।
क्यांकि यहूदीय मतमें मेरी जैसी छाल छलन शायरी १३ धरी सा तुमने सुनी है कि में इश्वरको मंडलको अत्यन्त सताता था शैर उसे नाश करता था। शैर अपने १४ देशके बहुल लोगोंसे जो मेरी वयसके यह यहूदीय मतमें छात्र बढ़ गया कि में अपनेपुरस्करे व्यवहारोंके विषयमें बहुत छात्र धुन लगाये था। परन्तु इश्वरको जिनसे १५ खुदे मेरे माताके गभराते अलग किया शैर अपने जनयतसे बुलाया जब इच्छा हुई। कि मुझमें करने पुरजय १६ देशके प्रगत करे जिस्तमें जनयतेशियोंके उसका सुसमाचार प्रचार कहकं तब तुरंत में मांस शैर लेखके संग प्रतापर न किया। शैर न यिफ़शलोमका उनके १७ प्राप्त गया जो मेरे छाने प्रेमित थे परन्तु अरब देशको छला गया शैर फिर दम्यतको दौरा। तब तीन बरस १८ ले पीछे में पितारसे मंजर करनेका यिफ़शलोम गया शैर
१४ उसके यहाँ पन्द्रह दिन रहा। परन्तु प्रेमितोंके में मेरे और किसीको नहीं देखा कब्र प्रभुके माई याकूबको।

२० में तुम्हारे पास जो बारे सचित्र हूं देखा ईश्वरके साथी २१ में कहता हूं कि में मृत्यु नहीं बालता हूं। तिसके पीछे में २२ सुरिया और किसीको देखा में गया। पर यिहूदियाकी संदियायंत्र के श्रीमों मे मेरे फूफका परिचय नहीं २३ हुआ था। वे केवल सुनते थे कि जा हमें भागे 

तिसके पीछे में २२ सुरिया और किसीको देखा में गया। पर यिहूदियाकी संदियायंत्र के श्रीमों मे मेरे फूफका परिचय नहीं २३ हुआ था। वे केवल सुनते थे कि जा हमें भागे 

२४ उसकी इज सुसमाचार प्रचार करता है। और मेरे विषयमें उहँने ईश्वरका गुरुनुबाद किया।

२ दूसरा पढ़े ।

१ प्रायमे प्रेमितोंके शास्त्र नहीं पार्श्व प्रेमितोंने उसके उपवेष्टन समाप्त किए ईश्वर वर्षन। २ प्रायमे प्रेमितोंने शास्त्र विवेकानन्द द्वारा धर्मी ठहरने उपवेष्टका प्रमाण देना।

१ तब चैदह बरसके पीछे में बर्षाबारके साथ फिर यिहूदियाकी गया। और तीतको भी झापने संग ले २ गया। में प्रकाशके अनुसार गया। और जो सुसमाचार 

तिसके पीछे में २२ सुरिया और किसीको देखा में गया। पर यिहूदियाकी संदियायंत्र के श्रीमों मे मेरे फूफका परिचय नहीं २३ हुआ। और मेरे विषयमें उहँने ईश्वरका गुरुनुबाद किया।

२ दूसरा पढ़े।

१ प्रायमे प्रेमितोंके शास्त्र नहीं पार्श्व प्रेमितोंने उसके उपवेष्टन समाप्त किए ईश्वर वर्षन। २ प्रायमे प्रेमितोंने शास्त्र विवेकानन्द द्वारा धर्मी ठहरने उपवेष्टका प्रमाण देना।

१ तब चैदह बरसके पीछे में बर्षाबारके साथ फिर यिहूदियाकी गया। और तीतको भी झापने संग ले २ गया। में प्रकाशके अनुसार गया। और जो सुसमाचार 

३ हूं बच्चा दूङा था। परन्तु तीतस भी जो मेरे संग या यदापि गुमानी था तैबिं उसके बतना किये जानेकी

४ जान न दिय गई। और यह उन मृत्यु भाइयोंके कारण 

५ भी पाया गया। और जो चैदह और ले लिये गये थे और मेरे हमें बंधनमें 

५ मिली है देखा लेने के। छिपके गुस्से शायी थे। उनके
बसमें हम एक घड़ी भी अधीन नहीं रहे इसलिये कि सुसमाचारकी सघनवी तुम्हारी पास बनी रहे। फिर जैसा लोग कुछ बड़े समक्ष जाते वे वे जैसे वे तैसे वे मुक्ति कुछ काम नहीं। इसीकी मनुष्यका पदार्पण नहीं करता है उनके स्मृति कुछ नहीं पाया क्योंकि जो लोग बड़े समक्ष जाते वे उन्हाँने मुक्ति बड़े नहीं बताया।

परन्तु इसके बिहार जब याकूब शैर शैफा शैर योगदान से सभी मुख लेने शीघ्र भी समक्ष जाते वे देखा कि जैसा खत्ता किये हुज्जांके लिये सुसमाचार पिताका लिया गया तैसा खत्ता हीनीमौले लिये मुक्ति लिया गया। क्योंकि जिनसे पिताके खत्ता किये हुज्जांमें की प्रेमितावा कार्य करवाया तिसने मुक्ति भी जन्यदेशीयकै नाय करवाया। शैर जब उन्हाँने उस अनुमोहका जो मुक्ति दिया गया तथा जान लिया तब उन्हाँने मुक्ति शैर बर्ने भोले संगतीके दहने हाथ दिये वह अस्त शैर जब श्राय खत्ता किये हुज्जांके पास जावै। बूढर यह चाहा कि हम कंगालें भी सुध लेवं १० शैर यही काम करनेमें भी ता यह भी किया।

परन्तु जब पितार जन्तु बियामें श्राय तब में ११ शास्त्रात उसका सामा किया इसलिये कि दोपी तहराया गया था। क्योंकि कितने लोगंके याकूबके पास से १२ शानके पहिले वह जन्यदेशीयैं साथ बात था परन्तु जब वे श्राय तब खत्ता किये हुए लोगंके भरके मारे हुए क्षाने का शलग रखता था। शैर उसके संग १३ दूसरे यमीदियांने भी कपट किया यहां किया कि बर्ने के भी
18 उनके कपटसे बहकाया गया। परन्तु जब मैंने देखा कि वे सुसमाचारकी सज्जाईपर सीधे नहीं चलतें हैं तब मैंने सभीके साथ पितासे कहा कि जो तू यिहूदी होके जन्मदिनियाँकी रीतिपर चलता है तो यह यिहूदी मतपर नहीं ता तू जन्मदिनियाँकी यिहूदी मतपर कैसे चलाता है?

19 हम जो जन्मके यिहूदी हैं तो जन्मदिनियाँकी मनुष्य व्यवस्थाके कामसे नहीं पर केवल योगु खीरूके विभवासके द्वारासे धर्ममा ठहराया जाता है हमने मात्र खीरू यीशुपर विभवास किया कि हम व्यवस्थाके कामसे नहीं पर खीरूके विभवाससे धर्ममा ठहरने इस कारण कि व्यवस्थाके कामसे

20 कोई प्राणी धर्ममा नहीं ठहराया जायगा। परन्तु यदि खीरू से धर्ममा ठहराये जानेका यह करते हम चाप भी पापी ठहरे ता कह खीरू पापका सेवक है। ऐसा न हो। क्योंकि जय वस्तु मैंने गिराई थी यदि हमें उसीका फिर बनाता हूं तो अपने प्रमाण देता हूं कि अप-राडी हूं। मैं तो व्यवस्थाके द्वारासे व्यवस्थाके लिये

21 मरा कि ईश्वरके लिये जीजं। मैं खीरूके संग कृष्णपर चढ़ाया गया हूं तैमी है। चाप ता मैं चाप नहीं पर खीरू मुखमं जीता है तो ईश्वर में भररीमं चाप जो जीता हूं। ईश्वर के पुत्रके विभवासमं जीता हूं जिसने मुखो प्यार किया। ईश्वर जे लिये अपनेके सांप दिया। मैं ईश्वरके अनुशंकोक व्यर्थ नहीं करता हूं क्योंकि यदि व्यवस्थाके द्वारासे धर्ममा होता है तो खीरू चापकारण मूर्ख है।
3 तीसरा पढ़िये।

1. पालवर गलातियोंके समस्या। 15 इब्राहीमके विश्वासका प्रमाण। 15 राज-प्रभुके मनुष्योंका सापत ठहराना। 15 राजपत्रके नियमके टूटाना। 15 राजपत्रके पहुँचना व्यवहारका शास्त्राध्याय इसका दर्शन। 25 राजपत्रके विश्वासियोंका लेखात्मक पद प्राप्त करना।

हे निबुद्धि गलातियों किसने तुम्हें मौह लिया है कि तुम लोग सत्यकर न माने जिनके जाने यीशु क्रिष्णपर चढ़ाया हुआ साध्यत तुम्हारे बीचमें प्रगट किया गया। मैं तुमसे केवल यही सुनने चाहता हूं कि तुमने ज्ञात्माको क्या व्यवस्थाके कम्मियोंके हेतुसे अथवा विश्वासके समाचारके हेतुसे पाया। क्या तुम ऐसे निबुद्धि हो। क्या ज्ञात्मा के आरंभ राजके तुम अनु शरीरसे सिद्ध किये जाते है। क्या तुमने इतना दुःख वृष उठाया। जो ऐसा तहरे कि वृषाही उठाया।

जो तुम्हें ज्ञात्मा िन चारता िम में ज्ञात्मा क्षमके करवाता है सौ क्षमके कम्मियोंके हेतुसे अथवा विश्वासके समाचारके हेतुसे ऐसा करता है।

जैसे इब्राहीमने इश्वरका विश्वास किया िम यह उसके लिये धर्मी गिना गया। तो यह जाना कि जो विश्वासके अवलम्बी है तोई इब्राहीमके सत्तान है।

फिर इश्वर जो विश्वाससे अन्येंद्रीयोंका धर्म उठराता है यह बात ज्ञानसे देखके धर्मापुस्तकके इब्राहीमको ज्ञानसे सुसमाचार सुनाया कि तुम्हें सब देशके लग ज्ञानसे पाविंग है। जो विश्वासके अवलम्बी है िश्वासी इब्राहीमके संग ज्ञानसे पावते हैं।

क्योंकि जितने लोग व्यवस्थाके कम्मियोंके अवलम्बी हैं वे 10
सब स्मार्तधर्म हैं कौंकं लिखा है हर एक जन जो व्यव-
ऩाके पृष्टकमें लिखी हुई सब बातें पालन करनेको।
११ उनमें बना नहीं रहता है सापित है। परन्तु व्यवस्थाके
द्वारा ईश्वरके यहां कोई नहीं धम्मी रहता है यह
बात प्रगट है कौंकं बिश्वासते धम्मी जन जीविगा।
१२ प्रव व्यवस्था बिश्वास संबन्धी नहीं है परन्तु जो मनुष्य
१३ यह बातें पालन करे सा उनसे जीविगा। कृपणे
दाम देकर हमें व्यवस्थाके स्मार्तधर्म बुझाया जिस वह हमारे
लिये सापित बना कौंकं लिखा है हर एक जन जो
१४ बादपर लटकाया जाता है सापित है। यह इसलिये
हुआ कि ईश्वरीमको आशीर्वाद ब्रह्म योजनामें अन्तर्विषयक-
नामपर पहुँचे ईश्वर कि जो कुछ ईश्वरकी विषयमें
प्रतिज्ञा किया गया सा बिश्वासके द्वारा हमें मिले।
१५ है भाइयो में मनुष्यको रीतिपर कहता हूं कि मनुष्यकी
नियमको भी जो दुःख किया गया है कौं टाल नहीं
१६ देता है ईश्वर न उसमें मिला देता है। फिर प्रति-
झाँ ईश्वरीमको ईश्वर उसके वंशको दिए गईं। वह
नहीं कहता है वंशीको जैसे बहुतांके विषयमें परन्तु
जैसे एकके विषयमें ईश्वर तें वंशको। साईं ब्रह्म है।
१० पर भी यह कहता हूं कि जी नियम ईश्वरने ब्रह्मण
लिये आगे दुःख किया या उसका व्यवस्था जो चार
सा तीस बरस पीछे हुई नहीं उठा देती है ऐसा कि
१८ प्रतिज्ञाको व्यर्थ कर दे। कौंकं यदि अधिकार व्यव-
स्थाते हैं ता फिर प्रतिज्ञाको नहीं है। परन्तु
ईश्वरने उसे ईश्वरीमको प्रतिज्ञाके द्वारा से दिया है।
ता व्यवस्था का बताती है। जबलों वह बंश जिसकी १५ प्रतिज्ञा राख के गई थी न स्वय कर्म तबलों सराया प्रकार राख वह भी राख के गई शैव वह दूसरों के द्वारा मध्यस्थके हाथमें निकाल आयी गई । मध्यस्थ एका नहीं होता है २० परन्तु ईश्वर एक है। ता का व्यवस्था ईश्वरकी २१ प्रतिज्ञाओंके विरुद्ध है। ऐसा न हो के विधि ऐसी व्यवस्था दिदिए जाती कि जिलाने सकाते ता निश्चय करके प्रम्वणे प्रतिज्ञा होता। परन्तु धर्मपूर्वकं तो सभी- २२ के पाप तले बन्द कर रखा इसलिये या ग्रीष्मुखी विश्वासका फल जिसकी प्रतिज्ञा किए गईं विश्वास करनेहारोंको दिया जावे। परन्तु विश्वासके शानेके २३ पहले हम विश्वासके लिये जा प्रगट होनेपर या व्यवस्थाके पहरमें बन्द किये हुए रहते थे। ता व्यव- २४ श्या हमारी शिख्रुष हुई है या ग्रीष्मुखी पहुंचावे जिस्तें हम विश्वासते प्रम्पणे ठहराये जावे।

परन्तु विश्वास जो चा चुका है ता चन हम ग्रीष्मक- २५ के बजरमें नहीं हैं। के के ग्रीष्मुखी ग्रीष्मुखी विश्वास करनेके २५ द्वारासे तुम सब ईश्वरके सहना है। के जिलाने २५ ग्रीष्मुखी बप्पतिसमा लिया उन्हें ग्रीष्मुखी पहिये लिया। उसमें जी हिदृ न युनानी है उसमें न दास न जिवें २५ है उसमें न रा शैव नारी नहीं हैं के तुम सब ग्रीष्मुखी ग्रीष्मुखी एक है। जो तुम ग्रीष्मुखी हो ता इतं- २५ हीके बंश शैव प्रतिज्ञा के अनुसार जिलाने है।
8 चैत्र थंबे

1 बिष्माकियों के सेवास्थान पुत्र शेषीका बर्थन। 8 भव्यसारका शीर जिनके विवरण गलातियोंका सम्बन्धमा। 21 द्रश्यसीमके दो गुणको बुखारसे ब्यवसायका शीर सुमामारका दृष्टस्त।

2 पर में कहता हूँ कि अधिकारी जतनको बालक है तबलों यदापि सब बस्तीरोंका स्वामी हैं तौभी दाससे कुछ भिन्न नहीं है। परन्तु दिनके ठहराई हुए समय-लौं रक्षकों शीर भंडारियोंके बशर्म है। वैसे हम भी जब बालक थे तब संसारको आदिशिश्वाके बशर्म दास बने हुए थे। परन्तु जब समयको पुर्ये ता पहुँचे तब ईश्वरने अपने पुत्रके भेजा जो स्तीसे जन्मा शीर बव्यसारके बशर्ममें उत्पन्न हुआ। इसलिए कि दास देखे तन्हे जो बव्यसारके बशर्ममें हैं फुड़के जिसे लेपालकांका पद हमें मिले। शीर तुम जी पुष्च हो इस कारण ईश्वरने अपने पुत्रके आत्माको जो है झन्ना अत्याचार है पिता पुकारता है तुम्हारे हृदयमें भेजा है। तो तू क्षेत्र दास नहीं परन्तु पुष्च है शीर यदि पुष्च है तो स्रोगके द्वारासे ईश्वरका अधिकारी भी है।

8 भला तब ती तुम ईश्वरका न जानके उनहीं के दास थे जो स्वभावसे ईश्वर नहीं हैं। परन्तु क्षेत्र तुम ईश्वरका जानके पर शीर भी ईश्वरसे जाने जाने करंकर फिर उस दुष्कल शीर फलहीन आदिशिश्वाको शीर फुड़के किसी तुम फिर नये विदा हुई चाहते हो। तुम दिनें जी मातों शीर शीर जी समयं जी 10 वर्तांको मानते हो। मैं तुम्हारे विशेषमें अरता हूँ।
कि क्या जानें मैंने ज्या तुम्हारे लिये परिमाण किया है। हे भाद्रेश मैं तुमसे विनाश कार्ता हूं तुम मेरे समान १३ है। जानें कोई विश्वास में भी तुम्हारे समान हुआ हूं। तुमसे मेरी कसून हानि नहीं हुई। पर तुम जानते हो कि १४ पहले मैंने शरीरमें तुम्हें देनलिया कार्ता तुम्हें सुस्माचार सुनाया। बैर मेरी परीमाणिका जो मेरे शरीरमें थी १५ तुमने पूरा नहीं जाना न धिन्न या परलु जैसे देशवाले हूं रहते जैसे चीतु गिया तीते ही सुम्भव यहां किया।

तो वह तुम्हारी धनात्मा कैसी थी। कोई में तुम्हारा १६ सारी हूं जिस जो हो सकता तो तुम अपनी अपनी शांतिय निकालके मुखकर रहते। सा क्या तुमसे सत्य १६ बोलने से में तुम्हारा बैरी हुआ हूं। जे भली रोतित्स १७ तुम्हारे भाषालाखी नहीं होतें हैं परलु तुम्हें निकालवाया चाहते हें जिससे तुम उनके भाषालाखी होकर। पर १८ चाचा है जि भली बातमें तुम्हारी भाषालाखा जिस समय में तुम्हारे संग रहूं केवल उसी समय किन्हे जाय सा नहीं परलु सदा किन्हे जाय। हे मेरे बालक १८ जिनकी लिये जबलों तुम्हारे में ग्रेहुका रूप न बन जाय तबलों में फर प्रसवकीय पीड़ उठाता हूं। में चाहता २० जि जब तुम्हारे संग होता बैर अपनी बाली बदलता कोई तुम्हारे विश्वमें मुक्ति संदेह होता है।

तुम जा व्यवस्थाओं बस्म सुना चाहते हैं मुक्तें कही २१ ज्या तुम व्यवस्थाओं नहीं सुनते हैं। कोई लिखा है कि २२ इमारातेरों तो पुष्प हुए एक ता। दासीते बैर एक ता

निर्विरोध होते। परलु जो दासी तो भारी वर्ष २३
अनुसार जन्मा पर जी निर्वक्षा स्त्रीसे हुँगा सो दोतिन्द्राके
28 द्वारासे जन्मा। यह बातें दुगुमान्तके लिये कही जाती हैं
क्योंकि यह स्त्रीया दो नियम हैं एक तो सौप में पढ़ैसे
जी दास है नेत्रके लिये लड़के जन्ता है तोई हाजिरा है।
85 क्योंकि हाजिराका अर्थ अर्थमें सौप में पढ़ैसे है दीरा
वह यिह्वश्लीमके तुल्य जो श्रम है गिनी जाती है
वह दीरा अपने बालकों समेट दासी होती है। परन्तु
उपरको यिह्वश्लीम निर्वक्षा है दीरा वह हम सभाकों
20 माता है। क्योंकि लिस्मा है हेबांफ जो नहीं जन्ती
है जानन्दित हो तू जो प्रसवीकी पीड़ नहीं उठाती है
जंबरे हास्यजनक पुकार क्योंकि जिस स्त्रीको स्वामी है उस-
88 बे लड़कोंसे अनाथके लड़के दीरा भी बहुत हैं। यह भाइयो हम
लोग इसमाको रीतिपर प्रतिनिधाको संतान
26 हैं। परन्तु जैसा उस समयमें जी शरीरके अनुसार जन्मा
सो उसको जी आत्मको अनुसार जन्मा सताता या
30 वैसही श्रम भी होता है। परन्तु धर्मपुस्तक का
कहता है। दासीका दीरा उसको पुकारा निकाल दे
क्योंकि दासीका पुकार निर्वक्षा पुकारे संग श्रद्ध-
21 कारी न होगा। तो है भाइयो हम दासीको नहीं
परन्तु निर्वक्षा स्त्रीको संतान हैं।
5 पांचवा पन्च।

1 अनुीक्षाकर तत्सि निकासी जाना लोग नहीं है पादवा द्वहका। 9 खड़े
उपयोगको विज्ञापन में असाधित के गिम्यो। 13 शरीरके रीतिपर नहीं पैर
आत्मको रीतिपर चलेका उपयोग।

1 तो उस निर्वक्षनांमें जिस करके खोई हमें निर्वक्षा
किया है दु:धः रहे दीरा दासत्तको ज्ञानमें फिर मत जेति
जाशा। देखा मैं पावल तुमसे कहता हूं खिलो तो तुम्हारे कुछ लाभ न होगा। फिर कह भी मैं साधौ दे हर एक मनुष्यसे जिसका खतना किया जाता है कहता हूं कि सारे व्यवस्थाको पूरी बनाना उसकी आवश्यक है। तुममें तो जो व्यवस्थाको अनुसार ठहराये जाते हैं तो खिलो भ्रूण हुए है। तुम अनुयहसे पतित हुए है। क्योंकि पवित्र ज्ञातमसे हम ले लिये विश्वाससे धर्मसे शाश्वाको बाज बाह्य हैं। क्योंकि खृष्ण ये जिनमें न खतना न खतना-हीन होना कुछ काम जाता है परन्तु विश्वास जो प्रेमके द्वारसे कार्यकारी होता है।

तुम भजी रैसे हैं हैं, विनये तुम्हें रोका कियो तुमको न माना। यह मनावना तुम्हारे बुलानेहराको जोरसे नहीं है। बुधासा खमर सारे पिंडको खमर कर डालता है। मैं प्रभुपर तुम्हारे विषयमें भरोसा रखता हूं कि तुम्हारे जो कैसे दूसरे माति न होगी पर जो तुम्हें व्यक्त करता है क्यों हा वह इसका दंड आगे गया। पर है भायें। जौ मैं ज्ञात भी खतनेको उप-देन करता हूं तो किं फिर सताया जाता हूं। तब ख्रूष्णको ठाकर तो जाती रही। मैं चाहता हूं कि जो तुम्हें गड़बड़ते हैं सो ज्ञातको कार्य डालते।

क्योंकि है भायें। तुम ले लिये निर्बन्ध होनेको बुलाये गये केवल इस निर्बन्धमें शरीरके लिये गैं मत पकड़ा परम्पर प्रेमके दूसरे के दास बना। क्योंकि सारे व्यवस्था एकही बातों पूरी होती है ज्ञात के उस्में
15 कि तू अपने पढ़ासीको अपने समान प्रेम कर । परन्तु जा तुम एक दूसरे को दांतसे कारी श्री खा जावो ता चौकस रहा कि एक दूसरे से नाश न जिये जावो ।
16 पर में कहता हूं आत्माके अनुसार चलो ता तुम ।
17 शरीरको लालसा किसी रोगिसे पूरी न करोगे । किंवा-
कि शरीरकी लालसा आत्माके बिहुत श्रीर आत्माकी शरीरकी बिहुत हेती है श्रीर ये देनां परस्पर विरोध
करते हैं इसलिये कि तुम जो करने चाहे उसे करने
18 न पावो । परन्तु जो तुम आत्माकी चलायें चलते है।
19 ता व्यवसाके बाजारों नहीं हाँ । शरीरके अपम प्रकाश
हैं सा ये हैं परस्त्रीगमन व्यभिचार चशुता लुचपन.
20 मर्त्यज्ञा टाना श्री नाना भांतिके शब्दुता बैर ईरा
21 ज्ञान विवाद विरोध कुपन्य । डाह नरहिंसा मतवाल-
पन श्री लोला ठोड़ा श्रीर इनके ऐसे श्रीर श्रीर कम्य.
इनके विपयमें में तुमको आगसे कहता हूं जैसा मैंने
झागे मित्र कहा या कि ऐसे ऐसे काम करनेहारे ईश्वरके
22 राज्यके अधिकारी न हांगे । परन्तु आत्माका फल
यह है प्रेम आनन्द मिलाप धीरज कुपा भलाई
23 विश्वास नमर्या श्री संयम । कैइ व्यवस्था ऐसे ऐसे
24 कामांके बिहुत नहीं है । जो दीवारकी लगा हैं उनहें शरीरका उसके रागों श्रीर आत्माकी समीत कुष्ठपर
25 चढाया है । जो हम आत्माके अनुसार जीते हैं ता
26 आत्माके अनुसार चलें भी । हम घमंडी न हो जावे
जो एक दूसरे के बड़े श्रीर एक दूसरे से डाह करें ।
ई बट्टवां पन्ने।
1 भाषिमक चाल चलनेका उपदेश। 9 वितायनी श्रीर भागीरथाद बौधत
ब्रजीको सरीत।

है भाइयो यदि मनुष्य किसी उपराधमें पकड़ा भी 2 जाधे तैभी तुम जो भाषिमक हो नम्रता संयुक्त ज्ञातमािे
ऐसे मनुष्यको सुधारी श्रीर तू जङ्गनेको देख रख कित
तू भी परीक्षामें न पड़े। एक दूसरे के मार उठाओ श्रीर
इस रीतिसे स्थिरीकृत व्यवस्थाको पूरी करो। क्याँकि यदि
काई जो कुछ नहीं है समभता है कि भी कुछ हूँ तो
जङ्गनेको धौखा देता है। थरतु हर एक जन अपने
कामको जांचे श्रीर तब दूसरे के विषयमें नहीं पर
केवल अपने विषयमें उसका बढ़ाई करनेको जगह
होगी। क्यांकि हर एक जन अपनाही उसका उठाओगा।
2 जो वचनको शिल्पा पाता है सो समस्त अच्छी वस्तु
खिंचामें सिखानेहरूको सहायता करें। प्रेमा मत खानी
भूष्टतरसे उठा नहीं किया जाता है क्यांकि मनुष्य जो
कुछ बताता है उसका लवेगा भी। क्यांकि जो अपने
शरीरके लिये बताता है तो शरीरके विनाश लवेगा परन्तु
जो ज्ञातमािे लिये बताता है तो ज्ञातमािे ज्ञानत
शीवन लवेगा। पर सुकम लर्नेमें हम कानत न होते
क्यांकि जो हमारा बल न घरे तो रीक समयमें लर्नेगी।
इसलिये जैसा हमें अवसर भिलता है हम सब लागाएसे
10 पर निज करैके विश्वासके घरानेसे भलाई करें।
देखा मैंने औसी बड़ी पत्थरी तुम्हारी पास जङ्गने हाथसे
9 लिबी है। जितने लोग शरीरमें अच्छा दृष्टि दिखाने
चाहते हैं वे तुम्हारे सवना जिने जानेकी टूट झांझा देते हैं बेवल इसी लिये कि वे खोजके कूशके कारण 93 सताये न जावें। क्योंकि वे भी जिनका सवना लिया जाता है क्षाप क्रयवतीयी पालन नहीं करते हैं परन्तु तुम्हारे सवना लिये जानेकी इच्छा इसलिये करते हैं 94 कि तुम्हारे शरीरले विषयमं बढ़ाई तिरे। पर सुक्तते ऐसा न होवे कि किसी शहर बातकी विषयमं बढ़ाई करने रूपले हमारे प्रभु यीशु खोजूके कूशके किसी विषयमं जिसके द्वारा से जगत मेरे लेखे कूशपर चढ़ाया गया। 95 है शहर में जगतके लेखे। क्योंकि खोजू यीशुमं न सवना न खतनाहीन होना कुछ है परन्तु नई शहू। 96 शहर जितने लोग इस विषयके चर्चावे उनहांपर शहर द्वारके इसायेली लोगपर कयमाक शहर दया होवे। 97 जब ता काई मुखे दुःख न देवे क्योंकि में प्रभु यीशुके 98 चिन्ह अपने देहमं लिये फिरता हूं। हे भाइया हमारे प्रभु यीशु खोजूके अनुययु हमारे भावरे जीतमाने संग होवे। ज्ञातन। ॥

----------
इफिसियोंका पावल प्रेषितकी पत्री।

1 पहिला पत्र

1 प्रभुका भाषा । 3 ईश्वरके अनुयायका तथा यीशुके विश्वासियोंके भार्यकारका वर्णन। 15 विश्वासियोंके लिये पावलकी प्रारंभ।

पावल जा ईश्वरकी इच्छासे यीशु ख्रिस्तका प्रेषित 1 है उन पवित्र शीर्ष यीशुमें विश्वासी लोगोंका जा ईफिसमें है। तुम्हें हमारे पिता ईश्वर शीर्ष प्रभु 2 यीशु ख्रिस्तसे अनुयाय शीर्ष शांति मिले।

हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्तके पिता ईश्वरका धन्यदाद 3 है। जिसने ख्रिस्तमें हमारे स्वर्गीय स्थानोंमें सब प्रकार-की ज्ञातिक आशीर्वाद से आशीर्वाद दिया है। जैसा उसने 4 उसमें जगतकी उत्पत्तिके आगे हमें चुन लिया कि हम प्रेमसे उसके सन्मुख पवित्र शीर्ष निर्देश होवे। शीर्ष अपनी इच्छाकी सुमतिके अनुसार हमें आगे 5 ठहराया कि यीशु ख्रिस्तके द्वाराते हम उसके लेखक खाने । इसके लिये कि उसके अनुयायकी महिमाकी स्तुति 6 बनावे जिस कारण हमें हम्स यात्रार्थे अनुयाय पाठ दिया। जिसमें उसके लेखक द्वाराते हमें उद्दार शरीर अपराधियोंका मोचन ईश्वरके अनुयायके धरने अनुसार मिलता है। शीर्ष उसने समस्त ज्ञान शीर्ष 8 वृद्धि सहित हमपर यह अनुयाय अधिकारियोंके किया। कि उसने अपनी इच्छाका भेद अपनी उस सुमति खो 9 अनुसार हमें बताया जी उसने समयोंकी पूर्णताका
"10 काय्य निवाहने निमित झपने में ठानी घी। अर्थात्
कि जो कुछ स्वपनें हैं शरीर जो कुछ पृथिवीपर है सब
11 कुछ वह झीलमें संयह करेगा। हां उसीमें जिसमें हम
उसकी भाग्याते जो अपनी द्वारका मलके अनुसार
सब काय्य करता है झाकेसे ठहराये जाके अधिकारके।
12 लिये चुने गये भी। इसलिये कि उसकी महिमाकी
स्तुति हमारे द्वारके किंई जाय जिन्हाँने झाके झीलमें
13 भरोसा रखा था। जिसपर तुमने भी सत्यताका बचन
अथात् अपने चाचनका सुसमाचार सुनके भरोसा रखा
शरीर जिसमें तुमने विश्वास करके प्रति जाके आत्मा।
14 अथात् पविच आत्माकी झाप भी पाई। जो मेल लिये
हुकमाँ हमारे हमारे आधिकारका बयाना है इस
cारण कि इंद्रकी महिमाकी स्तुति किंई जाय।
15 इस कारणसे में भी प्रभु यीशूपर जो विश्वास शरीर
सब पविच ले गएसे जो प्रेम तुम्हारे हैं इनका समाचार
16 सुनके। तुम्हारे लिये धन्य मानना नहीं छूटता हूँ शरीर।
17 अपनी प्रार्थनाआसे में तुम्हें स्मरण करता हूँ। कि हमारे
प्रभु यीशू झीलमें इंद्रके जो तेजस्विके पिता है तुम्हें झपा
18 पहचानसे झान शरीर प्रकाशका आत्मा देवे। शरीर तुम्हारे
मनके नंच प्रकाशित हैं जिसे तुम जाने। कि उसकी
बुलाहकी झान बा है शरीर पविच ले गएसे उसके
19 आधिकारकी महिमाकी धन बा है। शरीर हमारी शरीर
जो विश्वास करते हैं उसकेसामथ्यकी अत्यन्त अधिकारं
20 बा है। साइं उसकी झापकी प्रभावके उस काय्यके जनु-
सार है जो उसने झीलके विषयमें किया कि उसकी
मुख्यतः स्वर्गीय स्थानभी समस्त २५ प्रधानता श्रीर प्रभुत्वेको ऊपर श्रीर हर एक नामको ऊपर जो न केवल इस लोकसम्म परन्तु परलोकसम्म भी लिया जाता है अपने दहिने हाथ बैठाया . श्रीर सब कुछ उसकी चरणोंको २२ नीचे स्थानिक लिया श्रीर उसे मंडलीको सब बस्तुकोपर सिर बना करके दिया . जो मंडलको उसका देह है २३ अध्यातन उसकी जो समग्रीमें सब कुछ भरता है महपूरी है।

२ दूसरा पद्ध ।

१ श्रीकुमारी कीमा ते पापस्म नूर्त्व से प्ररम्ब योगुके हजुरसे जिलाये गर्ये उपर नृत्यकारी कुमारका बस्तन । ११ क्या खतना किये हुए क्या खतनाहरून में सब विधाताको प्रयुक्त एक श्रीर ।

तुम्हें भी ईश्वर ने जिलाया जो स्थापराधी श्रीर पपायंकी १ कारण मूर्तक थे . जन पपायंकी तुम भागे इस संसारकी रीतिको अनुसार हां साक्षात्कारको अर्थीत उस साताको अध्यक्षको बनौंसार चले जो भातमा जब भी भाषा लंघन करनेहरूसे कार्य करवाता है . जिनले ३ बीचमें हम सब भी भागे शरीर श्रीर भावनाहरूको इच्छाएं पूरी करते हुए अपने शरीरको अभिलाषासे चाल चले श्रीर श्रीर लोगांको समान स्वभावहरूसे श्रीरको सन्तान है। परन्तु ईश्वर ने जो दयाको घनना घनी है ४ अपने उस बड़े प्रेमके कारण जिस करके उसने हमसै प्रेम किया . जब हम स्थापराधीको कारण मूर्तक है तबही ५ हमें ख्रीष्णको संग जिलाया वो अनुयायो सुमारा चाष हुआ है। श्रीर संगहीं उठाया श्रीर ख्रीष्ण यीरुको संगही ६ स्वर्गीय स्थानभीं बैठाया । इसलिए वो ख्रीष्ण यीरुको ०
हमपर कुपा करनें वह ज्ञातीहरू समयें जपने अनु-18 यहका श्यात्मक घन दिखावे। कोंकणकिल्ला यहसे बिस्मास-के दुरा तुम्हारा थाक हुआ है जहाँ यह तुम्हारी ज्ञातीसे 5 नहीं हुआ इंग्वरका दान है। यह कम्मेंसे नहीं हुआ 10 न हो कि बोइंग प्रम्पर करे। कोंकणकि हम उसके बनाये हुए हैं जो खोखू यीहुमें रखके कम्मेंसे लिये घरे गये जिन्हें इंग्वरने झागिसे ठहराया कि हम उनमें चलें। 11 इसलिखे समरण करे कि पूर्व समयें तुम जो शरीरमें अस्वादी है जहाँ जो लेग शरीरमें हाथके किये हुए खानेसे स्वादनावली कहावते हैं उनसे खट- 12 नाहीन कहे जाते है। तुम लेग उस समयें खोखूसे अलग ए जैसा इस्तायेलकी ज्ञान जिसे परियारे किये हुए ए जैसा प्रतिज्ञा नियमके भागी न थे जैसा 13 जगतें ज्ञाहारे जैसा इंग्वर रहित थे। पर अब तो खोखू यीहुमें तुम जो ज्ञान दूर चैं खोखूसे लेखे द्वारा 14 निकट किये गये हैं। कोंकणकि वही हमारा मिलाव है जिसने दोनेंका एक किया जैसा शक्तिके बिचली 15 भीति गिराई। जैसा विधि संबन्धी ज्ञातीश्रीकी व्यक्त- श्वाकी लेप करके अपने शरीरमें श्राभुता तिरा दिदिये जिसतें वह अपनेमें देसे एक नया पुष्प उत्पन्न करके 16 मिलाव करे। जैसा ज्ञातीश्री धार्मिक नाश करके उस 17 खोखूसे द्वारा दोनेंका एक देहेंं इंग्वरसे मिलावे। जैसा उसने शाके तुम्हें जो दूर थे जैसा उन्हें जो निकट थे 18 मिलावका सुसमाचार तुनाया। कोंकणकि उसके द्वारा हम दोनेंका एक शात्मामें पिताके पास पहुंचनेका भारि-
कार मिलता है। इसलिये तुम जब ऊपरी शीर बृद्धि १५
नहीं हो परन्तु पवित्र लागेंगे संगी पुरबासी शीर
ईश्वरके घरानेके हा। शीर प्रेरितम शीर भविष्यद्वारकाओं-
२०
की नेवपर निम्नें लिखे गये हा जिसके औनिका
पत्तर यीशु श्रीशु नामही है। जिसमे सारी रचना २१
एक संग जुटके प्रभुसे पवित्र मानिर बनती जाती है।
जिस्में तुम भी ज्ञात्मके द्वारा ईश्वरके बासा होनेका २२
एक संग निम्नें लिखे जाते हो।

३ तीसरा पदें।

१ श्रीघु मतके वढ़े नेत्रका पायलपर प्रकाश किया ब्याना कि यह उसे शरणत
प्रर्दर करे। १४ श्रीकृष्णके लिये पायलको प्रार्थना। २० प्रर्दभरके धन्यान्वान
करना।

इसीके कारण में पावल जो तुम अन्यदेशियोंके लिये
श्रीघु यीशुके कारण बंधुत्व है। जो यह ईश्वरके जा
शानुष्ठ कुमारी लियेरेपुरी दिया गया उसके मंड़रीपनका
समाचार तुम्हारे सुना। अर्थात यह प्रकाशम उसने मुखे
भैर बताया जैसे में भागे सच्चेद करके लिखा चुका हूं।
जिस्मे तुम जब पड़े। तब श्रीघुके भिड़ेगे मेरा ज्ञान बुझ
भैर है। जो भेद शीर शीर समयों में मनुष्योंके
साधन जो ऐसा नहीं बताया गया था जैसा अच्छे वह
इसके ईश्वरके पवित्र प्रेरित। शीर भविष्यद्वारकांकर
प्रगट किया गया है। अर्थात यह श्रीघुमें सुसमाचारके
द्वारा अन्यदेशी लोग संगी अधिकारी शीर एकही
देखके शीर ईश्वरके प्रतिज्ञके सम्बागी हैं। शीर में
ईश्वरके अनुष्ठके दानके अनुसार जो मुक्त उसके सामर्थ-
के कार्यके अनुसार दिया गया। उस सुसमाचारका सेवक
8 हुआ। मुझे जो सब पवित्र लोगोंसे जाति बोरेंसे भी खोटा हूँ यह अनुयायियों ने खोष यौग्दो घनका सुसमाचार प्रचार कहक। श्रीर समेतपर प्रकाशित कहर अपना निर्बहाना क्या है जो इद्दरम्य आदिते गुप्त या जिसके गीत खोष खोषके 90 द्वारा सब कुछ द्रुत। इसलिये कि तब स्वयंगी स्त्रानींके प्रधानों श्रीर ज्ञाधिकारियोंपर मंडलीके द्वारासे इद्दरवकी 91 नाता प्रकारकी बुद्धि प्रगट किये जाय। उस सनातन इद्दाक्य अनुसार जो उसने खोष यौग्दो हमारी प्रभुमै 92 पूरी किये। जिसमे हमें तृसु जीर निशीचसे निकट ज्ञान का ज्ञानकार उसके विविधवके द्वारासे मिलते हैं। 93 इसलिये में बिंती करता हूँ कि जो अनेक है श्रीर प्रेमवके अनि होते हैं इनमे क्षतर न होए। कि यह तुम्हारा आदर है। 94 में इसीके कारण हमारे प्रभु यौग्दो खोषके पिताके 95 श्रीर अपने पुत्रे टैक्ता हूँ। जिससे क्या स्वर्गमे त्या 96 पृथिवीपर सारे घरने नाम रखा जाता है। कि वह तुल्ले अपनी महिमाके धनके अनुसार यह देव कि तुम उसके आत्मिके द्वारासे अपने भीतरी मनुष्यत्वमे सा- 97 मध्य पाके बजल्लत होए। कि खोष विविधवके द्वारासे तुम्हारे हृदयमे वसे श्रीर प्रेममे तुम्हारी जड़ बननी हुई 98 श्रीर नेव वालो हुई होय। जिसके यह चैटड़ई श्री लंबाई श्री गाहराई श्रीर जंबाई कहा है इसकी। तुम 99 सब पवित्र लोगोंके साथ बूढ़ने नी शक्ति पाओ。 श्रीर खोषके प्रेमका जानो जी ज्ञानसे जुड़े हैं इसलिये कि
तुम ईश्वरकी सारी पूर्णतालें पूरी किये जाओ।
उसका जो उस सामर्थ्यस्व अनुसार जो हमारीं कार्य्य २०
करता है सब बाति सी अधिक हां हम जो कुछ मांगते
अथवा बुकते हैं उससे अत्यन्त अधिक कर सकता है.
उसीका गुणानुवाद ख्रीष्ट यीशुके द्वारा मंडलीमें पीढ़ी २१
पीढ़ी नित्य सब्रेदा होते। श्रामीन।

४ चौथा पढ़े।

१ दोनतर्कः चैर मेतका वपदेह। ४ मंडलीका चक देवा। ७ उस्में अनेक पद
देनें उसके एक देख स्वयं वाहन जनकेः अभिमान्। १९ अन्वयप्रेमिकोंको बनुषु
चालको स्थानान्तरका उपदेश। २८ मूल चैर चौथ चैर चैर चैर दबरचनका निवेद।

सो में जो प्रभुके लिये पंधुश्च इतने तुमसे बिन्दी करता
हूं कि जिस बुलाहरसे तुम बुलाये गये उसके योग्य चाल
चलो। अर्थात सारी दोनता चैर नमस्ता सहित चैर धी-
रज सहित प्रेमसे एक दूसरे की सह लेखा। चैर मिलाके
बंधमें चात्माकी एकताकी रचना करनेका यह करो।

जैसे तुम अपनी बुलाहरको एकही श्रामीका बुलाये
गये तेस्रहो एक देख हैं चैर एक प्रत्म। एक प्रभु एक
बिश्ववास एक वपतिसमा। एक ईश्वर चैर सभाका पिता
जो समेंपर चैर सभाके मध्यमें चैर तुम सभामें है।

परन्तु अनुयह हमारीं हर एकों श्रीस्वे दानके
परिमाणसे दिया गया। इसलिये वह कहता है कि वह
लंचर चोर को चैर बंधुश्रींको बांध लेगा चैर मनुष्योंको
दान दिये। ऐस बातको फिल्ड चोर चाका अभिमान है। यही
कि वह पहिले पृथिवीके निचले स्थानांमें इतरा भी था।
जो उतर गया साई है जो सब स्वर्गांसे ऊपर चढ़ भी गया। १०
कि सब कुछ पूर्ण करे। चैर उसने ये दान दिये चारात् ११
जबलें हम सब लेग विभावसकी चौर ईश्वरके पुनः ज्ञानकी एकतालों न पहुँचें चौर एक पूरा मनुष्य न होा जायें चौर ज्ञानकी पूर्णताकी होने परिमाणलों न 92 बारें। तबलें उसने पत्रिका लेगांकी पूर्णताकी कारण सेवकारेंको कम्प्यें लियें चौर ज्ञानकी देहके सुधारनेंको लियें।
93 जितनेंको प्रेजित करके चौर जितनेंको भाव्यदृढ़ता करके चौर जितनेंको सुसमचार प्रचारक करके चौर जित-
94 नंकी रखवाले चौर उपदेशक करके दिया। इसलिये कि हम आग बालक न रहें जो मनुष्यकों उगाइतारी चौर भ्रमकी जुगतः बांधनेकी चटुराईसे द्वारा उपदेशकी हर एक बयारसे नहराते चौर इधर उधर फिराये जाते हैं।
95 परन्तु प्रेममें सत्यतासे चलते हुए सब बतातेंमें उसके ऐसे 96 बनते जाएं जो सिर है अर्यात ज्ञानी। जिससे सारा देह एक संग जुटकी चौर एक संग गठके हर एक परस्य उपकारी गठके द्वारसे उस कार्यके अनुसार जा हर एक अंशके परिमाणसे उसमें किया जाता है दौकी बढ़ता है कि वह प्रेममें अपनेको सुधारे।
97 सा में यह कहता हूं चौर प्रभुके साध्यात उपदेश करता हूं कि तुम लेग आग फिर ऐसे न चलो जैसे चौर चौर अन्यतरीको लेग अपने मनकी अन्यरी रीतिपर चलते
98 हैं। कि उस अज्ञानताके कारण जो उसमें है चौर उनके मनकी चटारताके कारण उनकी बुद्धि अधिकारी हुई हैं
99 चौर वे ईश्वरके जीवनसे नियारे किये हुए हैं। चौर उन्होंने खेद रहित होके अपनेतर हुए लुप्तसे किया दिया है। कि सब प्रभारका अशुद्ध कम्पी जालसासे किया करें।
परन्तु तुमने खोजकर इस रीति से नहीं सीख लिया है। २० जो ऐसा है कि तुमने उसीकी सुनी शैर उसीमें सिखाये २१ गये जैसा यहीम तदाव नहीं है। कि उनकी चाल चलनके २२ विषयमें पुराने मनुष्यत्वके जो भरमानेहारी कामना-श्रोंकी अच्छाई भ्रू होता जाता है उत्तर रखे। शैर २३ जो अपने मनके शान्तिक स्वभावसे नये होते जाऊँ। शैर २४ जो मनुष्यत्वके पहिन लेखा जो इंग्लीज़के समान सत्यानुसारी धम्मे शैर परिवर्ततामें सजा गया।

इस कारण मूलके दूर करके हर एक अपने पढ़ावी- २५ बेसापह तत्त्व बोला करो कि क्योंकि हम लोग एक दूसरे के बंग हैं। प्राण करे पर पाप मत करो। सूर्य तुम्हारे २६ कोपपर अस्त न होवे। शैर न शैतानको ठांब देंगो। २७ शैरी भर्तनेहारा जब शैरी न करे बरन हायसे २८ भला कार्य करनेमें परिश्रम करे इसलिये कि जिसे प्रयोग हो उसे बांट देनेकी कुछ उस पास होवे। शैर बचन तुम्हारे सुंहसे न निकले परन्तु २८ जहाँ जैसा ज्ञानशक्त है तहरा जो बचन सुधारनेके लिये ज्ञान हो संग मुख्ते निकले कि उससे सुनने-हारिको अनुग्रह मिले। शैर इंग्लीज़के पवित्र शान्ति- ३० जो जिसते तुमपर उदारके दिनके लिये चाप दिंदै गईं उदास मत करो। सब प्रकारकी कड़वाहट शैर ३१ शैर शैर शैर बलह शैर निन्दा समस्त बैरीबाह समेत तुमसे दूर किनें जाय। शैर शाहसमें कुपल्ल इं शैर बहुतामय होचो। शैर जैसे इंश्वरके खोजुमें तुम्हें खुमा दिया तैते तुम भी एक दूसरे को छुमा करो।
१ पांचवा पाठ ।

१ ३ प्रेमवरके प्रनुगामी होणेका उद्वेद । २ प्रजापति कर्म होते प्रन बलकने निवेद ।
२ विस्मयात जोगे ही कोटिके सत्यनरे चौकाले पांडवांसर्के प्रनाविके आभावसतः । १५ विसर्जने चलले प्रेम धनवदाय दरके उद्वेद । २२ स्वतःके प्रेम गुरुभरेचे लिये उद्वेद होते प्रेम गुरु योऽगुरु प्रेम उसके हंगलीने दृष्टान्ते उनके सम्बन्धका वरेन ।

१ सो व्यायात बालकांके नाईं इंद्रवरके प्रनुगामी हात्री ।
२ प्रेम गुरुबळे जेली कः लोषणे भी हसते प्रेम लिया होते प्रेम हमारे लिये रसपणा के इंद्रवर/ प्रेम चढावा होते प्रेम बलिदान करके सुगंधकी वासके लिये सांप दिया ।
३ होते प्रेम जैसा कि पवित्र लोगांके योग्य हे तैसा ब्यभिचारका होते प्रेम सव प्रकारका प्रजाशुद कर्म्मका ज्ञाना लोभ- ४ का नाम भी तुमहींमें न लिया जाय । होते प्रेम न निल- ज्ञानका महत्ताकी बातचीतका ज्ञाना ठेटका नाम कि यह बात सोहती नहीं परन्तु (ह्यवरे) सुना ५ जाय । किंतु तुम यह जाणते हो कि किसी ब्यभिचारीकी ज्ञाना श्रेष्ठ मधोजी का ज्ञाना लभ्य ही मनुष्यका जो मातृस्वाध हे लोषण होते प्रेम इंद्रवरके राज्यमें आधिकार ६ नहीं है । किंतु तुमहींका ज्ञाना वातोऽसे धारा न देवे किंतू किंतू यह राज्यमें आधिकारका ईश्वरका तथा शास्त्रा लंघन करने-
७ हारींपर पड़ता है । सो तुम उनके संग भागी मत होऽती है ।
८ किंतू किंतू तुम भागी आधिकारका ईश्वरका पर जर ज्ञाने ९ उद्वेदके ज्ञाने सत्यसंसारी नाईं प्राप । किंतू किंतू सब प्रकारका भलाईं ही भर्म्म ही सत्यसंसारी आत्माका १० फल होता है । होते प्रेम प्रजाशुद का भावता है ।
११ होते प्रेम आधिकारके निषिद्ध कार्यांमें भागी मत होऽती
परन्तु चौर भी उनपर टांग देखौ। क्यांकि जो कभी १२ गुरुओं उनसे किये जाते हैं उनहें कहना भी लाजकी बात है। परन्तु सब कभी जब उनपर टांग दिया जाता १३ है तब ज्योति प्रगट किये जाते हैं क्यांकि जो कुछ प्रगट किया जाता है सा उज्ज्वला होता है। इस १४ कारण वह कहता है है सानेहारे जाग चौर मृतकोंमें उठ चौर ख्रीष्णु तुम्हें ज्योति देगा।

सा चैकस रहा कि तुम क्यांकर यहसे चलते हो। १५ निर्भूतियोंकी नाई नहीं परन्तु बुद्धिमानोंकी नाई से चला। चौर अपने लिये समयका लाभ करो क्यांकि ये दिन १६ बुरे हैं। इस कारणसे क्यांकर सत्य रहे हैं परन्तु समस्त प्रभुकी दुश्मा क्या है। चौर दाख रसी मतवाले १८ वर्ष होस्से जिसमें लुचपन होता है परन्तु आत्मासे परिपूर्ण होस्से। चौर गोत्वा चौर भजनों चौर आत्मिक १८ गानोंमें एक दूसरसे बातें करो चौर अपने अपने मनमें प्रभुकी अगे गान चौर कठिन करो। चौर सदा सब २० वातांको लिये हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्णकी नामसे इंश्वर पिताका धन्य मानो। चौर इंश्वरके भयसे एक दूसरके २१ श्रद्धिन होस्से।

हे स्त्रिया जैसे प्रभुकी तैसे अपने अपने स्वामीकी २२ श्रद्धिन रहो। क्यांकि जैसा ख्रीष्णु मंडलाका सिर है २३ तैसा पुरुष भी स्त्रीका सिर है। वह ता देखका चाषण- २४ करता है तैभी जैसा मंडली ख्रीष्णके श्रद्धिन रहती है जैसे स्त्रियां भी हर बातमें अपने अपने स्वामीके श्रद्धिन रहें। हे पुराण अपनी अपनी स्त्रिया ऐसा चार श्र
करो जैसा ख्रीषूनि भी मंडलीको यार किया श्रीर अपने-सदा भी उसके लिये सांप दिया . कि उसके बचनके द्वारा जय जलके सानते शुद्ध कर पवित्र करे . जिस्ते वह उसे अपने क्षागे मयान्त्रिक मंडली खड़ा करे जिसमें कलांक अथवा भूरी अथवा ऐसी ओराई बस्तु भी न हावे परन्तु जिस्ते पवित्र श्रीर निर्यास होवे । यूही चिति है कि पुरुष अपनी अपनी स्तोत्रा अपने अपने देहके समान यार करें । जा अपनी स्तोत्रा यार २५ नरता है सा अपनकी यार करता है । क्योंकि तिसीने कभी अपने शरीरसे बैर नहीं किया परन्तु उसका ऐसा पालता श्रीर पासता है जैसा प्रभु भी मंडलीको पालता पासता है । क्योंकि हम उसके देहके शंग हैं अथवेत उसके मांसमके श्रीर उसकी हठ्यांती हैं । २१ इस हेतुम हमने मनुष्य अपने माता पिताको छोड़के अपनी स्तरी यिला रहेगा श्रीर वे दोनों एक तन होंगे । २२ यह भेद बड़ा है परन्तु में तो ख्रीषूके श्रीर मंडलीके विशयमें कहता हूं । पर तुम भी एक-एक करके हर एक अपनी अपनी स्तोत्रा अपने समान यार करो । श्रीर स्तोत्रा उत्तित है कि स्वामीको भय माने ।

ई छठवां पद ।

१ पुष्य श्रीर पिताके लिये उपवेष । ५ दाताओं श्रीर स्वामियोंके लिये उपवेष । १० धर्माको हार्ज धर्मके इच्छारूपे लहरनका श्रीर प्रापापा करनका उपवेष । १९ भाष नमककी भेजनका कारक । २३ प्रश्नोंकी समाप्त । ।

१ हे लद्दके प्रभुमें अपने अपने माता पिताकी सांज्रा । २ मानो क्योंकि यह उत्तित है । अपनी माता श्रीर पिताका आदर कर कि यह प्रतिब्द सहित पहली
भाषा है। जिसे तीरा मला है श्रीर तू भूरिप बहुत २
दिन जीवे। श्रीर हे पिताश्री असप असप लड़केें है ४
श्राध मत करवाश्री परलू प्रभुकी शिखा श्रीर चित-
तावनी सहित उनका प्रतिपालन करो।

हे दास। जी लाग शरीरके अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं ५
हरते श्रीर काँपते हुए असप मनकी सीधांसे जस्ते
खोख्रू़िके तीसे उनकी भाषा माना। श्रीर मनुष्यांकी प्रसन
रामनेह रामकी नाई मुह देखी सेवा मत करा परलू खोपु-
क्री दासकी नाई अन्तःकरणसे इंश्वरकी इच्छापर भला।
श्रीर समातिते सेवा करो माना तुम मनुष्यांकी नहीं ६
परलू प्रभुकी सेवा करते है। क्षणिक जानते है। क्षि
जी कुछ हर एक मनुष्य भला करेगा इसीका फल वह
भाये दास हो चाहे निर्विन्य हो प्रभुसे पावेगा। श्रीर ७
है स्वामियो तुम उस्हंसे वैसाही करो श्रीर धरकी
मत दिया करो क्षणिक जानते है क्षि स्वर्गमें तुम्हारा
भी स्वामी है श्रीर उसके यहां पद्धपात नहीं हैं।

शान्तमें हे मेरे भाष्या यह कहता हूँ कि प्रभुमें श्रीर १०
उसकी शक्तिके प्रभावमें बलबन्त हो रहिये। इंश्वरके ११
सम्पूर्ण हृदयार बाँध लेजी जिस्ते तुम श्रैतानकी जुगतां-
के सामहने खड़े रह सको। क्षणिक हमारा यह युद्ध १२
लाहू श्री मांससे नहीं है परलू प्रधानांसे श्रीर श्रिष्का-
रियांसे श्रीर इस संसारके संधकारके महाराजासेिंसे
श्रीर श्राकाशकी दुघताकी आत्मिक सेनासे। इस १३
शारणसे इंश्वरके सम्पूर्ण हृदयार ले लेजी कि तुम बुरे
दिनमें सामहना कर तकी श्रीर सव कुछ पूरा करके खड़े
14 रह सका। सै अपनी कमर सब्राईसेकसके शैर धम्मेकी
15 फ़िलम पाहिंको। शैर पांवांमें मिलापके सुसमाचारको
16 तैयारिके जूते पाहिंको खड़े रहा। शैर सभीके ऊपर
विश्वासको दाल लेशा जिससे तुम उस दुग्धके सब
17 आठबांनांको बुका सकोगी। शैर चाहका टाप लेशा
18 शैर आत्मा का ख़ुद जो ईश्वरका बचन है। शैर सब
प्रभारकी प्रार्थना शैर बिन्तीसे हर समय आत्मामें
प्रार्थना किया जाेरा शैर इसीके निमित समस्त स्थिरता
सहित शैर सब पवित्र लेगांकी लिये बिन्ती खर्च हुए
19 जागते रहा। शैर मेरी लिये भी बिन्ती करा कि मुम्मी
अपना मुंह बोलनेके समय बोलनेका सामग्री दिया जाय
क्योंकि में साहससे सुसमाचारका भेद बताज्ञ जिसकी लिये
20 में जंगीरसे बंधा हुआ दूत हूं। शैर कि में उसके विश्वासमें
साहससे बात कहूँ जैसा मुम्मी बोलना उचित है।
21 परन्तु इसलिये कि तुम भी मेरी दशा जाने। क्योंकि
में शैरा रहता हूं। तुमका जो प्यारा भाई शैर प्रभुमें
विश्वासयोग्य संबंध है तुम्हें सब बातें बतावेगा।
22 कि में उसे इसीके निमित तुम्हारे पास भेजा है कि
तुम हमारे विश्वासमें बातें जाने। शैर बह तुम्हारे
मनका शांति देवे।
23 भाईंका ईश्वर पितासे शैर प्रभु यीशु खोजुते
24 शांति शैर प्रेम विश्वास सहित मिले। जो हमारे
प्रभु यीशु खोजुते सहाय प्रेम रखते हैं उन सभीकर
क्षण फहे। अमीन॥
फिलिपीयोंका पावल प्रेषितकी पत्री।

1 पाहिला पखण्ड।

1 प्रथीका ब्राम्हा। 2 पावलिपिके विवरणं पावलका प्रश्नावाद श्री प्रार्थना। 12 पावलके क्रेजके कारण सुसमाचारका प्रमाण करके प्रभारकार किया जाना। 15 अपने विवरणं श्री बोलते यथा मरते पावलकी दुभ्रु ब्राम्हा। 27 सुचाल श्री दुहुँकारा उपदेश।

पावल श्रीर तिथिप्ययं जा यीशु ख्रीष्टके दास हैं 1 फिलिपीयों मे जितने लोग ख्रीष्ट यीशुमें पवित्र लोग हैं उन सभीका मंडलीके रखवालों श्रीर सेवकों समेतः तुम्हें हमारे पिता ईश्वर श्रीर प्रभु यीशु ख्रीष्टके अनु- 2 यह श्रीर शांति मिले।

में जब जब तुम्हें संयज करता हूं तब अपने 3 ईश्वरका धन्य मानता हूं। श्रीर तुमने पाहिले दिन- 4 से लेकी जबलों सुसमाचारके लिये जा सहायता किया है। उससे ज्ञानं करता हुआ नित्य अपनी हर ग्रह प्रार्थना में तुम सभीके लिये विली करता हूं। श्रीर इसी वातका सुखे भरता है जो जिसने तुम्हें 6 ज्ञान काम आरंभ किया है। यीशु ख्रीष्टके दिनलों उसे पूरा करेगा। जैसे तुम सभीके लिये यह साचना मुखी उचित है इस कारण कि मेरे बंधनमें श्रीर सु- समाचारके लिये उत्तर श्री प्रमाण देनेमें तुम्हें मनमें रखता हूं कि तुम सब मेरे संग अनुयाहके भागी है। क्योंकि ईश्वर मेरा सालिशी है कि यीशु ख्रीष्टके सी वाहण्डे में क्योंकि तुम सभीके जाउसा करता हूं। श्रीर मैं यह रात्रि प्रार्थना करता हूं कि तुम्हारा प्रेम ज्ञान 6
१० बढ़ता जाय यहां लिंग तुम विशेष बातांकिया परखा जिससे तुम झीपुकी दिन्नों निष्कापर रहा शैल जी के ना ११ खावा शैल घरम्मके फलांसे परिपूर्ण हाँ जिससे यीतु झीपुकी द्वारा ईश्वरकी महिमा शैल स्थापि होती है। १२ पर है भाइयो में चाहता हूं कि तुम यह जाना कि मेरी जी दशा हुई है उससे सुसमाचारकी बढ़तीही १३ निकली है। यहां लिंग तुम सारे राजभवनमें शैल शैल सब लोगांपर मेरे बंधन प्रगट हुए हैं कि झीपुकी के लिये १४ हैं शैल जो प्रभुमें भाई लोग हैं उनमें से बहुतेरे मेरे बंधनांसे भरोसा पाके बहुत अधिक करके बचनाको १५ निभय बालनेका साहस करते हैं। कितने लोग डाह शैल बैरके कारण भी शैल कितने सुमतिके कारण १६ भी झीपुकी प्रचार करते हैं। वे ते सलवताले नहीं पर बिराधपूरे झीपुकी कथा सुनाते हैं शैल समझते हैं १७ कि हम पावलके बंधनांमें उसे झीं म्हे कहें। परलु ये तै। यह जानके कि पावल सुसमाचारकी लिये उत्तर १८ देनेको ठहराया गया है प्रेमसे सुनाते हैं। ता का हुस्ता। तैभी हर एक रोकिते चाहे बहानाते चाहे सबकारें झीपुकी कथा सुनाइ जाती है शैल में इससे अनुभव करता हूं शैल अनुभव कहंगा भी। १९ कींकिसे में जानता हूं कि इससे तस्मारी प्राप्तनाके द्वारा शैल यीतु झीपुकी आत्मकी दानके द्वारा मेरी प्रत्याशा शैल भरोसेके अनुसार मेरा निस्तार है २० जायगा। अधैत यह भरोसा कि में किसी बातमें
कल्जितः न हॊंगा परन्तू ख्रीष्वृकी महिमा सब प्रकारके साहसकी साथ जैसा हर समयमें तैसा च्रव भी मेरे देखमें चाहेजीवनके द्वारा चाहेमृत्युके द्वारा प्रगट किङ्के जायगी। क्योंकि मेरे लिये जीना ख्रीष्वृकी है भृंगर २१ मरना लाभ है। परन्तू यदि शरीरमें जीना है यह मेरे लिये कार्यका फल है भृंगर में नाहीं जानता हूँ में क्या चुन लेजांगा। क्योंकि में इन दो बातोंके सबलेमें हूं २३ कि सुके उठ जाने भृंगर ख्रीष्वृकी संग रहनेका अभिलाभ है क्योंकि यह भृंगर बहुत जल्हा है। परन्तू शरीरमें २४ रहना तुम्हारे कारण अधिक ज्याद्यक है। भृंगर सुके श्रे इस बातका निन्जखय होनेसे में जानता हूं कि में रहूँ गा भृंगर विश्वासमें तुम्हारी बहुती भृंगर खान्दके लिये तुम सभींके संग उहर जांगा। इसलिये कि मेरे फिर २५ तुम्हारे पास खानेके द्वारासे मेरे विषयमें ख्रीष्वृकी यीशुमें बढाई करनेका हेतु तुम्हें आधिक होगे।

केवल तुम्हारा ज्ञान ख्रीष्वृकी सुसमाचारके यास्य २७ होवे कि में चाहेजीवनके तुम्हें देखूँ चाहेतुमसे दूर रहूं तुम्हारी विषयमें यह बात सुनूँ कि तुम एकही ज्ञात्मामें दुवः रहते हूँ। भृंगर एक मनसें सुसमाचारके विश्वासके लिये मनोकी साहस करते हो। भृंगर विरोधियंते तुम्हें २८ किसी बातके दर नाहीं लगता है जो उनके लिये ता बिनाशका प्रमाण परन्तू तुम्हारे लिये निस्तारका प्रमाण है भृंगर यह देखवकी भारसे है। क्योंकि ख्रीष्वृकी लिये यह २५ बरदान तुम्हें दिया गया कि न केवल उसपर विश्वास करौ। पर उसके लिये दुःख भी उठावा। कि तुम्हारी ३०
वैसी ही लड़ाई है जैसी तुमने मुक्तमें देखी शीर जब
मुनते हो तो कि मुक्तमें है।

२ दूसरा पढ़ें।
१ प्रेम और नवताका उपवेष। ५ प्रभु योगसेनी नवता और महिमाका वश्वाण। १२
पावलका भाषादीता श्रद्धा प्राप्त करने और अगलम स्थायी सीता दोनों विवाहमें
समकाला। १५ सिसेरियों भें बेनेका विवाह। २५ भ्रामर्रतों भें भें विवाह।

१ सो यदि खीरूमें कुछ शांति यदि प्रेमसे कुछ समाधान
यदि कुछ शांताको संगति यदि कुछ कहणा श्री दया
२ है। तो मेरे श्रान्तका पूरा करो कि तुम एकसां मन
रखें श्रीर तुम्हारा एकही प्रेम एकही चित एकही मत
३ है। तुम्हारा कुछ विरोधका साधना घमंडका मत न
है। परन्तु दीनतासे एक दूसरीका अपनेसे बड़ा सम-
४ फी। हर एक अपने अपने विषयोंका न देखा करे।
परन्तु हर एक दूसरीके भी देख लेवे।

५ तुम्हें ही मन है। जो खीरू मीथुमें भी था।
६ जिसने इंश्वरके रुपमें होके इंश्वरके तुल्य होना। डैकीटी
७ न समका। परन्तु अपने तत्त्व होन करने दसका रूप
८ धारण करिया श्रीर मनुष्योंका समान बना। श्रीर मनुष्य-
केसे डैलपर पाया जाके अपनेखी दीन किया श्रीर मृत्यु-
९ लां हां कृशकी मृत्युओं खाजाकारी रहा। इस कारण
इंश्वरने उसको बहुत जंगा भी किया श्रीर उसको वह
१० नाम दिया। जो सब नामेंसे जटु है। इसलिये कि जो
स्वर्गमें श्रीर जो पृथ्वीकर श्रीर जो पृथ्वीके नीचे हैं
उन समेंका हर एक घरना मीथुमें नामसे मुक्ताया जाय।
११ श्रीर हर एक सजीव भी मान लिया जाय कि यीषु खीरूही
प्रभु है जिससे इंश्वर पिताका गुखानुबाद है।

75
सा है मेरे प्यारे जैसे तुम सदा ज्ञानकारी हुए ११
तब अब मेरे तुम्हारे संग रहूँ। क्योंकि उस समय नहीं परन्तु मैं जो आदित्य तुमसे हार हूँ। तुम मेरे कारण इतनी तुम्हारे दिसा जानकारी निवाह हो। क्योंकि इतिहास में जो अपनी सुधौना निमित्त १३
tुम्हारे से देखा चैत्र भार्य भी करवाता है। जब क्राम १४
बिना कुदकुड़ापरे चैत्र बिना विवादसे किया करे। जिसमें १५
tुम निरुप चैत्र सुधौना बना चैत्र तेज़ चैत्र हटती लोगे
चैत्र में इत्तरके निश्चलकु पुष्प हो जाए। जिन्हें के बीचमें १६
tुम जीवनका बचन लिये हुए जगतमें ज्योतिर्घारियाँ की
नाई आजमकि हों कि मुझे ख़ूबसूने दिनमें बढ़ाई करनेका
हेतु हाय जि मैं न वृथा तैयार न वृथा परिप्रेम किया।
बरन जो मेरे तुम्हारे दिसा के बालिडान चैत्र से वकाई- १०
पर दाला जाता हूँ। तभी मैं ज्ञानित हूँ। चैत्र तुम
भी मेरे संग मेरे संग ज्ञानित करता हूँ। वैसी कैसे तुम
भी मेरा संग मेरा संग ज्ञानित करो।

परन्तु मुखे प्रभु यीशुमें भरोसा है कि मैं तिमाहिथिके १६
श्रीप्रभु तुम्हारे पास भेजूगा जिसमें मैं भी तुम्हारी दशा
जानके हार्दूस पाऊँ। क्योंकि मेरे पास कोई नहीं है २०
जिसका मेरा ऐसा मन है। जो सज्जाईं तुम्हारे विषयमे
चिन्ता करेगा। क्योंकि सब आपनेही आपनेही लिये २९
गठ करते हैं। खेलौना यीशुमें लिये नहीं। परन्तु उसको २२
tुम परखके जान चुके हो। कि जैसा पुष्प लिये। संग तैसे
तने मेरे संग सुसमाचारके लिये सेवा किये। से मुखे मैं
भरोसा है कि ज्योंही मुखे देख पड़ा कि मेरी का दशा
२४ होगी त्यांहीं मैं उसीको तुरंत में ज़ुंदा। पर मैं प्रभुमें भरोसा देखता हूँ जिसे मैं भी अपनी शीघ्र ज़ालंडा।

२५ परन्तु मैंने हपाफ़रदीका जी मेरा भाई शैर सहकर्मी शैर संगी बेटा पर तुम्हारा तूट शैर आवश्यक बातों मेरी सेवा करनेहरा है तुम्हारे पास भेजना नीचे आवश्यक समक्ष। क्योंकि वह तुम सभीको लाससा करता था शैर बहुत उदास हुआ इस्लाइये कि तुमने २५ सुना था कि वह रोगी हुआ था। शैर वह रोगी लो ज़ुंदा यहाँ कि मरनेके निकट था परन्तु इंध्वरने उसपर दया किंवेश्वर शैर क्वल उसपर नहीं। परन्तु मुक्तपर २५ भी जिस मुखी श्रीकपर श्रीक न होवे। तो मैंने उसको शैर भी यद्यपि भेजा कि तुम उसे फिर देखके शानन्दितः २५ होशी शैर मेरा शीक गढ़े। तो उसे प्रभुमें सब प्रकारके शानन्दये यहय करी शैर ऐसे जनाको शादर येग। ३० समहर। क्योंकि खौफोंके कार्यमिनित वह अपने प्रायम-पर जेबिम उठाके मरनेके निकट पहुँचा इस्लाइये जि मेरी सेवा करनेमें तुम्हारी घटीको पूरी करी।

३ तीसरा पाठ।

१ शारीरिक कक्षामें भाषा रखनेका निमित जैसे प्राचीनका त्यागको श्रीक श्रीक खमेणका भए कहे। १२ प्रभुमें बड़े जानेको बेटेका इवोग। १४ नारायणिक कक्ष वैविकिक विवेक प्रकाशके प्रमुखजी खमेणको निषेध प्रायम।

१ जनसमें है भेरे भाईयो यह कहता हूँ कि प्रभुमें शानद्रतित रहो। वही बात तुम्हारे पास फिर लिखनेमें मुखी २ कुछ दुःख नहीं है। शैर तुम्हें बचाव है। कुछ समें चैकस रहे दुःख कक्षामारियोंसे चैकस रहे। कार्टून हुज़ौमें से चैकस ३ रहे। क्योंकि खतना खिये हुए हम हैं जो शामासे
श्रीरबरबी सेवा करते हैं श्रीर ख्रीष्ठु यीगुक्ति विख्यात बड़ाई करते हैं श्रीर भरोसा शरीरपर नहीं रखते हैं। पर मुक्ति ८
तो शरीरपर भी भरोसा है। यदि श्रीर काई शरीरपर
भरोसा रखना बचत जानता है में श्रीर भी। कि उत्तरें
दिनका खतनाकिया हुआ रास्यियके बंज्जका बिन्यामीन-
के कुलका इत्सिय्र में इही है ब्यवस्थाकी कहा तो
फरीशी। उन्नयोगकी कहा ता मंदलीका सतानेहारा
ब्यवस्थामें घम्मे कहा ता निर्राय हुआ। परन्तु
जो का चार्ते मेरे लेबे लाभ शी उन्हें मैने ख्रीष्ठुकी कारण
हानि समकी है। हाँ सच्चमुख अपने प्रभु ख्रीष्ठु यीगुक्ति
झानकी श्रृष्टकी कारण में सब चार्ते हानि समक्ता
भी हूं श्रीर उसकी कारण मैंने सब बस्तुण्डकी हानि
उठाइ। श्रीर उन्हें कृपासा जानता हूं कि मैं ख्रीष्ठुका
प्राप्त काहं। श्रीर उसमें पाया जांजः ऐसा कि मैरा
अपना धम्मा जो ब्यवस्थासी है सा नहीं परन्तु वह धम्मे
जा ख्रीष्ठुकी बिश्वासके द्वारसे है मुक्ति हो। जिस्तें में ख्रीष्ठुका
१०
श्रीर उसकी जी उठनेकी शक्तिका श्रीर उसकी दुःखिंकी
संगतिका जानुं श्रीर उसकी मृत्युकी सत्रुश किया जांजः।
जा में किसी रॉवीति मृतकोंके जी उठनेका भागी हो जांजः। ११
यह नहीं कि मैं या चुका हूं अच्छवा सिद्ध हो। चुका हूं १२
परन्तु मैं पीछा करता हूं कि कहां उसको पकड़ लेऊं जिसके निमित में भी ख्रीष्ठु यीगुके पकड़ा गया।
हे भाईया में नहीं समक्ता हूं कि मैंने पकड़ लिया १३
ही परन्तु एक काम में करता हूं कि पीछेरी बातें तो।
भलता जाता पर झागेकी बाति की चीर स्परता जाता ।
94 हूँ । चीर ऊपरकी बुलाहट जै स्त्रीपु गीतमे इंशवरकी चीरसे है मंडा देखता हुआ उस बुलाहटकी जवफलका ।
95 पीछा करता हूँ । तो हममें जितने सिद्द हैं यही मन रखें चीर यदि किसी बातमें तुम्हें चीरही मन में हटा तो इश्वर यह भी तुम्हारे प्रति करेगा । तैभी जाहांना हम पहुँचे हैं एकही विचित्र मन चलना चीर एकाइ मन खराब कर चाहिये ।
97 है भाईयो तुम मिलके मेरीसीचाल चलो चीर उनहें देखते रहा जो ऐसे चलते हैं जैसे हम तुमहारे लिये ।
98 दृष्टान्त हैं । क्योंकि बहुत लोग चलते हैं जिनके विषयमें मैंने बार बार तुम्हें कहा है चीर सब रोता हुआ भी कहता हूँ कि वे झरीपुकी कृषकी बैरी हैं । जिनका अन्त बिनाश है जिनका इश्वर पेट है जै अपनी लजापर बढ़ाई करते हैं चीर पृथिवीपरकी बस्तु श्रोण्यांपर मन लगाते हैं । क्योंकि हम तो स्वर्गकी प्रजा हैं जहांत हम चाहकतात ।
99 की अर्थात प्रभु यीशु मस्त्रीपु की बात भी जाह्निते हैं । जै उस कार्यकी अनुसार जिस करके वह सब बस्तु श्रोणीकी अपने बशमें कर सकता है हमारी दीनताके देखका रूप बदले हाले कि वह उसके ऐश्वर्यके देखके सदुःसिन हा जावे ।
8 चौथा पाठ ।
1 चपरके चच्चवासकी समाप्त । 2 कहती विशेष बहिनताक साधन । 3 वारी मंडलिके लिये उपवेश । 4 पाञ्जाबकी वदायता करते हैं विश्वमें उनका बखान ।
97 पुरोके समाप्त ।
97 सा है मेरे प्यारे चीर अभिलेखांत माहौँ मेरे ज्ञानद चीर मुकुट पूंही है प्यारा प्रभुमें ढूंढ रहा ।
मैं इच्छादियासे बिनती करता हूँ स्वार सुतुष्किसे बिनती करता हूँ कि वे प्रभुमें एकसां मन रखें। स्वार है सच्चे संपाती में तुमसे भी बिनती करता हूँ इन स्त्रियोंकी सहायता कर जिन्होंने होमिसे साथ भी स्वार मेरे स्वार सहकर्मियोंकी साथ जिनके नाम जो वनके पुस्तकमें हैं मेरे संग सुतमाचारके विषयमें मिलके साहस किया।

प्रभुमें सदा ज्ञानद करै। मैं फिर कहूँगा ज्ञानद करै। तुम्हारी मदुटा सब मनुष्योंपर प्रगट होवे। प्रभु निकट है। किसी बातमें चिन्ता मत करै। परन्तु हर एक बातमें धन्यवादकी साथ प्रार्थनासे स्वार बिनतीसे तुम्हारे निवेदन इंतजरको जनाये जावैं। स्वार इंतजरकी शांति जो समस्त ज्ञानसे जटू है स्रोत्य यौगुम में तुम लोगोंकी हृदय स्वार तुम लोगोंके मनको रक्षा करेगी।

ज्ञानमें है भावीय यह कहता हूँ कि जो जी बात्सत्य हैं जो जी ज्ञानयोग्य हैं जो जी यथार्थत हैं जो जी शुद्ध हैं जो जी सुहावनी हैं जो जी सुख्यात हैं काई गुप्त जी हाय स्वार काई यश जी हाय उनकी बातोंकी चिन्ता करै। जो तुमने सीखों भी स्वार यह हैं की स्वार सुनी। स्वार मुख्यमें देखी वही बात्सत्य किया करै। स्वार शांतिका इंतजर तुम्हारे संग होगा।

मैंने प्रभुमें बड़ा ज्ञानद किया कि मेरे लिये लेख करनें। मैं तुममें तुम मनोक भी फिर पन्ने स्वार इस बातका तुम सीखें बाते मे पर तुमंत्र अवसर न या। यह नहिं कि मैं १९ द्वितीयके विषयमें कहता हूं कीजें हुमें सीख चुका हूं बिंके जिस दशमें हूं उसमें सन्तोष कहूँ। मैं दीन होने जानता १२
हूं में उभरने भी जानता हूं में सब्जेक्स शैर सब बातें में
तूफ होलोका शैर भूखा रहनेको भी उभरनेको शैर
13. दरिंद होलोका भी सिबाया गया हूं में खबूरूमें जा मुफ्दी
14. सामर्थ देता है सब कुछ कर सकता हूं। तैभी तुमने
15. भला जिया जो मेरे श्रेष्ठ मेरी सहायता किये। शैर है
फिनिपीयो तुम यह भी जाना कि सुसमाचार के शार्म बने
जब मैं माफकिरानियासे निकला तब देने लेने विषय में
किसी मंडलीने मेरी सहायता न किये पर केवल ममहीने।
16. व्यापक बिस्लोचनिकामें भी तुमने एक बेर शैर दो बेर
17. भी जो मुफ्दी श्राद्धक या सा भेजा। यह नहीं जिमं मैं दान
चाहता हूं पर मैं वह फल चाहता हूं जिससे तुमहारे निय-
18. मित्र अद्वितलाभ होवे। पर मैं सब कुछ या चुका हूं
शैर मुफ्दे बहुत है। जो तुमहारी शायरे श्राया मानो
सुगन्ध मानो याह बलिका जा ईश्वरको भावता है
19. सोई इयाफिरातकेहाथ पावें में भरपूर हूं। शैर मेरा ईश्वर
अपने धनमें श्रुताकर महिमा सहित ख्रेष्ट यीयुरे सब कुछ
20. जो तुम्हें श्राद्धक हा भरपूर करके देगा। हमारे पिता
ईश्वरका गृहानुबाट सदा सम्बूच्छ होय। श्रामीन ।
21. ख्रेष्ट यीयुरे में हर एक पविष जनको नमस्कार, मेरे
22. संगी भाई जागेंका तुमसे नमस्कार। सब पविष
लोगेंका निज करके उन्हें जा जैसरे घरानेको हैं
23. तुमसे नमस्कार। हमारे प्रभु यीयु ख्रेष्टका अनुयाय
तुम सबोंके संग होवे। श्रामीन।
कलसीयोंका पावल प्ररतकी पत्री।

1 पहिला प्रबं ।

1 श्रीरा ज्ञानवाक्य। 2 कलसीयोंके विवरणसंर धार्मिक ध्यान। 3 हमके लिखे वस्त्रकी प्रार्थना। 45 योगुका माहात्म्य। 21 कलसीयोंपर इंद्रज्ञकी कथाका बयान। 24 खोली मतके बढ़े भेदका प्रावलपर प्रकाश किया जाना कि सभीमें प्रभाव किया जाय।

पावल जी इंद्रज्ञकी देखाते यीशु अशीता प्रीति।

है ईश भाई तिमाहिषय कलसीयोंके विवरण लागें। ईश अशीता लिखित भाइयोंका। तम्हें हमारे पिता इंद्रज्ञ ईश ईशु अशीता अशीता ईश शांति मिले।

हम नित्य तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हुए चारपने। 4 गंभीर यीशु अशीता के पिता इंद्रज्ञका धन्य मानते हैं। विवरण आमंत्रित हैं।

हमने अशीता यीशु पर तुम्हारे विवरणका ईश उस प्रेमका समाचार पाया है। जो सब विवरण लागिंसे उस आशाके गारण रहतें हैं। जो आशा तुम्हारे लिये स्वर्गमें धरती हैं।

जिसका कथा तुमने आगे सुसमाचारके सत्यताके बचनमें सुनी। जिसका कथा तुमने आगे सुसमाचारके सत्यताके बचनमें सुनी।

वह सुसमाचार जो तुम्हारे पास भी ईश ईशा और जगतमें पुंछका है। ईश फल लाता ईश बहुत है। ईशा तुमके भी उस दिनसे फलता है। उस दिनसे तुमने झुना ईश सत्यताके इंद्रज्ञका अनुयाय जाना।

जसे तुमने हमारे प्यारे संगी दास ईथारासे सीखा जो तुम्हारे लिये अशीता लिखित अशीता विवरणके संबंधमें।

ईश जिसने तुम्हारा प्रेम जी आत्मासे हमें बताया।

इस कारणमें हम भी जिस दिनसे हमने सुना उस
दिनसे तुम्हारे लिये प्रार्थना करना छैर यह मांगना नहीं छोड़ते हैं कि तुम सारे ज्ञान छैर आत्मिक बुद्धि सहित ईश्वरकी इच्छा की पहचानसे परिपूर्ण है। जिसमें तुम प्रभुके योग्य चाल चलो ऐसा तुम सब प्रकारसे प्रसन्नता हो छैर हर एक ज्ञान लामे फलवान हासी छैर ईश्वरकी पहचानसे।

90 बहू जाओ छैर समस्त बलसे उसकी महिमाबरे प्रभावकी जनुसार बलवत से जाओ यहां कि 91 ज्ञानसे सकल स्थिरता छैर धीरज दिखावा। छैर जिन पिताका धन्य मानो जिसने हम पवित्र लोगों का आधिकार जो ज्योति में है उस आधिकारकी।

93 आशाके योग्य किया। छैर हमें संधिकारके बलसे चुडाये।

94 अपने प्रियतम पुत्रके राज्यमें लाया। जिसमें उसके लेहोंके द्वारा हमें उद्दार सर्थात पापमृत्युचन मिलता है।

95 वह ता ईश्वर ईश्वरकी प्रतिमा छैर सारे सिष्ट-

96 पर पहिलोट है। किंतु उससे सब कुछ सजा गया वह जो स्वर्गमें है छैर वह जो पृथ्यीपर है दृष्ट छैर ईश्वर कया सिंहसन कया प्रभुतायं कया प्राधान- तायं कया आधिकार सब कुछ उसके द्वाराते छैर उसके 97 लिये सजा गया है। छैर वही सबके भागे है छैर

98 सब कुछ उससे बना रहता है। छैर वही देखा जय भाषोत मांहोके तिर हैं कि वह ज्ञान है छैर मृतकों- भी पहिलोट जिसमें सब वातावरे वही प्राधान 99 है। किंतु ईश्वरकी इच्छा थीं कि उसमें समस्त 20 पूर्णता बास करे। छैर कि उसके कृपणे लेहोंके द्वाराते
भिलाप करके उसीके द्वारा सब कुछ चाहि वह जा गृहिवीर है चाहि वह जा स्वरूपे है अपने से मिलायि।

श्रीर तुम्हें जो स्वागे नियारे किये हुए थे श्रीर अपनी २१ मुहिषे बुरे कष्टमें रहके बंदे थे उसने जबही उसके मांसके देहमें मृत्युके द्वारासे मिला लिया है। जिस तुम्हें २२ अपने सन्मुख पावित श्री निजलक्षण श्री निदास बड़ा करे। जो ऐसाही है जिस तुम विध्वसने नैव दिये २३ हुए ठूँढ़ रहते है। श्रीर सुसमाचार जो तुमने सुना उसकी आशासे हटाये नहीं जाते। वह सुसमाचार जो आकाशके नीचे की सारी स्बिखीमें चर्चा कर सूचित किया गया जिसका में पावल सेवक बना।

श्रीर में श्रव उन दुःखांमें जो में तुम्हारे लिये उठाया २४ हूं आन्दोलकर्ता हूं श्रीर स्वीपके बेंशेन्की जो घरी है सो उसके देहके लिये अप्रीत मंदलके लिये अपने शरीरमें पूरी करता हूं। उस मंदलके में ईश्वरके २५ भंडारीपनके अनुसार जो तुम्हारे लिये मुक्ते दिया गया सेवक बना कि ईश्वरके बचनके सम्पूर्ण प्रचार बढ़ा। अधुत उस मेदका जो बांदिसे श्रीर पीढ़ी पीढ़ी नै श्रवमें परन्तु श्रव उसके पावित लोगांपर प्रगट किया गया है। जिन्हें ईश्वरने बताने चाहा कि अन्यः २६ देशियोंमें इस मेदकी महिमाका भन क्या है अधुत तुम्हांमें स्वीपके जो महिमाका आशा है। जिसे हम २७ प्रचार करते हैं श्रीर हर एक मनुष्यको बिताते हैं श्रीर समस्त ज्ञानसे हर एक मनुष्यको सिखाते हैं। जिसि हर एक मनुष्यको स्वीपको योगसे सहु कराके
26 धारी खड़ा करें। धार इसके लिये मैं उसके उस कामयाब अनुसार जो मुझे सामयिक सहित गुण करता है उद्देश्य करके परिषम भी करता हूँ।

2 दूसरा पद।

1 कलसीयोंके विपयम नायलकी शानिलापा। 8 ब्रजूर्म धन रहनेका उपवेष। 8 वस्त्रम उनका बढ़ा अष्टीकार। 9 मिष्या भला धार वावतिका धारके परे रहनेका उपवेष।

1 कौंकि मैं चाहता हूँ कि तुम जानो कि तुम्हारे धार उनके जो लासोटिकेयामें हैं। धार जितनोंने शरीरम में रहा संघ नहीं होकर न है अनेको विषयमें मेरा
2 सितना लड़ा उद्देश्य होता है। इतिलिये कि उनके मन शांत होके धार वे प्रेममें गठ जावे जिस्ते वे ज्ञानके निश्चयका सारा धन प्राप्त करें धार इंश्वर पिताका
3 धार ख्रीष्णका भेद पहचानें। जिसमें बुढ़ि धार ज्ञानको गुप प्रभुतिका अधकी सब धारी है।
4 भी यह कहता हूँ न हो कि वह तुम्हें फुसलाऊँ 
5 बालोंसे धारा देव। कौंकि जा मैं शरीरमें तुमसे दूर रहता हूं तैबी ज्ञातमामें तुम्हारे संग हूँ धार ज्ञानद्वये तुम्हारो रीति विधि धार ख्रीष्णपर तुम्हारे विष्याक्षी के स्थिरता देखता हूँ। सो तुमने ख्रीष्ण योगुको प्रभु त्यरे
6 जैसे यथार्थ किया वैसे उसमें चला। धार उसमें 
7 तुम्हारी जड़ बंधी हुई हो। धार तुम बनते जाको धार बिष्याक्षी। जैसे तुम सिखाये गये वैसे दूष होते जाको धार धन्यवाद करते हुए उसमें बढ़ते जाको।
8 चाहक रहा कि वह ऐसा ना हो जो तुम्हें उस
तत्त्वज्ञान शिक्षा व्यर्थ थाकने द्वारा से घर ये जाय जो मनुष्यों के परम्पराओ के मतके सन्तानो संसारी के अनुसार श्रीर रंगी अनुसार नहीं है पर खोजके अनुसार नहीं है। किंतु उसमे इंद्रवृत्त की सारी पृष्ठता सत्तेह 8 बास करती हैं। श्रीर उसमे तुम परिपुरू हुय हो जो 20 समस्त प्रधानता श्रीर अधिकारका सिर है। जिसम 91 तुमने बिन हाथका किया हुआ खतना भी अर्थात शारीरिक पायेंगी देहके उतारने में खोजका खतना पाया। श्रीर बपतिस्मा लेनें मूव से संग गाड़े गये 92 श्रीर उसमे इंद्रवृत्त के कायमंकी बिज्ञासके द्वारा जिसमे उसको मूवके मस्तीमंसे उठाया संगही उठाये भी गये। श्रीर 93 तुम्हें जो अपराधियमे श्रीर अपने शारीरके खतनाहीन- तामै मुत्तक पे उसने उसको संग जिलाया कि उसने तुम्हारे सब अपराधियमों स्मार किया। श्रीर विधियांका लेख 94 जो हमारे विचार दूसरे विपरीत था मिरा डाला श्रीर उसका बीलोंसे रूपर टंकोंके मध्यमंसे उठा दिया है। श्रीर प्रधानताओं श्रीर अधिकारोंको सजाव 95 उतारके रूपर उनपर जयजयकार करके उन्हें प्रगतमं दिखाया।

इसलिये खानेमें रूपर पीनेमें रूपर पच्चे वा नये 96 बान्दके दिन वा विधासके दिनंके विधायमं कोई तुम्हारा विचार न करे। कि यह बातें अनेहारी 97 बातेंकी छहाय है परन्तु देय खोजोराही है। कोई जो 98 अपनी इन्कासे दीनताई श्रीर दूसरोंकी पूजा करनेहारा होय तुम्हारा प्रतिफल हरण न करे जो उन बातोंमें
जिन्हें नहीं देखा है घुस जाता है शैर जमने शारीरिक ।
15 ज्ञानसे वृथा फुलाया जाता है। शैर सिरका धारण
नहीं करता है जिससे सारा देह गांठा शैर बंधनसे
उपकार पाने शैर एक संग गठने ईश्वरके बदायसे
20 वढ़ जाता है। जो तुम ख्रीणुके संग संसारकी आदि-
शिशुआके शैर मर गये तो कीं कैं जैसे संसारमें जीते
हुए उन विधियाँके बश्मं हैं जो मनुष्यांकी ज्ञानांरों
21 शैर शिशुआके अनुसार हैं। कि मत ठू शैर न
22 चीख शैर न हाय लगा। बस्तुआं जो काममें लानेसे
23 सब नाश होनेहारी हैं। ऐसी विधियाँ निज दृढ़से
अनुसारकी भागसे शैर दौनतासे शैर देखिए। कष्ट
टनसे ज्ञानका नाम ता पाती हैं पर वेषुष पर ज्ञादरके
शायग नहीं केवल शारीरिक स्वभावको तूफ़ा करनेसे
लिये हैं।

3 तीसरा पढ़े।

1 ख्रीणुके संग विलये पुरुंके नेमा चाल चलनेका उपदेश। 5 चुमुतसा शैर नराधि
2 जै मठका निलेबाद। 12 दया चमा प्रेम शैर झन्डाबादके विमणमें उपदेश। 16
3 विधिम पुरुं विलये देश। 20 पुष शैर पिताके दिवे उपदेश। 22
4 दासके दिवे उपदेश।

1 सा जि तुम ख्रीणुके संग जिं उठता उपरकी बस्तु-
नानका खोज करो जहां ख्रीणु ईश्वरके दहिने हाय बेटा।
2 हुआ है। पृथिवीपरकी बस्तुआंपर नहीं परनु ऊपरकी
3 बस्तुआंपर नान लगाएँ। कींकि तुम तो मृत्यु शैर
4 तुम्हारा जीवन ख्रीणुके संग ईश्वरमें छिपाया गया है।
5 जब ख्रीणु जा हमारा जीवन है प्रगट होगा तब तुम
भी उसके संग महिमा सहित प्रगट किये जाएँगे।
इसलिये अपने अंगों को पृथिवीपर हैं व्यभिचार ५
श्री अणुदयता श्री कामना श्री कुंचकाको चैर लोभको
श्री मूर्तिपूजा है मार दाला. कि इनके कारण ईश्वरका
श्रीघ श्राव लंगन करनेहारिपर पढ़ता है. जिन्हें होंगे
बीचमें जाने जब तुम इनमें जीते थे तब तुम भी चलते
थे। पर अब तुम भी इन सब वातेंगा श्री श्राव
श्री वैरभावको श्री निन्दा श्री। गालीको अपने मुंहसे
टूर कर। एक दूसरे के भूत मत बोला कि तुमने
पुराने मनुष्यत्वको उसकी कियाखो समेट उत्तर दाला
है. चैर नयेको पहिन लिया है जो अपने सजनहारको
खुपके अनुसार ज्ञान प्राप्त करनेको नया होता जाता
है। उसमें यूनानी चैर यही कहता विचय हुआ।
चैर खतनाहीन अन्यभाषिया स्कुली दास श्री निर्नय
नहीं है परन्तु त्वरण सब कुश चैर समेंमें है।
श्री ईश्वरके चुनने हुए पवित्र चैर व्यायाम लोगेंकी
नाई बढ़ी करणा श्री कुपालुता श्री दोनता श्री नम्या
श्री धौरज पहिन लेखा. चैर एक दूसरकी सह लेखा १३
चैर यदि किसीका किसीपर दाश देनेका हेतु हाय
ता एक दूसरका धमा करो। जैसे खीघ्ने तुम्हें धमा
किया तैसे तुम भी करो। पर इन समेंकी उपर प्रेमकी
पहिन लेखा जो सिद्धताका बंध है। चैर ईश्वरकी
शाति जिसकी लिये तुम एक देहमें बुलाये भी गये
तुम्हे हुदूयमें प्रबल हाय चैर धन्य माना करो।
खीघ्नका बचन तुम्हें अधिकादिसे बसे चैर गोता १६
चैर भजना। चैर शातिमक गानों में समस्त ज्ञान सहित
एक दूसरको सिखाओ श्रीर विदारी श्रीर अनुयोह सहित अपने अपने मनमें प्रभुको श्रागे गान करो।
17 श्रीर बचनसे अथवा कम्मसे जा कुछ तुम करो सब काम प्रभु योजुके नामसे करो श्रीर उसके द्वारसे इंशर्वर पिताका धन्य मानो।
18 हे स्तियो जैसा प्रभुमें साहता है तैसा अपने अपने
19 स्वामीके अधीन रहो। हे पुरूषो अपनी अपनी स्त्रीको प्यार करो श्रीर उनकी श्रीर क़ब्रे मत होछो।
20 हे लड़की सब बाततां में अपने अपने माता पिताकी
21 जाड़ा मानो। क्यांकि यह प्रभुका भावता है। हे पिताखी अपने अपने लड़कीका मत बिजाखो न हो कि वे उदास होवें।
22 हे दास। जा लोग शरीरकी अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं मनुष्योंका प्रत्य प्रनेहरांकी नाईं मुंह देखी सेवासे नहीं परन्तु मनकी सोधाईसे इंशर्वसे दर्ते हुए
23 सब बाततां उनकी जाड़ा मानो। श्रीर जा कुछ तुम करो सब कुछ जैसे मनुष्योंके लिये सा नहीं परन्तु
24 जैसे प्रभुके लिये अन्तःकरणसे करो। क्यांकि जानते है कि प्रभुसे तुम अधिकारका प्रतिफल पाओगे
25 क्यांकि तुम प्रभु खोजके दास हो। परन्तु अनीति करनेहरा जा अनीति उसने फिरैं है तिसका फल पाओगा श्रीर प्रश्नपात नहीं है।

4 वीणा पब्बे।

1 स्वामियोंके लिये उपदेश । 2 प्रार्थना श्रीर गुहम चलनका उपदेश । 3 तुलचिक प्रेर
4 ज्ञानिक्षिम भावयोंके भेहरेको कारक । 5 नस्तकार शहित प्रश्नोंका उपास ।
हे स्वामीयो धन्यवादके साथ उसमें जागते रहें। जीराइसके संग हमारे लिये भी प्राथेना करें कि इंद्रि भमारे लिये बात करनेका ऐसा द्वार बाल दें कि हम ब्रीड़के भे जिसके कारण मैं वांधा भी गया हूं बाल देवें। जिसमें मैं जीखा मुके बालना उचित है वैसाही उसे प्रगट कहूं। बाहरबालंकी जीराइ बुढ़िसे चला जीराइ अपने लिये सयका लाभ करो। तुम्हारा बचन सदा अनुयह सहित जीराइ लोशे है स्वादित हीय जिसमें तुम जाने। कि हर एककी निन्द रोतिसे उतर देना तुम्हें उचित है।

तुलिका जो प्यारा भाई जीराइ विशालवन्याय सेवक जीराइ प्रभुमें मेरा संगी दास है मेरा सब समाचार तुम्हें सुनावेगा कि मैंने उसे इसके निमित तुम्हारे पास भेजा है कि वह तुम्हारे विषयमें बातें जाने जीराइ तुम्हारी मनका शांति देवें। उसे मैंने उनीसमके संग जो विशालवन्याय जीराइ प्यारा भाई जीराइ तुम्हांका है भेजा है वे यहांका सब समाचार तुम्हें सुनावेंगे।

अरिस्तव्रें जो मेरा संगी बंधुश्रा है जीराइ मास जो १० सरीबका भाई लगता है जिसके विषयमें तुमने जा जाना पाई। जो वह तुम्हारी पास सावे तो उसे पहचान करो। जीराइ यीखु जो गुस्त कहावता है इन तीनेका तुमसे ११ नमस्कार। खतना किये हुए लोगे मेरे केवल यहीं
ईश्वरकी राज्यकी लिये मेरी सहकर्मी हैं जिनसे मुझे
12 शांति हुई है। इप्राफ्स जो तुम्हारे से एक झोपूंका दास है
तुमसे नमस्कार कहता है घौर सदा तुम्हारे लिये
प्रार्थनाओं में उद्दोग करता है कि तुम ईश्वरकी सारी
13 इच्छामें सिद्ध घौर परिपूर्ण बने रहे। किंतु मैं
उसका साधी हूं कि तुम्हारे लिये घौर उनके लिये
जा लाशोदिकियांमें है घौर उनके लिये जो हियरा-
14 पलीमें हैं उसका बड़ा अनुराग है। लूकका जै प्यारा
15 वैद्य है घौर दीमाका तुमसे नमस्कार। लाशोदिकियां
यामकी भाईयांकी घौर तुम्हारा घौर उसके घरमें
16 मंडलीकी नमस्कार। घौर जब यह पत्री तुम्हारे यहां
पढ़ लिए जाय तब ऐसा कर। कि लाशोदिकियांकी
मंडलीमें भी पढ़ी जाय घौर कि तुम भी लाशोदिकियांकी
17 पत्री पढ़ा। घौर अखिलसे कहा जो सेवकाई तुने
प्रभुमें पाई है उसे देखता रह कि तू उसे पूरी करे।
18 मुख पावलका अपने हाथका लिखा हुआ नमस्कार,
मेरे बंधनेांकी सुध लेखा। अनुयाह तुम्हारे संग हावे।
श्रामीন्।
थिसलोनिकियोका पावल प्रेरितकी पहिली पत्री।

1 पहिला पन्ने।

1 प्रारंभ । 2 थिसलोनिकियोंको विषयम पावलका धन्यवाद और उनको सुखमार स्मरण रखनेको ब्यक्त।

पावल श्राय सीला श्राय तिमाहित थिसलोनिकीहै। यांकी मंदलीको जा ईश्वर पिता श्राय प्रभु यीशु ख्रिःस्तूमै है। तुम्हें हमारे पिता ईश्वर श्राय प्रभु यीशु ख्रिःस्तूमै अनुयह श्राय शांति मिले।

हम अपनी प्रार्थनामाँमें तुम्हें स्मरण करते हुए 2 नित्य तुम सभीको विषयम ईश्वरका धन्य मानतेहै। क्योंकि हम अपने पिता ईश्वरको भाग्य तुम्हारे विश्वास-3 को बार्षिक श्राय प्रेमको परिष्करको श्राय हमारे प्रभु यीशु ख्रिःस्तूमै आशाको धौरताको निर्णय स्मरण करते है। श्राय है भाइयो ईश्वरको प्यारी हम तुम्हारा चुन 4 लिया जाना जातेहै। क्योंकि हमारा सुखमार 5 केवल बचनस्तै नहिं परन्तु सामर्थ्यस्तै भी श्राय पवित्र आत्मास्तै श्राय बढी निश्चयस्तै तुम्हारे पास पहुँचा जैसा तुम जाते हो कि तुम्हारे कारण हम तुम्हारौं कैसे बने। श्राय तुम लोग बढ़े ख्रिःस्तूको बीचम पवित्र आत्माको आनन्दस्तै बचनको यहस्य करके हमेंको श्राय प्रभुको अत्यन्त बने। यहाँलाई कि माकिदानिया श्राय आ- ख्रिःस्तूमस्तै सब विश्वासियोको लिये तुम दुःखी हुए । क्योंकि न केवल माकिदानिया श्राय आ- ख्रिःस्तूमस्तै तुम्हारी
श्रीरसे प्रभुके बचनका ध्यति पैल गया परदु हर एक स्नानमें भी तुमहारी बिश्वासका जा ईश्वरपर हैं चबूता हो गया है यहाँ इसमें कि हमें कुछ बलनेका प्रयोजन
8 नहीं है । क्योंकि वे आपसी हमारी विश्वासमें बताते हैं कि तुमहारे पास हमारा ज्ञान किस प्रकारका या चैत्य तुम चैत्यकर मूर्तियाँ ईश्वरकी चैत्य फिरी जिसे जीवते
90 चैत्य सदैव ईश्वरकी सेवा करा । चैत्य स्वर्गसे उससे पुनः
की जिसे उसने मूर्तिकौटिमें उठाया बात देखा कर्षात योगुका जी हमें अनेकवाले नौधसे बचानेहारा है ।

2 दूसरा पढ़े ।
1 घिसलानिकायोंके बीचम पालकें उपदेशकी रीति । 13 घिसलानिकायोंका
से उपदेशका योगयय ग्रहण करना । 17 उसके पालकी बड़ी रीति ।
1 हे भाइयो तुमहारे पास हमारे ज्ञानकी विश्वासमें तुम
2 सच्ची माता है कि वह बयां नहीं था । परन्तु जीता
फिलिपीमें जैसा तुम जानते हो दुष्क पाके चैत्य दुर्देशा
भोगके हमने ईश्वरका सुसमाचार बहुत रगड़े करगड़े
3 तुम्हें सुनानेकी अपने ईश्वरसे साहस पाया । क्योंकि
हमारा उपदेश न भरमते चैत्य न अशुद्धतासे चैत्य न
4 बचके साथ है । परन्तु जैसा ईश्वरकी अच्छा देख पड़ा है
कि सुसमाचार हमें संपा जाय तैसा हम बोलते हैं
अधिरत जैसे मनुष्येंका बस्त करते हुए सी नहीं परन्तु
5 ईश्वरकी जो हमेंकी मनकी जांचता है । क्योंकि हम न
ता कभी लोशापतोंकी वात किया करते थे जैसा तुम
जानते हो चैत्य न लाभके लिये बहाना करते थे ईश्वर
6 साक्षी है । चैत्य यदापि हम ईश्वरके प्रेरित हैके मन्योंदा
ले सकते तैरभी हम मनुष्यांसेचाहे तुम्हांसेचाहे दूसरां-से आदर नहीं चाहते थे। परन्तु तुम्हारे बीचमें हम ऐसे ब्यासमाल बने जैसी माता अपने बालकींको दूध पिला पोसती है। वैसे हम तुम्हांसे बेह करते हुए तुम्हें केवल इंस्यरका सुसमाचार नहीं परन्तु अपना अपना प्राण भी बांट देनेको प्रसन्न थे इसलिये कि हमारे तुम प्यारे बन गये । क्योंकि है भावयो तुम हमारे परिप्रेय श्रीर लोश-कृष्ण स्मरण करते हो कि तुममें किसीपर भार न देनेके लिये हमने रात श्री दिन कमाते हुए तुम्हांमें इंस्यरका सुसमाचार प्रचार किया । तुम लोग साधी हो श्रीर इंस्यर भी कि तुम्हांके भागे जो विधवासी है हम वैसी पविचता श्री धर्में श्री निर्देशतासे चले । जैसे तुम जानते है कि जैसा पिता अपने लड़कोंको तैसे हम तुम्हांमें एक एकको क्योंकर उपदेश श्री शांति श्री साधी देते थे । जिस्त्र तुम इंस्यरके योग्य चलो जो तुम्हें अपने राज्य श्रीर ऐंस्यरमें बुलाता है।

इस कारणसे हम निरन्तर इंस्यरका धन्य भी मानते हैं कि तुमने जब इंस्यरके समाचारका बचन हमसे पाया तब मनुष्यांका बचन नहीं पर जैसा सचमुच है इंस्यरका बचन यहण किया जो तुम्हांमें जो विधवास करते हो गुण भी करता है । क्योंकि है भावयो ख्रीरू यीशुमें इंस्यरकी मंडलियां जो यिहूदियांमें हैं उनके तुम्हें अनुगामी बने कि तुमने अपने स्वदेशीयांसे वैसाही दुःख पाया जैसा उन्हांने भी यिहूदियांसे । जिन्हांने १५ प्रभु यीशुका श्रीर भविष्यद्विजाएंको मार दाला श्रीर
हमांको सताया श्रीर ईश्वरको व्रज नहीं कर्ते हैं।

16 श्रीर सब मनुष्योंको बिस्तु हैं। कि वे शन्यदेवियोंसे उनको चाहिए लिये बात करनेसे हमें बजेते हैं जिन्हें नित्य अपने पापांको पूरा करें। परन्तु उनपर श्रीर ध्रुव न्यायों में पहुँचा है।

17 पर हे भाद्रो हमांने हर्दयम महत्त्व नहीं पर देहमें थाही बेरली तुमसे अलग किये जाको बहुत अधिक करके तुम्हारा मुंह देखनेको बढ़ी अपितु बातमा यत किया।

18 इसलिये हमाने अर्थात सुभक पावलने एक बेर श्रीर दो बेर भी तुम्हारे पास तानेखी इच्छा किई श्रीर नैतानि।

19 हमें रोका। क्याम्कि हमारी आशा अथवा अर्थात अथवा बढ़ाईका सुकृत क्या है। क्या तुम भी हमारे प्रभु यीशु मिस्त्रूको जीने उसके नानिपर नहीं हो।

20 तुम ता हमारी बढ़ाई श्रीर अनन्द है।

3 तीसरा पाठ।

1 तिमाहिकको भेदनेको रचना। 6 उसीमा प्रेमसारिको नमाज चार श्रीर प्राविष्टका वाक्याविप्र किया। 19 प्रेमसारिको लिये प्राविष्टका प्राप्त।

1 इस कारण जब हम श्रीर सह न सकी तब हमाने

2 आचरणोंम महत्त्व छोड़े जानेको अघच्छ जाना। श्रीर तिमाहिकको जी हमारा भाई श्रीर ईश्वरका सेवक श्रीर लोगोंको सुसमाचारमें हमारा सहकर्मी है। तुम्हें स्पर करकेश्रीर तुम्हारे विभागको विषयमें तुम्हें समजानेको भेजा। जिसें कोई इन श्रुतियोंमें होकर न जाय क्याम्कि तुम अप जानते हो। कि हम इनत्तो लिये ठहरायें हुए हैं। क्याम्कि जब हम तुम्हारे यहां थे।
तब भी तुमकी आगे से कहते थे कि हम तो ख़ूश पाएगे जैसा हुआ भी है जी तुम जानता है। इस कारण से ५ जव में जी तुम सह न सका तब तुम्हारा बिश्वास बूफने-को में नहीं जिसी रीतिसे परीक्षा करने-हार्दिक तुम्हारी परीक्षा किंग सर हमारा परिश्रम व्यर्थ भी गया है।

पर जब भी तिमारित जी तुम्हारे पास हमारे यहां है जीता न्जी की बिश्वास जी तुम्हारा प्रेमका सुसमाचार हमारी पास लाया है जी तुम यह कि हम जीत नित्य मली रीतिसे हमें स्मरण करते है जी तुम हमें देखनेकी लालसा करते है जैसे हम भी तुम्हें देखनेकी लालसा करते हैं। तो इस हेतु हमें भाईयो तुम्हारे बिश्वासके द्वारा० हमने अपने सारे ख़ूश जी दरिद्रतामें तुम्हारे विश्वासमें शांति पाई है। क्योंकि जब जी तुम प्रभूमें दूढ़ रहें तो हम जीवते हैं। क्योंकि हम प्रभूबादका कौनसा फल तुम्हारे विश्वासमें देखनेको इस सारे शान्तदेवो लिये दे सकते हैं जिस करके हम तुम्हारे कारण अपने देखनेकी खागे शान्त करते हैं। कि रात जी दिन० हम अत्यंत विन्या करते हैं कि तुम्हारा मुंह देखें जी तुम्हारे बिश्वासकी जा घरी है उसे पूरी करें।

हमारा पिता इंश्वर जापही जी हमारा प्रभु यीशु ११ ख़ूश तुम्हारी जी हमारा मार्ग सीधा करें। पर तुमें १२ प्रभु एक दूसरे की जी हमारा संबंधी जी हमारा प्रेममें ख़ाध-काई देवेजी हमारे जैसे हम भी तुम्हारी जी हमारे उभरते हैं। जिसी वह तुम्हारे मनकी स्पर्श करें जी हमारे १३
पिता ईश्वरके ज्ञान हमारे प्रभु यीशु ख्रीस्तके अपने सब पवित्रोंके संग आनेपर पवित्रताईंमें निर्देश भी करे।

8 चीवा पल्लें।

1 पवित्रता और मातृत्व प्रेम और पाप दर्शन पर स्थापना करनेका उपदेश । १५ मूलकों जो उठनेका बनें।

2 सो है भाईयो भानतमें हम प्रभु यीशुमें तुम्हें बिन्नी शीर उपदेश करते हैं कि जैसा तुमने हमसे पाया कि किस रीति वलना शीर ईश्वरको प्रसन्न करना तुम्हें उचित है तुम शांति बनाने जाओ । क्योंकि तुम जानते हो कि हमने प्रभु यीशुकी शीरसे कौन कौन आशा तुम्हें दिये । क्योंकि ईश्वरको इच्छा यह है आर्यात तुम्हारी पवित्रता कि तुम व्यक्तिगत के परि रहे हों। कि तुम्में हर एक अपने अपने शासको उन अन्यत्र क्षेत्रघों नाइं जो ईश्वरकी नहीं जानते हैं कामाशीलापासे रखे सो नहीं। परन्तु तुषितता शीर शासके रखने जाने । कि इस बातमे कोई अपने भाईको कर जो शीर न उसपर दांव चलनेको क्योंकि जैसा हमने ज्ञाने तुमसे कहा शीर साध्वी भी दिये तैसा प्रभु इन सब बातिंको विषयमें पलटा। ० लैनेहारा है । क्योंकि ईश्वरने हमें को श्रवुतको लिये नहीं परन्तु पवित्रतामें बुलाया। इस कारण जह तुम्हें जानता है सो मनुष्यको नहीं परन्तु ईश्वरको जिसने अपना पवित्र ज्ञाना भी हमें दिया तुम्हें जानता है। 8 भ्रात्रिय प्रेमके विषयमें तुम्हें प्रयोजन नहीं है कि में तुम्हारे पास लियूं क्योंकि एक दूसरीको यार करनेको १० तुम अपहरी ईश्वरके सिस्ताये हुए हो । क्योंकि तुम सारे।
माकिकानीयाक सब मायेंकी शैर साई करते भी है
परन्तू हे मायें हम तुमसे बिन्ति करते हैं कि अधिक
बढ़ते जाओ। शैर जैसे हमने तुम्हें भाजा दिये तैसे ११
वैसे रहनेका शैर अपना अपना काम करनेका शैर
अपने अपने हायंसे कमानेका यव करो। जिस्ते तुम १२
बाहरवालोंकी शैर शुभ रीति ही चलो शैर तुम्हें
किसी बस्तुकी घटती न होय।
हे मायें में नहीं चाहता हूं कि तुम उनके विषयमें १३
जो साई हुय हैं अनजान रहा न हो। कि तुम शैरोंके
समान जिन्हें भाजा नहीं हैं शेष करो। किंतु जो हम १४
विश्वास करते हैं कि यीशु मरा शैर जी उठा ता वैसेही
इंश्वर उन्हें भी जो यीशुमें साई हैं उसके संग लाबेग।
किंतु हम प्रभुके बचनके अनुसार तुमसे यह कहते हैं १५
कि हम जो जीवते शैर प्रभुके अनेलियों बच जाते हैं
उनके भारे जो साई हैं नहीं बढ़ चलेंग। किंतु प्रभु १६
झापही ऊंचे शब्द सहित प्रधान दूतके शब्द सहित शैर
इंश्वरकी तुर्की सहित स्वग्रंथ संग उतरेंगा शैर जो खोजमें
मूर्त हैं साई पहले उठेंग। तब हम जो जीवति शैर बच १७
जाते हैं एक संग उनकी साथ प्रभुसे मिलनेको मेघांमें
झाखाएसयद उठा लिये जायेंगे शैर इस रीति हम सदा
प्रभुसे संग रहेंग। सोइ नवातीसं एक दूसरे की शांति देंग। १८

५ पांचवां पृष्ठ

१ समयेंकी विषयमें शिशा शैर उपदेश। २२ उपदेशकोका षादर करनेका उपदेश।
१५ प्रस्तुत उपकार शैर नाना प्रभुमें शिष्याओंका उपदेश। २५ प्रथीको समाप्ति।

पर हे मायें कालों शैर समयेंकी विषयमें तुम्हें १
1. विस्तृतानिकियोंका।

प्रयोजन नहीं है कि तुम्हारे पास कुछ लिखा जाय।
2. क्योंकि तुम आप ठीक करके जानते हो कि जैसा रातबीं?
3. चार तैसाही प्रभुका दिन खाता है। क्योंकि जब लाग
करने कुसल है चार कुछ भय नहीं तब जैसी गर्ववती-
पर रसकी पीड़ तैसा उनपर विनाश सचारहें जा।
4. यद्यगा चार वे किसी रीतिसे नहीं बर्चने। पर हें भावि: तुम तो ऋषिकारमें नहीं हो कि तुम्पर वह दिन चारकी
5. नाई ता पड़े। तुम सब ज्ञेयतिके सत्तान चार दिनके
इ सत्तान हो। हम न रातको न ऋषिकारके हैं। इसलिए
हम चारिको समान सायें तो नहीं परन्तु जागें चार
6. सचेत रहें। क्योंकि तैनेहारे रातकी साते हैं चार मत-
8. वाले लाग रातबीं मतवाले होते हैं। पर हम जो दिनके
हैं तो विद्वान चार प्रेमकी फिलम चार टाप अधिष्ठात
7. धारकी शास्त्री पहिवनके सचेत रहें। क्योंकि इंवलने हमें
आपें लिये नहीं पर इसलिए ठहराया कि हम चाहने
9. प्रभु यीशु चारपके द्वारसे चार ग्राम करें। जा हमारे
लिये मार कि हम चाहे जागें चाहे सारें एक सारे उसके
11. साथ जीवें। इस कारण एक दुसरेको शांतिदेखौ चार
एक दुसरेको सुधारो जैसे चार करते भी हो।
12. हें भावि: हम तुम्से बनिती करते हैं कि जो
तुम्हारमें परिमेय करते हैं चार प्रभुमें तुम्पर स्पष्ट-
ता करते हैं चार तुम्हें चिताते हैं उन्हें पहचान राखो।
13. चार उनकी कामके कारण उन्हें सत्यन्त प्रेमके याग्य
समक्खे। ज्ञापसमें मिले रहें।
14. चार हें भावि: हम तुम्से बनिती करते हैं भनितिते
भलमहरांका चिताक्षी कायरंका शांति देखा दुःख-लेंका संबालो सभांकी शेर धीरजवन्त होशा। देखा १५ जि कोई जिसीत बुराईको बदले बुराई न करे परन्तु सदा एक दूसरेका शेर शेर सभांकी शेर भी भलाईका चेष्टा करो। सदा झाननित रहो। निरंतर प्रार्थना १६ झारा। हर बातमें धनि मानो कीयोंकि तुम्हारे विषयमें १७ यही सीम्य योगसे ईश्वरकी इच्छा है। शास्त्राका १८ निम्नत मत करो। भविष्यद्वाणिया तुच्छ मत जानो। २० सब बारे जांचा क्षब्बीका धर लेशा। सब प्रकारको २१ बुराईको परे रहो। शांतिका ईश्वर स्वाप्न है। तुम्हें २३ समूही पवित्र करे शेर तुम्हारा समूही शास्त्र शेर प्राण शेर देह हमारे प्रभु यीशु सीम्यके शानेपर निर्देश रखा जाय। तुम्हारा बुलानेहारा विश्वास- २४ श्राव्य है शेर वही यह करेगा।

हे भाइयो हमारे लिये प्रार्थना करो। सब भाइयोंका २५ पवित्र शून्या कोके नमस्कार करो। में तुम्हें प्रभुकी २६ जिरिया देता हूँ कि यह पची सब पवित्र भाइयोंका पहँके सुनाई जाय। हमारे प्रभु यीशु सीम्यका अनुयाय २८ तुम्हारे संग होवे�। झामोर।
थिसलानिकियांका पावल प्रेमिकी

दूसरी पत्री।

१ पहिला पत्र।

१ प्रयोक भ्रामाय। ३ थिसलानिकियांके विषयस क ख्रीम भ्राम के दुर्विखाि रे विषयस पावलाविका घन्याबाद। ५ धर्म भ्राम के फल ख्रीम प्रभु योधुिक प्रकाश बेसीने का कर्षन। ११ थिसलानिकियांके लिवे पावलाविका प्रार्तना।

२ पावल ख्रीम सीजा ख्रीम तिमानाि थिसलानिकियांकी यंकी मंडलीकी। जे हमारे पिता इंसाबर ख्रीम प्रभु योधु।

१ क्रीषुं के है। तुम्हें हमारे पिता इंसाबर ख्रीम प्रभु योधु

१ क्रीषुं के अनुयाय ख्रीम शांति मिले।

३ हे भावयो तुम्हारे विषयस नित्य इंसाबरका प्रभु मानना हमें उचित है जैसा योधु है व्याख्यान कि तुम्हारा बिषयस बहुत बढ़ता है ख्रीम एक दूसरकी ख्रीम तुम समझते हैं तुम्हारा जो धीरज ख्रीम बिषयस है उसके लिये हम जापही इंसाबरकी मंडलयांमे तुम्हारे विषयस बहारे करते हैं।

४ यह ता इंसाबरते यथार्थ विचारका प्रभु है जिसते तुम इंसाबरते राज्यके योधु गिने जावा जिसके लिये तुम दुःख ही उठाते हो। व्याख्यान कि यह ता इंसाबरके न्यायके अनुसार है कि जा तुम्हें दोष देते हैं उन्हें १० प्रातिवलमे दोष देव। ख्रीम तुम्हें जा दोष पाते हो हमारी संग उस समय चैन देव जिस समय प्रभु योधु
दिवसों अपने सामर्थ्य के दूर तैरके संग ध्यक्त भागिने प्रगट होगा। शीर जी लोग ईश्वरको नहीं जानते हैं। शीर जी लोग हमारे प्रभु यीशु ख्रीस्तके सुसमाचारको नहीं मानते हैं। उन्हें दुःख देगा। कि वे तो प्रभुके सामुख से शीर उसकी शक्तिके तेज़ी से जारी उस दिन अनन्त विनाशका दंड पाएगे। जिस दिन वह अपने पवित्र १० लोगों में तेज़ी में शीर सब विवश्रास करनेहरूमें सामर्थ्य दिखाई देन्की शाबासारा। कि हमने तुमको ये साहस दिये उसमें विवश्रास तो किया गया।

इस निमित्त हम निज़त्त तुम्हारे विवश्रास में प्रार्थना भी करते हैं। कि हमारा ईश्वर तुम्हें इस बुलाहरको योग्य हस्ति शीर भलाईको सारी सुदीक्षा शीर विवश्रास-के कायर्को सामर्थ्य सहित पूरा करे। जिसी तुम्हारे में १२ हमारे प्रभु यीशु ख्रीस्तके नामकी महिमा शीर उसमें तुम्हारी महिमा हमारे ईश्वरके शीर प्रभु यीशु ख्रीस्तके अनुसरणकी समान प्रगट किंदे जाय।

२ दूसरा पवित्र।

१ ख्रीस्तके विकल के प्राणकी नामको घमारा शीर पापसुकी प्रगट श्रेष्ठ के बाहर देव पुराये धर्मका धार्मि उनकी कुरगति। १२ दिवसों शक्तिके विवश्रास प्रार्थना जननयक शीर उपवेश शीर प्रार्थना।

पर है भाइयो हमारे प्रभु यीशु ख्रीस्तके नामकी शीर। उस पास एक ठहरे हालेकी विवश्रास में हम तुमसे बिन्ती करते हैं। कि अपना अपनामा मन शीघ्र दिखाने जानेकी शीर आत्माके द्वारा ऋषियो वचनकेद्वारा ऋषियो पत्रामे द्वारा जाने हमारी शीरसे होते घर में जानेकी भी कि मानने ख्रीस्तके दिन हम पहुँचा है। काई तुम्हें विद्या गौरते न ३
बले क्योंकि जबलों धम्मेत्याग न है। लेवे श्रीर वह 4 पापपुर्ण अर्थात बिनाशका पुत्र। जा बिरोध करनेहारा श्रीर सबपर जो ईश्वर श्रवन पूज्य कहावता है श्रवनेको उन्ना करनेहारा है यहांशं कि वह ईश्वरकी मन्दिरमें ईश्वरकी नाई बैठे श्रवनेको ईश्वरकरकी दिखाये प्रगट 5 न होय तबलों वह दिन नहीं पहुँचेगा। क्या तुम्हें सुरत नहीं कि जब मेंतुम्हारे यहां या तबभी मैंने यह बातें तुम्खे से कहीं। श्रीर चब तुम उस बस्तुकी जानते हो। जो इस-लिये रोकती है कि वह श्रवनेही समयमें प्रगट हैवे।

6 क्योंकि अधम्मेक्षा भेद चब भी काम्य करता है पर केवल 8 जबलों वह जो चबी रोकता है तब न जावे। श्रीर तब वह अधम्में प्रगट होगा जिसे प्रभु श्रवने सुनिए पवनसे नाश करेगा श्रीर श्रवने श्रानके प्रकाशके लेख करेगा।

7 श्रीरात वह अधम्में जिसका शाना श्रीतानके काम्यके अनुसार भूकके सब प्रकाशके सामय श्रीर चिन्हें श्रीर

90 अशुद्ध काम्यके साथ। श्रीर उन्हें जो नष्ठ होते हैं अधम्में सब प्रकाशके चलके साथ है इस कारण यि उन्हें एक सब श्राइंदे प्रेमको नहीं यहण किया यि उनका

11 शान होता। श्रीर इस कारणसे ईश्वर उनपर भ्रामती। 12 प्रभवता भेडुया कि वे भूठका विश्वास करें। जिसंत सब लेग जिन्हेंने सबाईंका विश्वास न लिया परन्तु अधम्में प्रसन्न हुए दंडके योग्य ठहरे।

13 पर हे माइया। प्रभुके प्यारो तुम्हारे विषयमें नित्य ईश्वरका धन्य मानना हमें उचित है कि ईश्वरने चादि- दे तुम्हें श्रातमाकी पवित्रता श्रीर सबाईंके विश्वासके
द्वारा चाश पानेको खुन लिया। ओर इसके लिये तुम्हें 14 हमारे सुसमाचारके द्वारा बुलाया जिसे, तुम हमारे प्रभु यीशु क्रीस्तूकी महिमाका प्राप्त करो। इसलिये हे भाईया 15 तू रहो ओर जो बातें तुम्ने हमारे चाहे बचनके द्वारा चाहे पत्रों के द्वारा सोखें उन्हें धारण करो। हमारा 16 प्रभु यीशु क्रीस्तू ज्ञापनी ओर हमारा पिता ईश्वर जिसने हमें याद किया। ओर अनुग्रह ज्ञान त्यस्त ओर ज्ञान ज्ञान दी है। तुम्हारे मनको ज्ञान देव ओर 17 तुम्हें हर एक ज्ञान बचन ओर कर्ममें स्पष्ट करे।

3 तीसरा पदे।

1 करे एक उपदेश ओर शांतिकी बात। 3 अनुरोधीतेस चलनेहरुका विवरणमें उपदेश। 15 पत्रोंकी समाप्त।

अन्तमें हे भाईया यह कहता हूं कि हमारे लिये 1 प्रार्थना करो कि प्रभुका बचन जैसा तुम्हारे यहाँ फेलता है। तैसहित श्रीप्रेमी ओर तेजामय ठहरे। ओर कि हम 2 ज्ञानचारी ओर दुष्क मनुष्योंसि बच जायें कथिक विश्वास समेंतको नही है। परन्तु प्रभु विश्वासयोग है जो तुम्हें 3 स्पष्ट करेगा ओर दुष्क मनुष्योंसि बचाये रहेगा। ओर हम प्रभुमें 4 तुम्हारे विषयमें भरपूर हैं कि हम कुकु बच तुम्हें ज्ञान देते हैं उसे तुम कारनं हा ओर करौं भी। प्रभु तो ईश्वरके प्रेमकी ओर ओर क्रीस्तूके धीरजकी 5 ओर तुम्हारे मनकी ज्ञानवाई करे।

हे भाईया हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु क्रीस्तूकी नामसे 6 ज्ञान देते हैं कि हर एक भाईसे जो अनुरोधीते चलन्त है ओर जो शिश्या उसने हमसे पाई उसकी सनसार नहीं
8 चलता है अलग हो जाएँगे। क्योंकि तुम राय जानते हो कि किस रीति से हमारे अनुगमी होना उचित है।

8 क्योंकि हम तुम्हारे संग रुतिसे नहीं चलते। शार संतकी रात्रि किसी के यहां से न खाउँग परन्तु परिश्रम शार हेसे रात शार दिन कमाते थे कि तुम्हें संगीत पर भार न दें। यह नहीं कि हमें शाक्त सच्ची नहीं हैं परन्तु इलाव लिये कि अपनेका तुम्हारे कारण दुःसंद बर देंगे जिसके बारे में तुम मानते हो।

10 तुम हमारे अनुगमी होते हो। क्योंकि जब हम तुम्हारे यहां थे तब भी यह शाना तुम्हें देते थे कि यदि क्या हो कमाने नहीं चाहता है। शाना भी न खाय। क्योंकि हम सुनते हैं कि कितने लोग तुम्हारे संग रुतिसे चलते हैं। शार कुछ कमाते नहीं परन्तु शार रोकने काममें डाल हकारते हैं। ऐसे रोक हकारते हैं। ऐसे रोक हकारते हैं। शार अपने प्रभु यीशु क्षीरस्थ शारसे उपदेश करते हैं कि वे चानते कीर्ति शार अपनी रात्रि शाबा करें। शार तुम है।

12 भाइयो सुकाम्य करनें कातर मत हो। यदि क्या इस पत्रों का हमारा बचन नहीं मानता है उसे जीवन रखा शार उसकी संगति मत करो जिसके बारे में तैमी उसे बैरोसा मत समकूर परन्तु भाई जानकी चिताभा।

16 शांतिका प्रभु शापहि नित्य तुम्हें सब्बेशा शांति देवे।

10 प्रभु तुम समेत की संग होवे। सुभक पावलका अपने हातका लिखा हुसा नमस्कार जा हर एक पावलकी,

18 चिन्ह है। में यूही लिखता हूं। हमारे प्रभु यीशु क्षीरस्थ अनुयाह तुम समेत की संग होवे। जामीन।
तिमाथियका पावल प्रैरितकी पहिली पत्री।

१ पहिला पत्र

पावल जो हमारे चाककता ईश्वरकी शैर हमारी १
झाणा प्रभु यीशु ख्रिस्तुकी जानाने अनुसार यीशु ख्रिस्तुका
प्रैरित है विवासमें अपने सच्चे पुष्म तिमाथियका।
तुफ़ा हमारे पिता ईश्वर शैर हमारे प्रभु यीशु यीशु- २
से अनुयाय शैर दया शैर शांति मिले।

जैसे मैं ने माकितोयियकी जाते हुए तुफ़ान से बिन्दी ३
किन्तु तैसे फिर बहहा हूं] कि इफिसमें रहियो जिस्ते
तू बिनतनेंजी झाणा तबे कि घान घान उपच्छेश मत
किया करे। शैर कहानियंफर शैर अनुनत वंशवाण
लियंफर मन मत लगाशी जिनसे ईश्वरकी बंधारी-
पनका जो विवासकी विश्वमें है निवाह नहीं होता
है परन्तु शैर भी विवाह उत्तम होते हैं। धर्माय
झाणा अनुनत वह प्रेम है जो शुद्ध मनसे शैर भाँचे
विन्यासे शैर निप्पण विवाससे होता है। जिनसे ६
किनते लोग भटकिये बढ़ियादकी शैर फिर गये हैं।
जो व्यवस्थमा हुसा चाहते हैं परन्तु न वह बातें ०
वापस से बहते हैं शैर न यह जानते हैं कि
उनसी बातांकी विश्वमें दृढ़तासे बोलते हैं। पर हम ८
जानते हैं कि व्यवस्था यदि कोई उसका विधिक अनुसार
5 यह जानकी काम में लावे तो श्रद्धा है . कि व्यवस्था
घम्मी जनके लिये नहीं ठहराई गई है परन्तु आधमार्थी
छौ निरंकुश लोगंको लिये भक्तिहीनों छौ पापियाँको
लिये अपविच्छ छौर अशुद्ध लोगंको लिये पितृप्राचा
10 छौ भनुपारको लिये . मनुष्यपाठकों वृभावनारियों
पुरुषगामियों मनुष्यविन्द्रायों हूड़ों छौर भूढी किरुशा
क्षाने हाकरों के लिये है छौर यदि दूसरा कोई काम है
जो खरे उपदेशके बिश्व्य है तो उसके लिये भी है .
11 परमधुन्य ईश्वरकी महिमाके सुसमाचारके स्वरूप
जो मुखे सौंपा गया ।
12 छौर में खोश्य यीशु हमारे द्रमुका जिसने मुखे
सामथर्य दिया धन्य मानता हूं कि इसने मुखे विश्वास-
13 या ग्य समथर्य छौर सेवकाईं के लिये ठहराया . ते झारे
निरंकुश छौर सतानेहारा छौर उपदेशका था परन्तु
मुख्य पद दिया किनें गईं रीकंका मैंने अतिश्वासतामें
18 अज्ञानतासे ऐसा किया । छौर हमारे द्रमुका सन्तुष्ट
विश्वासके साथ छौर प्रेमके साथ ते खोश्य यीशुमें है
15 बहुत अधिकांसे हुआ । यह बचन विश्वासयाग्य छौर
सब्रया गहंगयाग्य है कि खोश्य यीशु पापियांको बचानेके
16 लिये जगतमें छाया जिन्होंने मैं सबसे बडा हुमा। परन्तु
मुख्य पद इसी कारणसे दिया किनें गईं ते मुखमें सबसे
अधिक करके यीशु खोश्य समस्त धीरज दिखाये ति
यह उन लोगंको लिये जी। उसपर सन्तुष्ट जीवनके
17 लिये विश्वास करनेवाले थे एक नमना हैव। सनानत
कान्हे चाचिनाशी श्रीर अधूर्य राजाको संघीत अद्वैत 
वुद्धिमान इंश्वरको सदा संग्रस्त प्रतिष्ठा श्रीर गुणानुबाद होवे . ज्ञानीन ।

यह आज्ञा है पुष्प तिमोपचर मैं उन भाविष्यद्वार्ती- १५ 
णंक्षे शानुसार जी तेरी सिद्धोमें भागैने किई गई तुम्हे 
सांप देता हूं कि तू उन्हाँको सहायतासे भक्ती लज्जाध्वित्ता 
श्रेयो है। श्रीर विश्वासको श्रीर भक्ती निबिद्धको १५ न 
रथि जिसे त्यागने ने नितीमेंको विश्वासका जहाज महा 
गया । उन्हाँसे हुमिनई श्रीर सिकन्दर है जिन्हें मैंने २० 
श्रीतानोंको सांप दिया कि वे ताड़ना पाके सीखे वि 
लिन्दा न करें ।

२ दूसरा पर्व ।

१ प्रार्थना करेका दवेशष द्वार धथुके मध्यस्य निर्लेका वर्णन । ८ पुष्पको श्रीर 
सिद्धोमें भाविष्यद्वार्ती विविध ।

सा मैं सबसे पहले यह उपदेश जार्ता हूं कि किन्तू १ 
श्री प्रार्थना श्रीर निवेदन श्रीर धन्यवाद सब मनुष्योंके 
लिने किये जार्ते । राजाश्रीरके लिने भी श्रीर समेके २ लिने जिनका ऊँच पद है इसलिने कि हम विश्वाम 
श्रीर चैनि सारी भक्ति श्रीर गंभीरतामें अफना अफना 
जनम चितावि। किंगकि यह हमारे चाहकता इंश्वरको ३ 
श्रेयो नगर श्रीर भावता है । जिसकी इच्छा यह ४ 
है कि सब मनुष्य चाहन पाबि श्रीर सत्यके स्थानी 
पहुँचि । किंगकि एकही इंश्वर है श्रीर इंश्वर श्रीर ५ 
मनुष्योंका एकही मध्यस्य है अर्नात कृपृ यो श्री 
मनुष्य है। जिसने सबेके उद्दारके दासमें अफने वि
दिया। यही दप्युः समयमेंकी साधी है जिसके लिई मैं प्रचारक जी प्रेरित धीर बिश्वास धीर सवारीमें खण्डकाल्यनका उपदेशक ठहराया गया। मैं मृत्युमें सत्य कहता हूँ मैं मृत नहीं बोलता हूँ।

सत में चाहता हूँ कि हर स्थानमें पुरुषः-लीग बिना धीर जी बिना विवाद पविच हाथेंका उठाके पार्थिना करें। इसी रीतिसे मैं चाहता हूँ कि स्त्रियाँ भी संकीर्ण धीर संयमके साथ ज्ञाने तई यह पहिरावनसे जो उनके योग्य है संवर्ती गृही हुए बाल वा लाने वा मो-तियांसे वा बहुमुख वस्तसे नहीं परलू जने कामसे।

कि यही उन स्त्रियांका जो इंश्वरकी उपासनाकी प्रतिष्ठा करती हैं साहहता है। स्त्री चुप चाय चकल धीरीनतासे सीख लेंगे। परलू में स्त्रीका उपदेश करने अस्त्रव्य पुरुषपर भाधिकार रखनेकी नहीं परलू चुप चाय रहनेकी भाजन देता हूँ। क्योंकि भाद्रम पहले बनाया गया तब हुआ। धीर भाद्रम नहीं चला गया। परलू स्त्री चली गई धीर सपार्धिनी हुई। तात्मिकी जो वे संयम साहित बिश्वास धीर प्रेम धीर पविच-तामें रहें ता लड़की जननेमें गाय वार्तिती।

तीसरा पत्र।

यह बचन विश्वासःयोग्य है कि यदि कोई गंडलीके बचन लेनेमें चाहता है ता तो कामकी लाल- 4 सा करता है। तो चाहित है कि रक्षाला नन्देवर धीर
हकदी स्त्रीका स्वामी सचित्र श्री संगमी श्रीर सुम्बहर श्रीर भातियोंसेवक श्रीर सिखनामें निपुष है। मदापानमें श्रास्वत नहीं श्रीर न मरबहा न नीच कामाई करने-हरा परन्तु मुदुभाव विलनसार श्री निल्लीभी। जो श्रयपनेही घरकी शब्दी रीतिये स्थापतात करता हो। श्रीर लड़कीको सारी गंभीरताते स्थान रूढ़ा हो। पर यदि कौई श्रयपनेही घरकी शब्दाच्या करने न जानता हो, तो कींकार इश्वरकी मंडलीकी रखवाली बाबे। फिर नवशिष्य न होय ऐसा न हो कि भन्दे मानसे फलते शैतानके टंडमें पड़े। श्रीर भी उसकी उचित है कि बाहरवालोंकि यहां मुखयात होवे। ऐसा न हो कि निभ्द हो जाय श्रीर शैतानके फटंडमें पड़े।

चैतन्यकी मंडलीकी सेवकोंको उचित है कि गंभीर हार्वें दौरान दी नहीं न बहुत मदाकी सचि करनेहारे न नीच कामाई करनेहारे। परन्तु विश्वासका भेद शुद्ध विवेचके रखनेहारे हों। पर ये लोग पहले परिः भी जार्वें 10 तब जो निराश निकलें तो सेवकका काम करें। इसी 11 रीतिसे स्त्रीयांको उचित है कि गंभीर हार्वें श्रीर द्राष्टा लगावालियां नहीं परन्तु सचित्र श्रीर सब बातांमें विश्वासपूर्वु। सेवक लोग एक एक स्त्रीको स्वामी 12 श्रीर लड़कीको श्रीर अपने अपने घरकी शब्दी रीतिसे शब्दाच्या करनेहारे हों। कींकार जिन्हांने सेवकका 13 काम शब्दी रीतिसे किवा है वे अपने लिये शब्दा पद प्राप्त करते हैं श्रीर उस विश्वासमें जो खोद यीशु-पर है बड़ा साहस पाते हैं।
18 मैं तेरे पास बहुत शीघ्र ज्ञानकी ज्ञाना रक्षके भी ।
19 यह वातं तेरे पास लिखता हूँ । पर इसलिये लिखता हूँ कि जो में बिलास कहाँ तौंभी तू जाने कि ऐंशवरके घरमें जो जीवते ऐंशवरकी मंडली शीर तत्त्वा संभाल शीर नेव है कैसी चाल चलना उचित है । शीर यह बात सब मानते हैं कि भक्तिका में देव बड़ा है ति ऐंशवर शरीरमें प्रगट हुया ज्ञात्मामें निर्देश ठहराया गया स्वंदूतोत्तमा दिखाई दिया ज्ञान ज्ञान देशियोंमें प्रचार लिया गया जगतमें उसपर विश्वास लिया गया वह महिमामें उठा लिया गया ।

8 चौथा पर्व ।
1 लुप्तप्रियोंके प्रगट श्रीनेवें भविष्याध्यक्षी ।
2 पाललका निमित्तर्यर्योंको उनके विद्यामें उपदेश देना ।
3 देव शीर यह देव देवकारासे विद्यामें चिताना ।

9 पावित्र ज्ञात्मा सप्तुतासे कहता है कि इसके पीछे जितने लोग विश्वाससे बहुत जाँचने शीर भरमाने-हारे ज्ञात्माशंपर शीर भूतांतकी शिक्षाशंपर मन 2 लगावेंगे । उन फूट बालनेहराके कापरके अनुसार 3 जिनका निज मन दागा हुआ होगा । जो विवाह बननेसे बर्जने शीर खानेकी बस्तूशंसे परे रहनेकी शाखा देंगे जिनहीं ऐंशवराने इसलिये सजा कि विश्वासी लोग शीर सत्यके माननेहरे उन्हें धन्यवादके संग भेज 4 करें । क्योंकि ऐंशवरकी सजी हुई हर एक वस्तु चखरी है शीर के रूप बस्तु जो धन्यवादके संग यह भंडा किये 5 जाय पक्षनेके योग्य नहीं है । क्योंकि वह ऐंशवरके बचनके शीर प्रार्थनाके द्वारा पावित्र किये जाती है ।
भाइयोंका इन वातांका स्मरविक करवानेसि तू यौगु ७
झोप्पूका झंका सेवक ठहरेगा जिसका विश्वासकी शौर
उस झंकी शिखाकी वातांमें जो तने प्राप्त किंदेहि है
झाम्यस होता है। परन्तु छुटु शौर बुढ़ियाकोसी ९
कहालियेंसि खलग रह पर मक्तीचे लिये अपनी साधना
कर। क्यांकि देहकी साधना कुड़ घोड़े के लिये फलदाई है
परन्तु मक्ति सब वातांके लिये फलदाई है कि उसका
अबके जीवनकी शौर आनेवालेकी भी प्रतिज्ञा है। यह
बचन विश्वासयोग्य शौर सब्बेमा यहश्च्योग्य है। क्यांकि १०
हम इसके निमित परिणम करते हैं शौर निन्दित भी
होते हैं कि हमने जीवते ईश्वरपर भरोसा रखा है जे
सब मनुष्यांका निज करके विश्वासियेंका बचानेवारा
है। इन वातांकी ज्ञाना शौर शिखिया किया कर। ११
केही तेरी ज्वानीका तुच्छ न जाने परन्तु बचनमे १२
भलनमें प्रेममें ज्ञातमां विश्वासमें शौर प्रविष्टतामें
तू विश्वासियेंके लिये टूणान्त बन जा। जबलों में न १३
ज्ञां तबलों पढनेमें उपदेशेमें शौर शिखियांमें मन लगा।
वस बरदानसे जो तुक्में है जो भविष्यद्वाणीके द्वारा १४
प्राचीन लेगांके हाथ रखनेके साथ तुक्मे दिया गया
निश्चिनत न रहना। इन वातांकी चित्ता कर इनमें १५
लगा रह कि तेरी बड़ती सभेमें प्रगट हैवे। अपने १६
विश्वासमें शौर शिखाके विश्वासम सचेत रह कि तू
उनमें बना रहे क्यांकि यह करनेमें तू अपनेके शौर
अपने सुननेहरूनौंको भी बचावेगा।
5 यांच्या पत्ते

1. मंदलीमंडली फिलया श्रेष्ठ विधवाओंच्या कृत्तिया ब्रह्मार्यावर निर्भर ।
2. प्राचीनतेच्या कृत्तियात यांच्या ब्रह्मार्यावर निर्भर एक विद्यार्थी होती -
3. तीन तीन विद्यार्थींच्या शिक्षणातील विचारांना उपदेश होते ।

5. बुद्धीमध्ये दुर्गा परलोक आता विद्यार्थी जसे पिल्ला जानेला
6. उपदेश देत श्रीर जवानांका जसे भावका ।
7. श्रीर युवांनी जसे बाहिरीनांका
8. ती कोंसी परिच्छन्दातील उपदेश होते ।
9. बिधवाओंका जे
10. सचमुच विधवा हृ शादर कर ।

5. जो सचमुच विधवा
6. श्रीर शकारी बोळूळ हुई है तो इंडियारपर भरोसा रखती है
7. श्रीर रात दिन बिन्दी म्हे प्रार्थनांमध्ये लगी रहती है।

6. परलोक जो भेग विलाससम्म रहती है ता जीतजी मर
7. गई है।

7. जीवन बातोंकी शाब्दिक दिव्य कर इसस्थिती
8. विष बे निर्देश होते।
9. परलोक यदि बाहेर जन अपने कुटुंबविके
10. श्रीर निज करते अपने घरानांके जिथे चित्ता न करू

7. भी बुरा है।
8. विधवा वही गिनी जाय जिसकी वस्तु
9. साठ बसके नीचे हो ता एकही स्वामीकी स्तोत
10. हुई हो ।
11. सुखम्भरं कक्षयों उस्मान हो यदि उस्मान
12. लडकोंका पाला हो यदि श्रीतितिसेवा करू हो यदि
13. पवित्र लोगेंंका पासोंका गोष्टा हो यदि दुःखियांका
14. उपकार किया हो यदि हर एक श्रीर कामकी चैप्टा

Xarized by Google
किंतु हां ते गौतम नाथ। यहाँ जवान विबंधवादों के ११ दोहे अर क्योंकि जब वे खोपड़ी विबंध सुख विनाश-की देखा करते हैं तब विवाह करने चाहते हैं। त्रीर १२ दोहाओं योग्य होती हैं क्योंकि उन्हें अपने पहले विवाहवाको तुच्छ जाना है। त्रीर इनके संग वे वेकार १३ रहने त्रीर पर घर फिरनेको सीखते हैं त्रीर वेकार बेकार रहने नहीं परन्तु वकवाही होने त्रीर पराये क्षाममें हाय हाय दालने त्रीर अनुचित बातैं बालनेको सीखते हैं। इसलिये मैं चाहता हूँ कि जवान विबंधवां १८ विवाह करें त्रीर लड़के जन्म त्रीर घरवारी करें त्रीर किसी विरोधीको निन्दाको कारण कुछ अवसर न देवें। क्योंकि त्रीर भी कितनी तो बहकर शैतानको पीड़ी हों १५ टिमें हैं। जो किसी विवाहवागी राधवा जिन्होंने विवाहवानीको १६ यहाँ विवाहरां हैं तो बही उनका उपकार करे त्रीर संहलीपर भार न रिया जाय जिसैं उन्हें जो सचमुच विवाह हैं उपकार करे।

जिन प्राचीनोंने जललों रोजिज्ञ राधाकुंद त्रिभुज है १० सा दूने ज्ञातको योग्य समय के जावें लिख करके वे जो उपदेश त्रीर शिश्नाम्में परिष्कार करते हैं। क्योंकि धर्म-१८ पुस्तक कहता है कि दावनेहरु बैलका सुह मत बांध त्रीर कि बनियार अपनी बनिया योग्य है। प्राचीनोंने १५ विबंधु दो राधवा तीन साथियोंको साथी बिना अव- वाटको यहाँ न बनना। पाप करनेहरुको सम्मेलन १५ जाने समकाले दे इसलिये कि त्रीर लीगा भी दर जावें। मैं ईश्वरको त्रीर प्रभु यीशु खेलको सीर चुने हुए २१
दूसरे साहित्य के दूसरे साता देता हूँ कि तू मनकी गांठ न
यात्रें हो न चार बातें जीवको रामन करे चीर कोई खाम पशु-
ढौ पालको राति की करे। किसीपर हाथ श्रीग्रंथ जो बख्शा
बार न दूसरोंको पापोंको भागी होना। अपनको परिवर
23 रख। जब जल मत पिया दर रनुत अपने उदरवे
चार अपने बार्वार्वर उनेरे बारगा चोड़ा दाख
24 रस लिया दर। जितने मनुष्योंको पाप प्रत्याशा हैं चीर
चित्रार्थ हैं। जितने चीर अपने बार्वार्वर बारगा चोड़ा दाख
25 जो दे पीं भी हो लेते हैं। वैतनी जितने सुखम्मे भी
प्रत्याशा हैं। चीर जा चीर प्रवासरे हैं। सा दिन नहीं
सकते हैं।

d चढ़वां पढ़े।
1 वाचीको लिये उपदेश। 3 चित्रार्थ।
11 तिमोपियको निश्चित प्रभुककारी दृढ़ रहनेको उपदेश। 17 धज्जनीको लिये
उपदेश। 20 उपदेश सहित प्रभुकी स्मार्ति।
9 जितने दास जूरेको नीचे हैं। चीर अपने बातोंको
सारे चालको याग्य समयक्रम। जिस्ते ईश्वरके नामकी चीर
2 धम्मीपदेशको निद्रा न चिते जाय। चीर जितने स्वाती
बिश्वासी जन हैं। चीर अपने बातोंको चीर
26 अपने निश्चित न निकाले जाय। चीर जितने बातों
बिश्वासी जन हैं। चीर अपने बातों
इन बातोंको शिष्या चीर उपदेश किया दर।
3 यदि कोई जन बारी चीर
बातें बारीकी अभ्यास हमारी प्रभु यीयू स्वीकृती बातें बारी
उस शिष्या जो भक्तिको अनुसार है नहीं मानता है।
4 तो वह अभिमानसे फूल गया है। चीर कुछ नहीं जानता
हि परन्तु उसे बिवादौंके श्रीर शब्दोंके फर्ग्दांका रूप हि
जिनसे हाथ बेर निन्दाकी बात श्रीर दूसरोंकी श्रीर
बुरे सन्दह हि जिनके मन बिगड़े हैं श्रीर जिनसे
समझ पहुँच हरी गई हि जा समझते हैं कि कमाईही भवि
हि ऐसे लगाते जलास रहना ।

पर सल्लोकुंडुल भवि बढ़ी कमाई हि। क्योंकि हम
बचाव हि बुध नहीं लाये श्रीर प्रगट हि कि हम कुछ ले
जाने भी नहीं सकते हैं। श्रीर भेजन श्री वस्त जा
हि लिया करं तो इसही सल्लोकुंडु रहना चाहिये।
परन्तु जो लोग घनी होने चाहते हैं सा परिश्रा श्रीर
फंदेमें श्रीर बहुतें सुरिहीन श्रीर हानिकारी भि-
जापेमें फंदेमें हि मनुष्योंका विनाश श्रीर विधि
हृदा देते हैं। क्योंकि धनका लाभ सब बुद्धियांका 10
मूल हि उसे प्राप्त करनेकी चेष्टा कारते हुए बिजतने
लोग विश्वाससे परमाणे गये हि श्रीर अपनेको बहुत
बड़ैसे वारपार बेटा हि ।

परन्तु हि इंशवरके जन तू इन बातिने बचा रह 11
श्रीर धर्म श्री भवि श्री विश्वास श्री ग्राम श्री धीरज
श्री नस्तकारी चेष्टा कर । विश्वासकी बढ़ी लड़ाई 12
लड़ श्रीर अनन्त जीवनकी धर ले जिसके लिये तू
शुलाया भी गया श्रीर बहुत साक्षात्कार करे बढ़ा
संगीकार किया । में। तुफके इंशवरके बागे जो समेतका 13
जिलाहा हि श्रीर बढ़ा यिशुके बागे जिसने पंतीय
पिलातके सामने बढ़ी संगीकारको साही दिई खाना
३४ ०ता हूँ । कि तू इस झाड़ाकी निष्ठौत श्री निर्देश
३५ हमारे प्रभु यीशु श्रीकृष्णः प्रकाशलिंग पानन कर । जिसी
बह झपनेही समयों म दिखावेगा जो परमभुः श्रीर
श्रद्दत पराक्रमी श्रीर राज्य करनेहारौंका राजा श्री
३६ प्रभुता करनेहारौंका प्रभु है । श्रीर श्रमरता केवल
उततीही है श्रीर बह भगव्य ज्यातिम वास करता है
श्रीर उसको मनुष्यांमें निःसने नहीं देखा है श्रीर
न श्राई देख सकता है । उसको प्रतिष्ठाश्रीर अनन्त
पराक्रम होय । श्रामीन ।
३७ जो लगाइ इस संसारमें घनी है उन्हें झाड़ा दे बि
वे साभीमानी न हैवे श्रीर घनकी चंजलतापर भरौसा
न रखनु पराक्रम श्रीवते इश्वरपर जा मुखप्राप्तिम लिये
३८ हर्में सब कुछ घनीकी रीतिसे देता है । श्रीर बि वे
भलाई करें श्रीर जच्छे कामेंके धनवान हैवे श्रीर
३९ उदार श्रीर परोपकारी हैं । श्रीर भविश्यत्काजें
लिये जच्छी नेव जपने लिये जुगा रखें जिसैं अनन्त
श्रीवनकी घर लेवें ।
४० है तिमियिय इस यात्रीकी रक्षा कर श्रीर अशुदु
बब्बादेंसे श्रीर जो भूठाईसे ज्ञान कहावता है उसकी
४१ बिसठू बातेंते परे रह । कि इस ज्ञानकी प्रतिज्ञा करते
हुए फिले लेग विश्वासके विषयमें भरक गये हैं ।
तेरे संग अनुययह होय । श्रामीन ॥
तिमाथियका पावल प्रेरितकी
दूसरी पत्री।

१ प्रतिव शब्दे।

१ प्रथमका चालान। २ पावलका तिमाथियके विषयसम धन्यवाद करन। ३ तिमाथि-
का उपदेश देना वै अभन्न हुढ़ वाणका वामान करना। ४५ कितने.
धारा प्रभाव विषयका वै त्यहू प्रहृति विषयसः करन।

पावल जो उस जीवनकी यथार्थसत्य अनुसार जो उद्धृत
सीमाॊम्य है इश्वरकी इच्छासे यीथु दृष्टिका प्रेरित है। नए रे
प्रथा पुर तिमाथियका इश्वर पितासे चैत हमारे प्रभु
हृद्य यीथुसे अनुभय चैत दया चैत श्रांति मिले।

चैत इश्वरका प्रभु मानता हूँ जिसकी सेवा में हमें अपने
पिताके रौहिण शुद्ध मनसे करता हूँ कि रात दिन
हुक्के मेरी प्रार्थनाओँमें तेरे विषयसे ऐसी निर्बंध बिलत
रहता है। चैत तेरे आसूँ आसा समाध यहाँ करने में सभी
देखनेका लालसा करता हूँ जिसती आनन्दसे परिपूर्ण
हैं। कींकि उस निझरक बिष्वासकी मुक्त सुरत
पड़ती है जो तुम्हें है जो पहले तेरी नानी लोहोंसे
चैत तेरा माता उनीकमें बसता ता चैत मुक्त
निपूंज लिंह हैं कि तुम्हें भी बसता है।

इस कारणमें सभी सबके चतुर दिल्लूवा हूँ कि इश्वरके
मान्य को जो मेरे हाथमें हैं सबके प्यार के द्वारासे तुम्हें हैं जगा
दे। कींकि इश्वरने हमें कादरकी नहीं परन्तु सामान्य
छै प्रेम छै प्रेमोधका ज्ञाता दिया हैं। इसलिये तू न
हमारे प्रभुकी साधसीं छैत न मुक्त से जो उसका बंधुरूणा
हूँ जानित है। परंतु सृष्टिका लिये मेरे संग इश्वर-
की शक्तिकी सहायतासे दुःख उठा। जिसने हमें बचाया अशीर उस पवित्र बुलाहटसे बुलाया जा। हमारे कमींकी अनुसार नहीं परन्तु उसीकी इच्छा अशीर उस अनुयहके अनुसार थी जो खोफु यीशुमें सनातनसे हमें दिया गया।

परन्तु तभी हमारे चाचाकोट यीशु खोफुके प्रकाशके द्वारा प्रगट किया गया है जिसने मृत्युका घाय किया परन्तु जीवन अशीर अनमोलताको उस सुसमाचारके द्वारासे प्रकाश-भित किया। जिसकी लिये में प्रचारक अशीर प्रीतिअशीर

आनंदप्राप्तियोंका उपदेशक होता गया। इस कारणसे में इन दुःखोंका भी भागता हूं परन्तु में नहीं जजाता हूं किंतु में उसे जानता हूं जिसका में विश्वास किया है अशीर मुझे निश्चय हुआ है कि वह उस दिनके लिये मेरी धारकी रक्षा करनेका सामर्थ्य रखता है।

जा वार्ता तने मुझसे सनीं साइं विश्वास अशीर प्रेमसे जो खोफु यीशुमें होते हैं तेरे लिये करी बातताका नमुना हार्वे। पवित्र आतमके द्वारा जा हमें बसता है इस बच्ची पाथिकी रक्षा कर।

तु यही जानता है कि वे सब जो आश्रियामें हैं जिनमें फुगील अशीर हमारीगिन्न हैं मुख्से फिर गये।

विनमरीयोंके घरानेपर प्रभु दया करें किंतु उसने बहुत बार मेरे जीवको ठंडा किया अशीर मेरी जंगीरसे नहीं लजाया। परन्तु जब रोममें था तब बड़ी यद्यपि मुझे बुंदा अशीर पाया। प्रभु उसको यह देवे कि उस दिनमें उसपर प्रभुसे दया किनई जाय। इफिसमें भी उसने कितनी तिलकाईं किनई सो तू बहुत आश्चर्य रोगित्वे जानता है।
2 दूसरा पत्रि।

1. तिमीथियतो कुछ खेतर्यमखुपलम ध्यान राखेना चाहिए। 8 योगकुण जी चढ़ेनका खेतर्यमखुपलम खेतर्य विश्वासयोग वाणिज्यका बढ़ानी। 14 द्वार बीतार खेतर्य मानवता विवेचन खेतर्य प्रस्तुत दासजी गोस्वामी काल खेतर्य स्थापना करना।

2. ये है नरे युध तू उस खननायशि जो ख्रीष्टु यीशुमें है 5 बलवन्त हो। खेतर्य जो बारे तूने भविष्यों खागे। 8 मुख्य सुनी उन्हे विश्वासयोग मानुषीयों सांप दे जो दूसराए भी सिखानेके योग्य हैं। सा तू यीशु ख्रीष्टु जी का तेज योद्धाकी नाई दुःख सह ले। जो कोई युद्ध कर्ता 8 है। सा खपनेके जीविकाके व्यापारामें नहीं उल्लिखता है। इसलिये खि खपने भरती करनेहरे। प्रसद करें।

3. खेतर्य यदि कोई मालूम भी करें जो वह विधके अनुसार 5 मालूम न करें ता उसे मुकुट नहीं दिया जाता है।

4. चरित है। जो पाइले वह गृहस्त जो परिस्थि कर्ता है। 6 फलेंका खंभ पावे। जो में कहता हूँ। उसे बूफ ले कोई 9 प्रभु तुम्हें सब बातेंमें ज्ञान देगा।

5. स्मरि लार कि यीशु ख्रीष्टु जो दाऊदके बंशसे था ने 8 सुमसामाजके अनुसार मृत्युमें ही उठा है। उस 8 सुमसामाजके लिये में कुकमर्ती नाई। यहाँ शुरु चढ़ता हूँ कि बांधा भी गया हूँ। परन्तु इश्वरका बचन बंधा नहीं है। में इसलिये चुने हुए लोगोंके कारण 10 सब बातेंमें धीरज धरे रहता हूँ कि अनन्त महिमा स्वहित वह चाह। जो ख्रीष्टु यीशुमें है उन्हें भी मिले।

6. यह बचन विश्वासयोग है कि जो हम उसके संग 11 मूर सा उसके संग जीविके भी। जो हम धीरज धरे रहें 12 ता उसके संग राज्य भी खरे रहें। जो हम उसके मुख
13 जायं ते वह भी हमसे मुकर जायगा। जो हम ज्ञातवासी हैं वह ज्ञातवासोत्योग रहता है वह अपने-के ज्ञात नहीं नकार सकता है।

14 इन बातोंका उहर्षसमर्पण करवा श्रीर प्रभुकी ज्ञात दूढ़ ज्ञाना दे कि वे शब्दोंकी मोरारी न किया करें जिनसे कुछ जान नहीं होता तर सुननेहरे बहकाये जाते हैं। अपने तर्कें उत्तरतत्वको ज्ञात यह शास्त्रशास्त्रांश्रों का विषयकारी जो जानित न होय श्रीर सत्यके चकनका यथार्थ विभाग करवा उनकाहरे यह कर। परन्तु अभूत बकवादिंसे बचा रह क्योंकि ऐसे बकवादी अधिक अभावितमें बढ़ते जायंगे। श्रीर उनका चकन सड़े घायकी नाई फ़ेलता जायगा। उन्हें हुमिंदे श्रीर फ़ेलते हैं जो सत्यके विषयमें मर्म गये हैं श्रीर कहते हैं कि पुनरहस्तान है।

15 चुका है श्रीर बिनांके बिनाको उलट देते हैं। तैमी देशवरकी दूढ़ नेव बनी रहती है जिसपर यह छाप है कि प्रभु उन्हें जो उसके हैं मानता है श्रीर यह कि हर एक जन जा खोल्का नाम लेता है कुकम्बसे जग रहे। बड़े घरमें केवल सानी श्रीर बाँटकी वर्तन नहीं परन्तु काट श्रीर मिट्टीके वर्तन भी हैं श्रीर कोई काई श्राद्धके कोई काई जनादरके हैं। तो यदि कोई अपनका इनके गुड़ करे तो वह जानाद्धका वर्तन होगा जो पावित्र किया गया है श्रीर स्वामीके बड़े काम श्राता है श्रीर हर एक चंचल कर्मके लिये तैयार किया गया है।

22 पर ज्ञातनीकी ज्ञानवासश्रींति वचा रह परन्तु घरमें श्रीर विश्वास श्रीर प्रेम श्रीर जो लगां गुड़ मनसे प्रभुकः
प्रारंभ करते हैं उन्होंने संग सिलापकी चेयूरा कर।

घर मूढ़ता छात्र छात्रादेवी बिवारोंके सलग कर २३ क्योंकि तू जानता है कि उसके खगड़े उत्पन्न होते हैं।

छात्र प्रभुके दासजों उचित नहीं है कि खगड़ा करे परन्तु २४ सम्भांत क्यों छात्र आमल छात्र सिखानिमें निपुष छात्र सहनशील होय। छात्र बिराधियांको नमुनतासे समझावे २५ क्या जाने देशवर उन्हें पथचाराय दान करे कि वे सत्यको पहचानें। छात्र जिन्हें शैतानने अपनी इच्छा निषिद्ध २६ ब्रम्हाया यथा उसके पंपेमसे सचेत होके निम्नले।

३ तीसरा पद्ध्वे।

१ कुपलियांको प्रमाण शेखनेकी भविष्यवाची | २ यात्राविक बापने गुरुनेसे तिमो- । बियो शालि व्यना। ३ धार्मिकस्तककी बिजानमे छोड़ रहनेका ध्याये।

पर यह जान ले कि अचले दिनेंमें कठिन समय शा पड़े। क्योंकि मनुष्य जाप्स्वार्थी लोभी दंभी भावमानी २ निन्दन भाव संतोषी जाना लघुन करनेहरे कृतस्तो शपाविच। मयारहित ज्ञानहित दोष लगानेहरे असं- य स्वयं कठोर भलेके बैरी। विन्ध्यास्तातक उत्तापले प्रम्पर- से फूले हुए छात्र देशवर अधिक मुख बिलासहिंको प्रय जानलेहरे हृंगे, जो भक्तिका रूप धारण करेंगे ५ परन्तु उसकी शक्ति मुक्तकरेंगे। इत्यादिपरे रह। क्योंकि ६ इन्हांसे न गं घर घर पुसके वन शाही स्तियांको बांग कर लेतें हैं जो पापित्त लटी हैं छात्र नाना प्रकारकी ज्ञानाधारी शेखनोंके चलाये चलती हैं। जो सदा सीखती हैं ७ परले भभी सत्यको ज्ञानोंने नहीं। पहुँच सकती हैं। जिस रूपिते याद्न छात्र यांनेन मूलका सासा किया उसी री-
तिसे मनुष्य भी जिनके मन बिगड़े हैं श्रीर जो विश्वास-
के विषयमें निकृष्ट हैं सत्यका सासा करते हैं। परन्तु वे
आधिक नहीं बढ़ने क्योंकि जैसे उन दोनों श्री अज्ञानता
समेंपर प्रगट हो गई वैसे इन लोगों भी ही जायगी।

10 परन्तु तूने मेरा उपदेश श्री आचरण श्री मनसा श्री
11 विश्वास श्री धीरज श्री प्रेम श्री स्थिरता। श्रीर मेरा
भानेक बार सताया जाना श्री दुःख उठाना श्रीभ्री रीति-
ते जाना है कि मुक्तपर जन्तुजियमें श्रीर इकानियमें
श्रीर लुस्तामें कैसी बातें बोली मैंने कैसे बड़े उपद्रव सहे
12 पर प्रभुने मुनि सभेंसे उबारा। श्रीर सब लोग जो खोद्दृ
योगुमें भक्ताइसे जन्म विताने चाहते हैं सताये जायंगे।
13 परन्तु दुपूर मनुष्य श्रीर बहकानेहारे घासा उठे हुए श्रीर
घासा खाते हुए आधिक बुरी दृश्यालं बढ़ते जायंगे।
14 पर तूने जिन बातेंकी सीखा श्रीर निःस्वय जाना है
उनमें बना रह क्योंकि तू जानता है कि किसी सीखा।
15 श्रीर वि बालकपनसे धर्मपुस्तक तेरा जाना हुआ है
जो विश्वासबी द्वारा जो खोद्दृ योगुमें है तुभी चार निमित
16 बुद्धिमान कर सकता है। सारा धर्मपुस्तक इंश्वरको
प्रेरणासे रचा गया श्रीर उपदेशको लिये श्रीर समंजनको
लिये श्री बुधारको लिये श्रीर धर्मको शिष्यको लिये
17 फलदाई है। जिस्तेइंश्वरका जन सिद्ध अर्घात हर एक
उतम कर्म्से लिये सिद्ध किया हुआ हैवे।
8 चैत्य पधें।
1 पाबलका तिमोरियका विचारी यो अपनी आशाका वर्णन करना। 2 उपका
इसे अपने पास युताना अपने कर्ने एक भास्यांका अपने एक ग्यारहवटे अपने
उपार देखका चढ़ा करना। 3 नमस्कारविद बहित प्रतीकी समास।
81
सा में इंधनके आगे और प्रभु यीषु खीरस्के आगे
का उपने प्रगट होने और उपने राजय करने पर
जिसकी और मृतकों का विचार करेगा तूद आज़ा देता
हूँ । बचनके प्रचार कर समय और जससमय तत्पर
रह लिये उपदेशके न सहित सफतका और
dां उपदेश कर । क्या और समय स्वागत जिसमें
लागे छठे उपदेशका न सहित परन्तु अपनीही ओभिए
कामके अनुसार उपने लिये, उपदेशकों दौरे
काम लगाने क्या न उनके कान सुरसुरारगी । और वे
सब उनके कान फरिये पर कहानियाँ और फिर जा
वीं । परन्तु तू सब बातां में सचेत रह दुःख सह ले
सुसमाचार प्रचारका कार्य कर अपनी सेवकाँकी
सम्पूर्ण कर । क्या न के १६ भी दाला जाता हूँ । और
मेरे बिदा होने का समय जा पहुँचा है । मेरे १७ जाड़ै
लग चुका हूँ मेरे अपनी दीवार पूरी बिज़िय है मेरे बिज़िय
का प्राण लिया है । अब तो मेरे लिये वह धर्मका मुकुट
घरा है जिसे प्रभु जो धर्म संसारको न क्या इस दिन
मुक्त देगा और केवल मुक्त नहीं पर उन समेको भी
जिन्होंने उसका प्रगट होना प्रय जाता है।
मेरे पास श्रीप्रभु चारका यह कर । क्या न के दीमानी
इस संसारका धर्म जानकी मुक्त छोड़ा है और विस्मित
की गतिकी चार कर तील के दल
मानिया है । केवल लूं ने मेरे साथ है । मानिया
लो के अपने संग ता क्या न के वह सेवकाँको लिये मेरे बहुत
काम जाता है । परन्तु तुलिकांके मेरे इफ़िसांका भेजा।
३ उस नवाटको जा में ब्राह्मणों कार्यरत यहाँ बोल खाया।
श्रीर पुस्तकोंका निज करके चम्म्प पत्रेंका जब तू जाये
तब ले खा। सिलान्दर टीरें मुफ्त बहुत बुराईयां
किये। प्रभू उसकी कर्मोंकी अनुसार उसकी फल दिये।
श्रीर तू भी उससे बचा रह कौंकिं उसने हमारी
बातोंका बहुतही बिरायथ किया है। मेरे पहिले बेर
उत्तर देनें माई मेरे संग नहीं रहा परन्तु सबेंने
मुफ्ती छोड़ा। इसका उनपर दूष न लगाया जाय।
परन्तु प्रभू मेरे निकट खड़ा हुआ श्रीर मुफ्ती सामर्थी
दिया जिसके मेरे द्वारा उपदेश सम्पूर्ण सुनाया जाय
श्रीर सब अनुदेशी लेगु सुनें। श्रीर में सिंहके सुखसे
बचाया गया। श्रीर प्रभू मुफ्ती हर एक वर्षे कर्में
बचावेया श्रीर अपने स्तरांगी राज्यके लिये मेरी रक्षा
करेगा। उसका गुणानुबाद सदा सबेंदा हो। श्रमिन।
प्रस्कौलजा श्रीर अकूलाकर। श्रीर उनिसिफरके
गरानेको नमस्कार। दरास्त दरिण्यमें रह गया श्रीर
चाफ़ीम रागी या उसे मैंने मिलीमें छोड़ा। जाड़ेः
पहिले र्षानिका यव कर। उपुल श्रीर पूरी श्रीर
लोकस श्रीर छोड़ा दिया। श्रीर सब भाई लागांका तुम्हे
नमस्कार। प्रभू यीशु ख्रोशं तरे णात्मके संग होय।
अनुयह तुम्हांको संग होवे। श्रमिन।
तीतसका पावल प्रेतिकी पत्री।

1 पहिला पत्र।

पावल जा ईश्वरका दास श्रीर ईश्वरके चुने हुए लोगोंके विश्वासके विषयमें श्रीर जा सत्य बचन भक्तिके समान है उस सत्य बचनके ज्ञानके विषयमें अनन्त जीवनकी आशासे यीशु ख्रिस्तुका प्रेतित है। कि उस जीवनकी प्रतिज्ञा ईश्वरने जो मूढ़ बैल नहीं सकता है सनातनसे किंदे। परन्तु उपयुक्त समयमें अपने बचन-का उपदेशके द्वारा जो हमारे चायकर्ता ईश्वरके आशाके अनुसार मुफ़्त संपा गया प्रगट किया। तीतस-का जो साधारण विश्वासके अनुसार मेरा सत्य पुच है ईश्वर पिता श्रीर हमारे चायकर्ता प्रभु के यीशु ख्रिस्तुसे अनुप्रेरणा श्रीर दया श्रीर शांति मिले।

मैंने इसी कारण तुल्य क्रीतीमें बोका कि जो बातें रह गईं तू उन्हें सुधारता जाय श्रीर नगर नगर प्राचीनिका नियुक्त करे जैसे मैंने तुल्य क्रीता दिया। कि यदि कोई निदाश श्रीर एकही स्त्रीका स्वामी होय श्रीर उसकी विश्वासी लड़के हां जिन्हें लुंचपनका देख नहीं है श्रीर जो निरंकुश नहीं हैं तो वही नियुक्त किया जाय। क्योंकि चाहिए कि मंदिरीका रखवाला जो ईश्वरका मंडारीसा है निर्दाश होय श्रीर न हठी न क्रीधी न मदरापानमें आसन्न न मरकहा न नीच कम साइं करनेहारा है। परन्तु
तीतिसाके।

श्रतिथिसेवक श्री भलेका प्रेमी श्री सुबुद्धि श्री धर्मरां
श्री पवित्र श्री संध्याम हाय। श्रीर विश्ववास्याम्य
बचनको जो धर्मायंत्रेको अनुसार है घरे रहे जितने
वह खरी मृदासे उपदेश करनेका श्रीर बिवादियोंको
समझानेका भी सामर्थ रहे।

10 क्योंकि बहुतेर निरंकुश बचवादी श्रीर धेखा देने-
11 हारे हैं निज करके खतना किये हुए लाग। जिनका
मुंह बन्द करना मवशय है जो नीच कमाईके कारण
अनुचित बातेंका उपदेश करते हुए परा ने का घरा र
12 बिगाड़ते हैं। उनसे एक जन उनके निजका एक
भविष्यत्रका बाला श्रीतीय लाग सदा मूरे श्री कुप्र मो
13 श्री निकम्मे परिपासु हैं। यह साही सत्य है इस हेतुते
उन्हें कड़ाइसे समझा दे जिस्ते वे विश्वासमें निष्ठा
14 रहे। श्रीर यहदीय कहाँनियोंमें श्रीर उन मनुष्योंकी
15 आज़ादीश्रीमें जो सत्यसे फिर जाते हैं मन न लगावे। शूद्र
लोगोंके लिये सब कुछ शूद्र हैं परन्तु अशुद्र, श्रीर आबि-
प्रवासी लोगोंके लिये कुछ नहीं शूद्र हैं परन्तु उन्हें का
16 मन श्रीर विवेक भी अशुद्र हुआ है। वे इंग्लिशरो
जाननेका तंगीकर करते हैं परन्तु अपने कर्मोंसे उससे
मुकर जाते हैं कि वे चिन्ताने श्रीर आज़ादा लागन करनेहारे
श्रीर हर एक अच्छे कर्मोंके लिये निकृष्ट हैं।

२ दूसरा पंबे।

१ शूद्रे श्रीर ब्राह्मण पुछे श्रीर शिवांगके लिये उपदेश। ५ दासोंके लिये उपदेश
श्रीर यहदीयसे बनुद्वारका आवृत्तियाअ।

१ परन्तु तू वह बातें कहा बह जो खरी उपदेशकी योग्य
हैं। बुढ़ोंसे कह कि सचेत श्री गंगोत्री श्री संयमी हायवे श्री बिद्वास श्री प्रेम श्री धीरजमें निष्कृत रहें। वैसे ही बुढ़ियाँशोंसे कह कि उनका शाश्वत श्रवण लोहेमें ऐसा हाय श्रीर न देश लगानेवालिया न बहुत मद-पानके बशमें हायवे पर छाजी बातांकी शिष्या दनेवालिया। इसलिये कि वे जवान स्थिरांका सचेत करें कि वे अपने अपने स्वामी श्री लड़केंसे प्रेम करनेवालिया। श्री संयमी श्री पतिव्रता श्री घरमें रहनेवाली श्री भली हायवे श्रीर अपने अपने स्वामीके अधीन रहें जिसकं ईश्वरके बचनकी निन्दा न भिजें जावे। वैसे ही जवानेंको संयमी रहनेका उपदेश दे। श्रीर सब बातांसे अपने तेस्रे कम्मांका दृष्टांक दिखा श्रीर उपदेशमें निर्देशाता श्री गंगोत्री श्री। शुद्धता सहित खरा श्री निरीक्ष बचन प्रचार कर कि विराजी हमें और श्रेणी बुराई लगानेका गैंग न पावे लक्षित हाय।

दासेंको उपदेश दे कि अपने अपने स्वामीके अधीन रहें। श्रीर सब बातांसे प्रस्तुता योग हायवे श्रीर फिरके उतरर न देव। श्रीर न चारी करें परन्तु सब प्रकाशक 10 छाजी सचेती दिखावे जिसकं वे सब बातांसे हमारी चाषकता ईश्वरके उपदेशकी श्रेष्ठा देव। कोणकं ईश्वरका 11 चाषकारी अनुपयोग सब मनुष्यांपर प्रगट हुआ है। श्रीर 12 हमें शिष्या देता है इसलिये कि हम अभिज्ञता श्रीर सांसारिक अभिज्ञानशिष्योंसे मन फिरके इस जगतमें संयम श्री न्याय श्री मकिसे जन्म बितावे। श्रीर अपनी सुख- 13 दाई भाषाको श्रीर महा ईश्वर श्रीर अपने चाषकता
यीशु ख्रिस्ती के ऐसे भविष्यका प्रकाशकी बार जोहते रहें।
14 जिसने अपने तर्क हमारे लिये दिया कि सब धर्मसे हमारा उठाए अपने लिये एक निज लोगों
15 जूते करे जो अच्छे कर्मके उद्घाटों होवे। यह बातें कहा कर जीर उपदेश कर जीर तुड़ आज्ञा करके समका दे। कई तुफ तुच्छ न जाने।

3 तीसरा पद्व
1 देवाधिकारियोंके धर्म रहने और शुम चाल चलनेका उपदेश और इम्मके
2 अनुभवका फल। 5 अनेक बातोंका उपदेश और मस्तकार हिस्से पधोंका समाप्त।
3 लोगोंका अर्थ करवा कि वे अध्यक्षों जीर अधि-
4 बालियोंके अधीन जीर आज्ञाकारी हैवें जीर हर एक
5 अच्छे कर्मके लिये तैयार रहें। जीर किसीकी लिंदा
6 करें परन्तु मिलनसार जीर मृत्युभाव हैं। जीर सब
7 मनुष्योंकी जीर समस्त प्रकारकी नक्ता दिखावें।
8 क्योंकि हम लाग भी जीर निबुंधी जीर आज्ञा लंगन
9 करनेहरे थे। जीर भरमारे जाते थे। जीर नाना प्रकार-
10 के अभिलाष जीर सुख तिलासके दास बने रहते थे। जीर
11 बैरभाव जीर हामें समय बिताने थे। जीर घिनने
12 जीर आपसके बारी थे। परन्तु जब हमारे चालकता
13 इलावकी कुप्पा जीर मनुष्योंपर उसकी प्रीति प्रगत
14 हुई। तब धर्मसे कार्यांसे जो हमने लिये सो नहीं
15 परन्तु अपनी दयके अनुसार नये जनकी जानकी द्वारा जीर पवित्र आत्मासे नये लिये जानकी द्वारा उसके
16 हर्में बचाया। जिस आत्माका उसने हमारे चालकता
17 यीशु ख्रिस्ती द्वारा हमें अधिकारके उंदेजा। इस-
लिये कि हम उसके अनुयाहसे धम्मीं ठहराये जाके
खानत जीवनकी शाखाके अनुसार अधिकारी बन
जावें। यह बचन विश्वासयोग्य है श्रीर में चाहता 8
हूं कि इन बातांके विषयमें ठूल टूटाके बाले इसलिये
कि जिन लोगांने इंद्रवरका विश्वास किया है सो अच्छे
अच्छे काम्य किया करनके साचमे रहें। यही बातें
वोम श्रीर मनुष्यांके लिये फलदाई हैं।

परन्तु मुहर्ताके बिवादान्ते श्रीर बंशावलियांसे श्रीर 8
बैर बिरामसे श्रीर ब्यवस्थाके विषयमें क्षिणडांसे बचा
रह क्यांकि वे निप्पल श्रीर व्यर्थ हैं। पारंदी मनुष्य- 90
को एक बेर बरन दो बेर चितानके पीछे झलग कर।
क्यांकि तू जानता है कि ऐसा मनुष्य भटकाया गया 91
है श्रीर पाप करता है श्रीर अपनेका अयाम दूपो ठहरा
ताहै। जब में बर्तिमा अयाम टुकिको तेरे पास 92
भेजूं तब निकेपालिमे मेरे पास ज्ञानेका यह कर क्यांकि
मैने जाड़ा क समय वहीं कारनके ठहराया है। जीनस 93
ब्यवस्थापकको श्रीर अपनेको बड़े यतसे जाने पहुंचा
कि उन्हें किसी बस्तुकी घटी न होय। श्रीर हमारे 94
लोग भी जिन जिन बस्तुको अयाम प्रयोजन है
उनके लिये अच्छे अच्छे कार्यां किया करनके। सीखी
कि वे निप्पल न हैवें। सब लोगांका जो मेरे संग 95
हैं तुमके नमस्कार। जो लोग विश्वासके कारण हमें
प्यार करते हैं उनके नमस्कार। अनुयाह तुम सभांके
संग हैवें। शामीन।
फिलीमानका पावल प्रेमिकी पत्री।

1 पत्रीका भाषा। 2 फिलीमानके विवरणम पावलका धन्यवाद और प्रार्थना। 3 नीन्द्रियके विवरणम फिलीमानके पावलकी बिनती। 83 नमस्कार विहित पत्रीको समाप्ति।

1 पावल जा ख्रीष्ट यीशुके कारण बंधुका है चौर भाई तिमाही ध्यान फिलीमानको जो हमारा सहकर्मी भी है। चौर ध्यान धक्काका चौर हमारे संगी थाट। 2 धक्काका चौर धारण धारण धर्मस्थलीको। धारण लोगका हमारे पिता ईश्वर चौर प्रभु यीशु ख्रीष्टके शानुभू चौर शान्ति मिले। 3 में धारण प्रेम चौर विष्णुवासका जो धारण प्रभु यीशु-पर चौर सब परिमाण लोगांसि रखते हैं समाचार सुलक्षण। 4 धारण ईश्वरका धन्य मानता हूं चौर निजो धारण प्रार्थना । धारण लोगांको समर्पण करता हूं कि हम लोगांकी समस्त भलाई ख्रीष्ट यीशुकी लिये है इस बातको खानसी वह सहायता जो धारण विश्वाससे किया करते हैं। 5 सुफल हो जाय। क्योंकि धारण प्रेमसे हमें बहुत धारण नन्द चौर शान्ति मिलती है इसलिये कि हे भाई धारण से धारण प्रार्थना परिशिष्ट लोगांकी नन्द करण्या सुख दिया गया है। 6 इस कारण जो बात सहायता है उसकी यद्यपि धारण । 7 की खाला देनेका मुक्त ख्रीष्टके बहुत साहस है । तैही भी प्रेमके कारण बरन बिन्तोही करता हूं। क्योंकि में
ऐसा हूँ मानी बूढ़ा पावल श्रीर जब यीशु श्रीशुके कारण बंधुशा भी हूँ । मैं अपने पुत्रके जिसे मैने २० बंधनमें रहते हुए जन्माया है शापसे विन्दी करता हूँ सोई वनीसिम है । जो पहले शापके कुछ कामका न ११ था परन्तु जब शापके श्रीर मेरी वड़े कामका है । उसकी १२ मैने लौटा दिया है श्रीर शाप उसकी मेरा शन्तःकरशा जानके यहाँ कीजिये । उसे मैं अपने पास रखा चाहता १३ था इसलिये कि सुसमाचारके बंधनामें वह शापके बदले मेरी सेवा करे । परन्तु मैने शापकी समस्ति १४ बिना कुछ करनेकी इच्छा न चिंता जिसें शापकी कुपा जैसे दबावसे न हो पर शापकी इच्छाके अनुसार है । क्योंकि वह जानें वह इसके कारण कुछ दिन १५ बलग हुशा कि सदा शापका है । जाओ । पर जब ता १६ दासको नाइंडे नहीं परन्तु दासते बदले अशुभ घारा भाई होय निज कर मेरा पर जितना शाधिक करके का घरीरमें क्या प्रभुमें शापहीका घारा । इसलिये १७ जो शाप सुभे सम्भागी समक्षते हैं तो जैसे सुकंबा तैसे उसकी पह्या कीजिये । श्रीर जो उसके शापकी १८ कुछ हाल हुई अथवा वह शापका कुछ धारता है । तो इसकी मेरी नामपर लिखिये । मुक्त पावलने अपने १९ हापसे लिखा है मैं भर देंजा जिसंत मुखे शापसे यह कहना न पड़े कि अपने ताईं २० भी मुझे देना शापका चचित है । हां हे भाई शापसे प्रभुमें मुझे शानन्द २० पहचे प्रभुमें मेरे शन्तःकरशा सुख दीजिये । शापके २१ शानाकारी देविका भरोसा रखके मैने शापके पास
लिखा है क्योंकि जानता हूं कि जो मैंं कहता हूं उससे भी ज्ञाप अधिक करेंगे। श्रीर भी मेरे लिये वासा तैयार कीजिये क्योंकि मुझे ज्ञान है कि ज्ञाप लेगांकी प्राप्यनासेवके द्वारा मैं ज्ञाप लेगांकी दे दिया जाऊँगा।

इत्यादि जै ख्रीष्ण यीशुके कारख मेरा संगी बंधुकरा जै है। श्री मार्क श्री आरिस्टाबे श्री दीमा श्री लूक जै 25 मेरे सहकर्मी हैं इन्हें ज्ञापका नमस्कार। हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्णका अनुयह ज्ञाप लेगांकी ज्ञात्माके संग होवै। ज्ञामीन।
इमियोंका (पावल प्रिंटकी) पत्रि।

1 पहिला पत्रि।

1 इश्वरसे पुत्र योगु बोधका माताज । 5 डरका न्यायूतंत्रिये बेचि बोला।

ईश्वरके पूज्यकालमे समय समय श्री नाना प्रकारसे भविष्यद्विता श्रृंख्ला के द्वारा पितोंसे बातें कर। इन पिछले दिनोंमे हमेंसे पुनरे द्वारा बातें बिधिये जिसे उसके सब बस्तुओंका शाधिकारी टहलाया जिसके द्वारा उसने सारे जगतको स्रग भी । जा उसकी महिमाका तेज श्रीर उसके तत्वकी मुद्रा श्रीर अपनी शातिकी बचनसे सब बस्तुओंका संभाजननहारा होके अपनेही द्वारसे हमारे पायेंका परिशोधन कर उन्हे स्वामिमेंकी महिमाकी दाहने हाथ जा बैठा । श्रीर जितने भर उसके स्वर्ग- दूसरींसे बेंगु नाम पाया है उतने भर उनसे बड़ा हुआ।

केवलके दूसरूसे ईश्वरसे किसते कभी कहा तू मेरा पुन री है में स्वागती तुम्हे जनमाया है श्रीर फिर कि में उसका पिता हांगा श्रीर वह मेरा पुन होगा । श्रीर जब वह फिर पहिलीका संसारमे लावे वह कहता है ईश्वरके सब दूस्रा उसका प्रमाण करे । दूसरे विघरमे वह कहता है जो अपने दूसरे पवन श्रीर अपने सेवकांका शाठकी ज्वाला बनाता है। परन्तु पुनरे से कि है ईश्वररे तेरा सिंहसन सबजीदाला है तेरे राज्यका राजदंड सीधाइका राजदंड है। तू न धम्मको प्रया जाना श्रीर कुकमसे निप्दा किद्दे इस कारण ईश्वर
तेरे दैवत्वर्तिने तुम्के तेरे संगेयांति श्रधिक करके आनन्दबरे ।
10 तेलसे श्रमिप्लेक किया । श्रीर यह यक है प्रभु ज्ञातिमें
tुहे पृथिवीकी नैव हाली श्रीर सवर्गे तेरे हाथेंकी कार्यये ।
11 है । वे नाश होंगे परन्तु तू बुना रहता है श्रीर बस्तकी ।
12 नाइं वे सब पुराने हा जायंगे । श्रीर तू उन्हें चटरकी
नाइं लपेटेगा श्रीर वे बदल जायंगे परन्तु तू एकसां
13 रहता है श्रीर तेरे वरस नहिं घर्ने । श्रीर टूटॉमसे
उसने विसति कभी कहा है जबलां में तेरे बच्चुआंकी
तेरे चर्चाएंकी पीढ़ी न बनांज़ तबलां तू मेरी दिहिनी
14 श्रीर बेठ । क्या वे सब सेवा करनेहारे आत्मा नहीं
हैं जो चाष मानवाले लोगेंके निमित सेवकाईंके लिये
भेजे जाते हैं ।

2 दूसरा पनंगे ।
1 योकुरे स्वरूपमें हे मे मनके कार्य सुखमाचारके मानेंका तुपेंध । 5 योकुरे
दीन बलने पूराने सहिमा प्राप्त करना । 10 बकाबे दोनताका श्रीर बलतार
सेना प्रयोजन ।

5 इस कारण स्वर्ग यह है कि हम लोग उन बांटांपर जी
हमने सुनी हैं बहुत श्रधिक करके मन लगावें ऐसा न
2 हो कि भूल जावे । विषांके यदि वह बचन जा टूटोंके
द्वाराते कहा गया टूट हुआ श्रीर हर एक शरद
3 श्रीर आन्तांपरका यथार्थ प्रतिफल मिला । तो हम
लोग ऐसे वड़े चारसे निश्चित रहके विषांकर बचेंगे
वर्षात इस चारसे जो प्रभुसे द्वारा प्रचारित होने
लगा श्रीर हमेंके पास सुननेहारिंसे टूट किया गया ।
4 जिनके संग दैवतर भी चिन्नीं श्रीर अदुत कामेरंसे भी
श्रीर नाना प्रकारके श्रवि बर्मांसे । श्रीर अपनी
इच्छाके अनुसार पवित्र ज्ञाताके दानांके बांटनेसे साधी देता था।

क्याँकि उसने इस हानिहार जगतको जिसके विश्वासमें हम बोलतें हैं दूःसंको अधिन नहीं किया। परन्तु किसीने कहां साधी दिए कि मनुष्य का हैं। कि तू उसकी सुध लेता है अर्थवा मनुष्यका पुछ क्या हैं कि तू उसपर दूषि करता है। तूने उसको कुछ चेहारासा दूःसंको बोरा किया तूने उसे महिमाचैर ज्ञाताका मुकुट पहिनाया चैर उसको अपने हाथेंके कार्यंपर प्रधान किया तूने सब कुछ उसके चरणोंके नीचे अधीन किया। सब कुछ उसके अधीन करने से उसने कुछ भी रख न चोड़ा जा। उसके अधीन नहीं हुआ। तैभी हम चलों नहीं देखतें हैं कि सब कुछ उसके अधीन किया गया है। परन्तु हम यह देखते हैं कि उसको जे कुछ चेहारासा दूःसंको बोरा किया गया था अर्थवा यीशुके मृत्यु भोगनेके कारण महिमा चैर ज्ञाताका मुकुट पहिनाया गया है इस-लिये कि वह ईश्वरके अनुयायिये सबके लिये मृत्युका स्वाद चीखे।

क्याँकि जिसके कारण सब कुछ हैं चैर जिसके द्वारा सब कुछ हैं उसके यह योग्य था कि बहुत पुरींको महिमालों पहुँचानेमें उनके चारके क्योंकी तुःसे भोगनेके द्वारा सिद्ध करे। क्याँकि पवित्र करनेहारा चैर वे भी जो पवित्र किये जाते हैं सब एकहीसे हैं चैर इस कारण-से वह उन्हें भाई कहनेमें नहीं लजाता है। वह कहता हैं में तेरा नाम अपने भाईयोंको सुनाओंगा सबाके
१३ बीच्में में तेरा भजन गाजांगा। शीर फिर कि विशे उसपर भरोसा रखूंगा। शीर फिर कि देख में शीर लड़के जा। १४ इत्यादि मुंके दिये। इसलिये जब कि लड़के मांस शीर लोहके भागी हुए हैं वह शाय भी वैसी इनका भागी हुआ। इसलिये कि मृत्युके द्वारा उसका जिसे मृत्युका १५ सामथ्री या अर्थात सैताको ग्रह करे। शीर जितने लोग मृत्युके भयसे जीवन भर दासतम फंसे हुए थे १६ उन्हें छुड़ावे। किया कि वह तो दूसराको नहीं याब्हता है। १७ परन्तु इवाहीमें बेशकी याब्हता है। इस कारण उसकी ज्ञानश्रौत या कि सब बातों में भाईयोंके समान हो। जावे जिसी वह उस बातों में जो इत्यादि उसके प्रभु प्रथम हैं दयाल शीर विश्वासयोग्य महायज्ञ बने कि लोगोंके १८ पापोंके लिये प्रायशिचत करे। किया कि जिस जिस बातमें उसने परीक्षामें पड़के दुःख पाया है उस उस बातमें वह उनकी जिनकी परीक्षा किंडे जाती है अहायता कर सकता है।

३ तीसरा पद्म।

१ गुस्सको मूर्ति सेव पूजा। २ हस बातकी कारण पितरोंका हुमास। देवके कठोरता और अभिशास्यवे नियम पर।

१ इस कारण हे पविच्च भाईया। जो स्वर्गीय वुलाहरमें सम्भागी हे हमारे संगीकार किये हुए मतके प्रेरित २ शीर महायज्ञ क्षीरू गुणको देख लेख शीर। जो अपने ठहरानेहरीके विश्वासयोग्य हैं जैसा मूसा भी उसके सारे ३ घरमें विश्वासयोग्य था। किया कि यह ते। उतने भर मूसाये श्रध्दव बहारकी योग्य समझा गया है जितने भर घरके
झाड़से घरके बनानेहरूका झाड़ आधिक होता है। क्योंकि हर एक घर फसलका तो बनाया हुस्ना है परलू 4 जसले सब कुछ बनाया भो इंशवर है। शैर मूसा तो जो बातें बही जानेपर थीं उनको साहसीगुँ लिये सेवककी नाई उसकी सारे घरमें विश्वासयोग्य था। परलू खोप 5 रुचको नाई उसकी घरका अध्यक्ष हाकर विश्वासयोग्य है शैर हम लौग यदि साहसको शैर श्रामकी बढ़ाइयो अन्तरु उदृ याँभे रहें तो उसकी घर हैं।

इसलिये जैस पवित्र आत्मा कहता है कि झाड़ जो 7 तुम उसका शब्द सुना। तो श्रापन जन कटोर मत करा जैस चिदावलमें शैर परीक्षाके दिन जंगलमें हुस्ना। जहाँ तुम्हारी पितारानी मेरी परीक्षा निकैते शैर मुझे जांचा 8 शैर चालीस बार मेरे कामिंको देखा। इस कारण में 90 उस समयके लेगंसे उदास हुस्ना शैर बोला उनके मन सदा भटकते हैं शैर उन्हांनी मेरे मार्गीको नहिं जाता है। ता मने क्राइग कर किरिया खाई कि वे मेरे विश्वासमें 91 प्रवेश न करें। सैरी है भाद्रो चाकस रहा कि जीवते 92 इंशवरका त्यागनेमें शास्वासका बुरा मन तुम्हांमें किसीमें न ठहरे। परलू जबलों झाड़ कहावता है 93 प्रतिदिन एक दूसरेको समभासो ऐसा न है कि तुम्हांमें कोई जन पापको दलसे कटोर हो जाय। क्योंकि हम जो 94 भरासके झारमंको अन्तरु उदृ यांभे रहें तब ता कोईमें समभागी हुए हैं। जैसे उस बाकमें है कि झाड़ जो तुम 95 उसका शब्द सुना। तो श्रापन मन कटोर मत करो जैसे चिदावलमें हुस्ना। क्योंकि बिन लेग्णेने सुनके चिदालया। 96
क्या चन सब लोगांने नहीं जा मूसाके द्वारा बिस्तरसे
17 निकले। शैर वह जिन लोगांसे चालीस वरस उदास हुआ। क्या चन लोगांसे नहीं जिन्हांने पाप किया
18 जिन्हीं लोग जंगलमें गिरीं। शैर जिन लोगांसे उसने
किरिया खाई कि तुम मेरे बिशाममें प्रवेश न करोगे
19 वेवल आंदालंधन करनेहारीसे। सो हम देखते हैं कि
वे आविष्कारके कारण प्रवेश नहीं खार सबे।

8 चौथे पढे।

1 ईश्वरके विशामकर बर्वन शैर उसमें प्रवेश करनेका उपरेंश शैर ईश्वरके त्वान
का गुळ। 14 योग्यका महादासाद्वा नेरा गोर बच्चे किये बुझा। शैर प्राचीनाको
राजाकाल।

इसलिये हमेंका हरना चाहिये न हो कि यदापि
ईश्वरके बिशाममें प्रवेश करनेकी प्रतिज्ञा रह गई है
तौभी तुम्हाके लोग जन ऐसा देख पड़े कि उसमें नहीं
2 पहुंचा है। क्योंकि जैसे उन्हांका तौसे हमेंका वह सुस-
मार्ग सुनाया गया है परन्तु उन्हें समाचारके बचने
जा सुननेहारीसे बिश्वाससे नहीं मिलाया गया कुल लाभ
3 न हुआ। क्योंकि हम लोग जिन्हांके बिश्वास किया है
विशाममें प्रवेश करते हैं। इसके विषयमें यदापि उसके
आय्यो जगतकी उत्तप्त कर तौभी उसने कहा
है सो मैंने क्रोध कर किरिया खाई कि वे मेरे बिशाममें
4 प्रवेश न करेंगे। क्योंकि सातवें दिनके विषयमें उसने कहीं
यूं कहा है शैर ईश्वरके सातवें दिन अपने सब आय्योंसे
5 बिशाम किया। तौभी इस तौर फिर कहा है वे मेरे
6 बिशाममें प्रवेश न करेंगे। सो जब कि भिंदनेंका उसमें
प्रवेश, करना रह गया है शैर जिन्हांका उसका सुसमा-
बार पहले सुनाया गया उन्हें खाज़ालूंगने के कारण
प्रवेश न किया । शीर फिर वह खाज़ा कह नहीं करके जिसी
दिनका रिकाना दे इतने दिनों में पीछे दाजुदाने द्वारा
भोलता है जैसे कहा गया है खाज जो तुम उसका शब्द
सुनी तो अपने मन कठोर मत करे । परन्तु जो यिहो-
जुआने उन्हें विषाम दिया होता तो इंश्वर पीछे तूसी
दिनकी बात न करता । तो जानो कि इंश्वरके लोगोंके
जिन्हीं विषामवारसा एक विषाम रह गया है । क्योंकि १०
जिसने उसके विषाममें प्रवेश किया है जैसे इंश्वरने
अपनेही कार्यांसे तैसे उसने भी अपने कार्यांसे विषाम
किया है । तैसे हम लोग उस विषाममें प्रवेश करनेका ११
यह करें ऐसा न हो कि काई जन खाज़ालूंगने उसी
दृष्टिगतके समान पतित हो । क्योंकि इंश्वरका वचन १२
मीठता शी प्रबल शीर हर एक दृष्टार हड़से भी चोखा
है शीर वारपार छेदनेहरा है यहांलीं कि जीव शीर
आत्माके शीर गांठ गांठ शी गूडे गूठीको सहल सहल
बरे शीर हृदयकी चिन्ताओं शीर भावनाशीर्षका विचार
बरनेहरा है । शीर काई सजी हुई वस्तु उसके शाको १३
गुप्त नहीं है परन्तु जिससे हर बाम है उसके नेत्रोंके
शाके सब कुछ नंगा शीर खुला हुआ है ।
सा जब कि हमारा एक बड़ा महायाजक है जो स्वर्ग १४
होके गया है रघुनाथ इंश्वरका पुर्ण यीशु खाजा हम
अपने अंगीकार किये हुए मतको घरे रहे । क्योंकि १५
हमारा ऐसा महायाजक नहीं है जो हमारी दुःखले-
ताकोंके दुःखों बुझ न सके परन्तु बिना पाप बह
हमारे समान सब बातों में परिष्कृत हुआ है। इसलिए हम लोग अनुयाहें सिंहासनों पास साहस से शारीर कि दया हमपर खिले शाय शाय हम समय योग्य सहायताओं लिये अनुयाह पाएं।

पांचवां पर्व।

शायाबाबों रह दे बातों का सब्ब्य होना कि बालेन्द्र कुमार के और कि इश्वर से बिन्दु नियुक्त किया जाय और दोनों बातों को पीछे पूरा होना।

कौंकि हर एक महायाज्ञव मनुष्यों में लिया जाता है। मनुष्यों में लिये उन बातों के विषय में जो इश्वर से मनमोहक रखती हैं ठहराया जाता है कि बदलवाएं श्रीर प्राप्त होते।

लिमित बलिदानें। चढ़ावे। श्रीर वह झड़ानां श्रीर भूलनेहारे बी श्रीर दयाशील हो सकता है कौंकि वह ज भी दुनियादार श्रीर हुआ है। श्रीर इस से जारा स से सत्यहृदय है कि जैसे लोगों में तिने भरने लिये।

भी पापों के लिमित चढ़ाए। श्रीर यह शादर खोई श्रीर लिये नहीं लेता हे परन्तु जो हारानकी नाईं इश्वर से बुझाया जाता है सा लेता है। वैसीं अपने भी महायाज्ञव बननेका अपनी बढ़ाई न खिले परलू जो उससे बालातू मेरा चुप है मैंने बाजही तुके जनमाया है उसीने उसकी बढ़ाई खिले। जैसे वह दूसरे ठारमें भी बहता है तू मलबोसिद्वकी पदवी- पर सदृश याज्ञव है। उसना अपने शरीरके दिनों में उन्में बब्दों पुन्कार पुकारके श्रीर रो रोके उससे जो उन्मे मृतुयु सबा सकता था भिन्नी श्रीर निवेदन श्रीर उस भयों निमित्त मुना गया। श्रीर यदापि
युष्ट तारी जिन दुःखांको भोगा उनसे चाद्रा मानना सीखा । श्रीर सिद्ध बनके उन समूहों लिये ६ श्री उसके चाद्राकारी होते हैं शनन्त चायका काली हुआ । श्रीर ईश्वरले मलकोसिद्कांकी पद्विपरका १० महायाजक कहा गया ।

इस पुरुषके विषयमें हमें बहुत बचन कहना है १२ जिसका चरण बताना भी कठिन है क्योंकि तुम सुननेमें चातानी हुए हो । क्योंकि यद्यपि इतने समयके बोतनेसे १२ तुम्हें रचित था कि शिखाक होते तारी तुस्तीका फिर वास्तवक है कि ईश्वर मुख्यचे विधाय योकी भाविदिकी क्षमा है श्रीर ऐसे हुए हो । क्योंकि उसने ३५ दूरपही पीता है उसका धर्मका मथनका परिचय नहीं है क्योंकि बालक है । परन्तु चाहें उनके लिये है जो १५ सयाने हुए हैं जिनकी ज्ञानन्दा चारका व्यक्त के श्री बुरेक बिचारके लिये साधे हुए हैं ।

ई छठबां पवें ।

१ धर्मते यह जानेका उपदेश । १५ ईश्वरली प्रतिपादिता त्रृणम ।

इस कारण ग्रीष्मका सादि बचनका बोझके हम सिदूँ- १ ताकी श्रीर बनते जायं । श्रीर यह नहीं कि मृत्युवत २ धर्मातात्प तत्त्वांकरनेकी श्रीर ईश्वरकार निर्द्वास वर्तनेकी श्रीर व्यवस्थामेंके उपदेशको श्रीर शाय भक्ति- ३ श्री भृतीका जी उत्तनेकी श्रीर चानन्त दंडको नेव फिरोले हालें । हां जे ईश्वर यूँ करने दबे तो हम यहीं ३ खारे । क्योंकि जिनहोंने एक बर ज्योति पाई श्रीर ८
स्वर्गीय दानकां स्वाद चीखा श्रार पविव जातामके
भागी हुए . श्रार इंशवरकेभले बचनका श्राहोनेहार
जतकी शतिका स्वाद चीखा . श्रार पतित हुए हैं
जन लोगके पश्चातापके निमित फिरके नये करना
श्राहना है क्याको वे इंशवरके पुछका झपने लिये फिर
झुशपर चढ़ाते श्रार प्रभावम उसपर कलाक लगाते हैं ।
क्याको जिस भृजने वह दणा जो उसपर बारंबार
पड़ती है पिंदे हैं श्रार जिन लोगके कारण वह जैती
बाई जाती है वन लोगके यथाय साग प्रात उपजाती
है तो इंशवरसे भाशिस पाती हैं । परन्तु जो वह बांटी
श्रार जंगलकर जन्माती है तो निकृष्त हैं श्रार साधित
होनेके निकट है जिसका नत यह है कि जलाई जाय ।
परन्तु है यारो यदापि हम यूं बोलतें हैं ताभी तुम्हारे
विषयम हमें शांची ही बातें श्रार चारा संयुक्त बातोंका
भरासा है । क्याको इंशवर अन्याइ नहीं हैं कि तुम्हारे
कार्यको श्रार उसके नामपर जा प्रेम तुमने दिखाया
उस प्रेमके परिक्रमका भूल जावे कि तुमने पविव
लोगको सेवा किंदे श्रार करते हैं । परन्तु हम चाहते
हैं कि तुमहांसे हर एक जन जन्तलां भाशामके
निश्चयके लिये वही यह दिखाया करे । कि तुम जाणती
नहीं परन्तु जा लोग विषृवस श्रार धीरजके द्वारा
प्रतिज्ञाकोंके अधिकारी हैतेही उन्होंने बनामामी बना ।
क्याको इंशवरने इबाहोंमको प्रतिज्ञा देके जव कि
अपनेसे किसी बड़की किरिया नहीं खा सकता था
खपनीहै किरिया खाएँ कहा । निश्चयमें तुम्हें बहुत
एशीस देंगा शीर तुम्हें बहुत बढ़ाज़ंगा। शीर इस १६ रूपतिंदेम इब्राहीमने धीरज धरके प्रतिज्ञा प्राप्त किंद्रू। कोंकर मनुष्य तो असनेसे बड़ेकी किरिया खाते हैं। शीर किरिया टूटताके लिये उनको समस्त विवादका काल है। इसलिये इंश्वर प्रतिज्ञाके साधिकारियोंके १७ छापने मतकी सचलताको बहुतही प्रगत करनेके इश्वर तारीयके द्वारा संग्रहयुग हुषा। जै दो क्षितिज १८ विषयोंके द्वारा जिनमें इंश्वरका फूट बैलाना अस्तित्व है टूट शांति हम लेनेकी मिले जो सामने रखो हुई बाज़ा धर लेनेकी भाग भागे हैं। वह बाज़ा १८ हमारे लिये प्राप्तका लंगरस होती है जो अस्तित्व शीर टूट है शीर परदेशे भीतरलों प्रवेश करता है। जहां २० हमारे लिये बागुवा होके योगुने प्रवेश किया है जो मलकरिसिदकी पदवीपर सदाशी महायाजक बना है।

0 सातवाण पद्वे ।

0 मलकरिसिदकी शक्ति। 8 बाज़ा महसू। ११ मूल योगुने बड़ीकी पदवीपर नियुक्त होनेके वातावरण तो योगुने पदवीकी भाग भाग प्रमाण । २० योगुने यह वातावरण बड़ीकी पदवीपर कार्य एव प्रमाण।

यह मलकरिसिदक शलीमका राजा शीर सब्बूप्रधान 1 इश्वरका राजक जो इब्राहीमते जब वह राजानींको मारनेके लिए शांतिता या क्षमा बीत उसके शासित दिने। जिसको इब्राहीम यह वह अन्यसे दशवा शंका २ को दिया जो पहिले असने नामके अर्थते धम्मुका राजा है शीर फिर शलीमका राजा भी शांतिता शांतिका राजा है। जिसका न पिता न माता न बंशावलि है जिसके ३
उष्णकाल न जीवनका रात है परन्तु ईश्वरके पुष्पके समान फैला गया है नित्य याजक बना रहता है।

पर देखो यह कैसा बड़ा पुरुष या जिसका इब्राहीम कुलपतिने लूटमें हम संस्कृत भी दिया। लेबेस लाटना जो लोग याजकीय पद पाते हैं उन्हें तो व्यव-स्थायी बनाये। लेबेस एकसंगत संयुक्त अपने भाइयोंसे यदापि वे इब्राहीमके देखे जन्मे हैं दसवां संत लेनेकी आदेश होती है। परन्तु इसने जो उनकी बंशावलिमेंका नहीं है इब्राहीमसे दसवां संह लिया है बोर उसकी जिसी प्रतिज्ञागर्म मिनी भाषीस दिए है। पर घरेलू वाष्पी बात है राष्ट्रीको बड़े भाषीस दिए जाती है। बोर यहां मनुष्य जो भरते हैं दसवां संह लेते हैं परन्तु वहां वह लेता है जिसके विषयमें साह्यी दिए जाती है कि वह जीता है। बोर यह भी कह सकते कि इब्राहीमके द्वारा लेबेसे भी जो दसवां संह लेनेहारा है दसवां संह लिया गया है। क्योंकि जिस समय मलाइसिटक उसके पितासे ज्ञा मिला उस समय वह ज्ञापने पिताके देखे था।

ता यदि लेबेस याजकताके द्वारा जिसके संगोगमें लेबेसे व्यवस्था दिे गई थी सिद्ध हुई होती ता बोर का प्रयोजन था कि दूसरा याजक मलाइसिटकी पदबीपर खड़ा होय बोर हरियनकी पदबीका न बढ़ाये।

क्योंकि याजकता जो बदली जाती है तो ज्ञापण करके भवस्थाकी भी बदली होती है। जिसके विषयमें यह बारें कही जातीं तो दूसरे कुलमेंका है जिसमें जिसी मनुष्यने बदली सेवा नहीं किया है। क्योंकि प्रत्येक है।
कि हमारा प्रभु यिहूदों के कुलसे उदय हुआ है जिससे मूसाने याजकताबी विषयमें कुछ नहीं कहा। चौर वह १५ बात चौर भी बहुत प्रगट इससे होती है कि मलको-सिद्दाकी समान दूसरा याजक खड़ा है। जो शारीरिक्ष ११ चाहिए ब्याख्या व्यवस्थाके अनुसार नहीं परन्तु भविष्यके जीवनकी शक्तिके अनुसार बन गया है। क्योंकि इंश्वर १७ साधी देता है कि तू मलकोसिद्दाकी पदवीपर सदालों याजक है। सो धगली चाहिए दुल्लुलता चौर १८ निष्पलताके कारण उसका तो लेप होता है इसलिये कि व्यवस्थाने किसी बातका सिक्का नहीं किया। परन्तु १४ एक उत्तम भाषाका स्थापन होता है जिसके द्वारा हम इंश्वरके निकट पहुँचते हैं।

चौर वे लोग बिना किरिया याजक बन गये हैं परन्तु २० यह तो किरियाके अनुसार उससे बना है जो उससे कहता है परमेश्वरने किरिया खाई है चौर नहीं प्रभ- 

किरियाके अनुसार उसके निम्न उत्साहके बिना याजक है। 

सो जब कि यीशु किरिया बिना याजक नहीं हुआ है। २१ वह उसने भर उत्तम नियमका जानक हुआ है। २२ 

चौर वे ठीक बहुतसे याजक बन गये हैं इस कारण कि २३ मृत्यु उन्हें रहने नहीं देती है। परन्तु यह सदालों २४ रहता है इस कारण उसकी याजकता अर्थ है। इस- २५ 

लिये जो लग उसके द्वारा इंश्वरके पास भागे हैं वह 

उनका भाषा अवतारको बना होता है क्योंकि वह उनके 

लिये बिन्दी करनेका रहने जोता है। क्योंकि ऐसा २९ महायाजक हमारे योग्य था जो पवित्र चौर सूपा चौर
निम्नलिखित श्री पापियोंसे अलग श्रीर स्वर्गसे भी ऊंचा किया न हुआ है। जिसे प्रतिदिन प्रयोजन नहीं है कि प्रधान याजकोंकी नाई पहले अपने ही पापियें लिये तब लोगों ने पापिये के लिये बलि चढ़ाये क्योंकि इसका यह हबही बेह प्रय चुका कि अपने तदि चढ़ाया। क्योंकि व्यवस्था मनुष्योंका जिसीं दुनियात्ता है प्रधान याजक ठहरती है परन्तु जो राखिया व्यवस्थाकी पीछे खाई गई उसकी बात पुष्करा जो सदिया लिया गया है ठहरती है।

8 झाठवाण पढ़े।

1. योगको याजकलका स्वर्गसे सम्भव रखना। 7. नये श्री ग्रेट्ट नियमका बर्णन श्रीर भविष्यद्वारीबी को वचका प्रभाद।

1. जो बाते कही जाती हैं उनमें सार बात यह है कि हमारा ऐसा महायाजक है कि स्वर्गसे महिमाके सिंहासन- 2. सनके दहलने हाथ जा बेठा। श्रीर पवित्र स्नानका श्रीर उस सच्चे तंबूका सेवक हुआ जिसे किसी मनुष्यने नहीं 3. परन्तु परमेश्वरने खड़ा किया। क्योंकि हर एक प्रधान याजक चढ़ाने श्रीर बलिदान चढ़ानेके लिये ठहराया जाता है इस कारण अवश्य है कि इसीके पास भी 8. चढ़ानेके लिये कुछ होय। फिर याजक तो हैं जो व्यवस्थाके अनुसार चढ़ाने चढ़ाते हैं श्रीर स्वर्गसे बलिदान देके प्रतिष्ठा श्रीर पररा इंकी सेवा करते हैं जैसे मूसाकी जब वह तंबू बनाएँ था खाशा दिये गईं अर्थात इंस्वरने कहा देख जो श्राकर तुके पहाड़पर धर दिखाया गया उसके अनुसार सब कुछ बना। इसलिये हर इंका यह पृथिवीपर होता तो याजक नहीं होता। परन्तु
श्याम जैसे वह शीर उत्तम नियमका मध्यस्थ है जो शीर उत्तम प्रतिज्ञा श्रीमंगल स्थापन किया गया है तैसी बेतुल सेवकाई भी उसे मिली है।  
किंतु जो वह पहिला नियम निर्देश होता तो दूसरे के लिये जगह न बूढ़ी जाती। परन्तु वह उनपर देश देखे बालता है कि परमेश्वर कहता है देखो वे दिन जाते हैं कि मैं इसायलके घरानेके संग शीर विदूढ़िये घरानेके संग तथा नियम स्थापन कहता है।  
जो नियम मैंने उनके पिताओंके संग उस दिन बांधा जिस दिन उन्हें मिसर देशमें निकाल लानेके उनका हाथ थाना उस नियमके अनुसार नहीं किंतु वे मेरे नियमपर नहीं ठहरे शीर मैंने उनकी सुध न लिये परमेश्वर कहता है। परन्तु यही नियम है जो मैं उन 90 दिनाबी पिछे इसायलके घरानेके संग बांधूँगा परमेश्वर कहता है मैं अपनी क्षमता उनके मनमें हालूंगा।  
शीर उसे उनके हृदयमें लिखूँगा शीर मैं उनका देशवर हृंगा। शीर वे मेरे लोग हैं।  
शीर वे हर एक अपने 99 पढ़ासीका शीर हर एक अपने भाईका यह अहके न तिघांगे कि परमेश्वरका पहचान किंतु उनमें छाटिये बड़लं सब मुक्त जानेंगे। किंतु मैं उनके 12 ज्ञानमें विश्वमें दया कहता है।  
शीर उनके पापोंको शीर उनके कुष्टियाँको फिर कभी स्मरण न कहता।  
नया नियम कहते उसने पहिला नियम पुराना 13 ठहराया है पर जो पुराना शीर जीते होता जाता है  
सा लोट हालेके निकट है।
नवां पढ़भोः

१ सूहाके बनाये हुए तंबुका बर्मे। ५ उर्मिल्ली सेवकारे सीट्टे प्रायिकारका 
वृक्षार्द्ध | १५ खृष्ण जा नाहे नियमका संधिपत्य ये रस कारख उसके दर्शनःको 
आवश्यकता। २५ स्वामिमु बीट्रकी सेवकारे श्रीर उसके फिर बांलेको ब्रह्मा।

२ त्या उस पहले नियमको संयोगमें भी सेवकारेिकी

२ विधियां श्रीर लौकिक पविच स्वाता या। किंतू तंबूभारी के तल जो तंबू दृश्य जिसमें देवें श्रीर बेग मेज श्रीर

३ रोहकी भेंट फिर जा पविच स्वाता कहावता है। श्रीर

४ हद्देसे यह तल जो सिमें मेज स्वाता पविच स्वाता कहावता है। जिसमें सानको फूपदानी या श्रीर नियमका

सन्दूक जो चारां श्रीर सनाते मध्य हुस्ना या श्रीर उसके

कहावता है। जिसमें सानको फूपदानी या श्रीर नियमका

सन्दूक जो चारां श्रीर सनाते मध्य हुस्ना या श्रीर उसके

सानको फूपदानी या श्रीर नियमका

६ श्रीर उसके ऊपर दौरान तेजस्वी विभुव थे जो द्याबे

शासनको ब्राये थे। इन्होंके विषयमें पुथुक पुथुक बात

करनेको अभी समय नहीं है।

७ यह सब बसते जो इस रोमाणे बनाई गईं हैं तो अगले

तंबूमें याजक लोग नित्य प्रवेश श्रीर सेवा किया करते

४ हैं। परन्तु दूसरे दृश्यें वेल महायाजक बरस भर्में एक

वर जाता है। श्रीर लोहू बिना नहीं जाता है। जिसे अपने

लिये श्रीर लोहा की खानतानीमें लिये चढ़ाता है।

८ इससे पविच खात्मा यही बताता है। कि जबलों अगले

तंबू स्थायित रहता तबलों पविच स्वाता मार्ग प्रगार

९ नहीं हुस्ना। श्रीर यह ती। बर्तमान समयके लिये हृदयाल्प

है। जिसमें बढ़ावे श्रीर बलिदान बढ़ाये जाते हैं जो
सेवा करनेहरके मनकी सिद्ध नहीं कर सकते हैं। केवल खाने शीर पीनेकी बस्तुओं शीर नाना वपत्ति- 10 मां शीर शरीरकी विधियांकी सम्बन्धमें यह बातें सुन्दर जानेकी समयलों ठहराई हुई हैं। परन्तु ख्यूँ 11 जब हानेहर उत्तम विधीयांकी महायाजक होके खाया तब उसने शीर भी बड़े शीर सिद्ध तबभूंसे जो हायका बनाया हुआ नहीं सर्वात इस स्वाधिका नहीं है। शीर 12 बकरें शीर बल्होंके लाहूके द्वारा नहीं परन्तु अपनेही लाहूके द्वारसे एकले बेर पवित्र स्थानमें प्रवेश किया शीर अनन्त चटार प्राप्त किया। क्योंकि 13 यदि बैला शीर बकरेंका लाहू शीर बाह्यनारी राख जे अपवित्र लोगांपर बड़की जाती शरीरकी गुड़तालके लिये पवित्र करती है। तो जितना अधिक करके 14 ख्यूँका लाहू जिसने सनातन ज्ञात्माके द्वारा अपने तदें ईश्वरके खाने निष्कांश चढ़ाया तुम्हारे मनकी मूलतत् बर्मंसे शुद्ध करेगा कि तुम जीवते ईश्वरकी सेवा करो।

शीर इसीकी कारण वह नये नियमका मध्यस्थ है 15 जिसे पहले नियमके सम्बन्धी अपराधींके उद्दारसे लिये मृत्यु भोग किये जानेके बुजाये हुए लाग अनन्त अधिकारकी प्रतिज्ञाका प्राप्त करें। क्योंकि जहां मर- 16 शोपरान्त दानका नियम है तहां नियमके बांधनेहर्के मृत्युका मनुमान अवस्था है। क्योंकि ऐसा नियम 17 लागाके मरनेपर टूट होता है नहीं तो जबले उसका बांधनेहरा जीता है तबलें नियम जभी काम नहीं
१८ झाटा है। इसलिये वह पहिला नियम भी ले हूँ।
१९ बिना नहीं स्थापन किया गया है। क्योंकि जब मूसा व्यवस्थाओं का अनुसार हर एक झाड़ा सब लेंगें। कोई चुका तब उससे जल शैर लाल जल शैर यस्ते जब तक संग बढ़कर शैर बकरेंगे। लेंगे। उस प्रस्तावना पर
२० शैर सब लेंगें। शैर कहा यह उस नियम का लेंगे है। जिसे इंसान ने तुम्हारे विश्वास भर झाड़ी है।
२१ कहा दहराया है। शैर उसने तनबूढ़ पर भी शैर सेवाकी सब सामान्य पर उसी रीत मे लेंगे। बिना बिना है।
२२ शैर व्यवस्थाओं का अनुसार व्यवस्थाओं सब बस्तु लेंगे द्वारा
शुद्ध किंग जाती है। शैर बिना लेंगे। बहाये पापमैचन
नहीं होता है।
२३ सा श्रवण था कि स्वर्गमंडल बलरामकी प्रतिदिन
इन्हें शुद्ध किये जायें। परन्तु स्वर्गमंडल बलराम झापही।
२४ इन्हें उत्तम बलिदान लेंगे। शुद्ध किंग जायें। क्योंकि ब्रह्मण हाथके बनाये हुए। पवित्र स्थान में तो सबिका दुर्गापत्ता है।
प्रवेश नहीं किया। परन्तु स्वर्गमंडल प्रवेश किया कि हमारे
२५ लिये। लाव इंथे बलराम लें। उत्तम दिखाई देंगे। पर इसलिये
नहीं कि जैसा महायाजक बरस बरस दूसरे लेंगे। लिये हुए। पवित्र स्थान में प्रवेश भरता है। तैसा वह।
२६ अपने। वारदार। चाढ़ावे। नहीं तो जगतकी उत्तांतसे
लें। उसके बहुत बेर दुःख भोगना पड़ता। परन्तु अब
जगतकी अन्त में वह। एक बेर। अपने। बलिदान। द्वारा।
२० पापको टूट करने। कहे गए। हुस्न। है। शैर जैसे
मलुम के लिये। एक बेर। मरना। शैर उसके पीछे। विचार।
ठहराया हुआ है. वैसी ही ख़ैर बहुतींकी पापींको उत्तर २८
लेनेकी लिये एक बेर चढ़ाया गया शैर जो लगा
उसकी बार जोहते हैं उनकी चालकी लिये दूसरी बेर
बिना पापसे दिखाई देगा।

१० दसवां पढ़ा ।
१. श्रीयुक्ता का प्रायोगित्व युक्त है धर्मपुस्तकके वच बातके अनेक प्रमाण। १५
इन श्रीयुक्ताके कारण विश्वास का यथास्थित। २५ तथा श्रीयुक्ताके भयनक प्रति। ३२
श्रीयुक्ताको चक्षु वेता।

ब्यवस्थामें तो हानेहार उत्तम विषयंकी परठाईं १
भाष है पर उन विषयंका स्वरूप नहीं। इसलिये वह
बरस बरस एकाः प्रकारकी बलिदानंकी सदा चढ़ायें
जानसे कभी उन्हें जो निकट जाते हैं। सिद्ध नहीं कर
सकती हैं। नहीं तो क्या उन्हें चढ़ाया जाना बन्द
न हो जाता। इस कारण कि तेवा कर्नेहारोंको जो एक
बेर भुई दिये गये थे फिर पापी हानेका कुछ बोध न
रहता। पर इसहारमें बरस बरस पापींका स्मरण हुआ
करता है। क्योंकि ज्ञानी है कि वैलों शैर बकरोंका
लेहू दिनांकी दूर करे। इस कारण ख्रीण जगतमें जाते
हुए कहता है तूने बलिदान शैर चढ़ावियें न चाहा
परन्तु मेरे लिये देह सिद्ध किया। तू होमसी शैर पाप
निमित्तकी बलियेंसे प्रसन्न न हुआ। तब मैंने कहा देख
में जाता हूँ प्रम्हुपुस्तकमें मेरे विषयमें लिखा भी है
जिसतें हैं देखवाक तरी इच्छा पूरी कहां। उपर उसने
कहा है बलिदान शैर चढ़ावियें शैर होमसी शैर पाप
निमित्तकी बलियेंको तूने न चाहा शैर न उनसे प्रसन्न
हुआ अर्थात उनसे जो। ब्यवस्थयाकी अनुसार चढ़ाये जाते
है। तब कहा है देख मैं जाता हूँ जिसतने है इंशवर तेरी
इच्छा पूरी कर्क। वह पहिले का उठा देता है इसलिये
90 कि दूसरे का स्थापन करे। उसी इच्छाके अनुसार हम
लग यीशु खीरुकी देखके एकही बेर बढ़ाये जानके
द्वारा पविष्चित किये गये हैं।
91 श्रीर हर एक याजक खड़ा होके प्रतिदिन सेवकाई
करता है श्रीर एकही प्रकारके बलिदानोंका जो पापोंका
92 कभी मिरा नहीं सकते हैं बारपार चढ़ाता है। परन्तु
वह तो पापोंके लिये एकही बलिदान चढ़ाके इंशवरके
93 दहिने हाय सदा बैठ गया। श्रीर अबसे जबलें उसके
शान्त उसके चरणोंकी पीठि न बनाये जायं तबलें
94 बात जोहटा रहता है। क्योंकि एकही चढ़ावेते
उसने उनके जो पविष्चि किये जाते हैं सदा सिद्ध किया
है।
95 श्रीर पविष्चि श्राेतमा भी हमें साश्री देता है क्योंकि
96 उसने पहिले कहा था। यही नियम है जो में उन
दिनोंके पीछे उनके संग बांधूंगा परमेश्वर कहता है में
शापनी व्यवस्थाकी उनके हृदयमें दालूंगा श्रीर उसे
97 उनके मनमें लिखूंगा। [तब पीछे कहा] में उनके
पापोंका श्रीर उनके कुकमेंटोंका फिर कभी स्मरण न
98 कहूंगा। पर जहां इनका भोजन हुआ तहां फिर
पापोंके लिये चढ़ावा न रहा।
99 तो है माइया जब कि यीशुके लोहके द्वारासे हमें
20 पविष्चि स्थानमें प्रवेश करनेका साहस मिलता है। श्रीर
हमारे लिये परदेसमें श्रापित उसके शरीरमेंसे नया श्रीर
जीविता मार्ग है जो उसने हमारे लिये स्थापन किया। श्रीर हमारा महायाजक है जिसे ईश्वरके घरका अध्यक्ष २१ है। तो ज्ञानों के बुद्धि मसने शुद्ध होने की दृष्टिका छिद्र- २२ काव्य किये हुए श्रीर देह शुद्ध होने नहलाए हुए हम लाग विश्वासके निश्चयके साथ सच्चे मसने निकट ज्ञात हैं। श्रीर ज्ञानके अंगीकारको दृढ़ कर यांभ रखने २३ क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा किया है वह विश्वासयोग्य है। श्रीर प्रेम की सुकम्मामें उसकाने लिये एक दूसरकी २४ चिन्ता किया करें। श्रीर देखे कितनी रोमक हैं। तैसे २५ ज्ञानमें एक इना न बोड़े परन्तु एक दूसरकी सम्भावने। श्रीर जितने भर उस दिनका निकट ज्ञात देखे उतने अधिक करने का यह किया करें।

क्योंकि जो हम सत्यका ज्ञान प्राप्त करने के पीछे हैं ज्ञान बूढ़के प्राप्त किया करें तो वायुकी लिये फिर कोई बलिदान नहीं। परन्तु तंडके भयंकर चार जोहना २६ श्रीर विरोधयोग्यका भक्ष्या करनेवाली ज्ञानका उचलन रह गया। जिसने मूसाको व्यवस्था का पूरा जाना है तो कोई हो वह दा ज्ञाता तीन सांख्यियोंकी सांख्यरद द्वारे कर्मित होके मर जाता है। ता क्या समझते हैं हो जिसने श्रीर भी भारी दंडके योग्य वह गिना जायगा जिसने ईश्वरके पुष्पको पांवां तले रांदा है श्रीर नियम- के लोहेको जिससे वह पविव्य किया गया था पविव्य जाना है। श्रीर अनुयोगके आत्मका अपमान किया है। क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने कहा कि पलटा ३० लेना मेरा काम है परमेश्वर बहता है मैं प्रतिफल देवंगा
शीर फिर बुधबार अपने लोगों का बिचार से 91 करेगा। जीवते ईश्वरकी हाथां में पड़ना भयंकर बात है।

92 परलू भाग्य दिनानंक स्मरण करे जिनमें तुम 93 ज्योति पाके दुःखांके बड़े युद्धें स्पिर रहे। कुछ यह विवेक का निन्दा शीर लीजिए तुम लोगों ऐसे वानै जाते थे कुछ यह विवेक कि जिनकी इस रीति से दिन करते थे 94 उनके संग तुम भागे हुए। क्योंकि तुम मेरे बंधनों 95 दुःखमें भी दुःखी हुए शीर यह जानके कि स्वर्गमें हमारे लिये प्रेम शीर विश्वास सम्पति है तुमने अपनी 96 सम्पत्तिका लूटा जाना चानन्दसे यह विवेक किया। तो अपने साहसका जिसका बड़ा प्रतिफल होता है मत 97 अर्द्धन देश । क्योंकि तुम्हें स्पिराएंका प्रयोजन है इसके 98 लिये कि ईश्वरकी इच्छा पूरी करके तुम प्रतिञ्ज़ोका 99 फल पायें। क्योंकि धारी ऐसी बेरमें वह जो अनाम- 100 बाला है शाकेगा शीर बिलबंब न करेगा। विश्वाससे 101 धर्मी जन जीतेगा परन्तु जो वह हर जाय तो मेरा 102 मन उससे प्रसन्न नहीं। पर हम लोग हर जानेवाले 103 नहीं हैं जिससे विनाश होता परन्तु विश्वास करने- 104 हारे हैं जिससे सत्माकी रक्षा हैं।

11 एग्यारहवां परबः।

1 विश्वासका दलज श्रद शाबिल हन्तक नूढ़ ईश्वरीय भादि विश्वासीके वृत्तान्तके उसके रामक उदाहरण।

1 विश्वास जिन बातेंकी अभाषा रखी जाती उन बातेंकी निश्चय श्रीर जनदेखी बातेंकी प्रमाण है।

इसीके विषयमें प्राचीन लोग सुख्यात हुए। विश्वास-
से हम वूंछते हैं कि सारा जगत इंग्लिशवकी बचनसे रचा गया यहाँ न अंग्रेज़ी जो देखा जाता है तो उससे जो दिखाई देता है नहीं बनाया गया है। बिश्वाससे हाबिलने इंग्लिशवकी ज्ञानगत बारसे बड़ा बालिदान बढ़ाया है जो द्वारा उसपर साधी दिखती गई कि धर्मां जन है। क्रोधक इंग्लिशवकी ज्ञानवही उसके बढ़ावे और साधी दिखती है। बिश्वाससे हाबिल उठा लिया गया कि मुख्य को न देखे हैं। जो नहीं मिला क्रोधक इंग्लिशवकी उसका उठा लिया था क्रोधक उसपर साधी दिखती गई है कि उठा लिये जानके पल्ले उसके इंग्लिशवकी प्रसन्न किया था। परन्तु इंग्लिशवकी बिना उस प्रसन्न करना असाध्य है क्रोधक अवस्था है कि जो इंग्लिशवकी पास जाने सा बिश्वास करे जो वह है इंग्लिशवकी जो वह उन्हें जो उसे दूर करते हैं प्रतिफल देनेहार है। बिश्वाससे नूह जो बातें उस समय के देख नहीं पड़ती थीं उनके विषय में इंग्लिशवकी चित्राया जाने दर गया इंग्लिशवकी अपने घराली रक्षाके लिये जहाज बनाया इंग्लिशवकी उसके द्वारा उसने संसार- को दूरी ठहराया इंग्लिशवकी उस धर्मां ज्ञानवही हुस्ता जो बिश्वाससे होता है। बिश्वाससे इब्राहिम जब बुलाया गया तब जला- कारी हैं को निकला कि उस मानवता जान जिसे वह अधिकारके लिये पानेर प्रायो या अंग्रेज़ी में मिटार जाता हूँ यह न जानके निकल चला। बिश्वाससे वह प्रतिज्ञा के देश में जैसे पराभु देश में विदेशी रहा अंग्रेज़ साहब
श्रीर याकूबके साथ जो उसी प्रतिज्ञाबे संगी अधिकारी
90 थे तम्ब्रांतमें बास रिया। क्योंकि वह उस नगरके
बाट जाह्ता था जिसकी नेवें हैं जिसका रचनेहारा
91 श्रीर बनानेहारा देववर है। विश्वाससे सारःने भी
गर्भ धाराका करनेको अभूत पाई श्रीर बयसके व्यतीत
ह्यानेपर भी बालक जनी क्योंकि उसने उसका जिसने
92 प्रतिज्ञा किनेँ थी विश्वासयाग समक्षा। इस कारखाने
एकही जनसे श्री मृतकसा भी हा गया था लेग इतने
जन्मे जितने ज्ञातको तारे हैं श्रीर जैसे समुद्रके तोर-
93 परका बालू जो अग्रित है। ये सब विश्वासहीर्में मरे
कि उन्हें प्रतिज्ञाचारं फल नहीं पाया परन्तु उसे
दूसरे देखि श्रीर विविध छर लिया श्रीर प्रशासन बिया
श्रीर मान लिया कि हम पृथिवीपर उपरी श्रीर पर-
94 देशी हैं। क्योंकि जो लेग ऐसी बातें कहत्हें हैं तो प्रगट
95 करते हैं कि देश दुःखते हैं। श्रीर जो वे उस देशको
जिससे निकल आये वे समर्थ करते ता उन्हें कीर
96 जानेका अवसर मिलता। पर जब वे श्रीर उत्तम
आर्यात स्वर्गीय देश पुजुङकी के रुपु छरते हैं इसलिये
देववर उनका देववर कहलानेमें उनसे लजाता नहीं
क्योंकि उसने उनके जिसने नगर तैयार बिया हैं।
97 विश्वाससे इब्राहीमने जब उसकी परीक्षा जिनें गई तब
98 इसहाकको चढ़ाया। जिसने प्रतिज्ञाबींको पाया था
श्रीर जिसका कहा गया था कि इसहाकसे जो ही सा
तेरा बंश कहावेगा तोई अपनो एकलीतको चढ़ाया था।
99 क्योंकि उसने विचार बिया कि देववर मृत्यूविंते भी
ढठा सकता है जिनमेंसे उसने दृष्टान्तमें उसे पाया भी। विश्वाससे इसहाकने याकब शियार एसीको ज्ञानवाली 20 बातिकेविषयमें अराजीस दिए। विश्वाससे याकबने 21 जब वह मरनेपर था यूसफके दोनों पुल्लुंकमें एक एकको अराजीस दिए शियार अपनी लाठिके सिरिपर उगँड़ी प्रशास्म किया। विश्वाससे यूसफने जब वह मरनेपर 22 था इसायलके झन्ता नींक के याकबा चंचा किया शियार अपनी हद्दीयोंके विषयमें अाज्ञा किये।

विश्वाससे मुसा जब उत्तम हुआ तब उसके माता 23 पिताने उसे तीन मास छिपा रखा क्योंकि उन्होंने देखा कि बालक सुन्दर है शियार वे राजाकी अाज्ञासे न हरे। विश्वाससे मुसा जब सयाना हुआ तब फिर- 24 जनकी बींका पुष्ककहलानेसे मुकाब गया। क्योंकि उसने 25 पापका अनिता सुखभेग मिलाना नहीं परन्तु ईशारके लेगैंगोंके संग दुःखित होना उच्च लिया। शियार उसने अब खोपूरे अाज्ञा निम्न दिया निमसरंगी सम्पत्तिसे बड़ा धन समका क्योंकि उसकी दृष्टि प्रतिफलकी शियार लगी रही। विश्वाससे वह मिसरकी छोड़ गया शियार 20 राजाके शीघ्रसे नहीं हरा क्योंकि वह जैसा अटीर मय्य दुःखपूर करता हुआ दूढ़ रहा। विश्वाससे उसने नित्यार 28 पत्तीका शियार लेहू छेड़कनेकी विविधा माना ऐसा न ही कि पहलोटका नाव करनेहरा इसायली लेगैंगोंका धूरे। विश्वाससे वे नाल समुद्रके पार जैसे 25 सूबी भूमिपूर हाओंके उतरे जिसके पार उतरनेका यथ लगनेमें मिसरी लेग हूब गये। विश्वाससे यिरीहाकी 30
भीतें जब सात दिन घरी गई थीं तब गिर पड़ीं।
31 विश्वासातः राहब बेश्या चिभिधवासियां खंग नष्ट न हुई। इसलिये कि भेदियांको कुशलसे गहण किया।
32 शैर में उगेंग क्या कहूँ। के थांकि गिदियांनका शैर बाराक शैर शम्शानका शैर यिमाहिका शैर दाजुद शैर शमुलका शैर भविष्यठाखोंका बत्तीन करनेको
33 सुभे समय न मिलेगा। इन्हें विश्वासके द्वारा राज्यांका जीत लिया धम्मवेका काय्य किया प्रतिज्ञ शैरांको।
34 प्रास किया सिंहांके सुह बन्द किये। भायियां शक्ति निवृत्त किंद खड़को धारसे चच निकले दुख्भालतासे बलवत्त किये गये युद्धमें प्रवाल हो। गये शैर परायंको
35 शेताको हराया। स्त्रियांने पुनरह्यानके द्वारसे अपने मूत्कांकी फिर पाया पर शैर लोग मार खाते खाते मर गये शैर उद्धर यहण न किया। इसलिये
36 कि शैर उत्तम पुनरह्यानको पहुँचें। दूसरांको दूसरों
शैर कोडांकी हाँ शैर भी बन्धनांकी शैर बन्दीगृहकी
30 परीशा हुई। वे पत्तरवाह किये गये वे शायंसे चीरे
गये उनको परीशा किंद गई वे खड़से मारे गये वे भंगाल
शै। क्षेत्री शै। दुःख हा भेंडांकी शैर बकारियांकी खालि।
38 शैरहुए। इधर उधर फिरते रहे। शैर जंगलांका शैर
पब्बतांकी गुफांतां शैर पृथ्वीके दरारंतां सरभरते फिरे।
39 संसार उनके गया न था। शैर इन सभाने विश्वासके।
80 दूरारा सुख्यात होके प्रतिज्ञा का फल नहीं पाया। के थांकि
इंश्यरने हमारे लिये किंद उत्तम वातकी तैयारी किंदें
इसलिये कि वे हमारी बिना सिंहु न होंगि।
¹² बारेमात्र पढ़ें।

¹ उस विद्वानोंके कारण और बिष्मास्के कारण प्रीति कारण अभावके वैद्य दैवाद्भुतके उपदेश । ² ताथापि के ग्राम में उपदेश और श्रद्धा । ³ तुड़ता और पश्चिमस्ताका उपदेश । ⁴ सन्दर्भ और विषयगत स्वर्णसंग्रहके ब्रह्मणके नये नियमकी प्रेमताका वर्धन । ⁵ भेजरके बचनके प्राप्त दोनों विषयके वितार ।

इस कारण हम लोग भी जब कि साध्विप्रेका ऐसे बड़े मेघसे घरें हुए हैं हर एक बांकी और पापका जो हमें सहजसे उल्लक्ता है दूर करके वह दौड़ा जो हमारे आगे धरी है धीरजते दौड़ी । और विषयके कारण और सिद्ध करने हरीकी अर्थात योगीको और ताके जिसने उस सान्नद्भको लिये जो उसके आगे धरा या कृशको सह लिया और लज्जाको तुच्च जाना और इंटरवरके सिंहासनको दहिले हाथ जा बेदा है । उसका सौंचा जिसने अपने बिछु पापियांका इतना विवाद सहलिया जिसते तुम यक न जाए और अपने अपने मनका साहस न बढ़े।

अबला तुम्हारे पापसे जड़ते हुए लोहू बहानेतक सामना नहीं किया है । और तुम उस उपदेशकी भूल गये हो जो तुमसे जैसे पुनःते बातं करता है कि है मेरे पुत्र परमेश्वरको ताड़नाको हलकी बात मत जान और जब वह तुम्हे डाँटे तब साहस मत बढ़ा । कींकि परमेश्वर जिसे प्यार करता है उसकी ताड़ना करता है और हर एक पुनःते जिसे प्रह्लाद करता है कोई भी मारता है । जो तुम ताड़ना सह लेशी तो ईश्वर तुमसे जैसे पुनःते ब्यवहार करता है कींकि जैनसा पुत्र है जिसको ताड़ना पिता नहीं करता है । परन्तु
यदि ताड़ना जिसके भागी सब कोई हुए हैं तुमपर नहीं होती तो तुम पुंच नहीं परन्तु ब्यविचारकरे सत्तानै है। फिर हमारे देहें कितना भी हमारी ताड़ना किया करते थे शैर हम उनका दादर करते थे का हम महत्त्व ज्ञाता करके सत्तानाओं के पिताओं अधिन न होगे शैर जीर्णे। क्योंकि वे तो बड़े दिनके लिये जैसे ऋष्ट्रा जानते थे तैसे ताड़ना करते थे परन्तु यह ता हमारे लाभके निमित करता है इसलिये किंहम
11 उसकी पवित्रताओं हेतु हैवे। कई ताड़ना बर्तमान समयमें शानदर्की बात नहीं देख पड़ती है परन्तु शाक्कों बात तौमिरी पीछे वह उन्हें जो उसके द्वारा साधे गये हैं भर्मेका शांतिदाई फल देती है।
12 इसलिये ऋष्ट्रा हर्षींते। शैर निब्ब्रेश घुरनें।
13 तुझरे करो। शैर अपने पांचौंके लिये सीधे मारे बनाकर कह जा लगता है। रहकाया न जाय परन्तु शैर।
14 भी चंगा किया जाय। सभीकरे संग मिलापकी चेष्टा करे। शैर पवित्रताओं जिस बिना कोई प्रभुको न
15 देखे। शैर देखलेश ऐसा न हो कि कोई इतिहासके अनुयायी रहित होय ऋष्ट्रा कोई कड़वहटकी जड़ चने शैर बुढ़ देवे शैर उसके द्वारसे बहुत लोग।
16 ऋष्ट्रा हेवे। ऐसा न हो कि कोई जन ब्यविचारक। वा एसीको नाई ऋष्ट्रा हो जिसके छोरे बेरोज्जन पर
17 अपने पहिलीटपनके बेच हाला। क्योंकि तुम जानते हो कि जब वह पीछे ऋष्ट्रा पाईंतों इच्छा करता भी था ताब ऋष्ट्रा गिना गया क्योंकि यद्यपि उसने
री राक्षि उसे ढूंढ़ा तैमी पश्चातापकी जगह न पाई।

तुम तो उस पब्न्ह्येकी पास नहीं खाये हो जो कृष्णा १८ जाता सीवर जगसे जल उठा सीवर न घार मेघ सीवर संघकार सीवर सांधिकी पास न सीवर न तुरह्येकी ध्वनि १६ सीवर बातेंकी लेख ये पास जिसकी सुननेहारोंने बिनती किये नहीं कि सीवर कुछ भी बात हमसे न किंग जाय।

कोयंबि वे उस स्मार्को नहीं सह सकते थे कि यदि २० पशु भी पब्न्हेकी छूवे तो पत्यरवाह किया जाय। स्मार्को बासिया ऐसा २१ भयंकर था कि मूता बोला में बहुत भयमान जी कामित हूं। परस्तु तुम स्मार्को पम्हेकी पास सीवर जीवते इंद्रवर के २२ नगर स्वर्गीय यिश्वकलीमकी पास जाय है। सीवर २३ स्वर्गीय तांत्रिक सभाकी पास जो सहस्त्रों हैं सीवर पहिले तें की मंडलेंकी पास जिनकी नाम स्वर्गें मिली हुए हैं। सीवर इंद्रवर की पास जो सभाका विचारकता है। सीवर नियमों में यथ्यस्त यीशुके पास जी छेदकावके लोहेंके पास जो हानिलसे जभी बातें बोलता है।

देखा बोलनेहारिसे मुंह मत फेरा कोयंबि यदि वे २४ लोग जब पृथिवीपर जाता डेरेहारिसे मुंह फेरा तब नहीं वचे तो बहुत आधिक करके हम लोग जी स्वर्गीय बोलनेहारिसे फिर जायंगे तो नहीं बचेंगे। उसकी जब न तब २५ पृथिवीकी हुलाया परस्तु जब उसने प्रतिज्ञा किये हैं कि फिर एक बेर में केवल पृथिवीकी नहीं परस्तु जाकाश-की भी हुलांजगा। यह बात कि फिर एक बेर यही २५
प्रगट करती हैं कि जो बस्तु हुलाड़े जाती हैं सों
सानी हुई बस्तुँओंकी नाई की बदली जायेगी इसलिये कि
जो बस्तु हुलाड़े नहीं जाती सों बनी रहें। इस कारण
हम ले गे जो न होलने बला राज्य पाते हैं अनुयाह
घारण करें जिसके द्वारा हम सन्मान शीर भक्ति सहित
ईश्वरकी सेवा उसकी प्रसन्नताके योग्य करें। कविंध्र
हमारा ईश्वर भस्म करनेहारी श्रद्धा है।

१३ तरहवां पदव ।

१ अनेक बालोंका उपवेश श्री प्रमु यीयोंके दृष्टान्तके वको हुई करना । २०
प्राचीन श्री नामका छपपत प्रतिज्ञकी समाप्ति।

२ श्रावणीय प्रेम बना रहे। ज्ञातियुसेवाको मत भूल
जाए पुरैकी शक्ति इसकी द्वारा कितने विन जाने स्वगः-
३ तृतीयी पहुँचे किते है। वन्युज्जालो जैसे कि उनके
संग मिले हुए होते शीर दुःखित लगान्यो। जैसे कि
४ आप भी शरीरमें रहते हा सम्पर्क करे। विवाह
सभीमें श्राद्याग्नि शीर विचाराना मुचि रहे परन्तु
ईश्वर व्यभिचारियों शीर परस्तोगामीयोंका विचार
५ करेगा। तुम्हारी रीति बयवहार लेभ रहते हवेशी शीर
जो तुम्हारे पास है उससे सन्तुष्ट रहो किंतु उसीने
कहा है में तुमके कभी नहीं ढूँढाए शीर न कभी तुमके
ई त्यांगुगा। यहांलां कि हम दातुस बांधके कहते हैं कि
परमेश्वर मेरा सहायक है शीर में नहीं डूंढा । मनुष्य
६ मेरा क्या करेगा। अपने प्रधानोंको जिन्होंने ईश्वरका
बचन तुमसे कहा है सम्पर्क करो शीर ध्यानसे उनकी
चाल चलनका चन्द देखके उनके विश्वासके अनुगामी
हाँ। यीशु ख्रिस्तु जन ग्यार हा खाज ग्यार सब्रेदा एकांत है। नाना प्रकार की ग्यार ऊपरी शिष्यांशें तब भरमाये जाय व्याख्या की व्याख्या है कि मन अनुयहिते बुद्ध किया जाय खाने रूप बस्तुभरों नहीं जिनसे उन लोगों जो उनकी विधिपर चले बुद्ध लाभ नहीं हुआ। हमारी एक बेटी है जिससे खाने रूप अधिकार १० उन लोगों नहीं है जो तम्बूबहारे सेवा करते हैं। की व्याख्या जिन पश्चातोंका हो अहूँ महायाजक पापके निमित्त १२ पवित्र स्थानरे ले जाता है उनके देख बचनेके बाहर जाये जाते हैं। इस कारण यीशु ने इसलिये वे कि १३ लोगों की डुबपने हो लोकों द्वारा पवित्र करो फाटकी बाहर दुःख भेगा। सो हम लोग उसकी निन्दा सह, १३ हुए बचने के बाहर उस पास निकल जावें। की व्याख्या १४ यहां हमारा शीर ठहरनेहारा नगर नहीं है परन्तु हम उस ठहरनेहारा नगरको दूंढते हैं। इसलिये यीशु १५ द्वारा हम सदा ईश्वरके बागे स्तुतिका बालिदान शरीर उसके नामका धन्य माननेहारे हांटोंका फल चढाया करें। परन्तु भलाई ग्यार सहायता करनेको १६ मत भूल जाय व्याख्या की व्याख्या ईश्वर ऐसी बालिदानेंसे प्रसन्न होता है। जपने प्रसन्नानेंको माने ग्यार उनकी अधिनिय १७ हाऊ व्याख्या की वे जैसे कि लेखा देखे तैसे तम्हारे प्राणोंकी लिये चैतकी देते हैं इसलिये कि वे इसकी जाननद्वारे करें ग्यार कहर कहरके नहीं की व्याख्या यह तम्हारे लिये निश्चित नहीं। हमारे लिये प्राप्तना करो की व्याख्या हम १८ भरोसा रखते हैं कि हमारा शरीर बिने के ग्यार हम
16 लोग सभी सबसे चाल चला चाहते हैं। श्रीराम में बहुत आदर किया जा रहा है कि यही करना इसलिये कि मेरे साथ श्रीराम तुम्हें फेर दिया जा जाय।

20 शांतिका ईश्वर जिसने हमारी प्रभु यीशु को सनातन नियमका लेखा लिया हुए मेरों का बड़ा ग्रंथिया है। मृत्युओं में उठाया। तुम्हारे हर एक जीवन कम्पन में सिद्ध करे कि उसकी बीमारी चला श्रीराम जो उसकी भावता है उसे लेकर यीशु श्रीरामकी द्वारा उत्पन्न करे जिसका गुरुत्वास विदा सब देवता हैं। आभी। श्रीराम हैं। भाइयों में तुम्हें जिन्दा करता हूं। उपदेशका वचन सह लेकर कीमंड मैंने संस्कृति तुम्हारे पास लिखा है।

21 यह जाना कि भाई तिमी वनिषय बुध गया है। जो वह शैव ज्ञाने तो उसके संग में तुम्हें देखूँगा। अपने सब प्रधान साहेबा श्रीराम जब पवित्र लोगों का नमस्कार करे। इत्यादि जो लोग हैं उनका तुम्हें नमस्कार।

24 जनुयुवह तुम सभी संग हैं। आभी।
याकूब प्रेमितकी पत्री।

1 पहला पत्र।

याकूब जो ईश्वरका छाई प्रभु यीशु क्रोष्यका दास है बारहें कुलीकों जो तिन्तर बितर रहते हैं। आनन्द रहा।

हे नेरे भाइयो जब तुम नाना प्रकारकी परीक्षा-श्रोटोंमें पढ़ा। उसे सबसे आनन्द समझो। क्योंकि जानते हो कि तुम्हारे विश्वासकी पररे जानते घीरज पतवर होता है। परन्तु घरजका काम सिद्ध है। जिस्वे तुम सिद्ध छैये पूरे हायी। छैये किसी बातमें तुम्हारी घटी होय। परन्तु यदि तुमसे इसीको बुझको घटी होय तो ईश्वरसे मांगे जो सभीको उदारतासे देता है। छैये उलझना नहीं देता। छैये उसको दिये जायगी। परन्तु विश्वाससे मांगे छैये कुछ सन्देह न रखे क्योंकि जो सन्देह रखता है तो समुद्रतील लहरकी समान है। जो बयारसे चलाई जाती छैये हुलाई जाती है। वह नुस्का न समझो कि में प्रभुसे कुछ फाॅंगा। दुःखता मनुष्य अपने सब मांगीमें चंचल है। दोन भाई अपने जंचे पदपर बढ़ाई जाय। परन्तु धनवान अपने नीचे पदपर बढ़ाई करता है क्योंकि वह घासकी फूलकी नाई जाता रहेगा। क्योंकि सूर्य जेही घाम सहित 11।
चद्य होता त्यां घासको सुखाता है श्रीर उसका फल फड़ जाता है श्रीर उसको कुपकी शेभा नष्ठ होती है।

१२ बैसही धनवान भी श्रीपने पथहीं मुरक्कायगा। जो मनुष्य परीश्रामें स्विर रहता है तो धन्य है कांशि वह खरा निकलके जीवनका मुकुट पावेगा जिसकी प्रतिष्ठा प्रभुने जन्में जो उसको प्यार करते हैं दिये है।

१३ कैई जन परीश्रित होनेवर यह न कहे कि इंशवरसे मेरी परीश्रा किंइ जाती है कांशि इंशवर बुरी बातें से परीश्रित होता नहीं श्रीर वह जिसीकी वैसी परीश्रा नहीं करता है। परन्तु यह कैई जब अपनीही श्रीभिलासासे खिंचा श्रीर फुसलाया जाता है तब परीश्रामें पड़ता है। फिर श्रीभिलासाको जब घभं रहता है तब वह कुक्षिया जनती है श्रीर कुक्षिया जब समाप्त होती तब मृत्युको उपयोग करती है।

१५ अरे मेरी प्यारे भाईयो भोक्षा मत खाओ। हर एक खच्चा दानकम्मे श्रीर हर एक सिद्धा दान ऊपरसे उतरता है अशत ज्ञातियांके पितासे जिसमें न छदल।

१६ बदल न फेर फारवकी बाया है। अपनीही इच्छासे उसने हमें सत्यताके बचने के द्वारा उत्पन्न किया इसलिये कि हम उसकी सजी हुई। बस्तुओंकी पाहिले फलकी ऐसी हार्वें।

१७ सी हे मेरे प्यारे भाइयो हर एक मनुष्य सुननेके लिये श्रीप्राता करे पर बीलकम्मे बिलम्ब करे श्री श्रीरमें बिलम्ब करे। कांशि मनुष्यका भ्रातं इशवरके धर्ममें निंबाहता है। इस कारण सब भगुट्ताको श्रीर श्रीर वैरभाव्य भाविकल्दिका टूर करके नवरता से उस राते हुए
भनको यह जरूर जो तुम्हारे प्राणोंका बचा सकता है। परंतु भन्नपर चलनेहरू हर्षो शीर भेल नूर सुननेहरू नहीं जा अपनेका धोखा देखिँ। केहांकि यदि २४ बेद भनको सुननेहरू हर्षो उसपर चलनेहरू नहीं ता वह एक मनुष्यको समान है जा अपना स्वाभाविक मुंह दर्पणमैं देखिँ है। केहांकि जो अपनेको २४ ज्ञानी देखिँ तयों चला जाता शीर तुरन्त भूल जाता है कि में कैसा था। परंतु जो जन सिद्ध व्यवस्था कअ जो निर्भवन्धका है भुक्के भुकिके देखिँ है शीर ठहर जाता है वह जो ऐसा सुननेहरू नहीं कि भूल जाय परंतु कार्य भरनेहरू है ता वही अपनी करणीमें धन्य होगा। यदि तुम्हार्में बेद जो अपनी जीमपर २५ बाग नहीं लगाता है परंतु अपने मनको धोखा देता है अपनेको धम्मीचारी समक्षता है ता इसका धम्मीचार व्यर्थ है। ईश्वर पिताको यहाँ शुद्ध शीर निर्मल २० धम्मीचार यह है अधैत माता पिताहीन लड़कीके शीर निवधवासीको लेखमें उनकी सुध लेना शीर अपने तद् संसारसे निकलाप रखना।

२ दूसरा पद्में।

१ प्रस्तुतको नियंत्रिक शीर भवसको प्रातन शीर संघका मेव। १४ सुक्रमानीको वित्तोलकी क्षुद्रपर्चको प्रमाण दोन शीर हुमानो शीर राजको वित्तोलको कुर्त्त्नल।

हे मेरे भाईया हमारे तजेज्यमो प्रभु यो श्रीरुके बि-१

श्रवसमें प्रस्तुत मत किया करो। केहांकि यदि एक पुथु २

सेनके बलु शीर भड़कीला बस्त पहिने हुए तुम्हारी

समामें भावे शीर एक बंगाल मनुष्य भी मैला बस्त
3 पहिले हुए शायर। शायर तुम उस भड़कीला बस्त पहिले हुएपर दृश्वः करके उससे कहा  )शाप यहाँ झच्ची रीतिसे बैठने के शायर उस कंगालसे कहा। तु वहाँ खड़ा रह अथवा
4 यहाँ मेरे पांडवांकी पीठोंके नीचे बैठ। तो क्या तुमने झपने मनमें मेद न माना शायर कुबिचारसे न्याय करने-
5 हरे न हुए। हे मेरे प्यारे भाईया सुना क्या इश्वररे इस जगतके कंगालांकि। नहीं चुना है कि बिश्वासमें
6 धनी शायर उस राज्यकी अधिकारी हैवें जिसकी प्रतिज्ञा
7 उसने उन्हें जो उसकी प्यार जारे हैं दिया है। परंतु
8 तुमने उस कंगालका अधिकार किया। क्या धनी लोग
9 तुम्हें नहीं पेरते हैं शायर क्या वेही तुम्हें बिचार शा-
10 सनोंके झागे नहीं बीचतें हैं। जिस नामसे तुम पुकारे
11 जाते हैं क्या वे उस उतम नामकी निन्दा नहीं करते
12 हैं। जो तुम धम्मुँपुस्तकके इस चचनके चन्सर कि
13 तू झपने पड़ासीका झपने समान प्रेम कर सचमुच
14 राज्यव्यवस्था पूरी करते हो। झच्ची करते हो। परंतु
15 जो तुम पशुपाट करते हो। तो पायकर्म करते हो शायर
16 व्यवस्थासे झपराधी ठहराये जाते हो। कीवांकि जो
17 वह सब बातांके दंडके योग्य हो चुका। कीवांकि जिसने
18 यह सब बातांके दंडके योग्य हो चुका। कीवांकि जिसने
19 कहा परस्त्रीगमन मत कर उसने यह भी कहा कि
20 नरहिंसा मत कर। सो जो तू परस्त्रीगमन न करे
21 परलु नरहिंसा करे तो व्यवस्थाका झपराधी हो चुका।
22 तुम ऐसे बतो शायर ऐसा काम करो जैसा तुमको
23 चाहिये जिनका बिचार निर्विन्दताकी व्यवस्थाके द्वारा
किया जायगा। केवल जिसने दया न बिने उसका 13 बिचार बिना दयाके किया जायगा श्रीर दया न्यायपर जयजयकार करती है।

हे भी मेरे भाई। यदि कोई कहे मुझे बिश्वास है पर 14 काम्भ उससे नहीं होने तो क्या लाभ है। क्या उस बिश्वाससे उसका बात हो सकता है। यदि कहा मई 15 बाहि नहीं हों श्रीर उन्हें प्रशिक्षित के भेजने की घटी होग। श्रीर तुममें कहे उससे कहे बुशलसे जाओ। 16 तुम्हें जाना न जाने तुम तूफ़ान रहा परन्तु तुम जेन। बस्तु देखके लिये अवश्य है सो उनको न देखो। तो क्या लाभ है। वैसीहिं बिश्वास भी जो काम्भ सहित न होने 17 तो आपही मृत्यु है। बरन कोई कहे मुझे बिश्वास 18 है श्रीर मुझसे काम्भ होते हैं तू अपने काम्भ बिना अपना बिश्वास मुझे दिया श्रीर में अपना बिश्वास अपने काम्भसे तुम्हे दिखावंगा। 19 तो बिश्वास करता है। श्रीर मुझसे काम्भ होते हैं। तू अच्छा करता है। भूत भी बिश्वास करते श्रीर श्रीर चरणरत हैं। पर है निरुद्ध 20 मनुष्य क्या तू जानने चाहता है कि काम्भ बिना बिश्वास मृत्यु है। क्या हमारा पिता इत्यादि जब उसके 21 अपने पुत्र इस्हाको निर्देशक चढ़ाया काम्भसे धर्मसे न ठहरा। 22 देखता है कि बिश्वास उसके काम्भसे साथ कार्य करता था श्रीर काम्भसे बिश्वास सिद्ध किया गया। श्रीर धर्मसे पुस्तक का यह बचन कि इब्राहीम 23 हीमने देखने बिश्वास किया श्रीर यह उसके लिये धर्म सिद्ध गिना गया पूरा हुआ। श्रीर वह देखने बिश्वास किया।
24 बहुलाया। तो तुम देखिते है कि मनुष्य ब्रह्म बिद्यावाद से नहीं परन्तु कम्मांसे भी धम्मी ठहराया जाता है।
25 वैसीह राहत बेधया भी जब उसने दूसरं को पहलं किंवा श्री उनं दूसरं भार्गवते बिदा किया का कम्मांसे न ठहरी। क्योंकि जैसा देह शातमा बिना सृष्टा है वैसा बिद्यावाद भी कम्मा बिना मृत्युक है।

3 तीसरा पढ़िे।

1 कै प्रथम गुण श्रीर स्थानताका बर्तन। 13 गुणे श्रानका ब्रह्म।
1 ई मेरं भावया बहुतरे उपदेशक मत बोला क्यांकि जानते है कि हम शाधिक दंड पाेंगे। क्यांकि हम सब बहुत बार चूकते हैं। यदि कोई बचनमे नाहीं चूकता है तो वही सिद्ध मनुष्य है जो सारे देहपर भी बाग लागा
2 नेका सामधी रखता है। देखो घोड़को मुंहक हम लगाए देते हैं इसलिए कि वे हमें माने श्रीर हम उनका सारा देह प्रेरित हैं। देखो जहां भी जा इतने बड़े हैं श्रीर प्रचंड बयारिसे चड़िये जाते हैं बहुत बड़ी पतवारखे जिघर कहीं मांडीका मन चाहता है। उधर पहरे जाते हैं।
3 वैसीह जीभभी छोटा छंद है श्रीर बड़ी गलफटाणी करती है। देखो बीड़ी श्राग फिते बड़े बनकों फूंकती है। श्रीर यह धम्मौमका लेक चधात जीभ एक श्राग है। हमारे छंदमे जीभ है। जो सारे देहका कलंकी करनेहारी श्रीर भवचक्षृं श्राग लगानेहारी ठहरती है।
4 उसमे श्राग लगानेहारा नरक है। क्यांकि बन पशुप्रेषी श्रीपंजियां श्रीर लंगनेहारे जन्तुलोंके श्रीर जलचरीवके भी हर एक जातं मनुष्य जातिवे बशमें किंवा जाते हैं
शीर बिखुई गई है। परन्तु जीमेको मनुष्योंमें कई बशर्में नहीं कर सकता है। वह निरंकुश दुश्मन वह बाहुर विश्वसने हर्री है। उससे हम इंग्लिश पिताका धन्यवाद ५ खार उससे मनुष्योंको तो इंग्लिशके समान बने हैं सप देते हैं। एकही मुखसे धन्यवाद शीर सप देना १० निकलते हैं। हे मेरे भाई। इन वारका ऐसा द्वारा वयाचत नहीं है। क्या सातवों एकही मुहसे मीठा शीर १२ नंता देना बहते हैं। क्या गुलरकी वृक्षमें मेरे भाइयो १२ जलपाईन्के मुल चयवा दासको दत्तामें गुलरकी मुल लग सकते हैं। वैसीही दिसती देवतामें शीर मीठा देना। प्रकारका जल नहीं निकल सकता है।

तुम्हारों ज्ञानकान्त शीर बुझनेहार क्लान है। ते १३ ज्ञानी ज्ञानी चाल चलनसे ज्ञानको सहित ज्ञानी काम्बे दिखावे। परन्तु जो तुम ज्ञान ज्ञान मनमें १४ कहरी हाह शीर बीर रखते हैं तो सबाईन्के विष्टु घ्रमंड भत करो शीर। फूर मत बोलो। यह ज्ञान ज्ञान उत्तरता १५ नहीं परन्तु सांसारिक शीर शारीरिक शीर जैतानी है। शीरोंके महान दाह शीर बीर है तहां बंबेड़ा शीर हर एक १६ बुरा करम होता है। परन्तु जो ज्ञान ज्ञान है सो १० पहले ता। पार्वत है। फिर मिलनसार मृतभाव शीर कोभल शीर ददासे शीर ज्ञानी मुलसे परिपृण प्रकार रहित शीर निष्काप है। शीर धर्मका मुल १८ मेल करबेत्यांत मिलापमें बोला जाता है।
8 चौथा पाठ ।

1 बैर बिरोध शीर लेख शीर घमंडर उल्लह। १२ भाष्येको चुरे काहनेका निवेद। १३ ब्रह्मन के शीलके बरोकेका निवेद।

2 तुम्हारे में लड़ाई कहाँ जानी होती। क्या यहाँ मैं नहीं शाश्वत तुम्हारे सुखाविलासों जो तुम्हारे चंगे में जड़ते हैं। तुम लालसा रखते हैं शीर तुम्हें मिलता नहीं। तुम नरहिंसा शीर हाँ करते है। शीर ग्राम नहीं जाते तुम कदाच शीर लड़ाई करते हो परन्तु तुम्हें मिलता नहीं। इसलिये जिसे तुम नहीं मांगते हो।

3 तुम मांगते हो शीर पाते नहीं। इसलिये जि बुरी रीतिदिन

4 मांगते हो जिससे अपने सुख बिलासमें चढ़ देशी है। शायद जिसे अपने सुख बिलासमें चढ़ देशी है। इसलिये शीर ब्रह्मचारियों शीर ब्रह्मचारियों का तुम नहीं जाते हो। की संसारों से भ्रम देशी हो उस देशी हो उस देशी हो।

5 श्रीमु ठहरता है। जयवा क्या तुम समक्ष हो। ज्ञि धरम्पुस्तक वृथा कहता है। क्या वह आत्मा जो हमारे में बसा है। यहाँ श्री हो करता है। कि दाह भी करे।

6 बरन वह आधिक अनुयाय देता है। इस कारण कहता है। इंद्रवर अभिमान विरोध करता है परन्तु देखनें।

7 अनुयाय करता है। इसलिये इंद्रवर के अधीश होशी। जैतन्त्री साम्राज्य करता ता वह तुमसे भागेगा।

8 इंद्रवर के निकट अश्वों तो वह तुम्हारे निकट जाउने। इसलिये अपने हाथ शुद्ध करो। शीर है। दुःखिनी होशी। शीर शीर रोशन। तुम्हारी हंसी शायद हो जाम।
श्रीर तुम्हारा नानादत्त उदासी बने। प्रभुके सत्तु 10
dीन बना तो वह तुम्हें ऊंचे करेगा।
हे भाइये एक तूसरेपर श्रवणद मत लगाओ। 11
जो भाइएपर श्रवणद लगाता श्रीर श्रस्ति भाइएका विचार
करता है तो व्यवस्थापर श्रवणद लगाता श्रीर व्यवस्था-
का विचार करता है। परन्तु जो तू व्यवस्थाका विचार
करता है तो तू व्यवस्थापर चलनेहारा नहीं परातु
विचाराती है। एक व्यवस्थाकारक श्रीर विचारकरता 12
है जरीएत वही जिसे वचने श्रीर नाश करनेका सामर्थ्य
है। तू जीत हे जो दूसर्का विचार करता है।
जब खासो तुम जो कहते हो कि चाज वा कल 13
हम उस नगरमें जायेंगे श्रीर वहां एक वरस बितायेंगे
श्रीर लेन देन कर कमायेंगे। पर तुम तो कलकी 14
बात नहीं जानते हो क्योंकि तुमहारा जीवन जैसा है।
बह भाव है जो शेडी बार दिखाई देती है। फिर लिप्य
हो जाती है। इसके बदले तुम यह कहना वा कि 15
प्रभु चाहे तो हम जीयेंगे श्रीर यह चयन वह करिए।
पर जब तुम श्रस्ति गलक्षयेंगे बढाई करते 16
हे। ऐसी ऐसी बढाई सब नुनी है। तो जो बला करते 17
ज्ञाता है श्रीर करता नहीं उसको पाप होता है।

पु पांचवां प्रथम।

1 धनवानोंके दुप्पायपर सहाना। 1 धीरज धर्मके ध्येयम श्रीर धीरीया कानेका
विभेद। 15 धार्मिका करनेका ध्येयम श्रीर उपका फत। 16 भारीके सत्तु धीरीया-
का फत।

जब खासो है धानवान लेंगो श्रवणपर खानेवाले 1
क्षेत्रके तिहे चिल्ला चिल्ला रोशो। तुम्हारा धन सड़ गया 2
तम्राका थाङ्का की ख़ा गये हैं। तम्राका ताने तम्राका घरमे पाँच लग गई है तम्राका नाके तम्राका तम्राका साढ़े होने तम्राका आगी तम्राका नाइ तम्राका मास्त खायगी। तमने पिछले दिनोकं धन बटोरा है।

देखा जिन बलवानवने तम्राका बांटनी लगनी खिले उनके बान जो तमने दुग खिले युकारती है तम्राका लवनेरांकी दौड़ाई सेनाकंकी परमेश्वरकी कानांमें पहुंची है। तमने पृथ्वीराम सुबने तम्राका विलासमें रहे तमने जैसे बड़के दिनहींमें उपने मनका सन्तुष्ट किया दे है। तमने पार्माका दोनी ठहराके मार डाला है। वह तम्राका सामना नहीं बनना है।

ता है माईया प्रभुकी खानेलां धीरज धरा। देखा गृहस्य पृथ्वीकी बहुमूल्य फलकी बांट जोहता है तम्राका जबलं वह पहली तम्राका पिछली बर्षा न पावे तबलं उसके लिये धीरज धरता है। तमने भी धीरज धरा जपने मनका स्थिर करो क्रियाकं प्रभुका भाना निकल 8 है। है माईया एक दूसरके बिवहु मत कुदकुड़ाशी इसलिये कि दोनी न ठहरे। देखा विचारकता द्वारके खाने खड़ा है। है मेरे माईया भविष्यवक्ताकी जिन्हांनेप्रभुके नामसे बांटें खिले दुःखभोग तम्राका धीरज-91 का नमूना समक लेखे। देखा जो स्थिर रहते हैं उन्हें हम धन बहते हैं। तमने ऐतिहकी स्थिरतकी सुनी है तम्राका प्रभुका भान्त देखे हैं कि प्रभु बहुत कहांमय तम्राका द्वारकत है। परन्तु सबसे पहले हैं मेरे माईया विरूया मत खान्या न स्वर्गी की न धरते-
की न श्रीर कोई किरिया परतु तुम्हारा हां हां होवे श्रीर नहीं नहीं होवे जिस्ते तुम टक के योग्य न ठहरे।
क्या तुम्हांमें कोई दुःख पाता हैं। तो प्रार्थना करे। १५ क्या कोई हरित है। तो भजन गावे। क्या तुम्हांमें १४ कोई रागी है। तो मंडलीके प्राचीनांको अपने पास बुलावे श्रीर वे प्रभुके नामसे उसपर तेल मलके उसके लिये प्रार्थना करें। श्रीर बिश्वासको प्रार्थना रागीको १५ बचावेगी श्रीर प्रभु उसके उठावेगा श्रीर जो उसने पाप भी किये हां ता उसकी ध्वस्मा किंदे जागरी।
एक दूसरे के बारे अपने अपने अपराधींको मान लें। श्रीर एक दूसरे के लिये प्रार्थना करी जिस्ते चंगे हो जावे। धम्मी जनको प्रार्थना कार्यकारी होके बहुत सफल होती हैं। एलियाह हमारे समान दुःख सुख १७ भेगी मनुष्य या श्रीर प्रार्थनामें उसने प्रार्थना किंदे कि मंह न बरसे श्रीर मूलिपर साधे तीन बरस मेंह न बरसा। श्रीर उसने फिर प्रार्थना किंदे तो आकाशने १८ बरसी दिये श्रीर मूलिने अपना फल उपजाया।
हे भाइयो जी तुम्हांमें कोई सब्राईंसे भरमाया जाय १६ श्रीर कोई उसके फर ले। ता जान जाय कि जो २० जन पापके उसके मार्गके भ्रमण्यां फर ले। ता एक प्रार्थना मृत्युसे बचावेगा श्रीर बहुत पापकींका ठापिगा।
पिता प्रेतिकी पहिली पत्री।

1 पहिला पत्र ।

1 पत्रोका श्रामाय। 2 नये जन्म पत्र परिप्रेक्ष्यके लिये ईश्वरका धन्यवाद। 3 ईश्वरका रहस्य उसके ऋषोंमा सत स्थानात होणा। 4 ये गायक प्रभवादत-कालोकी शायी। 5 पत्रप्रेतिकी परिप्रेरणा के प्रेमका उपदेश और प्रेमको भविष्याती विज्ञानका खाना।

२ पिता जी यीशु ख्रीस्तका प्रेतिकी यहू गलातिया चायर कपदाक्या चायर ाशिया चायर विदुनाया।

2 देशोंमें छितरे हुए परटेशेयोंका। जो ईश्वर पिताके भविष्या दीनमाणके अनुसार आत्माकी परिप्रेरणा द्वारा आत्मापालन चायर यीशु ख्रीस्तके लोकोंके छिड़कावोंके लिये

3 जिनमें कुछ बहुत बहुत अनुप्रयोग चायर शांिि मिले।

4 हमारी प्रभु यीशु ख्रीस्तके पिता ईश्वरका धन्यवाद है।

5 जी बहुती ाशा मिले। चायर वह शांिि मिले जी अरवनाशी चायर निर्दय चायर चाजर है चायर स्वर्गमें तुम्हारे

6 लिये रखा हुआ है। जिनकी राज्य ईश्वरकी शक्तिके विष्कासके द्वारा किए जाते हैं। जिसभी तुम वह चायन जो

7 इससे तुम आहारित होते हो पर यदि वहाँ बेिन-लों यदि आध्यात्म है तो नाना प्रकारकी परीक्षाएिंति

8 उदास हुए हो। इसलिये कि तुम्हारे विष्कासकी परीक्षा सेिसे जो नाशमान है पर आगे परेखा जाता है।
शाति बहुमूल्य होने यीशु ख्रीस्ती के प्रगट हैनेपर प्रशंसा शैर शादर शैर महिमाका हेतु पाई जाय। उस 8 यीशुकी तुम बिन देखि प्यार करते हो शैर उसः पर यदापि उसे चब नहीं देखते हो तैभी विश्वास करके अक्ष्य शैर महिमा संयुक्त आन्दरे आदित हते हो। शैर अपने विश्वासका शानू अधीत अपने अपने 9 आत्माका चारे पाई हो।

इस चारे के विषयमें भविष्यद्वाता शैर ने जिन्होंने इस 10 भनुयहकी विषयमें जो तुमपर किया जाता है भविष्यद्वाताको कही बहुत दुःख शैर खेज विचार किया। वे 11 दुःखते थे कि ख्रीस्तका आत्मा जो हममें रहता है जब वह झीपको दुःख शैर उनके पीछे महिमाका सात देता है तब शैर शैर कैसा समय बताता है। शैर उतनपर प्रगट किया गया कि वे अपने लिये नहीं 12 परन्तु हमारे लिये उन वातांकी सेवकाई करते थे जिन्हें जिन लोगोंने स्वर्गसे भेजे हुए पविच आत्माका द्वारा तुममें सुसमाचार सुनाया उन्होंने शानी तुमसे कह दीया है। शैर इन वातांकी स्वर्गस्थ मूक मूकलों देखनेकी इच्छा रखते है।

इस कारण अपने अपने मनकी मानी कमर बांधके 13 सचेत रहा शैर जो भनुयह यीशु ख्रीस्ती के प्रगट हैनेपर तुममें मिलनेवाला है उसकी पूरी आशा रखा। आज्ञा- 14 कारी लोगोंकी नाई अपनी महानतामकी सगली शानी-जायांजी रीतिमें मत चला करो। परन्तु उस परम- 15 पविचकी समान जिसने तुमको बुलाया तुम भी शाय
व दस सारी चाल चलनसे पविच बनता। कैंक्रिक निसा है
21 पविच हातो कैंक्रिक में पविच हूं। श्रेय जो तुम उसे जो
बिना पद्धार हर एके कर्मके अनुसार बिचार
करते है पिता करके पुकारते है तो। अपने
22 प्रत्येक हातेका समय भयसे भिटाकी। कैंक्रिक जानते
है कि तुमने पितरंकी ठहराई हुई अपनी अर्धे चाल
चलनसे जो उद्दार पाया से नाशमान बस्तुश्रीके
23 अर्धे रुपां鹊 अथवा सौनके ठहरा नहैं। परन्तु निष्क-
लोंक श्रेय निश्चेत में सराशी खोयके बहुमूल्य लोहू-
24 के ठहराई पाया। जो जगतकी उत्पत्ति से आगे बढ़ा
ठहरा गया था परन्तु पिछले समयपर तुम्हारी कारक
25 प्रगट किया गया। जो उसके ठहराई ईश्वरपर
बिश्वस करते है जिसने उसे मृत्युक्रमसे उठाया
श्रेय उसको महिमा दिदी यहांलंक व तुम्हारा बिश्वस
श्रेय मरासा ईश्वरपर है।
26 तुमने निष्कर्ष भावीय प्रेमके निमित जो अपने
अपने हृदयके सत्यके आजाधारी हैने मृत्युके द्वारा
पविच किया है तो शुभ मनसे एक दूसरे बोलिश घर
27 करा। कैंक्रिक तुमने नाशमान नहीं परन्तु ज्ञानी
बीजसे ईश्वरके जीवते श्रेय सदालं ठहरनेहारे बचनके
28 ठहरा नया जन्म पाया है। कैंक्रिक हर एक प्राणी घासकी
नाई श्रेय मनुष्यका सारा विभव घासके फूलकी नाई
29 है। घास सूख जाती है श्रेय उसका फूल भड़ जाता
है परन्तु प्रभुका बचन सदालं ठहरता है श्रेय यही
बचन है जो सुसमाचारमें तुम्हें सुनाया गया।
इसलिये सब बैरभाव शीर्ष सब छल शीर्ष समस्त । प्रभावका कपट शीर्ष हाथ शीर्ष दुर्भेच दूर करके । नये जन्मे बालबेंकी नाईं वचनके निराले दूरहरी । जलका करे चिक उसको द्वारा तुम बढ़ जावा । बांधके । तुमने तो चीख लिया है कि प्रभु कृपाल है।

उसकी पास भर्तिश्व उस कीते पत्तरकी पास जो मनु- । ज्ञाति ती निकम्मा जाना गया है परन्तु इंद्रके बागे । चुना हुसा शीर्ष बहुमूल्य है खाके । तुम भी शाय जीवते । पत्तरकी नाईं शातिम्ख घर शीर्ष याज्ञेंका परिपक्व । समाज वनते जाते है छिड़के बालबेंकी जो ही खोपड़ी द्वारा इंद्रके भावते हैं छठरी।

इस भारय ध्वमपुस्तकमें भी मिलता है कि देखी में । सियाओंमें कोनेकी सिरेका चुना हुसा शीर्ष बहुमूल्य । पत्त्यर रखता हूँ शीर्ष जो उसपर बिध्वास करे सा किसी । रीतिः लाभ न होगा । सा यह बहुमूल्यता तुम्हारे- । ही लेख है जो बिध्वास करते है परन्तु जो नहीं । मानते हैं उन्हें वही पत्तर जिसे थवधयों निकम्मा । जाना कोनेका सिरा शीर्ष उसका पत्तर शीर्ष टाकको । चढ़ता हुसा है । क्षि वे तो बचनके न मानके टाकक । खाते हैं शीर्ष इसकी लिये वे ठहराये भी गये । परन्तु तुम । लोग चुना हुसा बंद शीर्ष राजपत्थारी याज्ञेंका
समाज सैन पवित्र लोग सैन निज प्रजा है। इसलिये कि जिसने तुम्हें अन्धकारमें अपनी अद्वैत ज्योति में 90 बुलाया उसके गुण तुम प्रचार करो। जो अन्धे प्रजा न चं परन्तु जब्री इंद्रवर्की प्रजा हो जिनपर दया नहीं किंतु गई चं परन्तु जब्री दया किंतु गई है।

91 है लारो में बिंती करता हूं विदेशियों सैन जपारी-
यांके नाने शारीरिक अभिनयांसे जो शात्राचे बिद्यु
92 लड़ते हैं परे रहा। अन्यदेशियांमें तुम्हारी चाल चलन भली होवे इसलिये कि जिस वातमें वे तुमपर जैसे कुकम्मियांपर अपबाद लगाते हैं उसीमें वे तुम्हारे भले का देखको जिस दिन इंद्रवर दूषित करे उस दिन उन
93 कर्मांकी कारण उसका गुणानुबाद करें। प्रभुजय कारण अर्थाओं उदहारण हुए हर एक पदकी अधीन होते।

94 चाहें राजा हो। उस प्रधान जानकी चाहे अध्यक्ष लोग हं। ता यह जानकी कि वे उसके द्वारा कुकम्मियांको दंडको लिये परन्तु सुककम्मीयांकी प्रशंसाको लिये भेजे जाते हैं।

95 डानांकी अधीन होते। क्योंकि इंद्रवर्की इच्छा यूंही है कि तुम सुकम्म करनसे निरुपन्त मनुष्यांकी अत्याचारको
96 निह्त करो। निवेद्यांकी नादे चलो पर जैसे अपनी निवेदनतासे दुराईंकी अड़ करते हुए वैसे नहीं परलो।
97 इंद्रवर्की दासांकी नादे चलो। समेतका शादर करो भाइ-
यांको यार करो इंद्रवर्के दोरा राजाका शादर करो।

९८. हे सेवको समस्त भय सहित स्वामियांकी अधीन
रहा केवल भलां जैसौ मृदुभावांके नहीं परन्तु कुत्ते-
99 लांबे भी। क्योंकि यदि बाईस अन्यासे दुंख उठाता
हुसा ईश्वरकी इच्छा के विवेककी कारण शिक्षा सह लेता हैं तो यह प्रशंसकी यथा है। क्योंकि यदि ज्ञापन तो तुम घूसे बाचे शीर्ष धीरज धरो हो तो कीनसा यह हैं परंतु यदि सुंकम्म करनेसे तुम दुःख उठावों शीर्ष धीरज धरो हो तो यह ईश्वरकी वाणे प्रशंसकी यथा है।

तुम इसीके लिये बुलाये भी गये क्योंकि खोजने भी हमारे लिये दुःख मेगा शीर्ष हमारे लिये नमुना छोड़ गया कि तुम उसको लीकर हो लेशो। उसने पाप नहीं किया शीर्ष न उसकी मुंहम्म बल पाया गया। वह निन्दित होके उसकी बदले निन्दा न करता या शीर्ष दुःख उठावों धरमकी न देता या परलु को धरमसे विचार करनेहारा है उसकी हाय झपनेका संयम्यता था। उसने झाप हमारे प्राप्तका झपणे देख्मे काठपर उठा लिया जिससे हम लोग प्राप्तके लिये मर करके धरमकी लिये जीवन शीर्ष उसके भार झानेके तुम चंगे क्षित्ये गये। क्योंकि तुम मरकी हुईं भेड़ांकी नाईं थे पर झब झपने प्राप्तके गड़ेरिये भी रखवालेका पास पिर झापे हो।

3 तीसरा पावे।
पहरनेका अथवा बस्त पहिलनेका बाहरी सिंगार न होवे। परन्तु हृदयका गुप्त मनुष्यत्व उस नम्र शीर शान्त ज्ञात्माकी ज्ञानिनाथी ज्ञानयोग सहित जो इश्वरके शान्त बहुमुख्य है तुम्हारा सिंगार होवे। कौंक्षि ऐसेही पवित्र स्त्रिया भी जो इश्वरपर भरोसा रखती थीं ज्ञानी ज्ञानें सिंगार करती थीं कि वे अपने अपने द्वारा मधुकर रहती थीं। जैसे जीवनकी आशा मानी शीर उसे प्रभु कहती थी जिसकी तुम स्वार्थ करी शीर जिसी प्रकरणकी घबराहटसे न होते हैं तो बेटिया हुई है। वैसीही है पुरूष ज्ञानकी रीतिते स्वाति संग जैसे अपनें निर्बल पालके संग बास करी शीर जब कि वे भी जीवनके अनुयाहकी संगी अधिकारियों हैं तो उनका आदर करी जिसी तुम्हारी प्रार्थनाखोंकी रोचन है।

अन्तत्में यह कि तुम सब एक मन शीर परदुःखके बुझनेहारे शीर भावयोकी प्रमो शीर कहहामय शीर हितकारी होऊँ। शीर बुराईंके बदले बुराई अथवा निन्दाके बदले निन्दा मत करी परन्तु इसकी बिपरीत आशीर्वद्ध कौंक्षि जानते हो कि तुम इसकी लिये बुजावे गये जिसें आशीर्वद्धकी अधिकारी होऊँ। कौंक्षि शीर जीवनकी प्रीति रखने शीर अच्छी दिन देखने चाहें लो अपनी जीमोंकी बुराईंते शीर अपने हैं ठंठे बलकी न होते हैं ठंठे। बारंबार करनें रोके। वह बुराईंसे फर जावे शीर भलाईं करे जो मिलायको चाहें शीर उसकी चेष्टा करे।

कौंक्षि परमेश्वरके नें धामककी शीर शीर उसको
क्षमा उनकी प्रार्थनाकी धार लगे हैं परन्तु परमेश्वर 
कुर्कम करनेहारसे बिमुख हैं।

धार पा तुम मलेरे खानुगामी होशी ता तुम्हारी १३ 
बुराई करनेहारा धार होगा। परन्तु पा तुम धर्मवहे १४ 
धार कुंस उठावो भी ता धन्य हो पर उनके भयसे 
भय मान मत हो धार न घबराये। परन्तु परमेश्वर १५ 
ईश्वरकी अपने अपने मनमें पविष माना। धार पा तु 
क्षी पते उस आशाके विषयमें जा तुमसे है कु ज 
बात छेद उसका नमस्ता धार भय सहित उत्तर दिनेकर 
सदा तैयार रहे। धार हुम मन रखेते इसलिये कि १६ 
क्षी लग तुम्हारी खोप्पानुसारी रखस साधय चाल चलनकी 
निंदा करें सा जिस बातमे तुमपर जैसे कुर्कमेंश्वर 
सबाद लगावे उसमें जानक हो तै। क्यांकि यदि १७ 
ईश्वरकी इच्छा पूर होय ता कुर्कम करते हुय 
इसका उठावे नाचा है।

क्यांकि क्षीपुने भी अस्थाय धर्ममेंश्वरकी लिये धर्मवहे १८ 
एक बेर पापमंगे कारण छुस उठाया जिसीं हमें ईश्वरकी 
पास पहुंचावे कि वह शरीरमें ता घात किया गया 
परन्तु आत्मामे जिलाया गया। उसमें उसने बन्दी- १९ 
इम्में आत्माशोको भी जाके उपदेश दिया। जिन्हांने २० 
क्षी ले समयमें न माना जिस समय ईश्वरका भीरज 
दिनेमंज जबलों जहाज़ बनता था जिसमें छोड़े 
अस्थाय आत्र प्रायी जलकं द्वारा बच गये तबलों बार 
बेहतर रहे। इस दुःखानतका आश्रय वापसीसमा जो २१ 
शरीरके मौलका दूर करना नहीं परन्तु ईश्वरके पास
शुद्ध मनका अंगीकार है जभी हमेंका भी यीशु ख्रिस्ती
22 जी उपनीके द्वारा बचाता है। जो स्वरूपर जाने इंधनके
दूसरे हाथ रहता है श्रीर दूतगण श्रीर अधिकारी
श्रीर पराकार हमें उसकी अधिक किये गये हैं।

8 चीत्या पढ़ैँ।

1 पापसे श्रांग रहनेका उपदेश। 5 प्रार्थना श्रीर प्रेम श्रीर दातार्थका उपदेश। 12
धर्मके हेतु दु:ख उठानेमें ढाकु बाँधनेका उपदेश।

1 तो जब कि ख्रीस्तने हमारे लिये शरीरमें दुःख
उठाया श्रीर जब कि जिसने शरीरमें दुःख उठाया है
वह पापसे रोका गया है तुम भी उसी मनसाका
2 हृदयार बाप्पा। जिसने शरीरमें जी समय रह गया
है उसे तुम जब युनेशनके अनुसार बितावो। क्योंकि
हमारे
जीवनका जो समय बीत गया है तो नाना भार्तिके
लुचपन श्रीर कामाभिजात श्रीर मतभावापन श्रीर लोहा
श्रीर मदनपान श्रीर धर्मबिहत हृदय पूरी करनेका बहुत भूषा है।
3 इंश्वरके इच्छाके अनुसार भिन्नायो। क्योंकि हमारे

4 इससे वे लिये जब तुम उनके संग लुचपनके उसी
शर्ताचारमें नहीं दौड़ते हैं तब श्रांभा मानते श्रीर
5 निन्दा करते हैं। पर वे उसका जो जीततां श्रीर मृत्युको-
का बिचार करनेका तैयार है लेखा देंगे। क्योंकि
इसमें लिये मृत्युकों। भी सुसमाचार सुनाया गया
कि शरीरमें तो मनुष्योंके अनुसार उनका बिचार
किया जाय परन्तु ज्ञातमामे वे इंश्वरके अनुसार जीवें।
6 परन्तु तब वातिंका अन्त निकट भाषा है इसलिये
सुभद्र होकर प्रार्थनाओं लिये सचेत रहा। बीमर सबसे ८
शापिक करके एक दूसरे के अति शय प्रेम रखा किया कि
प्रेम बहुत पापों का जीतेगा। अन्य कुछ हो एक ८
दूसरे के भ्रष्टितिसेवा किया करा। जैसे जैसे हर एक २०
बर्दान पिथा है जैसे ईश्वर के नाना प्रकारों के अनुप्रयोग
भले ही भंदारियां की नई एक दूसरे के लिये उसी बर्दान की
सेवकाई करा। यदि कोई बात करा तो ईश्वर की १२
भाषियां की नई बात करा यदि कोई सेवकाई करा तो
जैसे उस शक्ति हो जी ईश्वर देता है करे जिसे सब
भारत में ईश्वरकी महिमा यीशु ख्रीस्त के द्वारा प्रगट
किए जाने जिसकी महिमा ईश प्रकाश सदा समझेदा
रहता है। अमीन।

हे प्यारे जे ज्वलन तुम्हारे बीच में तुम्हारी परीक्षाओं १२
लिये होता है उससे अच्छिए मत करा जैसे कि कोई
आर्यके बात तुम पर बीतती है। परन्तु जितने तुम
ख्रीस्ती हु:खिंके सम्भागी होते है उन्होंने ज्ञानद करे
जिस्ते उसकी महिमाके प्रगट होने पर भी तुम ज्ञानदित
ईश प्राप्त होते है। जो तुम ख्रीस्ती के नामके लिये १४
निन्दित होते है तो धन्य हो किया कि महिमाका ईश
ईश्वरीका ज्ञातमा तुम पर दहरता है। उनकी ईशारसे तो
इसकी निन्दा होती है परन्तु तुम्हारे ईशारसे उसकी
महिमा प्रगट होती है। तुम्में कोई जन हत्यारा १५
ईश्वरा ईश प्रयवा कुक्म्मी होने से ईशवा परापे कामें
हाथ डालने से दुःख न पावे। परन्तु यदि ख्रीस्तियाँ १६
होनेसे कोई दुःख पाये तो लजित न होवे परन्तु इस
६ पांचवां पाठः।

१ प्राचीन शर, ज्ञानीय किये विद्वेषः। इस दीनता शर, वृक्षता कुर्विये। १० प्रार्थना शर, नवमकार हर्षित परित्ति कुमारै।

२ संगी प्राचीन शर श्रीरक कुंदेंका साष्यी।

६ श्रीर जो महिमा प्रगत होनेपर है उसका सम्भागो भी हूँ। प्राचीनसे जो तुम्हारे बीचमें हैं विन्ति करता हूँ।

२ श्रवके मुंडकी जो तुममें हैं चरवाही करे। शर द्वावसे नहीं पर अपनी सममतिसे शर न नीच कामाइके सोये पर मनकी इच्छासे। शर न जैसे अपने अपने अधिकारपर प्रभुता करते हुए परन्तु मुंडके लिये दूष्णात होते हुए राखबाली करे। शर प्रधान रखबाले के प्रगत होनेपर तुम महिमाका अष्टक मुकूर पार्थिये। वैसी हे जजना प्राचीनके अधीन होँ श्रीसे।

हां तुम सब एक द्वारके अधीन होके दीनताके योहत लें। किंवा देवताको श्रीर श्रमाहिनैयंसे बिराध करता है परन्तु दीनांपर अनुयह करता है।
इसलिये ईश्वरकी पराक्रमी हाथके नीचे दीन है। हाथों जिसंत वह समयपर तुम्हें ऊंचा करे। अपनी सारी चिंता उसपर हालो क्योंकि वह तुम्हारे लिये साध करता है। सचेत रहो जागरण रहो क्योंकि तुम्हारा बैरी जैतान गजें हुए सिंहकी नाई ढूंढता फिरता है। बिश्वासमें तूढ होके उसका सामना करो क्योंकि जानते हो कि तुम्हारे भाई लोगों-पर जा संसारमें हैं दुःखांकी वैसीही दशा पूरी होती जाती है।

सारे अनुयहका ईश्वर जिसके हमें झोपू यीथुम १० जुलाया कि हम थे दबासा दुःख उठाके उसकी ओलम माहिमामें प्रवेश करें। अपनी तुम्हें सुधारे बी फ्यर करे बी बल देवे बी नेवपर टूढ करे। उसीकी ११ माहिमा बी पराक्रम सदा सबैदमा रहे। आमोन।

सीलाके हाथ जिसे में सम्भवता हूं कि तुम्हारा १२ बिश्वासमोहक भाई है मैने शाही बातियूं में लिस्का है। बी उपदेश बी वास्तवी देता हूं कि ईश्वरका सबका अनुयह जिसमें तुम फ्यर है यही है। तुम्हारे संगको १३ बुनी हुई जा बाबुलमें हैं बी मेरा पुरश माभे इन देशेंको तुमसे नमस्कार। प्रेमका चूँमा लेके एक १४ टूसरको नमस्कार करो। तुम सभीको जो झोपू यीथुम हैं शांति हावे। आमोन।

_________________________
पितर प्रेरितकी दूसरी पत्री।

पहिला पत्र।

1 पत्रीका शाभाय। इ धर्मामें बड़ियाँ बाणीका उपवेश। 12 विवाहविको वितानामें पिताका यह। 15 सय उपवेशगर प्रेरितों और भविष्यज्ञसंधानोंकी साथी।

2 शिमान पितर जी यीशु ख्रिस्त्तका दास श्रीर प्रेरित है उन लोगोंका जिन्हाँने हमारे इंश्वर श्रीर बाणोंकी यीशु ख्रिस्त्तके धर्ममें हमारे तुल्य बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया है। तुम्हें इंश्वरके श्रीर हमारे प्रभु यीशुके ज्ञानके द्वारा बहुत बहुत अनुष्ठान श्रीर राष्ट्रीय मिले।

3 जैसे कि उसके इंश्वरीय सामाजिक सब कुछ जो जीवन श्रीर मिलते समय रखता है हमें उसीके ज्ञानके द्वारा दिया है जितने हमें झपने प्रेमस्थलायं श्रीर शुभगुणके अनुसार बुलाया। जिनके अनुसार उसने हमें अत्यन्त बड़ी श्रीर बहुमूल्य प्रतिक्रिया दिती हैं इसलिये जिनके द्वारा तुम लोग जो नफुता कामाभिमानके द्वारा जगतमें हैं उससे बचके इंश्वरीय स्वभावपने भागी हो जाते।

4 श्रीर इसी कारण भी तुम सब प्रकारका यत्न करके झपने विश्वासमें शुभगुण श्रीर शुभगुणमें ज्ञान। श्रीर ज्ञानमें संयम श्रीर संयममें धीरज श्रीर धीरजमें मत्तक।

5 श्रीर भलके भाइयो प्रेम श्रीर भाइयो प्रेममें धीर।

6 संयुक्त करा। कोईंकः यह बातें जब तुमसे हैं तों श्रीर बड़ी जातीं तब तुम्हें ऐसे बनाती हैं कि हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्त्तके ज्ञानके लिये तुम न निकम्मे न निन्नफल हैं। कोईंकः जिस प्रातः यह बातें नहीं हैं वह अंधा है।
श्रीर धुंधला देखता है श्रीर भरने जगले पायेंसे जगना शुद्ध किया जाना मूल गया है। इस कारण है भाईयो १० श्रीर भी जगने बुलाये जाने श्रीर चुन जिये जानेका तूड़ करनेका यह करते हैं किया जो तुम ये करते तो कभी किसी रीतिसे ठोकर न खाओगे। किया जिस प्रकारसे ११ तुम्हें हमारे प्रभु श्री चाराभक्ति यीशु प्रेमीके जननत राज्य-में प्रवेश करनेका अधिकार को अधिकारिते दिया जायगा।

इसलिये यदापि तुम यह बातें जानते हैं श्रीर श्री १२ सत्य बचनतुम्हारे पास है उसमें स्पष्ट किये गये हैं तौभी में इन बातोंके विषयमें तुम्हें नित्य चेत दिलानेमें निर्दिष्ट न रहिया। पर में समझता हूँ कि जबलोंमें इस १५ दरेंमें हुं तबलों स्मरण करवानेसे तुम्हें सचेत करना मुफ्ती चाहिये है। किया जान ता हूं कि जैसा हमारे प्रभु यीशु १४ खोपुने मुफ्ती बताया तैसा मेरे डरिके गिराये जानेका समय निकट है। पर में यह कहिया कि मेरी मृत्युके पीछे भी १५ तुम्हें इन बातोंका स्मरण करनेका उपयोग नित्य रहें।

किया जिमने तुम्हें हमारे प्रभु यीशु खोपुके सामर्थ- १६ का श्रीर जानेका समाचार बिदासंसे रची हुईं कहानियों-के अनुसार जो सुनाया सा नहीं परन्तु हम उसकी महि-माके प्रत्यक्षात कोई हुए थे। किया जिसने इंग्रज पितासे १७ शादर श्रीर महिमा पाई कि प्रतापमय तेजसे उसकी ऐतिहासिक शब्द सुनाया गया कि यह मेरा प्रय पुष्प है जिसके में अक्षु प्रस्ताव हुं। श्रीर यह शब्द स्वयंसे सुनाया हुआ १८ हमने पावित्र पश्चिमने उसके संग हैत हुए सुन लिया।

श्रीर भविष्यद्वायिता बचन हमारे लिकट श्रीर में टूट १९
है। तुम जो दसपद जैसे दीपकपर जो जंग्लियार स्थानमें चमकता है जबले वह न फटे श्रीर भेंड तारा तुम्हारे हृदयमें न उगे तबलों मन लगाते हो तो अच्छा करते 20 हो। पर यही पहले जाना कि धर्म्युपासकी कोई भविष्यद्वारी किसीके अपनेहो भाष्यान्से नहीं होती 21 है। क्योंकि भविष्यद्वारी मनुष्यकी दृष्टासे कभी नहीं क्षाई परन्तु ईश्वरके पवित्र जन पवित्र शात्मके बुलायाहे हुए बले।

2 दूसरा पढ़िये।

1 मटे उपदेशकोंके मात्र श्रेष्ठका श्रीर उनके दंडका भविष्यद्वारा । 8 उनके दंडके तीन दृष्टांत श्रीर उनकी प्रश्नावला उत्तरमान। 17 उनसे लोगोंका दोषाध्य धार्मिक। 20 उनके अनेकांका भाषा कुत्ता हुए बोला।

1 परन्तु भूरे भविष्यद्वारा भी लोगोंमें हुए जैसे कि तुममें भी भूरे उपदेशक हौंगे जो बिनाशके कुपन्यांको दिखाके चलावाईं श्रीर प्रभुसे जिसने पहें माल लिया

2 मुकर्में पिछा अपने ऊपर श्रीग्रंथ बिनाश लावाईं। श्रीर बहुतेरे उनके लुचपनका पीछा करेंगे जिनके कारण

3 सत्यके मारसी किंतु किंदे जायगी। श्रीर लेखमें वे टुकमें बनाई हुई बातोंसे बच खायाईं पर पूड़ाकालसे उनका उद्ध आलस नहीं भरता। श्रीर उनका बिनाश जंघता नहीं ।

4 क्योंकि यदि ईश्वरके दूसरोंके जिन्होंने पाप किया न छाड़ा परन्तु पातालमें दालके अंधकारको जंगीरोंमें त्रंस दिया जहां वे बिचारके लिये रखे जाते हैं। श्रीर प्राचीन जगतको न छाड़ा वरन मजहिनांको जगतपर जल्पनायलाय लाया परन्तु धर्म्यके प्रकारक नूहको लगाईं
झाँझ ज्ञानकों की रक्षा की है. श्रीर सरमां श्रीर समाधिते नगरोंका भस्म करके विध्वंसका दंड दिया श्रीर उन्हें पीछे छानेकोले भक्तिहीनांकों लिये दुष्प्रभाव ठहराया है.

श्रीर हर्मवी सिक्कोता जो भव्यमयीके लुच्चपनके चलनसे छाति दूःखी होता या बचाया. कोण्ड्यकि वह हर्मम्यन मान उनके बीचमे बास करता हुआ देखने श्रीर सुननसे प्रतिदिन हर्मणे हर्मवी प्रारको उनके दुष्प्रभावमें पीडित करता था. तो परमेश्वर भक्तिवाने पर्वीमत्वमें वचाने बैर भव्यमयीको दंडकी दंशमें बिचारके दिनलां रखने जानता है. निज करके उन लोगांको जो शरीरके अनुसार भगुडखका भव्यमत्वसे चलते हैं श्रीर प्रभुताको तुच्च जानते हैं. वे दोठी हुई हैं श्रीर महत्त्वदंको निन्दा करनसे नहीं दरते हैं. तैभी दूतगण जो शक्ति श्रीर पराशकमे बढ़े हैं उनके विस्तु परमेश्वरके शारी निन्दा-

संपूर्ण विचार नहीं सुनाते हैं. परन्तु ये लोग स्वभावभव १२ 

सचित्वके प्रशुकोंकी नाई जो पकड़े जाने श्रीर नाश होिने-

को उत्तम हुए हैं जिन बातोंमें संज्ञान हैं उन्हें में निन्दा

करते हैं श्रीर अपनी भव्यतामें सत्यानाथ होिगे श्रीर अ-

धर्ममा फल पायेंगे। वे दिन भरके विषयोणको सुख १५ 

समक्षते हैं वे कल्पके श्रीर शेत कही हैं वे तुम्हारे संग 

भागमें भेजते हुए अपने बलांसे सुख होगे करते हैं। उनके १४ 

नेत्र व्यभिचारियोंसे भरे रहते हैं श्रीर पापसे राखे नहीं 

जा सकते हैं वे अस्थिर प्रारकोंकी फुसलाते हैं उनका मन 

लोभ लालचम साथा हुआ है वे सापके सन्तान हैं। वे १५७३ 

सीधे मार्गको बढ़ोत्रे भगत गये हैं श्रीर विद्यारके पुपु
बलामके मार्गपर है लिये हैं जिसने ध्रुममंकवी मजूरिका
रखी प्रिय जाना। परन्तु उसके समराधके लिये उसे उलझहा
दिया गया। जबाल गधने मनुष्यकी बालिसे बलबे
भविष्यद्वाणकी मूर्ताको रूप का।

१० ये लोग निजसे कूए शर्य सांसीके उड़ाये हुए मेंह
हैं। उनके लिये झंडाका घाय दम्पकार रखा गया है।

१८ क्योंकि वे अर्थ गलफराकीको बात करते हुए शरीरको
भविष्याएंसे लुचपनेरंगे द्वारा उन लोगांका फुसलते
हैं। जो भांतिकी चाल चलनेरंगे सचमुच बच निकले
१५ थे। वे उन्हें निबंध होनेकी प्रतिबा देते हैं पर जापही
नष्टताके दास हैं क्योंकि जिससे कौई हार गया है
उसका वह दास भी बन गया है।

२० यदि वे प्रभु श्री चाणक्तायोगः फ्रीमूफः झानके
द्वारा संसारकी नाना प्रकारकी बुधपुट्तासे बच निकले
परंतु फिर वसमे पंसके हार गये हैं। ता उनकी पिछ-
हूं श्रीर दानोंमें से स्मरण करवानेसे तुम्हारे निष्ठुरत मनकी सचेत करता हूं। जिस्तें तुम उन बातेंकी जो पवित्र महिम्रुद्धाश्रोंने आग्ने से खरी ती स्थार हम प्रेतितंकी आज्ञाकी जो प्रभु श्री चारकत्ताकी आज्ञा है स्मरण करी। पर यही पहले जाना कि पिकले दिनोंमें निन्दक लोग साहित्य जो अपनेही आभिलार्कें क्रनुसार चलने। श्रीर कहीं उसकी आरकी प्रतिज्ञा कहां है क्योंकि कबसे पितर लोग से गये सब कुछ स्थिति आरंभते यूनी बना रहता है। क्योंकि यह बात उनसे उनकी इत्ताहीसे छिपी रहती है कि इत्वरके बचनेते आकाश पूर्वाकालमें था श्रीर पृथिवी भी जो जलमें से श्रीर जलके द्वाराते बनी। जिनके द्वारा जगत जो तब था जलमें हूबके नष्ट हुआ। परन्तु आकाश श्री पृथिवी जो जल हैं। उसी बचने मरे हुए हैं श्रीर भक्तिहीन मनुष्योंके विचार श्रीर विनाशकी दिनलों आजके लिये रखी जाते हैं।

परन्तु हे यारो! यह एक बात तुमके छिपी न रहे कि प्रभुके यहां एक दिन सहस्र बरसके तुल्य श्रीर सहस्र बरस एक दिनके तुल्य हैं। प्रभु प्रतिज्ञा को विषयमें विलम्ब नहीं करता है जैसा कि तने लोग विलम्ब समकरे हैं परन्तु हमारी तारंग घोरज घरता है श्रीर नहीं रहता है कि काई नष्ट होवें परन्तु सब लोग प्रकाशात्मक पहुंचें। पर जैसा रातके चार झार है तीस प्रभुका दिन १० झारेगा जिसमें आकाश हड़हड़ाहटे झार हैंश श्रीर तत्त्व झार तम हो गल जायेंगे श्रीर पृथिवी श्रीर उसमें काम कर्य जल झारेंगे। सो जब कि यह सब बस्तु गल ११
जानेवाली हैं तुम्हें प्रविष्ट चाल चलन शैर भक्तिमें जैसे मनुष्य होना। शैर किस रॉटीसे ईश्वरकी दिनकी बाट जाह्ना शैर उसके शीघ्र झानेकी चेष्टा करना उचित है। जिस दिनकी कारण झाकाश ज्यालित है। गल जायगा।
12 शैर तत्व झारत तप है। पिघल जायेंगे। परन्तु उसकी प्रतिज्ञाके अनुसार हम नये झाकाश शैर नई पृथिवीकी झास देखते हैं जिनमें धम्म वास करेगा।
13 इसलिये है भावो तुम जो इन बातेंंकी झास देखते हैं तै। यह करो फिर तुम कुझले उसके झाने। निष्कलंब शैर निर्दिष्ठ ठहरा। शैर हमारे प्रभुके पीरजीवा शारा समिश्र। जैसे हमारे प्रेम माई पालने भी उस श्राके बनुसार शैर उसे दिया गया तुम्हारे पास लिखा। बैठेंही उसने सब परियोंमें भी जिस्का है शैर उनमें इन बातेंंकी विषयमें बहा है जिनमेंसे विदिती बारं गूढ हैं जिनका झानसिख शैर झानसिख लोग जैसे धम्मपुस्तककी शैर शैर बातेंकी भी विपरीत अर्थ लगाके उन्हें झपनही झिलाशका कारण 16 बनाते हैं। ये है भावो तुम लोग इसकी झागेंते झानके झपने तदें बचाये रहा। ऐसा न हो फिर झानसिखको जैसे झपने करताते हैं।
17 पत्त साही। परन्तु हमारे प्रभु शैर चायकर्ता यशु श्रीश्रीके झानयद्वा शैर झानमें बढ़ते जायें। उसका गुणक्षुद्वाद भरी शैर सदाकालेंं भी होने। झानीन्द्र।
याहन प्रेतिकी पहिली पत्री।

पहिला पाठ्।

1 पत्रीका सामाय। 5 देशक मेहदी है इसके में रचनाके लिये ज्योतिमें खलने और धरने बढ़ने पाप शान लेनेकी भावभद्रा।

जा खादिस था जो हमने जीवनके बचनके विषयमें सुना है जो अपने नेदांसे देखा है जिसपर हमने दृष्टि खींट और हमारे हाथोंने बूस्ता। कि वह जीवन प्रगत हुआ और हमने देखा है जो साही देखता है और तुम्हें उस सनातन जीवनका समाचार सुनाते हैं। जो पिताके संग था और हमारे प्रगत हुआ। जो हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें सुनाते हैं। इसलिये वह हमारे साथ तुम्हारी संगति है। जो हमारी यह संगति पिताके साथ और उसके पुष्प यीशु खरीडके साथ है। और यह बात हम तुम्हारे पास इसलिये लिखते हैं कि तुम्हारा स्वानन्द पूरा है।

श्री समाचार हमने उससे सुना है जो तुम्हें सुनाते हैं। ता यह है कि देशक मेहदी है और उससे कुछ भी भावभद्रा नहीं है। जो हम कहे कि उसके साथ हमारी संगति है और हम आंधियारमें चलने तो मूर्त बालते हैं। और सब वातावरण नहीं चलते हैं। परन्तु जैसा यह ज्यो-तिमें है वैसे जो हम ज्योतिमें चलने तो एक दूसरे संगति रखते हैं। और उसके पुष्प यीशु खरीडके लोहू हमें सब पापसे गुहा करता है। जो हम कहे कि हमसे कुछ और पाप नहीं है तो अपने खो देता है। और सब गुहा
हममें नहीं है। जो हम जापने पापेंको मान लेवं तो वह हमारे पापेंको दूषण करनेको शीर हमें सब धार्मिक-20 में शुद्ध करलेको विश्वासयोग्य शीर धमार्मिक है। जो हम कहे कि हमने पाप नहीं किया है तो उसको कृपा बनाते हैं शीर उसका वचन हमें नहीं है।

2 दूसरा पढ़ें।
1 पापको धमार्मिक योजना चोरे संवेदना प्राप्त है रहमानका धमार्मिक निर्देश। 7 मायेशा प्रेम रहमानकी धमार्मिक। 15 वनस्पति प्रेमी रहमानका लिखित। 16 ब्रह्मशक्ति प्रेमी रहमानका लिखित। 24 ब्रह्मकुंड भवन रहमानका चपेटें।

9 है भीमे बालकों में यह बात तुम्हारे पास लिखता हूँ जिसते सुम न करा शीर यदि कोई पाप करे तो पिताको पास हमारा एकसहायक है अस्थायी धार्मिक योजना।
2 श्रीधर। शीर यही हमारे पापेंको लिये प्रायोगिक है शीर केवल हमारे नहीं परन्तु उसको जगतकी पापेंको लिये भी।
3 शीर हम लग जो उसकी शार्मिको पालन।
8 करें तो इससे जानते कि हमको पहचानते हैं। जो कहता है में उसे पहचानता हूँ शीर उसकी शार्मिको नहीं पालन करता है तो। श्रीधर है शीर उसमें सदा नहीं ये। परन्तु जो कोई हमको पालन करे उसमें सच्चाई ईश्वरका प्रेम सिद्ध किया गया है। इससे हम जानते हैं कि हम उसमें हैं। जो कहता है में उसमें रहता हूँ उसे चुरित है कि शाप भी वैसाही चले जैसा वह चला।
0 है भाषनों में तुम्हारे पास नहीं शार्मिको नहीं लिखता हूँ。 परन्तु पुरानी शार्मिक जो शार्मिको तुम्हारे पास थी। शार्मिको शार्मिक वह बचन है जिसको तुमने शार्मिको सुना।
फिर में तुम्हारे पास नहीं झाड़ा लिखता हूं जीर हां यह ८
तो उसमें जीर तुममें सत्य है कीांकि अंधकार बोता
जाता है जीर सच्चा उजियाला लभी चमकता है। जो ५
कहता है में उजियालेमें हूं जीर अपने भाईसे बैर
रखता है सा ज्याबलों अंधकारमें है। जो अपने भाईका १०
प्यार करता है सा उजियालेमें रहता है जीर ठाकर
शानिका कारण उसमें नहीं है। पर जो अपने भाईसे १२
बैर रखता है सा अंधकारमें है जीर अंधकारमें चलता
है जीर नहीं जानता में कहां जाता हूं कीांकि अंधकारने
उसकी झांचें अंधी किन्ह हैं।

हे बान्को में तुम्हारे पास लिखता हूं इसलिये कि ११
तुम्हारे पाप उसके नामके कारण घमा किये गये हैं।
हे पितारे में तुम्हारे पास लिखता हूं इसलिये बिखम १२
बसे जो आदित्य है जानते है। हे जवाना में तुम्हारे
पास लिखता हूं इसलिये कि तुमने उस दुःपपर जय किया
है। हे लड़को में तुम्हारे पास लिखता हूं इसलिये कि
तुम पिताको जानते है। हे पितारे भें तुम्हारे पास १३
लिखा है इसलिये कि तुम उसे जो आदित्य है जानते
है। हे जवाना भें तुम्हारे पास लिखा है इसलिये बिख
तुम बलवत है जीर ईश्वरका बचन तुममें रहता है
जीर तुमने उस दुःपपर जय किया है।

न तो संसारसे न संसारमें के बस्तुसे प्रीति रखे। १४
यदि कई संसारसे प्रीति रखता है तो पिताका प्रेम
उसमें नहीं है। कीांकि जो कुछ संसारमें है। भागीत १५
भरवरका भाष्यक जीर नेचींका भाष्यक जीर
जीविकाका घमंड सा पिताकी शोरसे नहीं है परन्तु 17 संसारकी शोरसे है। शीर संसार शीर उसका भावभाव बोता जाता है परन्तु जो इंश्वरकी इच्छापर चलता है तो सदासूं ठहरता है।

18 हे लड़को यह पिछला समय है शीर जैसा तुमने सुना कि ख्रीष्नुबिरोधी श्राता है तैसे ज्ञान भी बहुत से ख्रीष्नुबिरोधी हुए हैं जिससे हम जानते हैं कि पिछला समय है। वे हमसे निकल गये परन्तु हमसे सदा हैं तीनों से श्रात है कि हमारे संग रहते तो हम नीचे निकल गये जिससे ज्ञात हो चाहे वे हम नीचे निकल गये हैं। यह सब हमसे नीचे हैं।

19 पर तुम्हारा तो उस परमपालितसे भाविष्यक 22 हुआ है शीर तुम सब कुछ जानते हो। मैंने तुम्हारे पास इसलिये नहीं लिखा है कि तुम सत्यको नहीं जानते हैं जैसे हमारे हारे हैं। शीर कि जो फूट का हुआ है जैसा तुम सब निकल रहे हैं। तुम सत्यको नहीं जानते हैं। यह जो फूट है जैसा तुम सब निकल रहे हैं। तुम सत्यको नहीं जानते हैं।

20 जो फूट है जैसा तुम सब निकल रहे हैं। जो पितासे शीर पुछते मुक्त है। जो पर सब निकल रहे हैं। मैंने तुम्हारे पास पितासे शीर पुछते मुक्त है। जो पितासे शीर पुछते मुक्त है। जो पितासे शीर पुछते मुक्त है।

21 जो पितासे शीर पुछते मुक्त है पिता भी उसका नहीं है। जो पितासे शीर पुछते मुक्त है पिता भी उसका नहीं है।
रहता है चैत्र तुम्हें प्रयोजन नहीं वि कोई तुम्हें सिखाये परन्तु जैसा वही ज्ञानी तुम्हें सब बातें विषयव्य सिखा देता है चैत्र सत्य है चैत्र सृज सत्य नहीं है चैत्र जैसा उससे तुम्हें सिखाया है तैसे तुम उससे रहे। चैत्र जब है बालक उससे रहे कि जब वह प्रगट नहीं है तब वह साहस हो चैत्र हम उसके ज्ञानिय उसके भागे सत्ता छोड़े न जायं। जो छाया जाने कि वह २८ प्रभुमै है तो जानते हैं कि जो कोई धर्मेका कार्य बरता है सो उससे उत्तम हुआ है।

३ तीसरा पढ़ें।

१ ज्ञानियों में ज्ञानी ज्ञानी प्रदायी चैत्र ज्ञानिये कार्यपढ़ें क्षे रहना। २ ज्ञानी के बालक जैसा ज्ञानी के सलाह रबद जैसे भावालियों के धर्म पर वैदिक विषयव्या भरोवा छटा विषय रबद।

देखे पिताने हमें चैत्र जैसा प्रेम किया है कि हम ईश्वरके सत्तान कहाँ वाँ। इस कार्य संसार हमें नहीं पहचानता है क्योंकि उसकी नहीं पहचाना। हे प्रियों ज्ञानी हम ईश्वरके सत्तान हैं चैत्र जबलों यह नहीं प्रगट हुआ कि हम क्षे हेंग परन्तु जानते हैं कि जो प्रगट हेंग तो हम उसके समान हेंग क्योंकि उसकी जैसा वह हैं तैसा देखें। चैत्र जो कोई उसपर यह आशा रखता है सो जैसा वह प्रचल है तैसाही ज्ञानिये प्रविष्ट करता है। जो कोई पाप करता है सो व्यवस्थापित भी करता है चैत्र पाप तो व्यवस्थापित है। चैत्र तुम जानते हैं कि वह ता इसलिये प्रगट हुआ कि हमारे पापींका उठा लेबे चैत्र उससे पाप नहीं है। जो कोई
उसमें रहता है सा पाप नहीं करता है। जो कोई पाप करता है उसने न उसको देखा है न उसको जाना है।

६ भाषा कोई तुम्हें न भरमारे, जैसा वह धम्मी है तैसा वह जा धम्मका कार्य करता है धम्मी है। जा पाप करता है सा श्रीतानसे है क्योंकि श्रीतान शारम्भसे पाप करता है। ईश्वरसे पुच इसी लिये प्रगट हुआ किसे श्रीतानको काॅ लॉप करे। जा कोई ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है सा पाप नहीं करता है क्योंकि उसका बीज उसमें रहता है श्रीर वह पाप नहीं कर सकता है क्योंकि

१० ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है। इसीमें ईश्वरके सन्तान श्रीर श्रीतानके सन्तान प्रगट होते हैं। जो कोई धम्मका कार्य नहीं करता है सा ईश्वरसे नहीं है श्रीर न वह जा अपने

११ भाईके घायर नहीं करता है। क्योंकि यही समाचार है जो तमने ब्यारम्भ सुना कि हम एक दूसरके घायर करें।

१२ ऐसा नहीं जैसा काइन उस दुर्गासे तथा श्रीर ज्ञापने भाईका बध किया। श्रीर उसको किस कारण बध किया। इस कारण कि उसके ज्ञापने कार्य बुरे थे परन्तु उसके

१३ भाईके कार्य धम्मके थे। हे मेरे भाईयो यदि संसार तमने बैर करता है ता ज्ञाभा मत करे।

१४ हम लोग जानते हैं कि हम मृत्युसे पार दोनों जीवन- में चुंबै हैं क्योंकि भाईयोंको घायर करते हैं। जा भाई-

१५ को घायर नहीं करता है सा मृत्युमें रहता है। जा कोई ज्ञापने भाईसे बैर रखता है सा मनुष्याधारी है श्रीर तुम जानते हो कि किसी मनुष्याधारीमें जनन्त

१६ जीवन नहीं रहता है। हम इसीमें प्रेमको समक्षते हैं
बि उसने हमारे लिये अपना प्राप्त दिया श्रीर हर्में चंचित है कि भाियोंके लिये प्राप्त देवं। परदुज़ १० जिसे के पास संतारको जीविका है जो वह अपने भाियोंके देखे कि उसे प्रयोजन है श्रीर उससे अपना अन्तःकरण खोटार करे ता उसमें क्रांतकर ईंशवरका प्रेम रहता है। हे मेरे बालको हम बातते अथवा १८ जोधते नहीं परदुज़ करणीसे श्रीर सज्जाईसे प्रेम करें। श्रीर इसमें हम जानते हैं कि हम सज्जाईसे हैं श्रीर १८ इसके भागे अपने अपने मनको समकालीने। कीचिब २० जो हमारा मन हमें दोष देवे ता जानते हैं कि ईंशवर हमारे मनसे बड़ा है श्रीर सब कुछ जानता है। हे २१ प्यारा जो हमारा मन हमें दोष न देवे ता हमें ईंशवरके समुक्ष साह्स है। श्रीर हम जो कुछ मांगते २२ हैं उसते पाते हैं कीअकि उसको धाराशिकोंका पालन करते हैं श्रीर वहीं वाह करते हैं जिससे वह प्रसन्न होता है। श्रीर उसको धार्मिक यह है कि हम उसको २३ मुख योग्य खीरके नामपर विश्वास करें श्रीर जैसा उसके हमें धार्मिक देवि सैसा एक दूसरके प्यार करें। श्रीर जो उसकी धाराशिकोंका पालन करता है तो २४ उसमें रहता है श्रीर वह उसमें श्रीर इससे हम जानते हैं कि वह हमींसे रहता है अर्थात उस धार्मिके जो उसते हमें दिया है।
१ है यारे हर एक ज्ञात्मका विश्वास मत करे परन्तु ज्ञात्मकों को परखा कि हे इंस्वरकी चोरसे हैं न्यािं नहीं क्योंकि बहुत कुठे भविष्यद्धका जगतमें निकल 
२ जाये हैं। इससे तुम इंस्वरका ज्ञात्मा पहचानते हो। हर एक ज्ञात्मा जो मान लेता है कि योगु खीरभु 
३ चारोंमें ज्ञाया है इंस्वरकी चोरसे हैं। चार जो ज्ञात्मा नहीं मान लेता है कि योगु खीरभु चारोंमें ज्ञाया है इंस्वरकी चोरसे नहीं है चार यही तैल खीरभुविरा धीका ज्ञात्मा है जिसे तुमने सुना है कि 
४ ज्ञाता है चार ज्ञाता भी वह जगतमें है। हे वालकी तुम ता इंस्वरके हो चार तुमने उनपर जय ज्ञाया है किंतु जा तुममें है ता उससे जा संसारमें है बड़ा है। 
५ वे ता संसारके हे इस कारण वे संसारको बातें बोलते हैं 
६ चार संसार उनकी सुनना है। हम ता इंस्वरके हैं। जा इंस्वरको जानता है। हमारी सुनना है। जा इंस्वर- 
७ का नहीं है सा हमारी नहीं सुनना। इससे हम सज्जा इंस्वा ज्ञात्मा चार भाविता ज्ञात्मा पहचानते हैं। 
८ हे पारे। हम एक दूसरे को यार करें किंतु चौक्षू इंस्वरसे है चार जा काई इंस्वर करता है। सा इंस्वरसे 
९ उत्तम हुआ है। चार इंस्वरकी जानता है। जा इंस्वर पहना करता है। इसने इंस्वरको नहीं जाना किंतु इंस्वर पहना 
१० है। इसमें इंस्वरका महारी चार प्रगट हुआ खिल इंस्वरने अपने एकली दुर्गति पुष्करी जगतमें भेजा है। जिसे 
११ हम लोग उसके द्वारसे जावें! इससे में प्रेम है यह 

११ नहीं कि हमने इंस्वरकी आर किया परन्तु यह खिल
उसने हमें प्यार किया जैसा अपने पुच्छका हमारे पाने को लिये प्रायश्चित होनेका भेज दिया। हे प्यारो! ११ यदि ईश्वरने इस रीति से हमें प्यार किया तो उचित है कि हम भी एक दूसरे का प्यार करें।

किसी ने ईश्वरका कभी नहीं देखा है। जैसा हम १२ एक दूसरे का प्यार करें तो ईश्वर हममें रहता है जैसा उसका प्रेम हममें सिटू किया हुआ है। इसलिए हम १३ जानते हैं कि हम उसमें रहते हैं जैसा वह हममें कि उसने अपने सात्मानमें हमें दिया है। जैसा हमने देखा १४ है जैसा साभी देते हैं कि पिताके पुकारे भेजा है कि जगतका चायकर्ता होवे। जो कोई मान लेता है कि १५ योशु ईश्वरका पुत्र है ईश्वर हममें रहता है जैसा वह ईश्वरमें। जैसा हमारी जैसा जो ईश्वरका प्रेम १६ है उसका हमने जान किया है जैसा उसकी प्रतीति किए है। ईश्वर प्रेम है जैसा जो प्रेममें रहता है सा ईश्वरमें रहता है जैसा ईश्वर हममें। इसीमें प्रेम १७ हममें सिटू किया गया है जिल्ले हममें विचारके दिनमें साहस होवे कि जैसा वह है हम भी इस संसारमें वैशी हैं। प्रेममें भय नहीं है परन्तु पूरा प्रेम भयका १८ बाहर निकालता है क्योंकि जहां भय तहां दंड है। जो भय करता है सा प्रेममें सिटू नहीं हुआ है। हम १९ उसका प्यार करते हैं क्योंकि पहले उसने हमें प्यार किया। यदि कोई कहे में ईश्वरका प्यार करता हूं २० जैसा अपने भाईसे बैर रखे तो फूटा है क्योंकि जो अपने भाईका जिसे देखा है प्यार नहीं करता है सा
इंश्वरको जिसे नहीं देखा है क्यांकर प्यार कर सकता है।

21 शीर उससे यह भास्क हमें मिली है कि जो इंश्वरको प्यार करता है तो अपने मांझी को भी प्यार करे।

5 पांचवां पान्यें:

1 इंश्वरको भास्क माननेसे प्रेमका प्रमाण होना।

8 विश्वासप्रेम हमको प्रतिश्चास्कको शायद।

14 प्राय्यनाको विश्वसन।

18 इंश्वरको शीर संवारको लेसीको प्रश्न।

1 जो कोई विश्वास करता है तो योग्य जो है तो थोड़ा है वह इंश्वरको उत्पन्न हुआ है शीर जो कोई उत्पन्न करते हैं वह उससे मिला प्यार करता है।

2 जो उससे उत्पन्न हुआ है। इससे हम जानते हैं कि जब हम इंश्वरको प्यार करते हैं तब इंश्वरको सन्तानोंको प्यार करते हैं। व्याख्यान इंश्वरका प्रेम यह है कि हम उसकी शायद-शायद पालन करें शीर उसकी शायदे मांझी नहीं हैं।

3 व्याख्यान जो कुछ इंश्वरसे उत्पन्न हुआ है सो संसारपर जय करता है शीर वह जय जिसने संसारपर जय पाया।

5 यह है अत्याव हमारा विश्वास। संसारपर जय करते हैं शीर बेवल वह जो विश्वास करता है तो योग्य इंश्वरका पुजा है।

6 जो जल शीर लोहे से द्वारा छाया से यह है अत्याव योग्य खोशी। वह बेवल जलसे नहीं परन्तु बलसे शीर लोहे से छाया। शीर छात्मा है जो साधी देता है।

0 व्याख्यान छात्मा सत्त्व है। व्याख्यान तीन है जो [स्वगम्य साधी देते हैं पिता शीर वचन शीर पवित्र शायदा
श्रीर ये तीनों एक हैं। श्रीर तीन हैं जो पृथिवीपर [8
साध्यी देते हैं आत्म श्रीर जल श्रीर लेहू श्रीर तीनों एकमें मिलते हैं। जो हम मनुष्योंकी साध्यीको यहण करते हैं तो इश्वरकी साध्यी उससे बड़ी है क्योंकि यह इश्वरकी साध्यी है जो उससे झपने पुचके विषयमें दिर्द है। जो इश्वरके पुचपर विश्वास करता है सो 10 झपनेहीमें साध्यी रखता है। जो इश्वरका विश्वास नहीं करता है उसका कुटा बनाया है क्योंकि उस साध्यीपर विश्वास नहीं किया है जो इश्वरने झपने पुचके विषयमें दिर्द है। श्रीर साध्यी यह है कि 11 इश्वरने हमें अनन्त जीवन दिया है श्रीर यह जीवन उसकी पुचमें है। पुच जिसका है उसका जीवन है। 12 इश्वरका पुच जिसका नहीं है उसका जीवन नहीं है। यह बातें मैंने तुम्हारे पास जो इश्वरके पुचके नामपर 13 विश्वास करते हैं इसलिये लिखी हैं कि तुम जानो जितुमको अनन्त जीवन है श्रीर जिससे तुम इश्वरके पुचके नामपर विश्वास रखो।

श्रीर जो साधस हमको उसके यहां होता है सो यह 14 है कि जो हम लोग उसकी इच्छाकी अनुसार कुछ मांगें तो वह हमारी सुनता है। श्रीर जो हम जानते हैं कि 15 जो कुछ हम मांगें वह हमारी सुनता है तो जानते हैं कि मांगी हुई बस्तु जो हमने उससे मांगी हैं हमें मिली हैं। यदि श्रीर झपनेहीभाईका ऐसा पापकर्ता देखेजो मृत्यु- । 16 जनम पाप नहीं हैं तो वह बिल्ली करेगा श्रीर जो पाप मृत्युजनक नहीं हैं ऐसा पाप करनेहींको लिये वह वसे
जीवन देगा। मृत्युजनक पाप भी होता है उसके
१० विषयमें मैं नहीं कहता हूँ कि वह मांगे। सब अधम्म पाप है छोर ऐसा पाप भी है जो मृत्युजनक नहीं है।
१८ हम जानते हैं कि जो कोई ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है तो पाप नहीं करता है परन्तु जो ईश्वरसे उत्पन्न हुआ से अपने तहे बच्चा रखता है छोर वह दुश्च उसे
१५ नहीं छूता है। हम जानते हैं कि हम ईश्वरसे हैं छोर
२० सारा संसार उस दुश्चे से बच्चा पढ़ा है। छोर हम जानते हैं कि ईश्वरका पुष्प भाया है छोर हमें बुझि दिये हैं कि हम सच्चे पहचानें छोर हम उस सच्चे से पुष्प योगु से होते हैं। यह तो सच्चा ईश्वर
२१ छोर अल्मन्त जीवन है। हे बालको अपने तहे मुरतांसे बचाओ। आमीन।
याहन प्रेमिकों दूसरी पत्री।

1 पत्रीका श्रामाय । 4 श्रामकों श्रामरूपकता और भरमानेहारे उपदेशकोंकी वादपत्ता करनेका निवेद । 12 पत्रीकी समापि ।

प्राचीन पुरुष चुनी हुई कुरियाको चौर उसबे 1 कड़ियांको जिन्हें मैं सज्जाईमें प्यार करता हूं । चौर केवल मैं नहीं परन्तु सब लोग भी जो सज्जाईको जानते हैं उस सज्जाईके कारण प्यार करते हैं जो हमारे माहर हैं चौर हमारे साथ सदालों रहेंगी ।

2 अनुयाह चौर दया चौर शांति ईश्वर पिताकी चौरसे चौर पिताकी पुरुष प्रभु यीशु ख्रिस्तीको चौरसे सज्जाई चौर प्रेमको द्वारा चाप लगाको संस हाय ।

मैंने बहुत अनन्द किया कि चापको लड़कोंमें मैंने कितने जैसे हमने पितासे चापा पाई तैसी ही सज्जाईपर चलते हुए पाया है । चौर चब है कुरिया मैं जैसा नई चापा लिखता हुआ तैसा नहीं परन्तु जो चापा हमें चारार्से मिली उसीकी चापके पास लिखता हुआ चापसे बिती करता हूं कि हम एक दूसरको प्यार करें । चौर प्यार यही है कि हम उसकी चापाश्रेणी को अनुसार चलें । यही चापा है जैसी तुमने चारार्से सुनी जिसे तुम उसपर चलें । किंतु बहुत भरमानेहारे जगतमें चापे हैं जो नहीं मान लेते हैं कि यीशु ख्रिस्ती शरीरमें चापा । यह भरमानेहारे चौर ख्रिस्तीबिरोधी है । चापने विषयमें चौकस रहिये ।

Xarized by Google
कि जो कर्म हमने किये उन्हें न खोवे परन्तु पूरा ५ फल पावें। जो कोई सप्तराघी होता है श्रीर ख्रीष्टकी शिक्षामें नहीं रहता है ईश्वर उसका नहीं है। जो ख्रीष्टकी शिक्षामें रहता है रिता श्रीर पुनः द्वारा उसीके ७० हैं। यदि कोई आप लेगेंके पास श्रावे यह शिक्षा नहीं लाता है तो उसे घरमें यहाँ न कीजिए श्रीर ७१ उससे कल्याण है न कहिये। क्योंकि जो उससे कल्याण है कहता है सा उसके बुरे कर्ममें भागी होता है।

७२ मुझे बहुत कुछ आप लेगेंके पास लिखना है। पर मुझे कागज श्री सियाहके द्वारा लिखनेकी इच्छा न थी परन्तु आशा है कि मैं आप लेगेंके पास आजं श्रीर सम्मुख होके बात कहें जिस्तें हमारा शान्ति ७३ पूरा हो। आपकी चुनी हुई बहिनकी लड़कोंका आपसे नमस्कार। आमीन।
याहन प्रेतिकी तीसरी पत्री।

प्राचीन पुरुष यारे गायसकी जिसी में सत्याईं मारा गार भरता हूँ।

हे पारे मेरी प्राप्तेना है कि जैसे आपका प्राप्त नाशन श्रीसे रहता है तैसे सब भावां में भाव कुशल श्रीसे रहे श्री मले चंगे हीं। क्योंकि भाइ लाग जो श्राये श्रीर आपकी सत्याईंकी जैसे श्राय सत्याईंपर चलते हैंसाथी दिते हो। मैंने बहुत आनन्द किया।

मुके इससे बड़ा कौई आनन्द नहीं है कि मैं सुनूँ खिस मेरे जहाँ सत्याईंपर चलते हैं। हे पारे श्राय भाइ- enclave शोकीं लिये श्रीर जातिपियोंके लिये श्री कुश झरते हैं। सा बिज्ञानीकी रोतिसे करते हैं। इन्हीं मानवींके द्वारा आपके प्रेमकी साथी दिते हो। जो श्राय इंशवरके यायम व्यवहार करके उन्हें आयं पहुँचावे तो भला करें। क्योंकि वे उसके नामपर निकले हैं श्रीर देशपूजकोंसे कुश नहीं लेते हैं। इसलिये हमें उचित है ख़ ऐसँको यह्यां करे जित्तें हम सत्याईंके लिये सहकर्मी हो जावे।

मैंने मानवींके पास लिखा परन्तु दियोसिफीजो उन- प्राचीन हानेकी इच्छा रखता है हमें यह्यां नहीं करता है। इस कारण में जो श्रायं तो उसकी कम्यांकी १०
जो वह करता है स्मरण करांजंगा कि बुरी बातें तिस हमारे बिस्टु बकता है श्रीर इनपर सन्तोष न करके वह झापही भावनाओं की यहन नहीं करता है श्रीर उन्हें जो यहन किया चाहते हैं बर्जता है श्रीर मंद-11 लामंसे निकालता है। हे पारी बुराईके नहीं परन्तु भलाईके ज्ञानागमी हूँजिये। जो भला करता है सो इंशवरसे है परन्तु जो बुरा करता है उसने इंशवरके 12 नहीं देखा है। दोमींगवके लिये सब लोगांने श्रीर सम्बाईके झापही सावधी दिइ है बरन हम भी सावधी देते हैं श्रीर झाप लग जाते हैं कि हमारी सावधी सत्य है।

13. सुभी बहुत कुछ लिखना या पर में झापने पास सियाही श्रीर कलमके द्वारा लिखने नहीं चाहता हूँ।

14 परन्तु सुभी झाशा है कि शीघ्र झापके देखूँ तब हम 15 सन्मुव होके बात करेंगे। झापके कल्याण होय। भिन्न लोगांके झापके नमस्कार। नाम ले ले भिन्नांसे नमस्कार कहिये।
गीतादाकी पत्री।

१ पत्रीका ब्राह्मण । ३ पत्रीका प्रयाजन और भट्टेदेवी के प्रार्थना देनेका भक्तिनत्वाका । ५ उनको दंडने तोम दृष्ट न हुए । ६ उनको वासुकि चालक उलझाना और नोकरी भक्तिनत्वाकी । १७ निदर्शकों के प्रार्थना देनेका भक्तिनत्वाका समर्थ कर्त्ता । २० दुख रहनेका उपदेश । २५ धन्यवाद साहित पत्रीका समाप्ति।

गीतादा जो यशोकु रीमुका दास श्रीर याकोकला भाई है बुलाये हुए लोगोंको जो ईश्वर पिताम्याम पारिज जिम्य हुए श्रीर यशोकु रीमुकी लिने रच्या जिम्य हुए हैं। तुम्हें बहुत बहुत दया श्री प्रम पहुंचे।

हे प्यारे में साधारण चार्यके विषयमें तुम्हारे पास लिखनेका सब प्रकारका यत जी करने लगा तो सुके अवधार हुए कि तुम्हारे पास लिखनेका उस विश्वासके लिये जो पवित्र लोगोंका एकता बेर सांपा गया साहस करनेका उपदेश करनं। कीकि जिन्हे मनुष्य जो पूर्वकालसे इस दंडको साध्य लिखे गये थे छिपको युत भयं हेणं जो महत्त्वी हैं श्रीर हमारे ईश्वरके अनुयोगिकी लुप्तपन-की श्रीर फर देते हैं श्रीर ऋंघर स्वामी ईश्वर श्रीर हमारे प्रभु यशोकु रीमुके मुक्त जाते हैं।

पर यदापि तुमने इसका एक बेर जाना या तैमी में तुम्हें स्मरण कर्तव्य चाहेता हूं कि प्रभुने लोगोंका निसर्ग दृश्यमें बचके फि जिन्हने विश्वास न दिया उन्हें नाश किया। उन दूर्लभोंका भी जिन्हाँने अपने प्रयास पटको न रक्षा परन्तु अपने निज निवासको बुझाई दिया उसने उस बड़े दिनको विचारके लिये संध्यकाह्य सदाको बन्धनमें रखा है। जैसे सदास श्रीर श्रीर श्रीर उनको आस-पासको नगर इन्हांनी रीतिपर व्यभिचार करके श्रीर
यिहूदा ।

पराये शरीरके पीछे जाके दृष्टान्त ठहराये गये हैं कि अनन्त आगका दंड भेगते हैं।

८ तैभी उसी रीतिसे ये लोग भी स्वप्रदर्शी हो शरीरको अशुद्ध करते हैं जोर प्रभुताको तुच्च जानते हैं जोर

६ महत पद्मको निन्दा करते हैं। परन्तु प्रधान दूत मीखायेवज जब शैतानसे मूतकेदैहके विषयमें बाद बिबाद
करता था तब उसपर निन्दासंयुक्त विचार करनेका

२० साहस न किया परन्तु कहा परमेश्वर तुकी हारी। परे लोग जिन जिन बातेंको नहीं जानते हैं उनकी
निन्दा करते हैं परन्तु जिन जिन बातेंको श्रौतन्य धर्मोंको नाई स्वभावहीसे बुद्धते हैं उनमें भ्रष्ट होते हैं।

२१ उनपर सन्ताप कि वे काठके मारे चले हैं जोर भ्रमणिको लिये बलामकी भूलमें दल गये हैं जोर कारहके

२२ बिबादमें नाश हुए हैं। तुम्हारे प्रेमके मोझा वें लोग समुद्रमें छिपे हुए पंखीत सरीके हैं कि वे तुम्हारे संग निम्नपूर्ण
जड़ते हुए जनवन तद्दीप पालते हैं वे निज़वेल मेघ हैं जो फा-URING उधर उधर उड़ते जाते हैं पतंड़के निज़वेल ढें जो

१३ दो दो बिह मरे हैं जोर उखाड़े गये हैं। समुद्रकी प्रचंड नहरे जो जनवन जाजाका पीठ निकालती हैं भ्रष्ट हुए
तारे जिनकी लिये सदा घायर अन्धकार रखा गया

२८ है। जोर हनोकने भी जो शादसे सत्वां था इन्हांका

२५ पवित्रांके बीचमें झार। कि सभी का विचार करे जोर

उनमेंके सब भक्तिके आगोंके उनके सब भक्तिके

कर्मानंके विषयमें जो उन्हें भक्तिकी होके किये हैं जोर
चन सब कठोर बातें की विषयमें जो महत्त्वपूर्ण पायीयों
उसके विद्वत्का कही हैं देशी ठहराई। ये ता कुड़कुड़ा-नहारे ९५
अपने भाग्यके दूसरों-के घास्ती बचाती हैं चाह समुक मुंग गालफटाकी की बातें
बोलता है चाह वा नामके निमित मुंग देखी बढ़ाई
किया करते हैं।

पर हे चाहा तुम चन बातें-की स्मरण करो। जो हमारे ९५
प्रभु यीशु जीवके प्रेरिताती आगे से कही हैं। कि वे तुमसे ९८
बोले कि पिठले समयमें निन्दक लोग होंगे। जो अपने
भक्तियों की हिम्लाहायोंके अनुसार चलेंगे। ये ता वे हैं ९८
जो अपने तड़े खलग करते हैं शारीरिक लोग जिन्हें
झात्मा नहीं है।

परन्तु हे चाहा तुम लोग अपने अति पवित्र २०
विद्वानसके द्वारा अपने तड़े सुधारते हुए पवित्र झात्मा-
को सहायतामें प्रार्थना करते हुए। अपनेकी इश्वरके २१
प्रेममें रखो। चाह सानन्त जीवनके लिये हमारे प्रभु
यीशु जीवके दयाकी द्रास्ता देख। चाह मेंद करते २२
हुए कितनापर ता दया करो। पर कितनांकी आगमिते २३
खोनके उस बस्तसे भी जो शरीरसे कलंकी किया गया
है विनं करके हरते हुए बचाओ।

जो तुम्हें ठोकरे बचाये हुए रक्षक िता है चाह अप- २४
की महिमाके समुख झाउँद सहित निर्देश खड़ा कर
सकता है। उसका अर्थाता भद्रकृत वुड़ुका इश्वर हमारे २५
चालक-करकी ऐश्वर्यमें चाह महिमा की पराक्रम चाह
झाप्कार सभी चाह सन्देहालैं भी हैं। झामीन।
चोहनका प्रकाशित वाक्य।

1 पहिला प्रज्ञ।

1 पुस्तकका ब्राह्मण। 4 धारियाकी वाल मंडलियंको पार चोहनकी वात परियंत्यंका ब्राह्मण। 5 प्रसु ग्रीहका चोहनको प्रथी लिखनेकी ब्राह्मण देना। 12 प्रमुणे चोहनको जा दर्शन दिया सिखा बर्भेन।

1 यीशु ग्रीहका प्रकाशित वाक्य जा ईश्वरले उसे दिया जिनका प्राप्त दासेंको वह वाते जिनका शीघ्र पूरा होना अवसर है दिखाये चोर उसने अपने दूतके हाथ भेजके।

2 उसे अपने दास चोहनको बताया। जिसने ईश्वरके बचन चोर यीशु ग्रीहकी साध्यीपर अध्यात्त जी कुछ उसने देखा।

3 उसपर साधी पढ़े। जो इस भविष्यद्वाक्यकी बातें पढ़ता है चोर जो सुनते चोर इसमेंको लिखी हुई बातेंका पालन करते हैं। तो जन्म कौनसी समय निकट है।

4 चोहन धारियाकी सात मंडलियंको। अनुयाह चोर शांति उसने जा है चोर जो या चोर जो जानेवाला है चोर सात चात्मा जोंसे जो उसके सिंहासनके चार है।

5 चोर यीशु ग्रीहकी तुम्हें मिले। विश्वासयोग साधी चोर मृत्युमंदिर पाहिलाथ। चोर पृथिवीके राजाओंका अध्यक्ष इ वही है। जिसने हमें प्यार कर अपने लोगें हमारे पायंको। तो डाला चोर हमें अपने पिता ईश्वरके यहां राजा चोर याज्ञ बनाया उसीकी महिमा चोर परास्तम।

6 सदा सम्बंदता रहे। जीमैन। देखा वह मंडियंकर लिखाता है चोर हर एक शांख उसे देखने हां जिन्हाँने उसे बेवा वे भी उसे देखनें चोर पृथिवीके सब कुल उसके लिये।
ढाटी पीरिंगे। ऐसा ही सामान। परमेश्वर ईश्वर वह जो है सी जो था सी जो आते हैं जो सबके शक्तिमान है कहता है मेंही चलफा सी चामिगा चान्द सी चान्द हूं।

भी गाहन जो तुम्हारा भाई सी चार यीशु जीरूके लेख चार राज्य सी चार धोरजमें सम्भागी हूं ईश्वरके वचनके कारण सी चार यीशु जीरुकी साक्षी के कारण पत्ते नाम रापूर में था। में प्रभुके दिन शात्मामें था सी चार आपने पीछे 90 तुरहीकासा बड़ा शब्द यह कहते सुना। कि में ही चलफा 91 सी चार चामिगा पहिला सी चार पिच्चा हूं सी चार जो तू देखता है उसे पचमें लिख सी चार चामिगामेंसी सात मनुषियमें पास में ज्ञात इफिकासी सी चार समुदायको सी चार पर्यामको सी चार युजातीरको सी चार सार्विको सी चार फिलादिलफियाको सी चार नामा दिकेयाको।

सी चार जिस शब्द से मेरे संग बात किंतु उसे देखनेको 92 में पीछे फिरा सी चार पीछे फिरके मैंने सात सातकी दीवर देखी। सी चार उन सात दीवरको बीचमे मनुष्यको पुछके 93 समान एक पुशको देखा जो पांचांतको वस्त्र पाए नी सी चार छातीकर सुनहला पुका बांध हुए था। उसके पीछे 94 सी चार बाल शेष जनके ऐसे सी चार उलके ऐसे उजले हैं। सी चार उसके नेत्र ज्ञाति की ज्ञानाको नाम न हैं। सी चार उसके 95 पांच उत्तम पीतलको समान भट्टीमें देखकारे हुए हैं। सी चार उसका शब्द बहुत जनके शब्दको नाम न हैं। सी चार 96 वह आपने दहसे हाथमें सात तारे लिये हुए है सी चार उसके मुखसे चाक्षा देखारा खुद निकलता है सी चार उस-
का मुंह ऐसा है जैसा सूर्य ऋण घरभार मर्यादामें चमकता 10 है। श्रीर जब में उसे देखा तब मृतक नाई हुई उसके पांचों पास गिर पड़ा श्रीर उसने ऋण पाना देखना हाय सुभधिर रखके सुन्दर साना मत हर मेंही पहिला श्रीर 18 पिठार श्रीर जीवता हूं। श्रीर में मूम्मा या श्रीर देख में सदा सब्जेटा जीवता हूं। ज्ञानमें श्रीर मृत्यु श्रीर 15 परलोककी कुंजियां मेरे पास हैं। इसलिये जो कुछ तूने देखा है श्रीर जो कुछ होता है श्रीर जो कुछ इसके 20 पीछे होनेवाला है सा लिख। सब्जात सात ताराका भेद जो तूने मेरे देखने हायमें देखे श्रीर वे सात सानेकी दीवरें। सात तारे सातां मंडलयोंके दूत हैं श्रीर सात दोक जो तूने देखी सातां मंडली हैं।

२ दूसरा पद्मे।

१ इदिस्समेंकी मंडलीके पास पद्मे। ५ सर्वारमेंकी मंडलीके पास पद्मे। १२ पर्वतारमेंकी मंडलीके पास पद्मे। १८ पुरातात्त्वारमेंकी मंडलीके पास पद्मे।

१ इदिस्समेंकी मंडलीके दूस्तके पास लिख। जो सातां तारे ऋण देखने हायमें घरे रहता है जो सातां सानेकी दीवरें बीचमें फिरता है सा यही कहता है। २ में तेरे कार्योंकी श्रीर तेरे परिशमका श्रीर तेरे धीरज-श्रीर जानता हूं श्रीर यह वक तू बुरे लोगांकी नहीं सह सकता है श्रीर जो लोग ऋण तूने प्रीत कहते हैं पर ३ नहीं हैं उन्हें तूने परखा श्रीर उन्हें कूटे पाया। श्रीर तूने सह लिया श्रीर धीरज रखता है श्रीर तेरे नामके ४ कारण परिशम किया है श्रीर नहीं थक गया है। परन्तु मेरे मनमें तेरी श्रीर यह है वक तूने ऋण पहिला
प्रेम छोड़ दिया है। तो बैठा कर कितना कहां है, तो तू कहां है। जैसे बात करते हैं तुम पसंद में आता हूँ। तीन दिन के बाद का वाणिज्य नहीं करते तो मैं तेरी दीवारों के अंदर उसके स्थान के हट देंगा। पर तुम्हें इतना तो है कि तू निकलो लावियांग जिसे मैं पिघलाने का करता हूँ, जिसके में मैं भी पिघलाता हूँ। इसका कान कोई सुने कि ज्यादा मंडलियांसे क्या कहता है। जो जय करे उसके में जीवन के बृहस्पति जो इंदिरराके स्वयं लोकें हैं खानेको देंगा।

श्रीर स्मृति में श्रीर जी लिखे। जो पहिले श्रीर लिखा है जो कहा था श्रीर जी गया सा यही कहता है। मैं तेरी कार्यांको के लौकिक श्रीर दूरदूरताको जानता हूँ, तैरी तू धनी है। श्रीर जो लाग अपने तेंदुली कहते हैं श्रीर नहीं हैं। पर्नु शैतानको समा हैं उनकी निन्दाको जानता हूँ। जो दु:ख तू भरोसे उससे कुछ मत हर देख शैतान तुम्हें निकलने का बन्दी गुर्जर में दालेगा। तुम्हारी परीक्षा किंवद जाय श्रीर तुम्हें दस दिनका मंदिर होगा। तू मूर्ति में बिश्वासयोग्य रह श्रीर मैं तुम्हें जीवन का समुद्र देंगा। जिसके बान हो से सुने कि ज्यादा मंडलियांसे क्या कहता है। जो जय करे दूसरी मृत्यु में उसकी कुछ हाली नहीं होगी।

श्रीर प्रागैतिहासिक मंडलिके दूरदूर लिखे। जिस पास खड़े है जो देखे तो श्रीर बेचा है सा यही कहता है। मैं तेरी कार्यांको जानता हूँ। श्रीर तू कहां बास करता है।
है अभावत जहां शैतानका सिंहासन है चौर तू मेरे नामको घर रहता है चौर मेरे विश्वाससे उन दिनीमें भी नहीं मुकर गया जिनमें चालिया मेरा विश्वासयोग्य सादी था जो तुमहींमें जहां शैतान बास करता है तहां

14 घात किया गया। परन्तु मेरे मनमें तेरी चौर कुछ घोड़ीसी बात हैं कि वहां तेरी पास जितने हैं जो बलाभ मको शिक्षाको धारण करते हैं जिनसे बलाको शिक्षा दिये कि इसायलको सत्तानींग्रे बागे ठीकरका कारण हाले जिन्ते वे मूँतके अग्री के बलिदान खार्य चौर व्यभिचार

15 चार करे। चौसे ही तेरी पास भी जितने हैं जो निकोला- वियंको शिक्षाको धारण करते हैं जिस बातसे मैं चिंता

16 कारता हूं। प्रश्नात्मक कर नहीं तो मैं शोध तेरी पास श्लोता हूं चौर अपने मुखके खुदसे उनके साथ नाडंगा।

17 जिसका कान है तो सुने कि अत्मा मंडलियांसे का बहता है। जो जय करे उसको में गुप मन्द्रामों से खानेको देनुंगा चौर उसको का ब्रह्म पत्थर देनुंगा चौर उस दर्पर एक नया नाम लिखा हुआ है जिसे बाई नहीं जानता है केवल वह जो उसे पाता है।

18 चौर हुमा कोरा मंडलीको दूतके पास लिख। ईश्वरका पुत्र जिसको नेम चायकी ज्वालाकी नाइं चौर

19 उसको पांव उत्तम पीतलके समान हैं यही कहता है। मैं

तेरे कायमांको चौर प्रेमका चौर सेवकाईंको चौर बिश्वासको चौर तेरे धोरजको जानता हूं। चौर यह फिर तेरे

20 विदेरे कायम पहिलांसे अधिक हैं। परन्तु मेरे मनमें

तेरी चौर यह है कि तू उस स्तो ईजिबनके जो अपने
तदेः भविष्यद्वात्री कहती है मेरे दत्तांको सिखाने शीर भरमाने देता है जिससे वे व्यभिचार करें शीर मूर्तिको आगे के बलि दान खार्य । शीर मैंने उसको समय दिया २१ जिस वह पश्चात्ताप करे पर वह अपने व्यभिचार्यों पश्चात्ताप करते नहीं चाहती है । देख मैं उसे खारसल दाल- २२ ता हूं शीर जो उसके संग व्यभिचार करते हैं जो वे 
अपने कम्मांसि पश्चात्ताप न करे ता बड़े ली खेम में दालांगा । शीर मैं उसके लड़कोंको मार दालांगा शीर सब मंडलि- २३ यां जाने अंि िसी हूं जो लदकों शीर हृदयोंका जाँचता हूं शीर मैं तुम्हि दे हर एको तुम्हारे कम्मांसि 
लुसार देंगा । पर मैं तुम्हि चारण युक्तातीरामि २४ शीर शीर लोगोंसि जिनि इस शईश्चाको नहीं रहतिं हैं 
शीर जिन्हांने शीतानको गंभीर बातिशका जैसा वे कहते 
हैं नहीं जाना है कहता हूं कि मैं तुमसोप शीर कुछ भार 
न दालांगा । परलुए जो तुम्हारे पास है उसे जबलों मैं न २५ शायंत तबलों थारे रहा । शीर जो जय करें शीर मेरे वह 
कार्यंको छूलों पालन करे उसका मैं अन्येकाण्यांपर 
शाधिकार देंगा । शीर जैसा मैंने अपने वितासि पाया २६ 
है तैसा वह भी लोहेका दंड सारे उनकी चर्चा 
करेगा जैसे मिट्टके व्यति चूर रूप में जातिं हैं । शीर मैं 
उसे जीवांका तारा देंगा । जिसका का िन हैं षो सुि ने २७ 
कि भार्मा मंडलियांसि का कहता हैं ।

३ तीसरा प्राप्त 
१ आर्मिको मंडलोको पाय प्राप्त 
२ फिलाविलिकावामि को मंडलोको प्राप्त 
३ जानसेवावेवामि को मंडलोको प्राप्त 
४ शलोविलिकावामि को मंडलोको प्राप्त
वर्षे १]
प्रबाहित बाणोः

१ चौर सादर्माको मंडलीको दृढ़तबी पासं लिखि्ञा जिस
पास ईश्वरबी सातां भात्तमः हैं चौर सातां तारे सा यही
कहता है। ते तेरे कायम्याको जानता हूँ कि तू जीनेखा
२ नाम रखता है चौर मृतक है। जाग उठ चौर जो
रह गया है चौर मरा चाहता है उसे चिर कर कोंसी
३ में तेरे कायम्याको ईश्वरबी बागे पूर्ण नहीं पाया है। सा
चेत कर कि तू ने चौरा गहरा जिया चौर सुना है चौर
उसे पालन करके पश्चाताप कर। सो जी तू न जागे तो
में चौरबी नाईं तुक्पर शा पहुंगा चौर तू कुछ नहीं
४ जानेगा कि में चौरसी बड़ी तुक्पर शा पहुंगा। परसु
तेरे पास सादर्मई भी पाहुँदे नाम है जिन्होंने अपना
अपना बस्त अशुदु नहीं किया चौर वे उजला पहिले
५ हुए मेरे संग फिराईं कीयांि कि वे याथ्य हैं। जो जय करे
उसे उजला बस्त पहिनाया जायगा चौर में उसका नाम
जीवनके पुस्तकमैं किसी रैसे न मिराजांग ये
उसका नाम अपने पिताके बागे चौर उसकी दूर्तबी
ई बागे मान लेजांग। जिसका कान हो तो सुनि वि
र्त्मा मंडलवैंसी कया कहता है।
६ चौर फिलान्दलादियामेकी मंडलीको दृढ़तबी पासं लिखि्ञा
जा पाविम है जो सत्य है जिस पास दाजूदकी बुझी है
जो खोलता है चौर कोई बन्द नहीं करता चौर बन्दा
करता है चौर कोई नहीं खोलता सो यही कहता है।
७ में तेरे कायम्याको जानता हूं। देख में तेरे बागे सुला
हुआ द्वारा रख दिया है जिसके ने नहीं बन्द भार रखता
है कीसी तेरा सामार्थ्य चोलासा है चौर तूने मेरे बचनके
पालन किया है जीर नेरे नामसे नहीं मुकर गया है। देख में शीतानकी समासिंसे अर्थत जो लड़ अपने ताढ़ी 5 गिहदी उठा हैं जीर नहीं हैं परन्तु कूट बोलते हैं उनमें कितनांकी सांप देता हूं। देख में उनसे ऐसा कहनगा किसे ज्ञाने तेरे पांचकने आगे प्रारम्भ करेंगे जीर ज्ञान लेने किसे मैंने तुम्हे प्यार किया है। तूने मेरे धीरजके 10 बचनकी पालन किया इसलिये मैं भी तुम्हे उस परिशांको समथसे बचा रखूंगा जो सारे संसारपर ज्ञानवाला है कि पृथिवीके निवासिये की परिस्थित करे। देख में शीघ्र 11 शाता हूं। जो तेरे पास है उसे घरे रह किसी के तेरा सुकूर न ले ले। जो जय करे उसे मैं अपने ईश्वरके 12 मन्दिरमें भजा बनाऊंगा जीर वह फिर कभी बाहर न निकलेगा। जीर में अपने ईश्वरका नाम जीर अपने ईश्वरके नगरका नाम अर्थत नई विश्वलीलमका जो भविःक मेरे ईश्वरके पाससे उत्तरती है जीर अपना मया नाम उसपर लिखूंगा। जिसका कान हो सो सुने 13 कि ज्ञातमा मंडलिये से क्या कहता है।

जीर जानी पातने मेरे मंडलीके दूसरे पास लिख। 14 जो ज्ञातम हैं जीर विश्वतपोथ जीर सम्प्रती साथी हैं जो ईश्वरकी सपश्ता शादि हैं सो यही कहता है। मैंने तेरे 15 ज्ञायाँके जानता हूं कि तू न ठंढा हैं न तप है। मैं चाहता हूं कि तू ठंडा अभ्य तप होता। सो इसलिये 16 कि तू गुप्तगुना हैं जीर न ठंडा न तप है। मैं तुम्हे अपने मुहीमें उगल हालूंगा। तू जो कहता है कि मैं धनी 10 हूं जीर धनवान हुआ हूं जीर मुखे, किसी बस्तुका
प्रयोजन नहीं है छाई नहीं जानता है कि तूही दीनहीन छाई शभागा है छाई कंगल छाई जन्य छाई नंगा है।

18 इसीलिये मैं तुम्हें परामर्श देता हूं कि भाग्यसे ताया हुम्मा सेना मुख्य सेना ले जिसी तू धनवान होय छाई उज्ज्वला वस्तु जिसी तू पहिन लेबे छाई तरी नंगींकी लक्जा न प्रगट किये जाय छाई अपनी छाईयां पर लगानेकी लिये

18 छाई ने जिसी तू देखो। मैं जिन जिन लगाएंगी क्या चाहना हूं उन्होंना छाई ताया करता हूं इस-20 लिये उद्देशी है छाई प्रवचाताप कर। देख मैं द्वारपर खड़ा हुम्मा खरखटाता हूं। यदि कीई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोले तो मैं उस पास मीतर छाऊंगा छाई उसके

21 संग बियारी छाऊंगा छाई वह मेरे संग खाया। जो जय कर उसे मैं अपने संग ज्ञान सिंहासनपर बैठने देंजांगा जैसा मैंने भी जय किया छाई अपने विचार 22 संग उसके सिंहासनपर बैठा। जिसका कान है तो सुने कि ज्ञान मंडलियांसे क्या कहता है।

8 चैत्या पद्मे।

संभवके ज्ञानका छाई सुति करनेहरे मानीने छाई आपियांका वर्णन।

1 इसके पीछे मैंने दृष्टि किये छाई देखा स्वर्गमें एक द्वार खुला हुम्मा है छाई वह पहिला शब्द जो मैंने सुना असंवै भरे संग बात करनेहरी तुरहीकासा शब्द यह कहता है कि इथर ऊपर खा छाई मैं वह वात जिनका

2 इस पीछे पूरा होना सवप्त है तुम्हे दिखाऊंगा। छाई तुरंत में ज्ञातमें हुम्मा छाई देखा एक सिंहासन स्वर्गमें
घरा ता चौर सिंहासनपर एक बैठा है। चौर जो बैठा है तो देखनेमें सूर्यभक्त माँ चौर मारिककी नाईं है। चौर सिंहासनकी चुंब चौर मेघधनुष है। जो देखनेमें भरकातकी नाईं हैं। चौर उस सिंहासनकी छहुं चौर चौबोस सिंहासन है। चौर इन सिंहासनपर मैंने चौबोस प्राचीनरां बैठे देखा जो उजला बस्त पहिने हुए चौर जाप्ने जाप्ने सिरपर सोने के मुक्त दिये हुए थे। चौर सिंहासनमें बिजलियां चौर गरीन चौर शब्द निकलते हैं। चौर सात ब्रम्मिधीपक सिंहासनके झागे जलते हैं जो इंशबरके सातों छाता है। चौर सिंहासनके झागे बांचका समुद्र है जो फुटककी नाईं हैं। चौर सिंहासनके बीचमें चौर सिंहासनके आसपास चार प्रायः हैं। जो झागे चौर पीछे नेचासे भरे हैं। चौर पहिला प्रायः सिंहों समान चौर दूसरा प्रायः बढ़की समान है। चौर तीसरे प्रायः मनुष्यकासा मुंह है। चौर चौथा प्रायः चढ़ते हुए गिटकी समान है। चौर चारों प्रार्थयमंसे एक एकको छ। छ। छंद हैं। चौर छुंब चौर चौर भीतर चौर नेचासे भरे हैं। चौर चार मात पिंद विशाल न लेके कहते हैं। पाविच पाविच पाविच परमेश्वर इंशबर सबूत शक्तिमान जो चौर जो हैं। चौर जो झालेवाला है। चौर जब जब चौ चौ प्रायः उसकी जो सिंहासनपर बैठा है जो सदा सब्बेदा जीवता है महिमा चौर आदर। चौर घन्यबाद करते हैं। तब तब चौबोसों प्राचीन सिंहासनपर बैठने- 90 हारके झागे गिर पड़ते हैं। चौर उसकी जो सदा सब्बेदा जीवता है प्रशान करते हैं। चौर जापने जापने मुक्त
११ सिंहासनके भागे झालके कहते हैं। हे परमेश्वर हमारे देवतार त महिमा श्री शातर श्री सामसर्य लेनेके याग्य है क्योंकि तुम्हे सब बस्त झांझी श्रीर तरी इच्छाके कारण वे हुईं श्रीर झांझी गईं।

५ पांचवां पर्वः।

१ सात झाप दिये हुए एक पुस्तकका वर्णन श्रीर चच्चत्रे खोलके विचार। हे खेलके वर्णन श्रीर उसका यह पुस्तक लेना श्रीर सारी लोगका उच्चकी सुरुत करता।

२ श्रीर मैंने सिंहासनपर बैठनेहरिके देखी हाथमें एक पुस्तक देखा जो भीतर श्रीर पोटपर लिखा हुआ था।

३ श्रीर सात झापेर्से उसपर झाप दिई हुई थी। श्रीर मैंने एक पराक्रमी दूतको देखा कि वहे शब्दसे प्रचार करता है यह पुस्तक खोलने श्रीर उसकी झापें ताड़नेके याग्य कीनहै। श्रीर न स्वगमें न पृथिवीपर न पृथिवीके नीचे कोई वह पुस्तक खोलने अथवा उसे देखने सकता था। श्रीर मैं बहुत रोने लगा इसलिये कि पुस्तक खोलने श्रीर पढ़ने अथवा उसे देखनेके याग्य कोई नहीं मिला। श्रीर प्राचीनांके एकने मुखते कहा मत रा देख वह सिंह जो यहूदाके कुलमें है जो दाजदका मूल है पुस्तक खोलने श्रीर उसकी सात झापें ताड़नेके लिये जयवन्त हुआ है।

५ श्रीर मैंने दूरग्रुँ किड़े श्रीर देखे सिंहासनके श्रीर झांझी प्राचीनांके बीचमें श्रीर प्राचीनांके बीचमें एक मेसा जैसा वध किया हुआ बढ़ा है जिसके सात सींग श्रीर सात नेष हैं। जो सारी पृथिवीमें मेजे हुए देवरके
सातां चात्मा हैं। श्रीर उसने श्राद्वि वह पुस्तक सिसनपर बैठेन्हरकी दहिने हास्यसे ले लिया। श्रीर 8
जब उसने पुस्तक लिया तब चारां प्राणि श्रीर चावीसं प्राचीन मेंने ने श्राने गिर पड़े श्रीर हर एकके पास
बीश थी श्रीर धूपसे भरे हुए सनिने वियाले जा
पविच लोगांकी प्रार्थनांथ हैं। श्रीर वे नया गीत गाते 5
हैं कि तू पुस्तक लेने श्रीर उसकी बारें खोलनेके
शाय्य है किंतु तू बध किया गया श्रीर तुने अपने
लेहुते हमे हर एक कुल श्रीर भाषा श्रीर लोग श्रीर
tेशमे इंशवरके लिये मोल लिया। श्रीर हमें हमारे 10
इंशवरके यहां राजा श्रीर याजक बनाया श्रीर हम
pृथिवीपर राज्य करते। श्रीर मेंने कुटि श्रीर 11
सिंहासनकी श्रीर प्राणियांकी श्रीर प्राचीनांकी बहुत
श्रीर बहुत दूरेंका भव्त सुना श्रीर वे जिल्लमें लाखों
लाख श्रीर सहस्रं सहस्र थे। श्रीर वे बड़े भव्तसे कहते 12
वे मेसा जो बध किया गया सामर्थ्य श्रीर धन श्रीर बुढ़ि श्री
शशिल श्रीर शादर श्रीर महिमा श्रीर पन्थवाद लेनेके शाय्य
है। श्रीर हर एक सजी हुई बस्तुकी जो स्वर्गमे श्रीर 13
पृथिवीपर श्रीर पृथिवीके नीचे श्रीर समुद्रपर है श्रीर
sव कुछ जो उनमे है मेंने कहते सुना कि उसका जो
सिंहासनपर बैठा है श्रीर मेंने ज्ञानवाद श्रीर शादर
श्रीर महिमा श्रीर पराक्रम सदा सब्बदा रहे। श्रीर चारां 14
प्राणी आमीन बले श्रीर चावीसं प्राचीनां गिरके
उसकी जो सदा सब्बदा जीवता है प्रणाम किया।

_________________
8 छठवां भाग।

8. क्षार, बोलनेका वृतान्त।

1. क्षार जब मैंने छापों में एक का खोला तब मैंने दूसरे बिन्दु में क्षार चारों प्रायोगिकी में एक का जेठ में गद्यनेत्रि शब्दको यह कहते सुना कि यह क्षार देख।

2. क्षार जब मैंने दूसरे बिन्दु में क्षार देखा एक प्रक्षेप बोढ़ा है क्षार जो उसपर बैठी है उस लाल दुर्गापात्र है क्षार उसे मुकुट दिया गया क्षार यह जय जय करता हुआ क्षार जय करनेका निकला।

3. क्षार जब हमें दूसरी छाप खोली तब मैंने दूसरे प्रायोगिकी यह कहते सुना कि यह क्षार देख। क्षार दूसरा बोढ़ा हो काला या निकला क्षार जो उसपर बैठी है उसको यह दिया गया कि पृथ्वीपरसे में ऊँचा। दूसरे क्षार कि ले एक दूसरे का वध करने क्षार एक बड़ा खड़ा उसको दिया गया।

4. क्षार जब हमें पूर्वी छाप खोली तब मैंने क्षार प्रायोगिकी यह कहते सुना कि यह क्षार देख खोली प्रायोगिकी बीच में एक शब्द यह कहते सुना कि सूक्ष्मका से भर गेंद क्षार सूक्ष्मका तीन से जब क्षार तेल क्षार दाख रसकी हानि न करना।

5. क्षार जब हमें बीजी छाप खोली तब मैंने बीज गया प्रायोगिका शब्द यह कहते सुना कि यह क्षार देख। क्षार मैंने दूसरे बिन्दु में क्षार देखा एक वोलासा बोढ़ा है क्षार
जो उसपर बैठा है उसका नाम मृत्यु है चौर परलोक
उसके संग ही लेता है चौर उन्हें पृथिवीको एक चौथाई-
पर आधिकार दिया गया किंवा बहुसे चौर अबालसे चौर
मरीसे चौर पृथिवीको बन प्रभु इंके द्वारसे मार डालें।

चौर जब उससे पांचवीं छाप बुलानी तब जो लाग
देशवर्को बचनके कारण चौर उस सातीको कारण जो
उनको पास थी अग फिरे गरे रे उनके पास में कैंटे
केटोंके नोके देखा। चौर चौर बड़े शब्दसे पुकारते रे किंवा है
स्वामी परिच चौर सत्य कबलों तूँ ज्ञान नहीं करता है
चौर पृथिवीको विवादित से हमारे लेखका पलना नहीं
लेता है। चौर चौर एकका उजला वस्त दिया गया चौर नव
उससे कहा गया किंवा जबलों तुम्हारी संगो दास भी चौर
tुम्हारे भाई जो तुम्हारी नाईं बध फिरे जानिपर हैं
पूरे न हैं तबलों चौर छाड़ि बेर विशाम करा।

चौर जब उससे बडोंची छाप बुलानी तब मेंं दूसरे ढप्पे नव
चौर देखे बड़ा मुख्दाल हुक्का चौर सूर्य कमलकी नाईं
कला हुक्का चौर चांद लोहकी नाईं हुक्का। चौर नव
जैसे बड़ी बहरते हिलाये जानिपर गुलारके बृहस्तसे उसके
बच्चे गुलार भट्टें हैं तौंसे जातिकेश तारे पृथिवीपर गिर
क्षों। चौर जातिकेश पश्चि नाईं जो लजेता जाता है हे
मलग हो गया चौर सब परित चौर ताप सपने सपने
स्थानि सह गये। चौर पृथिवीके राजासी चौर प्रधानां 15
चौर धनवानों चौर सहस्राधियां। चौर सामर्थ्य लेनाने चौर
hर एक दासने चौर हर एक निकलने सपने सपने को
बाह्लांसे चौर परित तांबे पत्थरांके बीचमे दिया। चौर नव
प्रवक्तित बाक्ये ।

प्रवेशोऽं श्रीर पतिरोऽंसे बाले हमपर गिरो श्रीर हमें सिधासनपर बैठेनेहरुको सन्मुखसे श्रीर मेधेको नीलसे दिखाई। कीयोंकि उसको श्रीघरका बढ़ा दिन श्री पहुँचा है श्रीर श्रीर ठहर सकता है।

१ सातवां पदे ।

१ ईश्वरको दामोंको माथेपर छाप दिये जानेका दर्शन । उ बाबा पाये कुशेको मंगलोकाका दर्शन । उनको परमाणुको दर्शन ।

१ श्रीर यह इसको पर्वती में ने चार दूरतें देखा कि पृथिवीको चारों कोनापर इर्दे हो पृथिवीको चारों बायोंको बांधे हैं जिससे बायर पृथिवीपर जमा वा समुद्रपर जमा वा जिसी ।

२ पेड्पर न बहे । श्रीर में दूसरे दूरतेको सुर्यादयको स्थानसे चढ़ते देखा जिस पास जीवित ईश्वरको छाप वा श्रीर उसने बड़े शब्दसे चन चार दूरतेंसे जिन्हें पृथिवी श्रीर समुद्रको हाँनि करनेका जाधिकार दिया गया पुबा- ३ रक्षा कहा । जबलां हम अपने ईश्वरको दामोंको माथेपर छाप न देखे तबलां पृथिवीको जमा वा समुद्रको जमा वा ।

४ पेड्पर को हाँनि मत करो । श्रीर जिनपर छाप दिर्दे गई हैं में उनको संख्या सुनी । ईश्वरीयोंको सन्तानको रसमस्त कुलमें एक लाख चर्चालो कस्पर छाप दिर्दे गई।

५ ग्यूहाके कुलमें बारह कस्पर छाप दिर्दे गई ।

६ कुलमें कुलमें बारह कस्पर । गादिने कुलमें कुलमें बारह कस्पर। बाणीको कुलमें बारह कस्पर। नाराजाके कुलमें बारह कस्पर। मनस्तको कुलमें बारह कस्पर। शिमियानके कुलमें बारह कस्पर। वैदित्वके कुलमें बारह कस्पर।
संहस्तपर । जिमुलूनके कुलमिेतुं बारह संहस्तपर । यूसफके ८ कुलमिेतुं बारह संहस्तपर । विनयामोबनके कुलमिेतुं बारह संहस्तपर छाप दिए गईं ।

इसके पीछे मैंने दूर्दयों किए शीर देखा सब देशों शीर ५ कुलों शीर। जागों शीर भाषाश्रेणीमिे बहुत लोग जिन्हे कोई नहीं गिन सकता था सिंहासनके खागे शीर मेलेके खागे खड़े हैं जो उज़ले वस्त्र पहनते हुए शीर अपने अपने हाथमिे ख्रोके पते लिये हुए हैं । शीर वे बड़े १० शब्दमिे पुकारके कहते हैं जागे कि जिते हमारे ईश्वरके शीर सिंहासनपर बैठा है शीर मेलेकी जय जय हाय ।

शीर सब दूर्दयों सिंहासनके शीर प्राचीननामके शीर ११ खारों प्राणियांकी बच्चे शीर खड़े हुए शीर सिंहासनके शारों लाने लाये लाये मुंहके बल गिने शीर ईश्वरके प्रमाण क्षिया । शीर बोले शामीन । हमारे ईश्वरका धन्यवाद १२ शीर महिमा शीर बुद्धि शीर प्रशंसा शीर बादर शीर सामर्थ शीर ब्राह्मण सदा सम्बंधा रहे । शामीन ।

इसपर प्राचीननामके एकके मुक्तते कहा ये जो उज़ले १३ प्रस्तुत पहनते हुए हैं बोले हैं शीर कहांसे खाये । मैंने उस १४ से कहा है प्रभु भापहो जानतें हैं । वह मुक्तमिे बोला ये वे हैं जो बड़े क्षेत्रमिे खाते हैं शीर अपने अपने वस्त्रके मेलेके लाहंडे पाने उज़ला किया । इस कारण वे ईश्वरके १५ सिंहासनके शारों हैं शीर उसके मन्दिरमिे रात शीर दिन उसकी सेवा करते हैं शीर सिंहासनपर बैठने हरा उनके ऊपर हरा देगा । वे फिर भूखे न होंगे शीर न फिर १६ मस्ते होंगे शीर न उनके धूप न कोई तपन पड़ेगी।
१० कोंबड़ी में सा। सिंहासनके बीचमें है उनकी चरबाही करेगा श्रीर उन्हें जलके जीवते सतातां पर जिखा ले जायगा श्रीर ईश्वर उनको आंखेंसे सब आंसू पूंछ दालेगा।

१ श्रीरवां पल्ले।

१ कातवीं कपिका बोला जाना श्रीर नाट दूसरोंके नाट तुरहीका दिया जाना श्रीर एक दूसरा ईश्वरके कामपुर पूप देना। २ श्रीर दूसरोंके तुरहीसे बजालका बर्तन।

१ श्रीर जब उसने सातवीं छाप बोली तब स्वर्गमें भाव।

२ श्रीर जब उसने सातवीं छाप बोली तब स्वर्गमें भाव।

१ श्रीर जब उसने सातवीं छाप बोली तब स्वर्गमें भाव।

२ श्रीर जब उसने सातवीं छाप बोली तब स्वर्गमें भाव।

३ श्रीर जब उसने सातवीं छाप बोली तब स्वर्गमें भाव।

४ श्रीर जब उसने सातवीं छाप बोली तब स्वर्गमें भाव।

५ श्रीर जब उसने सातवीं छाप बोली तब स्वर्गमें भाव।

६ श्रीर जब उसने सातवीं छाप बोली तब स्वर्गमें भाव।
श्रीर दूसरे दूतने तुरही फूंकी श्रीर खागसे घजता ८
हुशा एक बड़ा पहाड़िया कुछ समुद्रतः डाला गया श्रीर समुद्रकी एक तिहाई लोहू हो गई । श्रीर समुद्रतःकी ६
सजी हुई बस्तुश्रींकी एक तिहाई जिन्हें जीव था मर गई
श्रीर जहाँजांकी एक तिहाई नाम हुई ।

श्रीर तीसरे दूतने तुरही फूंकी श्रीर एक बड़ा तारा ४०
जो मशालकी नाइ जलता था स्वयंसे गिरा श्रीर नदि-
योंकी एक तिहाईपर श्रीर जलकी सतेाँपर पड़ा। श्रीर ४१
उस तारे का नाम नगदौना कहावता है श्रीर एक ति-
हाई जल नगदौनासा हो गया श्रीर बहुतेरी मनुष्य उस
जलकी कारण मर गये क्योंकि वह कढ़वा किया गया ।

श्रीर चौथे दूतने तुरही फूंकी श्रीर सूर्यको एक ४२
तिहाई श्रीर चांदकी एक तिहाई श्रीर तारांकी एक
तिहाई मारी गई कि उनकी एक तिहाई चांधियारी
हो। जाय श्रीर दिनकी एक तिहाईलों दिन प्रकाश न
होए श्रीर वैसी ही रात ।

श्रीर मैने दूर्गु बिड़े श्रीर एक दूतकी सुनी जो ४३
खाड़के बीचमसे बड़ता हुशा बड़े शब्द्से कहता था
कि जो तीन दूत फूंकनेपर हैं उनकी तुरहीके शब्देंकी
कारण जो रह गये हैं पृथिवीकी निवासियांपर सत्ताप
सन्ताप सन्ताप होगा ।

७ नवां पदवे ।

१ पांचवे दूतकी तुरहीके थबनका बर्बन । १३ बठवे दूतकी तुरहीके थबनका
बर्बन ।

श्रीर पांचवे दूतने तुरही फूंकी श्रीर मैने एक तारे- १
बद देखा जो स्वर्गमें सृष्टि निर्माण गई या श्रीर
2 भवाह बुझके कुपक कुंजी उसकि दिखी गई। श्रीर
उसने भावाह बुझके कुप खाला श्रीर कुपमें बड़ी मनोजी धुंधकी नाई धुंधका उठा श्रीर सूर्य श्रीर शाकाब
3 कुपके धुंधके अंधियार हुए। श्रीर उस धुंधकेरी टिक्के पृथिवीपर निकल गई। श्रीर जैसा पृथिवीके बिच्छुवानंका
अधिकार होता है तैसा उसके अधिकार दिया गया।
4 श्रीर उसने कहा गया कि न पृथिवीकी घासको न किसी हरियाणीकी न किसी पेड़की हानि करो परलू केवल उन मनुष्यानंकी जिनके माफ़ेपर दृश्यको ढाप नहीं है।
5 श्रीर उन्हें यह दिया गया कि वे उन्हें मार न हाले परलू पांच मास उन्हें पोड़ा दीं जाय श्रीर विश्व
वन मनुष्यको मारता है तब उसकी पोड़ा जैसी होती
है तैसीही उनकी पोड़ा थी। श्रीर उन दिनांबी वे मनुष्य मृत्युको ढूंढऩे श्रीर उसे न पायेंगे श्रीर मरनेकी
6 बिमलाशा बर्जने श्रीर मृत्यु उनसे भागेगी। श्रीर उन
टिक्केयांके शाकाब गुड़के लिये तैयार किये हुए बड़ीमो
समान चे श्रीर उनके सिरांपर जैसे मुक्त चे जा
सानीकी नाईं चे श्रीर उनके मुंह मनुष्यानंक कुछे ऐसे
8 चे। श्रीर उन्हें स्थिमें बालकी नाई बसा या श्रीर
8 उनके दांत सिंहांकवं चे। श्रीर उन्हें लाहिकी फिलम-
कि नाईं फिलम थी श्रीर उनके पंखांका शब्द बहुत बड़ीमंगे रूपांके शब्दके ऐसा या जा गुड़के दौडऩे हां।
90 श्रीर उन्हें पंछी थीं। श्रीर विच्छुवानंकी समान थीं। श्रीर
उनकी पूंडऩे में इंप चे श्रीर पांच मास मनुष्यानंका दुःख।
देनेका उन्हें अधिकार था। शीर्ष उन्हें एक राजा ११
है। अश्वत्त अयाह कुंडका दूत जिसका नाम इतिहास
मानवी अवधारन है। शीर्ष यूनानियाँमें उसका नाम
अपने रोशन नै। पहला सन्ताप बिंत गया है। देखा १२
इस पीछे दो सन्ताप शीर्ष जाते हैं।
ि संहतव दूतने तुरही पूंबिये ती ती ते संहतकी बैदी १३
है। इतिहासका शास्त्र है। उसके चारों सींगांमें मैंने एक शब्द
सुना। जो चारवें दूसरे जिस पास तुरही थी बोला उन १४
ती दूतका जो बड़ी नदी पुरातपर बन्ध थे। बिन्दे दे।
ि संहत दूत बोल दिये गये जो उस पढ़िये शीर्ष १५
दिन संहत दूत मास मैं अपनी बसके लिये तैयार लिये गये ये
कि वे मनुष्यांकी एक तिहाई को मारा था। शीर्ष युद्ध- १६
हौंसकी तपातांकी संस्का बीस करोड़ थी। शीर्ष मैंने उनकी
संस्का सुनी। शीर्ष मैंने दर्शनमें उस घड़ीकी थुं। देखा १०
ि संहत जो उनपर चढ़े हुए थे कि उन्हें अगाड़ी।
ि संहत धूम्रकान्तिकी शीर्ष गन्धकवीकी फिल्म है। शीर्ष
घड़ीकी सेंग लिये नई। शीर्ष उनके मुखमें-
से आग शीर्ष घूंसा शीर्ष गन्धक निकलते हैं। इन ती- १८
नेसनी अभियान अगाड़ी। शीर्ष घूंसे शीर्ष गन्धकसे जो उनके
मुखमें निकलते हैं। मनुष्यांकी एक तिहाई मारा था। शीर्ष
कोंकि घड़ीका सामथ उनके मुखमें शीर्ष उनकी १८
घूंसे है। कोंकि उनकी पूंछ सांपका समान है कि उनके
सर होते हैं। शीर्ष इनसे वे दुःख देते हैं। शीर्ष जो मनुष्य २०
रह गये जो इन चिपक्तांमें नहीं मारा था। शीर्ष नेहंने
अपने हाथांको काय्यांसे पश्चाताप भी नहीं निया जिसके
१० दसवां पारे।

१. यह एक पराक्रमी हुआ श्रीर ढोटी पेयी श्रीर भाट वेदागर्जनकर वर्धन।

२. श्रीर जीने ढूसरे पराक्रमी दूतका स्वर्गसे उतरते देखा जो भेष्यका ढोटे या श्रीर उसके सिरपर मेघधनुष था।

३. श्रीर उसका मुंह सूर्यकी नाइं। श्रीर उसके पांव झागके।

४. बेवेभांि ऐसे थे। श्रीर वह एक ढोटी पायी खुली हुई ढपने हाथमें लगी था श्रीर उसने ढपना देहिना पांव दरमय।

५. समुद्रपर श्रीर वायां पृथ्वीपर रथ। श्रीर जीता सिंह गजेता है तैसा बड़े शब्दसे पुकारा श्रीर जब उसने पुकारा तब सात मेघगर्जनें ढपने ढपने शब्द उद्वारख।

६. जिये। श्रीर जब उन सात गर्जनें ढपने ढपने शब्द उद्वारख जिये। तब में लखनपेर या श्रीर में स्वर्गसे एक शब्द सुना जी सुकसे बोला जी बारे उन सात गर्जें।

७. नें बहुं उन पर ढाप दे श्रीर उनहें मत लिख। श्रीर उस दूरने जिसे में समुद्रपर श्रीर पृथ्वीपर खड़े देखा।

८. ढपनाहा स्वर्गकी श्रीर चढाया। श्रीर जी सदा सब्जेटा झोपता है जिनसे स्वगी श्रीर जो कुछ उसमें है श्रीर पृथ्वी श्रीर जो कुछ उसमें है श्रीर शब्द श्रीर जो कुछ उसमें है लज्जा उसीकी विरिया खाईं। जि शब्द ता विलम्ब।
न होगा । परन्तु सातवें दूसरके शब्दके दिनोंमे जब वह
tुरही पूँचकेपर हौय तब इश्वरका मेद पूरा हो जायगा
जैसा उसने झपने द्दसांका प्रतिव भविष्यद्वारकार्यांको
इसका सुनमाचार सुनाया ।

शीर जा शब्द मैंने स्वगेसे सुना था वह फिर मेरे संग
बात करने लगा शीर बेला जा वो दूत समुदाय पर शीर 
पृष्ठिवपर बड़ा है उसके हायकींकी खुली हुई बड़ी प्रायी 
ले ले । शीर मैंने दुसरे पास जाके उससे कहा वह बड़ी 
प्रायी मुखीं दृष्टियें । शीर उसने मुकसे कहा उसे लेके 
का जा शीर बह तेरे पेरके कड़वा करेगी परन्तु तेरे 
मूंहमें मधुसी मोठी लगेगी । शीर मैंने बड़ी पोशी ।

दुसरे हायसे ले जिंदे शीर उसे खा गया शीर बह मेरे 
मूंहमें मधुसी मोठी लगी शीर जब मैंने उसे खाया या 
तब मेरा पेट कड़वा हुआ । शीर वह मुकसे बेला तुम्हे 
फिर लोगं शीर देशों शीर भाषाकों शीर बहुत 
राजासंबंधी विषयमें भविष्यद्वाक्य कहना होगा ।

११ ग्रहारहवां पद्भे ।

१ मन्दिरके नामनका दर्शन शीर वो खासियोंकी प्रसात बहाने शीर मारे वाने शीर 
शो वड़ीको भविष्यद्वाक्यी । १५ मान्यता दूसरके 
शराबके शब्दका धर्मन ।

शीर लगोखीं समानके नरकट मुखिदिया गया शीर ।

जाहा गया कि उठ इश्वरके मन्दिरको शीर बेदीको शीर 
उसमेंके भजन करनेहारिको नाय । शीर मन्दिरके 
बाहरके झांगको बाहर रख शीर वसे मत नाप 
क्योंकि वह प्रतिमेंके दिया गया है शीर वे बयाका-
शीलस मासलों प्रविष्ट नगरको रोंदे । शीर मैंने झपने दे ।
शायद यह देखेंगा कि रात पहले हुए एक सहर
8 दो सौ सात दिन भविष्यवादका बाहा करें। येही वे दो अजाधि के वृद्ध चार दो दिवस हैं जो पृथ्वीके प्रमुख तन्मस बढ़े रहते हैं। चार यदि की उन्हें दुःख दिया चाहें तो बाग उनके मुख्य सिद्धांत है चार उन्हें गंभीर मध्य स्थल करते हैं। चार यदि की उन्हें दुःख दिया चाहें तो स्वस्थ है कि वह इस रीतिसे मार डाला।
6 जाय। इन्हें अधिकार हैं कि ज्ञानकोशका बन्द करें जिसतने उनकी भविष्यवादकी दिनों में मंग न बसते चार उन्हें सब जलगर्दे अधिकार हैं। उसे लेहू बनाते चार जब जब चाहें तब तब पृथ्वीको हर प्रकाशकी विपत्तिसे मारें। चार जब वे अपनी साधी दे चुके तब तब वह पशु जो अघात कूटमें उठता है। उनसे युद्ध करेंगे चार
8 उन्हें जीतेगा चार उन्हें मार डालेगा। चार उनकी लोगों उस बड़े नगरकी सहकार पड़ी रहेंगी जो आत्मिक रीतिसे सदास्य चार मिसर कहावत है जहां उनका प्रमुं भी भविष्यपर चढ़ाया गया। चार सब लोगों चार खुलले चार मामलों चार निष्ठामें लाग उनकी लोगों साधी तीन दिनलों देखने चार उनकी लोगों कबरों के रखी जाने न देंगे। चार पृथ्वीके निवासी उनपर गानन्द करेंगे चार मगन होंगे चार एक दूसरे के पास भंड भंड जोंगे क्योंकि इन दो भविष्यवादका-
9 और पृथ्वीके निवासियांको पीड़ा दिये थी। चार सादें तीन दिनके पीछे ईश्वरको चार से जीवनके ात्माने उनके प्रवेश किया। चार, वे अपने पांचेंगप
बढ़े हुए श्रीर उनके देखनेहरूरूप बड़ा हर लगा। श्रीर उनहाँने स्वर्गसे बड़ा जब्त सुना जो उनसे बेरा जि इसर अधर जाथा श्रीर वे मेघमें स्वर्गपर चढ़ गये श्रीर उनके श्रुण्यांने उन्हें देखा। श्रीर उसी पड़ी जि बड़ा मुहूड़ाल हुस्वा श्रीर नगरका दस्वां अंग गिर पड़ा श्रीर वस मुहूड़ालमैं सात सहस्र मनुष्य मारे गये श्रीर जो रह गये सो भयमान हुए श्रीर स्वर्गसे उदारपरका गुखानुबाद किया। दूसरा तत्ताप बीत गया 94 है देखा तीसरा तत्ताप श्रीप्र आता है।

श्रीर सातवं दूसरे तुर्ही पूंखी श्रीर स्वर्गसे बढ़े बढ़े 95 जब्त हुए जि जगतका राज्य हमारे प्रभुका श्रीर उसके सामान्य अनका हुस्वा है श्रीर वह सदा सबैदा राज्य बारे। श्रीर चैत्यसिंह प्राचीन जो उदारपरका सत्तुमा ज्ञपने 96 ज्ञपने सिंहासनपर बैठते हैं ज्ञपने ज्ञपने मुहूदी नल गिरे श्रीर उदारपरका प्रयाम करके बोले। हे परमेश्वर इशरबर 97 सत्तुमा ज्ञतमान जो है श्रीर जो प्रभु श्रीर जो आत्मवाला है हृत तेरा पन्ना मानते हैं जि तुते ज्ञपना बढ़ा सामथर्य लेके राज्य किया है। श्रीर ज्ञन्येंशी लोग कुदु हुए श्रीर तेरा 98 ज्ञान सा पड़ा श्रीर मृत्युकंका समय पहुँचा जि उनका विचार किया जाय श्रीर कि तू ज्ञपने दासां सुधा भविष्युद्धांश्च्यां श्रीर परिच लोगांका श्रीर श्रीदृष्टां श्रीर बड़ांका जो तेरे नामसे हरते हैं प्रतिफल देबे श्रीर पृथ्वीये नाम बारेहरूरूप नाम करे । श्रीर स्वर्गसे 99 उदारपरका मन्दिर श्रीला गया श्रीर उसके नियमका सन्देक उसके मन्दिरमें दिखाई दिया श्रीर निगमां बाबु
श्रीर शब्द श्रीर गरजेश श्रीर भुईन्दन हुए श्रीर बड़े श्रीले फड़े।

१२ बारहवां पद्मे।

१ एक स्त्री श्रीर तथों बेटे श्रीर एक बड़ी प्रजारका दर्शन। १० प्रजारका स्वामी
निकाला बाणा। १५ प्रजारका स्त्रीको बताना।

२ श्रीर एक बड़ा आश्रमम् स्वर्गमें दिखाइ दिया
शरायात एक स्त्री जो सूर्य पहिने है श्रीर चांद उसको
पांचों तले है श्रीर उसको सिरपर बारह तारेमा मुकुट
है। श्रीर वह गर्वती होके चिलीताही है केंद्रिका
प्रसब्भि पीढ़ उसे लगी है श्रीर वह जनलेखा पीड़ित
है। श्रीर दूसरा आश्रमम् स्वर्गमें दिखाइ दिया श्रीर
देखा एक बड़ा जाल सजगर है जिसको सात सिर
श्रीर दस सोंग है श्रीर उसको सिरपर सात राजमुकुट
हैं। श्रीर उसको पूंछने आकाशको तारेमा एक तिगा
हाईको झाँकके उन्हें पृथिवीपर हाला श्रीर वह सजगर
वह स्त्रीको सामने जो जना चाहती थी बड़ा हुआ
इसलिये वि जब वह जने तब उसको बालकको खा
जाय। श्रीर वह एक बेटा जनी जो लोहितका ढंड लेके
सब देशोंको लोगंको चरवाही करेकर है श्रीर उसका
बालक इंश्वरके पास श्रीर उसको लेखसनके पास
क्षे उठा लिया गया। श्रीर वह खूब जंगलको भाग गई।
जहाँ उसका एक स्थान है जो इंश्वरसे तैयार लिया
गया है जिससे वे उसे बहांएक सहस्रं दे सी। साठ
दिनमा पालें।

३ श्रीर स्वर्गमें युद्ध हुस्ना मीरायेल श्रीर उसको दूल
झगड़गर से लड़े शैर झगड़ शैर उसके दूत लड़े। शैर प्रबल न हुए शैर स्वर्गमें उन्हें जगह शैर न मिली। शैर वह बड़ा झगड़ गिराया गया हां वह प्राचीन संप जी दियावल शैर शेतान कहावता है जो सारे संसारका भरमानेहरा है पृथिविपर गिराया गया शैर उसके दूत उसके संग गिराये गये। शैर में एक बड़ा शबद सुना जो स्वर्गमें बोला भभी हमारे इंश्वरका बाज शैर प्राकृत की राज्य शैर उसके सामगिक जनका साधिकार हुआ है कोंकि हमारे माइयां दोपदायक जो रात दिन हमारे इंश्वरके झागे उनपर द्रष्ट लगता था गिराया गया है। शैर उन्हें मेझेके लाहूके कारण शैर अपनी साधिके बचनके कारण उसपर जय जिया शैर उन्हें मुत्युलों अपने प्राणेंको प्रिय न जाना। इस कारणसे हे स्वर्ग शैर उसमें बास करनेहरा झान्द करे। तय पृथिवी शैर समुद्रके निवासियों करंकि शेतान तुम पास उतरा है शैर यह जानके कि मेरा समय बड़ा है बड़ा झाड़ जिये है।

शैर जब झगड़गर देखा कि मे पृथिविपर गिराया गया हूं तब उसने उस स्त्रीको जिज़्जा वह पुरष जनी घी सताया। शैर बड़े गिरुके दो पंख स्त्रीको दिये गये 94 इसलिये कि वह झंगलको अपने स्थानको उठ जाय जहां वह एक समय शैर दो समय शैर साधे समयलों सांपकी दूर्गे छिपी हुई पानी जाती है। शैर सांपने उपने मुंहमें स्त्रीके पीछे नदीको नादे जल बहाया कि ।
१५ उसे नदीमें बहा देवे। शीर ग्रेहिके ने स्त्रीकर उपकार किया शीर ग्रेहिके अपना मुंह बोलके उस नदीमें
१६ जा जलगरने अपने सुंदरमें बहाई थी पी लिया। शीर जलगर स्त्रीकर जल जलाई शीर उसके बंधक में गोल रह
गये जा। ईश्वरकी निदानका पालन करते शीर यीथु अपनी ताजी रखते हैं उनसे युद्ध करनेका चला गया।
१५ तरहवां पने।
१ वस धीमाजसे निन्द गुणका दर्शन। ११ वस धीमाजसे भरमानसे पशुका दर्शन।
१ शीर में समुद्रके बालूपर बढा हुआ शीर एक पशुका समुद्रमें उठते देखा जिसके सात सिर शीर दस सींग में शीर उसके सींगपर दस राजस्थान शीर
२ उसके सिरेंपर ईश्वरकी निन्दाका नाम। शीर जो पशु में ने देखा सेह चीतके नाई था शीर उसके पांव
भालूकेसे थे शीर उसका मुंह सिंहके मुंहके ऐसा था शीर जलगरने अपना सामर्थ्य शीर अपना सिंहसन शीर
३ बढा जाधिकार उसका दिया। शीर में ने उसके सिरेंपर एकका देखा माना ऐसा प्रायल्ल किया गया है कि
मरनेपर है फिर उसका प्राणहारक घाव चंगा किया
गया शीर सारी पृथिबीके ले उस पशुके पीड़ी अचंभा
४ करते गये। शीर उन्हाँने जलगरकी पूजा किया जिसने
पशुका जाधिकार दिया। शीर पशुकी पूजा किया शीर
हा यह पशुके समान बीतन है। केन उससे लड़ सकता
५ है। शीर उसका बड़ी बड़ी बातें शीर निदानकी बातें
ब्रह्मनेहारा मुंह दिया गया। शीर बयालीस मासलें
युद्ध करने का आधिकार उसे दिया गया। हैर उसने इस बयान के बिना निंदा करने का दिया सुनीं बोला कि उसके नाम से हैर उसके तम्भु खूब हैर स्वर्ग में बास करने होंगे निंदा करे। हैर उसके यह दिया गया कि पावित्र लोगों गृहु करे हैर उनपर जय करे हैर हर एक बुल हैर भाषा हैर देख पूरा उसका आधिकार दिया गया। हैर पृथिवी सब निवासी लोग जिनके नाम जगत की उपत्ति से बप किये हुए में जे जी वनके पुस्तक में नहीं लिखे गये हैं उसकी पुजा करेंगे। यदि विकसीया कान हैं ता सुनें। यदि कोई बन्धु भी है ता वही बन्धु भारी जाता है यदि कोई बन्धु भारी मार दालीं ता भावना है कि वहीं बन्धु भारी हाला भावा। यहीं पावित्र लोगों का धीरज हैर बिनवास है। हैर भी हैं दूसरे पशुके पृथिवी में से देखा हैर हैर उसमें में नाईं दो सींग पे हैर वह भाजगरकी नाईं बोली था। हैर वह उस पाली से घुमके सन्मुख उसका सारा आधिकार रखता है हैर पृथिवी से हैर उसके निवासियों से उस पाली पशुके जिसका प्राय सहारक पाव चंगा किया गया पूजा करवाता है। हैर वह वड़े वड़े खा- 13 प्रचार करता हैं यहाँलां कि मनुष्यों के सम्ह निवास- में से पृथिवी पर भाग भी उतारता है। हैर उन खाश कच्चे 14 कम्बन्द का कारण जिन्हें पशुके सन्मुख करनेका आधिकार उसे दिया गया वह पृथिवी के निवासियों का भरमाता है हैर पृथिवी के निवासियों से कहता है कि जिस पशुके उस दुका पाव लगा हैर वह जी गया उसके लिये मृत्यु
94 चौथवां पन्ने ।

1 वियन वार्तपय में कहा था, चौथे मास के लोगों को रहने । हे सीम दूसरे सीम वालों के स्वरूप एक मास का वर्णन । चौथे पृथ्वीय के बनाम को कटने चौथे पुरुषों की वास लेने लार बना ।

95 चौथे में दोपहिर चौथे देखते रहते हैं। में सियास पलबात-पर खड़ा है। चौथे उसकी संग एक लाख चराकोश तहस्स जन पिन के भाषाकर उसका नाम चौथे उसके पितालक ।

2 नाम लिखा है। चौथे में स्वागते एक शब्द सुना जो बहुत जन के शब्द के ऐसा। चौथे बड़े घरेलू के शब्द के ऐसा। इसका वह शब्द जो में सुना बीत बजाने होता है। चौथे ने मिठाई-शरीर के चारों प्रारंभों के चौथे प्रारंभिकों के चारों ईड़ा एक नया गीत गाते हैं। चौथे बहुत गीत कोई मात्र नहीं शीघ्र संभव था। केवल वे एक लाख चराकोश व्रहमा
श्री जै पृथिविसे माल लिये गये थे। ये वे हैं जा स्त्रीयों-के संग अशुद्ध न हुए क्योंकि वे कुमार हैं। ये वे हैं जिज्ञास न करी बहुत लागत है वे उसके पीछे हो लगे हैं। वे ता ईश्वरके श्रार में लिये एक पाहिला फल मनुष्यांसे माल लिये गये। श्रार उनके मुंहमें कुठ नहीं धारा गया क्योंकि वे ईश्वरके सिंहसनके बाणे निद्राश हैं।

श्रार भैने दूसरे दूतकी शाकाशके बीचमें उठे देखा जिस पास सनातन सुसमाचार था वह पृथिवी-निवासियोंका श्रार हर एक देश श्रार कुल श्रार भाग्य श्रार लोगों सुसमाचार मुनावे। श्रार वह बड़े शब्दसे बालता था कि ईश्वरले दरा श्रार उसका गुणानुवाद करो क्योंकि उसके विचार करनेका समय पहुँचा है श्रार जिसने स्वर्गे श्रार पृथिवी श्रार समुद्र श्रार जलके साते बनाये उसका प्रशांत करो।

श्रार दूसरा दूत यह कहता हुआ गोस्वी हो लिया कि गिर गई बाबुल वह बड़े नगरी गिर गई है क्योंकि उसने सब देशींके लोगोंका अपने व्यभिचारके कारण श्रार श्रार होता है तिसकी मदिरा पिलाई है।

श्रार तीसरा दूत बड़े शब्दसे यह कहता हुआ उनके पीछे हो लिया कि यदि कोई उस पशुकी श्रार उसकी मूर्तिकी पूजा करे श्रार अपने मायेपर अथवा अपने शायद्या बापा लेवे। ता वह भी ईश्वरके जापकी मदिरा 90 जो उसके श्रारके काटोंसे निराले दाली गई है पीयोगा श्रार पवित्र दूतभरे सामने श्रार में उसके सामने जाग श्रार गन्धकमें पोहित किया जायगा। श्रार उनकी 11
बीडाका पृथ्वी सदा सबूता चढ़ता है चैर न दिन न रात
विश्वास उनका है जो पशुकी चैर उसकी मूर्तिकी पूजा
करते हैं चैर जी जो अपने नामका छापा लेता हैं।

92 यहीं पवित्र लोगांका धीरज है जो ईश्वरकी आज्ञा-
लोगा चैर यीहुकी विश्वासका पातन करते हैं।

93 चैर में अपने स्वगंगे एक शब्द सुना जो मुक्तसे बोला यह
लिख कि जबसे जो प्रभुमें मरते हैं सा मृत्यु धन्य हैं।
ज्ञात्मा कहता है हां कि वे अपने परिष्कार्ये विश्वास
करते परन्तु उनके काम्य उनके संग हैं लेते हैं।

94 चैर में खुद किई चैर देखा एक उजाला मेघ है
चैर उस मेडपर मनुष्यके पुकके समान एक बेटा हैं
जो अपने सिरपर लाणका मुकुट चैर अपने हाथमें
95 बोला हंसुका लिये हुए हैं। चैर दूसरा दूह मंदिरमें निकला चैर बड़े शब्दसे पुकारके उससे जो मेडपर
बेटा या बोला अपना हंसुका लगाके लवनी कर
के ते ते लिये लवनका समय पहुंचा है इसलिये
96 चैर कि पृष्ठवीकी बेटी पक चुकी हैं। चैर जो मेडपर
बेटा या उस्ने पृष्ठवीपर अपना हंसुका लगाया
कि पृष्ठवीकी लवनी किई गई।

97 चैर दूसरा दूह स्वगंगे मंदिरमें निकला चैर
98 उस पास भी बोला हंसुका या। चैर दूसरा दूह जिसे
शाहम प्राधिकार पर बद्धमें निकला चैर जिस पास
बोला हंसुका या उस्ने बहुत पुकारकर बोला अपना
चैर हंसुका लगा चैर पृष्ठवीकी दाख लताके गुल्मे
99 चैर ले कि तान्त उसके दाख पक गये हैं। चैर दूहमें
पृथ्वीपर अपना हंसुशा लगाया श्रीर पृथिवीकी दाख लताका फल कार लिया श्रीर उसे देशवरके साथके बड़े रसके कुंडमें डाला। श्रीर रसके कुंडके रूढ़ित नगरके 20 बाहर किया गया श्रीर रसके कुंडमें प्रेयड़ीकी लगाम-	
tक्क लेहू एक से बाशरक वह निकला।

१५ पन्द्रहवां पंक्ति।

शाने पिकली बिचतें लिये हुए शात दूसरका दर्शन श्रीर ब्यावना पायत्रू कोलांका 

गीत।

श्रीर में स्वरंगमें उम्मरा एक चिंत हटा। श्रीर सहुत 1 

dेखा क्षयात सात दूत जिनके पास सात बिचते ह्यों जी 

पिकली थीं क्यूंकि उनमें देशवरका कीय पूरा किया गया।

श्रीर में जैसा एक खासी मिले हुए कांचके समुद्रकै 2 

श्रीर पशुपर श्रीर उसकी मृत्यु पर श्रीर उसके दामिन के 

श्रीर उसके नामकी संख्यापर जय करनेहरूका उस 

कांचके समुद्रकै निकट देशवरकी बींचें लियहुए खड़े देखा।

श्रीर वे देशवरके दास मृत्युका गीत श्रीर में रिया गीत 

गाते हैं कि हे सहाैै शिवमान देशवर परमेश्वर तेरी आधु 

बड़े श्रीर सहुत हैं। हे पायत्र लोगके राजा तेरे माँगे 

म्याय किये हैं। हे परमेश्वर श्रीर तुमसे नहीं डिग्रा 3 

श्रीर तेरी नामकी स्तुति नहीं करेगा। क्यूंकि केवल तूही 

पायत्र है श्रीर सव देशको लोग जीके तेरे आगे प्रसाध 

करेगे क्यूंकि तेरे बिचार प्रगट किये गये हैं।

श्रीर इसकी पीछे में दृश्य किये श्रीर देखा स्वरंगमें 4 

साधनीके तमूका मान्दर खाला गया। श्रीर सातं दूत 5 

जिन पास सातं बिचते ह्यों शुद्ध श्रीर चमकता हुआ।
अद्भुत यह है कि श्रीर ऋषि आतीपर सुनहले पटुक बंधे हुए।
1. मन्दिरमें सिकले। श्रीर चारों प्राणियोंमें संके उन सात दूतांका ईश्वरके जो सदा स्वस्था जीवता हैंकापने
2. भरे हुए सात सानीके पियाले दिये। श्रीर ईश्वरकी महिमामें श्रीर उसके सामर्थ्यसे मन्दिर धुंदीसे भर गया।
श्रीर जबलाे उन सात दूतांकी सातां विपर्य समाप
न हुईं तबलों कोई मन्दिरमें प्रवेश न कर सका।

१५ सालहवां पल्ले।
ईश्वरके कापने वासी पियालोंका बंदेला बाना।

1. श्रीर मैने मन्दिरमें से एक बड़ा शब्द सुना जो उन सात दूतांके बोला जाके श्रीर ईश्वरके कापने सात पियाले पृथिवीपर बंदेला।
2. श्रीर पहले ने जाके झपना पियाला पृथिवीपर बंदेला श्रीर उन मनुष्योंका जिनपर पशुका चापा या श्रीर जा उसकी मूर्तिकी पूजा करते जे बुरा श्रीर दुखदाई प्राव हुआ।
3. श्रीर दूसरे दूताने झपना पियाला समुद्रपर बंदेला।
श्रीर वह मृतकका लेहू हो गया। श्रीर समुद्रमें हर एका जीवता प्रणी मर गया।
4. श्रीर तीसरे दूताने झपना पियाला नदीयापर श्रीर।
5. जलके सैतिपर बंदेला श्रीर जे लेहू हो गये। श्रीर मैने जलके दूताका यह कहते सुना कि हे परमेश्वर जे है श्रीर जा या श्रीर जा पवित्र है तू धर्मी है कि
के तुने यह न्याय किया है। क्योंकि उन्होंने पवित्र लेगा।
श्रीर भविष्यद्वालोंका लेहू बहाया। श्रीर तूने उन्हें
लौट पीनेका दिया है क्योंकि वे इस श्रेय हैं। श्रीराम भंडे रीते में यह शब्द सुना कि हां है सबूतशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर तेरे बिचार सबू श्रीराम यथार्थ हैं।

श्रीराम चैरे दूतने झपना पियाला सूर्यपर उंडेला 8 श्रीराम मनुष्याकी झागसे भुलसाने की शाधिकार उसे दिया गया। श्रीराम मनुष्य बढ़ी तपस्ये भुलसाये गये 5 श्रीराम ईश्वरके नामकी निंदा किंदे जिसे इन विपत्तां-पर शाधिकार है श्रीराम उसका गुप्तानुबाद करनेके लिये पश्चाताप न किया।

श्रीराम पांचवें दूतने झपना पियाला पशुके सिंह- 10 सनपर उंडेला श्रीराम उसका राज्य संधियारा हो गया श्रीराम लागू लेशके मारे झपनी झपनी जीभ चबाई।

श्रीराम उन्होंने झपने लेशके कारण श्रीराम झपने घावें- 11 जो कारण स्वग्धे ईश्वरके निंदा किंने किंदे श्रीराम झपने झपने कामसांसे पश्चाताप न किया।

श्रीराम छठवें दूतने झपना पियाला बड़ी नदी फुरात- 12 पर उंडेला श्रीराम उसका जल सुख गया जिसे सूर्यपदय- को दिखानी राजा ओंका मार्गे तैयार किया जाय। श्रीराम 13 में भजगरे मुंहमसे श्रीराम पशुके मुंहमसे श्रीराम भूटे भविष्यत्ताके मुंहमसे निकले हुए तीन भशुदु सात-का वे जो मेंडोंकी नई थे। क्योंकि वे भूटे 14 शात्मा हैं। जो भशुचर्य करते हैं। श्रीराम ज़ा सारे संसारके राजाओंके पास जाते हैं। कि उन्हें सबूतशक्तिमान ईश्वरके उस बड़े दिनके युद्धके लिये एकटे करें। देखा 15 में चैरकी नाइं जाता हू। धन्य बह जा जागता रहे।
श्रीर जनने वस्तुतः राशा करे जिसत्र वह नामा न फिेरे
15 श्रीर लोग उसको लक्ष्य न देखे। श्रीर उन्हाँने उन्हें
उस स्थान पर एकट्टे किया जो इब्राहीम भाषामें हमें-
गिटू बहावता है।
17 श्रीर सातवें दूसरे अपना पियाला श्रीकारमें उड़ाला।
श्रीर स्वर्गके मन्त्रमें अर्यात सिंहासनसे एक बड़ा
शब्द निकाला कि हो चुका। श्रीर शब्द श्रीर जगन्नेन
श्रीर बिजलियाँ हुई। श्रीर बड़ा मुईहौल हुआ। ऐसा कि
जबसे मनुष्य पृथ्वीपर हुए तबसे वैसा श्रीर इतना।
18 बड़ा मुईहौल न हुआ। श्रीर वह बड़ा नगर तीन खंड
हो गया। श्रीर देश देशके नगर गिर पड़े। श्रीर इंधनर्याँ
बड़ी बाबुलकी स्तरण किया कि जनने ऋणकी जल-
20 जलाहटकी मंदिराका करोड़ा उसे देवे। श्रीर हर एक
21 टावा भाग गया। श्रीर काइ पत्थर न मिले। श्रीर बड़े
झाले जैसे मन मन भरके स्वर्गसे मनुष्योंपर पड़े। श्रीर
झालोंकी बिपतिको ज्ञात मनुष्योंमें इंधनर्यांकी निन्दा
किले क्यांकि उससे निपट बड़ी बिपति हुई।
19 सतहार्य भाषा।
1 बड़ी बेश्याका दर्शन श्रीर यथ पशुका चा उसका आहन था। 3 दूसरा यथा
दर्शनका धर्म बसाना।
1 श्रीर जिन सात दूसरंके पास वे सात पियाले चे
उनमेंसे एकने झाले मेरे संग बात कर मुखते कहा झा
में तुफो उस बड़ी बेश्याका दंड दिखावो जा बहुत
2 जलपर बैठी है। जिसके संग पृथ्वीके राजाश्रोंने
व्यभिचार किया है श्रीर पृथ्वीके निवासी लोग उससे

व्यभिचारकी मद्दरासे मतवाले हुए हैं। जीवर यह ३ खातमामें सुके जंगलमें ले गया जीवर मने एक स्त्रीका देखा जी ताल पशुपर बैठी थी जो इंश्वरकी निन्द्वामे नामसे महाया था जीवर जिसके सात सिर जीवर दस सींग थे। जीवर यह स्त्री बैठनी जीवर ताल वस्त्र पहिले थी ४ जीवर लाने जीवर बहुसूंल पत्थर जीवर मातियांसे विभूति थी जीवर उसके हाथमें एक सानिका कटोरा था जो बिल्लित बस्तुके से जीवर उसके व्यभिचारकी स्वातु बस्तुके से भरा था। जीवर उसके मायेपर एक ५ नाम लिखा था बधात भेद. बड़ी बाबुन. पृथ्वीकी बेघराणी जीवर बिल्लित बस्तुके की माता। जीवर मने ६ उस स्त्रीका पविच लक्षियों को लाहूसे जीवर योगुके मालियों को लाहूसे मतवाली देखी जीवर उसे देखके मने बड़ा शांत्वर्य करके श्रवणा किया।

जीवर दूरने मुख्ये कहा तूने किंगा श्रवणा किया. मने ० स्त्रीका जीवर उस पशुका भेद जी उसका बाहन हैं जिसके सात सिर जीवर दस सींग हैं तुम्हसे कहूंगा। जो पशु ८ तूने देखा तो जीवर नहीं हैं जीवर जीवर कुंडमें उठने जीवर जीवर जीवर जीवर जीवर जीवर जीवर निवासी लोग जिनके नाम जागतक पुत्रस्तरीय पूंजनेर हैं जीवर पृथ्वीके निवासी लोग जिनके नाम जागतक उत्पतीसे जीवनके पुस्तकामें नहीं लिखे गये हैं पशुका देखके तो जीवर नहीं हैं जीवर जीवर कारारें। यहीं जीवर के ८ जन हैं जिससे बुंद हैं. वे सात सिर सात पश्चिम हैं जिन-पर स्त्री बैठी हैं। जीवर सात भाग हैं बाँध गिर गये ९० हैं जीवर एक हैं जीवर दूसरा खबरों नहीं चाहा है।
११ श्रीर जब शावेगा तब उसे चाही बेर रहने होगा। श्रीर बह घु जा था श्रीर नहीं है जाप भी शावेगा है श्रीर
१२ सातेम्से है श्रीर शिनाशका पहुँचता है। श्रीर जै दस सोंग तूने देखे सा दस राजा हैं जिन्हें धन राजय नहीं पाया है परन्तु घु मूं के संग एक घड़ी राजाशाीनौं-
१३ की नाई शाधिकार पाते हैं। इन्हेंका एकही परामन्थ है श्रीर वे घपना घपना सामथर्य श्रीर शाधिकार घु मूं की
१४ देखे। वे ती मेले गुढ़ करेंगे श्रीर मेला उनपर जय करेगा कोई कि वह ग्रु मूंण्डा ग्रु मूं श्रीर राजाशाीनौंका राजा है श्रीर जा उसके संग हैं ते। बुलाये हुए श्रीर चुने हुए श्रीर विशक्षायम्य हैं। फिर सुभसे बाला जो जल तूने देखा जहां बिशया बैठी है सा बहुत बहुत लोग श्रीर देश श्रीर भाषा हैं। श्रीर वे दस सोंग जो तूने देखे श्रीर पशु यही बिशयसे बेर करेंगे श्रीर उसे उजाड़ेंगे श्रीर नंगी करेंगे श्रीर उसका मांस खायेंगे श्रीर उसे भ्रागमें जिला में। कोई कि इंशवरने उनके मनमें यह दिया है कि वे उसका परामर्श पूरा करें श्रीर एक परामर्श रखें श्रीर श्रीर श्रीर ईशवरके वचन पूरी न होने तबलों घपना घपना राजय पशुशी देवीं। श्रीर जो स्त्री तूने देखी सा वह बड़ी नगरी है जो पृथिवीके राजाशाईनर राजय करती हैं।
१५ श्रीर अतरहवा पथम।
वही ारुलके नाम श्रीरकी भविष्यवादी।
२ श्रीर इसके पीछे में एक दुतका स्वर्गसे उतरते देखा जिसका बड़ा शाधिकार था श्रीर पृथिवी उसके तेजसे प्रकाशमान हुई। श्रीर उसने पराकमसे बड़े शब्दसे
पुजारा कि गिर गई बड़ी बालुक गिर गई है श्रीर मूर्तांका
निवास श्रीर हर एक बाजुद्ध जातमाका बन्दीगृह श्रीर
hर एक बाजुद्ध श्रीर विनित मंदिरका पिंजरा हुई है। क्योंकि सब देश्चोंके लोगांने उसके व्यभिचारके कारण जो
श्राप होता है तिसकी मदिरा पिटे है श्रीर पृथिवीके
राजाश्रोंने उसके संग व्यभिचार किया है श्रीर पृथिवीके
ब्यापारी लोग उसके सुख विलासका बहुताइसे पनवान
हुए हैं।
श्रीर मैंने स्वर्गसे दूसरा शब्द सुना कि हे मेरे लोगे 
उससे निकल आए श्रीर कि तुम उसके पायमें भागी न
हाए श्रीर कि उसकी बिपिंतांके कुछ तुमपर न पड़े।
क्योंकि उसके पाय स्वर्गका पहुंचे हैं श्रीर ईश्वरने उसके
कुमारीका समरण किया है। जैसा उसने तुम्हें दिया है 
तैसा उसका भर देशों श्रीर उसके कामका आनुसार
dूना उसे दे देशों। जिस कटोरांमें उसने भर दिया
उसीमें उसके लिये दूना भर देशों। जितनी उसने ज्ञात
बढाईं बिद्वे श्रीर सुख विलास किया उतनी उसका
पौड़ा श्रीर शोक देशों क्योंकि वह ज्ञात मनमें कहती
है में राधी हा बैठी हूं श्रीर बिधवा नहीं हूं श्रीर
शोक किसी रोतिसे न देखनी। इस कारण एकही
दिनमें उसकी बिपिंता जा गड़ूः श्राद्ध मृत्यू श्रीर शोक
श्रीर श्राद्ध कल श्रीर वह श्राद्धमें जलाई जायगी क्योंकि
परमेश्वर ईश्वर जो उसका विभारकरता है शक्तिमान है।
श्रीर पृथिवीके राजा लोग जिन्होंने उसके संग व्यभिचार
श्रीर तुष्क विलास किया जब उसके जलनका धूसा देखनी
90 तब उसके लिये रोयने शीर छाती पीरिंगे। शीर उसबी पीड़ाकि हरके मारे दूर खड़े हो वहेंगे हाय हाय हे बड़ी नगरी बाबुल हे दूढ़ नगरी कि एकही पढ़ीमि तेरा
91 विचार खा पड़ा है। शीर पृथिवीके व्यापारी लेगे उस-पर रोयने शीर कलरिंगे क्या किं कब ता। शीर इनके बहा-
92 जांकी बांकाई नहीं मोल लेगा। अथिात साने शीर छुपे शीर बहमूल्य पत्थर शीर माति शीर मलमल शीर वैगनी वस्त्र शीर पारम्बर शीर लाल वस्त्रकी बांकाई शीर हर प्रकारका सुगन्ध काट शीर हर प्रकारका हाथीदांतका पाष शीर बहमूल्य कारके शीर पीतल शीर लोहे शीर मर-
93 जरके सब भांति के पाष। शीर दाराचीनी शीर। इलायची शीर धूप शीर सुगन्ध तेल शीर लोबान शीर मादरा शीर। तेल शीर चेष्ठा विसान शीर गेहूं शीर ठोर शीर भेंड़ूं शीर ठोड़ं
94 शीर रथें शीर। दासांकी बांकाई शीर मनुष्योंके प्राप। शीर तेरे प्रापके बांधित फल तेरे पाससे जाते रहे शीर सब चिकनी शीर भड़कीली वस्तु तेरे पाससे नष्ट हुईं हैं
95 शीर तू उन्हें फिर कभी न पावेगा। इन वस्तुशींके व्यो-पारी लेगे जो उसके धनवान हो। गये उसकी पीड़ाकि हरके मारे दूर खड़े होंगे शीर रोटे शीर। कलपते हुए
96 वहेंगे। हाय हाय यह बड़ी नगरी जो मलमल शीर बै-जनी शीर लाल वस्त्र पहिंचे यी शीर साने शीर बहमूल्य पत्थर शीर माति यांसे विभूषित थी कि एकही घड़ीमि
97 इतना बड़ा धन बिला गया है। शीर हर एक मांकी शीर जहांजांपरके सब लेगा शीर मलसाह लेगा शीरजि-
98 तने लेगा समुद्रपर कमाते हैं सब दूर खड़े हुए। शीर
उसके चलनेंका धूमका देखते हुए पुकारके बाले बीने नगर इस बड़ी नगरकी समान है। छीर उन्होंने छपने छपने १५ सिरपर धूल हाली छीर रोते छीर कलपत हुए पुकारके बाले हाय हाय यह बड़ी नगरी जिसके द्वारा सब लिख़ जिनके समुद्रमें जहाज़ ये उसकी बहुमूल्य द्रव्यमें धनवान हो गये कि एकही घड़ीमें वह उठ जहाँ गई है। हे स्वगे छीर २० हे पवित्र प्रेरिता छीर भविष्यका लोगा उसपर ज्ञानद छारा कृष्णका इश्वरने तुम्हारे लिये उससे पलटा लिया है।

छीर एक पराक्रमी दूतने बड़े चन्द्रके पारकी नाईं २१ एक पत्सरका लेने समुद्रमें हाला छीर कहा यूं बारियाइँ-से बड़ी नगरी बाबुला गिराई जायगी छीर फिर कभी न मिलेगी। छीर बीया बजानेहारां छीर बजानियां छीर २२ बशी बजानेहारां छीर तुर्की पृथकःवारियाँका शब्द फिर कभी तुफ़में सुना न जायगा छीर किसी उदारमका लोगे क्षारिगर फिर कभी तुफ़में न मिलेगा। छीर चन्द्रके चलनेका शब्द फिर कभी तुफ़में सुना न जायगा। छीर दीपक- २३ की ज्यादत फिर कभी तुफ़में न चमलेगी। छीर दूरले छीर टूल्हिनका शब्द फिर कभी तुफ़में सुना न जायगा। क्याकि तिरे बीपारी लोग पृथिविके प्रथान थे इसलिये कि तिरे टैनसे सब देशोंके लोग भरमाये गये। छीर भविष्यका- २४ छीर छीर पवित्र लागांका लैहू छीर जा जा लोग पृथिवी-चौपर बघ किये गये थे सभेंका लैहू उसमें पाया गया।

१५ उनीसवां पढ़ने।

१ बड़ी वेश्याके दंडके लिये पवित्र लागांका स्थानमें धन्यबाद करना छीर बेश्यके विवाहका यह। ११ देश्वरके व्यक्तके छीर उसकी सेवाका यह। १५ पदा विवाहिता उसके लड़ना छीर दंड प्राय।
१ श्राव इसके पीछे मैंने स्वर्गमें बहुत लोगोंका बड़ा शब्द सुना कि हिंदुस्तान परमेश्वर हमारे इंश्वरका चारावाले घर जय जय श्री महिमा श्री राजर श्री सा- 
२ मर्यादा है। इसलिये कि उसके बिचार सबू श्राव यथार्थ हैं क्योंकि उसने बड़ी बेश्याक्रा जी अपने व्यविचारसे प्रविष्टिका भ्रूण करती थी बिचार किया है श्राव अपने 
३ दसिंको लोहका पलटा उससे लिया है। श्राव वे दूरसे 
बार हिंदुस्तान बोले श्राव उसका हृदसा झुका सदा सबू दालां 
४ उठता है। श्राव चौविसं प्राचीन श्राव चारी प्राची 
गिर पड़े श्राव इंश्वरका जो सिंहासनपर बैठा है प्रशाम 
५ करते बोले श्रावी महिमन हिंदुस्तान है। श्राव कह शब्द सिंहासनको निकाल निकाल कि है हमारे इंश्वरके सब दासी श्राव 
६ उसके हरनेहारी। का बोली का बड़े सब उसकी स्तुति 
७ है बोले। श्राव मैंने जैसे बहुत लोगोंका शब्द श्राव जैसे 
बहुत जलका शब्द श्राव जैसे प्राची गरजेनांका शब्द वैसा 
८ शब्द सुना कि हिंदुस्तान परमेश्वर इंश्वर सबू शर्करी- 
९ मानने राज्य लिया है। श्रावो हम श्रावन्दित श्राव 
१० श्रावन्दित हरें श्राव उसका गुणाक्षुण्ड करे क्योंकि 
मेस्वका बिवाह श्रा पहुंचा है श्राव उसकी स्तीने अपनेरी 
११ तैयार किया है। श्राव उसकी यह दिया गया कि श्राव 
१५ उजली मलमल पाहने क्योंकि वह मलमल पाविप 
११ लोगोंका धम् है। श्राव वह मुकःसे होला यह लिखा 
कि धन्य वे जो मेस्वके बिवाहके महामैनु बुलाये गये हैं.
१० फिर मुकःसे होला ये वचन इंश्वरके सत्य वचन हैं। श्राव 
१२ मैंने उसका प्रशाम करानेका जिये उसके चरणेंकी अगि
गिर पड़ा चौर उसने मुक्तके कहा देख ऐसा मत कर भी तेरा चौर तेरे भाईयों का जिन पास यीशुकी साक्षी है संगी दास हूं। ईश्वरकी प्रशाम कर क्योंकि यीशुकी साक्षी मानविक्षु माशाकारा जातमा है।

चौर मैंने स्वर्गका खुले देखा चौर देखा। एक श्रेष्ठ ११ बाढ़ा है चौर जो उसपर बैठा है सो बिक्रमासयोग्य चौर सबसा कहावता है चौर वह घम्मते बिचार चौर युद्ध बरता है। उसके नेत्र स्वागती उज्वलाको नाइ हैं चौर १२ उसके तिरपर बहुत से राजमुकत हैं चौर उसका एक नाम लिखा है जिसे चौर की नहीं धारण वही ज्ञान हाना है। चौर वह लोहे में हुमाया हुबा बस्त पाहिये १३ हैं चौर उसका नाम यूं कहावता है कि ईश्वरका बचन। चौर स्वर्गमंडली सेना श्रेष्ठ घड़ों पर चढ़े गये उज़ली चौर १४ गौड़ मलमल पाहिये हुए उसके पीछे हैं। लेती थी। चौर १५ उसके मुंहसे चीखा खड़े निकलता है कि उससे वह देशोंके लोगोंका मारे चौर वही लाहेका दंड लेके उनकी चरवाही करेगा चौर वही सबूत शक्तिमान ईश्वरके श्राध-की जलजलाहटकी मददरों में रैंडन करता है। चौर उसके बस्तपर चौर जांघपर उसका यह नाम १६ लिखा है कि राजाशंकोंका राजा चौर प्रभुकोंका प्रभु।

चौर मैंने एक दूतको सूर्यमं मढ़े हुए देखा चौर १७ उसने बड़े शब्दसे पुकारके सब पंचियोंसे जो बालाकोटीके बोचमंतं सदृष्ट हैं कहा बालाको ईश्वरको बड़ी वियारखी की लिये एकत्र हासी। जित्ते तुम राजाशंकोंका मानस चौर १६ सहसन्तियांको मांस चौर पराक्रमी पुव्वलोंका मांस चौर
चोटिंदा वैर चप्पर चढ़नेहारेंबा मांस वैर क्या निबन्ध क्या दास क्या बहें क्या बड़े सब लोगों का मांस । वैर में न हूका वैर पृथिवीको राजाश्रेणिको वैर उनकी सेनाश्रेणिको घड़ोपर चढ़नेहारे वैर उसकी ।

वैर सेनासे युद्ध करनेको एक्षाक्षा देखा । वैर पत्र पढ़ा गया वैर उसके लाग्न वह कुटा भविष्यद्वारा जिन्हें उसके समुख शारणक्याके कार्य किये जिनके द्वारा उसनेदेव लोगों भरमाया जिन्हें नहीं पत्रका ज्ञापा दिया वैर जो उसकी मूर्तिको पूजा करते थे । वे दोनों जीतेंजी उस शास्त्रीकी मालम में जो गण्यकर जलती है दाले गये । वैर जो लोग रह गये तो घड़ोपर चढ़नेहारे खड़े जो उसके मुंहसे निकलता है मार दाले गये वैर सब पंछी उनके मांससे तूफ हुए ।

20 बीसवाँ पनि ।

1 नैसानका जस्थै वर्षको बंधा रहना । 8 पहिले पुनश्चात्मका वर्षन । 9 नैसानका निर लोगोंका भरमाया वैर बढ़ रहा । 10 महाविद्यालयका वर्षन ।

1 वैर में एक दूरको स्वर्गिते उतरते देखा जिस पास भयाहुंडको बुंजी थी वैर उसके हाथमें बड़ी । 2 जंगीर थी । वैर उसका जागरुको कार्यक वैर नैसानक है पकड़के उसे सहस्र 3 बरसलें बांध रखा । वैर उसका भयाहुंडको बुंडमें दाला वैर बन्द करके उसके ऊपर ज्ञाप दिये जिस्ते वह जबलों सहस्र बरस पूरे न हैं तबलें फिर देशाको लोगोंको न भरमाये वैर इस पीछे उसका बांधौ नाराज जाने होगा ।
श्रीर मैंने सिंहसनांको देखा श्रीर उनपर लोग बैठे ॥
भी श्रीर उन लोगांको विचार करनेको अधिकार दिया
गया श्रीर जिन लोगांके तिर यीशुकी साधोकी कारण
श्रीर इंग्लिशवाली बचनके कारण कार गये थे श्रीर जिनहाँने
म पशुकी न उसकी मूर्तिकी पूजा किड़े श्रीर अपने अपने
माथियेर सिंहासनांको देखा श्रीर वे जी गये श्रीर खोजके संग
सहस्र बरस राज्य किया । परन्तु श्रीर सब मृतक लोग
जबनां सहस्र बरस पूरे न हुए तबलें नहीं जो गये । यह
तो पहिला पुनःपुनःसाधन है । जो पहिले पुनःपुनःसाधनका भा-
गी है तो धन्य श्रीर पवित्र है । इंग्लिशवाली मूर्तिका
कुछ अधिकार नहीं है परन्तु वे इंग्लिशवाली श्रीर खोजके
याजक हैंगे श्रीर सहस्र बरस उसकी संग राज्य करेंगे ।
श्रीर जब सहस्र बरस पूरे होंगे तब श्रैतान अपने
बन्दीगृहसं ढुंग जायगा । श्रीर चढ़े सूरत पृथिवीके देरांके
लोगांको सर्थात जुड़ श्रीर माजूजका जिनकी संक्ष्या
समुद्रकी बालूकी नाई होगी भरमालोका निकलेगा जैक
उन्हें युद्धके लिये एकत्र करे । श्रीर वे पृथिवीका चै-
हाईपर चढ़े श्रायं श्रीर पवित्र लोगांकी खाबनी श्रीर
प्रिय नगरको घर लिया श्रीर इंग्लिशवाली श्रारसे श्रार
स्वर्गसे उतरी श्रीर उन्हें भस्म किया । श्रीर उनका
भरमालोहरा श्रैतान श्रार श्रीर गन्धककी भक्ति
जिसमें पशु श्रीर फूटा भविष्यवद्वता है डाला गया श्रीर
वे रात दिन सदा सन्तो चूटित किये नाईंगे ।
श्रीर मैंने एक बड़े श्रेष्ठ सिंहासनको श्रीर उसपर बैठे ॥
नेहरिको देखा जिसबे सम्बन्धित पृथिवी श्रीर झाकास
92 भए गये श्रीर उनबे जिये जगह न मिली। श्रीर देखे रहा क्या बड़े सव मृतकोंका इंशवरके थाने बड़े देखा श्रीर पुस्तक रेखे गये श्रीर दूसरा पुस्तक अथीत भी- 

भनका पुस्तक रेखा गया श्रीर पुस्तकबाओं जिथे हुई 

बातेंसे मृतकोंका विचार उनबे कम्बिको झनसार रिया 
93 गया। श्रीर समुद्रका उन मृतकोंका जा उसमा रे दे दिया श्रीर मृत्यु श्रीर परलाइकने उन मृतकोंका जा उनमा रे दे दिया श्रीर उनमा हर एका विचार उसबे कम्बिको 
94 झनसार रिया गया। श्रीर मृत्यु श्रीर परलाइक चाग- 
95 की चौमा हाल गये। यह तिली दूसरी मृत्यु है। श्रीर 
जिस किसी नाम किवनबे पुस्तकबैं लिखा हुआ न 
मिला वह झाकासकी चौमा हाला गया।

98
झीर देशवर उनकी आंखें सब सांसू पूंछ हालेगा ४।
झीर मृत्यु झीर न होगी झीर न श्रेष्ठ न बिलाप न
श्रेष्ठ झीर होगा कोई भक्ति बातें जाती रही हैं।
झीर सिंहासन पर वैद्यनाथरे बहा देखा में सब खुब ५
भया करता हुू। फिर मुसते बजो लिख ले कोई वे
बचन सत्य झीर बिश्वासयाग्य हैं। झीर उसने
मुझे कहा हुू। चुका, में सलाफ झीर, ज्ञानिया
झाड़ि झीर अन्त हुू। तो यस्ता है उसकी में जीवनके
झलके सातमें संततिपाट रहता है। जो जय करे सब
बलस्थों झाड़िया होगा झीर में उसका देशवर
हां का। झीर वह भरा पुज होगा । परलु भयमानों
झीर शरीर नवनायियां झीर धरियां झीर हत्यारों झीर
भारतारियां। झीर टोले। झीर मृत्यु पूजकों
झीर सब मृते लोगिया भाग उन्हें उस मौलिया मिलेगा
झीर झाड़ि गन्धकरे जाती है। यही दूसरी मृत्यु है।

झीर जिन सात देवताओं के पास सात पीढ़ी बिपनते हैं ६।
भरे हुए सातां पियाले वे उनमें सब मेरे पास झार
झीर मेरे संग बात करों बोला कि झार में टूकिया
श्रेष्ठ में ही स्त्रीकों तुम्हे दिखाता है। झीर वह मुझे
झातां में एक बड़े झीर ऊंचे पहुंचते है वह झीर बड़े
नगर पाक यहूदियां नमको मुझे दिखाया कि स्वर्गसे
देशवरके पासमें उतरता है। झीर देशवरका तेज उसमें है।
झीर उसकी ज्योति सत्यम् मालके पत्थरको नाईं
श्रेष्ठ स्फटिक सरीखे मूर्त्यकांत मणिको नाईं है।
झीर उसकी बड़ी झीर जंची भीत है। झीर उसमें
झीर देशवर उनकी आंखें सब सांसू बॉम्ब हालेगा ४।
झीर मृत्यु झीर न होगी झीर न श्रेष्ठ न बिलाप न
श्रेष्ठ झीर होगा कोई भक्ति बातें जाती रही हैं।
झीर सिंहासन पर वैद्यनाथरे बहा देखा में सब खुब ५
भया करता हुू। फिर मुसते बजो लिख ले कोई वे
बचन सत्य झीर बिश्वासयाग्य हैं। झीर उसने
मुझे कहा हुू। चुका, में सलाफ झीर, ज्ञानिया
झाड़ि झीर अन्त हुू। तो यस्ता है उसकी में जीवनके
झलके सातमें संततिपाट रहता है। जो जय करे सब
बलस्थों झाड़िया होगा झीर में उसका देशवर
हां का। झीर वह भरा पुज होगा । परलु भयमानों
झीर शरीर नवनायियां झीर धरियां झीर हत्यारों झीर
भारतारियां। झीर टोले। झीर मृत्यु पूजकों
झीर सब मृते लोगिया भाग उन्हें उस मौलिया मिलेगा
झीर झाड़ि गन्धकरे जाती है। यही दूसरी मृत्यु है।

झीर जिन सात देवताओं के पास सात पीढ़ी बिपनते हैं ६।
भरे हुए सातां पियाले वे उनमें सब मेरे पास झार
झीर मेरे संग बात करों बोला कि झार में टूकिया
श्रेष्ठ में ही स्त्रीकों तुम्हे दिखाता है। झीर वह मुझे
झातां में एक बड़े झीर ऊंचे पहुंचते है वह झीर बड़े
नगर पाक यहूदियां नमको मुझे दिखाया कि स्वर्गसे
देशवरके पासमें उतरता है। झीर देशवरका तेज उसमें है।
झीर उसकी ज्योति सत्यम् मालके पत्थरको नाईं
श्रेष्ठ स्फटिक सरीखे मूर्त्यकांत मणिको नाईं है।
झीर उसकी बड़ी झीर जंची भीत है। झीर उसमें
बारह फार्रक हैं चैर उन फार्रकोपर सारह दूत हैं
चैर नाम उनपर लिखे हैं अर्थात् इस्लामक सत्ता-
13 नामके बारह कुलांके नाम। पूर्वकी चैर तीन फार्रक
उत्तरकी चैर तीन फार्रक दक्षिणकी चैर तीन फार्रक।
18 चैर पश्चिमकी चैर तीन फार्रक हैं। चैर नगरकी
भीतकी बारह नेव हैं चैर उनपर मेंके बारह प्रेरि-
15 तांके नाम। चैर जो मेरे संग बात करता था
वस पाल एक सानीका नल था जिस्ते वह नगरकी
चैर उसके फार्रकोंकी चैर उसकी भीतकी नापी।
16 चैर नगर चैखुंटा बसा है चैर जितनी उसकी
चैड़ाई उतनी उसकी लंबाई भी हैं चैर उसने उस
नलसे नगरकी नापा कि साढे सात सी कोशका हैं;
उसकी लंबाई चैर चैड़ाई चैर ऊंचाई एक समान हैं।
17 चैर उसने उसकी भीतकी मनुष्की अर्थात् दूतके नापसे
नापा कि एक सी चवालीस हाथकी हैं। चैर उसकी
भीतकी जोड़ाई सूर्यकान्तकी थी चैर नगर निर्माण
15 सानीका था जा निर्माण कांचके समान था। चैर नगरकी
भीतकी नेव है, एक बहुमुख पत्यरसे संबारी हुईं थीं
पहली नेव सूर्यकान्तकी थी दूसरी नीलमणिकी तीसरी।
20 जलाहोंकी चैथी मर्रकतकी। पांचवीं ग्रामेंटकी हटवीं
माणिक्यकी सातवीं पीटमणिकी छठवीं
पुखराजकी दसवीं लहसानिकी कंगरावहीं धूपकान्तकी।
21 बारहवीं मर्रकतकी। चैर बारह फार्रक बारह मेंती
थे एक एक मेंतीसे एक एक फार्रक बना था चैर
नगरकी सड़क स्वच्छ कांचके ऐसे निर्माण सानीकी थी।
श्रीर भीम उसमें मंदिर न देखा क्योंकि परमेश्वर २२
ईश्वर स्वरूपोंका मान श्रीर मेला उसका मंदिर है।
श्रीर नगरकी सूर्य आयुष्य चन्द्रमाका प्रयोजन नहीं २३
कि वे उसमें चमके क्योंकि ईश्वरके तेजाने उसे ज्यादा
दिखाई श्रीर मेला उसका दीपक है। श्रीर देशींको लाग २४
श्रीर चाष खाने है उसकी ज्योतिः फिरेंगे श्रीर
पृथ्वीके राजा लोग अपना अपना विभव श्रीर
मयोद्धा उसमें लाखेंगे। श्रीर उसके फाटक दिनका २५
क्षमों बनी न किजे जायेंगे क्योंकि वहां रात न होगी।
श्रीर वे देशींके लोगांका विभव श्रीर मयोद्धा उसमें २६
लाखेंगे। श्रीर कोई आपविच बस्तु आयुष्य गिनित २०
क्रमकार जनने हारा आयुष्य भुगोल चलने हारा उसमें किसी
रोगसे प्रवेश न करेगा परंतु जेवल वे लोग जिनके
नाम मेले जीवनके पुस्तककमें लिखे हुए हैं।

२२ बाइसवां पर्व।

१ जीवनके जलकी नदीका श्रीर नहीं विभवान्नके नियाविवेकके खुलका बर्मन।
२ पवेश श्रीर निविज्ञानी बांसुरी पुस्तककी बनाई।

श्रीर उसने मुखे जीवनके जलकी निर्मल नदी १
स्फरसको नाई स्वच्छ दिखाई किए ईश्वरके श्रीर मेले
सिनहासनके निर्मलता है। नगरकी सड़क श्रीर उस
नदीकी बीचमें इस पार श्रीर उस पार जीवनका वृद्धि
२ नहीं। एक एक मासके अनुसार अपना फल देंगे बारह
फल फलता है श्रीर वृद्धि पति देशींके लोगांका बंगा
करनेके लिये हैं। श्रीर अब कोई साप न होगा श्रीर
३
ईश्वरको श्रीर जीवनका सिनहासन उसमें होगा। श्रीर उसके
8 दास उसकी सेवा करेगे। श्रीर उसका मुंह देखेगे श्रीर। 
उसका नाम उनके मातृपार होगा। श्रीर वहां रात 
न होगी श्रीर उन्हें दीपकका चथवा सूर्यकी ज्योतिका 
प्रयोजन नहीं की। इंश्वर उन्हें म्याटि 
देगा श्रीर वे सदा संवेदा राज्य करेगे। 

9 श्रीर उसने मुक्तते बाहेर ये वथन। बिज्ञासहायय 
श्रीर सत्य है। श्रीर पवित्र भविष्यत्तका श्रीरके इंश्वर 
प्रमेश्वरने अपने दूतकों भेजा है जिसीं यह बार्ते 
जिनका शोध पूरा होना सबध्य है अपने दासेंकी। 

10 दिखाये। देश में शीघ्र झारता हूं। धन्य वह जो इस 
पुस्तकके भविष्यत्तका के बार्ते पालन करता है। 

11 श्रीर उवन जो हूं। साई यह बार्ते देखता श्रीर 
सहनता या श्रीर जब मईने सुना श्रीर देखा तब जो दूत 
मुफी यह बार्ते दिखाता या में उसके घरेंकी झागे 
प्रशाम करनेकी गिर पड़ा। श्रीर उसने मुक्तते बाहेर 
देश ऐसा मत कर की। जी तरा श्रीर भविष्यत्तका 
श्रीरका जो तेरे भाई हैं श्रीर इस पुस्तकके बार्ते पालन 
करनेहरेंका संगी दास हूं। इंश्वरकी प्रशाम कर। 

12 श्रीर उसने मुक्तते बाहेर। इस पुस्तकके भविष्यत्तका 
13 की बार्तांपर झाप मत दे की। समय निक्षत है। जो 
झन्याय करता है। झाप भी झन्याय करता रहे श्रीर 
श्रीर जा श्राद्ध है। झाप भी श्राद्ध रहे श्रीर धम्मरी जन 
झाप भी धम्मरी रहे श्रीर पवित्र जन झाप भी पवित्र रहे। 

14 देश में शीघ्र झारता हूं। श्रीर मेरा दिक्षितेने मेरे साथ 
है जिसीं हर एकका जैसा उसका कार्य ठहरेगा वैसा
फल देंज। मैं ज्ञानका शीर ज्ञानिगा शादि शीर ज्ञान १५ 
पहिला शीर पिशला हूं। धन्य वे जे उसकी ज्ञाना— १५ 
शीर्ष पर चलते हैं कि उन्हें जीवनके वृद्धका रीतिकार 
मिले शीर वे फारकोंसे हाके नगरमें प्रवेश करें। परन्तु १५ 
बाहर कुते शीर टाने शीर व्यवस्थारी शीर हत्यारे 
शीर मृत्युपूजक हैं शीर हर एक जन जो फूटका प्रिय 
ञानता शीर उसपर चलता है। मुख योगने अपने १६ 
दूतका भेजा है कि तुम्हें मंडलियाँमें इन बातेंकी मामी 
देवे। मैं दाजुदका मूल शीर बंड शीर भोजका रज्ज जल 
तारा हूं। शीर ज्ञानमा शीर दूल्हिन कहते हैं जः शीर १० 
जा सुने सा कहे चा शीर जा प्यासा हो सा। शावे 
शीर जा चाहे सा जीवनका जल संतेमत लेवे। 

मैं इस बातकी जो इस पुस्तकके भविष्यद्वाक्यकी १८ 
बातें सुनता है साध्यी देता हूं कि यदि बाड़ इन बातेंके 
कुछ बढ़ावे तो ईश्वर उन विपत्तेंका जो इस पुस्तकमें 
लिखी हैं उसपर बढ़ावेगा। शीर यदि बाड़ इस १५ 
भविष्यद्वाक्यके पुस्तककी बातेंमिते कुछ उठा लेवे तो 
ईश्वर जीवनके पुस्तकमें शीर पवित्र नगरमें शीर 
उन बातेंमिते जो इस पुस्तकमें लिखी हैं उसका भाग 
उठा लेगा। 

जा इन बातेंकी साध्यी देता है सा कहता है हां में २० 
शीघ्र झाता हूं। शामीन है प्रभु योगु चा। हमारे प्रभु २१ 
योगु श्रीपुराणा अनुपहु तम सभेंका संग होवे। शामीन।